ओम् पारब्रह्मणे नमः

अथ मात्रा शास्त्र

कहु रे बाल! किसने मूँडा,किसने मुँडाया,किस का भेजा नगरी आया ।। सत्गुरु मूँडा लेख मुँडाया, गुरु का भेजा नगरी आया ।। चेतहु नगरी तारहु गाम,अलख पुरुष का सुमिरहु नाम ।। गुरु अविनाशी खेल रचाया,अगम निगम का पंथ बताया ।। ज्ञान की गुदड़ी खिमा की टोपी,यत का आड़बंद शील लंगोटी ।। अकाल खिंथा निराश झोली,युक्ति का टोप गुरुमुखी बोली ।। धरम का चोला सत की सेली,मरयाद मेखला लै गले मेली ।। ध्यान का बटुआ व्रित्त का सुईदान,ब्रहम अंचला लै पहिरे सुजान ।। बहुरंगी मोरछड़ निरलेप विष्टी,निरभउ जंगडोरा ना को द्रिष्टी ।। जाप जंगोटा सिफत

उड़ानी,सिंङी शब्द अनाहद गुरुबाणी ।। शरम की मुद्रा शिव विभूता,हरि भगती म्रिगानी लै पहिरै गुरुपूता ।। संतोष सूत विवेक धागे,अनेक टल्ली तहाँ लागे ।। सुरति की सुई लै सत्गुरु सीवे,जो राखै सो निरभउ थीवे ।। स्याह सफेद ज़रद सुरखाई,जो लै पहिरै सो गुरु भाई ।। त्रैगुण चकमक अगनि मथ पाई,दुख सुख धूणी देह जलाई ।। संयम कपाली शोभाधारी,चरण कमल में सुरति हमारी ।। भाव भोजन अम्रित कर पाया,भला बुरा मन नहीं बसाया ।। पात्र विचार फरुआ बहुगुणा,करमंडल तूम्बा किस्ती घणा ।। अम्रित प्याला उदक मन दीया,जो पीवे सो सीतल थीया ।। इड़ा में आवे पिंगला में धावे,सुषमन के घर सहज समावे ।। निराश मठ निरंतर ध्यान,निरभउ नगरी दीपक गुरु गिआन ।। स्थिर ऋद्धि अमर पद दंडा,धीरज फहुड़ी तपकर खंडा ।। वशकर आशा समद्रिष्टि चौगान,हरख शोक नहिं मन में आन ।। सहज विरागी करे विराग,माया मोहिनी सकल त्याग ।। नाम की पाखर पवन का घोड़ा,निहकरम जीन तत्त्व कर जोड़ा ।। निरगुण ढाल गुरु शब्द कमान,अकल संजोह प्रीति के बान ।। अकल की बरछी गुणों की कटारी,मन को मार करो असवारी ।। विषम गढ़ तोड़ निरभउ घर आया,नौबत शंख नगारा बाया ।। गुरु अविनाशी सूषम वेद,निरवाण विद्या अपार

भेद ।। अखंड जनेऊ निरमल धोती,सोहं जाप सच माल पिरोती ।। सिखा गुरुमंत्र गायत्री हरिनाम, निश्चल आसन कर विश्राम ।। तिलक संपूरण तरपण यश,पूजा प्रेम भोग महारस ।। निरवैर संध्या दरशन छापा,वाद विवाद मिटाओ आपा ।। प्रीति पीतांबर मन म्रिगशाला,चीत चितांबर रुणझुण माला ।। बुद्धि बाघंबर कुलह पोस्तीन,खौंस खड़ावाँ इह मति लीन ।। तोड़ा चूड़ा और जंजीर,लै पहिरै साधू उदासी धीर ।। जटा जूट मुकुट सिर होइ,मुक्ता फिरे बंध नहिं कोइ ।। नानक पूता श्रीचंद्र बोले, जुगत पछाणे तत्त्व विरोले ।। ऐसी मात्रा लै पहिरै कोइ,आवागमन मिटावे सोइ ।। ।। इति ।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

नमो गणपति सारदा,शिव हरि अरु दिनेश ।। पूरण परिपूरण प्रभु,श्रीचंद्र जपो हमेश ।।१।। एको देवः सरव भूतेषु,गूढ़ वेद बताए ।। सरव विआपी घट घट भीतरि,श्रीचंद्र जोति लुकाए ।।२।। अगम

अगोचर अंतरजामी,निराकार आधारा ।। सभ का करता धरता रख्यक,श्रीचंद्र गिआन उजारा ।।३।। अंतरजामी सरब विधाता,पूरण पुरुख दयालू ।। सरब आधारा सरब सरूपा,श्रीचंद्र ब्रहम किरपालू ।।४।। सनकादिक ब्रहमादिक देवा,भेद न ताका जाने ।। आदि पुरुख परमेस्वर आपे,अपना रूप पहचाने ।।५।। परमेस्वर जगदीस्वर सुआमी,जाकी लीला निआरी ।। वेद कतेब ऋषि मुनि जा को, श्रीचंद्र है बलिहारी ।।६।। गिआनागार अगिआन विनाशक,श्रीचंद्र प्रभु उर धारो ।। अनंत अनादि आतम जोति,परम तत्त्व विचारो ।।७।। घट घट अंतरि सदा निरंतर,जाकी जोति समाई ।। निराकार निरगुण प्रभु दाता,श्रीचंद्र भए सहाई ।।८।। अघनासक संताप विनाशक,एक देव जगदीस्वर ।। आदि अंत अरु मध्य न जाका,श्रीचंद्र बसत है भीतर ।।९।। राम रहीम करीम वह एको,निरभै जोति निआरी ।। श्रीचंद्र सच्चिदानंद सुआमी,आदि पुरुख मुरारी ।।१०।। परम पिआरा जगत अधारा, निरालंब ओंकारा ।। अलख निरंजन निरगुण सुआमी,श्रीचंद्र एक सहारा ।।११ ।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग रामकली ।।

आदि सत्गुरु पाद मनाइ ।। अविनासी गुरु पुरुख बिधाता,सदा रहहुँ ताकी सरनाइ ।।१।। रहाउ ।। वेद पुरान सिम्रिति सभ सासत्र,गुरू क्रिपा ते लहिऐ ।। नाराइण गोबिंद सुआमी,राम हरी तिहँ कहिऐ ।।१।। आदि जुगादि अनादि सदा प्रभु,सत्गुरु दिओ दिखाई ।। अगम अगोचर अकल कलाधर,घट घट रहिआ समाई ।।२।। जगदाधार आनंद सरूपा,खिन महि थाप उथापै ।। सुत बनिता जिहँ तात न माता,सत्गुरु ते उर जापै ।।३।। श्रीचंद्र गुरु परम पुनीता,नित नूतन हरि देवा ।। होत दयाल जाहिं नर ऊपर,ताहिं जनावत भेवा ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग रामकली || अविनासी गुरु पूरा || आगम निगम सुझावत गुरुमुख,पारब्रहम भरपूरा ||१|| रहाउ || घट घट माहि राम रम रहिआ,आदि न अंत गुसाईं || अंतरजामी सभ कछु पेखे,जहँ जहँ जंतु कमाई ||१|| सगल घटां महि एको जोती,करत अंधेरा नासा || राम गुपत पट पट महि रहिता,सत्गुरु ते परगासा ||२|| गूह्य कला ससधर की प्रगटत,चरन कमल प्रतापै || नीच ऊच महि तेज समायो,गुरु दिखलावै आपै ||३|| तीन ताप अरु पंच कलेसा,पंच विकार नसावै || पाद कंज श्रीचंद्र गुरू के,पुर बैकुंठ पुजावै ||४||२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग रामकली || सत्गुरु बिना अंधेरी रात || अधिक लमेरी सुखपत सुख नहि,महा भयानक सुपन लखात ||१|| रहाउ || गहबर बन अगनी चहुँदिसि महिं,कैसे पावहि घात || केते जलत तड़फते केते,केते इत उत प्रात ||१|| केतन धूड़ि पड़ी है धरणी,केते उडत अकासै || केते सर सोखे है अनलै,अनिल न दे अवकासै ||२|| तरुवर मंडल गगन झुलंते,सगरे कड़कड़ बोले || फल फुल पात

साख बिनसानी,महा अगनि के झोले ।।३।। बाँह पकड़ सत्गुरू हिलायो,बिनसी पीर सबाई ।। अपर देस अरु जंतु अपर ही,श्रीचंद्र गुरु पाई ।।४।।३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। मो कउ सत्गुरु पार लगाया ।। चिंता सागर महि मन बोहिथ,त्रिसना वायु वहाया ।।१।। रहाउ ।। तरंग भयानक अपकरमन कउ,सिमरन करि दुख पाता ।। केवट कोइ न रहिओ खिवैआ,खेपणि परे अत्राता ।।१।। केनिपात अभ्री अरु सेचन,हाथन तिआग पराने ।। अतिनु पार परे बूडत लखि,तरणी जल निरगमाने ।।२।। परिओ आवरत किलाल गंभीरे,महत सुलाल उठंती ।। पुलिन निकट पिखियंत न कोऊ,मकर कुंभीर गहंती ।।३।। अवहारन कच्छप गन झुंडन,पेख रिदै दहिलायो ।। श्रीचंद्र गुरु सुनी पुकारा,सगरो बिघन मिटायो ।।४।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। मेरा सत्गुरु पूरा ।। कोटि कलंक काट खिन भीतरि,सभ गुण सिउं भरपूरा ।।१।। रहाउ ।। पातक भारे काठ सकेले,लाई अगनि जलाए ।। जनम जनम की मल उर लागी,धोए कीन

सफाए ॥१॥ काली कूह अंधारी निसि महि,अविनासी चंद पायो ॥ तम अगिआन बुद्धि की स्रिस्टी, रवि प्रताप प्रगटायो ॥२॥ काम क्रोध तमचर छुप बैठे,हिंसा पास निवारी ॥ मोह लोभ मद पेचक अंधे, भरत न ऊच उडारी ॥३॥ दसोदिसा परगास निरमला,सूझ बूझ हरि केरी ॥ भुज गहि अपनी उर लिआयो,श्रीचंद्र गुरु हेरी ॥४॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग रामकली घर २ ॥ पूरण सत्गुरु की सरणाई,गुरू क्रिपा सिउं परमगति पाई ॥ गए भाग बिख कंटक दूरी,अम्रित संच रिदै भरपूरी ॥१॥ ऊन रही नहिं काहूँ बात,नाम दान इस्नान द्रिढ़ायो,तम सभ नासिओ भी परभात ॥१॥ रहाउ ॥ भूल चूक उर नाहिन धारी,दास जान निज लिए उबारी ॥ काटि सिलक माया मद मोहा,बोहिथ चाड़ि न लायो होहा ॥२॥ एक संग हरि हरि गुन गाइ,धरमराज ते लिए छुड़ाइ ॥ दूजा थाउं न पेखिओ कोई,नाराइण जप ते गति होई ॥३॥ गिआन धिआन गुण अंतरि पूजा,गोबिंद दरस परस सुप भूँजा ॥ परम निधान गुरू ते पाया,श्रीचंद्र फिर जोनि न आया ॥४॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। सिमर मना हरि नाम निधाना,गुरु करुणा ते होहु सावधाना ।। खिन महि पाप कोटि परिहार,राम नाम उर अंतरि धार ।।१।। गुण गावहु गोबिंद हरि केरे ।। सावल सुंदर मधुर धुनी संग,करत रहित बंसी की टेरे ।।१।। रहाउ ।। जीव जंतु खग मीन उधारे,काक ऊलूक चील चितकारे ।। भालुक कपि म्रिग अंत न पार,हरि हरि नाम जपत भे पार ।।२।। सहसा सगरा गयो बिलाइ,राम नाम नित रहे समाइ ।। जनम जनम दुख माया मोह,जपु जपु नाम बिडारे धोह ।।३।। नाम सरी कीनो इस्नान,मन दीनो सत्गुरु को दान ।। अबिचल अचल ब्रहमपुर धाम,श्रीचंद्र को सद बिसराम ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली।। गुरु पूरे करि दीनी ओटा,मन ते पाप बिनासिओ खोटा ।। ध्रोह छोह सगले परिहरे, गोबिंद नाम रसन नित ररे ।।१।। ऐसा नाम नाराइण केरा ।। सूख सहिज आनंद का पोता, कोटि कलेस हरत इकबेरा ।।१।। रहाउ ।। साजन संगी साथी एक,दलदल निघरत की ह्वै टेक ।।

मात पिता समसर प्रतिपाला,करुणा सागर दीन दयाला ।।२।। सके भ्रात समाना रण महि,संग लरत नहि तिआगत गण महि ।। भोजन स्वादी समसर देत,निरधन धनी न उर महि भेत ।।३।। पाणि गहित पुनि छोर न जाइ,सदा क्रिपालू गोबिंद राइ ।। नाराइण लड़ दीने लाइ,श्रीचंद्र गुरु बलि बलि जाइ ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली घर ३ ।। संगति सत्गुरु देव की,तन डाहपण बिनसात ।। राम नाम के जाप ते उपजति अंतरि सांत ।।१।। सभ सुख आनंद धाम ।। नाराइण पुर पाइऐ,गुणनिधि निहचल धाम ।।१।। रहाउ ।। भ्रम भै सगल निवार कै,अबिचल पदवी पाइ ।। आवण जाणा तहँ नहीं, दुबिधा दूज न भाइ ।।२।। एका टेक गुपाल की,भटकन हो गई दूर ।। गोबिंद को जस गाइ कै,थित भे सत्त ठरूर ।।३।। प्रभु बिन नदरि न आवई,भव माया अंधिआर ।। गहिर गंभीर अथाह प्रभु,श्रीचंद्र अगम अपार ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। सभ बिधि सभ सुख पाइऐ,सत्गुरु ते हरि नाम ।। रिधि सिधि नउनिधि का, प्रभु चरनन महि ठाम ।।१।। जपु मन राम नाम सुख होइ ।। पूरा गुरु ही देवता,हरि की सैंची सोइ ।।१।। रहाउ ।। माया मोह विसरजिआ,टेक धरी गोपाल ।। आतम अंतरि प्रगटिओ,प्रभु प्रीतम नंदलाल ।।२।। गिआन चरागै चानणै,सूझत है तिंनि लोअ ।। दूजा भाउ विसारिआ,एक जोति रहहि होअ ।।३।। धरम धिआन गुण प्रगटै,मन को मेट अंधिआर ।। श्रीचंद्र पहि अति किरपा,गुरु अविनासी धार ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली।। आदि अनादि अगाध प्रभु,गुरु पूरे ते पाइ ।। हउमै दुबिधा दूर करि,हरि हरि नाम धिआइ ।।१।। माई री,जाओ न जम के धाम ।। अहनिसि हरि प्रभु सिमरिऐ,सदा सूख बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। संता संगति पाईए,चार पदारथ मोख ।। गुण गोबिंद बखानिऐ,मन ते हरिए दोख ।।२।। साध संगति सिउं बासबो,पुरी बैकुंठ सथान ।। आनंद रूप अगम प्रभु,सरब काल

सवधान ॥३॥ मन बुद्धि जाहि न जानही,वेद कतेब अनेक ॥ करता पुरुख चित आवई,श्रीचंद्र गुरु टेक ॥४॥११॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग रामकली॥ सदा सहाई संग प्रभु,बैठत ऊठत सोत ॥ रवि रहिआ सरबत्र महि,अद्भुत जोति उदोत ॥१॥ भाई रे,हउमै गरब निवार ॥ गुरु पूरे की सेव ते,पाइए अगम अपार ॥१॥ रहाउ ॥ चंदन वास बनासपति,सगरी महिक परी ॥ पारस के संग भेट के,लोहो रूप हरी ॥२॥ जीवन मुकत दयाल प्रभु,सत्गुरु परम सुजान ॥ दासन दासा होइ कै,पावत जन कलिआन ॥३॥ नाराइण गोबिंद गुरु,घट घट जहँ परगास ॥ साधु संग हरि नाम जपु,श्रीचंद्र सद रास ॥४॥१२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग रामकली॥ अपनी उर की पीर को,जे जानत नर कोइ ॥ तब ही सत्गुरु वैद ते,अउखधि सूख समोइ ॥१॥ बिखु भी अम्रित होइ ॥ जे गुरु पूरा पाईए,संजम सो मुख चोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मन खरले अभिमान को,रस बाणी को पाइ ॥ हरि भगती की अगनि धर,होत सुधा रस साइ ॥२॥

जनम मरण गति हरण की,अहै रसाइण सार ॥ जर जड़ता को परिहरे,काम क्रोध अहंकार ॥३॥ अम्रित दाता सत्गुरू,जोनि गती कट देत ॥ तरुणापन सद ही रहे,श्रीचंद्र संकेत ॥४॥१३॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ **राग रामकली** ॥ जीवन मुकत दयाल प्रभु,गुरु सरणाई लेह ॥ परिहर जम पुर मारगै,हरि हरि नाम जपेह ॥१॥ भाई रे,साधु संग सुख होइ ॥ हउमै गरब निवार के,पावै अनुभउ लोइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु करुणा ते जाणिआ,अंतरि ब्रहमबिचार ॥ मोह माया संसार का,बिनस गया अंधिआर ॥२॥ जिनि जिनि नाम धिआइआ,साध संग लिव लाइ ॥ हउमै गरब निवार कै, प्रभु महि रहे समाइ ॥३॥ सावल सुंदर मोहणा,अंतरि धुनि विसमाद ॥ पारब्रहम नित श्रीचंद्र,सेवहु गुरु परसाद ॥४॥१४॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ **राग रामकली** ॥ सत्गुरु की सरणी परे,हउमै गरब विनास ॥ सत्गुरु सेवे आपणा,सभ सुख नाम निवास ॥१॥ मन रे,गुरुमुख होइ गुण गाइ ॥ सत्गुरु सेवे लगिआ,राम नाम रस

आइ ।।१।। रहाउ ।। सत्गुरु पूरा ता मिले,जे पूरब होवै भाग ।। जनम जनम की नींद ते,मानुख पावै जाग ।।२।। जिन पूरण सत्गुरु पाइआ,तिसकी दुबिधा नास ।। पारब्रहम सभ विआपिआ, घट अंतरि परगास ।।३।। आदि जुगादी सदा प्रभु,सत्गुरु ते दरसाइ ।। दुबिधा दूजा परिहरे, श्रीचंद्र गुरु पाइ ।।४।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। जिस प्रभु करे अनुग्रह,तिस जन साधू संग ।। नाराइण हरि राम नाम,चढ़ता गूढ़ा रंग ।।१।। मन रे,साधू संगति नाम ।। पूरे गुरु ते पाईए,निहचल पद बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। सास सास प्रभु सिमरिऐ,मन तन लाइ पिआर ।। मल पापन की उतरै,काम क्रोध अहंकार ।।२।। अंतरि चानण परगटै,चौदह भुवनै लोइ ।। घट घट अंतरि रवि रहिआ,निज मन सभ अवलोइ ।।३।। गुण की साख निवार कै,पेखै ब्रहम विचार ।। अनहद नाद समाइआ,श्रीचंद्र करतार ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। जा कउ हरि प्रभु मिहर है,राम नाम जपु चीत ।। पंच दूत सभ भाग गे,जम भै ते

निरभीत ।।१।। मन रे,राम नाम लिव लाइ ।। गुरुमुख सहिज धिआन महि,इकरस सहिज समाइ ।।१।। रहाउ ।। मोह माया के जाल ते,सिमरत छूटै सोइ ।। अंतर आतम ब्रहम मय,अवर न सूझै कोइ ।।२।। किरपा करि कै आपणी,आपे लै लड़ि लाइ ।। आवागउण मिटाइ कै,आपे माहि मिलाइ ।।३।। सूरज गिआन प्रगासिआ,भरम अंधेरा दूर ।। दहदिसि एको श्रीचंद्र,पारब्रहम को नूर ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। लिव लागी हरिनाम सिउं,दसम मंडल महि थाउं ।। अचरज रूप सुहावणा, अचरज सबद अलाउ ।।१।। बिसम बिसम बिसमाद ।। ताल म्रिदंग उपंग धुनि,बीना बेणू नाद ।।१।। रहाउ ।। संख घंट बेगिणत हैं,सुर सप्ती सुर एक ।। तार मध्य मंद ग्राम की,दूजी नाही टेक ।।२।। वाद विवाद न जाणीए,आकल बिकल सरूप ।। झालर घुँघरु पाउंदे,सुर मंजीरी भूप ।।३।। छुधा पिपासा बिसरै,स्वासन गती निरोध ।। जीवन मरणा परिहरे,श्रीचंद्र हरि बोध ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग रामकली || मिथिआ द्रिस्टि बिलानिआ,हरि रामै लिव लाइ || आतम पद परगासिआ, अनुभव धुनि प्रगटाइ ||१|| गुरु पूरे की वडिआई || सभ महि एको रवि रहिआ,दूजा नहिं द्रिस्टाई ||१|| रहाउ || जीव जंत सभ तिसी के,जिसके तरवर बाग || परबत नदीआं वाह सरब, पंखी हरिण तड़ाग ||२|| सागर गागर नारि नर,तिस बिन दूजा नाहिं || रूप कुरूपी करम धरम, बिधि निखेध अवगाहि ||३|| हरि मंदर महि बसि रहिआ,एको सच्चा साह || निज मन महि ही पाईए,श्रीचंद्र गुरु राह ||४||१६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग रामकली || आवहु मीत पिआरिओ,गाईए हरि प्रभु नाम || साधू संगति बास कै,निहचल सभ सुख धाम ||१|| कामधेनु सत संग || पारब्रहम की मिहर ते,खीर पिए हरि रंग ||१|| रहाउ || जहाँ जाण ते औण नहिं,तम बिनसै बिन सूर || दहदिसि लोका लोक लौ,घट घट सत भरपूर ||२|| नित नूतन ऊजल महा,सांत मयंक सुहाइ || सीतल परमल सरद रुति,मंद बहंती वाइ ||३|| दूख

भूख पिआसा हरे,आसा मनसा चूर ।। मान अमान समान गुण,श्रीचंद्र रस मूर ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। अविनासी गुरुदेव के,सदा रहहुँ पग लाग ।। जाहिं क्रिपा ते पाइओ,पूरण ब्रहम सुहाग ।।१।। निसि अंधिआरी प्रगटिओ चंद ।। तम अगिआन बिनासिओ खिन महि,भयो परकास अमंद ।।१।। रहाउ ।। काम क्रोध लोभ मोह सभ भागे,तसकर नजर न आए ।। अहं बिनासिओ मन ते सगरा,आतम पद दरसाए ।।२।। अपनी धारी छुटकि गई हौं,ममता मत बिलानी ।। परधन परदारा परिहरि करि,अनुभउ जोति प्रगटानी ।।३।। दूजा भाउ मन ते उठ भागा,पूरब करम जगायो ।। पारब्रहम सभ एक समाना,श्रीचंद्र मुहि पायो ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली ।। सत्गुरु चरन कमल महि,टेक धरो मन मेरे ।। अनिक जोनि को भ्रमणो मिटिहै, वास करो हरि नेरे ।।१।। जिहँ जन पाई सत्गुरु धूरि ।। त्रिसना काम क्रोध मोह परिहरि,हरि कीरति

रस सिउं भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ जनम मरण को मेटिओ संसय,तम अगिआन बिनासा ॥ चार पदारथ ग्रिह ही भीतरि,पूरण होई आसा ॥२॥ लंमी धाई ते अब चूकै,जम को पैंड बिहाई ॥ भरम बिडार धरी लिव एकै,प्रभु किरपाल सहाई ॥३॥ सगल समग्री आपे पूरी,कीनी करणैहारे ॥ जपत जाप पारब्रहम श्रीचंद्र,करते पुरुख मुरारे ॥४॥२२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग रामकली ॥ भव की ओर जाइ जब देखिओ,निरधन को नहि कोई ॥ सुत दुहिता माता पितु नारी,लागत धन संगोई ॥१॥ मन मेरे,हरि हरि नाम सम्हार ॥ संग न साथ जहाँ को तेरा,तहँहू रहित संगार ॥१॥ रहाउ ॥ भाई मीत सुहिरद बंधु साक,जम ते नाहिं छुडावैं ॥ संगी साथी अति हितु चित के,अंत काल तजि जावैं ॥२॥ पग बेड़ी गल संगल डारे,भूख पिआसे ताड़ें ॥ सागर अगनि रेत तपताई,तन पर कोड़े झाड़ें ॥३॥ पारब्रहम धन की उर थाती,किंकर दूत सबाए ॥ अजपा जाप लुटावहु आगै,श्रीचंद्र सुख थाए ॥४॥२३॥

अम्रितांजली

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग रामकली घर ४ ।।

सलोक- ओम् जपत सुख पाईए,दिनस राति परभाति ।। सदा सहाई सरब थाँ,उपजावत उर सांति ।।

अस्टपदी-ओम् आदि मंत्र भगवान,ओम् जपीए लाइ धिआन ।। ओम् जपते सभ सुख पाइ,ओम् जपते निरमल थाइ ।। ओम् जपते निधि सिधि दास,ओम् जपते पूरन आस ।। ओम् जपते कमल परगास,ओम् जपते कमला दास ।। ओम् जपते अग्रज सूझै,श्रीचंद्र प्रभु ओम् बूझै ।।१।। ओम् जपते कसमल चूरे,ओम्

जपते कारज पूरे ।। ओम् जपते सहिज समाइ,ओम् जपते ऊच पद पाइ ।। ओम् जपते त्रिसना बूझै,ओम् जपते त्रिभुअन सूझै ।। ओम् जपते भूख न विआपै,ओम् जपते आतम ध्रापै ।। ओम् जपते दूखन नास, श्रीचंद्र ओम् परगास ।।२।। ओम् जपते ब्रहम गिआन,ओम् जपते पूरण धिआन ।। ओम् जपते देव सहाइ,ओम् जपते लोक सु पाइ ।। ओम् जपते अगनि विनास,ओम् जपीए सास गिरास ।। ओम् जपते निरमल मना,ओम् जपते आनंद घना ।। ओम् जपते आपा मिटै,श्रीचंद्र माया मोह छुटै ।।३।। ओम् जपत न आवागौण,ओम् जपते पावन भौण ।। ओम् जपते पावन जीहा,ओम् जपते गहरी लीहा ।। ओम् जपते गिरा पवित्र,ओम् जपते वैरी मित्र ।। ओम् जपते सुरग विहार,ओम् जपते पापन टार ।। ओम् जपते पतित पुनीत,श्रीचंद्र ओम् हितु चीत ।।४।। ओम् जपते पूरन भाग,ओम् जपते सहिज विराग ।। ओम् जपते दुबिधा भंग,ओम् जपते गूढ़ा रंग ।। ओम् जपते मन वसि आवै,ओम् जपते रूप सुहावै ।। ओम् जपते अउगुण जाहि,ओम् जपते गुण प्रगटाहि ।। ओम् जपते दरगह मान,श्रीचंद्र ओम् परमान ।।५।। ओम् जपते परम सु सिद्ध,ओम् जपते मन तन बिद्ध ।। ओम् जपते निरमल सोइ,ओम् जपते भ्रम भै खोइ ।। ओम् जपते सत्त सु पंथी,ओम् जपते छूटसि ग्रंथी ।। ओम् जपते अगनि निवारी,ओम् जपते हउमै

टारी ।। ओम् जपते परब इस्नान,श्रीचंद्र ओम् मन मान ।।६।। ओम् जपते जस त्रैलोक,ओम् जपते हरत सु सोक ।। ओम् जपते सभ ते ऊचे,ओम् जपते परम सु सूचै ।। ओम् जपते पावन देहा,ओम् जपते लोक सनेहा ।। ओम् जपते मारग सीधा,ओम् जप रस संगी गीधा ।। श्रीचंद्र गुरु प्रभ अविनासी,ओम् नाम दीन सुख रासी ।। ७।। ओम् जपते ऊजल बुद्धी,ओम् जपत अम्रित सुद्धी ।। ओम् जपते पूरण लोक, ओम् जपते प्रापत थोक ।। ओम् जपते गुपत लखाइ,ओम् जपते पदारथ पाइ ।। ओम् जपते तोट न धना, ओम् जपते खोट न मना ।। ओम् जपत नाराइण पाद,श्रीचंद्र सद ही अहलाद ।।८।।१।। **सलोक-** अविनासी सत्गुरु प्रभू,चरन कमल लिव लाइ ।। पार परत भव सिंधु ते,जनम मरन बिनसाइ ।। **अस्टपदी-** अविनासी पूरण गुरुदेव,सफल दरस अरु सफली सेव ।। पारब्रहम सत्गुरु रिद बसै, काम क्रोध मोह भै नसै ।। सत्गुरु ते निगमागम जान,मान अमान परिहर अभिमान ।। सत्गुरु सेव परमपद पाइ,सत्गुरु सेवे सहिज समाइ ।। सत्गुरु सेवे नाम निधान,श्रीचंद्र गुरु सेव प्रमान ।।१।। सत्गुरु सेवा नाम धिआइ,सत्गुरु सेवा भरम गवाइ ।। सत्गुरु सेवा सफला करम,सत्गुरु सेवा केवल धरम ।। सत्गुरु सेवा निधि सिधि वास,सत्गुरु सेवा सुफल फलास ।। सत्गुरु सेवे हउमै

जाइ,सत्गुरु सेवे निहचल पाइ ॥ सत्गुरु सेवे सदा अरोग,श्रीचंद्र गुरु ते सभ योग ॥२॥ सत्गुरु सेवे देव प्रसंन,सत्गुरु सेवे सदा धन धंन ॥ सत्गुरु सेवे सत संतोख,सत्गुरु सेवे अंतर मोख ॥ सत्गुरु सेवे मल लहि जाइ,सत्गुरु सेव कमल बिगसाइ ॥ सत्गुरु सेवे स्वरग निवास,सत्गुरु सेवत नहि जम पास ॥ सत्गुरु सेवे ऊचा होइ,श्रीचंद्र भव नयन अलोइ ॥३॥ सत्गुरु सेवे की वडिआई,हउमै जाती रोग गवाई ॥ सत्गुरु सेवे आपा बूझै,सत्गुरु सेवे भुवन त्रै सूझै ॥ सत्गुरु सेवे सफली काया,सत्गुरु सेवे परिहर माया ॥ सत्गुरु सेवे काण चुकाइ,सत्गुरु सेव एक लिव लाइ ॥ सत्गुरु सेवे मोख दुआर,श्रीचंद्र गुरु अगम अपार ॥४॥ सत्गुरु सेव पाए दस चार, सत्गुरु सेवे भरे भंडार ॥ सत्गुरु सेवा अहं गवाइ,सत्गुरु सेवा निरमल भाइ ॥ सत्गुरु सेवे तत्तु गिआन,सत्गुरु सेवे नाम निधान ॥ सत्गुरु सेवे मन निरमाइल,सत्गुरु सेवे सत का काइल ॥ सत्गुरु सेवे निरमल देही,श्रीचंद्र गुरू परम सनेही ॥५॥ सत्गुरु सेवे वेदन गिआता,सत्गुरु सेवे पुरुख बिधाता ॥ सत्गुरु सेवा फल प्रद चार,सत्गुरु सेव पदारथ सार ॥ सत्गुरु सेवा तुरियातीत,सत्गुरु सेवे हरि हरि मीत ॥ सत्गुरु सेवा मन वसि करती,सत्गुरु सेवा बुद्धि

निखरती ॥ सत्गुरु सेवे ऊच वडाई,श्रीचंद्र गुरु सेव महाई ॥६॥ सत्गुरु सेवे उत्तम संत,सत्गुरु सेवे लहत अनंत ॥ सत्गुरु सेवे दान इस्नान,सत्गुरु सेवे पद निरबान ॥ सत्गुरु सेवा करम सु थाइ,सत्गुरु ही सिउं नाम बसाइ ॥ सत्गुरु सेवे उतरे दूख,सत्गुरु सेव न विआपै भूख ॥ सत्गुरु सेवे कसमल जाइ,श्रीचंद्र गुरु आप समाइ ॥७॥ सत्गुरु सेवे होइ परगास,सत्गुरु सेवे कमल विगास ॥ सत्गुरु सेवे सफले सास,सत्गुरु सेवे आस निरास ॥ सत्गुरु सेवा गमन अकास, सत्गुरु सेवा साधु निवास ॥ सत्गुरु सेवा सद निभरंती,सत्गुरु सेवा ऊन भरंती ॥ सत्गुरु सेवा सभ ते ऊची,श्रीचंद्र को सकत न मूची ॥८॥२॥ **सलोक-** सत्गुरु जिन जन पाइआ,मन वसि कीनो ताहि ॥ सिख सत्गुरु एकै भए,एकहि माहि समाहि ॥ **अस्टपदी-** सत्गुरु सभ देवन को देव,सत्गुरु सभ स्रुति सासत्र भेव ॥ सत्गुरु निधि सिधि पूर भंडार,सत्गुरु पूज अठारह भार ॥ सत्गुरु भ्रम भै मेटनहारा,सत्गुरु हउमै करत निवारा ॥ सत्गुरु बंध अगिआन गवाइ,सत्गुरु ते हरि हरि गुन गाइ ॥ सत्गुरु काम क्रोध वसि आनै,श्रीचंद्र गुरु माहि समानै ॥१॥ सत्गुरु करम धरम का पूरा,सत्गुरु पूरण धरम का सूरा ॥ सत्गुरु सूरज गिआन परकास,सत्गुरु ते सभ पूरण आस ॥

सत्गुरु वाक्य चंद्र की जौन,सत्गुरु वाक्य पुनीतत भौन ।। सत्गुरु वाक्य रिदै का तीर,सत्गुरु वाक्य बिनासत पीर ।। सत्गुरु वाक्य मधुर मिस्टान,श्रीचंद्र गुरु सम नहि आन ।।२।। सत्गुरु सद जीवन का दाता,सत्गुरु पारब्रहम समवाता ।। सत्गुरु माया मल मोह हरता,सत्गुरु सद अभरन का भरता ।। सत्गुरु अगनि निवारी जाल,सत्गुरु कीनो वसि महा काल ।। सत्गुरु चंदन वास वसाई,ब्रिख भए परमल सरसाई ।। सत्गुरु हिमकर सीतल बानी,श्रीचंद्र सत्गुरु ब्रहम गिआनी ।।३।। सत्गुरु पारब्रहम का रूप,सत्गुरु गिआन शक्ति धर भूप ।। सत्गुरु मात पिता सुत बंधु,लोक परलोक निबहतो बंधु ।। सत्गुरु सीतल पवन झुलारा,सत्गुरु धिआन खड़ग हउ मारा ।। सत्गुरु अतुल शक्ति भंडार,लोभ मोह मेटत जंजार ।। सत्गुरु तीरथराज इस्नान,श्रीचंद्र गुरु मोखद प्रान ।।४।। उत्तम पद सत्गुरु निरबान,सत्गुरु घट घट बोवत धान ।। सत्गुरु काटिआ भरम अंधेरा,सत्गुरु हरि दिखलायो नेरा ।। सत्गुरु शक्ति राखसी हंत,सत्गुरु निरमल तत्तु द्रिगसंत ।। सत्गुरु संतति सद अविनासी,सत्गुरु सुधा सरोवर भासी ।। सत्गुरु परम पुरुख प्रभु हरी,श्रीचंद्र गुरु ही नरहरी ।।५।। सत्गुरु मीत सदा उर संगी,सत्गुरु नाराइण

त्रैभंगी ।। सत्गुरु मसक खगिंद बणाइ,सत्गुरु चटिक बाज खवाइ ।। सत्गुरु करत स्रिगालहु शेर, सत्गुरु काढत घूमनघेर ।। सत्गुरु चंचल चीत टिकाइ,सत्गुरु गोबिंद गुण समवाइ ।। सत्गुरु अंतर की गति जाणै,श्रीचंद्र गुरु प्रभु कै भाणै ।।६।। सत्गुरु गुपत प्रगट परगासै,सत्गुरु दयानिधान विकासै ।। सत्गुरु देत निमाने मान,सत्गुरु देतो पद निरबाण ।। सत्गुरु ते सुगनंतर सास,सत्गुरु अंधकार बिनास ।। सत्गुरु सुरगुण का दातार,सत्गुरु पूरण असुर संघार ।। सत्गुरु दुरगम गढ़ तोड़ाया,सत्गुरु बाधा मुकत कराया ।। सत्गुरु चौदसि भुवनहुँ ऊचा,श्रीचंद्र सत्गुरु अति सूचा ।।७। सत्गुरु कै ग्रिह नाम निवास,गिआन धिआन संजम सुख रास ।। सत्गुरु कै आतम परगास,सत्गुरु आतप करता नास ।। सत्गुरु हरि प्रभु पठिआ आप,सत्गुरु गोबिंद जपिआ जाप ।। सत्गुरु पारब्रहम प्रगटाया,सत्गुरु संसयावरण मिटाया ।। सत्गुरु ते सिख सत्गुरु होआ,श्रीचंद्र परमेस्वर ढोआ ।।८।।३।। **सलोक-** जिनि जन सेविआ भाउ करि,पूरण सत्गुरु देव ।। ते सद ही पूरण भए,पूरण ब्रहम समेव ।। **अस्टपदी-** नाम दान सिउं पूरण होइ,पारब्रहम पूरण अवलोइ ।। पूरण गुण पूरण राज जोग,पूरण धन पूरण सुख भोग ।। पूरण वेद वाक्य

परतीति,पूरण संजम पूरण प्रीति ॥ पूरण गिआन धिआन इस्नान,पूरण दरगह पाया मान ॥ पूरण ते पूरण सभ होइ,श्रीचंद्र कबि घाट न जोइ ॥१॥ आदि अंत मध्य जन पूरा,सुर नर असुर बांछते धूरा ॥ पूरण सागर रतन अपार,पूरण चानण दहदिसि सार ॥ पूरण तेज प्रताप सुहावा, पूरण छत्र चहुकुंटी छावा ॥ पूरण कला चंद प्रगटाई,पूरण जोति निरंतर पाई ॥ पूरण जपिओ हिरदै जाप,श्रीचंद्र सो पूरण आप ॥२॥ पूरण सांत दांत सुख संग,पूरण करम धरम सुभ अंग ॥ पूरण भगति प्रेम रस पूरी,पूरण निहचलता मगरूरी ॥ पूरण अस्ट दसन की साखी,पूरण नाम समग्री राखी ॥ पूरण सिम्रिति पूरण वेद,पूरण घट घट जाता भेद ॥ पूरण पारब्रहम मन बसिआ, श्रीचंद्र पूरण रस रसिआ ॥३॥ पूरण आसन पूरण जत,पूरण जप पूरण परतत ॥ पूरण राज छत्र सिर सोह,पूरण प्रभा न विआपत मोह ॥ पूरण धनुख प्रत्तंच रु तीर,पूरण ते भागत भव भीर ॥ पूरण एक अखंड अनीह,पूरण ही मेटत जग लीह ॥ पूरण द्रिस्टि पदारथ गिआत,श्रीचंद्र पूरण परभात ॥४॥ पूरण लय पूरण उतपत,पूरण प्रगटिआ जप तप सत ॥ पूरण आया पूरण गया, पूरण पूरण पूरण भया ॥ पूरण धरम राम नाम आस,पूरण भ्रमन कीनो नास ॥ पूरण दसा

अलमस्त पुनीत,पूरण धरणी पावन कीत ।। पूरण पायो परम निधान,श्रीचंद्र पूरण भगवान ।।५।। पूरण कुंभक स्वास ठहिराया,पूरण अनहद नाद वजाया ।। पूरण चेतिओ सगलो गाम,पूरण निहचल अबिचल धाम ।। पूरण किरपा कटाख्य विलोक,पूरण पूरण हर दिए सोक ।। पूरण उपमा परम पुनीत,पूरण आनंद गीत संगीत ।। पूरण त्रित्त ताल गत पाव,श्रीचंद्र पूरण करि भाव ।।६।। पूरण भंग अभंग वखान,पूरण तान रिदै अंगान ।। पूरण सुर राजेस धनेस,पूरण नाद वेद सुभ देस ।। पूरण गुरु जत द्रुत मंदेसा,पूरण रूप सिंगार विसेसा ।। पूरण कल कला प्रबीन,पूरण तंती पंच अरु बीन ।। पूरण नाइक नाइका भाव,श्रीचंद्र सिख पूरण दाव ।।७।। पूरण होयो सगरो साज,पूरण बाजिओ सबद अगाज ।। पूरण जंत्र मंत्र अरु तंत्र,पूरण अजपा जाप निरंत्र ।। पूरण अस्टादस सभ सिद्धि,पूरण पाई सगली निधि ।। पूरण दीखिआ करणी कीरति,पूरण सुखमा सोभा सीरति ।। पूरण दास पूरण गुरु कीन,श्रीचंद्र तिहँ सदा अधीन ।।८।।४।। **सलोक-** मन मेरे प्रभु नाम जप,उदै भाग बड होहिं ।। आवागउन निवार कै,परमातम संग सोहिं ।। **अस्टपदी-** अकल कला को थाउ न कोई,जो पेखी सो नाहिन होई ।। नैन तहाँ कछु पेख न साकै,रसना भाखत नाहिन वाकै ।। कर बिन करम चलन

बिन पैर,रिदै धरम बिन धंधै धैर ।। घ्राण सुगंध विहून परे हैं,जीभ रसन सगरेऊ हरे हैं ।। जहाँ वास दुरगंध विथारी,श्रीचंद्र कल छूटी सारी ।।१।। जास अगनि ते डरता रहै,सोऊ तास देह को दहै ।। जो पहिरत बो सुंदर कपरे,सोऊ नगन पखालत पखरे ।। जो भूसन भूसित सुभ अंगा,तेऊ बहित जात जल गंगा ।। जो संधिआ त्रै करत इस्नाने,बंधी मीत जुरे हितु ठाने ।। जो दारा नित करती प्रीत, श्रीचंद्र भागी विपरीत ।।२।। पूत बंधु लग मेदनि बाटे,धन मालन को लागसि छाटे ।। मंडप महिल अटारी घनी,इक खिन ताकै अपरो धनी ।। बाग भए माली बिन खाली,आइ बिराजै अन बनमाली ।। भूपति दीनी मरघट थाइ,खिन भर कीनी है है हाइ ।। जिनि को सगरी आयुस पारा, श्रीचंद्र सो भए किनारा ।।३।। देह ज्वलित बहु भेदे जोर,ज्वलितत ही दीनो सिर फोर ।। करम धरम सभ पंडित नासिओ,मंत्रन पठित सु प्रेत प्रगासिओ ।। पुंन दान जो जीवत कीनो,कहित प्रेत ते सगरो छीनो ।। जमदूतन घेरिओ मग लायो,अधिक ताप करि अपर छिनायो ।। नगन अंग इक एऊ जीउ,श्रीचंद्र अपरन सुख सीउ ।।४।। बारू तपत माहि पथ डारा,मुख त्रिसना सोखत बिन बारा ।। जब पुंनन जम किंकर लीआ,एक पिआला पानी दीआ ।। सर अगनी में पुनि चलवाया,कोऊ संग न साथ सुहाया ।।

तेज प्रभाव तपत दुख विआपा,सनमुख सगरे आए पापा ।। बिललावत अस्तुन को द्वार,श्रीचंद्र नहिं सुनत पुकार ।।।५।। मल मूत्र सरिता पुनि पाई,अति दीरघ विस्तार महाई ।। पंच सहस कोसन को पाड़,महा दुरगंधित देत दहाड़ ।। किंकर अंतक डारिओ ताहिं,गोते खावत मरतो नाहिं ।। बिन तरने तरले भरिआहि,कउन सुनै किहँ कउ परवाहि ।। जिमि किमि लागिओ परलै पार,श्रीचंद्र पुनि भी जम मार ।।६।। असीपत्र बन अग्रज आयो,कोड़न मार परी बिललायो ।। देही बसन बिहीन कराई,दीन चलाए पंथ लमाई ।। छीजत तन ब्रिण रुधिर बहंत,पांव फिसल इत ऊत गिरंत ।। अतिआतुर औ छुधातुर भयो,घाव बिना कोऊ थाव न रहियो ।। कठिन घोर दुख सिंधु अथाह,श्रीचंद्र कछु चलत न वाह ।।७।। थूल देह के कस्ट घनेरे,जानत नर भोगत घर घेरे ।। नाती पूत सहाइक नारी,साक संबंधी अपर अपारी ।। तऊ मानुख महा दुखवंता,हाए हाए कूकत पुकरंता ।। जहाँ न सैन मित्र सुखकारी,सुननहार को नाहिं पुकारी ।। ता कउ कैसे करहि वखान,श्रीचंद्र राखै भगवान ।।८।।५।।

सलोक- बंधन ते छुटकाइ प्रभु,राम नाम जप जाप ।। पसरी असुरी सत्तता,असत्तता कै माप ।।

अस्टपदी- माया ममता असत्तता लाई,अनिक प्रकारी ब्योंति बनाई ।। असतै मात पिता अरु

नारी,असतै चार ओर परिवारी ।। असतै सुत कन्या जामाता,असतै साक संबंधी भ्राता ।। असतै देह खेह की साजी,असतै गज सिअंदन अरु बाजी ।। असतै असन रु बसन अमोल,श्रीचंद्र पालकि झूल चंडोल ।।१।। असतै धरनी मंडल सारा,खेती बाड़ी बाग बहारा ।। असतै पाट पटंबर वेसा,असतै सिआम सुधारे केसा ।। असतै सिहजा बिसद बिछाई,असतै धूप सुगंधित वाई ।। असतै खोड़सि कीन सिंगार,असतै पानै बदन रंगार ।। असतै भरे अनाज भंडार,श्रीचंद्र असतै पासार ।।२।। असतै युवा अवस्था केल,असतै मेली मेला मेल ।। असतै मीत चीत हितकारी,असतै सगल समग्री पसारी ।। असतै बाम धाम सुखदाई,असतै धन की आई जाई ।। असतै ऊँच धुजा फहरंती,असतै नाद वाद त्रितंती ।। असतै राग रूप अनूपा,श्रीचंद्र असतै पद भूपा ।।३।। असतै उपबन पत्री पत्र,असतै झूलत दहदिसि छत्र ।। असतै चरम बरम चितकारी,असतै ढाल बान असि धारी ।। असतै तिलक चंदनहि लाइ,असतै अंग अंग दमकाइ ।। असतै झूलत हाथी घोरै,असतै उपबन नाचत मोरै ।। असतै दहदिसि विआपी सोभ,श्रीचंद्र जग असत प्रबोध ।।४।। असतै लिआइ तंबोल तंबोली,असतै सुंदर सारी चोली ।। असतै म्रिदुल माधुरी गिरा,असतै मेदनि अंतम सिरा ।। असतै जोजन कोस किदारा,

असतै ग्राम मंडल संसारा ।। असतै सिंधु मेखला सारी,असतै संपति भुअन भंडारी ।। असतै वाहन अपर विमाना,श्रीचंद्र नर असत भुलाना ।।५।। असतै राग नाद अरु नाच,असतै रंक भूप किय याच ।। असतै रंग बरंगी बसन,असतै नाना ढंगी जसन ।। असतै ऊजल पट अंगधारी,असतै भगवाधार भिखारी ।। असतै सिआह पीत हरिआई,असतै मखतूली दरिआई ।। असतै वेस अनंत प्रकारी,श्रीचंद्र तन असत विकारी ।।६।। असतै महिल मुनारे अटा,असतै जोगी धारी जटा ।। असतै बिभूती सिंङी नाद,असतै आसण बैसिओ बाँध ।। असत लंगोटा सेली मेली,असत सुधारे चेला चेली ।। असत सिंघासन चमर झुलारे,असतै ही सिर धारी नारे ।। असत बंदीजन अरु भाट,श्रीचंद्र असतै सभि ठाट ।।७।। असतै हउमै बंधन पाया,असतै अकल कला वरताया ।। असतै माया द्रिस्टि पसार,असत उठायो सिर पर भार ।। असत संकल्प विकल्प मझार,असतो समाधान निरधार ।। असत द्रिस्टावै अदभुत खेल,सत न पेखिऐ युकती मेल ।। असत लोक सभ पेखन जोग,श्रीचंद्र असतै रस भोग ।।८।।६।। **सलोक-** हउमै माया मोहिआ,थिरता लहित न कोइ ।। सुत बनिता धरणी सकल,बिनस जाति दुख होइ ।। **अस्टपदी-** हउमै धरती मेर बखानी,हउमै बन उपबन

अभिमानी ॥ हउमै सुंदर बाग बगीचै,हउमै माली पानी सीचै ॥ हउमै जूही बेलि चमेली,हउमै लाए अतर फुलेली ॥ हउमै साख रवस विसतार,हउमै लता नम्रित फल भार ॥ हउमै सैर करत मन भाया,श्रीचंद्र हउमै उर छाया ॥१॥ हउमै तन पिखि सुभ्र सरूप,हउमै पहिरण बसन अनूप ॥ हउमै नैनी पेखत भला,हउमै वासन लेवत खला ॥ हउमै मुखड़ा चंद समान,हउमै भ्रिकुटी काम कमान ॥ हउमै द्रिग कटाछ किअ बाना,हउमै त्रिअन चलावत घाना ॥ हउमै मनसिज माहि विआपा,श्रीचंद्र हउमै संतापा ॥२॥ हउमै सुंदरि नारी संग,निसदिन करतो केलि अभंग ॥ हउमै खोड़सि साज सिंगार,मिलत बाम पर चित हित धार ॥ हउमै रति द्रिढ़ अंग मझार,हउमै पूत सुता परिवार ॥ हउमै पेखत अधिक कुटंबु,अधिकै ही मुख पूरत अंबु ॥ हउमै धावत गावत सारे,श्रीचंद्र हउमै बबकारै ॥३॥ हउमै बाहूदंड कठोर,हउमै वसतु पराई चोर ॥ हउमै भुज बल सिउं मतवाला,हउमै मदिरा पीवत पिआला ॥ हउमै जार बनत विगसायो,हउमै दुश्मन मार गिरायो ॥ हउमै बाजी बाजी लाइ,हउमै सिअंदन धरति सजाइ ॥ हउमै करि करी असवारी,श्रीचंद्र हउमै पासारी ॥४॥ हउमै स्रुति सासत्र वखान,हउमै वकता निखल पुरान ॥ हउमै गिआन उपनिसद पूर,हउमै संस

विपरये चूर ॥ हउमै गिरा म्रिदुल संभाखण,हउमै गुपत प्रगट करि भाखण ॥ हउमै सूरवीर पिखिआत,हउमै बात बात बतरात ॥ हउमै जाति कुलह वडिआई,श्रीचंद्र हउमै ऊचाई ॥५॥ हउमै सरब कला परबीन,हउमै धरणि बिगानी छीन ॥ हउमै माल पसू गो महिखी,हउमै जन गन बिचरत सहखी ॥ हउमै कनक खजूर अरु रांगा,हउमै तामर पीतर सांगा ॥ हउमै पदमराग मणि पूर,हउमै बज्र प्रवाल लसूर ॥ हउमै जन धन अधिक पसारा,श्रीचंद्र हउमै अहंकारा ॥६॥ हउमै ऊचै महिल अटारी,चूने गज चित्रित चितकारी ॥ हउमै दास दासिआं संग,हउमै आनंद गीती रंग ॥ हउमै ऊचै तखत विराजै,हीरे मुकता जटिते ताजै ॥ हउमै हुकम चलाइ अरोक,हउमै घावत जनन असोक ॥ हउमै रावत सीस झुकाइ,श्रीचंद्र पेखत चहुँधाइ ॥७॥ हउमै निधि सिधि वसि कर राखी, हउमै जहँ तहँ होवत साखी ॥ हउमै गमनत है आकास,हउमै धरत न अन की आस ॥ हउमै नाग न डासित अंग,हउमै ब्रिसचिक छुहत न डंग ॥ हउमै सगरे तीरथ न्हान,हउमै गज रथ बाजी दान ॥ हउमै मन विआपिआ नहि जानै,श्रीचंद्र गुरु परम निधानै ॥८॥७॥ **सलोक-** पहु फूटी हउमै गई, संत संग लिव लाइ ॥ भरम अंधेरा मिट गया,उदिओ मित्र महाइ ॥ **अस्टपदी-** संत उदै रवि भयो

महान,किरण गिरा पसरी असमान ।। भरम अंधेरा सगल विनासा,कमल दास विगसे चहुँ पासा ।। निरमल बुद्धी आतप तीखी,वेद भ्रस्ट पंथी नहिं दीखी ।। गुरुमुख चटिका बहु चुहचानी,चुगत चोग गुण ग्राम महानी ।। तसकर विभिचारी लख दुरे,श्रीचंद्र संतन संग दुरे ।।१।। संतन राम नाम धुनि लाई,बरखा सांति घटा वरसाई ।। तपत विनास मनीखा धरणी,त्रिण पल्लव हरि भगती रवणी ।। अंकुर प्रेम किरखि संघाता,उपजी उर किंकर विखिआता ।। नियम भोग भोगत सुख संगा,छुधा पिपासा कीनसि भंगा ।। त्रिपत भए बिनसी अन ईहा,श्रीचंद्र संतन रस लीहा ।।२।। संत आए अविनासी राम,संत उतर आए परमधाम ।। संत ही छीरसिंधु ते आइ,बैकुंठहुँ धरणी पधराइ ।। संत देवतन के महादेवा,संत ही पारब्रहम को भेवा ।। संगत संत सुधरमा राजी,हरि अम्रित पीवत त्रिपताजी ।। जनम मरण कटि अमर भए हैं,श्रीचंद्र गुरु संत निमये हैं ।।३।। संत करत नीचन ते ऊच,संत संग हरि जन भे पूच ।। संत संग सीतल मन छाती,संत संग हिरदै निभ्रांती ।। संत संग उर महि प्रभु पेखै,संत संग जम छूटे लेखै ।। संत संग आतम रस रसिआ,संत संग अन जोनि न बसिआ ।। संत संग बंधन बिनसए,श्रीचंद्र भै ते निरभए ।।४।। संत संग गोबिंद धिआया,संत संग नाराइण गाया ।। संत संग

कीरति हरि नाम,संत संग आनंद विस्राम ।। संत संग गुण ऊतम होइ,संत संग मन निरमल होइ ।। संत संग अंतर परगास,संत संग आतम विस्वास ।। संत संग परमेस्वर पाइऐ,श्रीचंद्र मोह छोह मिटाइऐ ।।५।। संतन संगत पड़दा टूटै,संतन संगत हउमै छूटै ।। संतन संगत जीवन मुकत,संतन संगत निरमल जुगत ।। संतन संगत काम विनास,संतन संगत पूरत आस ।। संतन संगत सूख निधान,संत संग मिलतो भगवान ।। संत संग आवै नहि जाइ,श्रीचंद्र पारब्रहम समाइ ।।६।। संत संग माया गई भाग,संत संग लागै हरि लाग ।। संत संग अगिआन निवारी,संत संग दिब्य द्रिस्टि निहारी ।। संत संग ते सूखा हरिआ,संत संग ते अफरा फरिआ ।। संत संग अजरा उर जरिआ,संत संग ते अभरा भरिआ ।। संत संग बड वकता मूक,श्रीचंद्र संत संग अचूक ।।७।। संत संग पिंगल लहि टांग,संत संग कातर लहि डांग ।। संत संग मिलि अकह कहाया,संत संग पूरण हरि पाया ।। संत संग तीरथ इस्नान,संत संग प्राणन लौं दान ।। संत संग बानी बिगसानी,संत संग ऊजल भए प्रानी ।। संत संग परमातम मिलिआ,श्रीचंद्र निज उर महि हिलिआ ।।८।।८।। **सलोक-** सीतल छाती मन सुखी,साधु वचन उर धार ।। आतम राम निहारिआ,अंतक दूत निवार ।। **अस्टपदी-** साधुन

निज मन साधन कीना,प्रभु के नाम रते जल मीना ।। साधुन हउमै तन की तिआगी,प्रेम प्रकासी चकमक आगी ।। साधुन बूझी जोती बाली,साधुन प्रगटायो बनमाली ।। साधुन नाम निधान बताया, गुपता धन धर तली दिखाया ।। साधुन काटे सगरे फंदा,श्रीचंद्र साधुन हरि धंधा ।।१।। साधु द्रिढ़ावै गोबिंद नाम,साधु द्रिढ़ावै अबिचल धाम ।। साधु द्रिढ़ावै करणी कीरति,साधु द्रिढ़ावै रामहि की रति ।। साधु द्रिढ़ावै करम सुकरमा,साधु द्रिढ़ावै निहचल धरमा ।। साधु द्रिढ़ावै ब्रहम गिआन,साधु द्रिढ़ावै अनुभउ धिआन ।। साधु द्रिढ़ावै पद निरबान,श्रीचंद्र साधुन कुरबान ।।२।। साधु दरस मल मोह निवारे,साधु दरस भव फंध बिदारे ।। साधु दरस माया सिलक काटी,साधु दरस तम निसि पहु फाटी ।। साधु दरस जम दूत नसाए,साधु दरस बैकुंठहि पाए ।। साधु दरस जप तप संतोख, साधु दरस उपजे उर मोख ।। साधु दरस दूखन को नास,श्रीचंद्र धर साधुन आस ।।३।। साधु दरस ते सफल सु घाल,साधु दरस ते रोगन गाल ।। साधु दरस मन निरमल करत,साधु दरस नर हरि हरि ररत ।। साधु दरस पापन मल धोत,साधु दरस अवगुण सभ खोत ।। साधु दरस ते काया सुखी,साधु दरस व्रिति अंतरमुखी ।। साधु दरस ते अनुभउ फुरत,श्रीचंद्र सिर चामर ढुरत ।।४।। साधु संग हरि

भजत पवित्त,साधु संग वैरी हितु चित्त ।। साधु संग नीचह ते ऊच,साधु संग कलिमल किल मूच ।। साधु संग सुभ तीरथ वास,साधु संग नाराइण पास ।। साधु संग कीरति प्रभु नाम,साधु संग सद हरि गुण गाम ।। साधु संग लिव अनहद नाद,श्रीचंद्र पेखै विसमाद ।।५।। साधु संग स्तुति सासत्र गिआन,साधु संग नित पाठ पुरान ।। साधु संग धुनि गान संगीत,साधु संग इक प्रभु सिउं प्रीत ।। साधु संग गगनंतर वास,साधु संग हरि सास गिरास ।। साधु संग जाने सभ ब्रहम,साधु संग बिनसावत भरम ।। साधु संग अंतरगति बूझै,श्रीचंद्र त्रैदेवन सूझै ।।६।। साधु संग अमरन महि वसै,साधु संग कलि दोख विनसै ।। साधु संग ते लछमी दासी,साधु संग रिधि सिधि अनासी ।। साधु संग गति अगम लखाइ,साधु संग मुकतो पद पाइ ।। साधु संग सीतल मन होइ,साधू संग अंधेरे लोइ ।। साधु संग माया ते परे,श्रीचंद्र हरि चरनन धरे ।।७।। साधु संग पंकज ह्वै सीधा,साधु संग कुंडलि को बीधा ।। साधु संग सुखमन को जाप,साधु संग बिनसै त्रै ताप ।। साधु संग नासंत विरोध,साधु संग ह्वै आतम बोध ।। साधु संग नउनिधि भरपूर,साधु संग हरि हरि गुण मूर ।। साधु संग की कीमत नाहि,श्रीचंद्र रतनाकर थाहि ।।८।।६।। **सलोक-** जटा जूट सिर पर धरे,फटकी मुंद्रा कान ।। भेख बनाए मिलत

नहि,परिपूरण भगवान ।। **अस्टपदी-** पारब्रहम प्रभु अंतरजामी,परिपूरण लघु दीरघ सुआमी।। सरब विआपक देवन देव,जीव जंतु उर जानत भेव।। गज चीटी लौं इकरस फैला,कैसो ऊजल कैसो मैला ।। वेसी मिलत न काहूँ भाता,जटाजूट धारै अगिआता ।। मुंद्रा कान फार जो पहिरी,श्रीचंद्र हरि पाइ न लहिरी ।।१।। मन विआपिओ धन कंचन रूपा,कस कै होइ विराजहुँ भूपा ।। जातरूप सिर छत्र फिराऊँ,मुकुट धार निज हुकम चलाऊँ ।। आगिआकारी ह्वै हैं दासा,निसदिन धरहि हमारी आसा ।। कर माला फेरत बड जोरा,प्रभु का रंग न लागा भोरा ।। करतो भगवो भेख भुलाना,श्रीचंद्र नहि संग सधाना ।।२।। देह रमाई भसम मसान,गोपीचंदन तिलक सुहान ।। ऊरध पुंड त्रिपुंड बनायो,कर लोटा अधिकै चमकायो ।। पाद पावरी चरम बिहीनी,निज कर संग रसोई कीनी ।। अन सीअल बसनन पहिरावा,क्रिया करम विसतार कमावा ।। प्रिव्रित्ति दीरघ दहदिसि फैला,श्रीचंद्र हरि प्रभु बिन मैला ।।३।। गावत गीत रबाबी आगै,ढोल म्रिदंग पखावज लागै ।। धुनि मंजीरन रुणझुणकारी,इकरस ताल बजावत तारी ।। न्रित अखारा खूब जमायो,हाव भाव युत चाव बढायो ।। नर नारी चहुँघा रहि छाई,ता थै ता थै पाव चलाई ।। श्रीचंद्र हरि भगति न होई,लोक दिखावै मिलत

न ढोई ॥४॥ मुख वकता हरि भगति कहानी,म्रिदुल मधुर मनोहर बानी ॥ ऊजल धोती तिलक कपाला,गर विगसावति तुलसी माला ॥ मुंडी कर संकेत हिलावै,अनिक जतन सिउं भव डहकावै ॥ लाल चोलनै घेर घुमाया,रिदै पुकारत माया माया ॥ आदि पुरुख प्रभु नैक न जाना,श्रीचंद्र मद मत्त भुलाना ॥५॥ दंभ धार साधी सुर पवना,द्रब्य चाह करि किअ बन गवना ॥ तीरथ सुरसरि तन पखलावा,जगननाथ का दरसन पावा ॥ कासी कांची दुआरावती,पुरी अवधि न्हायो सरस्वती ॥ संग भीर नर लीन सिधायो,फिरत फिरत बहु काल बितायो ॥ सप्तै सागर कीन इस्नाना,श्रीचंद्र भ्रमिओ उदिआना ॥६॥ मौन साध मंदर थित कीना,दूधाहार बरत निज लीना ॥ फलोहार धरनी तलपाई, कंद मूल वलकल पहिराई ॥ सीत ताप बरखा तन जारा,घने दिवस रह पौनाधारा ॥ निराहार अधिक दिन कीआ,हठ मारग साधिओ करि हीआ ॥ श्रीचंद्र प्रभु सिमरन रस,नहिं आयो तौ सिर पर भस ॥७॥ बिन गुरु नहि हरि सिमरन पाइए,हरि सिमरन बिन हठ भरमाइए ॥ हठ करि जोग न आवत हाथ,जोग बिना रस सुधा न पाथ ॥ सुधा पिए बिन आनंद नाहि,बिन आनंद उर अगनी दाहि ॥ अनल बिनासै साधू संग,मन त्रिपतासै भगती रंग ॥ भगति भाइ मति बुधि भरपूर,श्रीचंद्र

साधू पद मूर ॥८॥१०॥ **सलोक-** हरि हरि हरि आराधिऐ,बिधि निखेध परितिआग ॥ साध संग उर प्रगटिओ,नाराइण वडभाग ॥ **अस्टपदी-** हरि सिमरन ते मिटत जंजाल,हरि सिमरन काटे जम काल ॥ हरि सिमरन ते छूटे लेखा,हरि सिमरन ते छुटके भेखा ॥ हरि सिमरन पापा मल खोइ, हरि सिमरन उर निरमल होइ ॥ हरि सिमरन ते हउमै मारी,हरि सिमरन ते अनुभउ तारी ॥ हरि सिमरन हरि की जब मया,श्रीचंद्र करि करुणा दया ॥१॥ हरि सिमरत हरि चरण निवास,हरि सिमरत सतसंगति वास ॥ हरि सिमरत सभ जाइ बलाइ,हरि सिमरत अनुभउ प्रगटाइ ॥ हरि सिमरत सूरज उजिआरा,हरि सिमरत मिटिआ अंधिआरा ॥ हरि सिमरत जन पूरब भाग,हरि सिमरत संतन पग लाग ॥ हरि सिमरत नहिं विआपत काल,श्रीचंद्र हरि सिमरन भाल ॥२॥ हरि सिमरत सभ कारज पूरे,हरि सिमरत कबहूँ नहिं झूरे ॥ हरि सिमरत नहिं विआपै काड़ा,हरि सिमरत बिनसै सभ झाड़ा ॥ हरि सिमरत सभ सिद्धन मेला,हरि सिमरत आनंदित केला ॥ हरि सिमरत नर चढ़ै सुमेर,हरि सिमरत नहिं जोनी फेर ॥ हरि सिमरत धरणी को थंभ,श्रीचंद्र हरि सिमरन खंभ ॥३॥ हरि सिमरत नाहीं दुख रोग,हरि सिमरत पूरण बिधि जोग ॥ हरि सिमरत संतन

कै संग,हरि सिमरत मद मत्त अभंग ।। हरि सिमरत बिघनन को नास,हरि सिमरत आतम परकास ।। हरि सिमरत रसकस भरपूर,हरि सिमरत कसमल सभ चूर ।। हरि सिमरत स्त्रिस्टी को राजा,श्रीचंद्र अनहद अगाजा ।।४।। हरि सिमरत सिर अचल धराइ,हरि सिमरत बैकुंठ समाइ ।। हरि सिमरत बिख अम्रित होइ,हरि सिमरत प्रगटै हरि लोइ ।। हरि सिमरत उर परम पुनीत,हरि सिमरत वैरी सभ मीत ।। हरि सिमरत चूकै सभ लेखा,हरि सिमरत मेटी सभ रेखा ।। हरि सिमरत आनंद अपार,श्रीचंद्र निसि दिओति समार ।।५।। हरि सिमरत माया मोह छूट,हरि सिमरत हउमै गई हूट ।। हरि सिमरत तम भरम बिनास,हरि सिमरत सत सहिज परगास ।। हरि सिमरत मल अंतर खोइ,हरि सिमरत मुकता अवलोइ ।। हरि सिमरत नहिं करत विगार,हरि सिमरत के उतरसि भार ।। हरि सिमरत मुख उत्तम लेख,श्रीचंद्र सिमरन निरपेख ।।६।। हरि सिमरत भनि मीठी बानी, हरि सिमरत पद चतुरथ धिआनी ।। हरि सिमरत पावत निरबान,हरि सिमरत अपरंपर मान ।। हरि सिमरत काटत अपकरम,हरि सिमरत प्रगटित सुभ धरम ।। हरि सिमरत त्रिसना सभ बुझै,हरि सिमरत हरि ही संग लुझै ।। हरि सिमरत चालै सहुँ मौत,श्रीचंद्र सिमरत हरि सौत ।।७।। हरि

सिमरत नहिं इंद्रिअ स्रौत,हरि सिमरत कै हरि हरि गौत ।। हरि सिमरत अद्‌भुत रस पाया,हरि सिमरत की पलटी काया ।। हरि सिमरत अचरज तमासा,हरि सिमरत बिनसै भव आसा ।। हरि सिमरत अभिमान बिलाइ,हरि सिमरत निज रहहि समाइ ।। हरि सिमरत सिर सूखा सूख,श्रीचंद्र की रही न भूख ।।८।।११।। **सलोक-** परमेस्वर फिटकारिआ,लख चउरासी पेल ।। कूकर सूकर तिरिअक जोनि,निंदक दीनो मेल ।। **अस्टपदी-** संत का निंदक नित मल भखी,संत निंदक की नाही अखी ।। संत निंदक उर अगनि मचाई,संत निंदक मुख कालख छाई ।। संत निंदक रति रहित कुकरम,संत निंदक का थोथा धरम ।। संत निंदक पचिआ अभिमान,संत निंदक की कूड़ जबान ।। संत निंदक परत्रिय अनुगामी,श्रीचंद्र प्रभु पुर नहिं ठामी ।।१।। संत निंदक परिहरिआ लोक,संत निंदक उर महि सद सोक ।। संत निंदक परलोकहुँ गया,संत निंदक ते भला न भया ।। संत निंदक चित पांचहुँ आग,संत निंदक धुर माड़े भाग ।। संत निंदक मिलिआ संग भूत,संत निंदक कै होइ न सूत ।। संत निंदक चित राग द्वेस,श्रीचंद्र कुलघाती भेस ।।२।। संत निंदक कै नहि गुण कोइ,संत निंदक कै दुबिधा दोइ ।। संत निंदक अपराधिनि पूर,संत निंदक मुख लिपता धूर ।। संत निंदक सुरपुर ते गिरे,संत

निंदक कै लाला परे ॥ संत निंदक नहिं ईत न ऊत,संत निंदक कुल नीच कुपूत ॥ संत निंदक नित खाइ पुरीख,श्रीचंद्र मन निंदा ईख ॥३॥ संत निंदक का कौड़ा बोल,संत निंदक विखिआ का घोल ॥ संत निंदक चित काला काउँ,संत निंदक इंद्रिअ रस ठाउँ ॥ संत निंदक दुहुँ लोक धकेला,संत निंदक जम नरके ठेला ॥ संत निंदक हरकाया कुत्ता,संत निंदक फड़ जोनी जुत्ता ॥ संत निंदक सूअर गूंह खाइ,श्रीचंद्र नहिं ठौर सु पाइ ॥४॥ संत निंदक का काला वेस,संत निंदक का काला देस ॥ संत निंदक संतति ते हीन,संत निंदक का नाहीं दीन ॥ संत निंदक निगुरा भरमाइ,संत निंदक कत टिकण न पाइ ॥ संत निंदक बण छड़ा भिड़ै,संत निंदक का थाउँ सु भिड़ै ॥ संत निंदक परमेस्वर धक्का,श्रीचंद्र ताकत हक्का बक्का ॥५॥ संत निंदक कै बिफलै काज,संत निंदक का बिनसत राज ॥ संत निंदक सिर पापन पोट,संत निंदक चित खोटे खोट ॥ संत निंदक का नरकै वास,संत निंदक कै निहफल सास ॥ संत निंदक बुरिआई आदि,संत निंदक नहिं सुख अहलादि ॥ संत निंदक कै केवल झूठ,श्रीचंद्र माया मोह मूठ ॥६॥ संत निंदक दरगह मुँह काला,संत निंदक का निकसत दिवाला ॥ संत निंदक हथ छुरा कसाई,संत निंदक नर लहू अघाई ॥ संत निंदक वेदन परिहरता,संत निंदक जिअ जंतु संघरता ॥

संत निंदक चरित अपवित्र,संत निंदक काहूँ नहिं मित्र ।। संत निंदक रचिआ अपवाद,श्रीचंद्र तिस निंदा स्वाद ।।७।। संत निंदक सत पंथ तिआगी,संत निंदक उर माया लागी ।। संत निंदक चित अगनी लाग,संत निंदक कै खोटे भाग ।। संत निंदक महा दोख कमाइ,संत निंदक नरकै थित पाइ ।। संत निंदक जमदूतन बाधा,संत निंदक सहितो सिर बिआधा ।। संत निंदक नित नित भरमाइ,श्रीचंद्र माता सरमाइ ।।८।।१२।। **सलोक-** करता पुरुख पछानिऐ,भव विसतार नुहार ।। रूप रंग लच्छण युकति,संगिआ बिबिध प्रकार ।। **अस्टपदी-** अविनासी प्रभु अगम अथाह,कीनो सरब विस्व परवाह ।। जनम मरण की धार मझारि,बहिओ जात भव सरिता वारि ।। अनिक नरन की देह बनाई,भिंन भिंन तिनि लसत लुनाई ।। रोम रोम की समता नाहि,नाक आंख सभ भिंन जनाहि ।। गंड कपोल स्त्रवण कर पाद,श्रीचंद्र सभ छिंनी वाद ।।१।। उर भुजदंड जंघा अरु उरू,गुलफ जानु अंगुरिका पुरू ।। नख सिख भिंन भिंन रचि राखा,बुद्धि गिआन धिआन अभिलाखा ।। रूप कुरूप सुरूप सुहावा,लघु दीरघ मध्यम प्रगटावा ।। मित्र अमित्र उदास प्रबीन,लच्छण अहै असंख नवीन ।। बिधि निपुणाई जोग अजोग,श्रीचंद्र भव के गण भोग ।।२।। अनिक प्रकारी ब्रिख निपजाइ,पात बिहून

सपात महाइ ।। पुहप बिना फल संजुत केत,पाक बिना सुमनान समेत ।। कबि फल फलत कबी ह्वै फूला,उसन सीत वायु को मूला ।। कई कोटि बिन मूलहुं हरे,कई कोटि रस अम्रित भरे ।। करते की रचना अनगणत,श्रीचंद्र करतारै भणत ।।३। अनिक प्रकारी रचना राची,काची पाकी झूठी साची ।। केचित अमर फली विदताए,केचित बिख रस सिउं सरसाए ।। केचित देव वास प्रगटंत,भूत प्रेत केचित विगसंत ।। केचित कोटिक काम सिधंते,केचित निहफल ही वरधंते ।। केचित जंतु पाक उपजंत,श्रीचंद्र कछु आदि न अंत ।।४।। केचित नर नारी किं पुरख,केचित जल थल सम ही सरख ।। केचित द्वै त्रै इंद्रिअवान,केचित बिन पग ही परयान ।। केचित द्रिस्टि अद्रिस्टि लखाइ,केचित गगनंतर परिछाइ ।। केचित थिर केचित भरमंत,केचित थिर चहुँघा चकरंत ।। केचित साखा अध लटकाहि, श्रीचंद्र ऊरध मूलाहि ।।५।। केचित उपजत ही मर जात,केचित परलै हूँ दरसात ।। केचित दिवस एक दोइ जीव,केचित संवतसर नहिं सीव ।। केचित जनम मरण महि लूझै,केचित मुकत विवस्था रूझै ।। केचित जल महि सदा निवास,केचित औड़ मध्य पर सास ।। केचित पउणाहार करंत,श्रीचंद्र भव को नहिं अंत ।।६।। केचित जोगिनि यख्य रु बीर,केचित भूत मसाणी भीर ।। केचित भैरव भैरव

पिसाच,केचित नरभक्खी चड़ि माच ।। केचित नगन अंग डकरात,केचित बिचरत तम रुचिरात ।। केचित निसिदिन बोलत गिरा,केचित मौन साध बहि थिरा ।। केचित चलत नितप्रति रहहिं,श्रीचंद्र कछु अंत न लहहिं ।।७।। अगणत तारे अगणत पहार,तरुवर अगणत जाति अपार ।। अगणत जीव जंतु बिखिआत,अगणत रेसा अगणत पात ।। अगणत रोमावलि अरु हाड,अगणत दाणा अगणत फराड ।। अगणत उडुगन गगन लसंत,अगणत नस रकतादि बहंत ।। अगणत ने अनगणत रचाना,श्रीचंद्र मन तन कुरबाना ।।८।।१३।। **सलोक-** गुरु सेवत सद ही सुखी,लोक परलोक मझार ।। आतम राम प्रगास है,जनम मरण निरवार ।। **अस्टपदी-** गुरु का सेवक सद ही सुखिआ,गुरु का सेवक आतम रुखिआ ।। गुरु का सेवक आतम गिआनी,गुरु का सेवक ब्रहम धिआनी ।। गुरु का सेवक पारब्रहम गिआता,गुरु का सेवक माया हाता ।। गुरु का सेवक भव समद्रस्टा,गुरु का सेवक सांति व्रिस्टा ।। गुरु का सेवक जनम न मरै,श्रीचंद्र गुरु रखिआ करै ।।१।। गुरु का सेवक निहचल चित्त,गुरु का सेवक सभ का मित्त ।। गुरु का सेवक सद अहलादी,गुरु का सेवक नहिं परमादी ।। गुरु का सेवक रामहि रसिआ,गुरु का सेवक निरभै वसिआ ।। गुरु का सेवक दीन दयाल,गुरु का सेवक परम किरपाल ।।

गुरु का सेवक प्रण का पूरा,श्रीचंद्र गुरु सेवक सूरा ।।२।। गुरु का सेवक दीन हित लड़ता,गुरु सेवक उपकारहि करता ।। गुरु सेवक सद ही पतवंता,गुरु सेवक आतम धनवंता ।। गुरु सेवक गुण गिआन सपूर,गुरु सेवक कसमल गण चूर ।। गुरु सेवक ठंडक का सोमा,गुरु सेवक की ऊजल कोमा ।। गुरु सेवक के भरे भंडार,श्रीचंद्र सिमरत निरंकार ।।३।। गुरु सेवक मनमत परिहरी,गुरु सेवक उर गुरुमत भरी ।। गुरु सेवक दरगह परवान,गुरु सेवक नहिं आवन जान ।। गुरु सेवक गुण दैवी पूरा,गुरु सेवक संतन पग धूरा ।। गुरु सेवक अहंकार तिआगी,गुरु सेवक सतसंगत लागी ।। गुरु सेवक पद ऊच निवास,श्रीचंद्र गुरु सद अविनास ।।४।। गुरु सेवक जम दुआर न जाइ,गुरु सेवक नहि जोनी धाइ ।। गुरु सेवक सद ही संतोखी,हरि सिमरन रच काया पोखी ।। गुरु का सेवक राम रंग राता,बिसरी सरब पराई ताता ।। गुरु का सेवक सद निभराता,हरि कीरति महि जनम लगाता ।। गुरु का सेवक सिद्ध संसार,श्रीचंद्र अदुतीय महि मार ।।५।। गुरु का सेवक निर अभिमान,गुरु का सेवक तान नितान ।। गुरु सेवक की निरमल देह,गुरु सेवक भव जानत खेह ।। गुरु सेवक की द्रिस्टि अगोचर,गुरु सेवक चरता अचरो चर ।। गुरु सेवक गति अगमी गिआता,गुरु सेवक की अद्भुत

बाता ।। गुरु सेवक मित कही न जाय,श्रीचंद्र विसमय विसमाय ।।६।। गुरु सेवक उर अंतरजामी, गुरु सेवक नर पूरत कामी ।। गुरु सेवक का लख्य नाराइण,गुरु सेवक सत धरम पराइण ।। गुरु सेवक रस अमिअ सरोवर,गुरु सेवक भव काम तरोवर ।। गुरु सेवक रतनन की खाण,गुरु सेवक भा जाण अजाण ।। गुरु सेवक कै कमल विकास,श्रीचंद्र तिस कमला दास ।।७।। गुरु सेवक हरि धिआनहि मस्त,गुरु सेवक कै सभ बिधि स्वस्त ।। गुरु सेवक गगनंतर चढ़िआ,गुरु सेवक उड़ता मन फड़िआ।। गुरु सेवक अनहद धुनि पाई,गुरु सेवक परिहरी लुगाई ।। गुरु सेवक रंग लाल सुहाया,गुरु सेवक दुत्तर तर पाया ।। गुरु सेवक गुरु माहि समाइ,श्रीचंद्र तिस परसत पाइ ।।८।।१४।। **सलोक**-अउगुण सगरे परिहरे,राम नाम लिव लाइ ।। नाद अनाहद वजिआ,गोबिंद मन प्रगटाइ ।। **अस्टपदी**- पारब्रहम परमेस्वर धिआया,गुण निधान प्रभु पूरण पाया ।। अविनासी घट घट महि रविआ,सिमरि सिमरि फिरि जोनि न गविआ ।। भगवन परम पुरुख गोबिंद,सिमरि नाम बिनसी सभ चिंद ।। आतम राम रविआ सभ लोइ,जपत जपत अपरंपर होइ ।। अणू परमाणू विआपक जान,श्रीचंद्र पूरण विगिआन ।।१।। साध संग हरि गुण वखिआन,सिम्रिति

सासत्र वेद पुरान ।। हरि हरि जपत उतारी मैल,अति ऊजल भए काले चैल ।। अनुभउ अचल अमर परगास,राम राम जप निसदिन सास ।। रिधि सिधि नउनिधि हरि नाम,जपत जपत राम पूरण काम ।। दामोदर गोपाल अनंत,श्रीचंद्र जप जप भगवंत ।।२।। आदि अनादि अगाध अपार,परम पुरुख देवाधि मुरार ।। माधव मनमोहन निरंकार,अलख अभेव अगम अपार ।। सरब सिद्ध निरभै निरवैर,साध जना के बाँधत पैर ।। सदा सहाई भूपन भूप,अनउपमा उपमेअ अनूप ।। निराकार निरगुण भगवान,श्रीचंद्र सभ माहि समान ।।३।। निराधार निरधाम निरीह,सद अकाम सदगुण की लीह ।। सुखदाई वासी बैकुंठ,सागर छीर विराजित गुंठ ।। मायापती दयाल अधार,दुस्ट दैत्त डारत करि छार ।। सारंगधर भ्रिगु पाद धरंत,निद्रा जोग विराजत संत ।। करता पुरख कारण करतार,श्रीचंद्र संतन आधार ।।४।। चक्रपाणि सरगुण विगसाया,चतुर भुजा गरुड़ै चढ़ि धाया ।। सेससाइ अनकाल अपार,सरब जिअन करता प्रतिपाल ।। अरंग अभंग अरेख अरूप,निरगुण निरविकार भव भूप ।। बनमाली नटवर त्रैभंगी,देव दैत्त रचि राचै जंगी ।। आदि न अंतु मध्य जिस केरा,श्रीचंद्र संतन के नेरा ।।५।। सत्त सरूप सुतह सिध सुआमी,घट घट पूरण अंतरजामी ।।

मायातीत विआपक सरवा,किंनर यख्य न रूप गंधरवा ।। अकल कला भरपूर समाया,बिन बोलहूँ ही बोल सुनाया ।। जड़ जंगम सभ कीन पसारा,तौ भी लायो निज दरबारा ।। सभ की सुनत सदीव पुकार,श्रीचंद्र नित्त रिदै समार ।।६।। करुणायतन जन प्रतिपालक,दीन सहायक अरि गन घालक ।। रख्यक करता करणेहारा,गो रख्यक गोबिंद गोपारा ।। पीतांबर सत्त संध बडेरा,घट घट पट पट सरब बसेरा ।। बनमाली नीलांबर धारी,बंसीधर भरतार मुरारी ।। सिमरि सिमरि हरि प्रभु सुख पाईए,श्रीचंद्र नित्त नित्त धिआईए ।।७।। पर ते परे नेर ते नेरा,माया महि जहिं कीनसि डेरा ।। चक्र चिहन कछु वरण न जाता,इकरस सरब ठौर विखिआता ।। आदि अकाल अपाल अघाला,जीव जंतु की फेरत माला ।। अंतरगति जानत सभ जिअ की,प्रीति पेखतो जन के हिअ की ।। नित्त सहायक सद ततकाला,श्रीचंद्र सिमरो सुखसाला ।।८।।१५।। **सलोक-** सद ही जन प्रतिपालको,दुस्ट अरिस्टन टाल ।। हिरदै समारत जाहिं को,छूटत जम के जाल ।। **अस्टपदी-** जहाँ दूख भै भार विआपै,तहाँ छुडावत हरि प्रभु जापै ।। जहाँ भूख त्रिसना बहु भारी,गोबिंद नाम भजो तहँ वारी ।। जहाँ अगनि सागर भड़कावा,परमेस्वर जप तहाँ सहावा ।। जहँ रतनाकर गहिर गंभीर,परम पोत प्रभु नाम

वहीर ।। जहँ मारग को संग न साथ,श्रीचंद्र गोपालहि हाथ ।।१।। जहँ सभ पुंन दान को हरते,तहँ सिमरत परमातम वरते ।। जहँ करमन का चलत न दाउ,गोबिंद सिमरत ही सुख थाउ ।। जहाँ भयानक जीव डरात,परमेस्वर जप रूप सुहात ।। जहँ बहु जोजन पंथ करारा,नाम प्रभू का पार उतारा ।। चित्रगुप्त जहँ लेखा लेत,श्रीचंद्र तहँ हरि हरि हेत ।।२।। जहँ सभ गिआन धिआन असहाइ,राम नाम इक संग सहाइ ।। जहँ तम अंधकार सद छाया,राम नाम चानण तहँ पाया ।। जहाँ काल सभ जीवन हंत,राम नाम इक रख्यक जंत ।। जहाँ न पूत मीत धन दारा,तहँ विसंभर देत छुटकारा ।। जहाँ न आत चतुरता काम,श्रीचंद्र संगी तहँ राम ।।३।। जहाँ न बाग मिलख जागीर,हरि सिमरन ही रहिता तीर ।। जहाँ न सेवक दासी दास,तहाँ एक विधु रख्यक सास ।। जहाँ न मंडप महिल अटारी,त्रिविक्रम जप तहाँ उबारी ।। जहाँ न गज सिअंदन असवारी,तहाँ चेत केवल मधुवारी ।। जहाँ नरक दुख अधिक घनेरा,श्रीचंद्र प्रभु जाप निबेरा ।।४।। जहाँ चलत है भीड़ी बीथी, तहाँ मुकुंद ही पेखहु चीथी ।। जहाँ कपाट जटे द्रिढ़ बंद,रिखीकेस जप काटत फंद ।। जहाँ ब्रहम सूत्र झरि परे,पुरुख पुराण नाम रहि हरे ।। जहाँ न जटा मुकुट किहँ काम,पदमनाभ ही तहाँ

सहाम ।। जहाँ न पंचभूत की काया,श्रीचंद्र यग्य पुरुख समाया ।।५।। जहाँ महा दुरगंध विआपी, तहाँ सुगंधी राम सथापी ।। जहाँ लाल मज्जा मल मूत,तहाँ नाम सारंगी सूत ।। जहाँ भयानक मेचक रूपी,तहाँ नाम केसव ससि ऊपी ।। जहँ सूची मुख पंथ दसाई,तहाँ नाराइण नाम खुलाई ।। जहाँ सिंञाणू नाहीं कोइ,श्रीचंद्र प्रभु रख्यक होइ ।।६।। जहाँ नाग सिंघ शेर बघेले,माधव सिमरन संग सुहेले ।। जहाँ भयंकर बड उद्याना,विस्व रूप सिमरन संग साना ।। जहाँ गरत करदम की झेर,गोबिंद सिमरन काढे घेर ।। जहाँ भानु दुआदस की तपस,अच्चुत नाम सीत रस बरस ।। जहँ त्रिसना सोखत मुख महा,श्रीचंद्र अम्रित हरि तहाँ ।।७।। गोबिंद नाम समान न कोइ,सिमरत उबरत नर गन जोइ ।। खत्री ब्राहमण सूद चंडाल,नाम जपत उधरत गोपाल ।। नरक निवार सुरग महि बसै,राम नाम रंग रसना रसै ।। सगल भुवन को नाइक होइ,हरि प्रभु उर महि रखै परोइ ।। इस ते ऊपर पद नहि कोइ,श्रीचंद्र मुख नामहि जोइ ।।८।।१६।। **सलोक-** गुरुमुख उज्वल बुद्धि है,राम नाम रस पाइ ।। आपा भाव उतार कै,हरि हरि माहि समाइ ।। **अस्टपदी-** गुरुमुख राम नाम लिव लाइ,गुरुमुख दान इस्नान कमाइ ।। गुरुमुख सहिज पदारथ पावै,गुरुमुख हउमै मेट समावै ।।

गुरुमुख कीरतन सद ही राता,गुरुमुख संगति तीरथ न्हाता ।। गुरुमुख हरि जस गाइ अतोट,गुरुमुख परिहर अंतर खोट ।। गुरुमुख वेद बाणी परगास,श्रीचंद्र गुरुमुख जप रास ।।१।। गुरुमुख सद ही गुण भरपूर,गुरुमुख तिआगै हउमै कूर ।। गुरुमुख राग नाद बिस्राम,गुरुमुख अजपा जापै राम ।। गुरुमुख तुरिआ पद को पावै,गुरुमुख जनम मरण छुटकावै ।। गुरुमुख निरविकल्प समार,गुरुमुख चौसठ विद्या सार ।। गुरुमुख अस्टदसी प्रभु जाता,श्रीचंद्र गुरुमुख रंग राता ।।२।। गुरुमुख मन प्रयाग इस्नाना,गुरुमुख सुरसरि पाप मिटाना ।। गुरुमुख पितरी मुकत कराया,गुरुमुख उतरी हिरदै माया ।। गुरुमुख ऊजल मस्तक जोत,गुरुमुख प्रगटि नाम स्रोत ।। गुरुमुख सुंन समाधि थिरंत,गुरुमुख मत अगाध अनंत ।। गुरुमुख मरे न आवै जाइ,श्रीचंद्र अबिचल थित पाइ ।।३।। गुरुमुख लागै नाम पिआर,गुरुमुख सभ कुल करे उधार ।। गुरुमुख केवल हरि हरि धिआइ,गुरुमुख संगति सकल तराइ ।। गुरुमुख छुधा पिपासा छीन,गुरुमुख धरम करम परबीन ।। गुरुमुख परमपरा पर धिआन,गुरुमुख विचरत ब्रहम गिआन ।। गुरुमुख परिहर सगल विकार,श्रीचंद्र परिवार सधार ।।४।। गुरुमुख सत संतोख गिआन,गुरुमुख नाम दान इस्नान ।। गुरुमुख सच्च वपार

कमाया,गुरुमुख निज मन अघड़ घड़ाया ।। गुरुमुख वणज दरगाही खेप,गुरुमुख तिआगी माया झेप ।। गुरुमुख अपणा मन परबोधे,गुरुमुख अंतर आतम सोधे ।। गुरुमुख बैठत उठत सभागा,श्रीचंद्र हरि प्रभु लिव लागा ।।५।। गुरुमुख तिहुँ लोकन उजिआरा,गुरुमुख पसरिआ सत्त पसारा ।। गुरुमुख दुरमति दुबिधा खोई,गुरुमुख खनली काली धोई ।। गुरुमुख समद्रस्टा सु विचारी,गुरुमुख काम क्रोध परिहारी ।। गुरुमुख लोभ मोह मत तिआगी,गुरुमुख सुभ गुण संपत भागी ।। गुरुमुख आपा खोइ पुनीत,श्रीचंद्र गुरुमुख का मीत ।।६।। गुरुमुख जत सत महि परधान,गुरुमुख दया धरम द्रिढ़ ठान ।। गुरुमख वैर विरोध विहीना,गुरुमुख संगी दुखिआ दीना ।। गुरुमुख ऊची द्रिस्टि समाल,गुरुमुख सबद सुरति कै खिआल ।। गुरुमुख नीच ऊच बिन जात,गुरुमुख ठंडक नामहि सात ।। गुरुमुख ऊजल मति परवान,श्रीचंद्र गुरुमुख हरि धिआन ।।७।। गुरुमुख द्रिस्टी निरमल करता,गुरुमुख अंन दान संग भरता ।। गुरुमुख वेद वाक वखिआन,गुरुमुख पाठ पुरान कुरान ।। गुरुमुख तत्त वेता अवदात,गुरुमुख वस्तू निखुट न दात ।। गुरुमुख ब्रहम द्रिस्टि लिव लागा,गुरुमुख अनुदिन सिमरत जागा ।। गुरुमुख चार पदारथ दानी,श्रीचंद्र गुरुमुख ब्रहमगिआनी ।।८।।१७।। **सलोक-** लख

चउरासी जोनि महि,मनमुख सद भरमाइ ॥ ऊच नीच जाती जनम,थिरता लहित न काइ ॥
अस्टपदी- मनमुख निगुरा साकत नीच,मोह लोभ धसिआ बड कीच ॥ संतन संग न कबहूँ कीन,मदमत्त अहंबुद्धि परबीन ॥ खोट कमावै हत जीवान,नीच मंत्र साधत मासान ॥ परधन परतन परत्रिअ राता,परअपकारी जंतुन हाता ॥ भटकत बहु जोनिनि के दुआर,श्रीचंद्र जनमिओ बिरथार ॥१॥ मनमुख जनम मरे पछुतावै,मनमुख जार चोर कहलावै ॥ मनमुख संगति जूप खिलारी,मनमुख निसिदिन पावत हारी ॥ मनमुख अंतहकरण मलीन,मनमुख रोवत हो पराधीन ॥ मनमुख कूड़ो कूड़ वखान,मनमुख मन मुट्ठा अगिआन ॥ मनमुख दंभ कमावै वेस,श्रीचंद्र डहिकावै देस ॥२॥ मनमुख अस्थिर मत नहि काई,मनमुख नित मुख चोटा खाई ॥ मनमुख नरक चुरासी भोग,मनमुख प्रगटित लच्छन सोग ॥ मनमुख इंद्री वसि न होई,मनमुख मनमथ स्त्रिस्टी विगोई ॥ मनमुख सुत बनिता रंग रचिआ,मनमुख कलिमल निकरन पचिआ ॥ मनमुख माया माया बोलै,श्रीचंद्र मूँह काले डोलै ॥३॥ मनमुख थान भ्रस्ट निवास,मनमुख नित्त अपूरण आस ॥ मनमुख अंतरि सांत न पाइ,मनमुख कालख दाग लगाइ ॥ मनमुख चर हरिआरा पसू,मनमुख के मुख सद

ही भसू ।। मनमुख दरगह लहै न ढोई,मनमुख अंतर काली लोई ।। मनमुख रचिआ चित नित रार,श्रीचंद्र मनमुख सद खुआर ।।४।। मनमुख करम धरम सभ कूड़,मनमुख की मति विआपित हूड़ ।। मनमुख सोझी बूझ न पाइ,मनमुख उमर बिरथी जाइ ।। मनमुख जनम बिरथा गवाया,मनमुख कूड़े धंधे धाया ।। मनमुख करम विफल सभ भांति,मनमुख कस्ट सहत दिनराति ।। मनमुख बाधा धरम बिगार,श्रीचंद्र मनमुख सिर भार ।।५।। मनमुख चित्त अघ काला काँउं,मनमुख सूकर विस्टा थाँउं ।। मनमुख गरधब लेटण स्वाह,मनमुख फिरता भरता आह ।। मनमुख का कोऊ संग न साथ,मनमुख बंदी बंद अनाथ ।। मनमुख कूकर हड्डा रोड़,मनमुख कै उपजत रुज कोड़ ।। मनमुख गज न्हाते सिर सुवाह,श्रीचंद्र मनमुख दह भाह ।।६।। मनमुख ऊधा हिरदै कमल,मनमुख भाखण यमलै यमल ।। मनमुख कुत्सित अति विकराल,मनमुख भयंकर भैरव काल ।। मनमुख मिरतक गीध लखाया,मनमुख चितवत पर की काया ।। मनमुख विभिचारी हित चीत,मनमुख झूठो झूठी प्रीत ।। मनमुख लांछन लगत अमेट,श्रीचंद्र मनमुख नहिं भेट ।।७।। मनमुख कुंभी पाक गिरंत,मनमुख कै भोगन ही मंत ।। मनमुख माता गरभ गलाहि,मनमुख सुपनहि थिरता नाहि ।। मनमुख लेखा जम सिर मार,मनमुख चित्रगुप्त

फिटकार ।। मनमुख बिरथी घाल गवाई,मनमुख त्रिसना अगनि वधाई ।। मनमुख धिक धिक लोक कराइ,श्रीचंद्र प्रभु नाम न न्हाइ ।।८।।१८।। **सलोक-** करणहार करतार के,चितवत नहि उपकार ।। खिन खिन जाहि दयालता,जीव जंतु बिन पार ।। **अस्टपदी-** करणहार करतार अपार,खिन खिन करता पर उपकार ।। माटी ते जिन कीनी देह,पउण पाणी अगनि रचि खेह ।। पिता बिंद माता की रकत,निपजायो धर उत्तम युकत ।। गरभ अगनि महि जरन न दीना,बिना मुख के भोजन पीना ।। अद्भुत ते अद्भुत रचि खेल,श्रीचंद्र प्रभु मेल अमेल ।।१।। सास रहित महि डारिओ सास,ब्रिख चरित लटकत लर तास ।। नासा स्वास न बाहरि आय,विसमय विसम विसम ठहिराय ।। नैनन दीनी किस बिधि जोत,नव मासन कर पग चर कोत ।। तल सिर को धर ऊरध कीन,स्रोत सुनते बात नवीन ।। बोलत बोल अबोली रसना,श्रीचंद्र हरि अद्भुत रचना ।।२।। तुरस खटाई तिकत सलवणा,किस बिधि गिआन दिओ जल भवणा ।। अनिक जतन करि राखणहारे,सगले जीअ जंतु विसतारे ।। खान पान हित अपरा दुआर,धंन धंन जग सिरजनहार ।। जठर अनल को लगिओ सेक,माता भोज पचाइ अनेक ।। कीन अरोगी जनमत काया,श्रीचंद्र सभ प्रभु की दाया ।।३।। प्रथमहि दीनो दूध अहार,तिस

प्रभु कउ सिमरहु इकसार ।। मात पिता अरु दाई दाया,सेवक थापे हरि प्रभु राया ।। निसि दिन खेल खिलावत गोद,गोबिंद उपजायो मुह मोद ।। दात दिए संग भोजन पान,पर उपकार प्रभू पहिचान ।। शक्ति वधाई चालन पैर,श्रीचंद्र नाराइण खैर ।।४।। हाथन जाहिं काम बलधार,नित नित सिमरन करि निरंकार ।। जाहिं दया ते देह अरोगी,सो नाराइण भजहु संजोगी ।। जाहिं दया ते पेखत रूप,हरि प्रभु सिमरहु सदा अनूप ।। जाहिं दया ते ऊजल हंस,नरहरि भजिऐ सो निरसंस ।। जाहिं दया ते जस चहुकुंटा,श्रीचंद्र सिमरहु बैकुंठा ।।५।। जाहिं दीन अन धन बेअंत,सिमर मना सोई भगवंत ।। जाहिं दीन सुभ बाग बहार,सदा सदा हरि नाम सम्हार ।। अचार विचार विहार पराता,सिमरहु सोऊ अनुभउ दाता ।। जाहिं दीन सेवक गण दासी,सिमरहु सोऊ नित अविनासी ।। जाहिं दीन प्रभुता वडिआई,श्रीचंद्र सो संग सहाई ।।६।। जाहिं दीन पित माता बंध,ताको सिमरत सदा अनंद ।। जाहिं दीन सुभ सिहजा मंदर,राम राम सिमरहु मन अंदर ।। जाहिं दीन सभ राज रु भोग,सरब सुहेला कीना लोग ।। जाहिं दीन रस अगण अतोट,सो सिमरहु उर परिहर खोट ।। जाहिं दीन ग्रिह सुंदर नारी,श्रीचंद्र सिमरहु गिरिधारी ।।७।। जाहिं किरपा ते ऊचो ऊचा,सिमरहु गोबिंद

अगम अगूचा ।। जाहिं किरपा ते लोकन मान,सिमरहु नितप्रति सो भगवान ।। जाहिं किरपा ते धन अनगिनती,सिमरहु राम राज तजि मिनती ।। जाहिं किरपा ते ऊची धुजा,सिमरहु छीरनिधी चतुभुजा ।। जाहिं किरपा ते नित आनंद,श्रीचंद्र सद सिमर गोबिंद ।।८।।१९।। **सलोक-** परिपूरण प्रभ राम स्याम,गोबिंद पूरण काम ।। सिमर सिमर नित पाइऐ,अच्चुत परम सुखधाम ।। **अस्टपदी-** जा की दया सरब सुख होइ,राम राम उर माल पिरोइ ।। जाहिं दया ते पूरण घाल, नितप्रति ता का नाम समाल ।। गोबिंद सेवा जपबो राम,सगले होवत पूरण काम ।। तोट न आवत भरे भंडार,रतनाकर प्रभु अपर अपार ।। सास ग्रास न बिसरै सोइ,श्रीचंद्र तिहुँ लोकन जोइ ।।१।। माया रंग न मन त्रिपतावा,हरि हरि नाम जपत आघावा ।। मनमथ भोगत नहि संतोख,राम राम जप पावत मोख ।। राज तखत थित बाढै भूखा,नाराइण जपु उतरसि दूखा ।। वेद वखानै प्रापति गरबा, क्रिपानिधान सांत सुख सरबा ।। सिंधु मेखला धरनी जीत,श्रीचंद्र करि गोबिंद मीत ।।२।। संग न साथी साजन सैन,हरि हरि नाम जपत ह्वै चैन ।। सगल पसारा बिनसनहारा,राम नाम जप सागर पारा ।। गयो सास पुनि आवत नाहिं,राम सिमर मत कब पछुताहिं ।। जेते दिवस गए

अनजानै,समझ बूझ जप राम महानै ।। मत को भूलै भरम मझार,श्रीचंद्र नाराइण सार ।।३।। पाहन सुरसरि न्हाइ न तरिओ,राम नाम संसार उधरिओ ।। अवधि लई वैकुंठ मझार,राम नाम भव हेतु सम्हार ।। करम धरम पूजा वडिआई,राम नाम सम नाहिन भाई ।। राम नाम बिन बिरथे पाज,राग नाद स्वर तार समाज ।। कलिजुग राम नाम आधार,श्रीचंद्र बोहिथ मंझधार ।।४।। नाम जपत एकै जगदीस,पापी उधरै बिसवै बीस ।। नाम जपत अनगणत अनंत,प्रिथवी चाई सुन्य समंत ।। नाम जपत उलटायो मरा,राम राम विस्तारिओ धरा ।। नाम जपत उर निरमल जना,प्रगटायो पाहन निर मना ।। राम नाम की अमित वडाई,श्रीचंद्र को पार न पाई ।।५।। राम नाम सिउं गंगा खैंची, राम नाम रंग रंगा पैंची ।। राम नाम रामहि लै आय,जहँ तहँ करता सदा सहाय ।। राम नाम जपु दिब्य गिआन,देवन गति करतल विगिआन ।। राम नाम जपु सदा आनंद,जमदूतन की काटत बंद ।। नाम निरंजन जपु तप सार,श्रीचंद्र भव पार उतार ।।६।। सरगुण निरगुण नाम समाइ,जन जैसे चाहे प्रगटाइ ।। नाम बिना नहिं बंधन छूटै,नाम बिना मोह माइ न हूटै ।। नाम बिना नहिं तीरथ फलै,नाम बिना नाहीं यग्य सफलै ।। नाम बिना नहिं भेख प्रमान,नाम बिना मुख झूठ

वखान ।। नाम बिना फीका उपदेस,श्रीचंद्र नहि मिटत कलेस ।।७।। वेद पुरान सिम्रिति सिधांत,राम नाम जपु एक मतांत ।। मंदर देव देवालै पूजा,राम नाम सम अवर न दूजा ।। हवन समग्री रचितो होम,राम नाम जपु सफलत तोम ।। जलधारा कर कस्ट सहारे,राम नाम संग नाहि पुजारे ।। राम नाम जपु सुद्ध इस्नान,श्रीचंद्र करता कलिआन ।।८।।२०।। **सलोक-** सद गोबिंद धिआइए,सभ बिधि जा कै हाथ ।। मानुख करम कमावणा,सफल नाराइण साथ ।। **अस्टपदी-** करम करत मानुख रुचि धारि,तबि सफलै जब करत मुरारि ।। होम यग्य तीरथ इस्नान,फल प्रद सभ का श्री भगवान ।। अनिक दान द्विजन कहु दीनै,होवत सफलै श्रीपति कीनै ।। पंच अगनि तन तापन कीना, सफलत हरि प्रभु कै आधीना ।। अनिक प्रकारी जप तप करै,श्रीचंद्र सफलित नरहरै ।।१।। दान दीन प्रिथवी अधिकाई,सफलित करुणा पाइ गुसाई ।। भागवत पाठ गायत्री मंत्र,सफल करन हित प्रभु सुतंत्र ।। राम राम जपु अजप विधान,भारत वकता दस अस्टान ।। सिम्रिति सगरी पठबो पाठ, अनिक भाँति पूजा जुत ठाठ ।। लाड़े बिना बराती लोग,श्रीचंद्र प्रभु करणै जोग ।।२।। जिहँ गनिका लगि बिखै विकार,राम नाम भाखिओ इक बार ।। सूआ गयो न प्रभु दरबारै,हरि प्रभु वेस्या लीन

उबारै ।। अजामेल सभ उमर गवाई,काम गरत रहि सुधि न काई ।। पूत नाराइण नाम उचारा, ता का कीना हरी उधारा ।। आपन हाथ रखी वडिआई,श्रीचंद्र प्रभु कल वरताई ।।३।। कई कोटि तन ताप सहंत,कई कोटि हरि नाम रटंत ।। कई कोटि धरनी विचरंते,कई कोटि सद मौन रहंते ।। कई कोटि निरधार विचार,कई कोटि का पउनाहार ।। कई कोटि तिथि वारी वरत,रहित सगल ही आयु धरत ।। सफलावै जिहँ की करतार,श्रीचंद्र सो उतरे पार ।।४।। कई कोटि जपनी रहि फेर,कई कोटि पैठे जल घेर ।। कई कोटि करि ऊरध बाहु,कई कोटि पग एक थिराहु ।। कई कोटि तन देवत दाह,कई कोटि गगनंतर साह ।। कई कोटि कासी महि मरते,कई कोटि गया पिंड भरते ।। जिहँ जन पर प्रभु द्रिस्टि पसारी,श्रीचंद्र तिहँ मिलि गिरिधारी ।।५।। कई कोटि प्राछित कर रहै,कई कोटि करवत सिर सहै ।। कई कोटि धन लोभ तिआगी,कई कोटि विचरत वैरागी ।। कई कोटि लुंछित कर केसा,कई कोटि धरि भगवे वेसा ।। कई कोटि सिर जटा बढाई,कई कोटि नख धार लखाई ।। लछमीपति जहँ पावै थाइ,श्रीचंद्र सो मुकती पाइ ।।६।। कई कोटि पुर गाम न आवहिं,कई कोटि निरधाम रहावहिं ।। कई कोटि देवालै थिरहिं,अपर किसू ग्रिह नाहिन बरहिं ।। कई कोटि रहिं

ब्रिखन छाहिं,कई कोटि आतप सेवाहिं ।। कई कोटि बालू खावंत,कई कोटि जीह नाग डसंत ।। प्रभु भावै तब ही सफलंत,श्रीचंद्र हरि अगम अनंत ।।७।। कई कोटि भच्छत कंद मूल,कई कोटि नर हरते सूल ।। कई कोटि पय भच्छन रूझै,कई कोटि त्रिण साक फरूझै ।। कई कोटि मसाण निवासी,कई कोटि सेवत गौरासी ।। कई कोटि धरणी महि धसहिं,कई कोटि त्रिअन ते नसहिं ।। जा को करता पुरुख क्रिपाल,श्रीचंद्र तिस पूरण घाल ।।८।।२१।। **सलोक-** पारब्रहम भगवान प्रभु,करन करावन जोग ।। नर उर जानत कछु नहीं,किह विध भोगत भोग ।। **अस्टपदी-** कउन भाँति नित ब्रहम विचारे,कउन भाँति सतपुरुष उचारे ।। कउन भाँति अंतरि मन खोए,कउन भाँति सद गिआन विलोए ।। कउन भाँति परमेस्वर चीना,कउन भाँति परम पद लीना ।। कउन भाँति उर धिआन समारे,कउन भाँति करता मन धारे ।। कउन भाँति सतधाम मिलाए,श्रीचंद्र मारग आप बताए ।।१।। कउन भाँति इहि पीवत दूधा,कउन भाँति ह्वै मारग सूधा ।। कउन भाँति नर नीर पिवंत,कउन भाँति संगति मिलवंत ।। कउन भाँति करि करम कमात,कउन भाँति पाकन विगसात ।। कउन भाँति इह जीव कहाया,कउन भाँति ईसर रचि माया ।। कउन भाँति करि ब्रहम जनात,श्रीचंद्र हरि गुप्ती

बात ॥२॥ कउन भाँति किहँ की प्रतिपाला,कउन भाँति करि सफली घाला ॥ कउन भाँति रोगी है देही,कउन भाँति सिउं मिलत सनेही ॥ कउन भाँति रुज जाइ बिलाइ,कउन भाँति सुख सहिज समाइ ॥ कउन भाँति थित मंदर वास,कउन भाँति थित कुटिया घास ॥ कउन भाँति बन बन बिचरंत,श्रीचंद्र प्रभु हाथ मतंत ॥३॥ कउन भाँति इह जगत उपाया,कउन भाँति सिउं कारै लाया ॥ कउन भाँति सिउं आवा जाई,कउन भाँति सिउं ऊच नीचाई ॥ कउन भाँति किस ठौर निवासै,कउन भाँति सिउं होत उदासै ॥ कउन भाँति संजोग विओग,कउन भाँति सिउं भुख अरु भोग ॥ कउन भाँति नेत्र पेखंत,श्रीचंद्र हरि सदा अनंत ॥४॥ कउन भाँति सूँघती घ्राण,कउन भाँति सिउं बहते प्राण ॥ कउन भाँति मेदनि रचि राखी,कउन भाँति उर अंतरि साखी ॥ कउन भाँति रतनाकर रतना,कउन भाँति सिउं सफलित जतना ॥ कउन भाँति परबत रचि राखै,कउन भाँति करि कीनी साखै ॥ कउन भाँति तरु फल फुल फली,श्रीचंद्र प्रभु माया बली ॥५॥ कउन भाँति सुत सुता उपाई,कउन भाँति दारा लपटाई ॥ कउन भाँति सिर कस्ट सहारै,कउन भाँति सुखकर संचारै ॥ कउन भाँति नभ कीन पुलाड़,कउन भाँति रवि तपत पहाड़ ॥ कउन भाँति ससि सीतल कला,कउन भाँति ध्रुव इकथल

खला ।। कउन भाँति उडगन को फेर,श्रीचंद्र प्रभु शक्ति अंधेर ।।६।। कउन भाँति बोलत मुख बानी, कउन भाँति नर पावत गिआनी ।। कउन भाँति मन चंचल कीना,कउन भाँति सुन अनहत बीना ।। कउन भाँति पंखी पसु बाजी,कउन भाँति भए कातर गाजी ।। कउन भाँति नागन कुल कीनी,कउन भाँति माखी मधु भीनी ।। कउन भाँति ब्रिसचिक खाजूरे,श्रीचंद्र मसकन रंग पूरे ।।७।। कउन भाँति रुचि काम अरु क्रोध,कउन भाँति किअ सांत संबोध ।। कउन भाँति रुचि चोरी जारी,कउन भाँति रुचि परिहर नारी ।। कउन भाँति गजराज तुरंग,कीने नर के वाहन ढंग ।। कउन भाँति केहरि म्रिग घाती,कउन भाँति गोधन किअ थाती ।। करनहार बिन कोइ न जानै,श्रीचंद्र त्रैदेव हिरानै ।।८।।२२।।

सलोक- माया अनिक प्रकार प्रभु,अति सूछम तिहँ रूप ।। नाराइण जप दिनस राति,उबरत अंधे कूप ।। **अस्टपदी-** प्रभु नाराइण गरब प्रहारी,जपु जपु नाम उधरे संसारी ।। अनिक प्रकारी माया जाल,मायापति ही साकत टाल ।। निसिदिन भूल भुलाई परिआ,रवि रथ हाथन चाहत फरिआ ।। सूछम ते सूछम हरि माया,खिन खिन अनिक रंग वरताया ।। जो पेखहु सो संग न होइ,श्रीचंद्र सिमरहु हरि सोइ ।।१।। चतुर मुखन ते सहस प्रयंत,माया ब्रहमे रचे अनंत ।। कई कोटि सुरदेव उपाए,हरि

अवतार बेअंत लखाए ॥ कई बार जनमिओ महादेव,कई बार दुरगा अवतरेव ॥ कई बार जग कीन पसार,कई बार परलै परकार ॥ अविआक्रित न जानत ईस,श्रीचंद्र हरि भज थिर थीस ॥२॥ कई बार सतरूपा स्वंभू,कई बार मनवंतर अंभू ॥ कई बार सागर दधि खीर,कई बार देवन की भीर ॥ कई बार अज बेणू भरत,कई बार सुरथ दसरथ ॥ कई बार दैत्तन किय राज,कई बार तीरथंकर साज ॥ अनिक विसरपणि साजे मेटी,श्रीचंद्र बहु गेंदन तेटी ॥३॥ कई बार दत्तात्रै आयो, कई बार गोरख भरमायो ॥ कई बार मछिंदर बनाए,कई बार पारस समझाए ॥ अनिक राम दसरथ निरमए,क्रिसन अनिक गोपिन संग रए ॥ अनिक कपिल पिंगल मुनिमंड,अनिक खंड नव अनिक ब्रहमंड ॥ अनिक जीव जंतुन परवाह,श्रीचंद्र माया असगाह ॥४॥ अनिक सेस सिर धरनी धार,अनिक धौल सूकर अवतार ॥ अनिक नरसिंघ अनिक प्रहलाद,अनिक ध्रूव भगती अहलाद ॥ अनिक एक कछु मेल न बनै,अनिक समावै अनिकै भनै ॥ अनिक रंग मन माहि उठंत,अनिक प्रकारी वरतति जंत ॥ अनिक प्रकारी विदिआ भानु,श्रीचंद्र अनिकै विगिआन ॥५॥ अनिक नाम अनिकै परकार,अनिक कला प्रगटै करतार ॥ अनिक तीरथन मन इस्नानै,अनिक मूरतनि धारत

धिआनै ।। अनिक रूप प्रभु के अवतार,अनिक निदेसी करत उधार ।। अनिक धार वखिआन वखान, अनिक जिगिआसी मोख निदान ।। अनिक भाँति भगती परवाह,श्रीचंद्र संतन ओमाह ।।६।। अनिक नाम प्रभु केर जपंत,अनिक लीला गावत भगवंत ।। अनिक भोग नैवेदत लोग,अनिक प्रकारहि साधत जोग ।। अनिक शक्ति आवत उर भगत,अनिक जीव बरसावत जगत ।। अनिक स्तोत्र उचरत कवच,अनिक मुकति द्विज पावत स्वपच ।। अनिक कला विकसित परगास,श्रीचंद्र माया अविनास ।।७।। अनिक मनोरथ पूरण होत,अनिक पाप मल खिन महि धोत ।। अनिक कलपद्रुम ठाढे दुआर,चिंतामणि बहु रोग बिदार ।। कामधेनु अनिकै चलि आवै,अनिक साधु अम्रित रस पावै ।। अनिकै हरि पद पदम निवासी,अनिक ग्रिहस्ती अनिक उदासी ।। पारब्रहम को अनिक लखाहिं, श्रीचंद्र तिनि बलि बलि जाहिं ।।८।।२३।। **सलोक-** सरब विआपक पूरण हरि,आदि मध्य अरु अंत ।। घट घट पट पट थित भयो,अंग संग भगवंत ।। **अस्टपदी-** घट घट पूरण रहिओ विआपै, आदि मध्य अरु अंतु न जापै ।। पूरण पुरुख सरब बिधि जाता,पूरण होवति जा की दाता ।। पूरण राज सिंघासन राजा,पूरण लोक बजायो बाजा ।। पूरण होत न पूरण भिंन,पूरण पूरण मिले अछिंन ।।

पूरण गगन नगारा धुणै,श्रीचंद्र पूरण हरि गुणै ।।१।। पूरण गुरु अविनासी राया,पूरण ब्रहम रिदै दरसाया ।। पूरण करम सफल करि दीना,पूरण प्रेम जलहि जिमि मीना ।। पूरण धरम अटल फुरमान,पूरण द्रिढयो हरि हरि गिआन ।। पूरण अंग संग सभ ठाइ,पूरण इक रस सरब समाइ ।। पूरण सांत विराजी अंग,श्रीचंद्र पूरण सरबंग ।।२।। पूरण निधि सिधि भंडार,पूरण तखत थिरे निरंकार ।। पूरण धिआन अखंड उदोत,भुवन चतुरदस पूरण जोत ।। पूरण सुंन समाधि समाई, पूरण नाद निनाद सुनाई ।। पूरण सूरवीर वरियाम,पूरण जीतिओ पूरण धाम ।। पूरण वेदन फेर दुहाई,श्रीचंद्र परिपूरण पाई ।।३।। पूरण पाठपुराण पढ़ायो,पूरण राग अलाप सुहायो ।। पूरण ताल तान अनुरागी,पूरण कामी पूरण तिआगी ।। पूरण पंथ दिखायो आप,पूरण ग्रंथि छुड़ाई पाप ।। पूरण आधि उपाधि नसाई,पूरण रस भेखन उपजाई ।। पूरण राम रसाइण खाइ,श्रीचंद्र पूरण कहिवाइ ।।४।। पूरण पाव न पाछै होइ,पूरण सत्रु संघारै लोइ ।। पूरण बाण न खाली जाइ, पूरण ब्रहम कवच अकटाइ ।। पूरण ज्वाला बमणी चाल,पूरण रण भूमहि अनटाल ।। पूरण सारंग धनुस सम्हारा,पूरण नंदग कउ चमकारा ।। पूरण गड़ अनभीत सुहावा,श्रीचंद्र पूरण कउ

धावा ।।५।। पूरण माया चक्र व्यूहा,पूरण अनविवेक को लूहा ।। पूरण दूत बसि करि राखै,पूरण कोस मोरचे नाखै ।। पूरण दुंदभि सत्त सु गाजा,पूरण कीरति धुजा समाजा ।। पूरण सुरगुण सैन सुहाई, पूरण दुरगुण कंदर छाई ।। पूरण अत्रपत्र ढुर चमरा,श्रीचंद्र पूरण चलि दमरा ।।६। पूरण सीस चंदोआ ताना,पूरण दीरघ फरह निसाना ।। पूरण बंदीजन रट जसहि,पूरण फतह अमरपुर बसहि ।। पूरण राज जोग वडियाई,पूरण पाइ उपाइन पाई ।। पूरण गुण भरपूर सदीवा,पूरण दिग मंडल वर दीवा ।। पूरण गुरु उपदेस द्रिढ़ावा,श्रीचंद्र शिष्य पूरण पावा ।।७।। पूरण पारब्रहम किरपाल,पूरण किंकर किओ निहाल ।। पूरण पति राखी गोबिंद,पूरण नासी माया चिंद ।। पूरण सूख आनंद निधान,पूरण गिआन धिआन इस्नान ।। पूरण ओम् जाप विधान,पूरण ठंडक वरष जहान ।। पूरण पाए पूरण लोक,श्रीचंद्र पूरण हर सोक ।।८।।२४।।

।। ओम् जाप समाप्त ।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। रामकली घर ५ छंत ।।

बारह माहा

गोबिंद गीत सुहावणे,सखी समारहु नीत ।। आनंद मंगल सहिज सुख,लागै हरि संग चीत ।। हरि चीत बिनसी भीत माया,रसन रस हरि पाया ।। अनहद वाजे वजहि निसदिन,दुतिअ भाव गवाया ।। सदा संग गोपाल गुण निधि,ईत ऊतहि मीत ।। श्रीचंद्र भगवान भजि,नित दिनस रैणी चीत ।।१।। चेत सुहावणिआ साधु बन तरु फूलै राम ।। गोपाल गावणिआ,पवन सुगंधित झूलै राम ।। झूलै होली गीत गाइऐ,लाल गुलालहि रंगीऐ ।। झाँझ झालर तूर घंटै,पहिर चोली तंगिऐ ।। त्रित त्रितित छुटै आपा, गोबिंद रस रंग फूल ।। चेत सिमरत श्रीचंद्र प्रभु,अनंद मंगल झूल ।।२।। वैसाखै धीरज गई,वांढी

करत पुकार ।। जग जीवन बिन साध कै,पायो नहि दरबार ।। दरबार पाए पीस पीसे,पाक रोटी फालसे ।। लवणे मिलाइ खाय प्रीतम,ध्राप जै है काल से ।। रस प्रेम पावै पुस्ट थावै,भूख त्रिखा निवार ।। श्रीचंद्र बतीह पीसहि,वैसाख हरि दरबार ।।३।। जेठै तपस तपाइआ,पंथी पंथ तिआग ।। छाह खोज बैठत पसू,पंखी चहुकत जाग ।। जाग पंखी करत केलन,छाय ब्रिख सुहावणी ।। सर उस्न पानी म्रिग त्रिसना,द्रिस्टि दूर पुजावणी ।। साधु संगति सीत थानै,काम क्रोध लोभ तिआग ।। श्रीचंद्र भव जेठ तपतो,उठि मोह निद्रा जाग ।।४।। आसाढ़े घाम घनी,नहि सूझै जाणा राम ।। मोहिओ रंग दुनी,बहुरो पछुताणा राम ।। बहुरो पछुताणा आवण जाणा,करे कुकरम फलाने ।। जम मारग की तपत विआपी,दुख पाए बिललाने ।। संगति साधु न क्रोध बिनासिओ,कीते करम भुगाणा ।। श्रीचंद्र मन तपत असाढ़ा,सुनिओ नरकै जाणा ।।५।। सावण जल घन बरसिआ,जीव जंतु सरसाए राम ।। चहुँदिसि नर आनंद मय,धान जमाए राम ।। धान जमाए आनंद छाए,गोधन चढ़ी खुमारी ।। हरिआवलि धर भई सबाई,सांत वुठी नर नारी ।। पाक खरीफ रब्बी की आसा,धरम करम मन भाए ।। श्रीचंद्र सावण सर पूरे,जल थल साधु समाए ।।६।। भादव मास आयो,मेघन आवा जाई राम ।। कबही जल बरसै,कबि

गगन दिखाई राम ।। कबि ऊचो कबि नीचो जावे,सुख दुख बाधा घेरे ।। जनम मरण अरु रोग सोग महि,थहरावत नहि पेरे ।। घटीजंत्र सिउं चैन न पावै,भरि आवै ऊणाई ।। श्रीचंद्र भादव दव लागी, मेघन आवा जाई ।।७।। अस्सुन आस भई,संगति साधू पाई राम ।। जपु तपु करम करे,निसि सांति सुहाई राम ।। सांति सुहाई सरद समाई,धरम करम रुचि जागी ।। राम राम गावत धुनि ऊची,होत मोख के भागी ।। तम बारिद उडि गयो किदाऊ,निरमल मन आगासा ।। श्रीचंद्र अस्सुन प्रभु पूरी,सगरी कीनी आसा ।।८।। कत्तिक सफलत करम सुभ,जल महि वेद निवासा राम ।। नित्तप्रति हरि प्रभु पूजिऐ,संतन सिउं भरवासा राम ।। संतन भरवासै उपज दिलासै,मिलिहै फल रस पूरा ।। उत्तम जोनी कीरति होनी,राम नाम रंग गूरा ।। धरमराज दर सूख समाने,भोग भोग अबिनासा ।। श्रीचंद्र कत्तिक किअ करमन,पूरन होई आसा ।।९।। मंगसिर हिम बरसी,हरि नाम सुखाना राम ।। दुख बिख परिहर कै,रस अमिअ लुभाना राम ।। अमिअ लुभाना सांति समाना,बिखिआ तपत बिनासी ।। साधु संग नाराइण धिआया,काटी अंतक फासी ।। सहिज सील सत भाउ घनेरा,हरि हरि राम सुखाना ।। श्रीचंद्र मंगसिर भा सीतल,संतनि संग टिकाना ।।१०।। पोखै पुस्ट किआ हरि गुण,प्रीतम गाए राम ।।

साधन सुख प्रगटै,सज्जन साधु मिलाए राम ।। साधु मिलाए हरि गुण गाए,राम नाम रस साधी ।। जागै गिआनी माधव धिआनी,पाइआ सहिज समाधी ।। तजै विकारा धरम सम्हारा,घर मंदर सच थाए ।। श्रीचंद्र पोखै किअ पुस्टी,साधुन कहिओ कमाए ।।११।। माघ प्रयाग न्हाए,संतन संग पुनीता राम ।। बेणी पाप हए,जस कीरति गीता राम ।। कीरति गीता परम पुनीता,नाम निधाना पाइआ ।। माया मोह उपाधि बिसरजी,ब्रहम समाज समाइआ ।। दुबिधा दुरमति कूड़ बिनासी,काम क्रोध लोभ जीता ।। श्रीचंद्र गुरु बेणी न्हाते,राज सुरग का लीता ।।१२।। फलगुण रंग रवी,लालो लाल सुहाइआ राम ।। नटवर आइ गया,गोपिन राग सुनाइआ राम ।। राग सुनाया ताल दिवाया,नाची आप निवारी ।। गोधन दधी दूध दुह तिआगा,संग रली गिरिधारी ।। गया कलेस पाट ले गमनिओ,ब्रिख कदंब लखाया ।। श्रीचंद्र फलगुण के फागै,बंसी सबद सुनाया ।।१३।। बारह मास फलै तरुवर,गुरु अविनासी राम ।। प्रणवै नाम दिओ,काटी जम फासी राम ।। काटी फासी गुरु अविनासी,दीनो नाम खजाना ।। तोट न आवै वधदो जावै,जीव जंतु जग दाना ।। प्रभु गुण गाइऐ बीच समाइऐ,साधु संगि रंग रूढ़ै ।। श्रीचंद्र अंतरि प्रभु प्रगटै,लाल गोपाल सु गूढ़ै ।।१४।।

।। बारह माह समाप्त ।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। रामकली घर-६ ।।

खट रितु

जान रे जान अजान महा प्रभु,लोगन संग लाग कै,किउं लाज तैं गवाई है ।। काम क्रोध मोह मूठो,लोभ रचि रहिओ झूठो,ठूठो करि गहै माँग माँग न अघाई है ।। किरपाल दीनदयाल,प्रतिपाल सुख साल तजि,गर माल डारी राम राम न अलाई है ।। पख दिन मास रितु,संवत अनंत गए,श्रीचंद्र सुध नाहि आयु अंत आई है ।।१।। काम को जनम दाता,रितुराज आयो खिआता,बात बात माहि हरि नाम ते सरकिओ ।। राम निज धाम तजि,भव महि तुहारे ढिग,आइ कै निवास कीनो तऊ न जरकिओ ।। रचि पचि रंग रूप धन तन त्रिअ कूप,दानन को डार सूप खूब ही छरकिओ ।। श्रीचंद्र जान मन समै गयो

मिलै नाहि,जाहि ते निदान कामरूप किउं पर किओ ।।२।। ग्रीसम की धूप कूप ताकत है सीत रस, अगनि अगास की निवारी जात छाह ते ।। ताक तरु छाह राहगीर तजि राह रहै,खग आइ थिरै मुख टाड ऊभे साह ते ।। गोधन बछारू संग झुंड झुंड बैठ रही,छुधा हूँ संतावै पै न चुगति है घाह ते ।। ऐसे घोर हूँ ते आगै घोर घोर जानिअत,श्रीचंद्र भजि राम साधु के विसाह ते ।।३।। प्राव्रिट वारिद बरस बन सरसाने,तड़िता तड़ित औ बलाक पंत सोहती ।। वाम मिलि गावत झुलावत चंडोल दोल,पति के आगम को स्वकिआ पंथ जोहती ।। नाचत मयूर भूर कूकत सरूर सुर,गावत मल्हार मेघ गंधन सिउं बोहती ।। श्रीचंद्र गुरू वाक काक जो वखानै उडि,पति प्रभु पाए ते आनंद मुख मोहती ।।४।। सरद सुहानी नभ ऊजल भा दसोदिसि,वेदन निवास जलपति सरसावतो ।। सुक्ति स्वाति पाइ नितांत सिउं सिधांत जाइ,पैठ कै पाताल न उकस पर आवतो ।। डूब मरजीवड़े पयोधि सो मुकत पाइ,मगन मस्त मन फिरै कछु गावतो ।। श्रीचंद्र अद्भुत रस विसमानो मनि,सारदा सरद ससि सत्गुरु धावतो ।।५।। साज कै हेमंत सित कटक चढायो सीत,ब्रिखन को रस सुसकायो लाग फली सी ।। पसरी कुहार ओस जोस सुस्तानो सभ,काम क्रोध लोभ मोह मद फौज दली सी ।। तख्त विराजै राम आनंद गुणी निधान,पट

पीत लहिराए हरि संग हली सी ।। श्रीचंद्र जड़ता मै जपु तपु संजम सत,अगनि जराई जठरागनि अबली सी ।।६।। सिसिर मै झड़े पात पत्री अचल ठाढै,अरजुन दूत को न हानी कछू जानिऐ ।। आस लग रही राम आइगो अवध धाम,उरमिला उरमिला अनंत रस ठानिऐ ।। अंत सरसात पात अकुंर समात नाहि,राम राम जाप ते अघात न पछानिऐ ।। मिलि अविनासी काटी जनम मरन फासी,खासी साधु संग की अचंभव कहानिऐ ।।७।। साधु संत पाए ते अनंत उर प्रगटाए,रंग सरसाए मति धरणी पुनीत भी ।। गोबिंद नाराइण माधव मधु कैटभारि,नरहरि राम स्याम केसव के गीत भी ।। जलजात कुमुद गुण सर उद्भव भए,काठ बिहाय खटपद आए मीत भी ।। कीरति मगन रस हरिनाम रहिओ बस,श्रीचंद्र गाए जस त्रिपुर मै जीत भी ।।८।।

।। खट रितु समाप्त ।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग जय जयंती ।।

छाड दै रे छाड दै,जगत झूठो पाज है ।। मातु पिता बंधु साक,अंत काल रहहिं झाक,कोऊ न उबार सकहि,जैहैं दूरि भाज है ।। नारी सुत सुता भैण,संग साथि सखा सैण,परम सनेही सभी,काढने कै साज है ।। काय को नवाइ धोइ,नूतन बसन पोइ,श्रीचंद्र चिता धरि अगनी उपराज है ।।१।। जान बूझ जान बूझ काहे को संकात हैं ।। बन उपबन सारे,नीर छूटते फुहारै,प्राण तन भे निआरे,खिन महि परात हैं ।। अटा संग घटा छुही,गज गच ग्रिह जू ही,सरवर गंभीर कूही,आगै नाहि जात हैं ।। श्रीचंद्र भरम डार,सिमर हरि प्रभु मुरारि,पावहि निरबाण पद,राम ही संगात हैं ।।२।। कठिन पंथ कठिन पंथ,काहि न लखाहि रे ।। मंडप माड़ी महिल पके,माणक मोती वज्र खचे,पेखते ही हके बके, काहे बिरमाहि रे ।। दारा दुहिता जामाते,धन धरा केर नाते,अंत बार संग हाते,हाँडी फोर आहि रे ।।

श्रीचंद्र आगि लाई,हायहूय धूम चाई,धन धना की लराई,सगरे मचाहि रे ।।३।। भजो मन,भजो मन,राम नाम संगीआ ।। समवरती पुरी महान,दूत भयंकर भयान,ताड़ते बेजान जान,बीथी डार तंगिआ ।। बारू तपत नगन पाइ,आगि निधि महि डराइ,असीपत्र बन लिजाइ,ग्रीव माहि जंगिआ ।। श्रीचंद्र अजहुँ जान,सिमर लेहु गुणनिधान,पावहि दरगाहि मान,राम राम रंगिआ ।।४।। फेर चित,फेर चित,काल जै है हाथ ते ।। अन धन अतोट भारा,गोधन दुगध धारा,दारा सुत सुता संगी,बांधे तोर आथ ते ।। अरुजी काया प्रबीन,नैन जोति ठरी पीन,कहूँ बातै नाही दीन,भोज भोग पाथ ते ।। श्रीचंद्र कहिओ मान,भजहु हरि क्रिपानिधान,सूख खेम लहि कलिआन,साधु संत साथ ते ।।५।। आयो भव,आयो भव,गुरू अविनासिआ ।। दीनो नाम दान महान,पायो द्रिढ़ गिआन धिआन,संजम जाप ताप सत,नित्त सुख रासिआ ।। गगन चाढ़ जोति पाइ,नाद अनहद वाइ,राग अगम गीत गाइ,त्रित परगासिआ ।। श्रीचंद्र मन मीन,प्रणव जाप माहि लीन,ममत अलमत्त होइ,चिदानंद वासिआ ।।६।। पूरो पाइ,पूरो पाइ,पूरे होइ गए हैं ।। तन मन धन बंधु डार,भजत प्रभु निरंकार, अनुभव आनंद धार,सीतल समए हैं ।। ब्रहमानंद सुख निधान,मात पिता तिआग धान,एक राम नाम

जान,परमानंद रए हैं ।। श्रीचंद्र पूरा पाइ,पूरे माहि गए समाइ,पूरो आवै नाहि जाइ,राम राम भए हैं ।।७।। पूरो पाइ,पूरो पाइ,पूरे होइ गए हैं।। ऊरे हूँ को लोकालोक,ऊरे हूँ को मोह सोक,ऊरे हूँ को जमलोक,दूत दुख दए हैं ।। ऊरे उर नाहिं राम,ऊरा जाइ धाम धाम,ऊरे काहूँ नाहि नाम,कोटि कलुखए हैं ।। श्रीचंद्र ऊरो तज,पूरे चरन कंज भज,पूरो सुभ साज सजि,पूरन समए हैं ।।८।। भलो रे,भलो रे,संत साधु संग रे ।। जहाँ जाप ताप सूख,राम राम नित्त मूख,भाग जात पिआस भूख,हाथ नाहिं तंग रे ।। जहाँ ब्रहमा बिसनु सेस,देवी दुरगा महेस,रमा सरस्वती गणेस,सदा रहित संग रे ।। श्रीचंद्र नवों निधि,सहित अस्टदसे सिधि,पेखत मुख आगिआ हित,करत नाहि भंग रे ।।९।। भलो रे,भलो रे, नाराइण प्रभू दुआर ।। छत्रपती महा जोधे,सनद्ध बद्ध सस्त्र गहे,ठाढै दिनस रैणि रहित,आगिआ अनुहार ।। सुर असुर नर नारी,रंभा उरवसी सारी,यख्य गण गंधरब किंनर,गावतगुण चार ।। श्रीचंद्र सोऊ आइ,करत मनु मध्य ठाइ,जगत परत पाइ,धाइ देवत उपहार ।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी घर १ ||

गुरुमुख नाम जपहु लिव लाइ,राम नाम चित रहहि समाइ || सफला भोजन पहिरन खाण,हरि हरि नाम जपत निरबाण ||१|| जा के कीने सगले भोग || नाराइण गोबिंद आराधे,बिनस जात तन ते सभ रोग ||१|| रहाउ || मोह भरम दुख सगला चूर,संत जना की बांछहु धूर || सगल तीरथ सागर इस्नान,राम नाम दरगह परवान ||२|| हरि हरि माधव सदा धिआइऐ,गुरु पूरे ते गिआन कमाईऐ || पारब्रहम सभ ठाईं रविआ,राम नाम जिनि जन मुख चविआ ||३|| सगले करम धरम तिस लेखै,संत जना के दरसनु पेखै || आवै जाइ न ब्रहम समाइ,श्रीचंद्र रस अनुभव गाइ ||४||१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || जीवन पद हरि एको नाम,बेणी संगम माघ इस्नान || आसा मनसा

पूरन होहि,रिधि सिधि मुख नैनन जोहि ॥१॥ हरि हरि राम राम कलि ऊचा ॥ वैर विरोध काम क्रोध बिनसे,सगरे किलविख खिन महि मूचा ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरजामी प्रभू सम्हार,कलि महि जनम न आवहि हार ॥ हरि का नाम कलपतरु हरिआ,मुकत पदारथ सुफरो फरिआ ॥२॥ चिंतामणि भव रोग बिदार,कामधेनु वथु बेसुमार ॥ ऊँधो कमल नाम परगास,देवी देव निहारहि सास ॥३॥ सभ ते ऊतम गोबिंद नाम,सहिज सूख आनँद परधाम ॥ मोख दुआरा हरि गुण गाइ,श्रीचंद्र हरि रूप समाइ ॥४॥२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मन मेरे प्रभु जापहु नाम,साधु संग सभ सुख बिस्राम ॥ अजपा जाप मगन रस होइ,आधि विआधि छुह सकहि न कोइ ॥१॥ नाम बिना झूठा संसार ॥ महा भार पापन सिर लाद,गरधब जोनी लेटिओ छार ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख नहि सूझत हरि नाम,आगे दरगहि आवत काम ॥ चित्रगुपत का दफतर जार,हरि प्रभु के जावत दरबार ॥२॥ काण चुकाई दूतन केरी, करम भरम की ढाही ढेरी ॥ हरि हरि नाम जपत सद चीत,महा पतित ते भए पुनीत ॥३॥ नीच

चंडाल चूहड़ा सूद,हरि हरि जाप जपत महासूध ।। गोबिंद गोबिंद नाम धिआइ,श्रीचंद्र पूरण प्रभु पाइ ।।४।।३।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। जा को कोइ न देवत धीर,हरि हरि नाम बिनासत पीर ।। जा को लागो दूख संताप,हरि हरि नाम उतारत पाप ।।१।। सदा सहाई हरि प्रभु नाम ।। भूत प्रेत बैताल बिलानै, निकटि न आवत बीर मसान ।।१।। रहाउ ।। साहनसाह तखत सिर राजा,प्रभु का नाम सरब सिर गाजा ।। ठाढा इंद्र बंद कर दोइ,नाम जपत ते जाचत सोइ ।।२।। भूमिवंत धनवंत सिआणे,नाम अग्रजनु दास अयाणे ।। रूपवंत कुलवंत अपारा,राम नाम कहु करत जुहारा ।।३।। परम पुनीत राम रंग राचा,साचो साच उबाचे बाचा ।। साच राम जग सगरो झूठ,श्रीचंद्र जानहि नहिं मूठ ।।४।।४।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लाल रंग हरि हरि प्रभु नाम,दुनिआ के रंग काचै खाम ।। चढ़ै चढ़ावै मस्त अलमस्त,सभ ते सरब काल भरि स्वस्त ।।१।। महा सहाय एक ही नाम ।। परम चलूला

सत्गुरु चाढ़िआ,दरगह प्रभु की आवहि काम ।।१।। रहाउ ।। जनम मरन की काण उतार,रंगणि भगती डोबिओ चार ।। धूप तपसिआ खूब सुकायो,नाम चोलना पाइ नचायो ।।२।। संत सहेली सावण आया,अनंद मंगल झूला झुलाया ।। गीत गाइ प्रभु को बोलाइ,सेज सुहावै नाम समाइ ।।३।। पती मिले हरि भोगै भोग,सहिज समाधि रमावै जोग ।। सद कलिआन सूख निधि पूरा,श्रीचंद्र हरि रंगी मूरा ।।४।।५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। राम मजीठ सनेहे रंग,धूप न सकै उतार सुरंग ।। सतसंगत मन बसन भिगोइ,तार तार प्रभु नाम समोइ ।।१।। चोला पायो पति हरि राखी ।। पारब्रहम प्रभु भयो क्रिपाला, प्रगटी लोइ मजीठे भाखी ।।१।। रहाउ ।। संत सुहागणि मेली आइ,गावति गीत अनंद उपाइ ।। भयो विवाह मिटायो आप,परमेस्वर को जपिआ जाप ।।२।। रिधि सिधि सहु डारी आन,भरे भंडारे धनगन धान ।। सेवक सकल नाम बरसाए,बड परिवारे सांति सुभाए ।।३।। जनम मरन दुख रोग न विआपै,रंगणि रांगिओ हरि हरि जापै ।। जरा मरा सभ मेट गवाया,श्रीचंद्र रंग गूढ़ा छाया ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मन राम नाम रंग रांगा ।। गुरु पूरे हरि नाम द्रिढ़ायो,बिनसे दम्भी सांगा ।।१।। रहाउ ।। साधु संग रंग हरि पूरण,लोक परलोक सभांगा ।। आदि अंत पूरण प्रभु सुआमी,विसरे सरबे स्वांगा ।।१।। वण त्रिण त्रिभुवन सभनी थाईं,अंग प्रत्यंग सरबांगा ।। मन मोहन रविआ मन मध्ये,ऊच नीच मंद चांगा ।।२।। जा को कोइ न पहुँचनहारा,हार परे यतनांगा ।। करम धरम संजम सुचि नेमा,जोग धिआन अस्टांगा ।।३।। हरि भगती रथ मन आरूढ़ो,सैन संग चतुरांगा ।। जीतिओ श्रीचंद्र त्रैभुवना,झूलिओ छत्र अभांगा ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। पायो हरि हरि नाम निधान ।। परिपूरण जल थल महिअल प्रभु,ऊन न कोऊ दीसत थान ।।१।। रहाउ ।। अगम अपार पारब्रहम सोइ,ऊच नीच रविआ सभ लोइ ।। घट घट वासी हरि प्रभु मेरा,दुख भंजन सभ संग बसेरा ।।१।। अंतरजामी राम गोबिंद,साधु संग पाइए हरि बिंद ।। वेद पुरान कुरान बिलोक,संतन बिन किछु अवर न ओक ।।२।। नाराइण रस परम

रसाइण,संत संग प्रभु के गुण गाइण ।। रस रसिओ इक रामहि नाम,लोभ मोह बिनसे मद काम ।। ३।। जा को नरहरि करुणा कीन,राम राम ताकी मति भीन ।। नाम गुबिंद महा धन पाया,श्रीचंद्र सफली सो काया ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। जिनि जन नाम नाराइण जापा,सगल बिनासे तिसके पापा ।। अतताई महाँ दुस्ट बिगाना,सिमरित नाम भयो परवाना ।। १।। कलि महि राम नाम ततसार ।। कसमल सगल बिनासहि खिन महि,जमदूतन ते भा छुटकार ।।१।। रहाउ ।। जिस प्रभु कीने सगले लोग, छतीह अम्रित भोजन भोग ।। पूत मीत दारा सुख दीना,राम नाम मन किउं बिसरीना ।।१।। सगल समग्री संपद सूखा,हरि हरि जपत बिनासी भूखा ।। बैरी मीत किए खिन माहि,सिमर मना नाराइण वाहि ।।२।। प्रभु किरपाल अउगुण सभ मेटे,हरि हरि नाम साधु संग भेटे ।। संत नाम धन लादिओ संग,वणज किओ जन रामहि रंग ।।३।। जनम मरण की काण चुकाई,निसिदिन भजिओ एक रघुराई ।। सगल कलेस ताप बिनसानै,श्रीचंद्र गोबिंदहि धिआनै ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || जपु मन एको हरि को नाम,सहिज सूख पावहि बिस्राम || अबिचल अटल अटारी ऊच,जपत नाम तिहँ थिरत पहूँच ||१|| माधव मायापति गिरिधारी || नाराइण नरहरि अविनासी,आदि पुरुख पूरण बनवारी ||१|| रहाउ || सदा संग दुख लगन न देत,माया गुह्य बखानत भेत || ऊच नीच सभ संग समाइ,सेवक को नहि ताती वाइ ||२|| पाप विकार सकल जल गए,हरि हरि नाम अम्रित रस रए || लेखा पोट बिडारी दूर,राम राम सद ही भरपूर ||३|| जमदूतन का मारग रोका,गोबिंद नाम गहिओ धन थोका || आदि अपार अनंत गुबिंद,श्रीचंद्र उबरे जप जिंद ||४||१०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || पापन ढेरी सगल बिनासी,हरि सिमरिओ पूरण अविनासी || आधि विआधि उपाधि न नाम,निसदिनु सिमरहु केवल राम ||१|| राम राम मीता गुन गाइ || जनम जनम की कालख उतरे,उज्जल मन गोबिंद धिआइ ||१|| रहाउ || सूख नहीं रस भोगन संग,

सूख नहीं न्रित्त नाट सुरंग ।। सूख नहीं लोगन प्रभुताई,सूख नहीं पूरण सिहजाई ।।२।। सूख नहीं ग्रंथन के पाठा,सूख नहीं मद पीने माटा ।। सूख नहीं भव मित्र घनेरे,सूख नहीं दारा सुत नेरे ।।३।। सूख नहीं धन अधिक कमाया,सूख नहीं धरनी भरमाया ।। सूख समानो इक हरि नाम,श्रीचंद्र किअ निहचल धाम ।।४।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। नाराइण नरहरि गोबिंद,सिमरि सिमरि बिनसी सभ चिंद ।। आतम राम प्रकास आनंद,हरि को नाम जपहु सुख छंद ।।१।। गीत गोबिंद नाम धुनि बानी ।। जपत जपत रस अमिअ चुआईए,पाइऐ हरि हरि पद निरबानी ।।१।। रहाउ ।। गुरुमुख अंतरि राम धिआइ, गुरुमुख सुभ गुण प्रगटीआइ ।। गुरुमुख अंतरि अंतर नाहि,गुरुमुख सहिज समाधि समाहि ।।२।। गुरुमुख निरमल सोइ जहान,गुरुमुख बिनसै तन अभिमान ।। गुरुमुख दरगह सदा खलास,गुरुमुख सगली पूरण आस ।।३।। मनमुख मुँह काला दरबार,मनमुख जनम जुआरी हार ।। मनमुख नित जम फाही फाथा,श्रीचंद्र गुरुमुख के साथा ।।४।।१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || डर बिनसे सिमरत प्रभु नाम,निकट न आवत ता कै जाम || भूत प्रेत डाकिनि बैताल,बीर पिसाची भैरव काल ||१|| राम नाम धुनि सुनि सभ भागै,दुखभंजन सुखदाता मोहन,स्याम सिमरि निसि जागणि जागै ||१|| रहाउ || वेकारी डर लोक पराता,वेकारी डर पंडित बाता || डरु सिमरत तरु ठूठे चोर,डरु रज्जू महि भखण मोर ||२|| डरु डरु करम करत नित होम,डरु डरु जावत तीरथ सोम || डरु डरु विभिचारी निसि चोर,डरु डरु राज हेतु अघ घोर ||३|| डरु डरु घावत बाघ बघेले,डरु डरु निज गर फाही मेले || सिमर नाराइण डर बिनसाइ,श्रीचंद्र हरि निडर धिआइ ||४||१३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || केवल सुख सिमरण प्रभु राम,सदा धिआइऐ गोबिंद नाम || जा कै प्रापत नाहि बिनास,जा कै प्रापत भूख न पिआस ||१|| जा कै सिमरन पूरन काम,स्याम सुंदर मनमोहन प्रभु,हरि दरस मन लहहिं बिस्राम ||१|| रहाउ || जा कै प्रापत नगन न होइ,जा कै प्रापत पैंडा

खोइ ।। जा कै प्रापत त्रिसना मिटै,जा कै प्रापत जम ते छुटै ।।२।। जा कै प्रापत नाही रोक,जा कै प्रापत नाहीं टोक ।। जा कै प्रापत ऊच निवास,जा कै प्रापत पूरन आस ।।३।। जा कै प्रापत अम्रित रस, जा कै प्रापत दहदिसि जस ।। श्रीपति पद्मनाभ मधूसूदन,श्रीचंद्र जपु दूख निसूदन ।।४।।१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। राम राम सिमरण सुखदाई,पाप ताप सभ देंत गवाई ।। आगै आवत जिअ कै काम,धरमराज इक जानत राम ।।१।। हरि बिन कोटि करम जप तापा ।। जम दुआरै पै काम न आवत,निहफल प्रापत अधिक संतापा ।।१।। रहाउ ।। परा पूरबल जागै भाग,राम नाम की लागै लाग ।। पूरे गुरु ते पाइऐ नाम,मन महि सांति सहिज सुखधाम ।।२।। अगनि बुझी मन सीतल भए,रसना अम्रित रस सरसए ।। त्रिसना मेट सुख सागर पाया,हीरा रतन हाथ चढ़ि आया ।।३।। अमर भए अम्रित फल खाइ,धन धर राज दए निपटाइ ।। विस्वंभर यग्य पुरुख पुरान,श्रीचंद्र प्रभु नाम लुभान ।।४।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सदा सदा प्रभु जापहु नाम,दरगह सवरे सगला काम ।। दुस्मन दूत न आवहि नेर,बिनसिओ उर ते माया घेर ।।१।। जीवन मुकत नाम हरि संग ।। जपु जपु रैणि दिना त्रिपतासे,दुत्तर तरे अनंत तरंग ।।१।। रहाउ ।। मारग तपत सीत रस पाया,अगनि मेटि अम्रित वरसाया ।। गोते खावत लाए पार,पाप कोटि कीने मिसमार ।।२।। अमर पदारथ पाया राम,ऊच महिल कीनो विस्राम ।। सीतल छाया सुगंधी वारी,मधुकैटभ जित सिमर मुरारी ।।३।। सगले कसमल गए विलाइ,गोबिंद चरन कमल परसाए ।। भव सागर ते उतरे पार,श्रीचंद्र मगनो हरि तार ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। रसना पावन सिमरत राम,चरन चलत पावन प्रभु धाम ।। हस्त पुनीत सेविऐ साध,स्त्रवण पवित सुनत हरि नाद ।।१।। नमसकार करि सफली काया ।। अन धन वसन साध संग अरपण,होवत सफली सोऊ माया ।।१।। रहाउ ।। नैन पुनीत साधु के दरस,महिल पवित्र संत पद धरस ।। रिदै पुनीत धरत हरि धिआन,संगति पावन हरि गुण गिआन ।।२।। पावन अस्व

नाग झंपान,साधु संत जहँ पर चढ़ धान ।। पावन धरनि साधु पग धरिओ,मारग पावन साधु विचरिओ ।।३।। संगति साधू परम पुनीति,सेवत चरनन राम परीति ।। धन्य सु देस गाम पुर राज, श्रीचंद्र थित साधु समाज ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। साधु संग बिनु त्रिसन न जाइ,साधु संग बिनु नाम न पाइ ।। साधु संग बिनु पटल न नासै,साधु संग बिनु बिरथा सासै ।।१।। साध संग बिनु हरि प्रभु नाहि ।। त्रिसना जलत मोह का बाधा,परबत पंथ पाहन टकराहि ।।१।। रहाउ ।। साधु संग बिनु मिटत न भरम, साधु संग बिनु निहफल करम ।। साधु संग बिनु धरम न कोइ,साधु संग हउमै रंग खोइ ।।२।। साधु संग बिनु थोथा गिआन,साधु संग बिनु नहिं प्रभु धिआन ।। साधु संग बिनु झूठ न भागै,साधु संग बिनु रंग न लागै ।।३।। साधु संग बिनु नहिं निरवैर,साधु संग बिनु बींगा पैर ।। साधु संग बिनु जोग न होइ,श्रीचंद्र साधू संग जोइ ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सत्गुरु संगति करि दिनु राति,हरि हरि नाम देत सद दाति ।। सत्गुरु संगति निरमल रिदै,सत्गुरु संगति अंतरि भिदै ।। १।। सत्गुरु संगति मिटै अंधेर ।। अंतरि जोति गिआन उजिआरा,जनम मरन के चूके फेर ।।१।। रहाउ ।। सत्गुरु संगति वेद अभिआस,सत्गुरु संगति कुंभक सास ।। सत्गुरु संगति तीरथ इस्नान,सत्गुरु संगति नहि अपमान ।।२।। सत्गुरु संगति नीकी सोइ,सत्गुरु संगति चानण लोइ ।। सत्गुरु संगति हरि हरि गाथ,सत्गुरु संगति निरमल आथ ।।३।। सत्गुरु संगति विधु बिस्वास,सत्गुरु संगति धरम परगास ।। अविनासी सत्गुरु का संग,श्रीचंद्र रंगति प्रभु रंग ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मनमुख संग नरक का दुआरा,मनमुख संग बोदला खारा ।। मनमुख संग बढत अभिमान,मनमुख संग सदा अपमान ।।१।। मनमुख संगति अंना खूह ।। मरत न उबरत गोते खावत,आस पास कछु सूझ न जूह ।।१।। रहाउ ।। मनमुख संग चउरासी पाइ,मनमुख संग करत

पछुताइ ।। निगुरा मनमुख निंदा धाम,जार चोर झूठा बदनाम ।।२।। निगुरा लोभी हल्का सुआन, कूड़ बोल भौंकत हित खान ।। मनमुख सूकर विस्टा भोग,मनमुख काक डहकावै लोग ।।३।। मनमुख संग थूक मुख पाइ,मनमुख संग बिहावै थाइ ।। मनमुख हाथी नीर नहाया,श्रीचंद्र सिर खेह पुआया ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। नितप्रति सिमरहु मन महि राम,सील सहिज सुख पूरण धाम ।। जपु नाराइण कारज पूरे,सिमरि गुबिंद सरब दुख चूरे ।।१।। राम नाम की बेला एह ।। जब लग घर धन धान सपूरा,जोबनवंत निरोगी देह ।।१।। रहाउ ।। जरा ग्रसत नहि होइ इस्नान,जरा ग्रसत मित बंधु परान ।। जरा ग्रसत चिंता अधिकाइ,जरा ग्रसत कै पूत पराइ ।।२।। जरा ग्रसत धन होइ पराया,जरा ग्रसत परिवार न भाया ।। जरा ग्रसत की म्रितु का धिआन,दारा सुता सुतन चित आन ।।३।। जरा ग्रसत को द्रब्य हिरंत,जरा ग्रसत को भात न मंत ।। जब लग जरा न ग्रासिओ तोहि, श्रीचंद्र हरि भजहु संदोहि ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ राम भजन सद सूख समाइ,राम भजन सभ अनुभउ पाइ ॥ राम भजन सफलै करम,राम भजन सिउं उबरै धरम ॥१॥ राम भजन सभ ही ते ऊचा ॥ सिला गीध तरुवर कपि भालुक,राज निसाद पाप गण मूचा ॥१॥ रहाउ ॥ राम भजन मन परम पुनीत,राम भजन परलोकी मीत ॥ राम भजन जमदूत बिदारे,राम भजन अपदा सभ टारे ॥२॥ राम भजन दुख ठौर सहाई,राम भजन सिर छत्र ढुराई ॥ राम भजन सभ स्तुति सिधांत,राम भजन हिअ नासत भ्रांत ॥३॥ राम भजन सिउं लखत भविख्यै,राम भजन अंधकारहि दिखै ॥ राम भजन सबरी निस्तारी,श्रीचंद्र भजि राम मुरारी ॥४॥२२॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ सुनहु नाद रुणझुण छणकार,गगन मंडल रस अम्रित धार ॥ सुंन मंडल की धुनि प्रगटाई,निरमल जोति निरंतर पाई ॥१॥ कलपन बिसरी लाइ समाधि ॥ अनुभउ रूप अगोचर प्रगटिओ,सहिज अनंदु पराज अगाधि ॥१॥ रहाउ ॥ भेदे चक्र खट सिध स्वास,छैहों कंज ऊधै

परगास ॥ असुर नदी बाँधिओ परवाह,जोति बहैंतर साखा माह ॥२॥ कुंडलिनी सीधी होइ आई, मूल दुआरै सास वधाई ॥ मणिबंधु पायो अम्रित कुंड,न्हाते पाप बिनासे झुंड ॥३॥ ओंकार निरंजन अलख,जागै जोगी जै गोरख ॥ सत्गुरु ते सभ सोझी पाइ,श्रीचंद्र लिव ताड़ी लाइ ॥४॥२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ कलिजुग माहि पूजिऐ दंभ,बातन गगन उडे बिनु खंभ ॥ गरधब गिआनी हुज्जत खोर,भेख साधु धरि बैठे चोर ॥१॥ कलि आयो दै चोट नगारा ॥ रंन गिआनिनि भेड सनानिनि,काली कमरी खुंभ सम्हारा ॥१॥ रहाउ ॥ अधिक सनेही नैनन तेली,माते भैंसे मेलत मेली ॥ मथत नीर माखन हितकारी,छाया चाहत सूखी बारी ॥२॥ भगत ठगत ग्रिह लोगन घनै, मांगत शनी शनी मुख भनै ॥ मुरदन ते मुकति करि चाहै,साधू निरदोसै अंकाहै ॥३॥ निगुरै गुरू महा विखिआत,बिन सेवा सेवक संगिआत ॥ जोगी जोग धिआन बिनु हूए,श्रीचंद्र रौरव तम कूए ॥४॥२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। बिना उदास उदासी डोलै,बिनु बैराग बैरागी बोले ।। बिना निआस संनिआसी बकते,बिना भगति के फिरते भकते ।।१।। कलु आयो मुख सिसनु पसार ।। जटा मुकुट मुद्रा फटकीली,धीआं पूत संजोगी नार ।।१।। रहाउ ।। भगवा धारि भगन रति होई,हित बंचन मुख मीठी गोई ।। सिखा सूत्र कटि धोती धारि,पाहन थापिओ धन पासार ।।२।। राम सीय राधा गोबिंद,उदर भरन की विआपी चिंद ।। सती वेस करि थाली गही,गली गली ग्रिह ग्रिह धन चही ।।३।। कलीदार प्रिव्रिति रचि नीवा,नाचिओ बहु बिधि घेरा थीवा ।। लोभ लागि नर जनम गवायो,श्रीचंद्र कलु को डहकायो ।।४।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। उर महि मनसिज किओ निवास,बाहरि थापिओ वेस उदास ।। धन हितु चेरो भयो महंत,राम नाम नहीं निरमल मंत ।।१।। जा कै ढिग है अधिक जगीर ।। बंचन के हित ग्रिह तजि आए,घनी चेरिका परी बहीर ।।१।। रहाउ ।। गिरह गाँठ को द्रब्य हरि लीना,गुरु को मार

गादि आसीना ॥ भोजाई सकली मुख कीनी,सामानिआ परकिअ रस लीनी ॥२॥ भाई पूत सुता परिवार,खूब लुटायो निज गुरु दुआर ॥ काम कलोलै राता मूआ,सेमर फल लपटायो सूआ ॥३॥ लोभ मोह मदनै रस माता,साधु संग सो तोरिओ नाता ॥ जम दर बाधा खावै मार,श्रीचंद्र कलु कीनो खुआर ॥४॥२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ जहँ नर राम राम की प्रीत,मिलै संत तिस ही सुध चीत ॥ लोभ मोह छुटकावै सोइ,निरमल अंतरि जा को होइ ॥१॥ मुकत पदारथ सोऊ पावै ॥ नाम दान इस्नान करम बिनु,अवर धिआन उर नाहि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ परिहर परधन परकिअ काया,परिहर ध्रोह मोह छल छाया ॥ परिहर वैर वाद अहंकार,परिहर सुत बनिता परिवार ॥२॥ परिहर बज्र कनक खजूर,परिहर असन बसन मुख धूर ॥ परिहर अस्व नाग असवारी,परिहर माया निखल पसारी ॥३॥ परिहर खान पान कड़ु मीठा,परिहर धरणीपति पद पीठा ॥ जाचै राम नाम लिव लाग,श्रीचंद्र सेवक बडभाग ॥४॥२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सेवक सेवे निसदिन लाग,राम नाम हरि कीरति जाग ।।१।। हरि हरि नाम जपै करि प्रीति,सगल पदारथ डारै हीति ।।१।। राम राम रामहि जप जापु ।। लोक प्रलोकहि संग सहाई,दास अपने को माई बापु ।।१।। रहाउ ।। ब्रहम लोक लौं भोग न चाह,सदा सम्हालै मुकती राह ।। लोक बडाई नाहिन चीत,सुत वित लोक ईखणा जीत ।।२।। मान अमान न मन डोलाइ,पेखै सुनै न बोलै वाइ ।। दुआर दुआर नहिं जाचत डोलै,वेद वाक्य निज मन सिउं तोलै ।।३।। एक सिधांत मरण परयंत,राम राम सिमरण संग संत ।। सो सेवक जनमांतर हानै,श्रीचंद्र रम है भगवानै ।।४।।२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। संत सम्हारै नितप्रति राम,आगै जिअ कै आवहि काम ।। सत्गुरु दीनो पटा लिखाइ,दोइ अखर परलोकहि थाइ ।।१।। तन सह क्रिया म्रिखा अभिमान ।। सीस स्त्रवण द्रिग कर पद नाड़ी,अस्थि रक्त संग नाहि पयान ।।१।। रहाउ ।। भसम सरीर अगनि संग होइ,धोती तिलक जटा न रहोइ ।। प्रभु दर मंदर मूरति वेद,जावत नाहिं विअरथे खेद ।।२।। सेली माला टोपी सूत,ईहां होत

सभ भस्मी भूत ।। गंगा हाड न पाप छुटावै,गया पिंड के थोथै दावै ।।३।। राम रंग उर संत चढ़ावै, आप मुकत जन मुकत करावै ।। बिन साधू नहिं मोख दुआर,श्रीचंद्र कहि भुजा पसार ।।४।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। राम राम जपु उतरे पाप,राम राम जपु बिनसै ताप ।। राम राम संग अगनि बुझावै,राम राम संग सांति सुखावै ।।१।। राम राम संग निरमल बुद्धि ।। नउनिधि सिधि दसअस्टै,हस्तामल सिउं करतल सिद्धि ।।१।। रहाउ ।। राम राम जपु देवन पूज,राम राम संग त्रिभुवन सूझ ।। राम राम संग काम न साड़ा,राम राम संग लोभ न भाड़ा ।।२।। राम राम संग सीधा साह,राम राम संग धरम विसाह ।। राम राम संग जीव सुखाला,राम राम सुख मूर दिवाला ।।३।। राम राम संग भाणा भाइ,राम राम जपु राम समाइ ।। राम राम तम घोर सु दीप,श्रीचंद्र रम राम महीप ।।४।।३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लाख करोड़ी त्रिसन न बूझै,भला बुरा कछु पाप न सूझै ।। लोभ लाग परदेसन जाइ,आनै ग्रिह महि द्रब्य कमाइ ।।१।। जम की वेला जब ही आवै ।। चित्रगुप्त

सनमुख कढि कागद,मारग भीड़ी बीथी पावै ॥१॥ रहाउ ॥ धन हित एते मारे जीव,धन हित निरधन दुख संचीव ॥ धन हित नारी दीनी तिआग,धन हित पर ग्रिह लाई आग ॥२॥ धन हित मंत्र मसाणन साधे,धन हित परबत सागर फाधे ॥ धन हित देवी देव धिआए,धन हित अठसठ तीरथ न्हाए ॥३॥ धन हित चढ़िओ हिमालै धाइ,धन हित पंचागनि तपताइ ॥ धन हित कीने करम विकार,श्रीचंद्र सहु जम की मार ॥४॥३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मन विकारी जीतिओ घोर,निसदिन करता पाप कठोर ॥ मार जीव निज उदरै काज,लोगन लूटन के हित राज ॥१॥ परत्रिअ रमत न संका मान ॥ मानुखन को आमिख भक्खी, लहू पीत हरखंत महान ॥१॥ रहाउ ॥ रैनि अंधारी करि ले फाहे,नर टोरत चल गाहबगाहे ॥ अन धन बसन खसोटै जाइ,निरजन बन हत देत बहाइ ॥२॥ भोगत भोग अनंद संजूता,पछतावै जम अंत पजूता ॥ घोर नरक का पंथ लिओ है,करम धरम सभ डार दिओ है ॥३॥ ईहां दुख नहि आगै सूखा,अंतक दुआर तिहाया भूखा ॥ श्रीचंद्र विभिचार तिआग,संत संग हरि सिमरन लाग ॥४॥३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || वेद पुरानी परिहर रीत,मोह माया महि उरझिओ चीत || रातो महा किलविखन माहि,नरक अगनि ते डरतो नाहि ||१|| सगली आयू बिरथा गवाई || तीरथ जाइ न कीनो दाना,साधु संग सुभ मति नहि पाई ||१|| रहाउ || जीअन घाइ सूख उर मानै,द्रब्य पराया हिरत हिरानै || मरनो चीत हुते बिसरायो,लेखा देनो मन नहि आयो ||२|| चोरी बुरिआई महि राता,विभिचारन हित पेखत घाता || जानै नाहिन वसतु पराई,हेतु अघन के करतो धाई ||३|| कालुख दाग अमेट मुहासै,पर नारिनि के अधिक तमासै || श्रीचंद्र संतन विप्रीति,माया मोह नरक की रीति ||४||३३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || साधू बिन नहि होत छुटारा,सुत दारा धन मोह पसारा || मनमुख संग लहहि बड दूख,ध्रापसि नाहिन त्रिसना भूख ||१|| संतन संगति पार उतारा || राम नाम जप निरमल मन तन,अनहद नाद निनद झुनकारा ||१|| रहाउ || संग कुसंगी दुरजन फाथा,मानस जनम गवाइ अकाथा || दुहचारी अचार पराइ,दरगह कबहुँ न पावत थाइ ||२|| अंतरि अगनि

जलत दिन राति,हिरदै उपजति नाहिन सांति ।। त्रिसना बाढत माया रंग,फासा फाही क्रिसन कुरंग ।।३।। काम अंगूरी सुंदरि नारी,कूकर मारत धाइ शिकारी ।। श्रीचंद्र सुनु लोग अयानै,बिन साधू नहि लगहि टिकानै ।।४।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मर मर अनिक जनम को पाइ,नरक सुरग बाधा भरमाइ ।। त्रिगद जोनि दुख लहहि घनेरे,सूकर कूकर नाग बघेरे ।।१।। रमत राम निहचल सुख प्राणी ।। परमधाम अबिचल नित प्रापति,साधु संग जपु हरि हरि बानी ।।१।। रहाउ ।। बहुते धन सुख लहहि न कोई,लाख कोटि अरबहुँ लग होई ।। बहुत कुटंब पूत अरु धीआ,सदा खुवारी विलपत जीआ ।।२।। अधिक जमीन अधीन कराई,हाय हाय करि खेह उडाई ।। त्रिपति न त्रिसना कबहूं होई,रहिओ अनाज खेत ते ढोई ।। ३।। जिउं जिउं वाधा तिउं तिउं घाटा,अद्भुत ते अद्भुत हरि बाटा ।। श्रीचंद्र त्रिसना का पेट,चौदह भुवन न भरत समेट ।।४।।३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। ईहां रहनो दिन दुइ चार,मारग चलनो भीड़े दुआर ।। मंडप महिल अटानि

सवारी,बाग बगीचे फूलन बारी ॥१॥ सभ किछु ईहा छोडि सिधाई ॥ गोबिंद हरि प्रभु राम नाराइण,सिमरत नर के संग सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ कठिन पंथ दुख अधिक घनेरे,परे चहूंदिसि दूतन घेरे ॥ सुत बनिता साजन सनबंध,नाहि सहाइ करत गन धंध ॥२॥ राज माल जोबन परिवार,काम न आवत भव बिउहार ॥ महादीन संगल गल पाए,किए करम सनमुख ह्वै आए ॥३॥ गहबर बन सूलन तरु छाया,होइ न बैठब कस्ट वधाया ॥ श्रीचंद्र हरि नाम सम्हार,होहिं सुखी तब अंतरि दुआर ॥४॥३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ निगुरे संग न कीजै मेल,निगुरा देतो अनल धकेल ॥ निगुरा उसटर बेमुहारा,निगुरा सूकर विस्टाहारा ॥१॥ निगुरे को गुन नाहिन कोई ॥ ग्रिह ग्रिह भरमत माँगत टूका,लोक परलोक लहै नहि ढोई ॥१॥ रहाउ ॥ निगुरा बहु प्रपंच कमाइ,निगुरा नर बंचन हितु धाइ ॥ निगुरा वेस्या पूत जमाया,निगुरा चर कूकर हरकाया ॥२॥ निगुरा सगलै धरम धिकारा, निगुरा प्रभु के दरों निकारा ॥ निगुरा भोगै लख चुरासी,निगुरे कै गर अंतक फासी ॥३॥ निगुरे ते सकुचित निर कुंभी,निगुरा कै पर मीना चुंभी ॥ श्रीचंद्र निगुरै मुख लाइ,इत उत लहिऐ दूख सबाइ ॥४॥३७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || गुरु ते लहहि निरंजन नाम,दीन दयाल क्रिपाल अकाम || गुण गोबिंद मनहि परगास,ऊँधे कमल सुख सहिज विकास ||१|| राम राम रमते हरि बाणी || तुरीआवस्था चिदानंद पद,लीन भए अम्रित रस माणी ||१|| रहाउ || नाराइण गुप्ता प्रगटाया,सुखनिधान उर अंतरि पाया || सुर नर असुर खंड पिखि नैनी,अलख अपार समाज ससैनी ||२|| चंदनवास बनस्पति मौली,हरि हरि कीरति प्रगटी सौली || ससि कल पूरण अमिअ चुआया,जनम मरण को भरम मिटाया ||३|| हरी भरी लहराई खेती,गुप्तो धन धर जानिओ भेती || भव सागर बोहिथ को पायो,श्रीचंद्र गुरु अलख लखायो ||४||३८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || सत्गुरु सूता टुंब उठाया,भै सपनै को दूर पराया || माते भैसे रहहि फुकारे,शेर बघेले गज चिंघारे ||१|| उथारे दाबिओ करत पुकार || निकसत सबद न मुख सिउं पूरण,तड़फत भै जुत दीन उठार ||१|| रहाउ || जमदूतन कै जिसम भयान,भूत प्रेत पिसाच मसान || गिरि कंदर घेरिओ बरिआई,लपकत भक्खण हेतु डराई ||२|| भाले सूल क्रिपाणन सांग,

मुदगर गुरज प्रहारत डांग ।। मारग निकसन को नहि पाय,मेचक तन धाए मुहँ बाय ।।३।। संग सहाई मीत न कोइ,अधिक विलाप करत बहु रोइ ।। श्रीचंद्र गुरु दिओ हिलाय,दूखन घाण छिनेक विलाय ।।४।।३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। परा पूरबला जागिआ करम,गुरु भेटे पूरन पारब्रहम ।। बिनसी हउमै दुतिआ पीर,गुरु अविनासी कीनी धीर ।।१।। गुरु मेले हरि मेल मिलाया ।। अगम अगोचर अलख निरंजन,निरंकार गुप्ता प्रगटाया ।।१।। रहाउ ।। दुरमति दुबिधा भागी दूर,माया मोह सोग दुख चूर ।। तपत बिनासी सीतल थान,तन मन धन ते गया गुमान ।।२।। छूटी ग्रंथि वथ लही अनूप, दरसन पायो भूपन भूप ।। रंग रूप रस अनल मिटानी,राम नाम मिल मुकत परानी ।।३।। काया माया दीनी खोइ,अचरज रूप विलोकिओ लोइ ।। श्रीचंद्र सत्गुरु उपकारी,काढ लीन सागर संसारी ।।४।।४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मन जीतै मुनि परम पुनीत,मन साधै जोगी परतीत ।। मन जीतै सूरा

बलवंत,मन जीतै परिपूरण संत ॥१॥ मन ही पारब्रहम को जानै ॥ अकल कला धर अंतरजामी, नाराइण दयाल भगवानै ॥१॥ रहाउ ॥ मन ते सरब देव बसि होहि,मन जीतै त्रिभुअन विलोहि ॥ मन ते भूत प्रेत पिसाच,मन जीतै करि अग्रज नाच ॥२॥ मन जीतै अंतक टर जाइ,मन जीतै पद अबिचल राइ ॥ मन जीतै गगनंतर चरै,मन जीतै अफुरी सिधि फुरै ॥३॥ मन जीतै जग जीतै सोइ, मन जीतै बाकी नहिं कोइ ॥ श्रीचंद्र मन जीतन काज,सेवि सत्गुरू संत समाज ॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ दास संगि हरि नाम निवास,दास संग प्रभु राम विसास ॥ दास संगि मन उज्वल होइ,दास संगि गोबिंद अवलोइ ॥१॥ दास संगि इत ऊत सुहेले,जनम जनम के विछड़े भरमत,काटि सिलक हरि मेले मेले ॥१॥ रहाउ ॥ दास संगि आनंद निधान,दास संगि उर ब्रहम गिआन ॥ दास संगि पत सगरे थान,दास संगि पाए सद मान ॥२॥ दास संगि सुभ गुण आगार, दास संगि मिटता अहंकार ॥ दास संगि लहि परमानंद,दास संगि भजु सचिदानंद ॥३॥ दास संगि दिब्य जोति विकास,दास संगि होइ कमला दास ॥ दास संगि करि अंत परयंत,श्रीचंद्र सोइ पूरण संत ॥४॥४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गुह्य कला हरि जपु प्रगटानी,हरि सिमरन रस मधुरी बानी ।। राम रंग गूढ़ा गुण लाल,राम नाम सिउं पूरन घाल ।।१।। रमत राम पद सहिज समाधि,काम क्रोध माया मद मतसर,राग द्वेस गे सगल उपाधि ।।१।। रहाउ ।। राम रंग कबि उतरत नाहि,अनुदिन बिगसै अनुभउ माहि ।। दीन दयाल दुख भंज मुकंद,उपज अनंद हरे गण द्वंद ।।२।। आपा आप आप होइ गए,राम रंग रंगणि महि पए ।। धंध बंध बिनसै मायावी,प्रभु भाणे प्रगटाने भावी ।।३।। गिआन धिआन पूरण परगास,आवण जाणौ सफले सास ।। दासहि संगि राम रंग राते,श्रीचंद्र लहि परम विधाते ।।४।।४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। माया रंग कुसुंभै काचा,बिनसि जात कूड़ा कच पाचा ।। दूख धूप लागै उडि जाइ,छाया धन अधिकै चमकाइ ।।१।। लोक पुचारै खान अरु पान ।। मंदर सिहजा घोड़े सिअंदन, निरमल जल सरवर इस्नान ।।१।। रहाउ ।। अधिक अडंबर पाट पटंबर,नैवेदै बहु भोग दिगंबर ।। जान अजान लोभ रस माता,झूठ पसारा लोक संघाता ।।२।। पाहन खात न पीत पदारथ,

उस्न सीत बरखा हित स्वारथ ।। हाथ उठाइ न वर किहुँ पाया,दंभ उपाइन जाया माया ।।३।। प्रभु नाराइण सगल समाना,संत जना मुख लहिहो गिआना ।। श्रीचंद्र तजि पाखंड रीत,राम नाम सिमरहु हित चीत ।।४।।४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। साधु संग भरम खोइ अयानै,अंतरि आतम राम पछानै ।। पाथर काबै राखिओ पूज,चंद मनायो उपजिओ दूज ।।१।। शैताँ केरो थाप मुकाम ।। कंकर रोड़े फैंकत मूरख,अंतरि मल अलह नहिं नाम ।।१।। रहाउ ।। बुत बिनासै बुत्तहि थाप,दरगाहे लहि हैं संताप ।। परम भूल लग फिर फिर लेख,सो कुरान किमि भनै अलेख ।।२।। शरक़ गरब जहँ पठी नमाज,सोऊ दोजख पाइ अजाब ।। भूले लोक लोभ लुट मारै,कियो पैगम्बर दीन बिगारै ।।३।। लब्ब लाग भब्य जनम विगोयो, भुजा पसार अग्र दुख रोयो ।। श्रीचंद्र मंडल जेऊ मूढ,लहहि साधु आसय किमि गूढ ।।४।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। विस्वनाथ बूडिओ मध्य कूप,गिरिधर नहिन सुखानी धूप ।। रामचन्द्र होयो

बैरागी,जनम थान तजिओ बनवासी ।।१।। मूरख लोगन मूढ डहकाइ ।। आप यमन ते उबर न पायो,कैसे नर कहु लेह छुडाइ ।।१।। रहाउ ।। निहकलंक को लागि कलंका,किमि ऐहै अग्रज दै डंका ।। दुरगा नाहिन प्रगटी कोइ,दई मूरती गुरजन खोइ ।।२।। सोमनाथ बाचिओ नहिं आप,कस मुकतै है तुम ते पाप ।। भूलै पाथर पूजत लोग,कारण करता है भी होग ।।३।। पारब्रहम की जेऊ कला, मानुस मन प्रगटावत भला ।। श्रीचंद्र इहि जानहु खेड,शेर सुआँग रचि बैठी भेड ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। दंभ छोड़ हरि सिमरणि लाग,मन ते सकल निवारहु दाग ।। जो दीसै सो संग न जाइ,अनगोचर मुकतो पद पाइ ।।१।। रंग न रूप रेख नहीं काया ।। संतन संग राम रंग राते,उर ते पाइऐ हरि प्रभु राया ।।१।। रहाउ ।। मंदर मसजिद पाकी ईंट,गोर मढ़ी मठ पापी छींट ।। पाइ ठगौरी मोहै लोग,जटा धार नहि पाइऐ जोग ।।२।। लाइ विभूती नखन बढाइ,तिलक चढ़ावै भोग लगाइ ।। मूंड मुंडायो भगवा धार,ग्रिह ग्रिह भोजन मांगत दुआर ।।३।। साधु संग हरि रंग न राता,पोखिओ उदर बढायो खाता ।। श्रीचंद्र बिनु नाम खुआर,प्रापति होत न प्रभु दरबार ।।४।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लाद खेप संतन संग राम,वणज करहु केवल हरि नाम ।। लै लाहा घर जावहु मीत,अबिचल सुख भोगहु नित नीत ।।१।। ऊच महिल तुरिआ पद पाइ ।। सूख सहिज आनंद निधाना,राम नाम कीरतन बिगसाइ ।।१।। रहाउ ।। लाख कोटि महि एकहु एक,राम नाम उर जा के टेक ।। हीरा मोती माणक मणी,राम संग पहुँचित नहिं कणी ।।२।। कंचन रूपै भरे भंडार,राम नाम तुल नहिं संसार ।। सरब निधान जगत के ऊरे,राम नाम रस भुँचित पूरे ।। ३।। जीवन मुकत राम रंग राते,सेवक कउ दीनी हरि दाते ।। श्रीचंद्र संतन कउ टोल,केवल राम नाम जिनि बोल ।।४।।४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गुरुमुख मनमुख मेल न होइ,अंधा नैन विलोकै दोइ ।। बधरो राग नाद सुर ताल,गोधन पंचानन इक चाल ।।१।। अज हस्ती ब्रहमणि चंडाली ।। सूरवीर कर जंग भूमि असि,कातर मुखहि उडानी लाली ।।१।। रहाउ ।। अगनि सागर तल वासो जान,कामधेनु गाडर संधान ।। फंडरि दुगध धार वरसाई,अस्व सवारी पैदल राही ।।२।। राणी महिल भठारी भाठ,संगि

सिपाही भूमीराठ ॥ मूढन वेद पाठ सुर संगी,रावल पकड़ी हलहर जंघी ॥३॥ किंपुरुखहि नारी संभोग,रोगी उदर कुंभकै जोग ॥ उदासीन घर बारी जोड़,श्रीचंद्र सिर चढ़ै न तोड़ ॥४॥४९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ बलिहारी गुरु अपनै जाउँ,दरगह लहिओ निथावै थाउँ ॥ राम राम संग लागी प्रीति,गोबिंद बसहि हमारै चीति ॥१॥ माया वेड़ हिरानो टूट ॥ सागर अनल तरंग उतंगी, बोहिथ उबरिओ वसतु अखूट ॥१॥ रहाउ ॥ भयो प्रकास भानु उजिआरा,सीत ससी कर किअ विसतारा ॥ राग द्वेस कलि हरे कलेस,सांत महल कीनो परवेस ॥२॥ मोह सोग दुख रोग पयानै,दया धरम संतोख बसानै ॥ चौदह भुवन दीन पातसाही,आगिआकारी सैन सिपाही ॥३॥ निधि सिधि अनुचरी अनंत,निखल लोक निरदेस लखंत ॥ सत्गुरु कीनो पर उपकार,श्रीचंद्र भव ते निस्तार ॥४॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ काटी कटत न मोहै पास,अनिक जंतु उर आस बिनास ॥ गाड मेखली जग भरमाया,देवी देव त्रिदेव महाया ॥१॥ इंद्र मुनिंद्र उपिन्द्र मुहानै ॥ नारद सारद शिव विरंचि

हरि,अध ऊरध बहु भाँति डुलानै ।।१।। रहाउ ।। तप करतो रिखि श्रृंग डुलायो,जयमुनि भूला रूप लुभायो ।। भोज विक्रमा कालीदास,दए गेर गहरे जलरास ।।२।। कउन कउन गनिऐ अवधूत,अछली छली न जाहिं विभूत ।। जती सती जोगीस जपीस,चाकी डार धरे धर पीस ।।३।। गन अवतार जलंधर आद,पाहन भयो धसे परमाद ।। श्रीचंद्र जिस प्रभू क्रिपाल,सोऊ उबरे माया जाल ।।४।।५१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। दीन दयाल सरब दुख भंज,चरन कमल महि राखै संज ।। ओट करी हरि एको नाम,सत्गुरु पूरे पूरे काम ।।१।। पारब्रहम सत्गुरु बखसंद ।। करि किरपा निज चरन लगायो,ईत ऊत की बिनसी चिंद ।।१।। रहाउ ।। तम बिनसिओ प्रगटाए भान,चूकी काम क्रोध की कान ।। जलन न दीने अगनि मझार,बूडत पाहन तारे तार ।।२।। आधि विआधि उपाधि बिनासी, धरमराज की काटी फासी ।। बूझी त्रिसना हरि गुण गाइ,ब्रहम जोति उर अंतरि पाइ ।।३।। सगल पदारथ कर तल धरै,जपिओ जाप हरी हरि हरे ।। बैठ सिंघासन छत्र झुलाया,श्रीचंद्र प्रभु राम धिआया ।।४।।५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। अमर राज सत्गुरु अविनासी,रिद्धि सिद्धि निधि कीनी दासी ।। सगल लोक सेवा महि लाए,सत संतोख हिमायत पाए ।। १।। अबिचल तखत विराजै आइ ।। सुर नर असुर आगिआकारी,ढोरत छत्र चमर छबि पाइ ।।१।। रहाउ ।। दुरगम दुरग नाराइण नाम,खाई दान इस्नान अमान ।। जप तप संजम थित दुआरपाल,करम धरम द्रिढ़ तुपक बिसाल ।।२।। सैना दैवी गुण चतुरंग,मोह राज सिउं जूझत जंग ।। दया सील सत जत ब्रत पूजा,थिरे पारसद मंत्र सलूजा ।।३।। निहचय आसण विसद सुहावा,कीरति गंध दसोदिसि छावा ।। राम नाम की डंक बजाई,श्रीचंद्र दिगविजै वधाई ।।४।।५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गिआन जार सरवांग पसारा,आसै तुपकहि छोर दुगारा ।। वेद वाद कूकर फैलाइ,विकार निकासे बन मो जाइ ।।१।। म्रिग मन धायो कर कै जोर ।। रोक घाट दसहूँ बंधवायो,भगति क्रिपान विदारिओ घोर ।।१।। रहाउ ।। नर नारी ब्रहमण चंडाल,नाऊ धोबी जाट कलाल ।। खत्री सूद तुरक अरु हिंदू,सैख मसाइक जाहिद रिंदू ।।२।। हेरा बांट दिओ इकसार,

गिआन अस्व चड़ि किओ शिकार ।। आनंद बाढिओ निज घर गाम,मद मतवारो पीनो राम ।।३।। घट घट वाजे अनहद नाद,भगति व्रित्त वरधित अहलाद ।। रंग रलीआं माणत हरि रंग,श्रीचंद्र मन मारिओ टंग ।।४।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सत्गुरु पूरे दीनो दान,साहनसाह धरत ईमान ।। चार पदारथ करतल भए,राम नाम रस अम्रित रए ।।१।। आगिआकारी देवन देव ।। नौनिधि रिद्धि सिद्धि दर ठाढी, नितप्रति रहति कमावति सेव ।।१।। रहाउ ।। चारकुंट निज हुकम चलाइ,प्रभु भाणा दीनसि वरसाइ ।। दासन दासी गुणी निधान,जपु गोबिंद सरब कलिआन ।।२।। गई विआधि उर सांत बसाई,भ्रांति मेट कटि अनुभउ पाई ।। अबिचल धाम बसे थिर होइ,दुस्मन दूत रहिओ नहिं कोइ ।।३।। करत कलोलन हरि हरि बोल,उर विकार के खोलै पोल ।। श्रीचंद्र चित्त परमानंद,राम नाम सत चित्त आनंद ।।४।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मात पिता भाई अरु मीत,छोड जात खिन माहि परीत ।। बिनस जात सुंदर

अति काया,झूठे मोह जगत चित लाया ।।१।। काची देह बिनसनहारी ।। अनिक रंग कारीगर भर करि, माटी भीति बनाई सारी ।।१।। रहाउ ।। वायू थंभा लियो निकार,भयो भयंकर कायाकार ।। नैन तड़ाय रहहि मुँह बाया,कर पादन ते करम नसाया ।।२।। काढ दुआर ते धरिओ मसाण,काठ भार लागी किरसाण ।। धाह पुकार धसे घर आइ,धन धर लीनो सरब बटाइ ।।३।। पंच पुसत लौं नाम नसायो, जनम जात कोऊ जान न पायो ।। श्रीचंद्र अति अद्भुत खेल,चलन हेतु कोऊ करत न मेल ।।४।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। पवणै माहि आकास मिलावा,अगनी पाणी धार टिकावा ।। माटी धाइ करत सभ काम,धाम बनायो होइ अधाम ।।१।। करते की अचरज सभ माया ।। जो दीसै सो संग न चालै,संचित होत पराया ।।१।। रहाउ ।। बाग मिलख घर बार टिकानै,मंडप महल अटारि दिवानै ।। लागि सवारी सुंदर बारी,फूल सेज रस सुंदर नारी ।।२।। गवन पवण बाजी की राजी, नाग सिअंदन रचि भा गाजी ।। सीतल जल तड़ाग तरु छाया,ग्रीसम हित बिस्राम रचाया ।।३।। प्राण न जाहिं दुरग द्रिढ़ कीने,पहिरत पट अंबर पसमीने ।। रहे न सास गई छुट देह,श्रीचंद्र सभ अंतहि खेह ।।४।।५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। भाई मीत पूत परिवारा,छाती पीटत बार उखारा ।। हम को तजि कत गयो पराई,को हमरो अब होइ सखाई ।।१।। सभ कूड़ो खिन इक को पाज ।। साड़ फूक जब ही ग्रिह आए,लागै बाटन सगरो साज ।।१।। रहाउ ।। रुदनावत ते हसबे लागै,रली मनावत सजि रंग रागै ।। बहुत बढाहि धरहि अभिमान,बिसर गयो थानो मासान ।।२।। जा सिउं लाग गए बड बिरधा,तेऊ इन सिर धरी समिरधा ।। मरघट जावत देत जराइ,अपन पछानी नाहिन जाइ ।।३।। निज मरनो सुनि बुरा मनावै,धन दारा धर हितु कलपावै ।। श्रीचंद्र प्रभु अचरज माया,अणहोणा ही चक्र चलाया ।।४।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। संतन पर जाऊँ बलिहार,भव महि आए हित उपकार ।। उसन सीत बरखा तन सहहिं,हरि हरि नाम रिदै द्रिढ़ गहहिं ।।१।। छुधा पिपासा नहिं डोलाहिं ।। गहबर बन सरदूल भयंकर,गज बाघन ते नाहिं डराहिं ।।१।। रहाउ ।। कंद मूल सिउं उदर भरंत,तलपा तलपै सुख सोवंत ।। तरु छाया महि रहि दिनरात,परण भोजनै त्रिपत अघात ।।२।। जो जल मिलहि त सदा

अनंद,पवण अहारी चरत सुछंद ।। जो कछु नाहिं त हरि की मया,जिहँ सिमरन को वेला दया ।।३।। सत सील ब्रत सहिज सुभाउ,नाराइण सिमरण सद चाउ ।। वार वार जाइऐ कुरबान,श्रीचंद्र मम संत परान ।।४।।५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गरधब नाचै चोला पहिर,हाथी करि तंती वहि बहिर ।। बैल वजाया बोल म्रिदंग,कऊए गायन तान तरंग ।।१।। कलू भगति के साज बनाए ।। खांड लपेटे बिख कै लडूआ,समझ बूझि करि नर वर खाए ।।१।। रहाउ ।। पान लगाइ भयानक शेर,बीड़े घीस लिआवै ढेर ।। मंगल गाए मूसी मेल,संख धुनी सुर कूरम पेल ।।२।। ससे स्रिंग की स्रिंगी साज,पूत बांझ की ऊची गाज ।। चीटी परबत गई डकार,पाथर लेफ निहाली धार ।।३।। कछुए अचरज बात बनाई,सीत मिटाइऐ अनल जराई ।। लागै लोभ कलू नर दंभि,श्रीचंद्र धसि नारक कुंभि ।।४।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मड़ी खात मीठे रस भोग,खात शरीनी कबर अलोग ।। पाहन की होइ

दुरगा बैठी,महिखन आमिख खाइ अमैठी ॥१॥ भव महि पाथर भा भगवान ॥ मोहन भोग निवैद न त्रिप्तिओ,तुलसी भोगत अचरज मान ॥१॥ रहाउ ॥ विस्वनाथ पर कूप डुबाना,अजहूँ दंभी नर भरमाना ॥ गोबिंद राम मसीती दुरे,बिप्र मनई घावत गहि छुरे ॥२॥ आप न न्हाइ सकै रतनाकर,काठ गढ़ाई मूरति आकर ॥ सुवरन मुकुट ता को पहिराइ,लोक दिखावै पर हैं पाइ ॥३॥ ज्वर काठ कउ करि कै मेल,दंभ पसारिओ कामहि खेल ॥ श्रीचंद्र कलि वग गी वाइ,संत तिआग जम कै घर धाइ ॥४॥६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मन ते पाइऐ सगल निधान,मन मानै अंतरि भगवान ॥ साधे मन सिध परम सुजान,साधे मन प्रापत कलिआन ॥१॥ मन ही बिसनु महेसर करता ॥ चार पदारथ अस्टदसा सिधि,नवनिधि मन अंतरि आचरता ॥१॥ रहाउ ॥ मन ते उपजे सगले लोक,मन ते काम क्रोध मोह सोक ॥ मन ते कल्प विकल्प पछान,मन ते जोग धिआन सिद्ध जान ॥२॥ मन सिउं नाम

दान इस्नान,मन ते गिआन अगिआन गुमान ॥ मन सिउं अकल कला उद्योग,मन ते तिआग वैराग अरु भोग ॥३॥ मन ते तीन लोक विस्तार,मन सिउं किंनर गंधरब सार ॥ मन ते निरगुण सरगुण हरी,श्रीचंद्र मन जलपति तरी ॥४॥६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मन ही नरक सुरग का करता,मन ही करम धरम आचरता ॥ मन ही अंतरजामी पूरा,मन ही निरमल मन ही कूरा ॥१॥ मन ते उपजत सगरी माया ॥ देव अदेव मनुख उपजाए,मन ही सभन बिनासत काया ॥१॥ रहाउ ॥ मन ही गिआन भासकर भास,मन ही आतम भव परगास ॥ मन ही अठसठ तीरथ न्हाए,मन ही बंधन मोख कराए ॥२॥ मन ही ऊच नीच महि रमै,मन ही लख चुरासी गमै ॥ मन ही भै निरभै पद पाइ,मन ही राजा रंक सदाइ ॥३॥ मन ही वेद गिआन उपजाता,मन ही नास्तक मत प्रगटाता ॥ मन ही परम पुरुख भगवान,श्रीचंद्र मन ते मन मान ॥४॥६३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ सत्गुरु कीनो परम उपकार,बूडत सागर पार उतार ॥ जलन बुझाई

ठंडक पाई,झूठी माया दूरि पराई ।।१।। मन करहल अमुहारी चाल ।। पाइ नकेल हरि भगती लायो,बिनसायो सभ जगत जंजाल ।।१।। रहाउ ।। आतम राम जपु निरमल मंत,हरि हरि जोती सरब रमंत ।। अहंक्रित बंधन कीनि बिनास,प्रभु सिमरन रुचि आस निरास ।।२।। ऊच नीच त्रिभुवन निवासी,रवि रहिआ घट घट अविनासी ।। सीतल ससि प्रगटाई किरणा,लख चुरासी जोनि न फिरणा ।।३।। चंदन वास बनस्पति होई,निरमल बुद्धी कीनसि धोई ।। बारा वंनी कंचन होइआ, श्रीचंद्र भंडारे ढोइआ ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। हुकमै होइआ सकल अकार,हुकमै ऊच नीच विसतार ।। हुकमै तल अतल पाताल,भूर भुवः स्वः सत सार ।।१।। हुकम एक केवल हरि नाम ।। हुकमै काल जाल जंजाला,बिनस जात लहि सुख बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। हुकमै तीनहु देह रचाई,हुकमै जोति निरंतरि पाई ।। हुकमै आवण जावण सूझै,हुकमै अगम अगोचर बूझै ।।२।। हुकमै जोनी लख चुरासी,हुकमै भया अलोक निवासी ।। हुकमि चंद सूरज गैणारे,हुकमै मंडप महिल मुनारे ।।३।। हुकमै बंधन मुकत कराया, हुकमै निहचल थाउं बसाया ।। हुकमि तुरिअ पद सहज सरूप,श्रीचंद्र प्रभु हुकम अनूप ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || नीचहि ऊच करत खिन माहिं,हरि हरि नाम अम्रित रस पाहिं || माया सिलक बिदारी काट,बहुर न जोहहि जोनी वाट ||१|| नाम हुकम संतन मन माना || आदि अनादि अगाध अपाला,अगम अगोचर सनमुख जाना ||१|| रहाउ || कमल विगास सहिज लिव लाई, दिब्य द्रिस्टि अनुभउ विगसाई || आनंद धुनि प्रगटी सभि सोइ,निरमल जोति बुझाने लोइ ||२|| अंधकार उर ते सभ नासा,इक थल थिर सिमरत प्रभु आसा || बुद्धि प्रकास कला वरधाई,जनम मरन की चूकी काई ||३|| गिआन अम्रित अभरे सर भरे,रसना उचरत हरि हरि हरे || आण जाण मिटे प्रभु महिली,श्रीचंद्र सच सिमरत सहिली ||४||६६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || खेत जमायो हरि प्रभ पूरै,आनंद प्रगटै अनहद तूरै || नर नारी मिल मंगल गाए,भरे भंडार अखुट अघाए ||१|| गोबिंद नाराइण का खेत || मन मेरे,सद खुसीआं

अनुभउ,अंकुर प्रगटे हिरदै चेत ।।१।। रहाउ ।। घनी सुगंध कीरती फैली,कंचन रूपै भरपुर थैली ।। गो गरीब वरसाने घने,असन बसन भोगत सुच सनै ।।२।। नौनिधि सिद्धि ग्रिहे निज पाई,सगले वाजी जगत वधाई ।। बाजे बजे भई छनकार,सगल लोक महि जै जैकार ।।३।। गुण निधान अविनासी राया,जिअ जंतु सभ सुखी वसाया ।। सुख पायो दुख दूर पराता,श्रीचंद्र वाधा धरि खाता ।।४।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। बाग बगीचे सुंदर मेवे,सीतल छाइ सुगंध वसेवे ।। राज महल मंडप असवारी,छोड चलो सगरो पासारी ।।१।। दासी दास राणिआं घणी ।। जब ही देह बिनासी नरपति, छूट गई सभ माणक मणी ।।१।। रहाउ ।। हाथी घोड़े रथ संघाता,सभ सिउं टूटिओ खिन महि नाता ।। सोराही पिआले मद भरे,सूने परे धरे के धरे ।।२।। पूत मीत कबरन की झाक,सस्त्र अस्त्र सिर डारी खाक ।। गया सनेह माय लपटाई,अपर लोक महि बजी बधाई ।।३।। मरिओ मरनहारो तजि पूत,

लपटिओ मन संपदा विभूत ।। अचरज प्रभु मन जगत बनायो,श्रीचंद्र मरनो न वसायो ।।४।।६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लपटिओ मोह मिथिआ पासारै,जाणै नाही मरण विचारै ।। दास दासीआं धीआं पूत,राज साज सभ कारज ऊत ।।१।। आवत जिअ के नाही काम ।। हीरे लाल जवाहर माणक, कंचन रूपा बिनसिओ खाम ।।१।। रहाउ ।। अलह राम सत्त की बाणी,मिरतक काम न आवत प्राणी ।। पट अंबर अरु फूलन माला,पहिराए दिअ देस निकाला ।।२।। गोर सजाई पाई घनी,मुनकर जा नकीर संग तनी ।। गज गज निकस न जाइ मुकाम,कयामत लौं बड दूख सहाम ।।३।। सिमरिओ रब्ब न आलमगीर,निकट थिरै निरधनी फकीर ।। सत्तार गफ्फार न रखिओ चीत,श्रीचंद्र जोऊ अंतह मीत ।।४।।६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। जीवत तजि संग साथ पराहिं,मूए कहु कैसे चित पाहिं ।। दारा मीत पूत सनबंध,किनहि घालिओ इक खिन बंध ।।१।। घोड़े मंडप महिल अटारी ।। जिन कउ तू अपनो करि

मानै,सो सभ खिन महि जात पधारी ॥१॥ रहाउ ॥ पाप करे जिनि हेत दराज,मार गरीबन कीनिओ राज ॥ पालक कीन जाहि संग हेतु,आगिआकारी अग्र निकेतु ॥२॥ कंचन लाठी गहि करि हाथ, आगै पाछै चलतै साथ ॥ नैन उचाइ न कबहूँ ताकै,अंती अउसर भए बिबाकै ॥३॥ चलिओ मारग परै दुहेला,भैरव जम किंकर भा मेला ॥ राम सिमरि होइ अंत सहाइ,श्रीचंद्र लग संतन पाइ ॥४॥७०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मरि मरि जाते मूरख लोग,मरणो हेतु न काहूँ जोग ॥ जानत नाहिन को कहँ मूआ,काहिं सनबंध काहि सिउं हूआ ॥१॥ मूरख जनम मरै दुख पाइ ॥ आवहि जावहि ठौर न पाइ,पर उपकार न हित चित लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जूझिओ नाहिन दीनन हेतु,उदरि लोभ लगि मांडिओ खेतु ॥ दान दिओ नहि जान लाचार,द्रब्य भार करि जोनिनि खुआर ॥२॥ भगति करी नहि गिरिधर केरी,दंभ हेतु म्रिग पेखै हेरी ॥ वाद विवाद रचै विरथारी,जो कछु कीनो लागि विकारी ॥३॥ अंतु काल जमदंड सहाना,धन जोबन ढरकै पछुताना ॥ साधु संग जपु दोइ कुल साध,श्रीचंद्र जग जलधि अगाध ॥४॥७१॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ जिनि जन भजिआ हरि प्रभु नाम,सिद्ध भए ता के कुल काम ॥ ऊच सिंघासण थिरिओ महंत,आगिआ महि सुर रहत अनंत ॥१॥ जग महि आया सो परवाण ॥ हरि अविनासी अबिचल पाया,जनम मरण की चूकी काण ॥१॥ रहाउ ॥ मरन न कर सिउं ठेलिओ जाइ,नहिं करि सकिए तसू पछताइ ॥ जेते सास लिखै करतार,घाट बाढ कबि होत न सार ॥२॥ जो बासर जीवन को होइ,भोगहि सोऊ न अनथा कोइ ॥ आपहुँ कोऊ जोड़ विछोड़,होवत नाही मोड़ अमोड़ ॥३॥ करणहार इहि खेड बणाई,आवण जाणा कीन उपाई ॥ नाम रहहि नामहि भजि लेह,श्रीचंद्र देह ह्वै है खेह ॥४॥७२॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ अनिक छत्रपति गए गवाए,अनिक जोधा धर माहि बिलाए ॥ जिन राज की अवध अनंत,जाहि कीनहु किहँ सिउं मंत ॥१॥ को गोरन को मड़ियन माहिं ॥ मूत्र विस्टा कूकर सूकर,काक सवारत चुंचन ताहिं ॥१॥ रहाउ ॥ गया न आयो पुनि भव माहीं,झूठे मंडप थाप

सजाहीं ।। को जाणै कवने थल गऐ,महा गरत महि निघरत भऐ ।।२।। जिनहुँ कबहुँ नहि हाथ निकाला,नहिं लीनो नहिं दीनो माला ।। सीत उस्न की सुध न दीनी,सुख दुख की कोऊ बात न कीनी ।।३।। करवट लीन न कीनी हाइ,नाहिं जनायो लोहू घाइ ।। श्रीचंद्र किआ ताकी आस,करि कछु जब लग है घट सास ।।४।।७३।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। चार दिवस की चटकी मटकी,परी धरनि पर कालहि पटकी ।। को गाडे को अगनि जराइ,कोऊ कूपै धरै दुराइ ।।१।। जिमि चाहै तिमि ही को करै ।। ना काहूँ को बरजन करता,ना काहूँ को भाखै ररै ।।१।। रहाउ।। वरजित नाहीं कूकर खात,काक चील निरभै आघात ।। गलै सड़ै दुरगंध न जानै,धूप धुखाइ न हित कहुँ ठानै ।।२।। बूडत पानी नहिन पुकारै,नांगों होइ न कहित उघारै ।। छुधा पिपासा छाया धूप,हाल पुकारी रंक न भूप ।।३ ।। तीरथ पुंन दान हरि नाम,करि मानुख जीवन को काम ।। मरै परोगे घोर अंधारि,श्रीचंद्र नित भजहु मुरारि ।।४।।७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मिरत न खावत रोटी पानी,मूठित भोले नर अगिआनी ।। जान बूझ कै कूप परंत,काहुँ न पेखै मिरतक जंत ।।१।। लख चुरासी जोनिनि गेड़ ।। माखी माछर दादर योनिनि,ब्रिख मीन गिरि बांधा फेड़ ।।१।। रहाउ ।। जीवत अज़मत कहूँ न पेखै,मिरतक भए धरि परिओ भुलेखै ।। बनहि मजौर भैंस सम मोटे,लोभ धार गल मानव घोटे ।।२।। गंग नीर डुबवाए हाड,धार पंख कबि धरनि न छाड ।। पिंड गया भरि पेखिओ नाहि,डहकावत लगि उदर डुराहिं ।।३।। पाठ पढ़े को प्रेत न आवा,कीनो जाहिं उबरनो दावा ।। श्रीचंद्र सुनु मूढ़ अयानै,सत्गुरु लगि प्रभु अंतर जानै ।।४।।७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। रे मन मूढ़,भजहु हरि नाम,जिअ तेरे कै आवहि काम ।। चार दिवस की जग वडिआई,किउं ता सिउं लगि जनम गवाई ।।१।। पूत मीत भाई सनबंधी ।। बंचन हित बहु चितवत जतनन,काम चलावत अंधा धुंधी ।।१।। रहाउ ।। बुद्धि विकास खलास न होइ,उमर गई

नहि उपजी लोइ ॥ साक सैन दाबत परभाउ,भोजन पानी बंधिआ पाउ ॥२॥ कबहुँक जे पूरब करमाणे,जान मनीखा प्रभू टिकाणे ॥ प्रारब्ध मानव सो जोड़ी,मारग चलति न लंगड़ी घोड़ी ॥३॥ लाग लोक संग गई जवानी,जरा ग्रासते चिंत बढानी ॥ आई मौत चक्र लै हाथ,श्रीचंद्र छुट गयो अनाथ ॥४॥७६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ गोरख जागिओ अलख जगाई,सुंनमुंन कीनो नाद बजाई ॥ घंटा संख धुनी भी महा,भयो कुलाहल खग गे कहाँ ॥१॥ रे गोरख,तू किउं इत आयो ॥ ताड़ी लाइ चढ़िओ गगनंतर,सुंन सरोवर माखी तायो ॥१॥ रहाउ ॥ निद्रा गई न नैन गवाइ,सीतल भवर न तपत बुझाइ ॥ उनमनि बिसर भूचरी भई,अवधि बताई किमि द्रिढ़ थई ॥२॥ बाज बजायो पूरन होइ, भीम परिओ किउं सुखपत रोइ ॥ छपि बैठिओ किउं दए किवार,जोगी भ्रमते दुआरहि दुआर ॥३॥ सिद्ध कहाए मरण न छोडे,जटा मुंडाइ बनावहि रोडे ॥ अगम अगोचर खेल रचाया,श्रीचंद्र अविनासी राया ॥४॥७७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || एक राम मन माहि बसाइ,मरै न बिनसै सहिज समाइ || मन अरु राम दुहन को मेल,अगनि बरूदहि संगी खेल ||१|| जिनि पाया सत्गुरु संजोग || छुधा पिपासा तन मन बुधि हरि,जीव ईस सिउं कहिओ जोग ||१|| रहाउ || माया ब्रहम मिलै इक साथ,अंन सफल जो मेलै पाथ || करम सफल करते परयोग,धरम सफल जो द्रिढ़ता होग ||२|| सफली काया हंस समेत, किरसानी सफलत भे खेत || राम सफल संग सीता रमणी,सफल गोपिका हरि मधु गमणी ||३|| सस्त्र मंत्र सूरा बल साथ,सफलै राज निखुटत न आथ || सिख गुरू जे पूरण संग,श्रीचंद्र भव सफल दुअंग ||४||७८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || काठ अगनी तरु तर जारै,बड़वा सोखै रतन भंडारै || रतनन अगनि फूट तन जाइ,परबत माहिं दरेड़ैं पाइ ||१|| अगनि सरब भव महि सरताज || धरणी अगनि बनस्पति मौली,आपहि अगनी आप निवाज ||१|| रहाउ || खग अगनी मिरत लीन पचाई,तन

अगनी देह भसम कराई ॥ पाहन अगनी पाहन नासा,बारिद अगनी जगत प्रभासा ॥२॥ लोह अगनि धरि कीन दुखंड,तप अगनी सिउं तेज प्रचंड ॥ जप अगनी कारज किअ सिधि,अगनी संजोग गांठ की बिधि ॥३॥ धूणें अगनी देव प्रत्यख,नैन अगनि सिउं चालत पंथ ॥ श्रीचंद्र अगनी भवसार,जनम मरन के संकट टार ॥४॥७९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गउड़ी गुवारेरी** ॥ डरत अगनि ते जल महि गए,जल अगनी भसमी करि दए ॥ अंतरि अगनि भभाकी जागी,भागत भागत भए अभागी ॥१॥ अगनि उठी अगनिहुँ अधिकाई ॥ बूझत अगनि नीर के पाए,नीर अगनि किमि बुझै बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ जरे ब्रिख पत फल फुल साखा, जरे पब्ब ऊचै बड लाखा ॥ जरे भुवन दस चतुर सुहाए,मंदर महल अटा धर साए ॥२॥ नारे नदी सरोवर नद,सागर सप्त तरंग सझग ॥ धरणी पउण अकास सबाया,मयंक ध्रुव मंडल ताराया ॥३॥ आवत सगल बुझावन काजा,राजा परजा जरे समाजा ॥ श्रीचंद्र नहिं लागी बूझै,बिन अगनी नेह अवर न सूझै ॥४॥८०॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लगन अगनि की रीति अनोखी,आपहि बार आप ही सोखी ।। आपे दहे आपनी काया,आपहि मुरदे लांबू लाया ।।१।। कोऊ न संगी साथी होई ।। साजन मीत सखाबंधु भाई,सीस देन बहु मुस्किल जोई ।।१।। रहाउ ।। जल निवरे जल निवरे नाहि,अंतरि अगनि उलारे बाहि ।। खंडेधार बिछाय नचावै,आपा खोइ ता काहि जनावै ।।२।। भड़के भांबड़ लुड लुड चाल,जान बिहाली होइ निहाल ।। मरन अमरन जान निज जिय,जीव अजीव बिगस है हिय ।।३।। उडै न उडै जाल बिन जाल,पाल अपाली चाल अचाल ।। श्रीचंद्र लग गई निगोडी,का चातुर का कहिऐ भोंडी ।।४।।८१।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। रे मन,अब चड़िऐ गिरिनार,प्रेम कुंड लेहु अम्रितधार ।। चील उड़ानी आमिख बोटी,हरि तजि काहि चुटावत चोटी ।। १।। प्रेम पिआला जिनि जन पीआ ।। त्रिखा बुझानी अम्रित बानी,गुरु अविनासी जीवन जीआ ।।१।। रहाउ ।। छुधा पिपासा चीत न कोइ,हर जेते

बिचरत सुख सोइ ।। भरता आपहुँ लेह बुलाइ,थंभ भई त्रिअ सूझ न काइ ।।२।। मंड दुधीरे मीने हेत,वेस्या जागहु जीवन चेत ।। अजगर भोजन थिर ही लहै,मोह वसि जिंद कबूतर दहै ।।३।। जल बरसानै की जिमि रीति,सोआ चूक बेचिए नीति ।। टुंब टुंब रस नाम पिआया,श्रीचंद्र थिर सद ही काया ।।४।।८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सत्गुरु पूरे की वडिआई,नाम सुधा रस दिओ पिआई ।। मति मटकी संचै गुण पाए,गुड़ करि गिआन पदारथ माहे ।।१।। मद मतवारा मस्तुलमस्त ।। प्रेम खुमार चढ़े गगनंतर,बहुड़ि न जोनी भरमै कस्त ।।१।। रहाउ ।। धिआन की अगनि जलाई मांड,सुखमन नारी चोया भांड ।। पुनि पुनि नामन फेरिओ पोचा,जनम मरण की बिनसी सोचा ।।२।। आनंद मगन चुबारे चढ़ै,आपा आप आप ही झड़ै ।। प्रगटी जोति सहिज उजिआरा,साध समाधहि गहिओ किनारा ।।३।। बंदे नैन अरूप सरूप,काल बसंतै छाह न धूप ।। आप गयो रंग रामहि रंगी,श्रीचंद्र गुरु मत्त अभंगी ।।४।।८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || गोबिंद भजनहि की इहु बेला,सद सुखिआ सद रहहि सुहेला || वाजा वाजहि पुरी बैकुंठ,तसकर सगल पराए लुंठ ||१|| ईहां ऊहां संग सहाई || राम नाम हुंडी करि दीनी,पूरे सत्गुरु बणत बणाई ||१|| रहाउ || गूढ़ वसतु मन मध्य लुकाई,कीमति जाइ न सुरनहुँ पाई || अबिचल तखत विराजै आइ,चिंत बिलानी एक समाइ ||२|| बहुत खजाना रतन अमोल,सत्गुरु दीनो सगरो खोल || सगरी स्रिस्टी करे जैकार,एको अखर धंन निरंकार ||३|| घंट नगारे संख मंजीर,दहदिसि छाई देवन भीर || सत्गुरु पूरै के परताप,श्रीचंद्र नित्त हरि हरि जाप ||४||८४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || गुरु पूरे ले टूटे गांढे,जनम जनम के बिछड़े गांढे || नाम प्रेम सो दए बंधाइ,आवण जाणे गए पराइ ||१|| सत्गुरु कीनो पर उपकार || भव सागर महि गोते खावत, आकल विकल भए भव पार ||१|| रहाउ || ऊच नीच बहु जोनि भवाया,सूका गीला थान बसाया ||

सुख दुख भोगत बहु दुख पाया,सत्गुरु साधू मुकत कराया ॥२॥ जरा मरा दुख रोग विआपै,सुरग पताल भोग पुंन पापै ॥ थंभ तपाए कौरी थापै,सत्गुरु साधु बिदारै आपै ॥३॥ बहु बारी उपाइ बिनाहै,ऊपर हेठ उसारे ढाहै ॥ पाइ बंधाइ रखायो आप,श्रीचंद्र नित्त हरि हरि जाप ॥४॥८५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गउड़ी गुवारेरी** ॥ साधु संग रिद नाम निवास,साधु संग आतम परगास ॥ साधु संग भ्रम सगल निवारे,साधु संग भव दुत्तर तारे ॥१॥ साधु संग हरि सिमरहु प्राणी ॥ जो इच्छहु सोई फल पावहु,अनुदिन कीरति अम्रित बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ साधु संग कुल जग महि हरी,साधु संग सभ अपदा टरी ॥ साधु संग ऊचो पद पाइ,साधु संग जस विसद सुहाइ ॥२॥ साधु संग मिट जात कलेस, साधु संग हरि गुण परवेस ॥ साधु संग अहंमेव न आवै,साधु संग रस अमिय चुआवै ॥३॥ साधु संग मति ऊजल होइ,साधु संग मनि माल परोइ ॥ साधु संग त्रैभुवनी फेर,श्रीचंद्र साधू संग जेर ॥४॥८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || प्रभु भाणा आनंद निधान,प्रभु भाणा चूका अभिमान || प्रभु भाणा आकासै चढ़िया,प्रभु भाणा अघड़ा पुर घड़िया ||१|| साधु आस्रय हरि प्रभु भाणा || छाया धूप भूख नहि पिआसा,जपिआ नाम गुबिंद रमाणा ||१|| रहाउ || रूखी सूखी ठंडी तत्ती,सज्जण दुस्ट कुसत्ती सत्ती || कानन नगर पहाड़ तराई,नाले नदीआं लहिर चढ़ाई ||२|| भूना चणा मलाई दूध,धरती सिहज चढ़ाई खूब || औझड़ राहे राज फकीरी,अति सतकारै खड़ग तगीरी ||३|| ढाका नांगा जीवन मौत,तिल्लेदार उपान न पोत || सदा समालहि हरि नाराइण,श्रीचंद्र प्रभु भाणा भाइण ||४||८७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || भाणे विच है अम्रित सुआद,भाणे अंदरि रस विसमाद || भाणे अंदरि प्रगटि जोति,भाणे अंदरि ब्रहम सरोति ||१|| विरले साधू भाणा भाया || सुंन मंडल विच कीन निवासा,अनहद नाद वजाया ||१|| रहाउ || भाणै चढ़ै सवाया रंग,भाणै वेख साधु जन दंग || भाणै

अनुभउ सूखम तत्त,भाणै आवहि मानस सत्त ।।२।। भाणै भेव देव गति सूझै,भाणै भूत भविख्यत बूझै ।। भाणै सोग हरख ते मुकति,भाणै पूरण होवै जुगति ।।३।। भाणै मान अमान समान,भाणै जनम मरन परवान ।। भाणै निंदा उस्तति भाइ,श्रीचंद्र भाणै आघाइ ।।४।।८८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। उतपति परलय भाणै होइ,भाणै गुरुमुख मनमुख दोइ ।। भाणै जोनी चक्र चलाया,भाणै उपजी बिनसी काया ।।१।। भाणै राजै जोगी होइ ।। भाणै सिंघासन भोगत भोगा,नांगे पाइ फिरहि बन सोइ ।।१।। रहाउ ।। भाणै नारी करहि स्रिंगार,भाणै पीटत छाती तार ।। भाणै बालक हास रमंत,भाणै गिरहि धरणि पर जंतु ।।२।। भाणै घोड़ा तुंद दुड़ाइ,भाणै सिर तल उपरि पाइ ।। भाणै दुरजन को जंग घाता,भाणै युद्ध भूमि गिर पाता ।।३।। भाणै अस्त्र सस्त्र बंन तेट,भाणै धसी कटारी पेट ।। भाणै चढ़ै आकास चरंत,श्रीचंद्र बिन स्वास गिरंत ।।४।।८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। भाणै संत संग लिव लाइ,भाणै जुटत जुआरी चाइ ।। भाणै दीन दुनी

उपकार,भाणै चोर जार कूड़िआर ॥१॥ भाणै परम आनंद निधान ॥ गोबिंद नर नाराइण हरि प्रभु,राम स्याम रटतो भगवान ॥१॥ रहाउ ॥ भाणै ग्रिहस्तै तिआग पराइ,भाणै परनारीन रमाइ ॥ भाणै उपजति धरम गिलानि,भाणै करम रुचित परधान ॥२॥ भाणै संपद सुखद विजोग, भाणै जोग अजोगी भोग ॥ भाणै संग चंडालहि वास,भाणै निसिदिनु रहि उपवास ॥३॥ भाणै मीठा कौड़ा होइ,भाणै मिलत गई अबरोइ ॥ भाणै हस्सै भाणै रोवै,श्रीचंद्र सद भाणा जोवै ॥४॥६०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ सखी सहेली सुनहु बात,चैन न आवत दिनसु रात ॥ अंतरि अगनि मिलन प्रभु केरी,किउं करि मिलिऐ भी बहु देरी ॥१॥ कहहु सगल बिधि मुहि समझाइ ॥ जनम दिओ जब ही तिनि करते,कवन हेतु उर प्रेम उपाइ ॥१॥ रहाउ ॥ करम विस्व करता वखिआना,आपन कीआ आप ही पाना ॥ अनिक जनम जेऊ किए चिराणै,भोगत भोगन सोऊ धिङाणे ॥२॥ डार दिओ हरि गोरख धंधा,जात छुडावन बांधिओ बंधा ॥ करम कुकरम अकरम न सूझै,अंधकार माया महि लूझै ॥३॥ धार अनुग्रह खोलै ग्रंथि,ताहि मिलै संतन की संथि ॥ सोऊ मिलावहि भरते राम,श्रीचंद्र

निहचल बिस्राम ।।४।।६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मातु पिता सनबंधी भाई,सखी सहेली बहिन भौजाई ।। देत दिलासे धीर धराइ,भूसन बसन अमोल पहिराइ ।।१।। माई,सांति न आवत कोइ ।। अंतरि पीर करक की रड़कन,सरक सरक सर उरहि गडोइ ।।१।। रहाउ ।। जलनि न बूझी रंग तमासै,सावन तीअन हास विलासै ।। झूलै झूली मंगल गाए,बूंद सुहानी माची चाए ।।२।। चुंनी लाल उडानी पौण,छाती ऊची कंबू धौण ।। गलवकड़ी किलकड़ी घुमाई,फेरी फिरिआ बाह लुडाई ।।३।। भोजन अम्रित छत्ती खाए, परसी अनल तेल तूलाए ।। मिलै विचोला जे कोई आइ,श्रीचंद्र प्रभु परसहुँ पाइ ।।४।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। देरानी जेठानी संग,ननद सहेली सूहे रंग ।। बाबुल महितारी सज साज, खाट बिछाइ दिखायो दाज ।।१। जाइ रहहु अपने घर माही ।। अंग साक सनबंधी साथी,रो रो पाछल ओर मुराही ।।१।। रहाउ ।। ले चालिओ सभ बंध छुडाइ,साजन मेरो सदा सहाइ ।। अम्रित रस

सरसे सभ अंग,लागिओ उर महि पिय को रंग ।।२।। नगर नया सुभ थान बसाया,नवां रूप भरते दरसाया ।। बुझ गई त्रिसना खान अरु पानै,प्रेम मगन मन भए दिवानै ।।३।। भरतारै रस जीवन जाइ,दीजहि सज्जण संत दुआइ ।। भया समाहा अनंद उछाह,श्रीचंद्र प्रभु संग विवाह ।।४।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सदा समालहु हिरदै राम,होहु निवासी अबिचल धाम ।। आवण जाणा होवहि नास,सिमर राम सफलहि सभ सास ।।१।। माता पूतहि दई असीस ।। दूख भूख नहिं कबहूँ विआपै,सदा समारहु करता ईस ।।१।। रहाउ ।। धरती कोमल रहि तल पाउ,सदा सुहावै ठंडी छाउ ।। चारहुँ कुंट निवावहि सीस,सगरे देस भनहि वागीस ।।२।। सत्रु अगारी टिकन न पावें,रिधि सिधि रहि बावें दावें ।। साधु चार संगी नित तोरे,खट भी आगिआ महि निसि भोरे ।।३।। लहहिं पदारथ चार दुआरै,होवहि कीरति बडि भुनसारै ।। राम राम धुनि प्रगट करावहु,श्रीचंद्र स्तुति मारग धावहु ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सिमरै राम नाम पत होइ,रिदै निवारहु दुबिधा दोइ ।। दुस्मन दूत न लागै कोइ,लागू सगरे भागहि रोइ ।।१।। राम नाम की अमित वडाई ।। ईत ऊत सद राखा जिअ का,बिघन बिनासै हरि हरि नाई ।।१।। रहाउ ।। हत्थी छाया सगरे लोग,अहिनिसि अरपित मीठे भोग ।। भोग मोख कर तल गति परे,आप तरहि संगी सभ तरै ।।२।। काई बात न ऊणी होई,जस कीरति वरतै सभ लोई ।। धनवंता सुभ गुण भरपूर,गिआनवंत कुलवंत सऊर ।।३।। सिर साहां के साचा साहु,राम नाम धर रतन धराहु ।। सगरो लोक रिदै का मीत,श्रीचंद्र जिहँ राम सु चीत ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। लोभ लागि मुंडवायो सीस,नहिं हिरदै वासिओ जगदीस ।। जटा धारि कै दंभ कमायो,हरि हरि नाम न मन बसायो ।।१।। संत संग जपु प्रानी राम ।। हलत पलत मुख ऊजल है

है,प्रभु दरगह आवहि काम ।।१।। रहाउ ।। जम ते भगवा नहिन छुडावै,करम कमाना संग रहावै ।। तीरथ न्हाइ न मन मल धोई,दुरमति दुबिधा संतन खोई ।।२।। पाहन पूजत सांति न पाई,एक छोड कोटिन पर पाई ।। अंतरि अगनि न बिनसी धूणे,पाप उचाए सिर पर दूणे ।।३।। फेरे जपनी माया लाग,मन निरमल ह्वै साधू जाग ।। श्रीचंद्र लग साधू पाइ,दंभ छोडि रामहि चित लाइ ।।४।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मिथिआ काया मिथिआ वेस,हाड मास नस मज्जा केस ।। मिथिआ लाल पीत रंग स्याम,मिथिआ गोरा काला फाम ।।१।। देही अंग प्रतंग न साथ ।। सिर पसली छाती जंघा जानू,गुलफ भुजा अंगुरि पद हाथ ।।१।। रहाउ ।। केस घास सम जलत प्रचंड,कड़ कड़ करत हाड के खंड ।। घ्रित सम मज्जा अगनि जलाइ,फूटे खोपर लोग पराइ ।।२।। बसन फूल काठ संभार,भसमी भूत भए इकसार ।। सत्त आतमा तन ते गयो,लेखा अपनै ऊपर लहिओ ।।३।। निरमल आतम साधू संग, राम नाम प्रगटायो रंग ।। सुखीआ होइ बसै परलोक,श्रीचंद्र नहिं विआपै सोक ।।४।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सुंञी देह रहहि इस लोक,भाई बंधु साक सैन सोक ।। सुत सुता मिहरारी माइ,छाती ताड़ति बोलति हाइ ।।१।। कोऊ संग न साथी होइ ।। नागर जन सभ भए इकत्रित,काढहु काढहु भाखहि सोइ ।।१।। रहाउ ।। खाली हाथ जुआरी गया,जम का डंडा सिर पर सहिया ।। माया लै गए अवरै भाई,जमपुर की इह लहै सजाई ।।२।। लेखा देवै मुहले खाइ,कुंडे मारन सिर पर धाइ ।। तत्ते थंम लाय गल ताई,सुनै न कोऊ दई दुहाई ।।३।। अघ कीते दुख सहै घनेरा,जोनी वासा नरक बसेरा ।। हरि सिमरन करि पार उतारै,श्रीचंद्र भुज ऊच पुकारै ।।४।।६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। प्रथमै पंच तत्त विच वास,बहुरो अंन कियो परगास ।। रज वीरज विच भया समाह,माता गरभै लीनै साह ।।१।। अनिक भाँति सहि कस्ट सरीर ।। पायो अनिक थान महि भरमत,राम नाम बिन लहहि न धीर ।।१।। रहाउ ।। बालापन परवसि निरवाह,भूख त्रिखा जुत ऊभे साह ।। पासा लैन न हिंमत होई,माता पिखति दूध कहु रोई ।।२।। खेल गवायो बहुता काल,

उबरत रहिओ प्रभु किरपा नाल ।। तरुणापन कछु आई सूझ,पाठ पढ़त ग्रंथन की बूझ ।।३।। काम उछाला तरुणी संग,लाय कमाय सुढंग कुढंग ।। भया ब्रिधापन चालन चाल,श्रीचंद्र हरि सिमरि दयाल ।।४।।९९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। खेल गवाइ अवस्था बाल,दौड़त कूदत चालत चाल ।। युवा लागि संचन धन भारी,नितप्रति जोहत संग कुमारी ।।१।। अगिआनहि लगि जनम गवायो ।। दीनानाथ सरब प्रतिपालक,दुख भंजन कबि मन न बसायो ।।१।। रहाउ ।। अनिक प्रकारी कीनहि पाप,सुख दुख बांधिओ त्रिसना ध्राप ।। मान अमान अनेक सहारै,इकठे कीनै द्रब्य भंडारै ।।२।। चूने गज गच महल अटारी,हवादार सुंदर बर बारी ।। पुत्र कलत्र संग रस रचिआ,मोह गरत महि अंधा पचिआ ।।३।। होइ बिरध उठ चलिओ पराई,परिवारहि बड धूम मचाई ।। बंधिओ जात काल कै जालै,श्रीचंद्र नहिं राम सम्हालै ।।४।।१००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सरपर चालन है परलोक,धरणी पर नाहीं नर ओक ।। कूड़ै साक सैन परिवार,कूड़े माया के बिउहार ।।१।। सत्त सत्त सत रामहि नाम ।। स्वास गिरास सम्हालहु जीअड़े,तुमरै दरगह आवहि काम ।।१।। रहाउ ।। संतन संग घड़ी भर मेल,काल जाल को चक्र पेल ।। पूंजी हरि हरि रिदै सम्हाल,तोसा जिअ का निबहे नाल ।।२।। नरहरि नाराइण गोबिंद,जपत जपत बिनसहि सभ चिंद ।। निरंकार निरबान गुपाल,दुख भंजन सभ घट प्रतिपाल ।।३।। निरभै निहकलंक निरवैर,सिमरि सिमरि नर पै है खैर ।। सदा सहाई हरि प्रभु धनी,श्रीचंद्र परलोकहि मनी ।।४।।१०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। भीड़ी बीथी चलन न होइ,नांगे पावी कंटक पोइ ।। वरसत अगनि रेत तपताई,संग न दीसत बंधू भाई ।।१।। माया के वणजारे साथ ।। तिआग खड़े को नाहि सहाई, पुलसरात अति कठिनो पाथ ।।१।। रहाउ ।। जमदूतन सिर भार परै है,पग बेड़ी गल तौक धरै है ।। हाथन कड़ी जंजीरन लोह,बेदरदे बज्रन संग कोह ।।२।। कोस अनंत थाक मग गिरै,बहुर उठाइ अग्र

करि धरै ।। मस्तक घाउ रक्त चुचिआत,देत उभासन नहि मुख बात ।।३।। जमधर असि सेलन की चोभ,बसि न चलत उर उपजत छोभ ।। श्रीचंद्र जम मारहि चेत,मना सिमर हरि हरि हरि नेत ।।४।।१०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। निसदिन बीतत औध परानी,बालपन नहिं रही निसानी ।। युवा आइ जबि दियो नगारा,सभ जग दीसत अपर प्रकारा ।।१।। बहिओ जाति प्रानी परवाह ।। पेखत नदी सु इकरस बहती,नार न आवत पुनि तिहँ राह ।।१।। रहाउ ।। मात पिता पितामह गए,बिसरे नामहुँ यादहुँ रए ।। ढेरी माटी ढेर लगाए,ढेरी ढेर न बूझन पाए ।।२।। हरहट मालहि आदि न अंत,घटीजंत्र नहिं थिरत इकंत ।। भगति माल को चक्र चलायो,निसि सोवहिं बासर उठ धायो ।।३।। पहिर खाइ भोगो परिहरिओ,उदिओ सूर अवर मन धरिओ ।। बिरथा सगरी आयु गवाई,श्रीचंद्र हरि गुण नहिं गाई ।।४।।१०३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || सिमरि मना गोबिंद प्रभ नाम,जग महि नहीं तुमारा धाम || दिवस चार को जीवन एहु,नाग न्हाइ नहिं डारहु खेहु ||१|| करता,अचरज तेरा खेल || आइ मिलावहिं मेल विछोड़हि,मेली मेल न जानहि मेल ||१|| रहाउ || सरद खेत कहु जोत सवार,बोयो बीज अंगूरि पसार || हिमकर सिसर पुस्टि करि पोखिओ,चड़ै बसंत काटि करि सोखिओ ||२|| खट मासी पुनि एही कार,तंगल रंबे दाती सार || धंध बंध जंजाल पसारा,बरसा सोखा घाम तुसारा ||३|| दूख सूख अरु लाहा तोटा,आया गया कि पतला मोटा || श्रीचंद्र करि आयु बिताई,इक मन ह्वै नहिं भजिओ कन्हाई ||४||१०४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी गुवारेरी || दिन दुइ चार सुहाने भोग,बहुरो ग्रासिओ सोग विओग || म्रिग म्रिगत्रिसना को डहकायो,दौरत दौरत प्राण गवायो ||१|| सुख अग्रज ते अग्र सिधारै || हरि चंदौरी कै भ्रम मूठो, अनिक जतन चहि सुवरण अगारै ||१|| रहाउ || दामिनि दमक न कर महि आवै,केवल नैनन ही

चुंधिआवै ।। घाम पोट सिर काहुँ उचाई,सिहजा काहुँ चंद्रिका राई ।।२।। लोह मेख किहँ निद्रा परै,को उबरिओ करवत सिर धरै ।। गहि यरव्यणि किहँ प्रानी छोरा,मकर संग सिसु केलै भोरा ।।३।। सुख कै हेत अनिक दुख पावै,तऊ नहीं इक छिन लौं आवै ।। श्रीचंद्र गोबिंद सम्हार,मानुस जनम एक ही बार ।।४।।१०५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गई न आवहि बहुरो हाथ,पछुतावन पुनि होइ अकाथ ।। जनमत ही जो स्वास गयो है,अब लों वापस कबहुँ अयो है ।।१।। संत उचाई भुजा गुहारै ।। भव सागर महि सुख कै बोहिथ,फूटै छेक हजारै ।।१।। रहाउ ।। दहदिसि टूटी छूटी माल,रतन जवाहर हीरे लाल ।। तसकर खड़े गहै करवारी,ग्रीवा धरनि लोभ लग डारी ।।२।। मोती जीअरे कर नहि परै,अपन प्राण किओं अनरथ डरै ।। रे! इह सुख नहिं दुख की खाण,निघरत किओं दलदल महि जाण ।।३।। सुख किहँ चिता माहिं कुद पाया,नदी बहे किहँ सुख द्रिस्टाया ।। श्रीचंद्र भजि श्री रघुनाथ,सहिज सूख लहि होहि सनाथ ।।४।।१०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। वेस्या रमत न आई लाज,जन गरीब को करत अकाज ।। द्रब्य चुराए नहिं सरमाना,बिरथा झगरत नहिं संकाना ।।१।। संतन संग लाज सिउं मरै ।। लोकालोक सदा सुख दानी,हाथ दीप लै कूपहिं परै ।।१।। रहाउ ।। नगन होत कछु नाहीं लाज,मिथिआ लाग बनायो पाज ।। मुख सिउं भाखत अधिक बड़ाइ,गंदी भड़ास दुरगंध बढाइ ।।२।। लाज न पहिरण भोगण भोग,लाज न पेखण लोग अलोग ।। लाज न जोग अजोगन करमै,लाज न बैठण ऊठण धरमै ।।३।। लाज न मरहिं देहि दुख लोग,लाज न लूटत पत नर जोग ।। श्रीचंद्र इक संतन संग,लाज मरत है नरकी ढंग ।।४।।१०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। धन धरणी अरु भोग पदारथ,धीआं पूत संजोगी सुआरथ ।। धाम महल दिवानै खान,घने बरामद अधिक दालान ।।१।। त्रिपति नहीं पावत उर माहिं ।। ईंधन घ्रित सनेह तूलै सिउं,अगनी मिसमाई किहँ आहि ।।१।। रहाउ ।। मेदनि कीन न कबहुँ पुकार,मत बरसहु

बादर मंझधार ।। जलपति सरिता नहिं लौटाई,राज न अपनी अवध थिराई ।।२।। दस अंगुलि को उदर भरै है,त्रिसना आसा स्वरग हरै है ।। धन दाबै त्रिसना महि भूला,मदमत्त भा मिथिआ मद झूला ।।३।। लाख कोटि संखन लौं गिनहि,पाउन संग धरा नभ मिनहि ।। राम नाम श्रीचंद्र आधार, आसा त्रिसना लोभ निवार ।।४।।१०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। बक बक अधिक गपौड़न संग,वाद वेद को चारत रंग ।। ठाकुर पाहन जान बबाड़ै,केती आमद भई दिहाड़ै ।।१।। मुख कथनी बदनी हित माइ ।। अंधे लोक न भगवत सूझत, आवत जावत लोग सबाइ ।।१।। रहाउ ।। तिलक चढ़ायो चोटी बांध,भुजा उलारी धोती सांध ।। संत नहीं माया वापारी,कौड़ी पैसा द्रिस्टि मझारी ।।२।। अंतरि कालुख द्रब्य उपाइ,बाहरि नाम निरंजन गाइ ।। रीसीं खीस परे मंझधार,सगले छोरे नरकन दुआर ।।३।। बिन साधू नहि पार उतारा,झख मारत डोलत संसारा ।। मन की मैल बिनासत जोइ,श्रीचंद्र तिस पग मल धोइ ।।४।।१०९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। पंडित वेद वाद महि राते,जोगी जोग पंथ बतराते ।। संनिआसी तप तिआग कमायो,उदासी विचरत सुख पायो ।।१।। मन मद माते परे कुराह ।। गिआन पदारथ जग क्रितारथ,स्वारथ तिआग अस्वारथ चाह ।।१।। रहाउ ।। तपसाहं तप सरब गवायो,जप करते नहिं जपु उर लायो ।। भगति गवाई बिन पर भाउ,नाचै टापै माया दाउ ।।२।। पूजारी चित माया खोर, गुफा अंधारी बांधिओ चोर ।। लीला रास रची रामदास,द्रब्य लोभ कीनो उपवास ।।३।। बिन चित्त उज्जल राम न आइ,माया कालुख काले थाइ ।। श्रीचंद्र उर दाग मिटाइ,राम आइ थिर पलंघ सुहाइ ।।४।।११०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। नौनिधि बैठी आसन डार,अस्टदसा सिद्धिन मल दुआर ।। भोजन खट रस छत्तीह जान,पट अंबर पसमंबर तान ।।१।। खाली थाउं न रती रहाई ।। दुहिता सुत नारी जामाते, सैन साक सनबंधी भाई ।।१।। रहाउ ।। इक आवहि इक जावहि धाई,रंगभूमि निज रूप

दिखाई ।। हाउ भाउ रचि दाव लुभावहि,भई भीड़ कछु वार न पावहि ।।२।। सुरग पाताल देव अरु देवा,धाइ धाइ आवत सरवेवा ।। तुलसी माला धूणी फहुड़ी,लोटा आसन चिमटा खौड़ी ।।३।। जंत्र मंत्र तंत्रन रस घिरे,लोभ काम आनंद स्थिरे ।। श्रीचंद्र जे होवै थाउँ,तब ही धरे राम आ पाउँ ।।४।।१११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। गोबिंद गुण मन होहि पुनीत,जीवन मरन पछानै नीत ।। आनंद रस अम्रित त्रिपतासै,आसा त्रिसना लोभ बिनासै ।।१।। मुनि जन मुंडित मनहु विकार ।। ब्रहम लोक लौं सरब पदारथ,काक विस्ट लख किय निरवार ।।१।। रहाउ ।। आवण जाणा सोक न चिंता,लोक ग्रहण हित तंत न मंता ।। उसन सीत छाया नहिं धूप,ऊठण बैठण बोलण चूप ।।२।। रंक राव नहिं कंचन लोहा,निंदा उसतति सिहजा होहा ।। सेव असेवा बैरी मीत,मान अमान हरख भै भीत ।।३।। आनंद कस्ट भोग अरु मौत,वर सराप पुनि औतर सौत ।। जिहँ गिआनी कै नाहीं चीत,श्रीचंद्र ताहीं संग नीत ।।४।।११२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। मनमोहन गिरिधारी लाल,क्रिसन मुरारी राम गुपाल ।। दुखभंजन सिद्ध अंतरजामी,घट घट वासी जन के सुआमी ।।१।। नाराइण निराकार गुबिंद ।। मधुसूदन कैटभ हंतारै,माधव मरदन मान मुकंद ।।१।। रहाउ ।। जन प्रतिपालक देवन देव,पट अंतर को जानत भेव ।। अबिचल राज छत्र सिर सोहै,सुर नर देव सरब को मोहै ।।२।। जिअ जंत सभ को सुखदाई, खग म्रिग यख्य भुजंगन पाई ।। तुंबर नाच रिझावन हेतु,दूख मूल जिनि काटिआ केतु ।।३।। नाथ अनाथां मया निधान,सरब कला पूरन भगवान ।। ऊना नाही काहूँ थाउँ,श्रीचंद्र सद सद बलि जाउँ ।।४।।११३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। तन सभ दूख रोग भंडार,आधि विआधि उपाधि अपार ।। वात सलेखम गरमी ताप,भई मवेसी सन संताप ।।१।। कवन वस्तु प्रभु भेटा दीजै ।। नासवंत संतापी भासक,

अरपित अग्रज लाज मरीजै ।।१।। रहाउ ।। घोड़े रथ संबाह घनेरे,मंडप अटा महल उचेरे ।। धुजा पताका बन उपबना,रतन जवाहर माणक पंना ।।२।। रूपा कंचन मोती लाल,सुंदर वस्त्र रेसमि साल ।। हीरा चूनी मणि दमकंत,पहुँच न साकति कोटि पटंत ।।३।। अनिक विकारी वेड़िआ मन, आपहुँ रचि रमतो कामिन ।। श्रीचंद्र द्रिढ़ निसचय धारा,अरपहुँ सीस प्रभू उपहारा ।।४।।११४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। सखी सहेली मंगल गावहु,ननद गहेली निज सहु रावहु ।। देरानी जेठानी सास,देहु असीसां अनंद उलास ।। पति भेटहुँ पत रहहि हमारी ।। जनम मरण के संकट मेटहुँ,बहुड़ि न पावहुँ भवजल बारी ।।१।। रहाउ ।। ऊच नीच बहु पेखे थाउँ,भरि पानी कूपहि ते धाउँ ।। देही साड़ बनायो भोज,उपालंभ तऊ रोजहि रोज ।।२।। पितु महितारी किअ संतोख,अंतरि अगनि न उतरै दोख ।। भाईअन दै पिआर प्रतिपारी,सुलगी छाती बोझ अपारी ।।३।। रही मनाइ देविअन जाइ,आसा पूरन भई सबाइ ।। अविनासी भरतार मिलाई,श्रीचंद्र लड़ि द्रिढ़ पकराई ।।४।।११५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ खेलण कूदण सगरे छूटे,संग सहेली गई निखूटे ॥ मात पिता हूँ विदा कीनी,गठड़ी बांध जुदाई दीनी ॥१॥ ईहां ते अब जावहु ऊहां ॥ दुख की जहाँ निसानी नाहीं,मगन होइ आनंद समूहाँ ॥१॥ रहाउ ॥ भूख पिआसा सगल मिटाई,अंतरि वेदन पति हटाई ॥ मुख सिउं कहिओ न जाइ अनंद,घर की मालिक भई स्वछंद ॥२॥ काई वस्तु न गई निखूट,जगत लोग सगरे रहि लूट ॥ चोज तमासे अनँद विनोद,अधिक उछाह उमाह प्रमोद ॥३॥ जानणहारो पती परबीन, सगल समग्री अखुटी दीन ॥ करणहार हिरदै महि वूठा,श्रीचंद्र भव पूरिओ ठूठा ॥४॥११६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ संगी सदा गुबिंद हमारे,सगल भुवन निसि दौत सवारे ॥ ऊच महल महि किओ निवास,आगिआकारी दासी दास ॥१॥ कोई न आंख उचाइ निहारै ॥ नाग अस्व स्यंदन पत संजुत,पायक खरे दुआरै ॥१॥ रहाउ ॥ जाचित परजा लोग निआउँ,अनरथ होइ न कितहूँ ठांउँ ॥ जै जैकार सकल महि लोक,दूख रोग गए वेदन सोक ॥२॥ पंच दूत नित आयस माहिं,दस दासी

सनमुख नहिं प्राहिं ।। उर संतोख सरब जिअ दया,बद्जन कबहुँ न कोऊ भया ।।३।। जो जस चाहा सो तस पावा,ऊणी बात न विआपिओ हावा ।। श्रीचंद्र गुरु ब्रहम अपार,सरब सूख जा कै दरबार ।।४।।११७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। नित नित गुण गोबिंद प्रभु गावहु,अनंद सूख मंगल सभ थावहु ।। खेम कुसल कलिआन विनोद,जीवन लाभ सदा प्रमोद ।।१।। सद खुसिआं आनंद घनेरे ।। हरि हरि नाम रिदै सद वासे,दुस्मन दूत न आवहिं नेरे ।।१।। रहाउ ।। गिआन धिआन सुभ गुण भरपूर,सिद्ध समाधि सहिज सुख मूर ।। सिम्रिति वेद पुरान सिधांत,सरब साधु जन परम मतांत ।।२।। नारद सारद देव वडेरे,नाराइण भजि भे प्रभु नेरे ।। जनम मरण के दोख विनास,पद अनुभउ पाया परकास ।।३।। काम क्रोध अहंकार निवार,पहुँचे माधव के दरबार ।। श्रीचंद्र अविनासी देव,सिमरि सिमरि लहिऐ उर भेव ।।४।।११८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। साजन संत आओ ग्रिह मेरे,सदा निवास करहु इह डेरे ।। भजहु सबद गोबिंद गुपाल,दीन दयाल सदा किरपाल ।।१।। बाज बजावहु अमर अनंता ।। ताल मंजीर रबाब घुंघरू,चंग मुचंग उपंग रणंता ।।१।। रहाउ ।। मन वासै हरि प्रभु कै संग,कीरति भगती रंगिओ रंग ।। ऊजल होइ अनुभवै पाइ,तिहूँ लोक का पेखै राइ ।।२।। मिरतक के पावहु पुनि सास,सगरी पूरण ह्वै है आस ।। जनम जनम के पाप निवार,प्रगटावहु हरि जोति उजार ।।३।। मो गरीब की भुज गहि लेह,चरण धूड़ि डारहु इस देह ।। अनाथां नाथ दीन दुख भंज,श्रीचंद्र कहु हरि हरि संज ।।४।।११६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। अपने दास की राखहु लाज,पूरन होइ हमारा काज ।। बिघन निवार अनंद बरसावहु,संत जना कै मारग पावहु ।।१।। दोखी दुसमन सगल विनासै ।। राम नाम गोबिंद

गुपालहि,हरि हरि हरि प्रभु पंथ परगासै ॥१॥ रहाउ ॥ सरब जीव भव सुखी बसावहि,आनंद मगन राम गुण गावहि ॥ बाढहि वेद वाक्य वखिआना,गावहि गीत पुरान कुराना ॥२॥ जन गरीब को चरनी लाइ,सदा निवाजहि संग मिलाइ ॥ खत्री ब्राहमण सूद चंडाल,राम नाम जप होत निहाल ॥३॥ चूकै भारे जम दर केरे,सहिज सूख आनंद बसेरे ॥ हरि पूरन कीजै मन आस,श्रीचंद्र कहु उर भरवास ॥४॥१२०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी गुवारेरी ॥ मन महि सत्गुरु कीजहि धिआन,रसना जापहु गुणी निधान ॥ उठि प्रभात इस्नान करीजै,सतसंगत को दरसन कीजै ॥१॥ इन बिधि पावहु परमगते ॥ दीन दरद दुखभंजन सेवहु,गुरुमुख सिमरहु रमापते ॥१॥ रहाउ ॥ नाम सुधा रस मन त्रिपतासै,आसा त्रिसना लोभ विनासै ॥ निहचल धाम गोबिंद निवास,जनम जनम की उतरी पिआस ॥२॥ धरमराइ के कागद फारै,हरि सिमरत पायो हरि दुआरे ॥ बेणी संगम हिरदै न्हावा,अटल अचल अनरूप सु

थावा ।।३।। त्रिबिधि बिनासी आसा कूर,मंगल बाजै अनहद तूर ।। पंच सबद धुनिकार अनूप, श्रीचंद्र पेखिओ प्रभु रूप ।।४।।१२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी गुवारेरी ।। संत संग निसचय हरि नाम,संत संग नित सुख बिस्राम ।। संत संग मन होइ प्रकास,संत संग आतम बिस्वास ।। १।। संत संग होइ परमगते ।। जनम जनम हउमै मल धोपै, परमातम नित वास मते ।।१।। रहाउ ।। काम क्रोध अहंकार विनासै,सुद्ध सच्चिदानंद प्रभासै ।। तुरीयापद सच्च तखत निवास,गुणनिधान हिरदै त्रिस्टास ।।२।। आचारा वीचार अनूप,प्रगटत गोबिंद सहिज सरूप ।। जीवन मुकत सदा किरपाल,सिमर सिमर जन भए निहाल ।।३।। सूख सांत आनंद विनोदा,हरि सिमरत उर मोद प्रमोदा ।। संत संग लहि अगम अपार,श्रीचंद्र रस नाम मुरार ।।४।।१२२।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।।

जहँ जाइऐ तहँ संग,है हरि अंतरजामी ।। घट घट पूरन सरब में,नाहीं कत खामी ।।१।। जीव रूप अनूप दयाल ।। सदा अनंद अनंदी मेरा,राम राम उर अंतरि लाल ।।१।। रहाउ ।। आतम रहस बहिस कछु नाही,हिंदू मुसलिम नाहिं विभाग ।। सागर नदी वाह नहि परबत,मंदर मसजिद बाग तड़ाग ।।२।। चक्र बक्र चकचार चलंता,गुपत प्रगट कछु नाहीं भेद ।। सतकारिओ नहि जात खदेड़िओ, भेड़ फेड़ ते सद निरवेद ।।३।। जान अजान समान जाहि कै,इकरस पूरन सरब थिरंत ।। मान अमान सद हरि गुण गाइऐ,श्रीचंद्र पूरण भगवंत ।।४।।१।।१२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। जिनि किछु किया सो किछु जानै,किआ जानै अल्पग्य इह जीउ ।। नभ मेदनि तेज जल वाउ,किमि उपजै कैस मिलावा कीउ ।।१।। अगम अगोचर कथा अगाध ।। सुर नर असुर मुनी गण जोगी,हारे सिद्ध समाधी साध ।।१।। रहाउ ।। किहँ रचि प्रथम समायो किहँ बिधि, दुतिय त्रितिय चतुरथ पंचान ।। है पंचहि कि है कछु अपर भि,करता पुरुख ही करत पछान ।।२।। अणू प्रमाणू भाव अभावहि,उपादान समवाय विधान ।। कैस अनादी कैसहि मिथिआ,गिआन भानु कै कलपन ठान ।।३।। आइ गयो कै आयो नाही,सुपन पदारथ मिथिआ भान ।। ब्रहम कि माया श्रीचंद्र तजि,इक मन ह्वै करि रटि भगवान ।।४।।२।।१२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। जिउं जिउं फुरत विचार घनेरी,मद विदिआ हूँ संग चलंतु ।। सागर गहिरे लायो गोता,कर कछु पाए निकसिओ जंतु ।।१।। आगै आगै आसा बाध ।। पुनि पुनि जाइ रसातल खोजत,लाभ लाभ ही रतन अगाध ।।१।। रहाउ ।। इक की चमक दमक उर पैठी,दुतीअ पेख विसमै

मन धार ।। त्रितिअ जोति महि मन को लायो,चतुरथ कीनो तिहँ मिसमार ।।२।। वरधत वरधत एऊ घट गयो,समरथ हीन भयो बिलखाइ ।। चमक रेख केऊ किरण भानु की,गिनि गिनि हारिओ उर विसमाइ ।।३।। कौ जानै केतक है ऐसे,केते जन भरमहि इत चाइ ।। रे नर! जा के एत पदारथ, श्रीचंद्र सिमरहु सत भाइ ।।४।।३।।१२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। किउं करि आयो किउं करि जैहै,किहँ कारण ते करम कमाइ ।। करम जाल ते किमि करि छूटै,मुकति पदारथ किउं करि पाइ ।।१। मन रे,तजि सभ नाम धिआइ ।। बंध मुकत करम निहकरमा,भरम अभरम न उर महि लाइ ।।१।। रहाउ ।। बनै न बनहै छुटै न छुटहै,अघड़ घड़िओ नहि जाइ कदात ।। आपहि रचहि आप बिनसावहि,पुनह उपावहि देवहि दात ।।२।। खोस लेह तौ वस न चलत कछु,जौ देवहि तौ नाहिं मुकात ।। जौ करि वाट दिखालन धावै,गहबर बन महि आइ पदात ।।३।। जे करि मारग जात भुलावै,धरम दंभ पिखिऐ अवदात ।। श्रीचंद्र सद राम सिमर मन,भरम भुलावा सभ मिट जात ।।४।।४।।१२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी पूरबी || आपन ही मन भरम उपाए,आपन ही निरवारै || जिहँ आपन ही सागर खोदिओ,कैसे उतरहि पारै ||१|| पूछन बात न तहिं बनि आवै || आपन लाया करमन लागै,छूटत नाहिं छुटावै ||१|| रहाउ || अगम अगोचर सद अविनासी,गुरु मेखलि गड दीनी || उतरत चढ़त नाम रस माता,आवण जाण न चीनी ||२|| मगन भए ते सूख न दूखा,बन बेहड़ पुर गामा || कंट अकंटक दीसत नाहीं,नरक सुरग परधामा ||३|| आई गई न रही चलाई,गई चढ़ाई दौरी || श्रीचंद्र इक राम नाम संग,द्रिढ़ करि पाई कौरी ||४||५||१२७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी पूरबी || गिआन धिआन सभ मन ते उपजै,मन ही को बंध लीनो || सात समुद्रन ते हूँ गहिरै,डूब न आपन चीनो ||१|| मन रे! राम नाम इक सार || डूबण तरण न कर महि राखिओ,एऊ अंतरि भार ||१|| रहाउ || कित बूडण कित तरण होत है,भवजल है केऊ नाहीं || बूडे तरे तरे भव बूडे,लिखी पुराण कथाही ||२|| धरमी भए अधरमी केते,करम अकरमी केते || देव कि भूत प्रेत को ऐ

है,वाद विवाद संकेते ॥३॥ कामी सभै नरक महि जैहैं,सुरग अकामी वासै ॥ श्रीचंद्र इक राम नाम तजि,बहु लोगन बकवासै ॥४॥६॥१२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी पूरबी ॥ गई न आवहि आई न जावहि,कलपन तिआगहु भाई ॥ आई गई न हाथ तुमारे,फोकट जलपन भाई ॥१॥ करते आपन हाथ रखाई ॥ जिउं जानत है तिउं ही करता, मानव किआ करि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ चले बिवाहन लाड़े लाड़ी,मंगल साज सजाए ॥ बटपारन मारग आ घेरिओ,घाट मिरत अपड़ाये ॥२॥ मारत कोटिन कोट सत्रु गन,नर नारी नहिं संका ॥ बिललावत पिखि द्रब्य मन अंतर,तिआगिओ नाहिं अतंका ॥३॥ खिन महि चंड प्रचंड अनल सम, खिन महि सीत शशांका ॥ मन की करता ही गति जानहि,श्रीचंद्र हरि बांका ॥४॥७॥१२९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी पूरबी ॥ करते पुरुख उपायो ऐसा,ता को कउन सुधारै ॥ नर बपुरा जौ उदम करता,तौ उलटो भुइं पारै ॥१॥ सभ बिधि करते हाथ गुसाई ॥ जिउं उहि राखहि तिउं ही रहिणा,चालण

तिवै चलाई ।।१।। रहाउ ।। को नहि चाहत सुरग सिधावा,को चहि नरके जाणा ।। को नहि राज सिंघासन चाहै,को चहि मंग मंग खाणा ।।२।। को नहिं चाहत उपमा प्रभुता,को चहि निंद सुनै है ।। को नहिं चाहत नामवरी को,को चहि नाहि जनै है ।।३।। साढे तीन हाथ को पुतला,अल्प आयु को पाई ।। कैसे लेह आकासहि मापी,श्रीचंद्र गुन गाई ।।४।।८।।१३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। ससै सींग को धनुष लियो करि,तीछण बिसिख संधायो ।। अस्व पवन असवारी चड़ि कै,बंधिआ पूत सिधायो ।।१।। मन रे! वाक प्रपंच जंजार ।। राम नाम को सिमर आसर,गुरु मूरति आधार ।।१।। रहाउ ।। गगन नगारा धम धम धमका,चमकाई करवारी ।। अणजंमे धर मार गिराए,जीत भई रणकारी ।।२।। जनम अजनमे कैसे गिआना,अधिआनहि कस धिआना ।। भरम अभरमहि धरम अधरमहि,अन कथनहि वखिआना ।।३।। जानहु जान सुजान विचारहि,राम नाम इक ओटा ।। श्रीचंद्र सिमरहु दिनरैणी,नहिं विआपहि कबि तोटा ।।४।।९।।१३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी पूरबी || अरब खरब लाखन कौ राजै,त्रिसना काहु न बूझी || अणहोवत की होवनि थापी,अगम अगाध असूझी ||१|| मन रे,आसा त्रिसना तिआग || साधु संग भजि नरहरि गोबिंद, नाराइण वडभाग ||१|| रहाउ || भलो बुरो जो तैं ही संचिओ,सो भोगहिंगे पिआरे || सिमरण अगनी ऐतक जालहु,बन काठ भसमारे ||२|| सागर लहिर बहाइ लिजावहि,त्रिण भारहि बरिआई || राम नाम के सिमरण भीतरि,अनंद मगन विसमाई ||३|| मन ऊचहि ते ऊच न जानहि,होइ नीच नहिं नीचा || माधव अविनासी अविगत हरि,श्रीचंद्र उर खीचा ||४||१०||१३२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी पूरबी || जो दिन गयो न आयो कबहूँ,स्वास गयो कबि आयो || संगी साथी साजन बंधप,गयो न कबहूँ पायो ||१|| इत उत के सभ छोडि खिआल || दीन दरद दुखभंजन सुआमी,भजि गोबिंद गुपाल क्रिपाल ||१|| रहाउ || गए राज नहिं बहुड़े कबहूँ,गई न युवा थिआई || गई नारि कुलवानन केरी,घर महि नाहि बसाई ||२|| लज पति खोई भी बदखोई,धोई कबहुँ न धोई || बध कियो निज मित्र जान कै,रोए ते किआ होई ||३|| मानुस जनम न बहुरो मिल है,जान लेहु मन

मेरे ॥ सिमरि सिमरि प्रभु अपना सुआमी,श्रीचंद्र उर धैरे ॥४॥११॥१३३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गउड़ी पूरबी** ॥ सूरज चंद सितारिअहुँ,रंग खिन खिन बदले ॥ बिजली किरणा जोति खट, थिर नाहिन जदले ॥१॥ गई जवानी बहुर न पावहि ॥ करि सिमरन इक मन गुरुमुख होइ,नहि पाछे पछुतावहि ॥१॥ रहाउ ॥ जल प्रवाह नहि पुनि फिर आयो,तेल बलिओ दीपाई ॥ मास पक्ख रितु बासर अयनहि,संवतसर चक्राई ॥२॥ उदर अंन नर नारी मंडल,चलिओ जात नहिं बंना ॥ केती बार उपायो करते,केति बार भव भंना ॥३॥ केते जुगन चौकड़ी पलटै,रिखि मुनि गए सिधारे ॥ श्रीचंद्र इस काल चक्र सिउं,कालहि लगि निस्तारे ॥४॥१२॥१३४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गउड़ी पूरबी** ॥ नाम धिआइ परम सुख पाइऐ,अद्भुत रंग रंगारे ॥ ऊच महिल चढ़ नीचै ताकै,सुख दुख कीरे कारे ॥१॥ मन रे! नाम जपत जन धीर ॥ सुधि बुधि बिसरि बिलानी मनसा, बिनसी हउमै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ नीचा ऊचा त्रिसना पिआसा,दूख भूख तबि होई ॥ तन सुध जब

लग चिंतन शक्ति,इह अनुभव जन लोई ।।२।। एकै रंग मस्त मतवारो,गंध सुगंध न बूझै ।। नैन खुमार न दीसत लोई,चढ़ै विमान अगूझै ।।३।। प्रेम पिआला भर करि पीता,उलटि गई सभ भीता ।। फिरिओ फेर उलटायो आपन,श्रीचंद्र रंग रीता ।।४।।१३।।१३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। आदि अपार अगंम तरोवर,फल अम्रित सरसाए ।। बिन जिहबा दाँतन के दाबै,गुरुमुख वर रस पाए ।।१।। उनमनि सुखमनि सहिज समाना ।। लाख पताल अकासन भीतरि, बिचरो बिना विमाना ।।१।। रहाउ ।। हीरे लाल जवाहर माणक,पन्ना मणी अपारा ।। मोती कंचन रूपा अगणत,वसतू भरे भंडारा ।।२।। कोटिन कोटि भानु परकासित,चंद्र चंद्रिका फैली ।। चमक बिजुरी नैन न चौंधित,कौंधत गरज पहेली ।।३।। तुपक धमाका मंडल दसवें,अनहद नाद वजाया ।। अमर भए रंग अमरी राते,श्रीचंद्र हरि राया ।।४।।१४।।१३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। जबि भेजत तबि आवत धरणी,मात पिता सनबंधा ।। जबहि बुलावत तब

उठि जावत,नहिं बाँधे को बंधा ।।१।। राचि रहिओ रचना भगवान ।। मन बुधि सूझ बूझ नहि काई,कवन निमित्तहि को उपादान ।।१।। रहाउ ।। कवन संजोग मात पितु कीनो ।। साक सैन साजन सख बंध ।। कवन काज करि भोजन देतो,कहा कहा लै चालत धंध ।।२।। अंधे खूह अंधेरा ढोवत, वाचत वेद न भेद जनात ।। करता पुरुख विराजित हिय महि,बातन ते नाहिन पतिआत ।।३।। कथनी बदनी कहनि कहावनि,कथि कथि केते चल गए बीर ।। नाम नाराइण एक अधारा,श्रीचंद्र रुचि प्रेम गहीर ।।४।।१५।।१३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। पंथ कुपंथ प्रगटत भए,सत्त बानी कूड़ा ।। हउमै ममता मोहणी महान,मोहै नर मूढ़ा ।।१।। वरतारा कलु केर भयाना ।। लंबी दाढ़ी स्वेत भल राखी,दंभ कपट दुहकरम खजाना ।।१।। रहाउ ।। जटा धार नख वरधते लखो,बंचन हित धारै ।। मूँड मुँडाइ धर बिचरते,भए लोभ अंतरि कारै ।।२।। नीले लाल स्याह हरित पीत,अंबर धर सेते ।। कानन मुद्रा धार लिय जिनहिं,रचि धरम निकेते ।।३।। बखसस अपनी हम पर कीजहि,नाराइण गोलोकी ।। नाहिन चाहहुँ संगति इनकी,श्रीचंद्र निरझोकी ।।४।।१६।।१३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। घेरी गाय कसाईअन जाइ,किह बिधि प्रजा छूटहिगी ।। बादसाह हथ छुरी गहाई,बिप्र ओर उभ जूटहिगी ।।१।। दाँत काढ धाए बड सुआन ।। फिरत मुकद्दम खोजत खुंदर,फसत कैस बिधि को धनवान ।।१।। रहाउ ।। पेट भरन हित रोटी राखी,पहिरन हित कछु बसना ।। परण कुटी रचि आयू काटत,गहि लीनो निज दसना ।।२।। राज नरन पित सनमुख कन्या,धर करि भोग कमायो ।। माता पिता सुत पेखत लूटी,न्याव ढंढोर पिटायो ।।३।। छोरहि द्रब्य न हन गुरु चेला,अंतरि कालुख काले ।। राम राम बिन अवर न सूझै,श्रीचंद्र रहिओ सम्हाले ।।४।।१७।।१३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। मानुख खावत प्रणक अहिंसी,हड्डो रोड़ी कुत्ते ।। मुँह लागा लहू छूटत नाहीं, असथ हिलोरन जुत्ते ।।१।। गिद्ध काक चीलाँ मंडराहीं ।। पेख म्रितक दहदिसि ते धावत,द्रब्य की सूँघ सुंघाही ।।१।। रहाउ ।। आमिख रत्ती भरि हूँ जौ लग,तिआग न कहूँ सिधावैं ।। एक अघाइ भई कछु पाछै,चार ओर मिलि घावैं ।।२।। जाल मसाल ढूंढिऐ सभ भव,न्याव न पाई ठौरा ।। पृथवीपति ते राजनरन मिलि,धन टोरन हित दौरा ।।३।। दुहिता इज्जत हित पुकार किय,उलटी और लुटाई ।।

राम राम करि स्रुत दै अंगुलि,श्रीचंद्र दिन हाई ।।४।।१८।।१४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। महा जनाही परम गुनाही,राजन राज सदावैं ।। पंडित काजी मुल्ला गिआनी,महा कुकरम कमावैं ।।१।। राम राम करि दिन गुजराइ ।। धरमी बड़े कहावत जेते,तिनि ते नरक डराइ ।।१।। रहाउ ।। मानव मारत काण न करते,रख्यक गोधन जेई ।। अस्वन पाई प्रजा लताड़त,प्रजापाल कहि तेई ।।२।। सत्त असत्य न बूझ परत है,पाहन भोग नैवेदै ।। खेद मिटावन के हित गमनिओ,परिओ जाइ महा खेदै ।।३।। फल अधरम को धरम महाना,धरम अधरमहि जाना ।। क्रिपानिधान मया सागर हरि,श्रीचंद्र थहराना ।।४।।१९।।१४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। कर दीपक लै ढूँढ देख मन,सच संतन बिनु नहिन बसाई ।। दुगध शेरनी कंचन बासन बिनु,नहि ठहरत जतन कराई ।।१।। कूड़ो कूड़ कूड़ संसार ।। जनमत कूड़े बंधन बांधे, म्रितक कूड़ी करत पुकार ।।१।। रहाउ ।। ऊठत कूड़े बैठत कूड़े,कूड़ो बोलत ररत गुहार ।। कूड़ो नारी कूड़ो पूतै,कूड़ो वरतत कार बिहार ।।२।। कूड़ो राजा कूड़ो परजा,कूड़ अमीर दिवान वजीर ।। कूड़ो

नाचहि टापहि कूदहि,कूड़ो कूड़ी परी बहीर ॥३॥ कूड़ो मंदर देव देवालै,कूड़ पारखद सालगिराम ॥ कूड़ो मोहन भोग निवैदिओ,श्रीचंद्र कूड़ी ररत नमाम ॥४॥२०॥१४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी पूरबी ॥ कूड़ो धरम थाप रचि देवी,ए नहि भोगति महिखे मास ॥ कूड़ो खोड़सि बिधि किअ पूजा,कर उचाड़ नहि किअ धिरवास ॥१॥ कूड़ो राम सिया थप रावन ॥ लछमण भरत शत्रुहन कूड़ो,कूड़ी लोग बधाई भावन ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ी रास रचाई गोपी,कूड़ी बंसी कान्ह बजाई ॥ कूड़ मुहम्मद भयो पैगम्बर,कूड़ो कूड़ी दई दुहाई ॥२॥ कूड़ो पीर कबर महि बैसा,कूड़ मसीहा गगन थिरायो ॥ कूड़ो कागद कलम स्याही,कूड़ रचि आखिआन सुनायो ॥३॥ कूड़े गड़िओ कूड़ हित प्रापति, कूड़ लहिओ कूड़े लपटाइ ॥ श्रीचंद्र तजि कूड़ो कूड़ी,सच संतन लागै पाइ ॥४॥२१॥१४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी पूरबी ॥ देव देवालै मंदरी घनी,पूजा करि विस्तार रचाई ॥ देवसरी यमुना

नरमदा,महिमा लिखि लिखि भव भरमाई ।।१।। पातक लहहि न सत सर न्हाई ।। जो चमटे मन अंन सिउं,बकन बात कत जात पराई ।।१।। रहाउ ।। हज्ज कियो लख कोटि बार मै,पाहन नहि बोलिओ ।। चद्दर ओढ़ी हाजिआं बड़ी,खीसन टकटोलिओ ।।२।। मरकट हितु कुज्जी गड़ी,धरा चनकहि भरमायो ।। दाने मक्की लख सूआ अयो,नलिनी लटकायो ।।३।। निवरत पाप न मनहि ते,इयों डहकंत लुगाई ।। श्रीचंद्र संगति साधू बिना,कसमल नहिं जाई ।।४।।२२।।१४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी पूरबी ।। अंधी दुनिआ अंधे मनहि,अंधो किया पसारा ।। अंधे अंधा करम कमावणा, अंधी बहि धारा ।।१।। पढ़त कुरान पुरान अनेक ।। वेद सासत्र अरु सिम्रिती,वाचक सावण भेक ।।१।। रहाउ ।। अंधे आगू नर गन प्रेरे,अंधे मारग डारे ।। अंधे भवनिधि गहिरे बूडत,किउं करि उतरहि पारे ।।२।। दानी दान दिवावत अंधे,अंध नदी का तीरा ।। अंधी गाय चुँघावति बछरू, अंधे पीवत खीरा ।।३।। अंधे करम धरम भ्रम भूले,अंधे लोकन आसा ।। श्रीचंद्र साधू सतगुरु इक, राखत नैनन पासा ।।४।।२३।।१४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।।

सत संतोख जास धन पल्लै,तोट न कबहूं आवहिगो ।। लोक अलोक सदा होइ सुखिआ,गोबिंद माहि समावहिगो ।।१।। रे मन चक्र चुरासी मेट ।। हरि हरि नाम संग लिव लागै,होइ न जम सिउं भेट ।।१।। रहाउ ।। जान अजान भयो किमि बावर,जनम मरण दुख भारी ।। जम जंदाल दंड सिर मारै,किस पहि करहि पुकारी ।।२।। जिनि साजन के संग लाग कै,अनिक कमाए पापा ।। जब ही जमदूतन गहि बांधिओ,कलपहि एक कलापा ।।३।। भजि गोबिंद सरब सुखदाता,तो कउ अंत छुड़ावै ।। श्रीचंद्र भगवंत भजन बिनु,बिरथा जनम सिरावै ।।४।।१।।१४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। पाप कलापन खापनहारा,एकहि गोबिंद नामा ।। आगै मारग लंबा घाटा,

नहिं ता महि बिस्रामा ।।१।। जप मन राम नाम सुख होइ ।। सूख सहिज आनंद मंगल रस,बिघन न लागै कोइ ।।१।। रहाउ ।। अंधकार महिं नाम जोति सिउं,वसतु अनूपम सूझै ।। मिटि अगिआन पाइ प्रभु नामहि,अगम अगोचर बूझै ।।२।। जहां जहां कछु गुप्ती घाटी,चित्रगुप्त बतरावहि ।। राम नाम के तेज प्रतापै,सरब सूख निधि पावहि ।।३।। अगम पंथ महि रमते रमते,तरुवर सीतल छाया ।। श्रीचंद्र प्रभु सिमरन केरा,मारग मुकता पाया ।।४।।२।।१४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। काल पिता मुर मनसा माई,जिनि मो कउ उपजायो ।। दया धरम जत सत संतोखै,भाई बहिन बनायो ।।१।। भव को खेल पिखिन हित आयो ।। नर किमि करै प्रभू किमि भाखै, अचरज लख विसमायो ।।१।। रहाउ ।। आपन साज समाज रचायो,बैठन उठन टिकाने ।। आपन मंगल गीत गवाए,आपन नेर बहाने ।।२।। खिन महि शंकर होत क्रिपाला,देत विभूति भारी ।। आपन तन पै बसन न लीनो,नेत गही गिरिधारी ।।३।। माइ निरासी रोइ बिछुंनी,पिता भयो बनवासी ।। सत्गुरु बंधन काटि विडारै,श्रीचंद्र अविनासी ।।४।।३।।१४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। सनै सनै खिस जाइगो,जेतो है भव भोग भंडारा ।। जब ते स्वास परिओ तन माही,तब ते बहिओ जात परनारा ।।१।। काहे नर नहि करत उबारा ।। बैठे खावत खावते खायो, जावत निखल भंडारा ।।१।। रहाउ ।। परे चोर ग्रिह मूस रहे है,नाहिन पाहरू करि हटकारा ।। अंध निसा वथु सगरी हर ली,सोइ रहिओ मद मत्त गवारा ।।२।। दूर देस मग अती गाखड़ो,पोट उचाई भारी छारा ।। अस्व स्वास बहु भागहि लादिओ,थाक परै किहु चलै न चारा ।।३।। जंत्र मंत्र औखध रस धातू,महा रोग को नहि उपचारा ।। सभ संतन इक राम नाम ही,श्रीचंद्र धुनि ऊच पुकारा ।।४।।४।।१४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। जनमत मरणा संग लगायो,मेल बिछोरन हारा रे ।। माटी हूँ ते उपजिओ इह तन,अंतु होहि पुनि छारा रे ।।१।। किउं नहिं मरण चितारा रे ।। लोभ लागि परधन हिर लायो,नर फाही गर मारा रे ।।१।। रहाउ ।। आपन जीवन मरनो औरन,अंतरि मति अंधिआरा रे ।। खिन पल दमक दामिनी दमकति,बादर बहुर गुबारा रे ।।२।। खंडे धार गली अति भीड़ी,तन चीरहि संग

आरा रे ।। जैसो करि हैं तैसो भरि हैं,अमिट निआव करतारा रे ।।३।। हरि हरि भजन करहु दिन राती, दीपक देह उजिआरा रे ।। राम नाम बिन मुकत न काहूँ,श्रीचंद्र कहिओ पुकारा रे ।।४।।५।।१५०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। किलबिख जनम जनम के बहुते,मति काली जिनि कीनी ।। चोरी जारी कूड़ बुराई,अंतरि द्रिढ़ करि दीनी ।।१।। संतन बिन नहि परलोक सुधारा ।। काम क्रोध अहंकार लोभ मोह, मानव मन किय कारा ।।१।। रहाउ ।। स्रवन नैन रसना अरु नासा,नहि करि है निज कारा ।। कर पद करम गमन ते थाकहि,पेखत नित ही भुनसारा ।।२।। अगनि जरै कै दाबहि धर महि,मुख सिउं निकस न बानी ।। छुधिआरत केते दिन राखहि,काहूँ न जाचिओ पानी ।।३।। पेखत नितप्रति मुगध न समझहि,दोस काहुं को दीजै ।। श्रीचंद्र सभ जन गन परिहरि,राम नाम रस लीजै ।।४।।६।।१५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। प्राण गए देह भई डराणी,पावन हूँ ते अपावनी ।। मिल पिआरे उद्दम धारे, पहुँचायो अपनी छावनी ।।१।। किआ तुमरी है भावनी ।। महिल मुनारे बाग बगीचे,धरनी भई

बिगावनी ॥१॥ रहाउ ॥ घरनी रोइ खोहि सिर पीटत,पूतन संपत रावनी ॥ हंस इकेला लेखा बाकी,ह्वै है कैस छुडावनी ॥२॥ म्रिगन उजाड़ी फसल असाड़ी,किउं करि आसा सावनी ॥ माल पदारथ भए अकारथ,सुंदर थिरा डरावनी ॥३॥ किआ घोड़ी किआ कोड़ी जोड़ी,कसमल ताप तपावनी ॥ हरि हरि भजन यजन गुरु संतन,श्रीचंद्र कल पावनी ॥४॥७॥१५२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी चेती ॥ जिउं जानहि तिउं करि गति मोरी,दीन दयाल क्रिपाला ॥ जुगति न जाना गुन नही कोई,तू सद परम दयाला ॥१॥ मैं अगिआनी बाला ॥ अनिक उपद्रव नितप्रति राता, करहैं तूहीं संभाला ॥१॥ रहाउ ॥ रैणि अंधेरी मग नहिं सूझत,गहिबर बन तमसाला ॥ करुणाकर भुज गहि निज राखहु,सरणागत प्रतिपाला ॥२॥ मेलत अगनि करन नहिं डरपत,पेलत बाह नागाला ॥ छुरिका माल गरे धर खेलत,पाक न जानत काला ॥३॥ कहउं कहां मन मरकट केरी, जैसी चालत चाला ॥ भूल चूक सभ मेट निवाजहु,श्रीचंद्र नंदलाला ॥४॥८॥१५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी चेती ॥ अन थांउ कौ सूझत नाहीं,किहँ पै बिनती भनो रे ॥ सगरे देव काल के बांधे,

मै किमि काल हनो रे ।।१।। प्रभु जू,मोहि तुम केवल ओटा ।। चौपड़ चार चुसार चतुरदिसि,भव नर भरमतो गोटा ।।१।। रहाउ ।। परे न दाव पौ बारह सत्गुरु,तिन काणे विभिचारा रे ।। अविआक्रित सनमुख प्रति खेलक,तांते सारहि जाउँ मारा रे ।।२।। राम नाम की एही बारी,जौ करि आवहि हाथ रे ।। तब पहुँच पाए निरबाणहि,निरभै होवहि साथ रे ।।३।। अपनी करहु द्रिस्टिहुँ करुणा,चूकै गेड़ चुरासी रे ।। श्रीचंद्र कहुँ इस कलि बीचहुँ,राखहु चरनन पासी रे ।।४।।६।।१५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। निंदा चुगली मोह अभिमाना,काम क्रोध लोभ नासिओ ।। आसा त्रिसना ममता दुरमति,दूजा भाउ बिनासिओ ।।१।। सत्गुरु ऐसी किरपा तुमारी ।। कलिमल कलित दलत मति गरकत,तूला लाइ उधारी ।।१।। रहाउ ।। सागर गहरे गोते खावत,लिआय जहाज चढ़ायो ।। लागी अगनि चतुरदिसि माही,बारिद बूंद बसायो ।।२।। फंधक फाध मीन को खैंचत,जाली तोड़ बगाई ।। मगहा पड़े घेरिओ पाधी,राजनरन की धाई ।।३।। लटकत उलटे झूलत झूलत,सूए नलिनी टूटी ।। अविनासी गुरु वाक्य सुनत ही,श्रीचंद्र पहि फूटी ।।४।।१०।।१५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी चेती || पिता पितामहि पुरुखा सगरे,बहे नदी अति गहिरी || गहिर गंभीर चक्र गन लेती,उघटत ऊरध लहिरी ||१|| खुरा न खोज लहायो || एकहि बारी गोता दीनो,बाहरि निकसि न पायो ||१|| रहाउ || आह न धाह कहूँ सुनि पाई,तल तल गए धसाई || तट गेरत तरुवरन उपाटत,सां सां करत सिधाई ||२|| गैली डेली अध ऊरध गति,बहिती अगन अनंता || कहूँ ठौर थित पावत नाही,त्रिण किआ गति चितवंता ||३|| नक्र बक्र कछुप गज नागहि,भव निज माहि लपेटा || श्रीचंद्र कहु भुज गहि राखिओ,गुरु अविनासी भेटा ||४||११||१५६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी चेती || सखी मिलहु मिलि देहु असीसां,प्रभु अविनासी पाया || जनम मरण जर सगल विनासै,आतम राम समाया ||१|| अब मैं पायो पद निरबाना || घट घट विआपक पट पट गिआपक,ब्रहम सरूप समाना ||१|| रहाउ || चकिआ काल पीस है नाही,मेखलि सिउं लपटाए || नदी मोह नहि गोते खाहीं,राम जहाजहि पाए ||२|| कूह कारी निसि माया माही,रस्मि भानु हरि फैली || नांगे भूखे त्रिसना विआकुल,कानन पाई थैली ||३|| बिन पद त्रान बसन के हीने,पातसाहा

पग परसे ।। अबिचल राज तखत सिर सोभै,श्रीचंद्र सद हरसे ।।४।।१२।।१५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। जो करि अपनी मानी तू ने,अंत न संग चलाई ।। जा के हेतु कस्ट तू पावत, होहिं न कबहूँ सखाई ।।१।। काहे भार परायो चाऐं ।। जब ही आपद तुम पै परहै,ह्वै हैं दाऐं बाऐं ।।१।। रहाउ ।। हीरे लाल जवाहर माणिक,कंचन रूपा भारा ।। जब लग तब लग सभ ही सेवत,मूरख मुगध गवारा ।।२।। धन धरनी की अधिक बडाई,जन गन उर अनुमाना ।। निरधन बिन जमीन के पेखे, अनतै भाग पराना ।।३।। ऊल जलूल फजूल बतऊअन,वाउ दुआउ पलाला ।। श्रीचंद्र कछु काम न सर है,सिर पर डंडा काला ।।४।।१३।।१५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। प्रथमे कफन सिर पर बांधे,पाछै मुख लिहु बीरा ।। पाछै बहुर न आवन पैहो, पनच तान धनु तीरा ।।१।। सूरे सनमुख मरणा ।। गहित सिधउरा निकसी जौं चड़ि,तब किमि अनलहुँ डरणा ।।१।। रहाउ ।। तुपक तोप असि ढार कमंदन,गोफन गुरज गहै हैं ।। जमधर बिछूआ

खंजर जंबूआ,सहिथी तान तऐ है ।।२।। बुगदा बज्र कठोर कुदंडन,बिसिख अणालै सहिऐ ।। पहिरे कवच ताउ दे मूछन,छत्रपती सोऊ कहिऐ ।।३।। रथ असु नाग अरूढ सिधाए,चतुरंगनि मुख जूझै ।। जनम मरण कटि सुरपुर पावै,श्रीचंद्र रण लूझै ।।४।।१४।।१५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। लोचत जौ करि जीवन पाया,तब ही निंद अलावै ।। गई न आवत बहुरो हाथी,बहुरि बहुरि पछतावै ।।१।। निंदक गुण ते हीना । क्रोध नाग उर बिल महि पैठा,सुनी न जोगी बीना ।।१।। रहाउ ।। मुख पसारिओ बक्र नक्र बड,अगुण समूल दबोचा ।। तसकर मिल करि गांठ छुराई,दर दर लहिओ वगोचा ।।२।। घाली घाल न माल लहिओ कछु,माँगत फिरत अयाना ।। समै बितायो भरमत बिरथा,अब काहे पछुताना ।।३।। मूरख मुगध अजान गवारै,संत संग नहिं भायो ।। निसदिन निंदा ही मुख माही,श्रीचंद्र भसु पायो ।।४।।१५।।१६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। हउमै मार सरब सुख पायो,अनंद मंगल सभ थाई ।। दुस्मन दूतन भयो

बिनासा,ठाँढि दसोदिसि पाई ॥१॥ गोबिंद किरपा तुमारी ॥ जहँ जहँ जाऊँ सदा सुख पावहुँ, सज्जन स्रिस्टी सारी ॥१॥ रहाउ ॥ संत संग सभ ही कलिआना,चूकी हउमैं भीता रे ॥ जपि जपि नाम ऊच पद पाया,सरब समाना मीता रे ॥२॥ गिआन धिआन पूजा परमेस्वर,धिआन रिदै धारी रे ॥ सत संतोख दया धन पल्ले,तोट न हरि भंडारी रे ॥३॥ गुरु परमेस्वर भेट अनंदा,दुबिधा दुरमत भागी रे ॥ पारब्रहम सभ ठौरहि पेखिओ,श्रीचंद्र संत लागी रे ॥४॥१६॥१६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी चेती ॥ कंचन रूपा रतन तुलाए,नाम न पाया जाई ॥ मन दे सहिज सबद हरि लहिऐ,त्रिसना काम बुझाई ॥ १॥ अब मोहि आतम पेखिओ माई ॥ मैं नहिं गयो तू भी नहि आयो, अनुभउ कस ठहिराई ॥१॥ रहाउ ॥ जहँ ते चले हुते बड पंथा,पग नहि सके पराई ॥ कवन चक्र किह कीन चलावन,कवन चलै कत जाई ॥२॥ अचरज सिउं अचरज मिलि रहिआ,बिसम बिसम बिसमाई ॥ तले तले तले कऊ जावहु,ऊचो ऊच समाई ॥३॥ श्रीचंद्र आपा ही खोइऐ,पर कहु कहँ ते आई ॥ का नहि का होवहि का कीजै,आपे आप रमाई ॥४॥१७॥१६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। काम क्रोध मद सगल विकारा,गुरु किरपा ते छूटे रे ।। हउमै बंधन द्रिढ़ करि बांधिओ,पुरजे पुरजे तूटे रे ।।१।। लीन भए आतम रस माही ।। जो पायो सो कहिओ न जायो,जोति परकास अगाही ।।१।। रहाउ ।। इक आयो इक गयो बिलाई,किनहूँ जान न पायो ।। अगम अगोचर सद अबिनासी,अंतर ही उपजायो ।।२।। कहा विकार सुकार कहाँ के,किह कारण उत नासा ।। विसमै विसम भयो विसमादा,अनद विनोद विलासा ।।३।। राम रमा को कौन निखेड़े,गए बिखेड़े धाई ।। फेड़े के गेड़े सभ चूके,श्रीचंद्र गति पाई ।।४।।१८।।१६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। अनिक जनम की त्रिखा बुझानी,राम पिआरे आए ।। पंच सबद धुनि अनहद, सहिज समाधि समाए ।।१।। सखी री,आज असोक भयो ।। तरवर मूल सडालन कांडी,सागर मध्य गयो ।।१।। रहाउ ।। ढोल ढम्मका दुंदभि नाई,ताल तरंग मंजीरा ।। तांडव न्रित नचाई आयो, महाबली रघुबीरा ।।२।। उर की पीर पछाननहारा,मिलिहै अगनि जराई ।। कोऊ उपाव न कर

मुहि पावा,बिरह सहो दुखदाई ॥३॥ तू राजा मैं सद बनबासिनि,कैसे जोड़ी जोड़ी ॥ श्रीचंद्र इस बिरहनि केरी,किसमति सकत न होड़ी ॥४॥१९॥१६४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी चेती ॥ रामा! धरणी को परमल मल केरा,गंध बिगंध न कामा ॥ सीत सेंध धर राहक खोदहि,फल पावत अभिरामा ॥१॥ प्रभु जी! एकहि सरणि तुमारी ॥ जोतन खोदन पाट उपाटन,सिर पर सदा सहारी ॥१॥ रहाउ ॥ भांजन ईंट बनाई ताई,जल जल कस्ट सहारा ॥ नीर किओ सीतल अचवायो,तऊ न लहिओ किनारा ॥२॥ मंदर उसारे खहित अकासहि,कोटि बरस सिर भारा ॥ ठाढी होइ रही नहि बोली,सुनो बोल करतारा ॥३॥ जे तू करुणानिधान क्रिपानिधि,है तुठ्ठा मन माही ॥ सदा सेव अपनी महि राखहु,श्रीचंद्र गुण गाही ॥४॥२०॥१६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी चेती ॥ तन मन धन सभ तिस का दीआ,किआ हमरी वथु भाई रे ॥ हील हुज्जत कहु किस बिधि कीजै,कैस भांति चतुराई रे ॥१॥ जिउं भावै तिउं राखहु सुआमी ॥ करन करावनहारा तूँ

है,सभ किछु तुमरै हाथ सुआमी ।।१।। रहाउ ।। कैस प्रकार करम कछु कीजै,कैस भाँति अभिमाना ।। बुद्धी सत्ता कला पसारन,चाढ़न सिरे समाना ।।२।। नीचहि ऊच करत बिन देरी,गेरत तल असमाना ।। जा कउ कोऊ न जानत जग महि,सो नरगन मुख गाना ।।३।। जस विआपिओ जा को त्रैलोकी,छिन महि निंदत लोई ।। श्रीचंद्र करतार करत जस,भव महि वरतहि सोई ।।४।।२१।।१६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी चेती ।। राम राम नित सिमरन कीजै,हरि हरि रूप समाइऐ ।। दसम दुआर की अम्रित धारा,सहिज सहिज रस पाइऐ ।।१।। पारब्रहम महि थिरता लहिऐ ।। जीवनपद निरबाण अनूप,अनुभउ आपन महि थिर रहिऐ ।।१।। रहाउ ।। इत उत माया झोल न लागै,नाम मेखली द्रिढ़ गाढो ।। जनम मरन दुख फेर निवारो,दिन प्रति आनंद बाढो ।।२।। सम्यक सत सरूप की जोती, मेटे सगल अंधेरा ।। थित पाई भरम सकल विनासा,बहुरि न भवजल फेरा ।।३।। लख चउरासी चक्र बिलाना,पाया पद निरबाना ।। प्रेम मगन अम्रित रस त्रिपते,श्रीचंद्र भगवाना ।।४।।२२।।१६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।।

अपनी भगती लाइ प्रभु,हरि अगम अपारे ।। हम पापी अपराधीआ,तुम बखसनहारे ।।१।। जिउं जानहु तिउं राख,प्रभु मोहि क्रिपा धारे ।। भव सागर बडि गहिर महि,तारहु भुज धारे ।।१।। रहाउ ।। सदा सरनि महि राखते,दुस्ट दैत्त बिदारे ।। थंम फाड़ प्रगटित भए,हिरणाकसिपु बिदारे ।।२।। दोखी पकड़ पछाड़िअन,सेवक सतकारे ।। आदि जुगादी रखदा,भगतन पैजारे ।।३।। जहां न भाई मीत बंधु,तहँ राखणहारे ।। नाम तुहारे लाग रहै,श्रीचंद्र मुरारे ।।४।।१।।१६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। औगुण रिदै न राखता,सो खसम हमारा ।। सदा सदा प्रतिपालता,दोखन को

टारा ॥१॥ जां को हरि प्रभु चरनी लाया ॥ रोग सोग दुख जरा मरा कछु,ता के निकटि न आया ॥१॥ रहाउ ॥ तौक बेड़ीआं काट कै,बंदसाल निकासिओ ॥ मुँह मूँदण पई पाहरू,नहिं ऊच उभासिओ ॥२॥ चरन गहाए आपणे,गगनंतर चाला ॥ पूरब पुंन परगास कै,सुरलोक पठाला ॥३॥ अबिचल अचल अगम महि,थिरता प्रभु दीनी ॥ दहदिसि गिआन सूरज उदिओ,श्रीचंद्र लखीनी ॥४॥२॥१६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ थिरहै जेती द्रिस्टि महि,स्रिस्टी मै आई ॥ तन जोबन धन माल की,कछु रहै न पाई ॥१॥ मोती माला टूट परै ॥ तसकर डंड गहै सिर ठाढै,कैसे चुन चुन धरै ॥१॥ रहाउ ॥ छीजत छीजत सास कहुँ,ऐहै अंत ओड़ा ॥ कोऊ न बाकी थिर रहै,किउं करि है होड़ा ॥२॥ अब जे कछु तुव चेतना,संतन संग कीजै ॥ नाराइण गोबिंद हरि,मुख राम कहिजै ॥३॥ चलनो अवसै होइगो,चित सिमरहु प्रानी ॥ श्रीचंद्र भजि राम को,तजनी रजधानी ॥४॥३॥१७०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी बैरागणि || केता हूँ कछु राखिऐ,मोहै लपटाई || अंत काल जबि आइ है,सभ होइ पराई ||१|| सदा संग हरि एकहु राम || निबहै लिए मित्रता हारिद,दरगह जिअ कै आवै काम ||१|| रहाउ || धरती भई बिगानी खिन महि,गरब गए तजि ठाउँ || कहा काम अरु क्रोध पधारै,बाकी रहिओ न नाउँ ||२|| कूड़ पसारा बिनसनहारा,माड़ी मंडप महिला || जो नहीं अपना सो द्रिढ़ बांधिओ,पारच पोटी गहिला ||३|| सिमरि गुबिंद जिंद के पिआरे,जिंद जाइ निज थानी || श्रीचंद्र मिट्टी की ढेरी,पाछै रहहि निसानी ||४||४||१७१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी बैरागणि || आयो लाभ लाभन के ताईं,मूलहूँ लियो गवाइ || खेत खा गई चिड़िया सगली,ले लाठी अब धाइ ||१|| मूरख चिड़िआ गही न जाइ || अब उड़ गई उदर पोख कै,काहे को पछुताइ ||१|| रहाउ || धीआ पूत नारि को पालिओ,अनिक जतन धन लाइ || चलन फिरन के थाक परिओ है,कछु खिन बाकी काइ ||२|| नित्त उडीकत हरि प्रभु मेरा,मेरा होइ सो आइ || हाथ न एहै

पउड़ी छुटकी,होहि न कोऊ सहाइ ॥३॥ राम नाराइण माधव भजि ले,अजहूँ साधु संगाइ ॥ करे क्रिपा जे हरि प्रभु अपनी,श्रीचंद्र लेह मिलाइ ॥४॥५॥१७२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ सोई रही अचेती मुगधा,सेजे जानी आयो ॥ चक्र काट कै आलदुआलै, अपने मंदर धायो ॥१॥ मूरख! काहे कियो विवाहा ॥ होइ निहचिंत जे सोनो होतो,पेको ही भल ताहा ॥१॥ रहाउ ॥ सेज विछायो बिसद बिछौना,सुंदर पलंग निवारी ॥ पुहप विथारे गंध छिराई, चंदन चरच सवारी ॥२॥ पट्टी मांग गुँदाई सिरफुल,कंकन साज कियूरे ॥ बिंदू चिबुक चारु पर दीनो,खाए पान कपूरे ॥३॥ सुखपत पिआरी सुखपति नाही,बिरथा रैन गवाई ॥ मानुख जनम सिमरि सुख दाता,श्रीचंद्र लिव लाई ॥४॥६॥१७३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ संतन संग समाइऐ,उपजे हरि बिस्वास ॥ नौनिधि नाम परगट भए, अंतरि गुण परगास ॥१॥ लाहा हरि हरि नाम ॥ सभ सुख रिधि सिधि पाइऐ,अनंद मंगल

बिस्त्राम ।।१।। रहाउ ।। तेज कोटि रवि किरण जस,सीतल चंद अनेक ।। अगिआन अंधेरा मिटि गया, अनुभउ ब्रहम बिबेक ।।२।। दुख भंजन सुख संजना,राम नाम धन माल ।। अहनिसि हिरदै रव रहिआ,सुंदर मदन गुपाल ।।३।। साधु मिलै गोबिंद लहै,मोख धाम आनंद ।। पूरन भए न डोलते, जोनिनि महि श्रीचंद्र ।।४।।७।।१७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। धन आसा ऊभी करे,नहि नैण मिचाही ।। महिल चढ़ी राह देखती,प्रीतम कबि आही ।।१।। आसूँ थाम न जाहीं ।। बिरह बिकल चक घूमही,कंपत चित चाही ।।१।। रहाउ ।। देहु संदेसो राहीओ,पेखे किहुँ जाहीं ।। कहि गए आवन सीघ्री,होई देराहीं ।।२।। वेदन का सिउं मैं कहों,जस अंतर भाहीं । काग न कबहूँ बोलियो,पाई ओसाँहीं ।।३।। भुनसारै आसा लगी,कहिओ कहुँ पाहीं ।। श्रीचंद्र प्रभु मिलैगो,डारे गर बाहीं ।।४।।८।।१७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। पुनि पुनि निहारिऐ,कीजै बावेला ।। प्रीतम आ परदेस ते,तुम बिन दुख

झेला ॥१॥ बाहरि निकसि न पावउँ ॥ अंतरि महल चितवती निसदिन,लागी लगन अमावउँ ॥१॥ रहाउ ॥ खाणा पाणी रुचित न मन कउ,किआ पीणा किआ खाणा ॥ एती देर लगाई बाहरि,मेरो कउण ठिकाणा ॥२॥ झबि आवहु बहु भई उडीणी,नैन रहे टक लाई ॥ अब तो आँसू आवत नाही,सूक गयो जल साई ॥३॥ आवहु सज्जण संत पिआरे,प्रीतम कहहु कहानी ॥ श्रीचंद्र कहुं धीरज ह्वै है,मिलि है प्रभु निरबानी ॥४॥६॥१७६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ जीवनपति मुर लूटै जीवन,कत परदेस सिधायो ॥ सुपना दीनो झलक अपन का,रूप स्याम सरसायो ॥१॥ राधा बिकल बिरह दीवानी ॥ किआ तुम सोग उपावन हेते, कीनी रास कहानी ॥१॥ रहाउ ॥ मथुरा कहा कंस के महिलन,माने निज अस्थाना ॥ कुबरी कुबर निकारहि तोरो,जानहु तबि भगवाना ॥२॥ स्वेत सिआम की प्रीति न जुड़ती,खटपद जानहि मरनो ॥ देह तेल सम जल महि उबटत,मालिनि गहे न पानो ॥३॥ माधव मन मोहन मुख सोहन,बंसी टेर सुनावो ॥ श्रीचंद्र नटवर भौरे सिउं,तालन ताल बजावो ॥४॥१०॥१७७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। कर माथै नख सिउं खन धरनी,नैनन नीर उछालै ।। मुख आही द्रिस्टी तल हेरत,मन ही मधै उबालै ।।१।। सखी री,अद्‌भुत प्रेम कहानी ।। फरके अधर न ब्रिखन केरे, कहिऐ बिना जबानी ।।१।। रहाउ ।। स्याम हरिन निज चरम उतारे,ओढ़ाइसि त्रैभंगी ।। सुनै नाद सोऊ गा दौरी,रंगणि रंगिओ रंगी ।।२।। कोकिल कूक हूक दै भागी,तरु चढ़ि टीसी टीसी ।। छाया माया लै कर गमनिओ,करि करि रीसी रीसी ।।३।। गगन मंडरावति गीधा,लंबी द्रिस्टि पसारी ।। जगजीवन श्रीचंद्र पिखै है,चक्र बांध लिव तारी ।।४।।११।।१७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। जल बल धरणी कोइला होई,सरवर ऊडै छारा ।। जलजातन महि पात न कोऊ,ब्रिखनि फूट अंगारा ।।१।। राम सीता सबद उचारा ।। सूरज खरो मधिआहन महि,भयो रैणि अंधिआरा ।।१।। रहाउ ।। बिरही पवन गवन तन भेटी,जारत भी संसारा ।। बड़वा सास धसी रतनाकर,भसम किओ गन नारा ।।२।। गीध बीध गगनंतर होई,बारिद गी छंछारा ।। साखा म्रिग

भालुक गन बीधे,परबत भार प्रहारा ॥३॥ सोक असोक लहिओ सभ आयुसि,दीनो पाक विडारा ॥ श्रीचंद्र रस परम सनेही,जीवन दियो बिगारा ॥४॥१२॥१७९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ मधु कैटभ मेदा ही पसरी,मेदनि नाम धरायो रे ॥ मानव उपजिओ बिनसिओ ता महि,कैसो भरम उपायो रे ॥१॥ सूतक पातक कवनै भाखिओ ॥ गिआन पुरान कुरान न जाना,लोभ लहिर की साखिओ ॥१॥ रहाउ ॥ मेदनि उपजै सूतक होई,भिंन होइ तउ नासे रे ॥ पातक महि पातक कस खुवै है,मुख ते वाक उभासे रे ॥२॥ चतुर लुटेरे मुगधन लूटैं,कूड़ी बात बनाई रे ॥ चक्र चलायो सूतक पातक,को तौ फासहि आई रे ॥३॥ सभि तजि करम भरम के धंधे, देह छलांग उछाली रे ॥ श्रीचंद्र इक राम सिमर मन,टूटहि सगरी जाली रे ॥४॥१३॥१८०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी बैरागणि ॥ लूट खसोट द्रब्य करि एकतु,यग्य अनल प्रज्वलाई ॥ ब्रहमा रित्वज उद्गीथी आ,रिचा उचार सुनाई ॥१॥ धन की धुनि रही दहदिसि छाई ॥ निरधन ते को बिप्र न

तोखै,नरकहि लहहि सजाई ।।१।। रहाउ ।। कूड़ कपट ते माया विहाझी,यग्य किए सभ सुद्धी ।। मिरतक आमिख सुद्ध न ह्वै है,खूब मसालै गुद्धी ।।२।। करते नरक करावत नरकी,मुँह काले अभिमानी ।। चोरी जारी हिंसा कर कै,पाठ करावत हानी ।।३।। मरम धरम जानिओ उर नाहिन,धन निरधन रत भरमै ।। श्रीचंद्र हरि नाम सिमर मन,प्रापत ह्वै प्रभु दर मै ।।४।।१४।।१८१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। लोभ लाग तीरथ तट बैसे,करवत नर सिर धारैं ।। कौड़ी कौड़ी छीन लेत पुनि,फासी देत विडारैं ।।१।। धरम की अद्भुत बात बखानी ।। अपर अधरम कवन बिधि कहिऐ, सुनु रे पंडित गिआनी ।।१।। रहाउ ।। अधरम नाम धरम धरि राखिओ,धोती सिखा बधाई ।। स्वयं जाइ मुहि पेखिओ आंखन,जमपुर परी दुहाई ।।२।। तीरथ न्हावन पाठ पठावन,भरम न भूलहु लोगा ।। ठग्गन लूटन कारन मंदर,जाल पसारयो चोगा ।।३।। खाइ न पाहन नहिं निबंध कछु,मूरख नर डहकाए ।। श्रीचंद्र वह किआ गति दै है,जो कबि नहिं त्रिपताए ।।४।।१५।।१८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। साकत निगुरे गल जम फाही,लोभ लहिर के मूठे ।। अंतरि त्रिसना अगनि घनेरी,कर लीने करि ठूठे ।।१।। संतन बिना न मोख दुआर ।। काम क्रोध लोभ मोह विगुते,गोते खावत नरकी धार ।।१।। रहाउ ।। ब्रहमा पाहन बिसनू पाहन,पाहन लिंग कहै त्रिपुरारि ।। दुरगा पाहन गणपति पाहन,पाहन बणियो पवन कुमार ।।२।। काठ जगननाथ रचि भाखिओ,पाहन राम न रावण मारा ।। पाहन क्रिसन न कंस चाणूरै,जरासंध केसी संघारा ।।३।। सोमनाथ पाहन के टुकड़े, चार भए महमूद कराए ।। सो पानी जब आप थिरे हैं,श्रीचंद्र तुहि कैस बचाए ।।४।।१६।।१८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। वाद विवाद वेद उरझाए,संगति दुबिधा डारी ।। गहिकै भारत लूटै परजा,हलुवा खाइ पुजारी ।।१।। पंडन हिंदुन जरा उपारी ।। खोसन द्रब्य मिथिआ दै जोसन, अद्भुत बिओंत निकारी ।।१।। रहाउ ।। लाज न मरते ररते रामहि,क्रिसन क्रिसन गुहराते ।। काइर

दोखी दुस्ट कुपूत जु,सरमावत पितु माते ।।२।। साधू बिन सभ भरम भुलाने,पाहन पूजहि न्हाई ।। चौड़ भई कुल रौड़े लूटै,सूखो मूँड मुंडाई ।।३।। लोभी लोलुप बटपारन मिलि,अंधी भारत कीनी ।। तिनिह प्रसादि रौरवहुँ अधिकै,श्रीचंद्र दुख चीनी ।।४।।१७।।१८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। पास डार निज गर जो लटका,सो का को छुटकावै रे ।। बहितो गहरे नद महि जातो,अउरन धीर धरावै रे ।।१।। परम मुगध कर है बिस्वास ।। कैस उबार सकै है तुम कउ,जम गण हर लीनै जिहँ स्वास ।।१।। रहाउ ।। सो माया ते किउं करि राखहि,जो माया को दासा रे ।। करम पास जिहँ ग्रीवा माही,सो कैसो संनिआसा रे ।।२।। ग्रिह ग्रिह नाचिओ जाचन हेतै,अचरज नाम वैरागी रे ।। चूने गज मंदर उदासी,सभ ग्राह्य महा तिआगी रे ।।३।। साधु कहाइ असाधू लोलप, सभ ही स्रिस्टी विगोई रे ।। श्रीचंद्र खोजहु नर साधू,लाखन कोटिन कोई रे ।।४।।१८।।१८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी बैरागणि || दंभ खिलारा कमलिआ,पैसो मध्य बारी || नेहु सुगंध विथारीआ,मारन उर धारी ||१|| माखी मधु ले दूरि गई || रस हितु तुम ढिग आयो,देह चकनाचूरि भई || १|| रहाउ || होइ सनेही जौ कोऊ,बिन करने नही काजा || चिता अनल भकभक भखी,सती पैसि तजि बाजा ||२|| सूली ही मनसूर का,सजि तखत रंगीला || बणे मसीहा जे कोऊ,रख ताज कँटीला ||३|| ताती तवीअन पै नचै,तन देग उबाले || प्रेम पिआले पी दहैं,अगनी मतवाले ||४|| प्रीतम मिलहि कि नाहि कबि,नहि चाह सरीरा || श्रीचंद्र लोभी खुसी,प्रेमी दहि हीरा ||५||१६||१८६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी बैरागणि || उछलत कूदत दौड़ ही,बहु जोजन लौ जाहीं रे || मटक मटक पग मग धरे, लटकावत चलि बाहीं रे ||१|| नेही कौ एकहि कदम सिधान || तजि धन धान धाम सुत नारी,बंधुप सूलि विधान ||१|| रहाउ || मंडप महिल अटा गगनहि छुहि,तिआगत प्राण निकासे || खट रस छत्तीह प्रकारन के,भोजन छडि उपवासे ||२|| आपन चौहट गरी बजारन,रौनक दीपन माला ||

तिआग पधारै कानन गहिबर,दीरघ ताल तमाला ।।३।। पाटंबर पसमंबर जरजर,बादल मखतूलाने ।। चीर चीर परिहरि दिअ डारै,नेही नगन सिधाने ।।४।। जाचक जप तप सत संजम हैं, नेहु उदार महाना ।। श्रीचंद्र जो सिर लौ देवत,कबहूँ नहिं पछताना ।।५।।२०।।१८७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी बैरागणि ।। पारब्रहम पूरण धनी,संतन उर महि वासा रे ।। किसहूँ मंदर काहुँ न पेखिओ,अगम अगाध अनासा रे ।।१।। रंग रूप बिन हरि हरि धाम ।। आदि अनादि अगोचर अनुभउ,जाति वरण नहि भेख ललाम ।।१।। रहाउ ।। स्याम न सुंदर भव महि जानिओ,संतन ही लख पायो ।। सागर छीर गुपत जोऊ देसा,संत रिदै प्रगटायो ।।२।। रंभा काल कूट अम्रित मद, हरिधामहुँ उपजाए ।। मदिरा दैत्तन पिआवत पिआवत,सुधा दीन टपकाए ।।३।। आप उपाए आपहुँ थापे,आप ही भोग भुगाने ।। आपहूँ काम कलंक बनायो,आप रचिओ होइ कान्हे ।।४।। संतन मुख सभ बात बखानी,अपर न द्रिस्टी आवा ।। तन मन धन संतन कौ दीने,श्रीचंद्र सच पावा ।।५।।२१।।१८८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी मालवा ।।

सिर केसन गहि रहिओ है,धरमराज अति महा भयान ।। जीवन को बिस्वास नहीं,किउं फिरता ऐंडो बफान ।।१।। राम राम सिमरि साजन,संत संगति लागि ।।१।। रहाउ ।। भव कोठर महि कज्जल भरिआ,नर मन काला होयो हो ।। साकत संगति कसमल विआपे,बिरथे जनम विगोयो हो ।।२।। उठि चलतो पछतायो निगुरा,हाथ मलत सिर धुनि पुनि ताक ।। पग बेड़ी गल संगल बाधे,बिट बिट पेखत इत उत झाक ।।३।। साधू रेणुका सीस जि धारै,ओत पोत पेखै भगवानै ।। हरि हरि नाम जपत मन निरमल,श्रीचंद्र लहि पद निरबानै ।।४।।१।।१८६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी मालवा ।। भागत भागत भाग मना,तजि काम क्रोध अहंकार हो ।। दुरजना की संगति किऐ,उपजित अनिक विकार हो ।।१।। राम नाम समार साजन राम नाम सम्हार,दरगह नाही हार ।।१।। रहाउ ।। परा पूरबला लिखिआ,जे होवी मस्तक भाग हो ।। संता की संगति पाइ कै,उपजै भगति विराग हो ।।२।। अंतरि सांत सुख लाभ होइ,राम नाम लिव तार हो ।। उनमनि सबद सुखमन घरे,प्रगटित रूप मुरारि हो ।।३।। अनहद बीन बजंत सुर,अनुभव सूखम जाग हो ।। आपे आप समाइ रहहि,श्रीचंद्र रस पाग हो ।।४।।२।।१६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी मालवा ।। जब ही मन नाराइण नाम हो,लागा पूरन रंग ।। सहिज पदारथ प्रगट हो,हरि प्रभु सद ही संग ।।१।। पंच सबद वाजे वजहि हो,जीवन मुकत निहाल ।।१।। रहाउ ।। उमरै अंतु आवगु हो,बसि होयो जम काल ।। पंच दूत सभ भागग हो,जपु जपु नाम अकाल ।।२।। राम

गोबिंद दुख भंजन हो,संजन गिआन अटोट ।। उज्वल निरमल सुद्ध चित्त हो,सगल गवाइन खोट ।।३।। सदा सच्चिदानंद विआपक हो,आतमभास अनंत ।। अहनिसि न्रितंति अग्रज हरी हो,श्रीचंद्र धनवंत ।।४।।३।।१६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी मालवा ।। देवपुरी महि जे प्रवेस हो,अंत गिरौगे आइ ।। सूख सहिज अनंद रस हो,संत संग लिव लाइ ।।१।। गुन गोपाल गाओ रे मन,गुर की चरनी लाग ।।१।। रहाउ ।। फल पूरबले पुंन का हो,रुचि हरि सिमरन माहि ।। जनम जनम किलबिख लहहि हो,साधु संग समाहि ।।२।। बिन बैराग न आतम थिरत हो,लोभ लहिर हलक स्वान ।। म्रिग त्रिसना महि भरमत फिरत हो,म्रिग नासत निज प्रान ।।३।। धन अखुट अटोट नित प्रापत हो,किउं भूलो फिरत अजान ।। श्रीचंद्र संतनि सरण गहु हो,बिनसहिगो आवन जान ।।४।।४।।१६२।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।।

सद सुख हरि हरि जापे रे ।। अनिक प्रकार चितवना चितवत,मिटत न मन संतापे रे ।।१।। रहाउ ।। संता संगति राम नाम द्रिढ़,मानुख जनमे लाहा ।। गुण निधान गोबिंद नाराइण,दूख भरम भए दाहा ।।१।। खेम कलिआन अनंद मगन रस,पायो हरि हरि नामा ।। सहिज सुभाइ रहे लिव लाई, अबिचल पायो धामा ।।२।। पवन चढ़ाइ दसम दर पैसे,जीवन पद लौ निद्धी ।। वाजे तूर पंच धुनि प्रगटी,श्रीचंद्र की ब्रिद्धी ।।३।।१।।१६३।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। मुहि तिआगियो है सगल पसारा ।। राम नाम रिद अंतरि भायो,प्रभु गोबिंद मुरारा ।।१।। रहाउ ।। जब हिय जानी मिथिआ देही,तबि पुनि चिंता कैसी ।। जीउ पिंड दीआ जिनि करते,भोजन पाणी दैसी ।।१।। प्रथमै धरणि उपाई महती,पुनि तरु तारी कीने ।। पुरुख नारि

उपजाइ परंपर,साधन संग नवीने ।।२।। अंन बसन पहिले प्रगटाए,सुंदर धामन बागा ।। श्रीचंद्र तबि जीउ उपायो,किउं चिंता चित लागा ।।३।।२।।१६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। चित चितवऊ गोबिंद को नाम ।। सरब मनोरथ पूरन होवहि,सिमरत एकहि राम ।।१।। रहाउ ।। अस्टदसा सिधि करतल ता कै,ऊनो नहि कछु काम ।। ऊचो महल प्रापति अबिचल,सहिज सूख बिस्राम ।।१।। दूत दुस्ट निवरे गुरु बचनी,आगिआ मानत जाम ।। भगति भाव लिव अंतरि जागी,पायो भगवत धाम ।।२।। संसारी वेगारी चूकी,निज पद निहचल ठाम ।। श्रीचंद्र भै भरम बिनासे,मिलै राम अभिराम ।।३।।३।।१६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। मोरी लागी हरि संग प्रीति ।। लोक परलोक न बिछुरहि कबहूँ,हरि प्रभु हमरा मीति ।।१।। रहाउ ।। जहँ जहँ जाऊँ तहाँ रखवारो,प्रतिपालत दै हीति ।। ताल तमाल साल बन गाडे, संग सिधारे नीति ।।१।। जहाँ न कोऊ नर सुर द्रिस्टै,तहाँ समारै चीति ।। मारन हित दुज्जन असि

काढै,आइ भगै भयभीति ।।२।। अनाथां नाथ दीन प्रतिपालन,सदा समाली रीति ।। सदा सहाइक श्रीचंद्र पायो,गावत नितप्रति गीति ।।३।।४।।१९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। मोहना तुझ बिन खरी उडीणी ।। गहि बहियां निज उर सिउं लाई,बहुरि तजी किउं वीणी ।।१।। रहाउ ।। तू अति दीरघ सीस अकासी,मै लघुरी अति हीणी ।। उतम जाति तुमारी प्रीतम,हउ सभ बिधि ते छीणी ।।१।। लंबी द्रिस्टि पितामह ऊपर,धरणि पिखंती झीणी ।। चालन की कछु शक्ति न मो महि,दूरि गमन तुम कीणी ।।२।। करहु किरपा निज दरसन दीजो,उर नहि राखहु मीणी ।। रिकत न कोऊ तुम ते गमनिओ,श्रीचंद्र मै रीणी ।।३।।५।।१९७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। देहु सुझाई अपनी सूझ ।। वण त्रिण त्रिभुवन रविआ सभ महि,सकत नही मन मूढ़ा बूझ ।।१।। रहाउ ।। अस्वत्थ सीसम वण बबूल खजि,द्रिस्टित नहि तरुवर महि गूझ ।। खटपद माखी मसक दंदीहे,हरि प्रभु तू कस रहिओ रूझ ।।१।। बधरे पंगु गुंग अंध लुंजे,कहि परमेस्वर

जानै हूझ ।। कुचिल कुस्टि जाचक गन पेखै,तरक करत मन मन सिउं जूझ ।।२।। दुरगंधी ते नाक सिकोड़हिं,रूपवंति कामिनी अरूझ ।। सज्जन हित दुज्जन सिउं दोखन,श्रीचंद्र कस हरि है ऊझ ।।३।।६।।१९८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। पार उतारो भवजल निद्धे ।। चिंता जल नित गोते खावत हे हरि,नाहिन जानत बिद्धे ।।१।। रहाउ ।। अपकरमन सिउं अधिक हितैसी,काम क्रोध मद मोह सनिद्धे ।। परधन परतिअ पेखत मोहिओ,विभिचारन आचारन सिद्धे ।।१।। संग कुसंगी नितप्रति राता,चाह कुमार कुमारी बिद्धे ।। चोर बखील जूपकी जारा,मारा मार मारनी गिद्धे ।।२।। धुंधूकार भयो धन जोबन,लोभ हेतु द्रिस्टे सम गिद्धे ।। बल बुधि शक्ति नही कछु मो पै,श्रीचंद्र गुरु सरणी सिद्धे ।।३।।७।।१९९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। जानी जाति न बात अगंमी ।। हरि प्रभु जबहि अनुग्रह करता,बिन बोए अंकुर फल जंमी ।।१।। रहाउ ।। जपु तपु सील न संजम जानै,दया धरम अनुरूप करंमी ।। हिंसा चोरी

मद आमिख रस,सोचित नाहिन दंम सहंमी ।।१।। धन निरधन सोभा अनसोभा,मान वडाई दान दहंमी ।। अचारी विभिचारी कुलटा,वेस्या परकीअ चंम अचंमी ।।२।। कुबरी मधरी लटरी मटरी, नैन कुनाकी रैणी धंमी ।। भाव अभावी दुज्जन सज्जन,श्रीचंद्र प्रभु बाही लंमी ।।३।।८।।२००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। जिउं जानहु तिउं करि गति मोरी ।। समरथ नाहिन काहूँ बातै,ओट गही द्रिढ़ करि प्रभु तोरी ।।१।। रहाउ ।। गई बहोड़ो हरिआवलि गो,कर लस्टिक सिउं लीजहि मोरी ।। भगति भाव नहिं करम धरम कछु,अपन प्रताप खैंच लिहु जोरी ।।१।। कर दीपक लै गिरत गरत महि,अग्र आइ थित होवहु धोरी ।। दरगह की कछु सूझ न पावत,नरकहि ओर बढत बरजोरी ।।२।। बहुरि बहुरि लपटाऊं बिखिअन,मनमत दुरत घसत करि खोरी ।। सरणि सूर प्रण पूर क्रिपाला,श्रीचंद्र की ताकहु ओरी ।।३।।९।।२०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। बंदी छोड़ दयाल गुसाईं ।। पग बेड़ी गल तौक हथकड़ी,तोड़ लगावहु अपनी

पाईं ।।१।। रहाउ ।। चलन फिरन की गति बिलगानी,हालत नाहिन बाहीं ।। चित चिंता की चिता सुलगती,करम किओ सुभ नाहीं ।।१।। अंध कूप अगिआन अनादी,ग्रासत मन करमाहीं ।। दुआर तुहारे कैसे पहुँचहुँ,विस्ट न कोऊ प्राहीं ।।२।। तू अंतरजामी हरि विआपक,गिआता अंतरि धाहीं ।। चरण गहाइ छुडाइ लेहु निज,श्रीचंद्र सुनि आहीं ।।३।।१०।।२०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। प्रभु जी,मैं लंगड़ो पग हीना ।। तुमरी घोड़ी तेज चलति है,संग कैस मुहि लीना ।।१।। रहाउ ।। रुण झुण झांझर झालर तालन,बधरो सुनि है बीना ।। ऊचो परबत सिखर जोजनी,पेख पेख मन दीना ।।१।। भरी कहाणी अंतरि थानी,जिहबा बिना कही ना ।। दीपमाल रवि कोटि चंद्रमा,बिन नैनी किमि चीना ।।२।। कर गहि लेहु क्रिपाल दयानिधि,महा अघी गुणहीना ।। देहु दान करि मया आपनी,श्रीचंद्र परधीना ।।३।।११।।२०३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। माया तुमरी अपर अपारा ।। मानुख देव दैत्त सभ भरमे,नारद सारद लहि

न सुमारा ।।१।। रहाउ ।। कई कोटि तपसी जतधारी,मनसिज बसि रचिओ परिवारा ।। कई कोटि किए नरकी सुरगी,सुरगहुँ नरकन महि दिय डारा ।।१।। कई कोटि नाम निसान ना,कई कोटि चमकाइ सितारा ।। कई कोटि भव सागर काढे,कई कोटि कहु चिंता गारा ।।२।। कई कोटि त्रैलोकी चानण,कई कोटि कहु घूप अंधारा ।। बलि बलि श्रीचंद्र लख बरीआ,जा को अंतु न पारावारा ।।३।।१२।।२०४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माला ।। चरन कमल सत्गुरु बलि जाउं ।। जाहि किरपा ते पाप बिनासे,दरगह मिला निथावें थाउं ।।१।। रहाउ ।। अबिचल अचल राज ध्रुव पायो,उज्जड़ थेह वसायो गाउं ।। कंकर रोड़े ठीकर ठोरे,लाल जवाहर माणक नाउं ।।१।। जाके दर जाचन हित जावत,उलटा धाइ परत है पाउं ।। रक्त बीज पंचभूत कारई,कारण करण ब्रहम अखवाउं ।।२।। लथड़ पथड़ दुरजना संघारो,अजर अमर सूरा बन धाउं ।। दूखण भूखण श्रीचंद्र थीओ,प्रातहकाल जपत तउ नाउं ।।३।।१३।।२०५।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।।

खोजत खोजत दुआरे आया,करि किरपा अविनासी राया ।। अपनी चरनी दास लगाया,सहिज अनंद निवासा जीउ ।।१।। नाम अमोलक पाया हीरा,सत्गुरु चरन कमल मन धीरा ।। काम क्रोध मन मोहै चीरा,आतम राम परगासा जीउ ।।२।। सफल दरस गुरुदेव मुरारा,भव सागर ते खिन महि तारा ।। जिनि जिनि दरस परस हिय ठारा,पूरन होई आसा जीउ ।।३।। आदि जुगादी सदा सहाई,राखी पैज वजी वाधाई ।। पूँजी करमन डार वगाई,श्रीचंद्र भरवासा जीउ ।।४।।१।।२०६।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। संत सजण मन मीत पिआरे,मिहरबान संतोख भंडारे ।। जीव जंत सगले

निस्तारे,राम नाम उपदेसा जीउ ॥१॥ जपु तपु संजम साधन कीने,अगनि जलाए अपने सीने ॥ उस्न सीत थित रहहि असीने,बिचर देस परदेसा जीउ ॥२॥ कामहुँ उपजे काम जलाए,लोभ मोह मद अहं गवाए ॥ हरि हरि राम राम जप नाए,मेटे सगल कलेसा जीउ ॥३॥ जो जो चरण सरणि महि आया,बंध मिटायो जाया माया ॥ सत चित आनंद माहि समाया,धरि श्रीचंद्र निदेसा जीउ ॥४॥२॥२०७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी माझ ॥ कोटि कस्ट सहि सील न तिआगा,दूख भूख तन ऊपर झागा ॥ सेज भूमि करि अनदिन जागा,प्रभु सिमरन मन दीना जीउ ॥१॥ जो कछु पाया सोऊ खाया,हित चित कंद मूल सिउं लाया ॥ चनक भसम पत उदर भराया,आसा त्रिसन बिहीना जीउ ॥२॥ मंदर कंदर रचे बिधाते, कानन फल चख त्रिपत अघाते ॥ वलकल ओढ़त नहिं संकाते,धूणी संग तपीना जीउ ॥३॥ सद बलिहारी चरनन धूरी,मन ते टारत भरम गरूरी ॥ नाराइण के रहित हजूरी,श्रीचंद्र मन चीना जीउ ॥४॥३॥२०८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी माझ || अंतरि ठाकुर अंतरजामी,अनुभउ आतम पूरणकामी || मन रविआ हरि पारगरामी,परमानंद अघाए जीउ ||१|| पतित पावन की पड़ि सरनाई,हउमै ममता दुरमति हाई || सहिज जोग निधि ताड़ी लाई,सत संतोख कमाए जीउ ||२|| माया मेरी तेरी तिआगी, चिदानंद थित भए बिरागी || प्रभू प्रेम लिव अहनिसि लागी,सगले दुरत मिटाए जीउ ||३|| गिआन पदारथ पूरन पाया,जोति रूप सभ महि द्रिस्टाया || हरि प्रभु रूपै रूप समाया,श्रीचंद्र नित धिआए जीउ ||४||४||२०६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी माझ || सरब ठौर सभ माही रविआ,घट घट पट पट अंतरि गविआ || देस अनूप जंगली भविआ,खाली थाउं न कोई जीउ ||१|| वण त्रिण त्रिभुवन एको एका,हस्ती चीटी अज म्रिग भेका || सारदूल जंबुक सु बिबेका,गुरु गोबिंद समोई जीउ ||२|| पसु पंखी लघु दीरघ माही,ऊच नीच सभ समसर आही || खंड ब्रहमंड पाताल समाही,पूरन सभनी लोई जीउ ||३|| सिमरि सिमरि

हरि प्रीतम जीवां,मन तन परम सुधा रस पीवां ।। लिव लावत सद ठंडा थीवां,श्रीचंद्र उर पोई जीउ ।।४।।५।।२१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। गोबिंद भजन लगी जिहँ तारी,प्रेम भगति अगनी उर जारी ।। कसमल काठ के भरि भारी,दगध करे सभ ताही जीउ ।।१।। परिहर दुरमत दुरत महाए,हउमै मार एक लिवलाए ।। अंतरि ब्रहमे मेल मिलाए,तीरथ काहे जाही जीउ ।।२।। सीतल परमल प्रीतम राया,कामधेनु चिंता मनि भाया ।। कल्प तरोवर की सुभ छाया,जाचन धाए काही जीउ ।।३।। पातसाहां सिर साचा साहु, हीरा लाल रतन वेसाहु ।। हरि धन संचै सद ही लाहु,श्रीचंद्र सुख पाही जीउ ।।४।।६।।२११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। नाराइण सिमरत सद हरिआ,भगति भाव अभरा सर भरिआ ।। बिन बोहिथ भवसागर तरिआ,सत्गुरु किरपा धारी जीउ ।।१।। सदा सहाई गुरु अविनासी,जनम मरन की

काटी फासी ।। आतमराम विआप उदासी,जपत जाप बनवारी जीउ ।।२।। जगत जनम सफलिओ हमारा,भव जल डूबत पार उतारा ।। तम अगिआन बिनासिओ सारा,हरि पेखिओ संसारी जीउ ।।३।। राम नाम जप सीतल होए,कलह कलेस भरम भै खोए ।। जीवन मुकत अनंद समोए,श्रीचंद्र अवतारी जीउ ।।४।।७।।२१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। प्रभू त्रिभंगी छैल छबीला,अनंद विनोदी रंग रंगीला ।। अपनी रास रचाई लीला,पेखत मोही गोपी जीउ ।।१।। मन मोहन घनस्याम गुसाई,केसी कंस चाणूरहि घाई ।। जरासंध कालयमन हताई,रसक रसीला चोपी जीउ ।।२।। बंसीधर गोवरधन धारी,पीतांबर माया विस्तारी ।। राधा रमण गमण पुरि दुआरी,सरब समाना ओपी जीउ ।।३।। सारंगधर पारथ रथ हाकैआ,माखन चोर तोखिता मैया ।। रुकमिणि हरण चरैया गैया,श्रीचंद्र उर थोपी जीउ ।।४।।८।।२१३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी माझ || दीनानाथ गोपाल दयाला,जिउं जानहि तिउं करि प्रतिपाला || छत्रसाल प्रीतम सुखसाला,दासहि लेहु उबारी जीउ ||१|| भै भंजन अविनासी राया,कस्ट निवारक संत सहाया || मोहि गरीब चरण सरणाया,आपन जान समारी जीउ ||२|| भगत वछल अउगुण सभ मेटहु,दुस्ट चौकड़ी सफा लपेटहु || साकत निगुरा दुजन न भेटहु,सरब सूख संचारी जीउ ||३|| श्रीचंद्र नित उर महि आसा,सिमरहु अनुदिन सास गिरासा || साधु संगति दीजहि गुणतासा, क्रिपानिधान मुरारी जीउ ||४||६||२१४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गउड़ी माझ || नाराइण जिस भयो क्रिपाला,साधु संग हरि नाम सम्हाला || अउगुण मेट गुणहि प्रतिपाला,तख्त दिओ अविनासी जीउ ||१|| मन तन सीतल नाम निवास,ऊरध कमल भयो परगास || आतमराम थिरिओ गुणतास,पूरण त्रिसना आसी जीउ ||२|| हरि सिमरन रस अंतरि भाया,दूजा मेटे एक समाया || हउमै ममता क्रोध नसाया,गोबिंद सभनी पासी जीउ ||३|| परिहर

लब लोभ अहंकारा,निरमल उर प्रगटिआ निरंकारा ।। संत संग रति सदा सम्हारा,श्रीचंद्र कटि फासी जीउ ।।४।।१०।।२१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। जा कउ अपनी दीनी धीर,कहा विआपै ता को पीर ।। धरम धुरंधर महा अमीर,गुण सागर हरि नामा जीउ ।।१।। इत उत कतहुँ न डोलत चीता,गोबिंद सिमरत टूटी भीता ।। तम अगिआन बिनास सभीता,नहि संसारी कामा जीउ ।।२।। आदि अंत सभ एको लोई,दुरमति दुबिधा हउमै खोई ।। दीपक गिआन चंद्रिका जोई,जहँ तहँ पूरण ग्रामा जीउ ।।३।। मन तन राता हरि रंग माही,आतम राम नाराइण पाही ।। श्रीचंद्र संतन नित आही,सद अभिराम ललामा जीउ ।।४।।११।।२१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। काया मरि माया नहि मरती,भरत पेट त्रिसना नहि भरती ।। कूड़ कुसत धंधे नित चरती,सगली आयु गवाई जीउ ।।१।। लाख कोटि धन धरनि दबायो,अनतै देस कमावन

धायो ।। अरब खरब को लै करि आयो,त्रिसना अधिक वधाई जीउ ।।२।। आयो काल स्वास भए पूरे, अगनि संग तन ह्वै गयो धूरे ।। लेखा देनो पाप कमाए,चलिओ लंबी धाई जीउ ।।३।। संग न साथी दारा मीत,सुता सुतन धन सिउं चित हीत ।। श्रीचंद्र रीती विप्रीति,बिरथा कस्ट उठाई जीउ ।।४।।१२।।२१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। अंत देह माटी की ढेरी,संपद काहुँ न संगी हेरी ।। सभ तजि जावत चेरा चेरी,जिनि हित हरि बिसराया जीउ ।।१।। काम न आवत धंध पसारा,करम धरम जिहँ हेतु बिसारा ।। आगै पंथ गमन दुस्वारा,काहे मनहुँ भुलाया जीउ ।।२।। करि नाराइण सिमरन नामा, सफल होहिं दुहँ लोकन कामा ।। सहिज अनंद महिल बिस्रामा,आतमराम लखाया जीउ ।।३।। संत संग हरि रिदै निवास,निरमल जोती सदा उजास ।। पूरण श्रीचंद्र सभ आस,सोऊ सुहेला आया जीउ ।।४।।१३।।२१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी माझ ॥ सदा संगी गोबिंद गुपाल,अंतरि बाहरि निबहै नाल ॥ नहि दुखदाई कंटक काल,सिमरि सिमरि आनंदा जीउ ॥ साधु संग सुर गुणन निधान,काम क्रोध बिनसै अभिमान ॥ नाम दान द्रिढ़ ह्वै इस्नान,मन नीवां बिगसंदा जीउ ॥२॥ दंभ बिनासै ऊची मत्ता,पारब्रहम की अनुभउ सत्ता ॥ हस्तामलक प्रापति गत्ता,सिमरत परमानंदा जीउ ॥३॥ अहनिसि जपु तपु सत संतोखा,मन ते सगल उतारे दोखा ॥ गिआन हरी उर दुआरा मोखा,श्रीचंद्र भावंदा जीउ ॥४॥१४॥२१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गउड़ी माझ ॥ अंतरि अम्रित सबद समाया,नाम पदारथ मंन बसाया ॥ संत संग भरम मोह मिटाया,रंग रते गुणतासा जीउ ॥१॥ मीठी बाणी राम पुकारा,माया मेटिआ घुप अंधारा ॥ प्रगटी जोति सहिज सुख सारा,उदै भानु प्रकासा जीउ ॥२॥ जनम मरण जर मेख उखारी,काल करम की क्रिया निवारी ॥ हरि प्रभु गोबिंद के दरबारी,अंतरि सांत निवासा जीउ ॥३॥ भाणा प्रभु का मीठा लागा,परम वैराग अनंद सभागा ॥ गुण गोबिंद महारस पागा,श्रीचंद्र नहिं त्रासा

जीउ ॥४॥१५॥२२०॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी माझ ॥ जा की प्रीति प्रभू सिउं लागी,सहिज सुभाइ भयो वैरागी ॥ ब्रहम जोति उर अंतरि जागी,प्रवाण ग्रिहस्त उदासा जीउ ॥१॥ हिंदू मुस्लिम एका रूप,सदा विगास अनंद सरूप ॥ हरि कीरति रस परम अनूप,संतन संग निवासा जीउ ॥२॥ दीन दरद दुख भंजनहारा,परम क्रिपाल दयाल मुरारा ॥ विकट घाट घट पार उतारा,अंतरि सबद प्रकासा जीउ ॥३॥ अगम अथाह अगोचर पूरा,नित प्रतिपालक सरणहि सूरा ॥ घट घट पूरण थाउ न ऊरा,श्रीचंद्र कै पासा जीउ ॥४॥१६॥२२१॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गउड़ी माझ ॥ तू सुआमी हउं सेवक गोला,सदा समाली प्रीतम बोला ॥ लागण देतु न ताता झोला,रख्यक सभनी जाई जीउ ॥१॥ दूत दुस्ट सभ मार गवाए,दास रखे निज चरनी लाए ॥ काम क्रोध नहिं छोहन पाए,बिनसी हउमै काई जीऊ ॥२॥ राम राम नित राम रमाया,आवण जाणा

नदरि न आया ।। हरि प्रभु अपना खेल रचाया,को आवै को धाई जीउ ।।३।। अनिक बिघन ते लए छुडाई,राखी पैज दई वडिआई ।। चादर श्रीचंद्र पति पाई,सकत न कोऊ उठाई जीउ ।।४।।१७।।२२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। सगल स्रिस्टि सेवक करि दीनी,पानी पक्खा पीसत चीनी ।। काहूँ आंख न ऊपर कीनी,हरि प्रभु करुणा धारी जीऊ ।।१।। आगिआकारी देव सबाए,फुरना फुरतहि पूर कराए ।। अगनी जल नभ धरती वाए,हुकमै करत विहारी जीउ ।।२।। रिद्धि सिद्धि निधि अग्र खलोए,निसदिन हुकमै को मुख जोए ।। तिनि को कहहु कमी किमि होए,जिनि पर किरपा तुम्हारी जीउ ।।३।। साधु संग गोबिंद धिआया,गुरु परसादी पूरा पाया ।। श्रीचंद्र उर राम समाया,नदरी नदरि निहारी जीउ ।।४।।१८।।२२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। तरु पल्लव फल फूल उपाए,भांति भांति नहिं जात गिनाए ।। पात पात महिं

किआ कछु पाए,मन बुधि जान न पाए जीउ ।।१।। परबत पाहन सोना रूपा,तांबर लोहो कोइल कूपा ।। मणिआं हीरे लाल अनूपा,एकहि थान उपाए जीउ ।।२।। मीन मकर ग्राह नाग महानै,गज बाजी काकै ककलानै ।। गणति न आवत गणत गणानै,पेखि पेखि बिसमाए जीउ ।।३।। रूप कुरूप न वरणै जाही,दोइ ते दस लौ इंद्रिअ पाही ।। असंख नाम श्रीचंद्र तिनाही,कुदरत सरब लखाए जीउ ।।४।।१६।।२२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। बानर चीते सिंघ सिआला,गो महिखी म्रिगन की माला ।। सूकर सुआन रोझ झंखाला,गणत नहीं बन आवै जीउ ।।१।। स्याह स्वेत बहु रंग बनाए,उडत अकासै धरणी धाए ।। पग बिन पग सह अंत न आए,खिन काली बहु आवै जीउ ।।२।। बिन सोचे समझे कई चरते,कई विचार सोच सिउं ररते ।। को बिन आई खपि खपि मरते,एकतु भाउ न भावै जीउ ।।३।। थिर अस्थिर चक्री अनचक्री,दीरघ सरल केऊ बड बक्री ।। कुदरत कादर श्रीचंद्र राची,पेखि पेखि बिसमावै जीउ ।।४।।२०।।२२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। कारण करणहार करतारा,अंत नहीं किछु पारावारा ।। कैस भांति सिरजिओ संसारा,जान न कोऊ पायो जीउ ।।१।। ओअंकारो कै संकलपा,अणू परमाणू को जल तलपा ।। सांत सरूपहि कैधों जलपा,बहु बिधि कै फुरमायो जीउ ।।२।। वाक विलासहि कै करि काला,पंच तत्तु करमन की माला ।। आदी अपर अनादी चाला,जीव अजीव समायो जीउ ।।३।। चार अनासिर कैस मिलाए,जनम धारि अज कैस जनाए ।। श्रीचंद्र उर सरब हटाए,अनहद नाद बजायो जीउ ।।४।।२१।।२२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। साधु जना सरणाई पए,काम क्रोध लोभ मोह हतए ।। अउगुण मेट गुणहि विगसए,ऊरध कमल प्रगासा जीउ ।।१।। अनहद बाणी नाद वजाया,जनम मरण भ्रम भ्रांति नसाया ।। तोसा हरि हरि नाम कमाया,दरगहि पंथ खलासा जीउ ।।२।। गगनंतर रवि रस्मि

दीपाई,जोति निरंतर सरब समाई ।। जनम पदारथ सफल सुहाई,नाराइण पिखि खासा जीउ ।।३।। भया प्रकास मिटिआ अंधिआरा,तीन भुवन सभ लोक उजारा ।। घट घट अंतरि एक मुरारा,श्रीचंद्र द्रिस्टाया जीउ ।।४।।२२।।२२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गउड़ी माझ ।। सफल सोई जन जग महि आया,नाम पदारथ मंन बसाया ।। सफली कुल पुर लोक सबाया,राम नाराइण गाया जीउ ।।१।। सफली काया भई पुनीता,गोबिंद कीरति गाए नीता ।। हरि हरि नाम द्रिढ़ाए चीता,सफली सगली माया जीउ ।।२।। थान पुनीत भगत संग होए, बिघन न लागै ता को कोए ।। बसन पुनीते मंच समोए,हरि प्रभु तित ही आया जीउ ।।३।। मातु पिता बंधप अरु मीत,सफले हरि हरि गाए गीत ।। श्रीचंद्र जिस निरमल चीत,सोई मुकत सुहाया जीउ ।।४।।२३।।२२८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग संकर ।।

सरणि तुमारी पुरख बिधाते,सदा सहाई निसि परभाते ।। अपद भीर ते लेहु बचाई,बंधु मीत तू ही पितु माई ।।१।। शिव शिव शिव सद सद ही कहिऐ ।। ईहाँ सुख आगै सुख सहिजा,अनंद मंगल कलिआण सबहिऐ ।।१।। रहाउ ।। जिस जन ओट तुमारी लीनी,दूख भूख कबहूँ नहिं चीनी ।। नाम जपत उर महि परगास,सदा अनंद सरब गुण तास ।।२।। पूरण पुरुख लोक विखिआता,सरब ठौर सद आदर पाता ।। जो जो चितवै सो सो होइ,आगिआ मेट न साकै कोइ ।।३।। पसु पंखी जड़ अजड़े जीव,सदा सम्हारहि निज करि पीव ।। परम क्रिपाल सदा प्रभु मोरे,श्रीचंद्र कहुँ कीनसि धोरे ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। संत सरणि पाई वडभाग,राम नाम उर लागी लाग ।। हरि गुण गावत निरमल भए,पारब्रहम के निकटी गए ।।१।। संत सहाई निकटै हरी ।। अंतरि जोति प्रगटी उजिआरा,अम्रित धार आकासहुँ झरी ।।१।। रहाउ ।। कमल प्रगास सुगंध विथारी,सुरसरि न्हाये पाप विडारी ।। ममता माया भागी दूर,आतम राम रहिआ भरपूर ।।२।। दुरमति परिहर सात कमाइ,जप तप सिमरन नाम धिआइ ।। सरब कला सुरगुण सरसाए,सहिज सुभावक आवै जाए ।।३।। सदा ही लाभ नित्त सुख मूरा,पारब्रहम प्रत्यख हजूरा ।। श्रीचंद्र कलिमल सभ भागै,साधु चरण रति निसिदिन जागै ।।४।।२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। निंदक मारे हरि प्रभु आप,निंदक कऊ उपजिओ संताप ।। काला मुख परमेस्वर दुआरे,संत निंदक प्रभु नरके डारे ।।१।। संत निंदक ते धरनि डुलाई ।। भार अपारा आकल बिकल,

सहिओ नहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ अणहोंदी निंदा महि राता,चाह वडाई खोदत खाता ॥ गुणन गवायो अउगुण प्रीत,हउमै रोग दुखन प्रद नीत ॥२॥ अंतरि करकहि नींद गवाई,टुकड़ बोच कूकर दर धाई ॥ आपन अनल आप ही दगधा,बोलत बोल अबाची चगधा ॥३॥ बिन पाणी ही गोते खात, निकसि न पावत बहु बबरात ॥ श्रीचंद्र निंदक उर सूल,काढी जाति न गाढी सूल ॥४॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग संकर ॥ हरि संतन कउ नाही काड़ा,हरि संतन सभ मार निवाड़ा ॥ हरि संतन कै नाम निधान,जपु जपु राम भए परवान ॥१॥ सगल अंदेसा परिहर दूर ॥ गुण गावत प्रभु अंतरजामी, आतम रंग सदा भरपूर ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहम रिद महि प्रगटाए,सदा अनंद हरि लिव लाए ॥ सगल गुणा का भयो विगास,प्रगटी जोति सहिज परगास ॥२॥ काल ओर चरनन की चाल,राम नाम अग्रज करि ढाल ॥ खड़ग गरीबी नंगी करी,दुरमति दुबिधा मार विडरी ॥३॥ भगति शक्ति हरि मंत्र चलाई,पाप विकारी सैन गिराई ॥ साचो पातसाह गोबिंद,श्रीचंद्र हरि संतन जिंद ॥४॥४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग संकर || संत सरोवर जो जन न्हावै,हउमै ममता मोह तजावै || गोबिंद नाम अम्रित भरपूरा, मज्जन करत बिनासै कूरा ||१|| मोख पदारथ कर महि आवै || जनम जनम के किलबिख उतरहि,राम राम सेती लिव लावै ||१|| रहाउ || सात समुद्र नदी सत धारा,कासी कांती पुरी दुआरा || चारे धाम नैन दो धरनी,करम धरम की बहु बिधि करनी ||२|| होम यग्य अठसठ इस्नाना,संध्या तरपण पाठ पुराना || सिंधु मेखला चक्र लगाइ,दुआदस जोती लिंग पुजाइ ||३|| दुरगा पीठन इक सौ आठ,परसत बिचरो बांधे ठाठ || जो अघ इन ते नाहि नसाइ,श्रीचंद्र सो इस ते जाइ ||४||५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग संकर || जौ लौ मानत भाउ अभाउ,तौ लौ प्रभु सिउं होत दुराउ || जो लौ करम धरम को भेद,तौ लौ ब्रिथा उठावत खेद ||१|| सरब विआपक एकै हरी || जा कै सिमरन भ्रम भै मेटत,पारब्रहम उर

अंतरि बरी ।।१।। रहाउ ।। जौ लौ होम यग्य तप पूजा,तौ लौ जानिओ उर महि दूजा ।। जौ लौ वेद वाक्य वखिआन,तौ लौ अंतरि थित अभिमान ।।२।। जौ लौ अठसठ को इस्नान,तौ लौ नासिओ नहि अगिआन ।। जौ लौ जानत मै दातार,तौ लौ ऊच नीच बिउहार ।।३।। जौ लौ करम करत अहंमेव,तौ लौ ब्रहम न पावत भेव ।। जौ सभ नाराइण कौ सौंपाइ,श्रीचंद्र तबि ब्रहम समाइ ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। प्रभु सिमरत नहि राखहु भरम,प्रभु सिमरन हित करम न धरम ।। प्रभु सिमरन का मारग सीधा,हरि सिमरन भगती रस गीधा ।।१।। प्रभु सिमरन सभ थाइ सम्हाल ।। अंतहकरण विकार बिनासहि,कस्ट निवारै निबहै नाल ।।१।। रहाउ ।। पवित्र अपवित्रहि मुकत सदा ही,काल अकाल असंग रहाही ।। थांउं कुथांउं न लागै लेप,भाउ अभाउ न खेप अखेप ।।२।। गिआन अगिआन संग नहिं जान,सरगुण निरगुण एक समान ।। पंडित मूरख बुद्धि कुबुद्धि,नर नारी द्विज स्वपचन सुद्धि ।।३।। ऊठत बैठत सोवत जाग,जल धरती अरु पवणहि आग ।। सदा सरवदा सिमरन

काम,श्रीचंद्र रम रामहि राम ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। अम्रित जौ कर महि आ परत,भाग हीन नर मुख नहिं धरत ।। पूरब भाग उदै जिस प्रानी,सिमरत हरि हरि साधू बानी ।।१।। सुधा फल वेस्या बिप्र न रानी ।। खाइ सकी नहि मनसिज पिआसी,भरतरि करम लिखिओ धुर जानी ।।१।। रहाउ ।। लेख न कोई मेटणहारा,प्रारब्ध को खेल अपारा ।। भोग भुगावै राखै भूखा,राजै महाराजै सह दूखा ।।२।। कीओ करम न मिटहै रती,राम नाराइण सीता सती ।। दूख सूख सहि भूख पिआस,हरि सिमरत हउ ता का दास ।।३।। जो कछु तेरे लिखिओ भाग,मिलहि अवस्य न सिमरन तिआग ।। श्रीचंद्र निसचय करि पाया,हरि सिमरण करि करम मिटाया ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। करम करत अहंकार उपाइ,हरि भगती रस नाहिन आइ ।। जटा धार सिर पाई राख,भगति हीन नर मारत झाख ।।१।। भेख दिखाए भगति न होए ।। हउमै अंतरि महिल गवाए,

अनिक जोनि दुख भुगवै सोए ।।१।। रहाउ ।। लोभ लागि थित मंदर पाहि,कौड़ी कौड़ी हेतु उमाहि ।। मूँड मुँडायो भग रत रंगी,डहकाए सिख साथी संगी ।।२।। सिख बांधी कटि धोती टिक्का,लब विगूता फिक्को फिक्का ।। दंडधार नगनी अंग होया,टूक टूक को दर दर जोया ।।३।। देव नदी तट छपरी छाई, महा महातम कूक सुनाई ।। लोभ गवायो सभ बिधि काम,श्रीचंद्र सिमरिओ इक राम ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग संकर ।। शिव शिव रटतै कारज सिद्ध,शिव शिव जपत सरब सुख निद्धि ।। शिव शिव रटतै आनंद धाम,शिव शिव जपत पूरण सभ काम ।।१।। शिवाय नमस्ते शिवाय नमह ।। अहिनिसि नितप्रति शिव शिव जपिऐ,चिंता सागर माहि न भ्रमह ।।१।। रहाउ ।। शिव शिव जपते निहचल धाम,शिव शिव जपत टरत दुख जाम ।। शिव शिव जपते नित्त कलिआन,शिव शिव जपते गुणी निधान ।।२।। शिव शिव जपत दस अस्ट सिधाई,शिव शिव जपत नवनिधि पाई ।। शिव शिव जपते तुरियातीत,शिव शिव जपत पंच ते जीत ।।३।। शिव शिव जपिऐ पूरन भाग,शिव शिव जपिऐ अनुदिन जाग ।। शिव शिव जापै जिस अनुराग,श्रीचंद्र तिस परम सुभाग ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ संकर की वार ॥

सलोक- आदि पुरुख प्रभु सिमरिऐ,सुख मंगल कलिआण ॥ गुरु परसादी पाइआ,मिटिहै आवण जाण ॥१॥ नवनिधि एको नाम,गुरु किरपा ते पाईऐ ॥ अनंद सुख बिस्राम,गिआन भानु प्रकास भे ॥२॥ बिघन हरन हरि राम,आतम रस रंग मगन मन ॥ सभ बिधि पूरन काम,चिंता हरन गुपाल गुरु ॥३॥ **पौड़ी-** आदि निरंजन सेविऐ,मन आवहि सांति ॥ आदि निरंजन सेविऐ,बिनसै भ्रम भ्रांति ॥ आदि निरंजन सेविऐ,कसमल मिट जात ॥ आदि निरंजन सेविऐ,अलखै लखिआत ॥ आदि निरंजन सेविऐ,हउमै मिट जात ॥ आदि निरंजन सेविऐ,सत्त अनुभउ पात ॥१॥ **सलोक-** गुरु पूरा जिनि पाइआ,सेई मुकत भए ॥ अंतरि चानण होइआ,सहिजे सहिज मए ॥१॥ जा कै पूरण भाग,गुरु अविनासी मिलै तिहि ॥ जोग निधान विराग,हरि हरि भजन समाइ रहि ॥२॥ पारब्रहम

गुरुदेव,परमेस्वर हरि पाइओ ।। चरण कमल की सेव,दुरमति दुरत बिनासिओ ।।३।। **पौड़ी-** गुरु अविनासी की सरणाई,संसै भरम मिटाइआ ।। गुरु अविनासी की सरणाई,नाम पदारथ पाइआ ।। गुरु अविनासी की सरणाई,अनहद नाद वजाइआ ।। गुरु अविनासी की सरणाई,जत सत संजम आइआ ।। गुरु अविनासी की सरणाई,पारब्रहम द्रिस्टाइआ ।। गुरु अविनासी की सरणाई,सुख निधि माहि समाइआ ।।२।। **सलोक-** सत्गुरु ही ते पाइऐ,चानण गिआन चिराग ।। मन निरमल प्रभु सिमरिऐ,अगिआन नींद ते जाग ।।१।। कोटि चंद्रमा चानणा,कोटि सूर उजिआर ।। सत्गुरु गिआन न तुल्य होहि,उर हत भ्रम अंधिआर ।।२।। पूरब करम लिलाट,पाइऐ पूरा सत्गुरू ।। बिनसत भरम कपाट,परम पुरुख द्रिस्टाइऐ ।।३।। **पौड़ी-** सत्गुरु सच द्रिढ़ाइआ,झूठा सभ खोई ।। गिआन चरागहि चानणै,पेखी इह लोई ।। हउमै ममता परिहरी,निरमल उर होई ।। परमेस्वर सभ जाणिआ,जो कछु द्रिस्टोई ।। संत संग हरि जापिआ,मल अंतरि धोई ।। गुरुमुख जाणै आप कौ,मन नीवाँ जोई ।।३।। **सलोक-** संतह दासी सदा सुख,आतम राम विचार ।। परम पदारथ नाम हरि,हिरदै रखै सम्हार ।।१।। भ्रम भै मेट गवाइ,पारब्रहम लिव लाइ करि ।। सभ महि एक

समाइ,ऊणी थाउं न जगत महि ॥२॥ दुरमति दुरत विनास,हरि मित्राई नेह धन ॥ सीतल सबद विगास,अम्रित पी त्रिपतासिआ ॥३॥ **पौड़ी-** संतन कै परसाद,पाया बनवारीआ ॥ हरि प्रभु पेख हदूर,हउमै जारिआ ॥ दुरमति गई विनास,किरपा धारिआ ॥ काम क्रोध करि चूर,सत्त समारिआ ॥ नदरी नदरि निहाल,नाम खुमारिआ ॥ सांत सुधा रस पाया,श्रीचंद्र चंदारीआ ॥४॥ **सलोकः -** मनमुख भाग विहूणिआ,दूजा भाउ मझार ॥ सत संतोख विसारिआ,त्रिसना जलन अपार ॥१॥ चढ़िआ रंग कुसुंभ,धूप वेख उड जाइ ॥ घड़ीआं चार चुलंभ,संगत तिआग पराइ ॥२॥ लोभ लाग धन प्रीति,दुख महि संग न होइ कबि ॥ नहि मित्राई रीति,मतलब साधन मन बसेइ ॥३॥ **पौड़ी-** मनमुख कूड़ कबाड़ है,कूड़ो वापारा ॥ कूड़ो वणज वणजिआ,बिख लादी छारा ॥ कूड़ो कूड़ विहाजदे,कूड़े गावारा ॥ सच्च कूड़ का मेल नहि,नहि पटे दरारा ॥ सच जंगली छप रहिआ,कूड़े दरबारा ॥ श्रीचंद्र सच्च खरीदिआ,नहि दरगह हारा ॥५॥ **सलोक-** रंग मजीठा गुरुमुखी,सूरज चढ़ै उमंग ॥ तंद तंद महि रवि रहिआ,सिर देवै अंग संग ॥१॥ धड़ धड़ केरी दोसती,सिर सिर संग सुहाइ ॥ गुरु सिख सच्ची आशकी,तजि नहिं कतहूँ जाइ ॥२॥ सिर दित्ता गुरु आपणे,सत्गुरु भी

सिर दीन ॥ एको एकी जापणे,पीसे पीस महीन ॥३॥ **पौड़ी-** रंगणि रंगे एक,न दूजा जाणिआ ॥ दुख सुख भाणे विच्च,सहिज समाणिआ ॥ प्रभु प्रीतम दरबार,सिर धड़ लाणिआ ॥ दूजा थाउं न होइ,कदम टिकाणिआ ॥ जिउं रखै तिउं राख,आपण भाणिआ ॥ श्रीचंद्र कुरबान,गुरुमुख राणिआ ॥६॥ **सलोक-** प्रेम पिआला पी प्रभू,तन मन सुध सभ भूल ॥ जे सिर काटहिं प्रीतमा,लैहौं दो त्रै झूल ॥१॥ सिर धड़ मेले थाउं नहि,प्रीतम कैसे आइ ॥ अड्डो अड्डी कीतिआं,थाउं सुधार विछाइ ॥२॥ साथै सिर धड़ जावसी,कबरन संग मसाण ॥ मुनकर और नकीर लैंह,चित्रगुप्त पहिचाण ॥३॥ **पौड़ी-** प्रीतम कै दरबार,पैर जि पावणा ॥ सिर नूं लाहि उतार,मुकुट सजावणा ॥ रंगे रंग अपार,जनम सुहावणा ॥ गगन दमामे चोट,पैलाँ पावणा ॥ लहू निकाले खोट,सच्च समावणा ॥ श्रीचंद्र वर घोट विआह रचावणा ॥७॥ **सलोक-** मरिआं बिन जीवन नहीं,जीवन लोड़ै मर ॥ जरिआं बिन जर धरम नहिं,जरिआ लोड़ै जर ॥१॥ प्रिअ प्रिआ संमेल नंग,परदे प्रीतम नाहि ॥ रस मुख बकन न आवई,सहिज समाधि समाहि ॥२॥ आपा खोवै आप होइ,आपे माहि समाइ ॥ आपा आपै को कहै, आपै आप लखाइ ॥३॥ **पौड़ी-** नाराइण रंग रत्तड़े,रंग रलीआं माणै ॥ बोलन बोल सुहावणै,

हरि नाम समाणै ।। आपा आप निवारिआ,प्रभु आपणे भाणै ।। जोती जोति प्रगासिआ,दुहुँ लोक चनाणै ।। सबद सुरति हरि बेधिआ,रम राम रमाणै ।। श्रीचंद्र तिनि वारिआ,सद सद कुरबाणै ।।८।। **सलोक-** जीवंदड़े मर जाणगे,लंबी सोइ पसार ।। जीवंदड़े मर जाण जे,तिन लभ्भी दरबार ।।१।। प्रभु दर सेई जावसी,जे सिर धरे उतार ।। मरणा सिरहुँ न जावसी,मरि मरि होइ खुआर ।।२।। सिमरण बिन मरणे नही,मरा राम ही होइ ।। रमज रमूज पछाणिऐ,प्रीतम भावै जोइ ।।३।। **पौड़ी-** नाराइण गोबिंद,सबद सिंञाणीऐ ।। गुरुमुख हरि लिव लाइ,अकथ कहाणिऐ ।। आवण जाण मिटाइ,पद निरबाणिऐ ।। निरंकार कै देस,सहिज समाणिऐ ।। रंग मजीठा लाल,बुद्धि रंगाणिऐ ।। श्रीचंद्र सच्च रूपहि,आनंद माणिऐ ।।९।। **सलोक-** अंतरि अगनि न बुझई,बिन हरि नामै लाग ।। साधु संग मन निरमला,सांत सबद रस जाग ।।१।। घट अंतरि प्रभु बसि रहिआ,बाहरि ढूंढहि काइ ।। संता संगति पाइऐ,नाराइण सभ जाइ ।।२।। नेत्रीं जेता पेखीऐ,नस्वर सो सभ होइ ।। अगम अगोचर अविचला,घट ही भीतरि जोइ ।।३।। **पौड़ी-** पारब्रहम परमेस्वर,सरब समाइआ ।। अगम अपार अगोचर,रूप न काइआ ।। रेख न भेख न नाम,न धाम बणाइआ ।। मैल न भरिआ पाप,न तीरथ

न्हाइआ ।। अंग न साक न बंधु,न बाप न माइआ ।। श्रीचंद्र मिलि साधू,अलख लखाइआ ।।१०।।
सलोक- गुरुमुख लूझण मनहि सिउं,हित हउमै अहंकार ।। काम क्रोध मोह सूरमे,मारी सैन विकार ।।१।। दुंदभि दै चढ़ि आइआ,मारो मार करंत ।। काढि खड़ग रण भूमि महि,जीत लिए जग जंत ।।२।। गुरुमुख धाइ बिबेक,गिआन बाण धनु धिआन कै ।। ताण चलायो एक,मार विखादी पंच दिए ।।३।। **पौड़ी-** चढ़िआ बिबेक सु चेड़ खाइ,कटि बंध लंगोटा ।। जटा सीस जत आड़बंद,करि लै भंग घोटा ।। धनुष टंकोरा सत्त लै,गुण बाण अतोटा ।। धरम करम सभ सूरमे,भिड़गे जुट जोटा ।। गिआन खड़ग परगासिआ,गरजत दिय चोटा ।। श्रीचंद्र रण जीतिआ,रति रामहि ओटा ।।११।। **सलोक-** काम क्रोध मन घेरिआ,नित माया लपटाय ।। ऊच नीच सुख दुख घणे,पाइ पाइ पछुताय ।।१।। बहुबिधि धंधै धावता,लब लोभ की धार ।। अनिक जोनि जनमै मरहि,कबहुँ न पावै पार ।।२।। चिंता सागर थाह,हाथा ला किनि देखिआ ।। बहित पए असगाह,जुगहि जुगंतरि अंध गति ।।३।। **पौड़ी-** मन समझाया सत्गुरू,हरि नाम द्रिढ़ाई ।। राम नाम गोबिंद सिउं,नित प्रीति लगाई ।। पाप कसमल झड़ि गए,हरि प्रभु गुण गाई ।। सीढ़ि धरम करम साधु कै,महिली हरि जाई ।। गुण निधान सुख

मंदरै,चढ़ि थिरता पाई ॥ श्रीचंद्र मन ढूँढिऐ,सच्च राम रसाई ॥१२॥ **सलोक-** ध्रिग ध्रिग जीवन मनमुखी,खाइ वधाया पेट ॥ करता पुरुख न चेतिओ,गरधभ भसमै लेट ॥१॥ साकत निगुरा मनमुखी,जनम गवाया बाद ॥ संचत संचत द्रब्य बहु,नहि पायो हरि साद ॥२॥ काला धन काले रिदै,काले जंत लखाय ॥ काला मारग पाइआ,काले संग सुहाय ॥३॥ **पौड़ी-** लाख करोड़ी जोड़िऐ,अंतै दुख दाई ॥ पाप पोट सिर भार सिउं,पंध कैस मुकाई ॥ अंधकार बहु जोजनी,नही सूझ सकाई ॥ करम किए सनमुख भए,लहि दंड सजाई ॥ कंधी दिसि न आवई,मल तरी डुबाई ॥ श्रीचंद्र जप नाम प्रभु,दुख काल पराई ॥१३॥ **सलोक-** पूरब करम संजोग सिउं,सत्गुरु भेटे आय ॥ हरि हरि नाम द्रिढ़ाइआ,दीपक गिआन दीपाय ॥१॥ जिनि जन नाम धिआया,तिस ही संगति मोख ॥ क्रिपा द्रिस्टि पसार कै,हर है सगलै दोख ॥२॥ ग्रंथी छुटाई दोख मन,दोनहुँ दए निकार ॥ तीजा अनुभउ प्रगटिआ,हरि नामै उजिआर ॥३॥ **पौड़ी-** सत्गुरु पूरा भेटीऐ,हरि हरि रस आया ॥ हउमै ममता मोहणी,परिहर करि माया ॥ काम क्रोध लब लोभ मोह,अहंमेव तजाया ॥ तम अगिआन निकासिआ,रवि गिआन चढ़ाया ॥ पारब्रहम परमेस्वरो,सनमुख द्रिस्टाया ॥ श्रीचंद्र करुणामय,निज

चरनी लाया ॥१४॥ **सलोक-** चार वेद दस अस्ट पढ़ि,खट खट अंग समेत ॥ सगली सिम्रिति स्रवणि सुण,लहित न गुरु बिन भेत ॥१॥ चार कतेब हदीस बहु,फिक्का नाभ दीवान ॥ पढ़ै गुणै मतसर धरहि,दोजख अगनि तपान ॥२॥ मढ़ीआं कबरन टोलिऐ,अठसठ तीरथ न्हाइ ॥ काबे पाहन थाप कै,गुरु दोखी भरमाइ ॥३॥ **पौड़ी-** विआपक घट घट सगल महि,नहि द्रिस्टि आया ॥ प्रेरक जीवन करम हित,करता फुरमाया ॥ धरम द्रिढ़ावन कारने,असमानो धाया ॥ दोखी दुस्ट बिदारने, सारंगधर काया ॥ काफर मारे पाप नहिं,लूटहु सरमाया ॥ श्रीचंद्र गुरु हीणिआ,कछु भेद न पाया ॥१५॥ **सलोक-** भूत भावनी धार कै,भूत होइ मन जात ॥ त्राटक साधत काम लहि,धन जन हिर ले आत ॥१॥ लिख लिख जंत्र जलाइऐ,अगनी जल की धार ॥ जंत्र देव प्रत्यख ह्वै,कारज देत सवार ॥२॥ पारब्रहम लिव मन धरै,जोग करम तै सिद्ध ॥ सत्गुर करुणा पाइ कै,सदा फुरत बुधि बिद्ध ॥३॥ **पौड़ी-** पारब्रहम परमेस्वर,घट घट लुक रहिआ ॥ नाम रूप द्रिस्टाइ,न किनहूँ हरि लहिआ ॥ माया भरम भुलाइ,न जानिओ उर छहिआ ॥ धन जोरन की आस,सिधायो दिसि दहिआ ॥ दुख बिखिआ लपटाइ,दूतन ढहि ढहिआ ॥ श्रीचंद्र गुरु मेल,प्रगट करि मुख कहिआ ॥१६॥ **सलोक-**

मेली मेल मिलाइआ,प्रेम भगति हरि संग ।। मगन लगन प्रभु की लगी,आनंद रलीआं रंग ।।१।। प्रेम संदेसा हरि प्रभू,दे करि भेजिओ संत ।। सीतल छाती सद सुखी,कीने सगले जंत ।।२।। आसा त्रिसना मिटि गई,बिनसी दुतीया भ्रांति ।। जीवन मरन गुपाल कर,सहिज अनंद सुख सांति ।।३।। **पौड़ी-** आतमराम विराजिआ,बड तखत सुहाई ।। देवी देव बिगणत थित,कर बंद चहुँघाई ।। कोटि पैगंबर पीर जुर,सेवत सरसाई ।। रिद्धि सिद्धि नौनिद्धि मिलि,ग्रीबा निहुराई ।। तीरथ काबे कोटि कोटि, थित जा कै पाई ।। श्रीचंद्र पारब्रहम प्रभु,गुरु भेट लखाई ।।१७।। **सलोक-** नाम पदारथ पाइऐ, जनम पदारथ जीत ।। प्रेम पदारथ आइआ,गिआन पदारथ मीत ।।१।। सत्गुरु पूरा भेटिऐ,नाम बसै मन आय ।। पारब्रहम उर प्रगटई,जोती जोति मिलाय ।।२।। जिनि जन नाम धिआया,ऊजल बदन तिनाहि ।। ऐथै सूख आनंद घन,आगै पैधे जाहि ।।३।। **पौड़ी-** नाम नाराइण पाइऐ,मुख ऊजल होई ।। नाम नाराइण पाइऐ,दरगह लहि ढोई ।। नाम नाराइण पाइऐ,दिब्य द्रिस्टि समोई ।। नाम नाराइण पाइऐ,गति देव अलोई ।। नाम नाराइण पाइऐ,हउमै मल धोई ।। श्रीचंद्र नाराइणै,जस सभनी लोई ।।१८।। **सलोक-** मानुख मूल न जाणई,करम मिलाया कास ।। किस

बिधि छूटहि बांधिआ,द्रिढ़ करमन की पास ॥१॥ चितव चितव पचि पचि मूए,बुद्धिवंते बेअंत ॥ पहुँच न साकहि करम गति,किहँ लागिओ किहँ हंत ॥२॥ छूटो छूटो बकन ते,बंधन छूटत नाहिं ॥ चानण चानण कहे ते,अंधे चानण काहि ॥३॥ **पौड़ी-** करम न छूटिओ राम ते,बन बसि दुख पायो ॥ सीता सगरी आयु भरि,सुख रंचि न आयो ॥ क्रिसन गयो परलोक तबि,जबि बधिक घायो ॥ देव पुत्र पांडव भए,व्रिति दास धरायो ॥ लटकै उलटि त्रिसंकु नभ,कस करम कमायो ॥ बिधि निखेध श्रीचंद्र तजि,हरि नाम धिआयो ॥१६॥ **सलोक-** गोबिंद गोबिंद सिमरिऐ,इक मन हो दिन रात ॥ करुणा कर कै आपणी,आपहुँ बखसहि दात ॥१॥ जेतो मानुख करि सकहि,सो एतो ही काम । सहिज करम महि रत रहै,निसिदिन जापै राम ॥२॥ आप छुडाए छूटिऐ,आप बंधाए बंध ॥ आपहि मुकत करावई,आप लगाए धंध ॥ ३॥ **पौड़ी-** गोबिंद नाम धिआइ कै,रस अम्रित पाइऐ ॥ मन तन पावन निरमला,मल पाप गवाइऐ ॥ हउमै दुबिधा परिहरै,एकतु समाइऐ ॥ चौदह लोकीं चानणा,दिब्य जोति दीपाइऐ ॥ गुण निधान घट पाइकै,अलमस्त फिराइऐ ॥ राम नाम श्रीचंद्र जप,अनभै गुण गाइऐ ॥२०॥ **सलोक-** निरमल संतन संग ते,निरमल हरि गुण गाय ॥ निरमल

मन महि प्रगटए,निरमल गोबिंद राय ॥१॥ ताला दै मन कोठड़ी,संतन कुंजी दीन ॥ जो खोलै सो रतन लहि,अंतरि आतम चीन ॥२॥ लाल जवाहर माणकी,मणीअन भरे भंडार ॥ सत्गुरु संत मिलाइआ,हउमै गरब निवार ॥३॥ **पौड़ी-** कोटि चंद्रमा चानणे,हनेरा विआपै ॥ कोटि सूरज परकास तै,नहि आतम जापै ॥ कोटि अगनि भांबड़ मचै,नहिं पोहै आपै ॥ कोटि बिजलीअन चमक ते,नहि पंथ सिञापै ॥ करम धरम लख कोटि कर,नहिं भरम गुआपै ॥ श्रीचंद्र सत्गुरु मिलै,मुकता करि थापै ॥२१॥ **सलोक-** सुभर सरोवर रस भरे,साधु भवे भव माहि ॥ मगन आप हरि रंग भए, मगन करत जन चाहि ॥ १॥ जा को एकहि चाहि,अपरन सिउं तिहँ काम किआ ॥ रंग रते उर माहि, सुधि बुधि खोई नेह वसि ॥२॥ बिरह निसानी साधु,आकल विकल विभोर भव ॥ बूडे नेहु अगाधु, निकसन बहुरि न पावही ॥३॥ **पौड़ी-** हरि प्रभु कीआं कहाणीआं,रस प्रेम सुहाईआं ॥ तोटा कहित न आवई,नचि नचि बहु गाईआं ॥ अखर एकै प्रेम का,नित देण दुहाईआं ॥ खाणा पीणा बिसरै, बहि जाणा जाईआं ॥ आ मिल साहिब आइ मिल,आ मिल मेरे साईआं ॥ अखीं ताराँ श्रीचंद्र उठीआं नभ चाईआं ॥२२॥ **सलोक-** औसी पाई राह ले,काग बनेर उडाय ॥ चढ़ी चुबारे वेखदी,

प्रीतम किधरों आय ।।१।। तन बल जल कोले भया,मन उड दहदिसि धात ।। पिआरे प्रीतम के बिना, उपजत किहँ बिधि सांत ।।२।। नैनी जलधर उमड़ के,लाई घणी झरी ।। धरती मति ग्रीसम जली, अजहूँ नाही भरी ।।३।। **पौड़ी-** परदेसहि तूँ चल गयो,चित याद न मेरी ।। लालच धन के लगिआं, पाई नहीं फेरी ।। बरसत बूंदा गगन ते,जनु बाणां हेरी ।। तड़फत मीन न तरसता,कुंडी जल गेरी ।। करक करेजे रड़कती,सूलां दभ केरी ।। श्रीचंद्र कहु मिलहु प्रभु,किउं लाई देरी ।।२३।। **सलोक-** जिहँ खिन पूरन प्रभु करै,पूरन तब ही होय ।। करम धरम पूरन तिसहि,पूरन पुरुख अलोय ।।१।। जा कै ऊणा कछु नहीं,पूरन भरे भंडार ।। रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि सभ,ठाढी तिस दरबार ।।२।। पूरन कीने जोग यग्य,जप तप संजम सत्त ।। पूरन सत्गुरु पाइआ,अविनासी अवगत्त ।।३।। **पौड़ी-** सत्गुरु पूरा सेविऐ,हरि नाम समावै ।। पूरन करम कमावणै,चित थिरता पावै ।। पूरन धरम सनेह का,जिअ जंत सुखावै ।। पूरन सत संतोख ब्रत,नहिं माँगन धावै ।। पारब्रहम पूरन प्रभू,सभ जगत समावै ।। श्रीचंद्र पूरन भया,लग प्रभु कै पावै ।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग श्री ।।

गोबिंद गुण सद गाविऐ,मन सिउं लाइ पिआर ।। संता संगति मिलि करै,आतमराम विचार ।।१।। भाई रे,साध संग सुख होइ ।। गिआन महारस पाइऐ,जनम मरन दुख खोइ ।।१।। रहाउ ।। मनमुख संगति दुख घणा,अनिक जोनि भरमाइ ।। संसै कदे न चूकई,चिंता चितव विहाइ ।।२।। गुरुमुख सत संतोख ब्रत,करम धरम रस गिआन ।। आतम देव पछाणिआ,पारब्रहम लिव धिआन ।।३।। सबद कमाया मनहि महि,पाइआ सूख अनंद ।। सहिज सरूप निवास भा,श्रीचंद्र निज छंद ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || जीवन मुकत सेई भए,हरि प्रभु गुण गाया || अनुभउ सबद प्रगासिआ,परमेस्वर पाया ||१|| हरि प्रीतम नित आराध || अंतरि जोति निहार कै,जम मारग फाध ||१|| रहाउ || संत जना की प्रीति सिउं,नित हरि गुण गाइऐ || जीवन पद गोपाल जस,तिस माहि समाइऐ ||२|| अहनिसि मन सिउं लूझीऐ,इक आप निहारै || संसै भरम अपार ग्रंथि,चीरै निरधारै ||३|| किलबिख पापन दूर करि,आतम दरसाइआ || ऊंध कमल परगासिआ,श्रीचंद्र सवाया ||४||२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || जे तूँ बंदा रब्ब दा,द्रिढ़ हिरदै नाम || होवगु लंमी धावणी,तजि महल मुकाम ||१|| ऐथे नाही थाउं || जाणा ऐसे देस को,जहँ नाउ न ठाउं ||१|| रहाउ || सूरज चंद न चानणा,नही बाग बहारा || मंडप महल अटारीआं,नहिं पाल मुनारा ||२|| बोलण चालण संग साथ,सभ औरे रीती || लैणा दैणा ठाठ बाठ,इह सिउं विप्रीती ||३|| कापड़ भोग पदारथ,तन मन नए तौरा || श्रीचंद्र तिस पेख कै,होहि विआकुल बौरा ||४||३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। केस घास जिउं जलहिगे,हड्डी जिउं काठा ।। माखण पाली देह की,दधि दुगधी माठा ।।१।। भई भसम की ढेरी ।। पुनह न आपहि चलत भी,कब फिरी न फेरी ।।१।। रहाउ ।। राख राख सिउं मिल गई,जल जलहि समायो ।। पवन पवन अनलै अनल,बिछराइ मिलायो ।।२।। पंचभूत किमि मेलता,पुनि कैस तुराए ।। किउं करि जीता जागता,म्रितू कैसे थाए ।।३।। अचरज खेल बणाइआ,प्रभु करणै हारै ।। मूरख बंदे श्रीचंद्र,लख नाहि सम्हारै ।।४।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। कारण कीना जाहिं प्रभु,सोई सभ जाणै ।। कारज है किस बिधि भया,को सकत बखानै ।।१।। सिमरहु करता पुरुख मुरार ।। आया है उठ चलणा,नहिं रहिणा संसार ।।१।। रहाउ ।। जोगी जती स्रेवड़े,काजी मौलाणै ।। पीर पैगंबर औलिए,नहि थिरे टिकाणै ।।२।। देवी देव रिखीसरां,लई वाट अगामी ।। चलणहारा वेख कै,नर भरत सलामी ।।३।। मजलिस बड पातसाह की,लागी पुनि नाहीं ।। एकहि बारी श्रीचंद्र,जप नाम अलाहीं ।।४।।५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। रे कूड़े! किउं कूड़ सिउं,अति नेह लगायो ।। मिथिआ कूड़ पसारिआ,सत्त रूप लुकायो ।।१।। सच्चा नाम निधान ।। जे कर मन महि वास है,सूख मंगल कलिआन ।।१।। रहाउ ।। संतन कहिओ पुकार कै,को रहिण न पै है ।। जो आइआ इह देस महि,अंतहि उठ जै है ।।२।। मात पिता सुत बंधु जन,दारा धन मीत ।। मरघट महि तजि जाहिंगे,उरहि तिआगै हीत ।।३।। राम राम इक राम ही,सत कहै अलाई ।। श्रीचंद्र आंखन पिखै,फिर भी न सुझाई ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। दिवस चार को जीवना,कत्त कीन पसारा ।। अंत काल तजि जाहिगो,सगलो घर बारा ।।१।। मिथिआ लागै राम विसारा ।। राम राम के जाप ते,रामहि ह्वै पिआरा ।।१।। रहाउ ।। राम बिना दूजा नहीं,तिस माहि समावै ।। दूजा दूजै हेतु है,रामहि रम भावै ।।२।। संतन भुजा पसारीआ,कूकत कल बानी ।। जो चाहैं सुख लोड़िआ,हरि सिमरहु प्रानी ।।३।। जो मन हरि सिउं दै मिलहि,भवजल नहिं फेरा ।। श्रीचंद्र भजि राम कउ,मिटहै सभि झेरा ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || संतन एकहु जाणिआ,दूजा नहीं कोई || आपै आप उपाइया,आपहि लेह गोई ||१|| एकहि आतम राम || आपण आप समार तूं,आपन ही तुहि काम ||१|| रहाउ || आपहि नदरी पेखता,आपहि नदरी होइ || आपहि स्रोता वेद का,स्तोत्र बनियो सोइ ||२|| आपहि बोल बुलाइंदा,आपहि बोलणहार || आपहि मोनी हो रहिआ,आपहि समझहि सार ||३|| आपहि गिआन अगंम है,बूझ बुझावै आप || बुद्धि ग्राह्य श्रीचंद्र,आपहि राखी थाप ||४||८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || दीन दयाल किरपाल प्रभु,भेज दीआ फुरमान || चलण होइआ लाजमी,मिथिआ लहि अभिमान ||१|| बंदे करते नो सालाह || राम नाम जपु दिनस राति,भारा भरम बिनाह ||१|| रहाउ || लद्दे भारे भार भरि,होई लंमी कूच || आगल पाछल भीड़ बहु,ओड़क अंत पहूच ||२|| राव रंक नहीं जाणिऐ,धन निरधन सम पंथ || परवाना परवाण होइ,कोटि न मेटै संथ ||३|| सच्चे साह पठाइआ,लिखिआ लेख रजाइ || चल्लण धुर फरमाइआ,श्रीचंद्र सिर नाइ ||४||९||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। मन रे मूड़े अंधले,लागा है कित काम ।। जो तुम साथ न देवनी,सेई दाहिन बाम ।।१।। भाई रे! एकल जाणा होइ ।। पुत्र कलत्र संबंध सभ,संग न जै है कोइ ।।१।। रहाउ ।। जोगी जती सरेवड़े,बैरागी उदासि ।। भगति भगौती संजमी,मित नहि रामदासि ।।२।। पंडित पांधे जोतिसी, काजी मुल्ला सेख ।। पोप पूज नख जटाधर,मुंडित भगवे भेख ।।३।। तपे तपीसर मोनीआं,महाराजे कंगाल ।। श्रीचंद्र नहि गणत होइ,कड़ि बांधे जम काल ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग श्री ।। कूक सुणावहि पढ़ पढ़ बाणी,माया मोह वधाइ ।। वाजे वावहि नाचहि टापहि,लेखे कोइ न पाइ ।।१।। भाउ बिहूणे राम न चीत ।। आसा धन जोड़न परे,गावत गीत अनीत ।।१।। रहाउ ।। मन माया कालख भरा,मैल लगी दुहचार ।। परमेस्वर नहिं सूझई,झूठे फसि वापार ।।२।। डहकावै मुख राम कहि,आतम विआपिआ कूड़ ।। झूठो झूठ कमावणा,गज न्हाते सिर धूड़ ।।३।। लद्दे पाप विकार मन,जम मारग चलि भीड़ ।। बिन साधू श्रीचंद्र किहँ,गई काल की पीड़ ।।४।।११।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

|| राग श्री || रंग बरंगे फूल लै,कबर सजाई खूब || मुरदा पीर बणाइआ,ठगण ठग महबूब ||१|| मूढ़े मढ़ीआं लाग भुलाइ || जीवन हीणे पूज नर,जीवन हीणा थाइ ||१|| रहाउ || आप सजाई जो लहहि,केसै तुझहि छुडाइ || चनक दिखाए कपि गहै,मुट्ठी दई फसाइ ||२|| लोभ लहिर हलकाया,हलकायो संसार || हरि का नाम बिसार कै,बूडे काली धार ||३|| साधू संगति मिलै बिनु,लोभ न विचहुँ जाइ || खुआर भए दुहुँ लोक महि,श्रीचंद्र दुख पाइ ||४||१२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || बिरला रसीआ राम का,द्रिढ़ उर धार विराग || कोटिन लाखन जगत महि,मस्तक जा कै भाग ||१|| राम नाम रंग राता रसीआ || आनद मगन लगन हरि माही,प्रीतम पिआरा मन चित बसीआ ||१|| रहाउ || सुइने मंदर मोती हीरे,ललिना सुंदर मन न लगायो || पान फूल सिहजा संग छाई,पाइ सुगंधित पवन झूलायो ||२|| चंद्रमुखी भूसन बसनन पट,हाउ भाउ जुत तान जमाई || अंग अनंग त्रिआ ते सुंदर,तीन लोक मन हरन लुगाई ||३|| उमा रमा उरवसी सरस्वती,

जा सम ह्वै हैं भरम उपंना ॥ राम नाम श्रीचंद्र जाहि उर,सरब लोक सोऊ धन धंना ॥४॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग श्री** ॥ कपट खपट खल गरजत मरजत,तरजत सरजत अघ अन धरम ॥ बिकल निखल किल हिलमिल पिलवत,बिलपत बिलपत चरचत चरम ॥१॥ तरल तरल उर भरमत भरम,परिहर धरम करम सभ मरमन,मरम न लख चित मरत न सरम ॥१॥ रहाउ ॥ चित रचि खचि पचि पचि पचि गरबत,सरबत सरबसु इकरस हरन ॥ सुरति दुरत रति परत गरत बर,चरत चरत बन बन सभ धरन ॥२॥ मन मन चितवत चरित मनमथ करि,मथत मथत कत लख तट तरन ॥ मत पर परमित अखर बिखर खर,परचि परचि करनन अन करन ॥३॥ समझ समझ सुधि बुधि बर धर वर,हरि जन सिरजन सुरजन करम ॥ जनम जनम मल कलिमल हर कर,धवल धवल श्रीचंद्र सु धरम ॥४॥१४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग श्री** ॥ बहुते राही मन पइआ,रहत नहिं इक ठौर ॥ बिख बिखिआ पसरी घनी,गरतो चिंता

घौर ।।१।। कामिनि काम लपटिआ भौर ।। बिन मरबे नहि उबरिआ,जल तपते उबटौर ।।१।। रहाउ ।। रैणि सगल दुख पाइआ,पासा सकिओ न मार ।। दिण महि तरिआ उबल बन,तन नहिं सकिआ उबार ।।२।। कुंडी मीन फहाइआ,तड़प तड़प दुख पाइ ।। इंद्री रस लपटाइआ,जनम मरै पछुताइ ।।३।। जम डंडा सिर मारिआ,सुंञी देह पड़ी ।। अजहुँ सिमर श्रीचंद्र हरि,मुजरे पवे घड़ी ।।४।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। जोबन बाद गवाइआ,बिखिआ रस लपटाइ ।। बिरध भया तन कंपही,अंध भया पछुताइ ।।१।। मूढ़े बलवंतहि जपु राम ।। सरब सूख मंगल लहहि,हरि प्रभु द्रिस्टै धाम ।।१।। रहाउ ।। भोजन ग्राही ग्रास कै,ग्रासन हित करि चाहि ।। मुख महि पाइ न साकई,उठ नहिं साकहि न्हाइ ।।२।। द्रब्य संभारिओ सुतन सिउं,झूठी दानै आस ।। बदन बाइ मंचहि परा,लेवत सास उसास ।।३।। आल पतालहि चितवते,रंचक चलत न पेस ।। समै संभारहु श्रीचंद्र,हरि भजि मिटत कलेस ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || राम नाम जपु दिनस राति,संगी दरगह पाथ || सोई वस्तु विसाहिऐ,जैसी निबहै साथ ||१|| भाई रे सत्गुरु सिउं करि संग || मन मैला गुरु सबद धोइ,रंगहु नामहि रंग ||१|| रहाउ || कापड़ पत पहिराइआ,चंदन तिलक चढ़ाइ || पंच सबद दर वजदे,दरगह पैधा जाइ ||२|| आदर देवत धरमराइ,देव देव जैकार || दिब्य विमान विराज कै,हरि दर महि पैसार ||३|| अम्रित पी अमर भए,राम नाम परगास || सच्च वपारी श्रीचंद्र,सहिज विहाजी रास ||४||१७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || सखी सुहागणि संग मिलि,गावहि गीत गुबिंद || परमेस्वर पति पाइऐ,बिनसहि दुतिया चिंद ||१|| ता कै ऊपर नाही कोइ || ऊच महिल कनिका मणी,धन पिर संग समोइ ||१|| रहाउ || भरता हरि प्रभु वसि थिआ,सौकणि तड़फहि माइ || अनिक जतन भरमावई,पेस न कोई जाइ ||२|| गुण कामण करि मोहिआ,निमख न अनतै जाइ || रूप न रंग पछाणिआ,लीनी अंक मिलाइ ||३|| होवै द्रिस्टि दयाल की,अवगुण चित्त न धरेइ || आप पछाणै लाइ लए,श्रीचंद्र बाँह

फरेड़ ||४||१८||

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग श्री || साहिबा,तुझ ते विछुड़ी,कूकां मारा धाहां || जे तूँ झलक विखालीआं,किउं नहि गहिआं बाहां ||१|| कबहूँ सुनहि पुकार || वाली वारस साइआं तूं है,अपनी जान समार ||१|| रहाउ || जपु तपु संजम जतन लख,किते न आए काम || तीरथ न्हाते दुख सहे,अगनि जलाए धाम ||२|| कंद मूल चुणि खाइआ,सीस सही धुप छाम || ग्रिह तजि मांगण धाइआ,बिचरिओ गामहि गाम ||३|| खान पान संजम किया,बिरखन थापिओ धाम || अब तो सहिओ न जात है,श्रीचंद्र मिलि राम ||४||१९||

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग श्री || कोइल कूकै सहिज धुनि,मन सुनि बिरह उपाई || तड़पी मीना जल निकसि,मुहि किमि गी तड़पाई ||१|| प्रभु जी! किआ तुम मुझ मै डारा || झड़ी अकासहुँ बूंद इक,छूटिओ जल परनारा ||१|| रहाउ || दाणा इक धर राहीए,अंन ढेर सजाए || नन्ही बदरी आइ कै,छहिबर

झड़ि लाए ।।२।। अविनासी गुरु निज मुखहुँ,इक अक्खर भाखा ।। चौदह भुवनी खंड नव,सप्त दीपी साखा ।।३।। सरब बिभूती कीरती,फल चार सुहाए ।। चार दसा श्रीचंद्र संग,निसि दिओस रहाए ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। जिनि जिनि पाया साधु संग,सो सुखिआ हरि नाम सम्हार ।। ऊरध कमल प्रगास भया, बिनसि गए सभ भरम अंधार ।।१।। सत्गुरु संगति मोख दुआर ।। सहिज धुनी गगनंतर बाजी, रुणझुण सबद अनाहद सार ।।१।। रहाउ ।। जोति प्रगास गुप्त गति पाई,सरब देवते पिखे मझार ।। आवण जाणा चक्र चलाइआ,आपे आप अपन पासार ।।२।। चरण कमल सिउं लागी डोरी, भव सागर का लहिओ किनार ।। पूरण पारब्रहम परमेस्वर,माया ही का भा विस्तार ।।३।। अचरज सिउं मिलि अचरज होए,गुरु चेला को सकत उचार ।। भाउ अभाउ श्रीचंद्र मिलाए,आकारी गणिऐ निरंकार ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| **राग श्री** || पाप पहाड़ सिरे धर दबते,सत्गुरु भार उतार दयो || करम पास महि पीड़त होते, नाम काति सभ काट खयो ||१|| अब तो औरहि तौर भयो || एक कोस भी चलन न सकते,सगलो पंध निवार दयो ||१|| रहाउ || चीटी पेट न अजहूँ भरियो,हाथी सगल डकार लयो || लीनि डंगोरी पग थरराते,परबत मेरु अपार थयो ||२|| कोटि सूर गगनंतर आए,तिहुँ लोकन अंधिआर गयो || सीत सुधाकर सुधा चुआयो,मन तन ठंडा ठार भयो ||३|| पेखि पेखि चित भीतरि जलते,काम क्रोध अहंमेव हयो || पूरन भए अनुग्रह सत्गुरु,श्रीचंद्र अवतार लहियो ||४||२२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| **राग श्री** || मो कउ हरि अपना कीना || तन अपवित्र मन अपवित्रहि,खैंच ओर निज कीना ||१|| रहाउ || पाप विकार भार भरि बोझल,गहरी नदी बहायो || अंधकार महि किछू न सूझत,सूरज गगन चरायो ||१|| निसिदिन भूखे जनम जनम के,त्रिपति अघानै लोका || जाचक जाचित घर घर जाई,हाथ चरै सभ थोका ||२|| नीच चंडाल मलाय पतित दुर,भरिओ अनंत विकारी || ऊजल पूज

सिंघासण बैठिओ,सुरसरि अघन विदारी ॥३॥ परधन परतन अगनी जलते,चंदन सीतल होए ॥ श्रीचंद्र पग रुलते पाहन,मणिअन हार समोए ॥४॥२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग श्री ॥ मेल लिओ सत्गुरु अविनासी ॥ अवगुण पाप दुक्रित के बांधे,खिन महि काटी फासी ॥१॥ रहाउ ॥ गहिर गंभीर चक्र गति तटनी,भुजा गहाइ निवारी ॥ चिंता जन जीवन की जग की,खिन मै सरब उतारी ॥१॥ चंड प्रचंड दावा बन लागी,बारिद धार बसाई ॥ चलते चलते ठोकर खा कै,मुहरन गागर पाई ॥२॥ भठिआरनि भाठी के दाने,चुन चुन उदर भरंते ॥ इंद्र लोक की संपति हेरे,नहि भरि नदरि तकंते ॥३॥ सनमुख पेख न जानत उर की,सरब लोक गति लाखी ॥ नाराइण परमेस्वर माधव,श्रीचंद्र पेखिआ आखी ॥४॥२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग श्री ॥ मेरे सत्गुरु की प्रिय बाणी ॥ काटि विकारन दुक्रित सगले,मेले हरि निरबाणी ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासे,राम नाम धुनि छाई ॥ मज्जन सतसर धाम अनूपम,

रूप अगोचर लाई ।।१।। दुस्मन दूत न रहिआ कोऊ,मित्र सहाइक होए ।। ब्रहमण खत्री सूद चंडाला, सुत ब्रहमे बिगसोए ।।२।। गुण पूंजी वापारी गुरुमुख,भरि भरि देस विआपे ।। पारब्रहम परमेस्वर हरि प्रभु,महामंत्र जप जापे ।।३।। गिआन पदारथ बुद्धि विवेकहि,उजिआरो चहुँघाई ।। त्रिकुटी छूटी ताड़ी लागी,श्रीचंद्र सरसाई ।।४।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। सत्गुरु पूरे सबद सुणायो ।। पारब्रहम पूरन सभ थाईं,घटि घटि एक समायो ।।१।। रहाउ ।। बन परबत जल थल महीअल हरि,ऊन न कोऊ थाना ।। मसजिद देव देवालै माही,वेद पुरान कुराना ।।१।। बांग नमाजां संख अवाजां,एकै ही गुण गावैं ।। हंस काक माखी मच्छर गो,त्रिण तरु एकहि धिआवैं ।।२।। अलख निरंजन जोगी बोलै,अलह अली मलंगा ।। नागां म्रिगां गिद्धां चीलां, वास भुजंग निहंगा ।।३।। एक अनेक विआपक सगरे,सरगुण निरगुण सोई ।। धरम अधरमन करम कुकरमन,श्रीचंद्र इक ओई ।।४।।२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। प्रापत संत संग गति मोख ।। किलबिख जनम जनम के लाथहि,अंतह करणहि उतरहि दोख ।।१।। रहाउ ।। मुख उपदेसा हरत कलेसा,सांत हिरदै उपजात ।। गिआन गम्य गुरु रवि उदै भे,ऊध कमल बिगसात ।।१।। अठसठ सगले तीरथन का,संत चरण महि वास ।। गुरुमुख धारत मनहि महि नित्त,पारब्रहम परगास ।।२।। अकथ कथा अनुभउ जुगति सत्त,मधुर रसीली बानि ।। सुधा पीत जन होत न त्रिपति,सारद रहिबे थानि ।।३।। परम पुरख भगवत परमेस्वर,बिन संतन कहूँ नाहिं ।। मक्का मदीना गंग गोदावरि,श्रीचंद्र पिखि आहि ।।४।।२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। जिस मन पारब्रहम की भूख ।। साधू संगति खोज लहहि जन,तन मन केर उतारहि दूख ।।१।। रहाउ ।। त्रिसन पदारथ सुआरथ हानी,सत संतोख धरम रति होइ ।। अद्रिस्टि अगोचर अगम अगाधहि,मानुख के उर माहि समोइ ।।१।। पूरब जनम भाग जिस उतम,मया द्रिस्टि जिहँ पर भगवान ।। संत मिलहि तिस प्राणी ताईं,भरमत नहि उदिआन बेबान ।।२।। नेत्र हिरदै रसना

संतन की,पारब्रहम तहँ करत निवास ।। सागर नदी दीप लोकहि पुरि,धाम ढूंढि लहिहो उपहास ।।३।। बंचक बंचन हेत थिरित थिति,मठ मंदर पट डारे गोर ।। बिन साधू श्रीचंद्र न परसिओ,चौदस भुवन भ्रमिओ हरि टोर ।।४।।२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। बिन साधू नहि जापै राम ।। माया मूठै वेद पुकारहि,ऊचे रटत कुरान ।।१।। रहाउ ।। गोपी चंदन तिलक चढ़ायो,परसन चालै धाम ।। नख सिख धोती जटा बिभूति,मुद्रा फटक धरि कान ।।१।। भगवै पहिर लीन कर लौटे,मण म्रितका धो पान ।। लाल पीत सित नील स्याम पट्ट,वरुण हरित पहिरान ।।२।। पूअर तापत सखिअन बाणे,मुंडित मूंड भिराम ।। दीरघ चोले दंड धार करि, धुजा बंधाई धाम ।।३।। डेरे रथ गज अस्व चंदोए,चमर ढुराउति बाम ।। राग रागनी डूम अलापत, श्रीचंद्र दंभ नाम ।।४।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। रंगे हरि रंग सिउं रंगराते ।। ऊठत बैठत सोवत जागत,राम नाम रस माते ।।१।।

रहाउ ॥ सिमरन मद मत मस्तल मस्ते,बिसरी सगरी घाते ॥ परिहर प्रीतम पारब्रहम पद,ठौर नहीं अन जाते ॥१॥ बोलन चालन सुनन सुनावन,हरि प्रीतम की बाते ॥ देन दिवावन धंधै धावन, सुधि बुधि डारी साते ॥२॥ हरि हरि जपत उदिओ रवि बासर,हरि हरि जपते राते ॥ हरि हरि हरि हरि संध्या कीनी,मधिआहन परभाते ॥३॥ मरन जीवन की संका तिआगी,पहिरन पीवन खाते ॥ जन प्रभु प्रभु जन एकहि होए,श्रीचंद्र के दाते ॥४॥३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग श्री ॥ प्रभु जन राखै नदरि मझार ॥ अनिक बिघन ते कर दै राखत,होत न बांको बार ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि चालत ऊठत,मात समारति बार ॥ टिब्बा खात सरप अगनी जलि,खिन महि देवति टार ॥१॥ नवाइ पहिनाइ खुआइ पौढावति,बिसद बिठौना डार ॥ ग्रीसम नीर सीत अचवावति,विजने पवन झुलार ॥२॥ पीसन पीस सिनग्ध पदारथ,स्वादल देति अहार ॥ हिम रितु उस्न पान सिउं पखालति,खिन खिन धूड़ि पोचार ॥३॥ बड अगिआनी परम अयानै,राखहु करि प्रतिपार ॥ पितु समरथ सरब कल पूरन,श्रीचंद्र बेसार ॥४॥३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। प्रभु जी! जन की सार सम्हार ।। दुस्मन दोखी देत संतापै,निज कर लेहु उबार ।।१।। रहाउ ।। तुंद बिखाण दीरघी स्यामा,गो चाहत दिअ मार ।। दौड़ दौड़ आवति ढुंढिआई,पूँछ उचाई झार ।।१।। खुरन संग धरणी खुरराती,डकरावति डकार ।। संगी हमरे अनिक पछारे,अनिक उपाटे झार ।।२।। रक्त नेत्र मुख रकत कुड़ावत,नंगी कर करवार ।। पाहन डारत संग सार हितु,बन निरजन पाहार ।।३।। संग न साथी एकल पाथी,घेरिओ घन बटपार ।। श्रीचंद्र की करहु दुहाई, तसकर बनिक मझार ।।४।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। हरि प्रभु तुम ही राखहु लाज ।। काम क्रोध अहंकार लोभ मोह,करते महा अकाज ।।१।। रहाउ ।। भव नदि नकर चितवनी चित की,टाडे मूह दराज ।। मन उसटर की त्रिसना गूणी,लादि विकार समाज ।।१।। हउमै भार दबिओ अति भारी,अजगर रहिओ विराज ।। आसा वायु डुलावत बहुबिधि,अरथन काम जहाज ।।२।। साधु भेख ठग जगत डुलंता,हिंसा रति पखि बाज ।। मनमुख

विआपिआ पिखि परनारी,विभिचारी दुर काज ।।३।। मनमुख संगति चोरी जारी,साजिओ निसिदिन साज ।। श्रीचंद्र नहि भजन नाराइण,न्रिप अविवेकहि राज ।।४।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग श्री** ।। गोबिंद राखत जन की आप ।। बिखम घोर दुरजन सस्त्र अस्त्र,द्रिस्टि धार दै खाप ।।१।। रहाउ ।। प्रज्वल अनल अनिल संगाती,प्रहलादहि नहि ताप ।। कुंभकार भाठी बासन महि,राम बलूंगड़ थाप ।।१।। पर ते परे गगन ते दीरघ,द्रिस्टि राम की जाप ।। सागर लहिर अथाह बूडते,गहि राखै करि आप ।।२।। चलत न वसि गज ग्राह ग्रासिओ,राखिओ बंधन काट ।। बधिक चहुँदिसि म्रिगी घिरानी,हरि खिन महि दिय छाट ।।३।। हिरनकसिप नख घात बिदारिओ, थंभ तपत महि जाप ।। श्रीचंद्र सभ ठौर उबारत,संतन का माइ बाप ।।४।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग श्री** ।। संतन हितु भे हरि अवतारा ।। सुंदर सेज त्रिआ संग सोयो,तजि खिन माहि पधारा ।।१।। रहाउ ।। परिसद भरी पारसदन गण,जै विजै अंग साथा ।। दुस्मन दूत निकटि नहि फटकत,

अंग रख्यक धनु हाथा ।।१।। का को है परताप जोऊ उठि,सेस मुखाग्रज आवै ।। को अस माता जनिओ सुपूता,पयनिधि जो उलँघावै ।।२।। कामधेनु तरु कलप कौतुभ मणि,जा के सद पाही ।। वाहन गरुड़ निजेछाचारी,निसिदिन आगिआ माही ।।३।। दुखित साधु लखि रिद अकुलायो,सरवसु तिआग पराना ।। श्रीचंद्र अच्चुत अविनासी,मात गरभ किअ थाना ।।४।।३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। संचालन धरमहि प्रभु काम ।। काटि कलेस निवार बिघन गण,सदा समारन राम ।।१।। रहाउ ।। सत संतोख सील ब्रत पूजा,परसन तीरथ थान ।। जपु तपु संजम दया सुक्रित मति,नाम दान इस्नान ।।१।। वेद पाठ गुण गिआन धिआन जुत,बुद्धि विवेकहि धारन ।। अरचा देवन गो गरीब रख,हेतु धरन उपकारन ।।२।। सांत दांत सत गुण प्रतिपारन,सिम्रिति दरसन संगा ।। अस्ट दसान पुरान अखिआना,सांगोपांग खटंगा ।।३।। उपनिसदन गीता के गीतन,ओअम् सबद विधाना ।। श्रीचंद्र ए धरम प्रभू जू,थपिओ जीव कलिआना ।।४।।३६।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग श्री ।। प्रभु की लीला अपर अपार ।। निरधन करत छिनक महि धंनवत,धनवंतन खुआर ।।१।। रहाउ ।। ऊसर धरा शोरकी माही,उपजावत बहु धाना ।। अंन धन मेदनि जो उपजावति,खिन महि करत विराना ।।१।। जल उपजावनहारे पाहन,मारू थल सरसावै ।। ताल तमाल बिसाल साल तरु,बन महि मंगल गावै ।।२।। ठौर एक ही करत अनेकन,अनिकन ते इक नाहीं ।। रचनहार पक्के महिलन के,दिन काटत तरु छाहीं ।।३।। छत्र चमर थिति कनक सिंघासन, मांगत लहित न भीखा ।। श्रीचंद्र रथ नाग अरूढित,पांइ न पनही दीखा ।।४।।३७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग श्री ।। मेरा प्रभु सरब सिरोमणि राजा ।। दहिदिसि छत्र झूलतो जा को,प्रगट प्रताप विराजा ।।१।। रहाउ ।। देव दैत्त नर तीन भुअन के,सिर निहुराइ थिरे हैं ।। तेजस्वी प्रभावी सुभट गण,नैन न ऊच करे हैं ।।१।। वकता सुरसती पचिहारी,जुगह जुगंतर माही ।। बिघन विनाइक लिखि लिखि थाकिओ,कागद रही न स्याही ।।२।। कई कोटि धरि सस्त्र अस्त्र कटि,रावत पांत

बनाई ।। जोगी जती तपी मुनि पुंगव,बंदी जन गुन गाई ।।३।। हाहा हूहू तुंबरु नारद,रंभा सची घ्रिताची ।। मेनका उरवसी श्रीचंद्र रस,रंग रंगी व्रित माची ।।४।।३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। जरक जरक करि टूटी तणीआं ।। प्रीतम पेखत छतीया भरकी,दरकी उर की मणीआं ।।१।। रहाउ ।। अंगिया सूही उभर खरी है,अंग अंग सरसायो ।। माठी पटिआ सटिआ कारी,सटक रही सरपायो ।।१।। बिख को तिआग कुंडली छोटी,लटकी ह्वै म्रितु भाए ।। मदमत्त नैन निमेस तिआगी,सरसाने बिगसाए ।।२।। भ्रिकुटी कुटिल धनुस मनमथ तजि,बिसिख न पनच पसारै ।। हेतु निवास चपलता हीना,टांग टांग पर धारै ।।३।। रंग राग अंगराग रस,भाड़े भंग पधारा ।। बोल चाल श्रीचंद्र बिलाना,भेटिओ प्रीतम पिआरा ।।४।।३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। प्रभु जू,परदे पार मुकाए ।। संसै भरम अवरण अनेकां,पाटे नदी बहाए ।।१।। रहाउ ।। गुरु अविनासी भए क्रिपाला,धरि नंगी करवारा ।। दया मया करि मिहर अनुग्रह,पंच कोस

कहु टारा ॥१॥ पट विराज करि तट नहिं पावै,तटनी धारि बहाई ॥ परदे पाछे रूप अनेकां,पट चूकै इक राई ॥२॥ नाटक परदा पाटक पावै,जो नाहीं सो पेखै ॥ भटक भटक भ्रम भ्रम भरमावै,पै है कछू न लेखै ॥३॥ सत्गुरु पूरै परदे काटै,आपन आप लखाया ॥ श्रीचंद्र सद सद बलिहारै,परदा मेट गवाया ॥४॥४०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग श्री** ॥ संतहु अंतरजामी पूरे ॥ बांह पकड़ अपने करि लीने,रहिन न दीने दूरे ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख मेटे,राम राम रस आया ॥ रवि प्रगटे मिटिआ अंधिआरा, गिआन पदारथ पाया ॥१॥ दुरमति बिनसि बिनासी दुबिधा,चिंता सगल बिलानी ॥ हउमै पीड़ गई भ्रम भागा,जम भै पार परानी ॥२॥ अत्र पत्र धरि थिरे सिंघासन,अनंद मंगल निधि पाई ॥ आतम रस चाखिओ द्रिढ़ अनुभउ,पायो नित्त सखाई ॥३॥ बिसमय बिसम मिलै सुख पाया,वाजी अनहद बाणी ॥ श्रीचंद्र गोबिंद गुरु भेटिआ,पद पाया निरबाणी ॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || सत्गुरु मेटिआ सगला भार || नाम दान इस्नान द्रिढ़ायो,हउमै गरब निवार ||१|| रहाउ || रतन अमोलक हिरदै सागर,लाधो टुबकी मार || जनम पदारथ जीत अमोला, जाउँ न दरगह हार ||१|| गुण गोबिंद नाराइण नरहरि,माधव क्रिसन मुरार || जपि जपि सदा आनंद समाए,दूत दुस्ट भए छार ||२|| गिआन नेत्र महि चानण आयो,बिनसि गयो अंधकार || मोरचा मन लोस्ट कउ काटिओ,सैकल मसकल सार ||३|| सरब कलिआन सूख निधि पायो,जाचत सभ संसार || श्रीचंद्र रंग लाल चलूला,जाप जपत निरंकार ||४||४२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग श्री || साजन पकड़ी मोरी बांह || दूख भूख कछु रही न मन महि,सभ सुख नउनिधि दीनो तांह ||१|| रहाउ || जनम जनम की मैल गवाई,बिन प्रीतम बिनसानी चाह || ढूंढ ढूंढ फिरि फिरि बन थाकै,गुरु दिखलायो मन ही मांह ||१|| भयो प्रगास मिटिओ अंधिआरा,कमल विगासिओ ऊरध वाह || राम नाम गुण निसिदिन गाए,रहस्य समाए मोद उमाह ||२|| जहँ जहँ जाउँ तहाँ तहिं तूँ

ही,पाई न जावत कतहूँ थाह ।। किसही उझड़ि पावत प्रीतम,किसहूँ आप दिखालत राह ।।३।। कितही पंडित चतुर सिआना,कितही मनमुख भ्रम भटकाह ।। अंत नहीं किछु पारावारा,श्रीचंद्र द्रिस्टयो सभ माह ।।४।।४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। पारब्रहम सभ ही भरपूर ।। ऊच नीच सभ घटि घटि पटि पटि,चमकत जा को नूर ।।१।। रहाउ ।। जहँ चलि जाइऐ जहँ ते आइए,एको एक हजूर ।। ऊनी थाउं न दीसत काई,जहँ ते कहिऐ दूर ।।१।। पसु पंखी वण त्रिण खग म्रिगन,विआपक जीवन मूर ।। देव दैत्त नर नारि न्रिप रंकन, यख्यनि डाकिनि हूर ।।२।। परबत नद नदीआं वाह नारे,गिद्ध चील काक सूर ।। रिखिवर मुनिमनि पावन चारी,किलविख चकनाचूर ।।३।। कुटिल कुचील अपावन जूपी,नहीं धरम मनजूर ।। ब्रहम चंडाल एक रस श्रीचंद्र,रवि रहिआ सुखमूर ।।४।।४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। री सखीओ देहु संदेस ।। सावल सुंदर मनमोहन जू,गयो कौन से देस ।।१।। रहाउ ।।

प्रीतम पिआरा घर नही आयो,किहँ हितु सुधरों केस ।। चोआ चंदन पान फूल सेजा,कापड़ भूसन वेस ।।१।। मंदर सुंदर अंजन मंजन,खान पान रस एस ।। पहिर बसन मन अंतरि जल हौं,जनु अगनी परवेस ।।२।। बिरह सतायो तापन तपती,नहिं निरवारत भेस ।। काल करम को दोस देवती,आन न धर उपदेस ।।३।। कौन उपाव जतन है कौनहुँ,जिहँ बिधि मिटहि कलेस ।। मिलहि प्रिय जिउं श्रीचंद्र कहुँ,सोइ करहु निरदेस ।।४।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग श्री ।। बिछुरे प्रीतम जब ते माई ।। करन सींगार न भावत मो को,धूरी रही रमाई ।।१।। रहाउ ।। घरी घरी जुग जुग सम बीतति,दिन बिरधिओ अधिकाई ।। सभ सखिअन ग्रिह भाग सुहागै,मोरे ही अधमाई ।।१।। जब ते पिय परदेस सिधाए,आवन कह सहसाई ।। द्रब्य लोभ ते मैहुँ कहिओ जाहु,सिमरहु सुधि हमराई ।।२।। काग बनेरे बोलत उड़ है,औसी राह जनाई ।। मंदर चड़ि के पंथ निहारहुँ,नैन नीर बरसाई ।।३।। श्रीचंद्र कबि पियवर मिलहै,देहु संदेसो आई ।। मन तन धन अरपहुँ तिहँ आगै,जो प्रभु मेले साई ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। जब ते गए विदेस,खबर न आईआ जीउ ।। मन तन भयो बिहाल,बिछुड़े सांईआ जीउ ।। सांई बिछुड़े दूख घनेरा,सहिओ न जाए माई ।। ससू सहुरा देवर जेठ,ननदि न सांत कराई ।। सभना मन आनंद वधाहड़ा,मुहि उर अधिक कलेसा ।। श्रीचंद्र सहु दरस पिआसी,भावै नहि तन वेसा ।।१।। जिउं भावै तिउं आओ,मिल मेरे पिआरिआ जीउ ।। धन हित रहे परदेस,किउं मोहे विसारिआ जीउ ।। मोहि बिसारा दूख पसारा,सूख न साक संगाणे ।। बाझहु पिआरे भट्ठ करारे,घर दर मंदर ठाणे ।। देखि दिरानी संग जिठानी,रंग रलीआं रस माणा ।। हिरदै जल बल कोला होई, श्रीचंद्र पा पाणा ।।२।। नेड़े हो के प्रीतमा,सुणि बेनती मेरीआ जीउ ।। तुझ बिन पिआरे सजणा,मैं भई मिट्टी ढेरीआ जीउ ।। भसमै ढेरी काम न केरी,कामिनि पिरहि विहूणी ।। सखिआं माणहि रंग रलीआं पिखि,अगि उपजै उर दूणी ।। तन धन चाह गवाई सगरी,जे साहु मिलहि ता धीरां ।। श्रीचंद्र इक प्रीतम बाझहु,हरहि बिरह को पीरां ।।३।। पूरब होवहि भाग,तबही प्रभु कहु राविऐ जीउ ।। अंतरि सिउं लिव लागि,हरि हरि गाविऐ जीउ ।। हरि हरि गावी प्रेम सुभावी,भड़क मिटाई बाणी ।।

ताथइ ताथइ ताल दिवाए,नूपुर छणक छणाणी ।। चंग मुचंग म्रिदंग तंबूरन,तंती तंत वजाई ।। श्रीचंद्र मुख धुनी अलापी,मिलिऐ प्रीतम आई ।।४।।१।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। मो को नाही ठाउं,साहुरे पेईए जीउ ।। तुझ ही संग समाउ,वर रस लेहीए जीउ ।। वर रस लेही सहिज सनेही,अंग साक सभ छोरे ।। खान पान कापड़ सींगारा,सभ प्रीतम के धोरे ।। बाझ पिआरे दूख अपारे,सुख मंगल सभ साजा ।। एको ऐकी श्रीचंद्र नाह,महाराज सिरताजा ।।१।। अपर संग अंग साक,दूख घनेरिआ जीउ ।। अंतरि पीड़ निवारि,अवर न हेरिआ जीउ ।। अवरु न हेरा कोउ नेरा,जो आतम दुख बूझै ।। भरम भुलाए अनिक डुलाए,मड़ै मसाणन रूझै ।। मरम भेद सहु प्रीतम जानै, सहिज मिलावै आपा ।। सदा आनंद रंग श्रीचंद्र सिउं,जीवन हरि संतापा ।।२।। पिर परदेसी ता थिए,जा घर धन नहि पावीए जीउ ।। बन बेहड़ि सहु सागर,पार परावीए जीउ ।। पार परावी धंधे चावी,अंन धन चाह लुभाया ।। मुहि बौरी घर रहिबो भायो,पिर परदेस पराया ।। किए करम जबहि मुहि आपे,तबि काहे पछुताणा ।। श्रीचंद्र मन भोगै दुखड़ा,माया संग लपटाणा ।।३।।

मेटहि दुख नहिं कोइ,जे लख धावण धावए जीउ ।। पीर पैगंबर सेख,कूड़े डहकावए जीउ ।। कूड़ डहकावहि मंत्र सिखावहि,भूत मसाणी वासा ।। मरै न आए भरम भुलाए,उपजी अधिक निरासा ।। किरपा कीजै पति परसीजै,जे पूरब सिमरावै ।। श्रीचंद्र आपहुँ ही आवहि,अनंद मंगल धन रावै ।।४।।२।।४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। ग्राह्यो कछू न जाइ,तिआगिआ कछु न जावए जीउ ।। पंडित पांधे आइ,डहक डहकावए जीउ ।। डहक डहकावै भरम भुलावै,बन बैठे बटपारा ।। अज कहु कूकर कहिते सगरे,हेतू मांस अहारा ।। मूरति पाहन पूज बिठाई,भात सहित अरपाई ।। मोहन भोग भोग गे अवरो,श्रीचंद्र भरमाई ।।१।। भरम भुलाना जगत,पाठ वाचावए जीउ ।। आप न लेह हरि नाम,कस फल पावए जीउ ।। कस फल पावै जो न कमावै,भरम भुला संसारा ।। तिस ही त्रिपति अघाना सोऊ,जिस ही कीआ अहारा ।। भोजन अनिक परोसनहारे,त्रिपति न पाई राई ।। श्रीचंद्र सोइ करम बिरथे,जिहँ

करते अन भाई ॥२॥ बट तर पट कहु ताण,जो सुत्ता घूक जीउ ॥ पाथी साथी गए पुज्ज,उठ करता कूक जीउ ॥ कूक करता कैस पहुँचे,कूक न सकत पुजाई ॥ करम पग का डग पधारन,जीभ सकत अलाई ॥ स्त्रुत नेत्र घ्राण कर त्वक,अपन आपन करम रति ॥ श्रीचंद्र नहि अवर अवर को,करन केरी है शक्ति ॥३॥ सिमरन आपन आप करि,लहि है मोख दुआर जीउ ॥ अंतरजामी हरि प्रभु,करता पुरुख सम्हार जीउ ॥ करता पुरुख समार प्राणी,दरगह मिलहि वडाई ॥ पति सिउं जावहि महिलीं पावहि, दूख न विआपै काई ॥ सदा सुख कलिआन आनंद,मंगल खेम सबाए ॥ सिमरि आपन आप करता, श्रीचंद्र गति पाए ॥४॥३॥४६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **श्री राग छन्द** ॥ गोबिंद राम मुरारि,नाराइण गावीए जीउ ॥ इक मन ह्वै करतार,चित वसावीए जीउ ॥ चित वसाए करता राए,दूख भूख नहिं विआपै ॥ ग्रंथी अंतहकरण बिदारे,आतमराम सिञापै ॥ साचे दरबारे आनंद सारे,चौदह भुअन वडाई ॥ श्रीचंद्र हरि महिली थाना,करता पुरुख

धिआई ॥१॥ मनमुख कूड़े लगि,कूड़ कमाइआ जीउ ॥ अंतरि त्रिसना अगि,महिल न पाइआ जीउ ॥ महिल न पाइआ कूड़ कमाइआ,बहु जोनी भरमाईए ॥ मिथिआ छाइआ भूतन माइआ, आपन आप वञाईए ॥ गगन मंडल को अंत न पाइआ,अंत मरे पछुताए ॥ करम कमाणे भी पछुताणे,श्रीचंद्र दुख पाए ॥२॥ म्रिगत्रिसना के नीर,त्रिसना नासई जीउ ॥ हरि चंदौरी माहि,चहहि निवासई जीउ ॥ चहहि निवासा बादर छाइआ,भरम भुला संसारा ॥ धरणी बिना सुवरनी मंदर, मिथिआ मनोविकारा ॥ अध्येय आधार समग्री हीना,आधारित कस लहिऐ ॥ झूठी कथनी नाहि सिआनी,श्रीचंद्र भ्रम बहिऐ ॥३॥ जिन को साधू संग,तिनी प्रभु जाणिआ जीउ ॥ राम नाम जपु नित्त, हरि रंग माणिआ जीउ ॥ हरि रंग माणा सहिज समाणा,भरम भयानक भागा ॥ दुरमति दुबिधा हउमै खोई,हरि कीरति मन जागा ॥ सुमति निवासी दुरति बिनासी,पायो महिल अपारा ॥ पंचे सबद अनाहद वाजे,श्रीचंद्र दरबारा ॥४॥४॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ श्री राग छन्द ॥ मति गति तिनही पाई,जिन हरि धिआइआ जीउ ॥ आतम राम सखाई,नदरी

आइआ जीउ ।। नदरी आइआ ब्रहम सबाइआ,बीजो आन न कोई ।। खंड ब्रहमंडे एक विराजिआ,
जल थल महिअल सोई ।। द्रिस्टिमान ते द्रिस्टि विलासी,मिथिआ द्रिस्टि आवै ।। सुपन पदारथ
संचन कीने,श्रीचंद्र किआ पावै ।।१।। पारब्रहम करतार,आप लुकाइआ जीउ ।। परदा गरभ पसार,
जीव बनाइआ जीउ ।। जीव बनाया करम लगाइआ,भोगन हेतु पसारा ।। उदर भरंता अघ
चितवंता,बाधा पास अहारा ।। मन मूरख गुरु गिआन विहूना,जनम मरन मध्य भूला ।। धन जाते
झूरत इह श्रीचंद्र,आते झूलत झूला ।।२।। दहदिसि बिखिआ काज,धरम गवाइआ जीउ ।। कूड़ कुसत्त
कमाइ,द्रब्य वधाइआ जीउ ।। द्रब्य वधाइआ बिखिआ माइआ,मित्रन संग विद्रोहा ।। आपन
जाले आप बंधाइआ,निसिदिन जम गण जोहा ।। जो जो कूड़े करम कमाणे,चित्रगुप्त लिख राखै ।। अंत
काल श्रीचंद्र लखाए,दै दै सभ बिधि साखै ।।३।। मुकरिओ जाइ न मूल,धरम दुआरिआ जीउ ।।
बहुबिधि सहिओ सूल,दुखित पुकारिआ जीउ ।। दुखित पुकारा हाहाकारा,सुणत न कोई साथी ।। तपत
थंभ गल लाइ तपावै,पाव लताड़े हाथी ।। सरप अठूहे दंदिए भूँडा,डंग मार मार पोहिआ ।। श्रीचंद्र
निज करम कमाणे,कीजै का सिउं रोहिआ ।।४।।५।।५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। मत माता सुभ जाया,पितु संतोख प्रधान जीउ ।। बालक जनम भया,भैण भाई गुण भान जीउ ।। भैण भाई गुण हरख बेअंता,वाजे सबद वजाए ।। पुरजन गुरुजन सुरजन सरसे,देवण लागि वधाए ।। रलमिलि सखीआं मंगल गाए,तोरन बंदनवार सजा ।। श्रीचंद्र का जनम सुहाइआ, भव आइआ हरि नाम भजा ।।१।। दुतिआ तरुण भया,वेद पढ़ाइआ जीउ ।। सिम्रिति सरब पुरान, सासत्र गाहिआ जीउ ।। सासत्र गाहे पाए राहे,अविनासी गुरु पूरे ।। मुसहफा लाइ हदीस द्रिढ़ाई, गुण वासे सुख मूरे ।। सबर संतोख नाम धन पल्लै,गंढ बंध अनदाइआ ।। पूरण भए भंडार श्रीचंद्र, सज्जन संत सहाइआ ।।२।। ढली जुआनी करम कमाणे,आवण लागै याद जीउ ।। साधु संग सफलायो जीवन,नाराइण लगि पाद जीउ ।। पद नाराइण लाग सफले,रही न चिंता काई ।। करणेहारे परगट कीने,घटि घटि सुरति समाई ।। जीवन सफल गोबिंद धिआइआ,तरुण न लागा दागा ।। भव आइआ श्रीचंद्र सुहाइआ,पूरब उत्तम भागा ।।३।। बिरध सरीर भइआ,चल्लण भाइआ जीउ ।। कालहि रचना कीन,काल खपाइआ जीउ ।। काल खपाइआ लीन मिलाइआ,पंचै तत्त विजोगा ।।

पौण पाणी अगि गए सिधाई,भोग भुगाए भोगा ।। धरमराइ की काण निवारी,अचल अमर पद पाया ।। ब्रहम ब्रहम श्रीचंद्र समाणा,कौतुक काल रचाइआ ।।४।।६।।५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। पूरब करम संजोग,गरभ वसाइआ जीउ ।। दसी मासी ह्वै पूर,धर महि आइआ जीउ ।। धर महि आइआ,जागी पूरब लागा ।। संचित पर अन संचन कीने,बीज अंकुरै जागा ।। बोलण बोल मात पित भाने,परिवारहि अति हरषा ।। श्रीचंद्र भव आइ विराजिओ,पूरब करम अकरषा ।।१।। दूजै लागि परा,मात पिता सुख पाया जीउ ।। लाड लडाइ धरा,सुंदर बसन पहिराइआ जीउ ।। बसन पहिराए लाड लडाए,भोजन भोग भुगाए ।। आनंद मंगल चाउ घनेरे,सखे सखी हरखाए ।। जड़ कुल लाई सिरजनहारे,कुलजन हरि गुण गाए ।। दूजै लागि सरब उतसाही, श्रीचंद्र सरसाए ।।२।। जोबन तीजा आइआ,मनमथ अगनि तपाया जीउ ।। मात पिता उर सोच, सुंदरि साक सजाइआ जीउ ।। साक सजाइ विवाह रचाइआ,गल संगल बंधवाए ।। रस वसि होइ न

आप पछाणे,धन खाटण हित धाए ।। धीआं पूत संजोगी होए,तरुणी तरल भुगाइआ ।। देस विदेस झागसि श्रीचंद्र,सरवस सभ अपनाइआ ।।३।। चौथे बिरध भइआ,पूतन वसि तन होइआ जीउ ।। कफ दुख रोग गहिआ,करक करेजे जोइआ जीउ ।। करक उपजी सरक सरकन,खहुँ खहुँ मुखहुँ वखाणै ।। द्रब्य उपाइआ भया पराया,तरसत पाणी दाणै ।। अवधि गवाई चलन रजाई,भसम भया तन ढेरी ।। करमी आया करम सिधाइआ,श्रीचंद्र पा फेरी ।।४।।७।।५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। रे मन! गहिले बावले,साधू संगति लाग जीउ ।। काम क्रोध मोह परिहरे,हरि सिमरति रहि जाग जीउ ।। जाग सिमरति लाग संतह,भाग उज्वल होवई ।। जे न पूरब होहि लिखिआ, साधु संगि लिखोवई ।। तजि चिंत सगली भजहु हरि हरि,प्रारब्ध नित अंगी ।। प्रतिपाल प्रभु श्रीचंद्र उर धर,होहु संतन संगी ।।१।। रे मन मूरख लोभीआ,तन धन साथ न होई जीउ ।। झूठ पसारा जगत का,संगी नाही कोई जीउ ।। नाहि संगी नाम बाझहुँ,अंत काल दुख जाला ।। रचि रचि बनिता सुत

सनबंधी,कूड़ा बंधन डाला ।। लाख करोड़ी खिन महि छूटहि,कौड़ी काम न आए ।। श्रीचंद्र तजि कूड़ पसारा,हरि चरणी चित लाए ।।२।। रे मन काले कामीआ,कामिनि बल हिर आणिआ जीउ ।। खाधा पीता जो कछु तेरा,बिरथा गया गवाणिआ जीउ ।। बिरथा खाधा पीता होया,जोक फोक करि डारा ।। बरसा पानी छतों लत्था,बहिओ पंथ परनारा ।। ऊख पीड़ पंखी तजि दीनी,सुआन हाड़ रस मूठा ।। कांति हिरानी श्रीचंद्र जबि,अजहुँ न तिआगत जूठा ।।३।। रे मन क्रोध विआपिआ,सुधि बुधि गवाई जीउ ।। खिन मै मित्र भुलाइ कै,सत्रु लखाई जीउ ।। सत्रु लखाई कीनी धाई,नंगी कर करवारा ।। घात लखाई दाउ चलाई,सिर धर दिए उतारा ।। खान पान जिनि संग इकट्ठा,पहिरण भोगण भोगा ।। दुंदभि खोख श्रीचंद्र कोप किय,खिन महि भयो विजोगा ।।४।।८।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। मनमुख दूतन संग,जनम गवाइआ जीउ ।। बधिक नाद वजाइ,कुरंग फसाइआ जीउ ।। कुरंग फसाइआ नाद वजाइआ,जीवन मार मुकाइआ ।। सबदै भूला झूलन झूला,अंत

रहिआ पछुताइआ ॥ जाल पसारा पंडित लोभी,मुख रंग राग अलापा ॥ श्रीचंद्र गुरु साधु न जानिओ, मनमुख सबदै खापा ॥१॥ रस वसि जिंद गवाइ,मच्छ विकाई जीउ ॥ कटि कटि खंड अनेक,तेल तपाई जीउ ॥ तेल तपाई नमक लगाई,भोगत भोगी धाए ॥ उदर पचाई नाम न काई,लेवत रूप गवाए ॥ लोहा खाया लूहा पाइआ,रस मनसिज उपजाया ॥ मीने रस वसि जीवन खोया,श्रीचंद्र नहिं पाया ॥२॥ पुहप सुगंध गिधा,भवरा आइआ जीउ ॥ कमलहि मध्य बिधा,स्वास पराइआ जीउ ॥ स्वास पराया फोकी काया,सूरज उदै लखाया ॥ पंकज खिड़िआ खटपद गिरिआ,पाणी किरण तपाया ॥ उबटे जल पेखै संसारी,दुख बिखिआ रस होई ॥ श्रीचंद्र मनमुख मुगधै नर,समझि न आवै कोई ॥३॥ दीपक जलत भया,नहिं पतंग रहाइआ जीउ ॥ छाली उतर पया,पग धर न टिकाइआ जीउ ॥ पग न टिकाया उछला धाया,अगनि सिखा झुलसाई ॥ धरनि पड़े उठि उठि उठि धावै, बहुरि बहुरि दुख पाई ॥ प्रीत इकंगी भ्रिंग मराइआ,कीटन किआ आहारा ॥ श्रीचंद्र मन मुगधो प्राणी,रूपहि जनमहि हारा ॥४॥ कागद हथिनी पेख गज,दौड़ पराइआ जीउ ॥ थाउं कुथाउं न जाणीआ,गर गरत धसाइआ जीउ ॥ गरत धसाइआ बहु पछुताया,भूख त्रिखा संतापै ॥ सिर अंकुस

सहिआ दुखितो छहिआ,भार लदाया आपै ।। गई अजादी जंगल वादी,पग संगल लपटाए ।। कंदरप दरप बिनसानो श्रीचंद्र,कामिनी काम फसाए ।।५।।६।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। मन मेरिआ मनमुख सेती संग करि,अंतु होइ संतापा जीउ ।। मन मेरिआ पापी पाप कमावणै,फल भोगहि पापा जीउ ।। फल भोगै पापा दुख संतापा,चिंता फाही फाथा ।। सूए चुंच फसाई सिंमल,छूटसि नाहिन हाथा ।। जनम गवाया अति पछुताया,मरण भया तिस नाले ।। श्रीचंद्र मन मूरख अंधे,किओं नहिं राम सम्हाले ।।१।। मन मेरिआ हरि प्रभु माया डार कै,भव महि भरमाया जीउ ।। मन मेरिआ विस्टा पसरी पेख कै,काकहि बिगसाया जीउ ।। बिगस काक विस्टा लपटाया, दुरगंधहि नित खाई ।। हंस वंस नहि संगति कीनी,किमि मुकता फल पाई ।। मच्छी नो बक तार लगाई,तीरथ किआ निवासा ।। श्रीचंद्र मनमुख बिन संगति,माया फाही फासा ।।२।। मन मेरिआ हरि हरि जाप जपे बिना,सुख लहे न कोई जीउ ।। मन मेरिआ साधू संगति के बिना,नहि दरगह

ढोई जीउ ।। दरगह नहि ढोई जनम विगोई,आसा त्रिसना खाई ।। अनहोनी होनी उर जानी,पाटै कवनहुँ आई ।। आपन करमी आपहि बांधा,आपहि भोगहि भोगा ।। श्रीचंद्र हरि जप संग साधू, बिनसहि सभो सोगा ।।३।। मन मेरिआ साधां संगति पउड़िआ,हरि मंदर ऊचा जीउ ।। मन मेरिआ बिन पग धारे आपणा,नहि जाइ पहुचा जीउ ।। नहि जाइ पहुचा मंदर ऊचा,जोजन कोटि असंखा ।। देवी देव रहे झख मारत,नभ पाताल अलंखा ।। ऊच अपार अगंम अगोचर,रंग रूप नहि कोई ।। हरि मंदर श्रीचंद्र निवासै,साधां संगति होई ।।४।।१०।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। मन मेरिआ हरि प्रभु खोज खोजाया,लखि गगन पाताला जीउ ।। मन मेरिआ थकि थकि कै सभ ढहि परै,नहि लहिओ गुपाला जीउ ।। नहि लहिओ गुपाला सद प्रतिपाला,सुखसाला दुख चूरा ।। दुस्टन घाला प्रीतम आला,सखा सहाई सूरा ।। क्रिपाल दयाला गल बनमाला,गुण निधि अंतरजामी ।। अंग संग श्रीचंद्र लखायो,साध संगि प्रभु सुआमी ।।१।। मन मेरिआ दुंह बेड़ी चढ़वार,

धारि डुबाईए जीउ ।। मन मेरिआ माया ब्रहम अकार,एक न धिआईए जीउ ।। एक न धिआईए दुबिधा जाइए,नरकी लहे सजाई ।। भरम भुलाईए ठौर न पाईए,इत उत ठोकर खाई ।। एको एक चेत थित महिली,आतम रंग चलूला ।। श्रीचंद्र मारग हरि एकहु,दूजी तिआगहु सूला ।।२।। मन मेरिआ मनमुख सेती संग करि,दुख लहरि घनेरा जीउ ।। मन मेरिआ अउगुण मन भरपूर सिउं,चूकै नहि फेरा जीउ ।। नहिं चूकै फेरा अउगुण घेरा,काम क्रोध लपटाया ।। मोह विआपै लखै न आपै,मुहै अहं रस माया ।। अंधकार सुख कबहुँ न होई,पग पग ठोकर कंडे ।। श्रीचंद्र सुख गिआन प्रगासै,हरि गुण भीतरि ठंडे ।।३।। मन मेरिआ जीवन पद निरबाण,एक धिआईए जीउ ।। मन मेरिआ चूकै आवण जाण,सहिज समाईए जीउ ।। सहिज समाईए हरिगुण गाईए,अंतरि सांत सुखाले ।। कूड़ कपट छल द्रोह बिनासै,टूटे माया जाले ।। साध संगि भ्रम मोह निवारै,ब्रहम रूप निज पाया ।। श्रीचंद्र आतम रस रसना,हउमै मोह तजाया ।।४।।११।।५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। हे मन मित्र पिआरिआ,हरि हरि नाम सम्हाल जीउ ।। सदा सुख हरि मन बसै,

नदरी नदरि निहाल जीउ ।। नदरी नदरि निहालसि प्राणी,अनहद वाजै वाजा ।। जोती जोति प्रगासी अनुभउ,सरबै लोक विराजा ।। खुली गंठि रतन प्रगासिआ,आनंद सुरति समाणी ।। गोबिंद नाम श्रीचंद्र जपत जन,पाया पद निरबाणी ।।१।। हे मन मित्र पिआरिआ,माया भुख न जाए जीउ ।। अरब खरब लख कोटीआ,राजा नहि त्रिपताए जीउ ।। नहिं त्रिपताए धरनि धराए,अनतै चाहत पाई ।। सुत बनिता भाई परिहरना,माया की वडिआई ।। आयू अलपहि त्रिसना अधिकी,काम न कोई सरतो ।। श्रीचंद्र अनमेले मेला,मनमुख खपि खपि मरतो ।।२।। हे मन मित्र पिआरिआ,दुख विकार घनेरे जीउ ।। रोगन घाण बणे,जावत नहीं निबेरे जीउ ।। जावत नहीं निबेरे रोग घणेरे,इक उपजै इक जावै ।। बुद्धि गवाई बल निपटावै,हाथ नहीं कछु आवै ।। बैठा हार जुआरी जूआ,भर हौके पछुताणा ।। धुणि धुणि सीस धरनि खुदरावै,श्रीचंद्र रित पाणा ।।३।। हे मन मित्र पिआरिआ,लाहा संतन संगे जीउ ।। दीन दयाल क्रिपाल प्रभु,राम नाम रंग रंगे जीउ ।। राम रंग रंगे संतन संगे,राम राम रस आई ।। हउमै दुबिधा दुरत बिनासे,अंतरि सांत समाई ।। गगन मंडल इक जोती प्रगटै, चानण चल्लण पावै ।। श्रीचंद्र हरि रस रंग राता,सहिज समाधि समावै ।।४।।१२।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। वणजारे मन पिआरिआ,माया कूड़ पसारा जीउ ।। काम क्रोध बिख परसिऐ,मोह लोभ अहंकारा जीउ ।। लोभ अहंकारा कूड़ पसारा,चल्लण चित्त न होई ।। अवरन मारै आप न बूझै, वरतैगी अणहोई ।। नारी रूप पेखि रिद जलता,उभरत होइ अफारा ।। श्रीचंद्र बिन साधू संगति, अगनि विकारी जारा ।।१।। वणजारे मन पिआरिआ,काठ अगनि न त्रपतै जीउ ।। जिउं जिउं भोगन भोगिऐ,तिउं तिउं अधिकै खपतै जीउ ।। अधिकै खपतै नाहिन त्रपतै,सिर बद्धै अघ भारा ।। आमिख मद रति भोगन भोगै,रस रंगी गण नारा ।। खाइ रसाइण आप गवाइण,भज सोइ उमर गवाई ।। श्रीचंद्र मनसिज की अगनी,भसम करी मनुसाई ।।२।। वणजारे मन पिआरिआ,चादर चिट्टी दागी जीउ ।। काले केसीं चिट्टी होयो,हंसां सेती कागी जीउ ।। हंसां कागी लागी लागी,तजि मोती गूंह खाए ।। भवरा गंध फूल की राता,भूँड गोली मल चाए ।। सूकर विस्टा खाइ न त्रिपतै,निसिदिन रंग विकारा ।। श्रीचंद्र अनरस रस राता,सगरी निसि अंधिआरा ।।३।। वणजारे मन पिआरिआ,कूच नगारा वज्जा जीउ ।। संग न कोई चलिआ,वेखहि खब्बा सज्जा जीउ ।। खब्बा सज्जा वेखहि प्राणी,हाथी घोड़े छुट्टे

।। मंदर महिल सरावां बिसरी,बहिलां बैली जुत्ते ।। धरमराइ दर लेखा देणा,कीता अपणा पाइआ ।। श्रीचंद्र बिन संतां संगति,मरि मरि पछोताइआ ।।४।।१३।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। वणजारे मन पिआरिआ,लंमे पंध पयाणा जीउ ।। कोसन अंतु न आवई,जोजन कवन कहाणा जीउ ।। जोजन कवन कहाणा नहीं टिकाणा,मारग भीड़े धाई ।। तत्ती रेत तुरन पग नंगे, कूकण कूक दुहाई ।। सिर जंदार परी पद बेड़ी,गल संगल पा तोरा ।। श्रीचंद्र जुत्ती पर जुत्ती,मारहि तरस न भोरा ।।१।। वणजारे मन पिआरिआ,सिर पर लेखा बाकी जीउ ।। रसना बोल न आवई, बिट बिट रहिआ झाकी जीउ ।। बिट बिट झाकी फड़िआ आकी,लेखा बाकी लीजै ।। रौरव कुंभी नरक पवाइआ,किआ होवत अब खीजै ।। खेत चुगाइआ चिड़ीआं सूते,अंन कहां ते खाणा ।। श्रीचंद्र बेला जउ बीता,तउ किआ करम कमाणा ।।२।। वणजारे मन पिआरिआ,जुगन जुग गवाए जीउ ।। मल

मूत्र सर डुबकिआं,निसिदिन रहिआ खाए जीउ ।। गोते खावै मौत न आवै,बहुरि बहुरि पछतावै ।। पुंन दान नहि संतन सेवा,करम धरम के हावै ।। गोबिंद नाम न सिमरन कीना,चौरासी धक दीना ।। श्रीचंद्र तउ किआ कछु करि है,उदर भरन हितु कीना ।।३।। वणजारे मन पिआरिआ,अनिक जोनि भ्रम आया जीउ ।। लख चौरासी गेड़ पया,चक्र घनेरा खाया जीउ ।। चक्र खाया बहु दुख पाया,नर तन मिलिया सुभाए ।। नाराइण प्रभु किरपा कीनी,मत कतहूँ हरि गाए ।। गुण गोबिंद गिआन हरि केरा, मानुख जोनी पाइए ।। श्रीचंद्र अवसर हथि आया,संता संग समाइए ।।४।।१४।।६०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। वणजारे मन पिआरिआ,काल खड़ा सिर तेरे जीउ ।। अहनिसि गिण गिण देख है,स्वास नितानित हेरे जीउ ।। स्वासा हेरे गिण गिण दिण दिण,कब पूरण हो जावै ।। लुकमा एक करहुँ इस जिअ का,कछुक तो भूख मिटावै ।। केस गहे हर साइत ठाढा,अगिआनी भोलाया ।। हरि हरि नाम सम्हाल श्रीचंद्र,दिन नेड़े जणु आया ।।१।। वणजारे मन पिआरिआ,स्वास न बिरथा खोइ जीउ ।। गुण गोबिंद सम्हाल रिद,जो कछु होइ सो होइ जीउ ।। जो कछु होइ सो होइ है प्राणी,मेट न सकै कोई ।। इल्ल

मुरदा खावण आई,छिछकारे कबि लोई ।। मानुख कीता जे किछु होवै,तौ सभि ही करि लै है ।। करते अपने ही कर राखा,श्रीचंद्र गुण गै है ।।२।। वणजारे मन पिआरिआ,नाराइण उर धार जीउ ।। सागर गहिरे लहिर महि,बेड़े छेक हजार जीउ ।। छेक हजारां बेड़े छूटै,किउं करि थम्मण पावै ।। जिउं जिउं पाणी बहिर निकासै,तिउं तिउं वधदो जावै ।। आखर डूबण सागर माही,द्रिढ़ निसचय उर धारो ।। श्रीचंद्र रिद भजि भगवानहि,शायद होइ उधारो ।।३।। वणजारे मन पिआरिआ,प्रभु बिन ओट न काई जीउ ।। पुत्र कलत्र साक सनबंधी,ह्वै है नाहि सहाई जीउ ।। नाहि सहाई अवधी आई, जेतक जगत पसारा ।। कूड़ा सउदा कूड़ विहाजा,कूड़ो कीन वपारा ।। सत्त मरण सिउं जीवन कूड़ो,मेल न लहि है कोई ।। श्रीचंद्र सिमरै नाराइण,उबर साक है सोई ।।४।।१५।।६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। वणजारे मन पिआरिआ,समझ सोच उर माहीं जीउ ।। गोबिंद भजन बिसारिआ, फिरि फिरि रोवहि धाहीं जीउ ।। रोवहि धाहीं ऊँची बाहीं,होहि न कोई नालै ।। इत उत ताक निरासा लहि है,चलहि न कछुहू चालै ।। पुंन दान सभ हिर लै जावहि,जिनि संग आगै जाणा ।। नाराइण को

सिमरण श्रीचंद्र,अंतहि साथ निभाणा ।।१।। वणजारे मन पिआरिआ,मतलब के सभि यारा जीउ ।। विपदा जब ही आइहै,सभ ही करत किनारा जीउ ।। करत किनारा सभ परिवारा,भैण भाई सुत दारा ।। द्रब्य निहारा कीनी रारा,हिस्सा लैणा सारा ।। धन भागै हित साड़हि फूकहि,फूल डार हरिदुआरा ।। जुड़ बैठहि श्रीचंद्र आइ कै,दसि तेरसि सत्तारा ।।२।। वणजारे मन पिआरिआ, आपहि आप फसाइआ जीउ ।। ना को संगै जनमिआ,ना को संग सिधाइआ जीउ ।। नाहि सिधाइआ नाहि कमाया,हिस्सेदार अनेकां ।। धरणि धरा धन खोद निकालां,गिण बाटै पण एकां ।। हीरे मोती सोना रुप्पा,बासन वसन मकाना ।। बांटै गए छिनेक श्रीचंद्र,मंदर खेत दुकाना ।।३।। वणजारे मन पिआरिआ,नाकस अकल न जानै जीउ ।। मुलंमा कंचन इक रंग,ताइ सराफ पछानै जीउ ।। ताइ पछानै आपद आनै,दुरजन सुरजन ताई ।। दुरजन भागै सुरजन ठहिरै,बिपदा परति जु आई ।। दुरजन हिस्सा मांगत धन का,सुरजन धन दिय भावै ।। बेकारी जम भागी श्रीचंद्र,हरि हरि नाम सुखावै ।।४।।१६।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| **श्री राग छन्द** || वणजारे मन पिआरिआ,गोबिंद आस तरावै जीउ || नौनिधि पूरण मन भरे,ऊणा नहिन रहावै जीउ || नहि ऊण रहावै पूरन पावै,पूरन काम धिआवै || रिद्धि सिद्धि नौनिद्धि सहिज घर,पूरन पुरुखहि पावै || आसा त्रिसना पूरन होवहि,एकहि आस पराइण || श्रीचंद्र अन आस निरासा,पूरन आस नराइण ||१|| वणजारे मन पिआरिआ,कल्प तरोवर नाम जीउ || कामधेनु चिंतामणी,राम नाम पुर धाम जीउ || पूरण धामहि भरे भंडारे,टोट कदै न आवै || खावहि खरचहि सभ जग परिचहि,अरचहि गोबिंद नावै || वधदो जाई टोट न आई,हरि गुण सदा अपारा || बुद्धि मेदनी छपिआ श्रीचंद्र,अगणत सबद भंडारा ||२|| वणजारे मन पिआरिआ,वणजहु हरि हरि नामा जीउ || खेप सव्वली लाद कै,लाहा लेहु ग्रामा जीउ || लाहा लेहु ग्रामा गोबिंद नामा,दरगह होहि सुहेला || भेटे सिउं जावहु महिली पावहु,पुरुख पुरातन मेला || जरा मरण दुख निकटि न आवहि,संकट विकट न होई || जीवन मुकतहि श्रीचंद्र सुख,निज उर भीतरि जोई ||३|| वणजारे मन पिआरिआ,अम्रित नाम पिआरा जीउ || सत्त वाक्य संतन कहिआ,रस अनुभउ निस्तारा जीउ ||

अनुभउ निस्तारा जगत अंधारा,मै ममता सभ खोई ।। आए हरख न जाए सोगा,हरि भावै सो होई ।। मद पिए ते सुधि बुधि बिसरी,एको एकंकारा ।। श्रीचंद्र अम्रित उर पाया,संसै भरम बिदारा ।।४।।१७।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। श्री राग छन्द ।। वणजारे मन पिआरिआ,जिउं आणा तिउं जाणा जीउ ।। ना कछु संग लिआइआ, ना कछु संग लिजाणा जीउ ।। संग लिजाणा नाही कछू ऐ,झूठा द्रिस्टि तमासा ।। हसि हसि रो रो काल बितावन,जनम मरन महि वासा ।। मुट्ठी महि आकास न ऐहै,लाख जतन करि हारै ।। करते खेल रचाया श्रीचंद्र,जानत नाहि गवारै ।।१।। वणजारे मन पिआरिआ,नांगा आया गइआ जीउ ।। तन धन धरनी कुटंब सभ,एथे ही का भइआ जीउ ।। मात पिता सुत बनिता संगी,साथी अग्रज नाहीं ।। झूठी माया काहि बँधाया,करि करि लंमी बाही ।। कूड़े धंधे कूड़ कमाणा,कूड़ कमावणहारे ।। श्रीचंद्र इस जग महि आए,चल्लण के वणजारे ।।२।। वणजारे मन पिआरिआ,जोबन बाद गवाइआ जीउ ।। तन पवणै ठहिराइआ,पवन निकसि उठि धाइआ जीउ ।। पवण निकसि तन ढेरी थीआ,नैन न देख

सकाही ।। स्रवनन सुनना हत्थी करना,पैरीं चलण नाहीं ।। नासा सूंघण भोगन इंद्री,शक्ति गई संग दौड़ी ।। सुञी देह श्रीचंद्र रही इत,मूल न फूटी कौड़ी ।।३।। वणजारे मन पिआरिआ,करि उर महि बिस्वासा जीउ ।। पवन न बांधिओ जाइगो,निकसहि आखर स्वासा जीउ ।। आखर स्वासा निकसहि बौरे, मानुख जनम न फेरा ।। किआ जानहि कित जोनिन आयो,कवन माहि जा गेरा ।। जे हिसाब जम चुक्ता करना,साध संग करि वासा ।। राम गुबिंद श्रीचंद्र भजन ते,मुकति पदारथ पासा ।।४।।१८।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। श्री राग छन्द ।। रे मन गहिले बावले,हरि हरि नाम अराधे जीउ ।। भव सागर तरना अति बिखड़ा,बोहिथ पाइ अगाधे जीउ ।। पाइ बोहिथ अगाध सागर,अगम अगोचर नामा ।। रस विकारहि चिंत लहिरी,पार जाइ अगामा ।। डूबतो मन उबर साकहि,साध संगति धिआइऐ ।। गुरु प्रसादी भै न विआपहि,श्रीचंद्र प्रभु गाइऐ ।।१।। रे मन गहिले बावले,नाम सुधा रस पीउ जीउ ।। अमर पदवी पाइऐ,मन तन अंतरि खीउ जीउ ।। मन तन खीवा नाम पीवा,अंतरि भगति भंडारा ।। प्रेम पदारथ करत क्रितारथ,लहित पदारथ चारा ।। अम्रित पीआ चानण थीआ,गगनंतर सुख

थाना ॥ प्रगटी जोति सबद धुनि लागी,श्रीचंद्र भगवाना ॥२॥ रे मन गहिले बावले,अजहूँ वेला हईए जीउ ॥ मन तन धन सभ अरप कै,साध संगि निरबहीए जीउ ॥ संग निबहिऐ साधू केरा, उपजै नहीं विकारा ॥ आसा त्रिसना सगल बिनासे,हउमै दुबिधा भारा ॥ दुरमति दुरत कुकरम सभरमा,भय क्रोह छोह निवारै ॥ नाम धिआए श्रीचंद्र रामहि,भवसागर भए पारै ॥३॥ रे मन गहिले बावले,माणक नाम अमोला जीउ ॥ जिस मन पल्ले पाया,सोई पुरुख अडोला जीउ ॥ पुरुख अडोला नाम सम्हाले,तोसा दरगह केरा ॥ पैधा जावै सुख फल पावै,धरमराज ह्वै चेरा ॥ सदा अनंद सहिज घर वासा,सद मंगल कलिआना ॥ परमानंद श्रीचंद्र पाया,सिमरि सिमरि भगवाना ॥४॥१६॥६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **श्री राग छन्द** ॥ रे मन गहिले बावले,सत्त नाम चित लाए जीउ ॥ कूड़ा लालच छाडि कै,गोबिंद गुणनिधि गाए जीउ ॥ गोबिंद गाए साच धिआए,जनम मरण दुख भागे ॥ आंच न साच रिदै धर भाए,कूड़े दाझहि आगे ॥ मुख काले निंदक कूड़िआरी,जम दर खावहि मारा ॥ श्रीचंद्र गुरुमुख सच

हिरदै, दरगह जै जैकारा ।।१।। रे मन गहिले बावले,गुरुमुख सच्च पसारा जीउ ।। सच्चो सच्च विहाजीए, सच्चै का वापारा जीउ ।। सच्च वपारा पार उतारा,भव सागर के पोता ।। सच्च चढ़ाए सच्च लंघाए,कदे न खावहि गोता ।। सच्चे सच्च वणजारे आए,सच्चो भार लदाए ।। श्रीचंद्र सच्चे दरबारे,सच्चे सोभा पाए ।।२।। रे मन गहिले बावले,सच्चा सत्गुरु सेवीऐ जीउ ।। सच्चा हरि उपदेस लै,सच्चा हिरदै भेवीऐ जीउ ।। सच्चै भेवे चानण होवै,अंधकार उड जावै ।। सच्चै थानहि सच्चा वासै,सच्चा ही लख पावै ।। सच्चै जपु तपु पूजा सफली,सच्चै अगनी होमा ।। श्रीचंद्र हरि सच्च निवासै,कूड़ नसै तम तोमा ।।३।। रे मन गहिले बावले,सच्चे साधु न तोटा जीउ ।। सच्च सराफहि परखिआ,कोइ न कहि है खोटा जीउ ।। कोइ न खोटा आख साकहि,गुरु सराफ सच्च लाखा ।। देव दैत्त त्रैलोक वासी,त्रईदेव देंह साखा ।। सच्च जेवड़ी सच्चे पाई,सच्चा बंन लिआंदा ।। श्रीचंद्र सच्चे परसादा,सच्चे पाया छांदा ।।४।।२०।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। श्री राग छन्द ।। रे मन गहिले बावले,सच्चा संत तराए जीउ ।। कपटी लोभी कूड़िआर,सगलो संग

डुबाए जीउ ।। संग डुबाए भव सागर महि,कूड़ी माया हेता ।। कूड़ो धन कूड़े वापारी,कूड़े बांधे केता ।। कूड़े मंदर कूड़ पुजारी,कूड़े सुत वित चाही ।। श्रीचंद्र कूड़े कागद पर,कूड़ी लेखणि स्याही ।।१।। रे मन गहिले बावले,सच्च वस्तु विसाहो जीउ ।। सच्ची कीमति पाइए,सच्च सच्चे साहो जीउ ।। सच्चा साहु कीमति सच्च ताकी,साची नदरि निहाला ।। सच्च पदारथ सच्च समावै,सच्चे सच्ची घाला ।। हरि प्रभु सच्चे मेल मिलाइआ,सच्चा सत्गुरु पूरा ।। सच्चे सिख श्रीचंद्र सम्हारिआ,सच्च उपदेस हजूरा ।।२।। रे मन गहिले बावले,सच्चा सच्चे पास जीउ ।। सच्चे ही सच्च मिलि रहै,कूड़ निखुटै रास जीउ ।। रासि निखुटै कूड़हि केरी,ताइ मुलुंमा भागै ।। सच्चा साधू सच्च समावहि,कूड़े ठगणि ठागै ।। कूड़ा जीवन अंतु बिनासहि,सच्च नाम संग चल्लै ।। श्रीचंद्र सत्गुरु पाया,हरि धन बधा पल्लै ।।३।। रे मन गहिले बावले,सच्चा सबद कमाइ जीउ ।। हिरदै सच्च बसाईऐ,नौनिधि सिधी पाइ जीउ ।। नौनिधि पावै सच्च बसावै,कदे न छडे हाथा ।। आप तरै संगी कुल तारै,सच्चे सच्च सनाथा ।। सच्च वडाई दूण सवाई,गगनंतर रस झूलै ।। सच्चे चरण सेवहि श्रीचंद्र,सच्च पछाता मूलै ।।४।।२१।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| **श्री राग छन्द** || रे मन मित्र पिआरिआ,नाम बिना नहि साथी जीउ || तजि कूड़ा धंध पसारड़ा, राम भजन मग पाथी जीउ || भजनै पाथी हरि प्रभु साथी,लोक परलोक सुहेला || अउघट घाट नदी अति गहिरी,होइ न मारग मेला || तत्ती रेत न पैरां थल्ले,बारह सूरज गरमी || नाराइण सिमरन श्रीचंद्र जू,सभ बिधि सांती नरमी ||१|| रे मन मित्र पिआरिआ,कीता ही जदि पाणा जीउ || समझ सोच करि वेखिए,तां किउं बुरा कमाणा जीउ || बुरा कमाणा आपे पाणा,भला कमाणा आपै || भला भला ही करहु प्राणी,भलो भला ही विआपै || फल बुरा ही बुरा कमाए,अग्गे पा पछुताणा || भला थान भले दा श्रीचंद्र,बुरे दा बुरा टिकाणा ||२|| रे मन मित्र पिआरिआ,पुरुख भलेरे थोरे जीउ || सत्गुरु सेवहि आपणा,चानण लहहि अन्हेरे जीउ || अन्हेरे चानण तां ही होवहि,सत्गुरु गिआन कमाए || पुंन दान इस्नानहि पूजा,हरि चरनी चित लाए || करणी करम करहि सत संगति,तजि मन का अभिमाना || परमानंद पाइ रस श्रीचंद्र,सत्त आतम पहिचाना ||३|| रे मन मित्र पिआरिआ,संत सदा हितकारी जीउ || सुख दुख सम करि जाणिआ,जीवन पर उपकारी जीउ || पर उपकारी सद

जीवन पर,दया धरम नित्त धारै ।। अंतरि आतम ब्रहम पछानै,जीव जंत जग सारै ।। सप्पां सेती दुगध पिलावन,ठूहें नदियों कोढें ।। हाथी शेरां सुआना कागां,श्रीचंद्र देंह ओढें ।।४।।२२।।६८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। श्री राग छन्द ।। रे मन मित्र पिआरिआ,साधां जाति न काई जीउ ।। आपण आप मिटाइ कै, गोबिंद रहै समाई जीउ ।। गोबिंद समाए आप मिटाए,एको एकी होए ।। हउमै दुबिधा अहं गवाया, नाराइण ही होए ।। राम नाम दिन राती रटते,सीत न आतप भूखा ।। पहिरण खावण श्रीचंद्र परिहर, सहिज अनंद विभूखा ।।१।। रे मन मित्र पिआरिआ,हरि साधां जेड न कोई जीउ ।। सुलतान खान उमराव सभ,पीर पैगंबर जोई जीउ ।। जोई पैगंबर जग महि वरतहि,हरि संतन वरसाए ।। रिद्धि सिद्धि नौनिद्धि तिना कै,निसिदिन लागहि पाए ।। जप गुबिंद गुबिंद भए है,दूजा भाउ न राई ।। आतम चीन परातम श्रीचंद्र,संतन की वडिआई ।।२।। रे मन मित्र पिआरिआ,नाराइण बिस्वासा जीउ ।। संतन के उर महि सदा,सूरज गिआन परगासा जीउ ।। गिआन प्रकास अगिआन बिनासा, अंधकार मन नासा ।। नाम निधान अखुट खजाना,पाए पूरन आसा ।। ब्रहमलोक सुरलोक बैकुंठहि,दल

मल लाइआ पाए ।। धरमराज श्रीचंद्र नितह उठ,संतन रिदै धिआए ।।३।। रे मन मित्र पिआरिआ, पूरब भाग जि जागहिं जीउ ।। पूरण संत तां पाईअहि,हरि हरि सिमरन लागहि जीउ ।। सिमरन लागहि भ्रम भै भागहि,संसै दूख न कोई ।। काम क्रोध हउमै मल खोई,निरमल जोति समोई ।। आतम गिआन न अहं संतापा,पारब्रहम उर भाना ।। श्रीचंद्र छल छिद्र गवाए,लीन भए भगवाना ।।४।।२३।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। श्री राग छन्द ।। हे मन मित्र पिआरिआ,सत्गुरु संगति नीकी जीउ ।। नाम महारस पाइए,बुधि परगासै पी की जीउ ।। पिय के परकासै दुरमति नासे,हउमै रती न पावै ।। गिआन धिआन पूजा परमेस्वर,हरि कीरतन त्रिपतावै ।। चौथे पद आतम रस रसीआ,सहिज बिवस्था तारी ।। तम अगिआन बिनासिओ श्रीचंद्र,हरि हरि नाम खुमारी ।।१।। हे मन मित्र पिआरिआ,गुरुमुख नाम द्रिढ़ाया जीउ ।। हउमै रोग गवाइआ,आतम सूख उपाया जीउ ।। सूख उपाया रोग गवाया,काम क्रोध मोह भागा ।। दुरमति दुबिधा दूजी बिनसी,अहनिसि हरि रंग जागा ।। लागी लगनि अगनि

अनुभउ,पाप विकार प्रजारे ॥ श्रीचंद्र भउ जलनिधि बूडत,खिन महि किए किनारे ॥२॥ हे मन मित्र पिआरिआ,गुरुमुख राम रस आए जीउ ॥ मन तन धन सुत संपति नारी,चित ते सभ बिसराए जीउ ॥ सभ बिसराए हरि रस आए,मगन भया रंग रात्ता ॥ बोलण चालण खावण पहिरण,पीवण छोडी मात्ता ॥ चढ़ी खुमारी सुरति अपारी,ताड़ी नैन चढ़ाए ॥ लिव लागी श्रीचंद्र मुरारी,प्रेम सुधा रस पाए ॥३॥ हे मन मित्र पिआरिआ,गुन गोबिंद सद गाईए जीउ ॥ धरणी चित्त उपाट कै,गुझा रतन लहाईए जीउ ॥ रतन लहाईए कीमति पाईए,आपे आप विकाईए ॥ काट काट तन मन होमीजै, हहुका भरै न वाईए ॥ राम नाम रस मस्त पिआला,पी रहिए मतवाले ॥ श्रीचंद्र सभ काण चुकाई, सरवसु प्रभू हवाले ॥४॥२४॥७०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ श्री राग छन्द ॥ हे मन मित्र पिआरिआ,छडि दुबिधा हरि धिआए जीउ ॥ इक चित गोबिंद सिमर कै,जीवन पदवी पाए जीउ ॥ जीवन पाए नाम धिआए,गुप्त गुणन परगासै ॥ तल रसातल निघरत जाते,ऊपर चढ़ै आकासै ॥ जिन को कोऊ न जानत मानत,से प्रगटै भव माहीं ॥ जनम जनम भ्रम विआपै

श्रीचंद्र,काढ लीनि दे बाहीं ।।१।। हे मन मेरे पिआरिआ,विचहुँ भ्रम गवाए जीउ ।। तेरे हथ वसि कछु नहीं,जाहिं जित्थै लै जाए जीउ ।। जित्थै लै जाए तित्थै जै हैं,सुरग कि नरक न जानै ।। अगम अगाध गती हरि केरी,मानुख किआ पहिचानै ।। सुरगहिं जाते नरकहि डारे,नरक जात सुर लोका ।। रोते हसते आवत श्रीचंद्र,भए निहाल स सोका ।।२।। हे मन मेरे पिआरिआ,करते पर रख डोरी जीउ ।। आपहु कछू न होए है,जतनहि लाख करोरी जीउ ।। लाख करोड़ी जतन करीजै,धन पावन करि धाई ।। पाया भी जे तसकर छीनहि,किआ करि सकहि उपाई ।। संत मिलै द्रब्य गाढु बतावै,खोदहि सरप डसावै ।। श्रीचंद्र म्रितु वसि गति थीआ,करते एवै भावै ।।३।। हे मन मेरे पिआरिआ,लंमी उमरहि चाहा जीउ ।। काया कलप कमाइआ,खूब रसाइण खाहा जीउ ।। खाइ रसाइण देव मनाए,गौस औलिऐ पूजै ।। देवालै गोरां मठ सेवे,मन लाइआ भाइ दूजै ।। एकहु स्वास न बढ़है मूलहुँ,किए उपाव निकामा ।। श्रीचंद्र मत मिथिआ आसहि,तजि बैठहि श्री रामा ।।४।।२५।।७१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। श्री राग छन्द ।। हे मन मेरे प्रीतमा,जीवन आस न काई जीउ ।। जे लख बरसां भोगिए,भी मरना

सिर आई जीउ ॥ मरणा आवै को न हटावै,जुगहि जुगंतरि पाए ॥ चिरजीवी अवतार भानु ससि, ब्रहमा शिव म्रितु थाए ॥ देव दैत्त नर पातसाह न्रिप,कीट पतंग तरोवर ॥ इंद्रा इंद्र श्रीचंद्र काल वसि,धरणी गगन सरोवर ॥१॥ हे मन मेरे प्रीतमा,तूँ किस का वणजारा जीउ ॥ क्रिसन राम बलदेव सिय,वालमीकि तप धारा जीउ ॥ तप धारी मुनि पुंगव जोगी,गोरखनाथ मछंदा ॥ दत्तात्रै बकदालभ भ्रिगुवर,पुलह पुलस्त अगुंदा ॥ मालव सालव विआस परासर,सुक वसिस्ठ ब्रहम वेते ॥ विस्वामित्र अंगिरा नारद,श्रीचंद्र कहँ चेते ॥२॥ हे मन मेरे प्रीतमा,कहां मुहम्मद यारा जीउ ॥ इब्राहीम सिकन्दर सूरी,मूस मसीहा दारा जीउ ॥ दार मसीहा पकड़ी लीहा,यूसफ नूह लुकमाना ॥ तैमूरो दाराब असफंदह,याकूबो सुलेमाना ॥ बाबरो महमूदो अकबर,अहमद साहे जैसे ॥ श्रीचंद्र भे अज़ले लुकमा,बंदा बचहै कैसे ॥३॥ हे मन मेरे प्रीतमा,संता की सिख लेहु जीउ ॥ अंतह जाणा काल घर, तन धन होसी खेहु जीउ ॥ होसी खेहो कूड़ सनेहो,दारा पूत संबंधी ॥ कोटि जतनहुँ काम न ऐहै,छूटहि काया बंधी ॥ राम नाम नित जापहु प्राणी,द्रब्य का झूठ गुमाना ॥ श्रीचंद्र गोबिंद भजन बिन,दरगह काहुँ न जाना ॥४॥२६॥७२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।।

सिमरहु हरि प्रभु आपणा,अनंद मंगल कलिआण ।। गोबिंद गुण नित गाईए,बहुर न आवण जाण ।।१।। भाई सद आनंद गुण गाइ ।। सत्गुरु पूरा पाईए,हरि हरि नाम द्रिढ़ाइ ।।१।। रहाउ ।। जिन कउ साधु संग भया,तिनि कीजै साबास ।। तिनि की संगति छूटीऐ,माया मोह विनास ।। २।। साधू संगति लगिआं,जनम न दूजी वार ।। पारब्रहम परमेस्वरो,राम नाम आधार ।।३।। सदा सच्चिदानंद प्रभु,हिरदै रहिआ विराज ।। श्रीचंद्र गोबिंद गुण,आतम आनंद राज ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। गुरु पूरा जिनि पाइआ,सेई नर वडभाग ।। राम नाम परगासिआ,अहनिसि

लागी लाग ॥१॥ चानण सभनी लोई ॥ चंद्र सीतल चंद्रिका,आतम रस सुख होई ॥१॥ रहाउ ॥ भ्रम संसै भै परिहरे,आनंद गुणी निधान ॥ नाराइण गुण गाइआ,चानण उपजिआ गिआन ॥२॥ ताल म्रिदंग मंजीर घन,पंच सबद विसमाद ॥ अनहद धुनि नित वजदे,राग नाद विसमाद ॥३॥ सात समुंद ऊछलै,रंग तरंग अनंत ॥ श्रीचंद्र रस अनुभवी,पावत बिरले संत ॥४॥२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ गुण गोबिंद सुहावणे,रंग राग धुनि सोइ ॥ आनंद आतम माणिआ,सत्गुरु संगी होइ ॥१॥ जीवन पाया राम ॥ साध संगति कऊ वारणे,रस रसना हरि नाम ॥१॥ रहाउ ॥ एको एक समाइआ,दूजा नाही कोइ ॥ नंगा करि पति पाईए,माया परदा खोइ ॥२॥ नाच नचावै वेख है,मन बुधि गई बिलाइ ॥ पूरन पति परमेस्वरो,काइ मिलाई काइ ॥३॥ रस रसिआ प्रभु प्रेम कै,दहदिसि भया आनंद ॥ जाण अजाण जणाइआ,श्रीचंद्र गोबिंद ॥४॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ राग नाद आलापिए,गाईऐ गोबिंद गीत ॥ आतम रामहि सिमर कै,जम की हरिऐ

भीत ॥१॥ मेरो राम सदा सहाई ॥ लगन न देवै तत्ती वाउ,पालक मात पितु निआई ॥१॥ रहाउ ॥ नाराइण गुण गाइऐ,अंतरि उपजै चाउ ॥ सदा सुहाणा साधु संग,सत चित अनंद समाउ ॥२॥ जीवन रूप कलिआण धन,गोबिंद नाम सम्हाल ॥ ऊँचा मन गगनै चढ़ा,करनी करम निहाल ॥३॥ गुप्ता वाजा वजिआ,पंच सबद इक सार ॥ नउनिधि पाई श्रीचंद्र,सत्त अखुट भंडार ॥४॥४॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग आनंद ॥ जा को आनंद आया,राम नाम रस पाइ ॥ मद मत्त सरब भुलाया,नाराइण सरसाइ ॥१॥ नितानंद सुख मूल ॥ रागी राग विसारिआ,दिसा गई अन भूल ॥१॥ रहाउ ॥ बींगा पाऊं न होवई,घुँघरु घूमर रंग ॥ बीना बीनी माधुरी,माधव मधु सुरंग ॥२॥ गोपी गोपी वसतु लहि,रास रचाई भूरि ॥ गौड़ी पौड़ी उचरी,मंगल साज मयूरि ॥३॥ रस बरसा रस पाया, गोबिंद भंग त्रयान ॥ सत संगति श्रीचंद्र लहि,मंडल सत्त सुथान ॥४॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग आनंद ॥ मिलि सखीआं हरि गाइआ,कापड़ कपट उतार ॥ एको एक पछाणिआ,दूजा भरम

निवार ।।१।। एक ओंकार आधार ।। आपा चीनै आपा खोइ,रंग रती विसंभार ।।१।। रहाउ ।। जन की संगति टेक हरि,छेक दिया परिवार ।। सत्त सबद परगासिआ,तम अगिआन बिदार ।।२।। गया नराइण आइआ,राज भाग निरवार ।। चहुँ जुगी चानण थिया,नैन चुंधाए सार ।।३।। बन बन सखीआं आई,सोलह किए सिंगार ।। ताली ताल वजाईआ,श्रीचंद्र भरमार ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। सखीओ गोबिंद सिमरीए,ऐहै गया विदेस ।। ललना लाल समालिआ,निरमल रंगी वेस ।।१।। भेरी सबद वजंत ।। भूल भुलाई भुल गई,एको हरि हरि मंत ।।१।। रहाउ ।। आरंभ नाहि महातमी,अंत न किरिआ पूज ।। राम नाम रस रमि रहै,हउमै निवरी दूज ।।२।। सहिज अनंद समाणिआ,आसा त्रिसना लाथ ।। अखुट खजाना हरि गुण,पूरण पाई आथ ।।३।। मैं मेरी मेरी नहीं,तेरी तेरे माहि ।। तू मेरा मैं तेरिआं,श्रीचंद्र संताहि ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। रत्ते रंग गोपाल के,जीवन दिआ बिहाइ ।। सिर भेटा करि दीजिऐ,आपा आप

भुलाइ ।।१।। गोबिंद मिलन का चाइ ।। सी नहीं हिय छोभ नहीं,अहिसाने बिलगाइ ।।१।। रहाउ ।।
जे तूँ प्रीतम खुश अहै,इक सीस ही लेइ ।। मिथिआ ते सत पाईए,वणज नफा तऊ देइ ।।२।।
बोलण तब लग होइ है,सिर कबंध एक संग ।। भिंन भिंन करि डारिऐ,रंग त्रिभंगी रंग ।।३।। रुंड मुंड
खिड़ खिड़ हस्से,सखीआं नाची झुंड ।। श्रीचंद्र गोबिंद रंग,रत्ते मुंडित मुंड ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग आनंद ।। राम नाम रंग रत्तिआं,भ्रम भै चिंता नास ।। एको एक पछाणिआ,सरबातम बिस्वास ।।१।। नाराइण रस मूर ।। जोबन सफल सुहागणी,मदमत्त मति मखमूर ।।१।। रहाउ ।।
दूजा तहाँ न आइ है,जहाँ महल प्रभु नाम ।। कारण कारज बीसरे,अनंद मंगल गुण गाम ।।२।।
लिव लागे लिव होइ गए,शिव लागे शिव रूप ।। चानण चानण सांत का,धूप समानै धूप ।।३।। कह कहिऐ कह देखिऐ,जब एकै गोपाल ।। तूँ जानै तूँ ही रहहिं,श्रीचंद्र के लाल ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग आनंद ।। प्रीतम तोल तुलाइआ,सिल वट्टे के संग ।। तुला धार अरपाइआ,जग जीवन रस

भंग ।।१।। तुलिए पूरे तोल ।। अखीं खोल निहालिआ,बोल न सकै बोल ।।१।। रहाउ ।। मति पति प्रीतम को दई,कछु हूँ रहिओ न पास ।। मन महि गोबिंद पाइआ,पूरण सगली आस ।।२।। जिस मिलि नाही बीछुड़हि,पारब्रहम प्रभु नेह ।। जपु तपु संजम जोग यग्य,दान बरत रस एह ।।३।। गरब वडाई हरख सुख,मान महत गुण पूज ।। प्रेम पदारथ श्रीचंद्र,एकहि एक अदूज ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग आनंद** ।। सागर प्रेम अथाह हरि,डूब न निकसे कोइ ।। दीपक लाट निहार कै,मरै पतंगा सोइ ।।१।। मेरा राम इक रंग ।। चित चिंता सभ परि हरी,सती चिता के संग ।।१।। रहाउ ।। भरम अंदेसा बीसरै,रत्ते रंग गुपाल ।। सूह कसुंभा छोडिआ,लाल मजीठ निहाल ।।२।। गोबिंद गोबिंद गोबिंदा,अंक मिलाइऐ जोड़ ।। अलपायु दीरघायु सो,बद राखी बद होड़ ।।३।। अउसर मानुख जनम का,रंगणि वेल नाथ ।। श्रीचंद्र नहिं चूकई,सत संगति के पाथ ।।४।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग आनंद** ।। नीर नैन नहि आवई,बिरह अगनि लिय सोख ।। जबि लग दूजा भाउ है,पांत

असुन की चोख ॥१॥ रस बसि रस नहि आइ ॥ काया विरहा राग दोख,हरि प्रभु प्रीति अकाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मल मूत्री पावन नही,पावन प्रीतम रंग ॥ छूटै ही ते पाईए,हरि प्रभु केरा संग ॥२॥ जहां दोइ तहँ देह है,एक विदेह अलोक ॥ लगन लगी कुंडी अड़ी,खैंचे किओ असोक ॥३॥ बिरह उपाय गुबिंद नै,मोह माया करि दूर ॥ परमानंद सम्हालिआ,श्रीचंद्र भरपूर ॥४॥१२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ जिउं जानहु तिउं लेहु निबाही,हरि प्रभु प्रीतम राया ॥ हम सिउं होइ साकहि किओं हूँ,निबहन हेतु उपाया ॥१॥ करते,भुज गहि लीजै खैंच ॥ बडे बडे पाथर मग राखत,तेरे महि खड़ पैंच ॥१॥ रहाउ ॥ किआ करणा कछु जाइ न जाना,करम कैस बणि आवै ॥ कौण धरम तेरा है सुआमी,कोऊ न मोहि बतावै ॥२॥ जा पहिं जाउं न दीसहि तेरा,माया का दीवाना ॥ जा को आपन हरि रंग लागा,कस हम कहि परिचाना ॥३॥ प्रभु जी दया करहु मेरे प्रीतम,सत्गुरु मेलहु पूरा ॥ जां ते प्रेम तुहारा पावहु,श्रीचंद्र सुख मूरा ॥४॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग आनंद || निरगुण जान न परिहरहु,लेहु ओड़ निबाही || अवगुण मोरे बहुत हहिं,गुणनिधि तुम आही ||१|| अपनी किरपा करहु मेरे पिआरे || कोटि असंखा दुस्करम,नहिं पेखि हमारे ||१|| रहाउ || पतित पाखंडी पाप रति,तुमरी सरणाई || तू निरमल गुण सागरो,भुज लेहु गहाई ||२|| पर द्रब्य हेतु उपाव कै,मै चाहहुँ लेना || तुम दातार उदार अति,चाहहु जन देना ||३|| विकारी मन वेड़िआ,नरकन गति माही || सरणागत उपकारिआ,श्रीचंद्र निबाही ||४||१४||

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग आनंद || दीन दरद दुख भंजना,करतार मुरारी || औगुण सरब मिटाइ कै,कीजहि दरबारी ||१|| मो ते कछु न होइ || जैसे कैसे राख लेहु,अपनै चरणी ढोइ ||१|| रहाउ || निसिदिन चित चितवनि करहु,आसा जग केरी || परधन परतन परधरा,पर धामन हेरी ||२|| कर लस्टिक सिउं रोकिऐ,मन मूढ़ अमोड़ा || बालक रति अगिआन का,कोस्ट दै होड़ा ||३|| मो को कछु न आवई, सुभ पंथ पछाना || आपहु किरपा करहु प्रभु,श्रीचंद्र निदाना ||४||१५||

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग आनंद ।। मन मनमथ रस बेढिया,हरि गुण नहीं गावै ।। अनिक जतन करि राखिऐ,फिरि फिरि तित धावै ।।१।। मेरे प्रीतमा,बखसहु अउगुण मेरे ।। अपराधी अपराध बसि,अपराधन नेरे ।। रहाउ ।। नित नित रूप लुभाया,खिन टिकण न पावै ।। बहुत विकारहि चितवता,उठि उठि करि जावै ।।२।। क्रोधहि भरम भुलाइआ,मित्रन का वैरी ।। रक्त नैन द्रिस्टि अगनि,जल चरित गंगैरी ।।३।। मेरी मेरी बांधिआ,बंधन अनिकाए ।। भरम भुलाणा श्रीचंद्र,हरि गुण नहिं गाए ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग आनंद ।। मो ते कछु न होइ है,हरि किरपा निधाना ।। जपु तपु संजम करम धरम,नाही कछु जाना ।।१।। तुमरी किरपा दयाल ।। मोहि आतुर तेरी गति नहीं जानी,आपहुँ करहु संभाल ।।१।। रहाउ ।। भुलण अंदरि जीव है,तू अभुल अतुला ।। दर बंदी जीवन भई,तुमरो सद खुल्ला ।।२।। जाचत दर दर जीव गति,हरि पुरुख दातार ।। अपने जनन संमालता,सद सद प्रतिपार ।।३।। आवागौण निवार कै,लड़ि लीजै लाई ।। जीवन रूपी प्राणधन,श्रीचंद्र धिआई ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग आनंद ।। सरणि पड़े गोबिंद की,तजि आन भरोसा ।। साजन मीत सहाइका,परिहर गुण दोसा ।।१।। ऐथै ओथै राखा सोइ ।। जिउं भावै तिउं राख है,निज चरनन ढोइ ।।१।। रहाउ ।। आपहुँ ही लड़ि लाइ,निज दास किए हैं ।। आपहुँ ही प्रतिपालता,गुण बिघन हए हैं ।।२।। अपसकुनहि परिहार करि,चंद मंगल मेला ।। आपहि लाड लडाइंदा,सद आनंद केला ।।३।। आप ही भोग भुगाइंदा,सुख दै बिस्रामा ।। श्रीचंद्र गुण गाइ रहु,नाराइण रामा ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग आनंद ।। नाच नचावत पुतलीअहि,पुतलीगर राम ।। काठ न बोलत आप कछु,नाइक को काम ।।१।। कारण करण करतार ।। बन परबत सागर धरा,वण त्रिण सिरजनहार ।।१।। रहाउ ।। जिउं जिउं करम कराइंदा,करते तिउं ही हैं ।। जहँ जहँ देस फिराइंदा,फिरते सभ ही हैं ।।२।। लिखिआ लेख अगंम ते,हरि भाणा भाइआ ।। आपहुँ कछु कीन हम,धुरि लेख लिखाइआ ।।३।। पारब्रहम करते पुरुख,सभ बणत बणाई ।। सदा सदा श्रीचंद्र प्रभु,गुण गोबिंद गाई ।।४।।१९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। मान अमानहि तिआग करि,हरि हरि द्रिढ़ नामा ।। सदा सदा उर सिमरीए,सभ पूरन कामा ।।१।। नाम सुधा रस पीवै जोइ ।। जरा मरा दुख बीसरै,अनुभउ सूख समावै सोइ ।।१।। रहाउ ।। पूरण पदवी पाईए,हरि चरनन निरबाण ।। आतम रामहि रम रहहि,करमहि कलिआन ।।२।। धरम पउड़ी मंदर गुरू,चढ़ि ब्रहम निहारै ।। आगिआकारी जगत सभ,दरबार बुहारै ।।३।। पूरण आसा मन भई,ऊणा नहिं भागा ।। श्रीचंद्र भव पूज सोइ,प्रभु के रंग लागा ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। नाम समालहु जीअड़े,परिहर कुल भरमा ।। नीचहि ते ऊचहि करहि,अपनो करि करमा ।।१।। सभ वडिआई हरि गुण गाइ ।। पारब्रहम उर प्रगट होइ,सुख सहिज समाइ ।।१।। रहाउ ।। जिउं जिउं आवहि राम रस,तिउं तिउं विसमादा ।। चिंत अंदेसा तिआग रहि,सद ही प्रहलादा ।।२।। हरि सनमुख थित पेखिऐ,द्रिस्टि दिब्य पाई ।। देव दैत्त चहुंधा थिरहि,नित कार कराई ।।३।। तीरथ राजहि चरन तर,नाराइण गाए ।। सदा सदा श्रीचंद्र मनि,हरि गुण निधि पाए ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। संतन केर प्रसाद ते,हरि हरि नाम धिआइ ।। कापड़ पाट पटंबरी,पहिरण रामहि नाइ ।।१।। हमरे सरवसु गोबिंद नाम ।। आन वसतु सिउं काज न कछुऐ,हरि कीरति बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। गज गचगीरी मंदरा,भोजन खट रस संग ।। एकहि नाम अराधिऐ,होहि न कबहूँ भंग ।।२।। पुहप सुगंध सकेल कै,सिहजा सुभग सुधार ।। राम नाम आराधना,राग रंग सींगार ।।३।। मात पिता सुत दार बंधु,माल मताह अनेक ।। इक मन प्रभू आराधना,श्रीचंद्र उर टेक ।।४।।२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। अपने जन की राखता,लज्जा करतार ।। कर अग्रज करि थामता,गिरतो पाहार ।।१।। ऐसा गोबिंद दूख बिदार ।। ताती वाउ न लागई,प्रभु चरण मझार ।।१।। रहाउ ।। जल निधि बोहिथ डूबिआं,करि देत किनार ।। दहदिसि अनल प्रज्वलित पै,बरसत जलधार ।।२।। फाही फाथे मीन की,टूटित जिमि जारि ।। धन गंठे बन बनिक लहि,अंधे बटपार ।।३।। बधिक घेरी म्रिगी जिमि,सरपै डंग मार ।। करता पुरुख श्रीचंद्र,जन करता रखवार ।।४।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। त्रिसना तब ही नास है,रसना राम धिआइ ।। अनिक उपाइन करि थकै,त्रिसना नाहिन जाइ ।।१।। रसना रस रसि हरि गुण गाउ ।। पारब्रहम परमेस्वरो,सांत समुद समाउ ।।१।। रहाउ ।। लाख करोड़ी अरब खरब,द्रब्य सिउं भरे भंडार ।। त्रिसना मूल न उतरे,नित नित होइ खुआर ।।२।। सोना रूपा संचीऐ,माल जाल जंजाल ।। बिन हरि नामै त्रिपति नहि,बिचरत नित्त कंगाल ।।३।। लक्खां त्रिअ भोगत फिरहि,अगनि वधहि अधिकाइ ।। अहनिसि आतम श्रीचंद्र, जल जल बिनसहि काइ ।।४।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। सफल स्रवण हरि नाम सिउं,मन महिं उपजै सांति ।। साधह संगति पाइऐ, नाराइण जपु कांति ।।१।। सुणि सुणि हरि प्रभु नाम ।। महा आनंद प्रमोद रस,कलप ब्रिख द्रिढ़ छाम ।।१।। रहाउ ।। गाथ गुबिंद गोपाल की,सत्गुरु रसना पाण ।। कलि कसमल गण काटबे, दुरगा तिच्छ क्रिपाण ।।२।। सुधा धार गगनहुँ झरहि,पुट करणन सो पीय ।। अमरापुर महि अमर है,

नित बासत इह जीय ॥३॥ जिनि जिनि पाया प्रेम रस,आसा त्रिसना लाथ ॥ रसि रसिआ हरिआ तरू,श्रीचंद्र प्रभु पाथ ॥४॥२५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ करम करत नहि छूटीऐ,लख कोटी विसतार ॥ माया बंधन बांधिआ,वादी धरहि पिआर ॥१॥ गोबिंद सिमरण ऊच ॥ करम धरम भ्रम जाल सभि,सकते नहीं पहूच ॥१॥ रहाउ ॥ कंचन सिउं नहिं होत है,नाराइण वापार ॥ पारब्रहम करता पुरुख,अंतहकरण मझार ॥२॥ झूठ साच दोनहुँ थिरहि,अंतरि आतम लोइ ॥ साच खजानहि परत है,झूठ न लहई ढोइ ॥३॥ तखत विराजहि पातिसाह,खिन महि करता न्याउ ॥ जिनी सच्चा नाम पाया,श्रीचंद्र बलि जाउ ॥४॥२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ सच्च न टिकई साधु बिन,सच्चो सच्च निरंकार ॥ सच्च बिन मैल न उतरै,नहिं जाए अहंकार ॥१॥ साधू सच्च कसौटी लाइ ॥ पूरै पूरा करि लइआ,ताहि खजानै पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ दुनिआ खोटी रासि है,कूड़ा वापारा ॥ विचि सच्चे कूड़ न गड्डई,हरि नाम विचारा ॥२॥ मनमुख

अंतरि कूड़ है,अगिआन अंधेरा ।। निकटी सच्चा बहि रहिआ,नहि लहिओ सफेरा ।।३।। सच्चो सच्च पछाणीऐ,सच्चे संग पाई ।। श्रीचंद्र गुरु साधु की,सच्ची वडियाई ।।४।।२७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग आनंद ।। सच्ची संगति बैठणा,सच्चे सिउं वासा ।। कूड़ी पाल निकालिए,सच्चे बिस्वासा ।।१।। सच्च सहाई सगले थाउ ।। सत्त रूप पारब्रहम गुरु,निहचल असराउ ।।१।। रहाउ ।। सच्च हीरा अनमोलका,साधह हत्थ आया ।। सच्चा जोहरी परख लै,सिर भेट चढ़ाया ।।२।। चमत्कार सच्च सूरजहुँ,सूझै सुर लोका ।। गोते लाईए छीरनिधि,हरिए मोह सोका ।।३।। सच्चा वखर वणज करि, वणजारे भारी ।। सौदा सच्चा श्रीचंद्र,हरि नाम समारी ।।४।।२८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग आनंद ।। सच्चे ही ते ऊपजे,सच्चे रहे समाइ ।। सच्चा वणज वणजिआ,सच्चा लाहा पाइ ।।१।। सच्चे संत सहाइ ।। जिनि खिन पल नाम न वीसरै,राम नाम रस आइ ।।१।। रहाउ ।। सच्चा साह सराफ है,सच परखै सच तोल ।। सच्चे सच्च कमाइआ,सच्चो सच्चा बोल ।।२।। सच्चे गुण सच्च थै

टिकहि,सच्ची रास अपार ।। सौदा सच्च विहाजिअहि,सच्च त्रिपति संसार ।।३।। सच्चे मैल न लगई, निरमल सूरज जोति ।। सच्चे साधू श्रीचंद्र,सच्चो सुच्चा गोति ।।४।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। सच्ची दरगह मनहि की,सच्ची आस पराइ ।। सच्ची सीरणी वंडिअहि,सच्चो ही वरताइ ।।१।। सच्चा स्वाद महा त्रिपताइ ।। सच्चा भाग निकालिआ,सच्चे खाधा आइ ।।१।। रहाउ ।। सच्चे की भुख उतरी,सच्च सिमरि त्रिख जाइ ।। सच्चा रस संचारिआ,पुस्टी सच बढाइ ।।२।। सच्ची काया निरमली,संगति सोभा पाइ ।। सच्चे करम कमाइआ,फलिआ सच सुभाइ ।।३।। सच्चे सच्चा प्रगटे,सच्चे मेल मिलाइ ।। अंतरि बाहरि श्रीचंद्र,संतन सच्च समाइ ।।४।।३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। तीरथ न्हाता जाणिऐ,हिरदै सच्च निवास ।। पूजा सफली देव की,सच्च होवै परगास ।।१।। पारब्रहम सच्च नाम ।। सदा सहाई अग्गला,आवै जिअ कै काम ।।१।। रहाउ ।। सच्चा सेवन सच्चिअआं,बणिया धुरि संजोग ।। सच्ची संगति मेल मिलि,होइ न सोग विजोग ।।२।। घुलमिल

आपा आप है,सच्च नाम धर पिआर ।। सच्चो बीजै बीज धरि,सच्चे धान अपार ।।३।। नउनिधि उपजै एक नाम,सच्ची भगति भंडार ।। सच्चे सत्गुरु श्रीचंद्र,सच कुटुंब उधार ।।४।।३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। बिनउ सुनहु निज दास की,देहु अपना नाउं ।। भला बुरा नहि जानऊ,किमि कीमत पाउं ।।१।। पावन पतित न मेलो कोइ ।। करम कुकरमन भिंन है,जिउं जानहु तिउं ढोइ ।।१।। रहाउ ।। भाउ अभाउ बिबेक करि,मन घुंमण घेरी ।। धरम अधरम विचारीअहि,किमि चूकै फेरी ।।२।। संत असंत न मन धरहु,जे मिहर उपावहु ।। डुबिया पाथर सागरहि,हत्थ दै निकसावहु ।। ३।। कहूँ कहा लगि आपणी,करणी की बाता ।। किरपा कीजहि श्रीचंद्र,लड़ि लाइ बिधाता ।।४।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। नाम निधान सोई पाए,जिस हरि आपणी किरपा करेय ।। तोटा कदे न आवई,भरे भंडार मध्यैय ।।१।। माया दासी गोबिंद केरी ।। जहँ गोबिंद तहँ करत निवासा,फिरति न काहूँ

फेरी ।।१।। रहाउ ।। शक्ति सरब वासहि तही,इंद्रा जिहँ थाई ।। जहँ ठाकुर सेवक तहाँ,हरि नेत लखाई ।।२।। नाराइण संग पारसद,सोभा बडि पावहि ।। गोपाल किरपाल दयाल सिउं,साधू सुख रावहि ।।३।। हरि प्रभु मेल मिलाइआ,रंग राते रामा ।। गुण गावत श्रीचंद्र नित,सहिजे बिस्रामा।।४।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। ओम् जापहि जपंतिआं,सहज सुहेला जीउ ।। मंडल गगन विगासिआ,कमल खिड़े रंग पीउ ।।१।। ताड़ी लागी तुरियातीत ईत ऊत प्रतिपालता,सदा संग हरि मीत ।।१।। रहाउ ।। संत जपत गोबिंद कउ,गोबिंद संतन जाप ।। नाराइण हित संत भे,संत नाराइण थाप ।।२।। लगन न देवत आंच हरि,संतन संग समोई ।। आप सहारत तपत को,संत सीत रस भोई ।।३।। भरम भेद सभ मेट कै,एको एक करेइ ।। ओत पोत श्रीचंद्र प्रभु,संतन मध्य रमेइ ।।४।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। जाति न पूछत हरि प्रभू,प्रेम पदारथ सार ।। नेह परवाना पाइ कै,जावत प्रभु दरबार ।।१।। सगल उपाए ब्रहमे आप ।। नाहि निसानी कछु धरी,रक्त बिंद इक नाप ।।१।।

रहाउ ॥ तन परदा निरवारिआ,मन लीना हरि रंग ॥ मन गति हरि प्रभु जानता,सदा सखाई संग ॥२॥ जिनि जिनि नाम अराधिआ,मन महि अम्रित पाइ ॥ अमर भए तिहुँ लोक में,साचे संग समाइ ॥३॥ रते रंग गुपाल के,सहिजे सबद निहाल ॥ मन भीतरि श्रीचंद्र प्रभु,पेखै नदरि निहाल ॥४॥३५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग आनंद ॥ गुरु गोबिंद समारिआ,बिनसी हउमै तात ॥ चढ़ी खुमारी प्रेम रस,मस्त भए दिनरात ॥१॥ नाराइण रंगे विसमाद ॥ माया मनहु विसारिआ,अनंद विनोद अहलाद ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दरद दुख भंजना,घटि घटि पूरन सोइ ॥ आतम रामहि रम रहिआ,आपहि आप समोइ ॥२॥ गुपाल दामोदर माधवा,मिहरबान किरपाल ॥ प्रतिपालक अरिघालको,गुणनिधि सूखन साल ॥३॥ संत अराधन सद सदा,राम नाम गोबिंद ॥ प्रगट भए तिहुँ लोक महि,रंग राते श्रीचंद्र ॥४॥३६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग आनंद ॥ आन भरोसा चिंत तजि,हरि हरि नाम पराते ॥ हरि जस नितप्रति गावई,जाति

गवाई पाते ॥१॥ गोबिंद के रंग राते ॥ अहनिसि राम सनेह वसि,रैनि दिवस परभाते ॥१॥ रहाउ ॥ सागर सांत सनेह रस,डुबकी लाइ नहाते ॥ मिलि सखीआं हरि राविआ,हउमै बिसरी ताते ॥२॥ तन मन धन सभ अरप कै,सूख बिहानी राते ॥ जीवालहि तां तेरिआ,मारहि तेरी गाते ॥३॥ करि रोगी सिमराइआ,अनरोगी हरि बाते ॥ श्रीचंद्र संतन रिदै,दुख सुख एकहि जाते ॥४॥३७॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग आनंद ॥ आपहि आप उबारहि करता,दोखी दुस्ट खपाए ॥ निंदक कै मुख दाग लगाइआ, ध्रिग ध्रिग सगरे थाए ॥१॥ हरि करते की वडिआई ॥ निंदक मार धरनि तल दीनै,जन की पैज रखाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो निंदा करत संत की,संत वडाई चाहै ॥ निंदा उसतति संतन तिआगी, गोबिंद गुण अवगाहै ॥२॥ हरि प्रभु करते खेल रचाइआ,अंतरि वस्तू पाई ॥ जैसी पाई तैसी निकसहि,वडिआई छुटिआई ॥३॥ तन साजे द्वंद वाद बणाइआ,कुदरत का विसतारा ॥ श्रीचंद्र गुण गोबिंद गावै,करते पुरुख मुरारा ॥४॥३८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। निंदक दुस्ट बिदारे करते,आपन कर पुरुसाई ।। काढ खड़्ग सिर काट गिराए, जन कउ भए सहाई ।।१।। गोबिंद जन कउ सदा सहाई ।। जो जो निंद करै संतन की,करता मार पचाई ।।१।। रहाउ ।। जन की पैज राखबे कारण,नंदग कर निज लीनो ।। चक्र सुदरसन चौदह लोकन,तेज जनायो पीनो ।।२।। कउण सूरमा जाया जग महि,कौमोदक सहि चोटा ।। प्राणन कउण राखहै सनमुख,सारंग सिउं कर ओटा ।।३।। दुस्ट दैत्त निंदक अहंकारी,मारे संख वजाया ।। श्रीचंद्र किय विजै नाराइण,संतन केर सहाया ।।४।।३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग आनंद ।। संत सुखी करतार सुखी,दुखी संत हित होइ ।। संतन कर ते सस्त्र सभ हित,प्रभु के निज खोइ ।।१।। किआ करबो आयुध करि राख ।। जन का साहिब शक्ति संपन्ना,कोऊ न साकत वाक्य कु भाख ।।१।। रहाउ ।। सभ जन द्रिस्टि अग्रज थिरै,पेखत ता कै करम ।। निंद अनिंद किहं मन

धसी,जानत अंतरि मरम ॥२॥ रावण मार बिदारिओ,लाइ विभीखण अंग ॥ बाली प्राणन नास किय,कंठ सुकंठ प्रसंग ॥३॥ केसी कंस चाणूर हत,जरासंध बिनसाइ ॥ उग्रसेन के सिर छत्र,श्रीचंद्र झुलवाइ ॥४॥४०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग आनंद ॥ हरि प्रभु मेरा पूरणो,सरब कला धर आप ॥ कर निज दे कर राखता,परिहर ताप कलाप ॥१॥ सदा सहाई गोबिंद आप ॥ पहुँच न साकत जन तेरे कउ,कोटि सूर परताप ॥१॥ रहाउ ॥ बिकट घाट नदी तारबे,बेड़ी आप बनाइ ॥ कोटि बिघन खिन मै हरै,लगे न तत्ती वाइ ॥२॥ हिरणकसिपु बिदारिआ,निकसै थंम उपाड़ ॥ दे निज हाथ उबारहै,गिरते जान पहाड़ ॥३॥ अनल बिनासी पवण सिउं,अदभुत कला दिखाइ ॥ श्रीचंद्र आनन्द सिउं,हरि हरि नाम धिआइ ॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग आनंद की वार ।।

सलोक- सत्गुरु दाता जिअ का,नाम द्रिढ़ावत जोड़ ।। पूरण गुण हरि नाम के,उर महि देत परोइ ।।१।। तम अगिआन न चूकई,सूरज चंद प्रकास ।। सत्गुरु पूरा भेजिआ,निरमल आतम भास ।।२।। पारब्रहम परमेस्वरो,पूरण सत्गुरु देव ।। निज की निज ही जान करि,सगल जनावत भेव ।।३।। **पउड़ी-** गुरु अविनासी सेव,परम सुख पाइआ ।। अगम अगाध अपार,अगोचर धिआया ।। जनम करम फल काट,अलख लखाया ।। जम गण काढे छाट,सुरगण लाया ।। अगिआन विखम गढ़ तोड़,डंक वजाया ।। चौदह भुवन मझार,न रुके रुकाया ।। जोड़ अजोड़हि जोड़,तन तनहाया

|| **सिर साहा** पातिसाह,श्रीचंद्र सुहाया ||१|| **सलोक-** सच्चा सत्गुरु सेविऐ,सच्च होवै परगास || सच्चे ते सच्च परगटै,कूड़े घटै रास ||१|| सच्चे महि सच्च ऊपजै,झूठे झूठ उपाय || सत्गुरु सेवहि आपणा,सच्च पदारथ पाय ||२|| सच्चा व्रत सत्गुरू का,चानण अंतरि कीन || तीन लोक चौदह भुवन,सत्गुरु कीन अधीन || ३|| **पउड़ी-** सच्चा सत्गुरु सेव,सच्चहु पाइऐ || जनम मरण संसार, बहुड़ि न धाइऐ || अंधकार अगिआन,गुरु दीपाइऐ || हउमै गरब निवार,गिआन कमाइऐ || झूठी दुनीया जान,न आप विञाइऐ || थिर नाराइण राम,मन तन लाइऐ || उस्तति निंदा तिआग,हरि गुण गाइऐ || श्रीचंद्र वडभाग,गुरु सरणाइऐ ||२|| **सलोक-** गुण गावत गोबिंद के, त्रिसना त्रिखा निवार || नाराइण इक नाम ही,संतन सच्च वपार ||१|| अच्चुत अपर अपार प्रभु,हरि हरि हरि गुणतास || सच्च पदारथ पाइऐ,संतन कै घर रास ||२|| लाहा नाम धन खटीऐ,तोसा पंथ भयान || दूख भूख नहि विआपई,सिमरत हरि भगवान ||३|| **पउड़ी-** संतन कै परसादि,हरि गुण गावणै || आनंद सूख महान,सहिज समावणै || जम कै पंथ मझार,दूख न पावणै || देव करत जोहार, राम रमावणै || धूपहुँ करन उबार,तानन छावणै || कंटक लाग न पाइ,पावड़ भावणै || आनंद

सिउं घरि जाइ,महल सुहावणै ॥ श्रीचंद्र बिगसाइ,नाम धिआवणै ॥३॥ **सलोक-** जिनि जिनि हरि प्रभु धिआइआ,मुकत पदारथ हाथ ॥ अउघट गलिआं भीड़िआं,नाम सुखाला पाथ ॥१॥ संत संग गोबिंद रस,गुण निधान अवलोइ ॥ निरगुण गुणवंतै भए,काक हंस गति जोइ ॥२॥ पावन पतित पुनीत लख,गुण गावत गोबिंद ॥ दुरमति दूजा दुरत दर,बिनसी माया चिंद ॥३॥ **पउड़ी-** हरि गुण गावत जगत महि,लख पतित पुनीता ॥ हउमै दुतिया परिहरै,निरमल भए चीता ॥ दूजा भाउ बिसारिऐ,सगलो भव मीता ॥ परमेस्वर नाराइणो,अम्रित रस पीता ॥ दुरजन दुस्ट विकारीआ,मन कलपन जीता ॥ औझड़ विखम भयानकै,मारग निरभीता ॥ सफला आया जनम लै,सफला गमनीता ॥ श्रीचंद्र प्रभु नाम जपु,निरबंध अतीता ॥४॥ **सलोक-** स्वाति बूंद कहु पाइ के,सीप धसै धर माहि ॥ मरिआँ मोती निकस है,हरि हरि नाम रमाहि ॥१॥ नाम रमै नहिं निकस है,लगै समाधि अगाध ॥ राम सुधा जब पाइऐ,तब ही मरणो साध ॥२॥ मरिऐ बिन जीवन नहीं,जीवन मरणो होइ ॥ राम राम महि रम रहै,रमणो जानै सोइ ॥३॥ **पउड़ी-** नाराइण समुहाइ,न पाछै परतीऐ ॥ जीवन पदवी पाइ,बारी मरतीऐ ॥ संतन सैन मझार,भरीऐ भरतीऐ ॥ जीवन मरबे संग,लगाई

सरतीऐ ।। पहले सीस उतार,आपन करतीऐ ।। पाए प्रभु दरबार,रचाए नरतीऐ ।। एको एक आधार,दूजा हरतीऐ ।। श्रीचंद्र हरि रंग,रचावन ररतीऐ ।।५।। **सलोक-** जीवन जगत सुआय,इत दर आय न कोय ।। मिलिहै प्रीतम आपणा,जे तन देवै खोय ।।१।। जे चाहत हरि नाम रस,निज जीवन को तिआग ।। नहीं म्रितक तन ऊपजत,काम कोध्र मोह राग ।।२।। इही निसानी साधु की,पंचन लीनहु जीत ।। जब लगि वैरी सिर खड़ै,कैसे ह्वै निरभीत ।।३।। **पउड़ी-** गढ़ मन बिखम रचाया,करि दुहरी खाई ।। तीनहु परै बंधाइ कै,निज सैन टिकाई ।। चारे बहीआँ घेरीआँ,को आइ न जाई ।। दुआरै काम खलारिआ,त्रिअ तोप दिवाई ।। क्रोध संग साथी लए,बड धूम मचाई ।। मोह पसारा पसरिआ, सुत साक सहाई ।। गोला लोभ चलाइआ,हरि धुंध लखाई ।। श्रीचंद्र हरि नाम सिउं,संतन जित्त पाई ।।६।। **सलोक-** मनमुख सेती संग करि,बूडे काली धार ।। संगति कागाँ सूकरा,सुआन डूँडाँ खुवार ।।१।। गुरुमुख हंस पछाणिए,मानसरोवर वास ।। मोती दूधै खाइऐ,आतम हरि बिस्वास ।।२।। अवगुण छोडहु गुण रवहु,संतन की सिख लेहु ।। आपहि मिट्टी सिर परै,हीरा खाण खनेहु ।।३।। **पउड़ी-** गुरुमुख हरि रंग माणिआ,रस प्रेमहि राता ।। गुण गावहि गुण उचरहि,गुण सिउं नित

नाता ।। मनमुख अवगुण खाण है,गरकी का खाता ।। डूबे बहुरि न निकस है,जलते नित ताता ।। हुंमसि धुंमसि कूकिआँ,को सुनहि न बाता ।। कोऊ रख न सक है,सुत दारा माता ।। गुरुमुख संगति सेविआ,सद निकटि बिधाता ।। श्रीचंद्र नित सोचदा,गुरुमुख संगाता ।।७।। **सलोक-** क्रिपा निधान सुख सागर,गोबिंद हरि प्रतिपाल ।। निज लड़ लाइ उधारिआ,बालक लहुड़ा पाल ।।१।। औगुण सभी मिटाइ कै,अपने हाथ लऐय ।। औकड़ कोइ न आवई,बिघना सरब हरेय ।।२।। प्रभु सच्चा जिस मिहरबान,तिस जन उतरी भुक्ख ।। चार पदारथ कर तले,कदि न विआपै दुक्ख ।।३।। **पउड़ी-** नाराइण सद मिहरबान,औगुण न चितारे ।। अपने जन लड़ि लाइ कै,कर दै उबारे ।। नरक पड़ंते करम गति,भुज पकड़ि निकारे ।। भवसागर चिंता भरा,बूडत निसतारे ।। आदर जाहि न देवही,सो तखत बिठारे ।। सगल जगत त्रिपतासिआ,कण कण के मारे ।। आजुध दीने कातरन,महाराजै हारे ।। श्रीचंद्र हरि सिमरते,त्रिलोकी भारे ।।८।। **सलोक-** मारग मुकता पाइआ,बीथी भीड़ी त्याग ।। दुस्मन दूत न को रहिआ,गोबिंद सिमरन लाग ।।१।। सफल मुहूरत सफल घड़ी,खिन पल निमख समार ।। संत संग हरि गुण रमहि,कतहुँ न आवै हार ।।२।। प्रेम पदारथ पाइआ,हरि हरि नाम

धिआइ ॥ रस रंग आतम माणया,रामहि रहहि समाइ ॥३॥ **पउड़ी-** साधु संगति के संग,गोबिंद धिआइआ ॥ नाम चलूले रंग,मनहि रंगाइआ ॥ कूड़ कमावण ढंग,सच्च गवाइआ ॥ सूहा कीना भंग,लाल सुहाइआ ॥ गगन मंडल की चंग,नाच नचाइआ ॥ घोड़ा गिआन सुरंग,चित चढ़ाइआ ॥ मन तन भए अभंग,अम्रित पाइआ ॥ श्रीचंद्र मन जंग,जीत सो आइआ ॥६॥ **सलोक-** कूड़े गंढण गंढिए,आपहि नरक डुबंत ॥ धन लालस रहि गंग तट,चीनत नहि भगवंत ॥१॥ वेद पुराण वखाणिऐ,माया मन लपटाइ ॥ आवण जाणा सिर रहै,जम की चोटा खाइ ॥२॥ काबे हज्ज सिधारिआ,आयत पढ़ी कुरान ॥ दोजख अगनि तपाइआ,मन बैठा सैतान ॥३॥ **पउड़ी-** तीरथ न्हाइ न सुद्ध होइ,मन मैला जोई ॥ काम क्रोध मोह विआपिआ,दरगहि नहि ढोई ॥ सासत्र सिम्रिति वेद वाक्य,धन हेतु अलोई ॥ नित्त नमाजै पंच,निव दुरवैर विगोई ॥ काबे पाथर चुंमिआ,दुरमति नहि खोई ॥ मढ़ीआँ कबराँ पाहना,कलि स्रिस्टी डुबोई ॥ मिट्ठे पाणी पीतिआँ,मति सुद्ध न कोई ॥ श्रीचंद्र प्रभु नाम जपु,संग साधू लोई ॥१०॥ **सलोक-** मन की मैल उतारिए,साधू संगति रंग ॥ दुरमति मल निरवारिए,राम नाम इक संग ॥१॥ बिरथे अनिक उपाव सभ,हरि सिमरन ते हीण ॥

जाञी लाड़े ते बिना,बूझत कोइ न दीन ॥२॥ पथ बिन अउखध खाइऐ,रोग न नासत कोइ ॥ साधू संगति जे मिलै,मरम पीड़ दे खोइ ॥३॥ **पउड़ी-** संता संगति पाइ,दुरमति खोइऐ ॥ अंतरि कपट विकार,हउमै धोइऐ ॥ सिमिरत हरि को नाम,अम्रित चोइऐ ॥ काम क्रोध की अगनी,पाणी ढोइऐ ॥ कास्ट पाप अपार,भसम करोइऐ ॥ रंगणि रंग पिआर,सुरति समोइऐ ॥ पारब्रहम करतार,नैन अलोइऐ ॥ श्रीचंद्र संग साधु,हरि हरि गोइऐ ॥११॥ **सलोक-** जोगी भूखा होइआ,कंन पड़ाए जाइ ॥ घर घर मांगे भीखिआ,लाज लगाई नाइ ॥१॥ गावत गीतन मंदरी,पंडित भूखे पेट ॥ अधिक पदारथ पाइ कै,रहे गधे सिउं लेट ॥२॥ मुसलमान भुक्खा भया,घर महि ठटी मसीत ॥ मुल्लां बांग नमाज सिउं,बन बैठे बिपरीत ॥३॥ **पउड़ी-** भेखी ब्रहम न जानीऐ,लख दंभ करीजै ॥ काले पीले लाल रंग,वसनन पहरीजै ॥ न्हाए धोए तिलक धर,हरि नाहिन भीजै ॥ बुरगू बाँगां उचीआँ,कुल लोक सुणीजै ॥ नाच गाइ के तालीआँ,देव न परसीजै ॥ कावर सुरसरि नीर सिउं,शिव लिंग धुवीजै ॥ राग नाद धुनि तान सिउं,अखंड पड़ीजै ॥ श्रीचंद्र हरि अंतरे,सच्च नाम रिझीजै ॥१२॥ **सलोक-** वासन हितु करते पुरुख,मन मंदर सुभ साज ॥ कपट विकारन मल लिया,ठाट ठटाइ दराज ॥१॥

खोलत नाहि कपाट द्रप,आवत लौट परे ।। चक्र काटत हरि प्रभू,मारग बनन धरे ।।२।। हरि मंदर ते काढि कै,सागर छीर धकेल ।। बूडत नहि नाराइणो,मेल अमेलहि मेल ।।३।। **पउड़ी** – पंच चोर घर महि धसै,बिख पती सुँघाई ।। कामिनि काम लुभाइआ,सुध रही न काई ।। माया धंधै धावणी, परदेसन जाई ।। भूखन बसन सुहावणे,अंगराग सुहाई ।। खिन पल भोगहि भोग कै,धन माल लुटाई ।। सुता सुतन मन मोहिआ,कहुँ टिकण न पाई ।। तन ताणा सभ खीन भा,उड़ गया हवाई ।। श्रीचंद्र सागर डुबा,गए पंच पराई ।।१३।। **सलोक**– मन जलनिधि लहरी बिखै,उकसन दे न प्राण ।। अंतु समै पछताइगो,धरहैं जबहि मसाण ।।१।। हरि बोहिथ न पाइओ,किस बिधि उबरहि लोइ ।। जिउं जिउं करम कमाया,तिउं तिउं फल भी होइ ।।२।। मन हरि सागर पाइओ,हरि मन दिओ धकेल ।। गोते खाइ न मरत है,अम्रित गोबिंद पेल ।।३।। **पउड़ी** – भोग भोग नहि त्रिपतिआ,रोगन वरधाइआ ।। काम अगनि तपताइआ,दुख दरद उठाइआ ।। भूख त्रिखा संताप सहि,जम मारग पाइआ ।। अनिक तरंग विकारिआ,नहि टिकै टिकाइआ ।। जैसा करम कमाइआ,फल तैसा खाइआ ।। भोजन मिट्ठा कैस ह्वै,मिरचहि बहुताइआ ।। जिनि जिनि नाम आराधिआ,तिसि सुफली

काइआ ।। श्रीचंद्र नित सुख लहरि,हरि मन बसाइआ ।।१४।। **सलोक-** मनमुख आपन जस चहै, गुरुमुख का जस टार ।। लागहि कालख दाग मुख,ध्रिग ध्रिग लहि धिकार ।।१।। मनमुख मूल न भिज्जई,मैला चित्त कठोर ।। निंदा करता पच मूआ,अंदरु बिख निकोर ।।२।। मूल न जाणै आपणा,पर निंदा लपटान ।। झूरै नहि गुण पावही,अवगुण केरी खान ।।३।। **पउड़ी-** अवगुण पचहि पचाइआ, गुण लहहि न कोई ।। लख विसूरत जे रहहि,अवगुण नहि धोई ।। निंदा करता मरि गइआ,निज जीवन खोई ।। पूरब ही सिर भार था,अपरो लिए ढोई ।। उस्तति किसे न कीतीआ,फिरिआ सभ लोई ।। गुण कीरति कीरति लहहि,अवगुण न होई ।। संत संग हरिगुण रमहि,गुण हार परोई ।। श्रीचंद्र नमस्कारदा,गुण पल्लै जोई ।।१५।। **सलोक-** सत्गुरु सच्च द्रिढ़ाइ के,गुण भंडार दिवाइ ।। निगुरे अवगुन वणजिआ,बिरथा जनम गवाइ ।।१।। नाम अराधहि सद सदा,गुरु गुण दाते संग ।। मुख उज्वल नित सुख अनंद,मंगल छेम स्वछंद ।।२।। गुण अवगुण सभ जगत महि,तन मन माहि निवास ।। संत संग गुण पाइऐ,आतम राम प्रकास ।।३।। **पउड़ी-** बूंद अकासहुँ गिरि पड़ी,कित आई न कामा ।। सीप पसारे मुख लई,मुक्ता फल जामा ।। कदली माहि कपूर भी,गंध बिथरी आमा ।। बंस

बंसलोचन भई,गुण संगति के धामा ।। मनमुख संगत अउगुणहि,गुण पै गल यामा ।। गुण लखि गुरुमुख संगती,जपंत नर गामा ।। विकारी फल पाया,लानत का जामा ।। श्रीचंद्र गुरु संगती,सोभा हरि धामा ।।१६।। **सलोक-** करते साज बणाइआ,कुदरत कै विसतार ।। तारे गगन ठहिराइ प्रभु, पवणै कै आधार ।।१।। रूप रंग नर नारि के,भिंन भिंन रचि दीन ।। एकहि जाती अनिक बिधि,कुदरत गुण परबीन ।।२।। मनमुख गुरुमुख औगुणी,गुणी विकारी सील ।। साज सजाए कुदरतहुँ,खिन महि करी न ढील ।।३।। **पउड़ी-** पारब्रहम परमेस्वरै,सभ स्रिस्टी उपाई ।। कुदरति रचन रचाइआ, नाना बिधि जाई ।। अंन धन दै प्रतिपालदा,सभ बणति बणाई ।। वैरी मित्र बणाइंदा,मित्रहुँ वैराई ।। कुदरत कादर वसि है,को लख न सकाई ।। जिउं तिस भावै तिउं चलहि,नहि फेर फिराई ।। कादर को सालाहीऐ,कुदरत दरसाई ।। श्रीचंद्र कुदरत लखै,कादर इक भाई ।।१७।। **सलोक-** प्रेम पदारथ पाइ के,गुंगा बोला होइ ।। देखण सुणणा भुल्ल कर,आपहुँ आपा खोइ ।।१।। रत्ते रंग गुपाल कै,मस्त भयो सरबंगु ।। प्रीतम पिआरा पाइ कै,पाव गए भे पंगु ।।२।। सीस काट भेटा करे,निज कर गहि करवार ।। हस हस प्रीतम रविए,केवल महिल मंझार ।।३।। **पउड़ी** - प्रेम पिआला पी,मस्त

रहाइऐ ।। नींद न भुक्ख न तेह,न आप जणाइऐ ।। निज कर सिउं सिर काट,भेट चढ़ाइऐ ।। सिर बिन नाच नचाइ,ताल वजाइऐ ।। बोलन चालन सुनणा,छोड छुडाइऐ ।। जे होवहि वडभाग,ता प्रीतम राइऐ ।। पारब्रहम कै रंग,आप गवाइऐ ।। श्रीचंद्र तन छोड़ि,पुगहिं दाइऐ ।।१८।। **सलोक-** प्रीतम केरे देस महि,सह तन गयो न कोइ ।। तन खोए जे सहु मिलै,भाग सुवलड़ा होइ ।।१।। जप तप संजम करम धरम,सील सोच इस्नान ।। दान दया जत सत सगल,प्रेम विहीन मसान ।।२।। बिधे प्रेम के तीर,पाछै पांव न पावहि ।। मन धन अरप सरीर,प्रीतम प्रेम विहाझहि ।।३।। **पउड़ी-** प्रीतम प्रेमहि बेधिआ,नहि आन सुखावै ।। रस वसि मीन न निकलै,मरणै बिध जावै ।। म्रिग नाद सुणि धाइआ,मरणो हिति आवै ।। जीवत भवर न आइआ,कमलों मुड़ धावै ।। दीपक सिखा पतंग को,हित मरण बुलावै ।। सूरवीर जुध खेत ते,हार करि नहि आवै ।। सती चिखा चढ़ि मरण है,संग पती सुहावै ।। श्रीचंद्र जिस प्रेम उर,तिस मरणा भावै ।।१६।। **सलोक-** कच्चे तिआगहिं जगत महि,पक्के नहिं परलोक ।। पक्की संगति पाइ कै,सोइ निहचिंत असोक ।।१।। कच्च वपार कच्चो करहि,पक्क विहाझहि पक्क ।। तन मन धन कच आखीअहिं,पारब्रहम परिपक्क ।।२।। लोभ लाग संग मिल बहिं,प्रेम

न उपजै हीय ।। लब पूरे उठि जात ग्रिह,दुख दै संगी जीय ।।३।। **पउड़ी** - कच्ची संगति लगिआँ, अंतरि बिख माया ।। दूख भूख नहिं सहि सकहि,उर लोभ बसाया ।। भरे विकारी विचरदे,नर जाल फसाया ।। लोभ लगि मानुख हतहिं,धन सरब चुराया ।। गुरु चेले ध्रिग जीवणा,ध्रिग करम कमाया ।। जीवत सेव न कीनीआ,मरिआँ पूजाया ।। सिर डंडे गल संगली,जम मारग पाया ।। श्रीचंद्र तिनि संग ते,राखहु हरि राया ।।२०।। **सलोक**- विरले सच्च वापारिआ,सच्चे संग मिलाहि ।। नाराइण उरधार कै,मोख दुआर लखाहि ।।१।। लाख करोड़ी साधु इक,विरला कोई होय ।। तिनि की संगति जे लहहि,वडभागी जन सोय ।।२।। मारग मुकता पाइऐ,साधु संगि लिव लाय ।। जनम मरण दुख परिहरै,आतम सत्त समाय ।।३।। **पउड़ी**- सच्चा साधू सेवीऐ,मारग मुकताया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,पुनि जनम मिटाया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,हरि मंन वसाया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,नहि बंधन माया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,हउमै दूराया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,नहिं झूठ कमाया ।। सच्चा साधू सेवीऐ,हरि अलख लखाया ।। श्रीचंद्र साधू सच्चा,दरगाहों आया ।।२१।। **सलोक**- पारब्रहम प्रभु आपणा,आगे साथी संग ।। आपनड़ै लड़ लाइ कै,कबहुँ न छोड़े अंग ।।१।। एकस सहाई जीअ का,

सच्चा सिरजणहार ।। सिमरि सिमरि सुख पाइआ,सच्च नाम करतार ।।२।। अम्रित हरि का नाम है,पीवै पीवणहार ।। रस वसि तन मन खोइआ,लग्गा रंग मुरार ।।३।। **पउड़ी**-पारब्रहम परमेस्वर,नाम वखाणीऐ ।। दूजा भरम निवार,एको जाणीऐ ।। चार दिहाड़े जीवण,रंग पछाणीऐ ।। नदी काल तन मानुख,मिलि हड़वाणीऐ ।। चरन कमल गुरुदेव,हरि रस माणीऐ ।। दुनिआँ झूठ गुमान,मन नहिं आणीऐ ।। साधू संगति पाइ,पद निरबाणीऐ ।। श्रीचंद्र उर माहि,प्रभु सिञाणीऐ ।।२२।। **सलोक**- सभ भुक्खां मन ऊतरी,साधू धीरक पाय ।। अंतरि गोबिंद जाणिआ,नाराइण हरिराय ।।१।। माया की भुख बिनस जाय,सिमरत हरि का नाम ।। कोटि कलेस निवार करि,निहचल सुख बिसराम ।।२।। जनम जनम की मैल हरि,उज्वल चित प्रकास ।। गिआन पदारथ पाइकै,प्रगटाया गुणतास ।।३।। **पउड़ी**- आसा त्रिसना उतरी,सिमरत हरि का नाम ।। गुणनिधि गोबिंद पाइ,सुख सहिजै बिस्राम ।। अंतरि द्रिस्टि आइआ,नाराइण राम ।। प्रतिपालै जन सास सास,खट रस संग ताम ।। विघन विनासन दुख हरण,सुख करण प्रणाम ।। रोग निवारण राग द्वेस,पूरण गुण धाम ।। अनुभव आतम पाइऐ,संग संतन ग्राम ।। श्रीचंद्र द्रिढ़ उर गही,साधू हरि साम ।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।।

सतगुरु सेव परमपद पाइ,हरि नाराइण रहहि समाइ ।। नाम निरंजन सार पदारथ,जपत जपत पावहि परमारथ ।।१।। रिद महि राम नाम परगासे ।। अंधकार अगिआन विनासे ।।१।। रहाउ ।। सांति उपाव परमपद दरसै,आतम अंतरि हरि प्रभु परसै ।। सभ सुख नौनिधि नाम पुनीत,सत संतोख दया संग प्रीत ।।२।। सरब जोति एकहि भगवान,राम नाम रस अंतरि मान ।। पूरण पारब्रहम प्रकास,घटि घटि महि प्रभु एक निवास ।।३।। सच सूचा गोबिंद हरि सुआमी,सगल जीव की हरत खुनामी ।। ऊचे ते ऊचा प्रभु मेरा,श्रीचंद्र सभ थान बसेरा ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। वडभागी हरि नाम सम्हार,दरगहि कबहुँ न जावत हार ।। गुण गोबिंद नितह नित गाउ,आगे मिली निथावै थाउ ।।१।। पूरण पारब्रहम प्रभु सुआमी ।। सगल घटा का अंतरजामी ।।१।। रहाउ ।। ऊच नीच सभ घटि महि रविआ,संत जना मुख गोबिंद गविआ ।। करता पुरुख अगम अपार,जिअ जंतु करता प्रतिपार ।।२।। लेप छेप लग सकै न कोइ,सरब थान प्रभु पेखै सोइ ।। दूर न नेरा कहिओ न जाइ,अंतरि बाहरि सरब समाइ ।।३।। अगम अगोचर सभ ते ऊचा, सिमरि सिमरि हरि महल पहूँचा ।। पाप पुंन से सदा निआरा,श्रीचंद्र उज्वल दरसारा ।।४।।२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जपत जपत हरि निरमल होई,प्रभु की दरगहि पावत ढोई ।। जन हित लाग धरनि पर आइ,कस्ट सहारै भगत सहाइ ।।१।। जरा मरण ते रहित नाराइण ।। सिमरत नामहि भगत पराइण ।।१।। रहाउ ।। सरब कला समरथ गुरुदेव,साधू संगति लहिऐ भेव ।। जन की धूड़ बिनासे पाप,आपहि जानहि आपन आप ।।२।। जिनि जिनि सेविआ साधू संग,पारब्रहम तिसि लागा रंग ।।

सहिज समाना आतम माहि,आवण जाणा निकटि न ताहि ।।३।। गोबिंद नाम मंजीठ रंगाया,उतर कुसुंभा बिनसी माया ।। परमानंद रंग रसि माणै,श्रीचंद्र हरि रंग निरबाणे ।।४।।३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। भगतन कै मन सदा अनंद,गुण गावत नित गुरु गोबिंद ।। सदा सूख पद सहिज निवास,ऊरध कमल भया परगास ।।१।। हरि गुण गावत हरे भए ।। सरब अनंद नवनिधि प्रभु दए ।।१।। रहाउ ।। गए कलेस चिंत सभ नासी,गावत गोबिंद हरि अविनासी ।। अबिचल थान बसे अति ऊचै,मन तन प्राण भए भव ऊचै ।।२।। नाराइण के नाम आधार,वरसाइआ सगरो संसार ।। द्रिस्टि धार राखे हरि आप,संतन कै केवल हरि जाप ।।३।। बिनसी वेदन तात पराई,सगल स्रिस्टी समता वरताई ।। श्रीचंद्र संग संतन साध,गुण गावत माधव आगाध ।।४।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जिनि जिनि हरि का नाम धिआया,सरब भांति सुख सिउं वरसाया ।। राग द्वेस

ईरखा मद माया,परिहर करि आतम रस पाया ।।१।। राम नाम जपु भए पुनीत ।। हरि हरि गावत नीता नीत ।।१।। रहाउ ।। वैर विरोध गए खिन माहि,अम्रित पाया अमर कहाहि ।। सांति भई सभ तपत बिलानी,राम नाम जपु अम्रित बानी ।।२।। परमल वास सुगंध बसाई,जनम जनम की उतरी काई ।। पाप विकार बिखै रस चूरे,संत जना पग परसी धूरे ।।३।। काम क्रोध अहंकार गवाए,भगत जना संगि भगति कमाए ।। आपा खोइ भए निरबाण,श्रीचंद्र संतन कुरबाण ।।४।।५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग भैरव ।। निंदक के मुख कालुख दाग,निंदक जलिआ निंदा आग ।। जम मारे निंदक सिर डंड,दूत बिदारत गहरी चंड ।।१।। लाथी निंदक की बहु डंझ ।। अरड़ावत बिललावत झंझ ।।१।। रहाउ ।। निंदक के उर अधिकै ताप,सहि न सकत संतन परताप ।। निंदक की सगली कुल नास,निंदक का नाही बिस्वास ।।२।। कहिनी अपर कमानी और,बिट बिट ताकत बौरै तौर ।। कारो काग विस्टा सिउं प्रीति,त्रिसना वैरिन लीनी जीत ।।३।। दइ विगूता मारिया काल,मारग नरकनि कीनी चाल ।। संत सभा नहिं निंदक थाउ,श्रीचंद्र निंदक सिर सुआउ ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। सेव संत सफलायो लोक,उज्वल कीनी गति परलोक ।। सोभा राज वैभव वडिआई,मति कीरति गति भूल भलाई ।।१।। सुखी बसै संतन की सेव ।। पारब्रहम को पाया भेव ।।१।। रहाउ ।। त्रिपत भए सभ उतरी भूख,आसा त्रिसना बिनसे दूख ।। जीवन मुकति अनंद बिसाल,सेव संत सिउं भए निहाल ।।२।। संत सेव ते प्रापति होइ,प्रभू सिंघासन जोति अलोइ ।। गिआन परगास संत की सेवा, परमानंद नाम रस मेवा ।।३।। अमर भए अम्रित रस पीआ,जनम मरण को दूख न थीआ ।। श्रीचंद्र संत सेव लगाइ,मोखंतर पद खिन महि पाइ ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। नाम निधान दीआ गुरुदेव,भुज गहि लायो अपनी सेव ।। परा पूरबला अंकुर जागिआ,काम क्रोध मन सिउं उठि भागिआ ।।१।। सत्गुरु पूरे कउ कुरबान ।। जास क्रिपा ते पद निरबान ।।१।। रहाउ ।। अंधकार महि भा उजिआला,हरि हरि नाम पदारथ पाला ।। चार पदारथ कर महि दीने,राम नाम रस अंतरि भीने ।।२।। सोझी पाई अम्रित मेवे,पारब्रहम उर अंदरि सेवे ।।

भोजन भाउ सच्च त्रिपताने,जग लोकन ते भए निकाने ।।३।। ब्रहम पाइ ब्रहम हो गए,जम दूतन के भै निरभए ।। पूरण पारब्रहम गुरुदेव,श्रीचंद्र जिहं मुकत करेव ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। तपति माहि वरताई ठांढ,जनम जनम के टूटे गांढ ।। भूख बिनासी हरि के नाइ, सहिज सूख आनंद समाइ ।।१।। सत्गुरु पूरे के बलिहारी,भवजल बूडत बेड़ी तारी ।।१।। रहाउ ।। गिआन प्रकास चानण संसार,नास किओ अगिआन अंधार ।। अभर सरोवर सुभर भरे,कोटि जनम के सूखे हरे ।।२।। सुफल फले अम्रित रस पाया,दुत्तर तरी बिखम अति माया ।। राम राम रमते वडभागी,मैल उतारी मन कउ लागी ।।३।। पतित पुनीत किए दै हाथ,दरसायो कानन रम पाथ ।। अगनि निवारी सीतल कीन,श्रीचंद्र सत्गुरु प्रबीन ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। लिव लागी नाराइण नाम,पूरन होए सगले काम ।। आसा त्रिसना सगल बिनासी, परम पुरुख सत्गुरु अविनासी ।।१।। मुहि गरीब लीनो लड़ि लाइ,काम क्रोध ते लियो छुडाइ ।।१।।

रहाउ ॥ सगल विकारी हार परोए,जनम जनम के किलबिख खोए ॥ गरत घोर महि निघरत जाते,हाथ दै राखिओ गुरु दाते ॥२॥ सत संतोख दया तप दान,धरम करम नामो इस्नान ॥ दै गुण कीने अवगुण छीन,सूखम ते सूखम हरि चीन ॥३॥ राम नाम जपु निरमल चीत,गुरु प्रसादि वैरी सभ मीत ॥ आवण जाणा सगल बिनासा,श्रीचंद्र की पूरन आसा ॥४॥१०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ सत्गुरु पूरे के परताप,उर ते बिनसे तीनहु ताप ॥ पूरण पारब्रहम गुरुदेव,सेवक लायो अपनी सेव ॥१॥ नीचहुँ ऊच किए खिन माहि,सुधा नाम मुखि संचि जीवाहि ॥१॥ रहाउ ॥ दिब्य द्रिस्टि प्रगटानी लोइ,करता करे सोई सभ होइ ॥ ना को पंडित नही अयाणा,जो किछु वरतै प्रभु का भाणा ॥२॥ तिस भावै तां भोग भुगावै,तिस भावै तां चने चबावै ॥ तिस भावै सिर देवै ताज,तिस भावै सभ का मुहताज ॥३॥ तिस भावै कीरति संसार,तिस भावै होवै संग सार ॥ तिस भावै जग पैरी पाइ,श्रीचंद्र गति लखी न जाइ ॥४॥११॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। करणहार करता गोबिंद,नाराइण प्रतिपाल नरिंद ।। जिउं भावै तिउं राखै रहिणा, प्रभु का भाणा सिर पर सहिणा ।।१।। मानुख भरम भुला संसार,द्रब्य अल्प ते ह्वै अहंकार ।।१।। रहाउ ।। प्रभु भावै ता नीचहुँ ऊच,प्रभु भावै सगरो पुंन मूच ।। प्रभु भावै बहु जोनी वास,प्रभु भावै खिन माहि खलास ।।२।। प्रभु भावै ह्वै है बादसाह,प्रभु भावै सभ लस्कर सुआह ।। प्रभु भावै सभ आगिआकार,प्रभु भावै दर दर दुरकार ।।३।। प्रभु भावै बूडै विकार,प्रभु भावै निरमल आचार ।। प्रभु भावै सुरलोक सिधाइ,श्रीचंद्र सभ तिसहि रजाइ ।।४।।१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। बलि राजा पाताल पठायो,जै विजै दैत्तन तन पायो ।। हिरणकसिपु अनाजुध घावा, त्रिसंकू उलटा लटकावा ।।१।। नाराइण प्रभु गरब प्रहारी,नहि पावत हरि को अहंकारी ।।१।। रहाउ ।। हरिसचंद्र बनमहि भरमाइ,विप्र हत जनमेजै पछुताइ ।। मसक इंद्र भा राज गवाइ,संध उपाटी जरासंधाइ ।।२।। कालयमन भा भसम मसाण,भील न हत भे अरजुन बाण ।। कौरव जादव

गरब बिनासे,खुआर कीन नारद बहु खासे ।।३।। हसन खलीफे सन बिख दई,मरिओ हुसैन खलाफत चही ।। श्रीचंद्र तिस परसत चरन,गरब किओ जिहँ उर ते हरन ।।४।।१३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। नाराइण नरपति नमस्कार,जास जपत भवजल निरवार ।। जहँ तहँ सदा सहाइक देव,संत जना उर पायो भेव ।।१।। सरब लोक पूरण प्रभु सुआमी,सरब घटा का अंतरजामी ।।१।। रहाउ ।। कारण करणहार करतार,संत जनां का प्राण अधार ।। प्रतिपालक सगले जीअ जंतु,जगत उधारण जा का मंतु ।।२।। आदि पुरुख सभ कालहिं सिद्धि,आन न जा सम होयो व्रिद्धि ।। दीन दरद दुख भंज किरपाला,अरि घालक सेवक सुख साला ।।३।। गुण निधान पूरण परमेस,तीन लोक महि अमिट आदेस ।। वण त्रिण विआपक गिआपक सोइ,अंग संग श्रीचंद्र रमोइ ।।४।।१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। नाम जपत निरमल मन चीत,नाम जपत जन पतित पुनीत ।। नाम जपत पावन नर काइ,नाम जपत भव का हितकाइ ।।१।। जन को पिआरा हरि हरि नाम,नाम जपत पूरण सभ

काम ।।१।। रहाउ ।। नाम जपत मुख ऊजल भए,जनम जनम के किलबिख खए ।। नाम जपत पद ऊच निवास,नाम जपत उर गिआन प्रकास ।।२।। नाम जपत सभ कस्ट बिनास,नाम जपत सुख सहिज निवास ।। नाम जपत जन सभ का पूज,नाम जपत नासत हउं दूज ।।३।। नाम जपत मन निरमल गंगा,नाम जपत पावन सरबंगा ।। नाम जपत अठसठ मजनाया,श्रीचंद्र रिद नाम समाया ।।४।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। गुरुमुख सिउं लाईए मन हीत,गुरुमुख संगति पतित पुनीत ।। गुरुमुख संगति हरि हरि जाप,गुरुमुख संगति बिनसै ताप ।।१।। गुरुमुख संगति परमपद पाइ,गोबिंद गुण सद अहनिसि गाइ ।।१।। रहाउ ।। गुरुमुख संगति मोह मान घटै,गुरुमुख संगति ममता छटै ।। गुरुमुख संगति आतम सूझ,गुरुमुख संगति मन सिउं जूझ ।।२।। गुरुमुख संगति सुर गुण वास,गुरुमुख संगति कमल विगास ।। गुरुमुख संगति द्रिस्टि झीन,गुरुमुख संगति गुण गण बीन ।।३।। गुरुमुख संगति सत संतोख,गुरुमुख संगति प्रापत मोख ।। गुरुमुख संगति दरगहि साथ,श्रीचंद्र गुरुमुख प्रभु

आथ ॥४॥१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ गुरु परमेस्वर एकै रूप,पारब्रहम गुरुदेव सरूप ॥ म्रितक को गुरुदेव जिवाया,अम्रित नाम मुख माहि पिआया ॥१॥ सरब कला समरथ गुरुदेव,सफला दरसन सफली सेव ॥१॥ रहाउ ॥ हरि सिउं बिछड़े दिए मिलाइ,अनिक जनम के पाप मिटाइ ॥ त्रिसना अगनि बुझी भए सांति,संसै भरम बिलानी भ्रांति ॥२॥ नौनिधि नाम पाइ त्रिपताइ,नाराइण प्रतख्य दिखाइ ॥ निघरत जाते लिए उबार,चिंता जलनिधि पार उतार ॥३॥ काम क्रोध बिनसे अहंमेव,अनुभउ पायो अहंब्रहमेव ॥ सत्गुरु कउ बलिहारै जाउ,श्रीचंद्र पद कंज समाउ ॥४॥१७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ सद ही बाल अवस्था पाई,सांति भई ब्रिति काम गवाई ॥ अनिक तरंग माया के मेट,हरि नाराइण सिउं किए भेट ॥१॥ धन्य धन्य सत्गुरु पूरा,जिहँ प्रसादि भयो पूरण ऊरा ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल महि दीनो थाउं,सूधा कीनो बींगा पाउं ॥ डोलन ते चूके धरमाइ,

निहचल भए सुधा रस पाइ ।।२।। कालख मेट उज्वल कीने,गिआन परगास हिरदै महि दीने ।। अमर भए अम्रित मुख पाया,आसा त्रिसना नासी माया ।।३।। बंधन काटि मुकत पद दीना,गोबिंद गोबिंद सिमरन कीना ।। श्रीचंद्र सद सद कुरबान,गुरु प्रसादि भया निरवान ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग भैरव ।। महामूढ ते कीनो गिआनी,गुरु पूरे की अकथ कहानी ।। सूके ते मन हरिआ कीन, अभर भरे सुभर रस दीन ।।१।। गुरू गुरू गुरु जपु मन माहि,फिरि फिरि आवण जावण नाहि ।।१।। रहाउ ।। काटी सिलक माया मन वेड़ी,बहिते जात चढ़ाए बेड़ी ।। गगन मंडल महि चाढ़े आप, अंधकार बिनसिओ परताप ।।२।। दुज्जन सज्जन एक समान,विआपित नाहिन मान अमान ।। सदा सुहेले सूख अनंत,सत्गुरु नाम दीन भगवंत ।।३।। गांढे जनम जनम के टूटै,सगरे अवगुण मन ते छूटै ।। गुरु अविनासी कारण करण,श्रीचंद्र गही चरनन सरण ।।४।।१९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग भैरव ।। गुरु पूरे दे राखिआ हाथ,प्रभु मेरा अनाथ को नाथ ।। जनम जनम की मैल मिटाई,

पारब्रहम सिउं दीआ मिलाई ।।१।। दूख न गणिओ दासहिं कोइ,अपनी सरणी लीआ ढोइ ।।१।। रहाउ ।। तपति मिटी सुख सांति बसाई,हउमै दुबिधा मन की हाई ।। सगल स्रिस्टी के होए मीत, अंतरि दुतिया खोई भीत ।।२।। एको एक बसिआ मन माहि,हिंदू मुसलिम सरब समाहि ।। नही बिगाना रहिआ कोइ,आतम राम एक अवलोइ ।।३।। मेर तेर सभ दई मिटाइ,पारब्रहम सगरे भव माहि ।। सरब कला पूरण गुरुदेव,श्रीचंद्र इक सत्गुरु सेव ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जिनि जिनि पारब्रहम प्रभु धिआया,गुरु परसादि महारस पाया ।। परदा चूका अंतरि केर,एको एक सरबमय हेर ।।१।। बुधि बदली सगली सिधि पाई,गुरु मंत्र सद रिदै धिआई ।।१।। रहाउ ।। अधम चंडाल ब्रहम पद पावा,वैर विरोधहि रही न ठावा ।। नरके जाते सुरग पुजाए,एतहि आवन बहुरि न आए ।।२।। अगिआन अंधेर परायो दूर,सगले कसमल कीने चूर ।। सगली थाई एको सोइ,तिस ते बिरथा होइ न कोइ ।।३।। जिअ जंतु सगरे प्रभु तेरे,नित गुण गावत सांझ सवेरे ।। श्रीचंद्र गोबिंद धिआया,सत्गुरु पूरे मंत्र कमाया ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मुहि निरगुण अति नीच अयाना,गुरु पूरे निज चरनी लाना ।। राम नाम दीनो उपदेसा,राग द्वेस सभि हरे कलेसा ।।१।। सद बलिहारी सत्गुरु देव,आपहि अपनी लाइओ सेव ।।१।। रहाउ ।। उक्त सिआणप सगल मिटाई,हरि हरि राम नाम गुण गाई ।। करणहार करता करतार,सरब भांति जग रहिओ सम्हार ।।२।। जिउं भावै तिउं जीव चलावै,जिउं भावै तिउं खेल खिलावै ।। मेल बिछोड़ै आपहि सोइ,कीतै कै कछु करै न होइ ।।३।। मारनहार जीवालन हारा, पारब्रहम प्रभु अगम अपारा ।। श्रीचंद्र कउ दीनो नाम,सत्गुरु पूरे कउ कुरबान ।।४।।२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। संत सेव वडभागी पाईए,हरि हरि रामहि मंन वसाईए ।। मन की मैल बिनासन हारे,भवसागर ते करत किनारे ।।१।। बलिहारी संतन दरसार,प्रगटायो जिनि जन निरंकार ।।१।। रहाउ ।। अठसठ तीरथ परब इस्नान,संतन संगि हरी गुण गान ।। सगले पुंन परापति भए, हरि हरि नाम रसन नित लए ।।२।। नाम नाराइण रस उपजाइ,क्रोध लोभ मोह दूरि भगाइ ।।

अगम अगोचर गोचर कीना,सीतल सांति आनंद भा सीना ॥३॥ पारब्रहम संतन रिद वास,सेवक जानत जोति प्रकास ॥ श्रीचंद्र संतन की सेव,जनम मरण गति काल हरेव ॥४॥२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग भैरव** ॥ तन मन धन संतन कउ दीना,जिह परसादि अंतरि सुख लीना ॥ काटी माया की पग बेड़ी,पारब्रहम के कीनसि नेड़ी ॥१॥ संत सेव बिनसी हउ पीर,अंतरि आतम उपजी धीर ॥१॥ रहाउ ॥ घोर नरक काँढे चाढ़े,जमदूतन के लाथे भाड़े ॥ माया सिलक काटि रख लीने,अगनि सागर महि जलन न दीने ॥२॥ दुत्तर तरे निवारे ताप,नाराइण को जपिओ जाप ॥ तपत बुझानी सीतल भए,अनुभउ गोबिंद गुण रंग रए ॥३॥ दुरत मिटाइ पुंन फल पाया,करणहार सभ नदरी आया ॥ मुहि गरीब कउ दई पनाह,श्रीचंद्र संग साधु समाह ॥४॥२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग भैरव** ॥ बार बार मैं कहउं निहोरी,संतहु सुनहु बिनंती मोरी ॥ मुहि पापी कउ लेहु रलाइ, चरन कमल की रख सरनाइ ॥१॥ राम नाम मुख अम्रित दीजै,कोटि जनम के कसमल छीजै ॥१॥

रहाउ ।। महां कठोर पाहन मन मोरा,सागर महि भी नरम न भोरा ।। निसदिन काम क्रोध रंग राता, परधन परतन परत्रिअ माता ।।२।। अनेक भांति चितवहुँ बुरिआई,लोभ लहिर मति भी हलकाई ।। निंदा करि सिर भार उठावहुं,उदर भरन हित पाप कमावहुँ ।।३।। समै कुसमै न नीति अनीत,जानहुँ नाही दुरजन मीत ।। जिउं जानहुँ तिउं लेहु संभार,श्रीचंद्र तुमरे दरबार ।।४।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग भैरव ।। गरते कूप दुरत महि गहिरे,संत जना धरि काढे बहिरे ।। कालुख धोई उज्वल कीने, जस गावत सभ लोक प्रबीने ।।१।। संत किरपा ते पाई निधि,सरब भांति की प्रापत सिधि ।।१।। रहाउ ।। आगिआकारी सगले देव,आसा मनसा पूर करेव ।। तीन लोक होई जैकार,हरि हरि गावत भरे भंडार ।।२।। जिअ जंत सभ सेव कमावत,बादसाह भूपति सिर निआवत ।। सरब लोक महि दोही फिरी,कोइ न मेटे लेखी चिरी ।।३।। कर जोरे इंद्रा दर ठाढी,देवलोक महि कीरति बाढी ।। सगले जिअ जंत वरसाए,श्रीचंद्र संतन पर पाए ।।४।।२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ संतन कै बलिहारे जाउं,जास किरपा ते पाइआ नाउं ॥ नौनिधि रिधि सिधि आगिआकार,हरि का नाम जपत निरंकार ॥१॥ तुच्छ जीव ते ब्रहम भए,तन मन मेट अविचले थए ॥१॥ रहाउ ॥ तीन लोक ढूँढत जिस ताई,सरब देवते रहे हेराई ॥ ब्रहम बिताइ दए जुग केते,लहिओ न ता कउ कछु हूँ भेते ॥२॥ लाइ समाधि परलै परयंत,महादेव हूँ लहिओ न अंत ॥ अनिक जनम बिसनू धरि आया,नाहि पछानी हरि की माया ॥३॥ नारद सारद साल रिखीस, बकदालभ अज प्रिथू महीस ॥ जा का भेद न पाइओ काहु,श्रीचंद्र संतन ते लाहु ॥४॥२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ संत हमारे सदा ही पूज,संतन सगल बिनासी दूज ॥ संत हमारे प्राण आधार,संतन संग मोर बिउहार ॥१॥ संत संग मोरी मित्राई,अगम निगम की सोझी पाई ॥१॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपिआ मुहि नाउं,संत प्रसादि राम गुण गाउं ॥ संत प्रसादि ते सूका हरिआ,संत प्रसादि चतुर खल खरिआ ॥२॥ संत प्रसादि काम क्रोध गए,संत प्रसादि निरमल उर भए ॥ संत प्रसादि बिखम गढ़

तोड़ा,संत प्रसादि पाप ते मोड़ा ।।३।। संत प्रसादि सरब ते ऊचा,पारब्रहम कै देस पहूचा ।। संत प्रसादि ते अबिचल थान,श्रीचंद्र संतन कुरबान ।।४।।२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। संतन संगि निमाणे माण,संतन संगि निताणे ताण ।। जा को मिलै न कतहूँ ढोई,सगली स्रिस्टी उस की होई ।।१।। संतन जेवड अवर न कोइ,अति पापी बड पुंनी होइ ।।१।। रहाउ ।। संत निरधन को धनी कराइ,गूह खजाना देत दिखाइ ।। संतन ते निरगुण गुणवंता,अम्रित सोमा निझर झरंता ।।२।। संत संगि ते नीचहि ऊच,संत संगि पुंनन फल मूच ।। संत संगि तरु कल्प सुहाना,जो जो चितवहि सो सो पाना ।।३।। संत संगि चिंतामणि चित्त,बिनसे रोग अनेक अमित्त ।। कामधेनु सतसंगि लवेरी,श्रीचंद्र अन भूख न नेरी ।।४।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। परमेस्वर संतन का संगी,संत सदा परमातम अंगी ।। ओत पोत हरि जन हरि आप, आपहि आप जनावत आप ।।१।। नित्त अवतार हरी के संत,हरि गुण गावत गुणी रमंत ।।१।।

रहाउ ।। आपन आप जनावत काजा,संत होत सभ जग का राजा ।। आपहि जानत अपना भेव,आप सिखावत हो गुरुदेव ।।२।। मन को मांज सवारे आप,बीच थिरावै हरि हरि जाप ।। प्रगटावै उर गिआनहि भान,महा अंध तम हरत अगिआन ।।३।। सीतल चंद्र सुधा बरसंत,क्रिसी सुरस जुत गुण गुनवंत ।। महानाद संतन मुख गावा,श्रीचंद्र मन म्रिग बंधावा ।।४।।३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। साधु बिना नहिं साच सु थान,साधु बिना मन कहुँ न गहान ।। साधु बिना सभ झूठो गिआन,माया बंधन कारण मान ।।१।। मुखहुँ बखानहि हरि हरि बोल,धन हित अंतरि रोल घचोल ।।१।। रहाउ ।। साधु बिना अठसठ नर न्हाइ,सगली मैल भरा गंधिआइ ।। साधु बिना तन चंदन लाइआ,ग्रिह ग्रिह मांगत सबर न आइआ ।।२।। साधु बिना बहु करम कमाइ,त्रिसना बाधा नरके जाइ ।। साधु बिना जग धरम न कोई,वैर विरोध जली सभि लोई ।।३।। साधु बिना नाही निरवेद,ईस जीव को मिटत न भेद ।। साधु बिना नाही संतोख,श्रीचंद्र किमि होवहि मोख ।।४।।३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मन रे,अब ही नाम सम्हाल,किआ जानै कब खै है काल ।। तरुण न बालक जानै सोइ, जब चाहहि करि अग्रज ढोइ ।।१।। हरि हरि नाम जपहु मेरे मीत,साधु संग होहि परम पुनीत ।।१।। रहाउ ।। दिन दुइ चार मिली नर देह,अंत काल ढरि होसी खेह ।। जिनि कारण करि कूड़ि कमाई, जम मारग नहि होहिं सहाई ।।२।। बहु जोजन प्रिथवी पति होया,प्राण निकसते भया सड़ोया ।। लसकर नेब खवास दीवान,है गै रथ तजि एकल जान ।।३।। औखधि मंत्र मित्र चतुराई,एक सास भी नाहि बढाई ।। राम नाम एकहि संग साथ,श्रीचंद्र परमारथ आथ ।।४।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। बिन हरि सिमरन नहि छुटकारा,सिम्रिति सासत्र वेद पुकारा ।। जोग सिधि आसन चउरासी,खोलत नाही गल जम फासी ।।१।। सभ ते ऊतम हरि को नाम,सिमरि सिमरि सभ पूरन काम ।।१।। रहाउ ।। अठसठ तीरथ मज्जन कीन,सागर सप्तन डुबकी लीन ।। सिंधु मेखला फेरा पाइ,नहि आवत मन एक सु थाइ ।।२।। गिरा म्रिदुल मुख किअ उपदेस,तन मे खूब सजायो वेस ।।

जटा जूट नख भसम रमाई,देस देस निज फेर दुहाई ॥३॥ नाटक चेटक साधन साधै,करम धरम बड बंधन बाधे ॥ हरि सिमरन बिन फोकट धरम,श्रीचंद्र भजि हरि हरि करम ॥४॥३३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ राम नाम जपु होहु सुचेत,ध्रुव प्रहलादहि ते ग्रिह भेत ॥ गनिका उधरी जपते राम, अजामेल बैकुंठहि गाम ॥१॥ मंत्र राम राम नित जाप,आगे दरगहि नहि संताप ॥१॥ रहाउ ॥ रसना पावन राम उचारै,मन पुनीत गुरु मूरति धारे ॥ चरन पुनीत जाइ सत संग,कर सफले सेवक जुत अंग ॥२॥ जहां राम तहं सगले देव,राम राम रटते ब्रहमेव ॥ राम राम धुनि अनहद नाद, ताड़ी लागी रस विसमाद ॥३॥ राम राम जपु होहि पुनीत,राम नाम इत ऊतहि मीत ॥ वरण जाति मिटि रामहि होत,श्रीचंद्र हरि साधू गोत ॥४॥३४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ साधु जना की सेव कमाइ,राम नाम उर अंतरि पाइ ॥ डोम चंडार राम लिव लागै, मुसलमान हिंदू वडभागै ॥१॥ जिनि जिनि जपिओ हरि को नाम,तिनि तिनि पायो प्रभु को धाम ॥१॥

रहाउ ।। हरि हरि नाम जपै लिव लाइ,पारब्रहम मै रहहि समाइ ।। अम्रित राम नाम रस चाखै, जरा मरण फिरि दूख न लाखै ।।२।। सभ साधन ते ऊचो राम,जपत जपत आनंद बिस्राम ।। कलि कालुख सभ देत बिडार,राम नाम हिरदै महि धार ।।३।। राम रमै सोई रामाणा,राम राम जपि राम समाणा ।। संत जना का भूखण राम,श्रीचंद्र नित भजि हरि नाम ।।४।।३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। चार दिवस के जीवन काज,किउं चितवत है पाप अकाज ।। बिनस जाइगी झूठी देह, गगन मंडल महि उडहै खेह ।।१।। राम नाम ह्वै एकै मीत,जपु जपु हूजै निरमल चीत ।।१।। रहाउ ।। दारा मीत सुता सुत सारे,तजि कर तो कउ होहि किनारे ।। जिनि सिउं नेह अगनि तिनि लाई,तिनका तोड़ अए ग्रिह भाई ।।२।। जिनि हित कस्ट महान सहारा,किनहूं दिओ न आन सहारा ।। जिस काया कउ बहुबिधि पाला,सो रहि गई प्रेत की साला ।।३।। त्रिण पूले सम केस जलाहि,हाड लाकड़ी ज्वाला माहि ।। श्रीचंद्र जग मिथिआ खेड,राम नाम सिमरहु नर ढेड ।।४।३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग भैरव || सुंदर वस्त्र पहिन सिंगारी,पालन कीनी पुस्ट अहारी || चूने गज मंदर महि वास, हाटक मंचन कीनो वास ||१|| खिन महि तिआग पधारो जीअ,हरि को नाम सखा नहि कीअ ||१|| रहाउ || छत्तीह भोजन अम्रित कीने,मेवे मधुर सेव परबीने || द्रब्य बटोरिओ देसन जाइ,अंत न काहूँ कीन सहाइ ||२|| मीत बनाए अनिक प्रकारी,खोड़ सींगार सिंगारी नारी || चित्र बचित्रे रंग तमासे, अनद विनोद हास उपहासे ||३|| हुकम चलाए बैठ दीवान,मूछ चढ़ाई होइ सुलतान || श्रीचंद्र सभ तिआग परायो,अपना कीआ आपहि पायो || ४||३७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग भैरव || करुणा निधि दीन दुख भंजन,सदा सहाइक संतन रंजन || सुख सिंधु किरपाल दयाला,जग नाइक पाइक प्रतिपाला ||१|| मुहि अनाथ की करहु समाई,भुज गहि लीजै अपन बनाई ||१|| रहाउ || अनिक प्रकारी भरे विकार,काम क्रोध मोह लोभ अहंकार || पुत्र कलत्र जेवरी फाथा,बंधू जन के बिकिओ हाथा ||२|| चितवहु अनिक भांति बुरिआई,माया मोहिआ टेढो जाई ||

द्रब्य आस लगि पाप कमाए,तम अगिआन हिरदै अंधिआए ॥३॥ त्रिसना परधन परतन केरी, साधु संगति के जाउं नेरी ॥ बखसस कीजै करणैहारे,श्रीचंद्र राखहु निज दुआरै ॥४॥३८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ स्वास स्वास जन करहु संभाला,भोजन अनिक प्रकारी आला ॥ सरब पदारथ देते दान, पाट पटंबर पहिरण कान ॥१॥ किआ गुण तेरे आख वखाणा,तूं समरथ सदा मुहि ताणा ॥१॥ रहाउ ॥ जिहबा एक कैस गुण गाऊं,मोह अंधिआरे जान न पाऊं ॥ हस्त पाव नेत्र दिए दान,सरब जोनि महि बड सनमान ॥२॥ स्रवण आनंद माणन हित कान,भोग भोगाए सभ बिधि जान ॥ मंदर महल अटारी घनी,हेत निवासै दीनी धनी ॥३॥ मुहि निरगुण गुण जान न पाया,बखस लेहु हरि प्रभु रघुराया ॥ खतह असंख न चित धरेहु,श्रीचंद्र राखउ निज गेहु ॥४॥३९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ बखसस करता सरब पदारथ,तन मन धन सुत सुता स्वारथ ॥ जा की वस्तु सोऊ लै जाइ,काहे मानव मन पछुताइ ॥१॥ आपन होइ तु राखहु मोहि,नाराइण की वस्तु संदोहि ॥१॥

रहाउ ॥ बंधू मात पिता अरु दारा,मंडप माड़ी महल अपारा ॥ धरणी बाग बगीचै फूल,अस्व सिअंदन मत गज झूल ॥२॥ भूसन बसन सिहज विस्तार,पायक दास अनुचर अनुहार ॥ पान पुहप रस गंध सुहाई,आपन होवत तउ संग जाई ॥३॥ आपन नाहीं एहु सरीर,का हितु बंधिओ बंध गंभीर ॥ मोह तिआग हरि चरनी लाग,श्रीचंद्र जे होवी भाग ॥४॥४०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ मूरख काहे कऊ बखलाया,तुमरी नाहिन देऊ माया ॥ रूपा कंचन मोती माल,मणि माणिक अरु हीरे लाल ॥१॥ संग न चालहि कोऊ गवार,देखहु आपन नैन पसार ॥१॥ रहाउ ॥ छोड चलत संगि पूत सयाने,दुहिता बैसी महल बिगाने ॥ नारी महितारी पित बंधु,मिथिआ माया का सभ धंध ॥२॥ बालक युवा बिरध भई देह,रोग सोग रस भोग सनेह ॥ तिआग पराने सगरे जीव,दरगह कोऊ न संगी थीव ॥३॥ कस्ट अपार सहे को हेत,ओड़क पहुँचन मरघट खेत ॥ श्रीचंद्र भजि नाम मुरारि,मुख ऊजल ह्वै है दरबारि ॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जो देही अति हितकर पाली,घ्रित सनेह सरकरा साली ।। दूध सनिग्ध पदारथ खाए, चंदन अगर कपूर लगाए ।।१।। अंत की बार अगनि महि डारी,सरब ओर पेखत नर नारी ।।१।। रहाउ ।। अम्रित भोजन किए अहार,अंबर पट पसमंबर धार ।। सीत उस्न ते बिबिधा कपरे,मखमल मखतूली तास परे ।।२।। पहिर बादला किओ सिंगार,चरमंबर धरि बिबिध प्रकार ।। रोग गवाए औखधि खाइ,संग रसाइन भोग रचाइ ।।३।। बरखा घाम निवारन हेतु,चित्रित चित्रन रचे निकेतु ।। अनिक जतन सिउं रहे न प्राण,श्रीचंद्र भजि पद निरवाण ।।४।।४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। राम राम जपु राम सुचीत,आगै लहहि सदा सुख मीत ।। मन निरमल इह लोक सुहेला,सदा अनंद करत नित केला ।।१।। अंधकार अगिआन बिनास,अंतरि आतम गिआन प्रकास ।।१।। रहाउ ।। माया बंधन बिनस बिनासा,उज्वल अंतहकरण प्रभासा ।। बुद्धि प्रगास मिटै अंधिआरा,सगरो दीसहि ब्रहम पसारा ।।२।। दिब्य द्रिस्टि पेखै सब लोइ,ऊंधो कमल सु सूधो होइ ।।

साजन मीत संत का संग,अनदिन रहहि प्रेम रस रंग ॥३॥ पाप ताप बिनसहि उर ठाँढ,जनम जनम का टूटा गाँढ ॥ श्रीचंद्र हमरै इक राम,आन वसतु सिउं नाहीं काम ॥४॥४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ संत सजन ग्रिह मोरे आवहु,हरि हरि नाम कीरतन गावहु ॥ नित सुनावहु गोबिंद कथा,मन की मैल उतारहु यथा ॥१॥ प्रेम नाद पूरहु दिनरात,नाराइण मुख उचरहु बात ॥१॥ रहाउ ॥ राग नाद धुनि प्रेम विलास,हरि सिमरत सभ बीतहि सास ॥ पंच सबद झुणकार अनंद, गुण गावत निसदिन गोबिंद ॥२॥ अहंबुद्धि बिनसहि परधाना,मेर तेर तजि नाच नचाना ॥ सासत्र वेद पुराण पुनीत,पारब्रहम प्रकटावन रीत ॥३॥ सहिज समाधि अगाध अडोल,परम तत्तु झकझोल निरोल ॥ राम नाम संग बाढै प्रीति,श्रीचंद्र को दीजै नीति ॥४॥४४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ नाम संग मन प्रीति न लावै,निसदिन ओर विकारन धावै ॥ अंतरि कपट न खुले ग्रंथि,जारी चोरी का द्रिढ़ पंथ ॥१॥ ऐसी दया करहु भगवंता,मारग पावहु साधन संता ॥१॥

रहाउ ।। आसा त्रिसना कूकर खाई,लोभ लहिर सिर लिओ बूडाई ।। भव सागर अति गहिर गंभीर, चिंता चकरी परिओ सरीर ।।२।। नक्र बक्र घन पाप महान,मुख पसारे चाहत खान ।। बोहिथ साधु न दीसत नेरे,नाम खेवट नहि ऊपर बेड़े ।।३।। भरि मुख पाणी राम न बोल,आस भरोसा छुटका झोल ।। भुज गहि किरपानिधान दयाल,श्रीचंद्र को लेहु निकाल ।।४।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जानहु नाहिन कोऊ रीत,कैसहि गावहु गोबिंद गीत ।। चंग मुचंग उपंग पखावज, झालर ताल मंजीर अलावज ।।१।। न्रित न जानत बींगा पाउं,हे साहिब,तुहिं कैस रिझाउं ।। रहाउ ।। तू दयाल दयानिधि मेरे,मैं मूरख अवगुण की खाणी ।। नकुली साखरी रजधानी,त्रैतंत्री परिवादनि मानी ।।२।। नहिं विपंची आवत दाउ,सुंदरी मुंदरी केरि दबाउ ।। स्त्रुति मूरछना तार तम मंद,जानउ नाहिन स्वरन सबंद ।।३।। हाव भाव रस रीति अपारा,वादि संवादि अनुवादिन धारा ।। राग न रूप न मीठै बैना,श्रीचंद्र पर कीजै नैना ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। वेद वाद रत किए वखान,लोक रिझाए ला उपधान ।। साध जोग व्रिति जोड़ी ताड़ी,भसम

जटा नख साजी दाढ़ी ॥१॥ बिन हरि नाम न कोऊ काम,दंभ विथार विथारा आम ॥१॥ रहाउ ॥ सिध साधक चेटक फैलाए,नाद किंगुरी वाज वजाए ॥ फटक मुंद्रा कान सजाई,भयो दिगंबर छाई पाई ॥२॥ तीरथ अठसठ कै इस्नान,त्रैकाली संध्या संधान ॥ टिक्का धोती पहिर दिखावा,बन बेहड़ कंटक लपटावा ॥३॥ होम यग्य बहु करम कमाइ,तजि ग्रिह वास भ्रमै अन थाइ ॥ मन महि सांति न मुकति पदारथ,श्रीचंद्र बिन नाम अकारथ ॥४॥४७॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग भैरव ॥ मन महि राम नाम नहिं प्रीति,निसदिन गावहि गीत अनीति ॥ पैरी पै पै तिलक चढ़ावै,सालगराम मरजंगी थावै ॥१॥ राम नाम खिन मन न वसायो,फोकट करम करत दुख पायो ॥१॥ रहाउ ॥ विस्वनाथ कासी पग परसे,महाकाल त्रिअंबक दरसे ॥ बेणी संगम मज्जन कीआ,गोपी चंदन टीका दीआ ॥२॥ सेतु बंध ओंकार सिधावा,जाइ दुआरिका सागर न्हावा ॥ गंगा यमुना ताप्ती गोदावर,पंचमढ़ी भर आनी कावर ॥३॥ हिंगलाज कामाखिआ चंडी,अवधि पुरी सिंधु सीताखंडी ॥ बिन हरि सिमरन कहूँ न काज,श्रीचंद्र नित भजि रघुराज ॥४॥४८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। सभ ते ऊचा हरि भगवान,जिअ जंतु कउ देता दान ।। सार संमालै नित प्रति सोइ, पाहन कीटहि भी दै ढोइ ।।१।। मन किउं डोलहि हरि हरि चेत,गोबिंद गोबिंद भजि नित नेत ।।१।। रहाउ ।। अजगर कोऊ न करता कार,उदर भरै जल महि संसार ।। बच्च कूंज निज तिआग पराई, किमि जनमे किमि चोग चुगाई ।।२।। सरभा कौन चाकरी करै,बिन मुकतन के हंस न चरै ।। अनल आकासहि पूरत पेट,संग हुमा कै काहूँ लपेट ।।३।। सिकता कूरम तनय थिराइ,मारग आवन जान न काइ ।। प्रतिपालै नाराइण ताहि,श्रीचंद्र हरि हरि अवगाहि ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। तजि सुत मात पिता बंधु मीत,राम नाम सिउं कीजहि प्रीत ।। गुरु तजि बली नाराइण लागा,हरि किअ दुआरपाल नित जागा ।।१।। रहाउ ।। प्रहलादहि पितु तिआगन कीना,जल अगनि हरि ने किअ छीना ।।१।। बंधु तिआग आयो प्रभु सरणि,भगत विभीखन लंका धरणि ।। कैकेई मात तिआग करि भरतै,राम चरण रति बांधी सरतै ।।२।। पतिन तिआग गहिओ

यदुनाथा,सभ बिधि गोपी भई सनाथा ।। प्रभु हित लागि रैदास कबीर,सरब प्रकारी पाई धीर ।।३।। नाराइण सद सद बखसंद,निज दासन के काटत फंध ।। सभि तजि गही सरणि रघुराई, श्रीचंद्र जग फिरी दुहाई ।।४।।५०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। हमरै सरब भांति भगवाना,उर ते मेटिओ आवन जाना ।। चिंत न मन महि मरणौ केरी,आसा जीवन रिदै न हेरी ।।१।। खान पान पहिरन तन भोग,मन नहि विआपत जोग विओग ।।१।। रहाउ ।। जिनहि उपायो पालहि सोइ,तजि चिंता निहचल होइ सोइ ।। प्रारब्ध को सकहि न मेट,इस ते ऊपर वसतु न भेट ।।२।। बिन प्रारब्धै कर माहि सुधा,पी न सिकंदर टोकिओ गिधा ।। सुरपति नहुख भयो थिर पीठ,प्रारब्ध बिन लहिओ न ईठ ।।३।। जस जस लेख लिखिओ करतार,ता को कोऊ न मेटणहार ।। तजि सभ भरम हिरदै गहु राम,श्रीचंद्र करते वसि काम ।।४।।५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। करुणा कीजै करुणा कंद,राखहु सरणि अभागी मंद ।। हम पापी तुम बख्सणहार, करहु किरपा थक परे दुआर ।।१।। तुम बिन अवर न राखणहारा,गहि भुज कीजै पार उतारा ।।१।। रहाउ ।। अंध घोर महि बूडत जात,दीसत नाहि अंधेरी रात ।। गहिबर बन मूसत हैं चोर,त्रिसना अगनि जलत निसि भोर ।।२।। नक्र बक्र गण बक्र पसार,भै दाइक आवत बडिधार ।। काम क्रोध मोह लोभ पसारा,दहदिसि पसरिओ है अंधिआरा ।।३।। कूका हुंमसि धुंमसि राहीं,गहिनहार को नाही बाहीं ।। ऊची कहहुँ पुकारि पुकार,श्रीचंद्र कउ लेहु उबार ।।४।।५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। घूमणघेरी फाथी बेरी,कोऊ नावक नाहिन नेरी ।। पतवारै पतवार बहाइ,बहहि बेग सिउं उलटी वाइ ।।१।। तुम बिन साहिब नाही ताण,खिन पल ही महि निकसहि प्राण ।।१।। रहाउ ।। डोलत डोलत चीत बिहाल,मकर ग्राह नाकू घड़िआल ।। पेख पेख मन थर थर कांप,धीर बिहाइ न पावत चाप ।।२।। हाय हाय बिन सोय न कोय,चारहुँ दिसा रहे सभ रोय ।। कौन पाप को

लेखा एहु,कौन थान महि पाप घिरेहु ।।३।। अब तो सकत न कोऊ उबार,अंतक सनमुख रहिओ निहार ।। पारब्रहम हरि राम गोबिंद,श्रीचंद्र की मेटहु चिंद ।।४।।५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मोह मान हउं ममता घेरा,चहुँदिसि पसरिओ है जम जेवरा ।। आधि विआधि युत महा उपाधि,केहूँ भांति न साकत साधि ।।१।। जिउं जानहुं तिउं मोहि बचाउ,अपने चरनन संगि लगाउ ।।१।। रहाउ ।। दीनदयाल गुपाल गुबिंद,मन की मोह मिटावहु चिंद ।। निरगुणआरा गुण नहीं कोई,होहु किरपाल लेहु करि ढोई ।।२।। पाप विकार भरे उर माहिं,निसदिन कसमल अनिक कमाहिं ।। परधन परतन सिउं रुचि आइ,चरन कमल तजि दूरि पराइ ।।३।। अगिआन अंधेरे पंथ न पाया,दहदिसि पसरी माया माया ।। कामी कुचिल कठोर गवारा,श्रीचंद्र तुमरे दरबारा ।।४।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। ऊचे ते ऊचा प्रभु मेरा,संत जना के रिदै बसेरा ।। अपने दास करै प्रतिपाला,लाख पराधन मेटै बाला ।।१।। अवगुणि जान न मन परिहरै,अपने कउ नहि देवहि परै ।।१।। रहाउ ।।

क्रिपा कटाछ निहारै जाहि,ताहूँ की गहि लेवत बाहि ।। गुण अवगुण कछु चीत न धरै,सेवक जान दया रस ढरै ।।२।। अवघट घाटी मारग पावै,भूला भटका लेइ सिधावै ।। तोड़ि बिखम गढ़ काढै सोइ,पद पकराइ निकासै दोइ ।।३।। चिंता सागर देत सुकाइ,महा तपत महि ठंडी वाइ ।। निमख माहि सभ बंधन काट,श्रीचंद्र निज लायो बाट ।।४।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग भैरव ।। सिमरत नाम सभ तपत बुझाई,अनुदिन कीरति हरि गुण गाई ।। काटी सिलक किए निज दास,प्रेम पदारथ गिआन प्रकास ।।१।। राम नाम रस सहिज समाए,आपा खोइ आप हरि पाए ।।१।। रहाउ ।। पखा फेरउ पीसन पीसउं,पानी ढोवहुँ धरि धरि सीसउं ।। पग झारउं केसन सिउं नीत,संत जना सिउं हरि हरि प्रीत ।।२।। तन मन धन अरपउ कर जोरि,बारबार पग परउं निहोरि ।। देउं सूहनी संतन दुआर,राम राम नित रसन उचार ।।३।। गाथा गोबिंद अमर कहानी,साधु जना की अम्रित बानी ।। कथते पावन सुनत पुनीत,श्रीचंद्र के इत उत मीत ।।४।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। सिमरत नाम नहीं भै कोइ,मन निरमल पापा मल धोइ ।। गोबिंद जप तप भए पुनीत,साधु संग सिउं हरि हरि प्रीत ।।१।। संतन संग मुख ऊजल होइ,पारब्रहम उर भीतरि जोइ ।।१।। रहाउ ।। दीन दरद दुख भंजनहारा,जीव जंतु सभ पालनहारा ।। सदा सहाई अनाथन नाथ,साधु संग महि एकहि गाथ ।।२।। आतम राम रवि सभ लोई,घट घट अंतरि जोति समोई ।। आदि अनादि अगाध अनंत,राम नाम नित साधन मंत ।।३।। सहिज सूख आनंद निधान,हरि हरि रसना अम्रित पान ।। सरब जीआं पर सदा क्रिपाल,श्रीचंद्र संतन कै खिआल ।।४।।५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। प्रभु की जोति सगल घटि वासै,सिमरत नाम होत परकासै ।। चरन कमल महि लागै धिआन,मीठी बाणी अम्रित पान ।।१।। साधु संग जपीऐ प्रभु नाम,सरब सिद्धि पूरन सभ काम ।।१।। रहाउ ।। अंधकार महि जोति विकास,कसमल पाप निवार प्रभास ।। राम राम जप रिदै पुनीत,तीन लोक किअ सगरे मीत ।।२।। तत्तु विरोलै मथ हरि नाम,साधु जना सद एकहि काम ।। उधरै संत संगि

गुण गाइ,दरसन पाया अदभुत राइ ।।३।। परम अनंद बिसम रस पाया,दूजी दुबिधा परिहरि माया ।। करता पुरुख परगट उर भया,श्रीचंद्र संतन की मया ।।४।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। प्राणी सिमरहु गुण गोबिंद,पारब्रहम करता बखसिंद ।। सरब घटा महि रहिआ समाइ,ऊणी कतहूँ नाहीं थाइ ।।१।। नाराइण जपु होहि पुनीत,प्रतिपारक संतन का मीत ।।१।। रहाउ ।। चिंत अंदेसा परिहरि काइ,एकहु सिमरहु हरि हरि राइ ।। मोह अंधेरा सगल बिनासै,हरि हरि नाम जगत परगासै ।।२।। काम क्रोध बिनसै अहंमेव,राम नाम जप पावै भेव ।। गूढ़ वसतु प्रगटै प्रत्यखख,पारब्रहम का साखै लख्य ।।३।। निरभय होइ भजै भगवान,जनम मरन के बंधन हान ।। गुण गोपाल गोबिंद धिआय,श्रीचंद्र दहदिसि सद छाय ।।४।।५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। चार दिनन का जीवन भाई,बिनस जाइगो छाई माई ।। थंभा पवन स्वास ठहिरावा,चलता फिरता मंदर छावा ।।१।। भज मन राम नाम नरहरी,सुंञी देह रहेगी परी ।।१।।

रहाउ ।। बिन द्रिस्टि के नैन रहे हैं,कोऊ न रसना रसन गहे हैं ।। कर बिन करम पगन बिन चाला, बिन स्रोतन के स्रवनन आला ।।२।। गंध बिन घ्राण त्वचा अस्परसी,मुख दियुति बिना सोग अनहरसी ।। न्हाणा खाणा दूर परायो,भला बुरा कहुँ कहि न सुनायो ।।३।। वसन पहिरबो परिहर दूर,कफन ओढायो तन पर पूर ।। अंत की बार पुकारी धाह,श्रीचंद्र जग ऐवें सुआह ।।४।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। साह बादसाह खान सुलतान,तिआग सिधारे महिल मकान ।। रंक अरु धनी अमीर वजीर,सगल पधारे तिआग सरीर ।।१।। रहि न पायो जग महि कोऊ,राम नाम बिन साथ न होऊ ।।१।। रहाउ ।। सूरवीर रणधीर सयाने,जोगी जती तपीस महाने ।। पंडित गुणी फक्कर दरवेस, मीर मुलाने गिआनी वेस ।।२।। सीलवंत अपरस रामदासि,सिध साधक सादिक संनिआसि ।। महर मुकद्दम खान दीवान,सभा सीगार राउ पहिलवान ।।३।। वैषणव शैव भगउती लेख,पीर पैगंबर गौस असेख ।। जाचक दानी रहै न कोइ,श्रीचंद्र भजि राम अलोइ ।।४।।६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। सुर असुरन महि कोऊ न रहै,नर बपुरे की का कछु अहै ।। बडे बडे करामाती पीर, काहुँ न बांधी इह जग धीर ।।१।। सरपर चलना जाग अयाने,काहे कउ कूड़ी लपटाने ।।१।। रहाउ ।। सुंदर मंदर महल अटारी,चित्र बचित्रित चित्र सुधारी ।। मंडप छाइ चंदोए तान,खाली ह्वै हैं खान दीवान ।।२।। खोड़ सिंगार सिंगारी नारी,चुन चुन फूल सिहज विस्तारी ।। सिंघासन कंचन रुचि मान,सुञे रहि हैं बड उपधान ।।३।। बाग बगीचे पुहपन बारी,झरने झरत अनेक प्रकारी ।। अस्व सिअंदन नाग अरु यान,श्रीचंद्र तजि चला निदान ।।४।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मिथिआ संग रहिओ लपटाइ,रूपा कंचन गौरव काइ ।। धन जोबन दारा सुत नेह, पाप पोट सिर धारी खेह ।।१।। जपु मन राम नाम दिन राति,खेम कुसल सिउं दरगह सांति ।।१।। रहाउ ।। साजन मीत बंधु सनबंधी,मूरख आसा त्रिसना धंधी ।। बहुत गांव की धरणी घेर,भीति सवारी चहुँदिसि फेर ।।२।। होत दुआरै दुंदभि धुनी,भाट नकीब कलावत गुनी ।। गाइ गाइ जस

वंशोचार,जाचत जाचक भीर दुआर ।।३।। चतुरंग सेना संग चलंत,सभा बिराजै मंत्री मंत ।। बैठ सिंघासन हुकम चलाइ,श्रीचंद्र को संग न जाइ ।।४।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। नटवर नाट दिखाइ रिझावहिं,गीत गीतका गाइ सुनावहिं ।। कत्थक त्रितत लेवत फेरी,कनक दंड गहि नर गण घेरी ।।१।। पातिसाह सिर छत्र धराया,पारब्रहम प्रभु रिदहुँ भुलाया ।।१।। रहाउ ।। नगन अंग गन नारी चित्र,मंदर साजे चित्र बचित्र ।। सीस महल निसि सोइ बितावै,मदिरा आमिख भोज हितावै ।।२।। सेज सवारी गंधित फूला,पट रेसम पहिरे अनुकूला ।। भोग भोग बहु सुंदर नारी,कंदरप दरप निवारिओ झारी ।।३।। सभा सिंगार सभा जुत बैठा,त्रिप गण सीस निआवत ऐंठा ।। काल नगारा सीस बजायो,श्रीचंद्र उठि नांगि सिधायो ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। आसा त्रिसना कूड़े मोह,नरपति धरपति बधे संदोह ।। माल पसू धन संच रखाइ, बिगसहि हिरदै पेखै माइ ।।१।। कूड़ पसारा नास निदान,साच रिदै गहु साचा राम ।।१।। रहाउ ।।

उपजै सुत बहु खुसी मनाई,दहदिसि जननी वधाई गाई ।। गाड़ बजाड़ उपाड़ अनंदे,दान दिवाए अनिक स्वछंदे ।।२।। पठाड़ लिखाड़ विवाहिओ कीन,नाती नातिन रुचि धर चीन ।। बधिओ परिवार हरख सुख संपति,अनिक प्रकारी विलसति दंपति ।।३।। बिरध भया तन रोग उपाया,पेख नुहां मुख घूँघट छाया ।। चितवत चित किउं मरतो नाहि,श्रीचंद्र मन महि अवगाहि ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। केस गहे सिर काल खड़ा है,प्राण खैंचवे हेत अड़ा है ।। दिन पख दंड महूरत गनै, जनमहि ते स्वासन लौ जनै ।।१।। मूढ़े नाही जानत बेला,बडे बेग सिउं कर है हेला ।।१।। रहाउ ।। पिता पितामह छोडे नाही,कवन बाग तू मूली आही ।। जबि धरणी आकास भयो है,पवन पाणी अगनि निरमयो है ।।२।। जबि सागर परबत बिरखा,ब्रहमा शिव बिसनू सुर सुरच्छा ।। सूरज चंद्र तारे गन रचे,जीव जंतु चउरासी खचे ।।३।। इंद्र उपिंद्र गनिंद्र त्रिपारा,भैरव दुरगा आदि पसारा ।। सभ पर दंड काल का बाजा,श्रीचंद्र नरहूँ मुहताजा ।।४।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग भैरव || घड़ी पहिर पल मूरत काल,खिन खिन काया छिजत बिहाल || बाल अवस्था खेल गवाई,तरुण भए तरुणी हित लाई ||१|| राम नाम नहि राखिओ चीत,अंत समै जो तेरो मीत ||१|| रहाउ || बिरध भए तन रोगन घेरा,कफ कंठहि सांसन लिअ डेरा || सुता सुतन को नाहिन भावै,सेवा हेत त्रिआ कतरावै ||२|| लज्जा लोक चितव मन माहीं,साजन बांधव मीत मिलाही || पूछताछ जावत निज गेह,सभ कै छूटिओ मनहु सनेह ||३|| जम डंडा परिओ सिर आई,जीव आतमा लिओ चलाई || नारि दुहथड़ मारी धाह,श्रीचंद्र सभि भयो सुआह ||४||६७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग भैरव || बाल अवस्था छाडत नाहिं,तरुणापन नाही परवाहि || बिरध भये हूँ लेवत खाइ, काल दाड़ हाडन कड़काइ ||१|| मूढ़े राम नाम हित धार,फिरि पछतै हैं मरती बार ||१|| रहाउ || तिल पीड़े तेली ले तेल,रक्त रत्ती भर रहिओ न पेल || सुंञी देह भयंकर होई,प्रेत प्रेत कह छूए न कोई ||२|| भाई बंधु सीघ्रता धारी,नवाइ सजाइ विमान मझारी || धर काँधे मरघट के राह,फोरि

गगरीआ मारी धाह ॥३॥ दूध सिता घ्रित सिउं देह पाली,काठ चिता अगनी महि जाली ॥ हंस चलायो फोड़ कपाल,श्रीचंद्र नर ग्रासिओ काल ॥४॥६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ दिवस चार को खेल रचाया,अंतहि बिनसी झूठी माया ॥ थोड़े काज बुरो करि भारा, सीस उचायो बांधै छारा ॥१॥ डरि डरि मानुख पचै अपारा,काल न सिर पर करहि सुमारा ॥१॥ रहाउ ॥ दुख दै धन रंकन ते छीना,नारि सुतन लूट सभ लीना ॥ हत जीवन उर दया बिसारी,पाप पोट सिर भार अपारी ॥२॥ करम फेड़ सभि लोक सताइ,बिगसि बिगसि धर धरतो पाइ ॥ द्रिस्टमान की घूमनघेरि,आगै चलनो नैन न हेरि ॥३॥ दुस्ट प्रभावी मूछन ताउ,ध्रिग जीवन गन नर दुखदाउ ॥ रे मूरख सिर जानहुँ काल,श्रीचंद्र उर राम सम्हाल ॥४॥६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ आपन कीआ कमाना पाना,तबि काहे को बुरा कमाना ॥ तुमरो कीआ तुमहूँ भोग, अपर नहीं कछु करनै जोग ॥१॥ नहिं सोचहिं कछु करमनि मांहीं,राम नाम कबि धियायो नाहीं ॥ रहाउ ॥ जैसा करहि तैसा ही पाय,घट वध नहिं होत कदाय ॥ जो दुख दै हैं तो दुख पै हैं,जो सुख दै हैं तो

सुख लै हैं ।।२।। जग को पेखि काहे भखलायो,अंत न कछुहू संगि सिधायो ।। मैं मेरी मूरख उरझाना,जो कछु पेखैं सोऊ बिगाना ।।३।। जो तेरो होतो संग जाता,बिरथा काहि धरी उरताता ।। राम नाम जपि निरमल चीत,उधरहिं श्रीचंद्र हे मीत ।।४।।७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। जिनि जनि भजिआ गोबिंद नाम,सिद्धि भए सब ताके काम ।। पूरन होई सगली आस, नाम नाराइण उर परकास ।।१।। राम नाम ते चार पदारथ,करि प्रापति नर सदा क्रितारथ ।।१।। रहाउ ।। काहूँ भांति न ऊणी होई,चरन परसती सगली लोई ।। सुनत पुनीत कहित पवित्र,साजन सखा सुहिरद सुमित्र ।।२।। गुप्त प्रगट सुर आगिआकार,निसदिन करते चरन जुहार ।। भ्रम भै छेद निरमल उर भए,राम राम मुख सिउं प्रगटए ।।३।। सगले तीरथ परस पुनीति,राम नाम संग एकहि प्रीति ।। करम धरम को मूल सु राम,श्रीचंद्र द्रिढ़ उर बिस्राम ।।४।।७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। बंधन साध छूटा बन चोर,निरदोसे भए दोसी घोर ।। आगू अंधे पंथ दिखाहि,रुड़ते नदी

दलेरी दाहि ।।१।। हुज्जत हिकमत होई पूर,सोऊ साचा बकता कूर ।।१।। रहाउ ।। गुंडी नारि जगत परधान,महामूढ उपदेसत गिआन ।। यति सदावत महा जु कामी,नेकी करते बडि बदनामी ।।२।। सुमगि कहावहि धार कुपंथ,परम विकारन देवत संथ ।। थाउं पूरती कूड़ी फिरै,होंदी कउ अणहोंदी हिरै ।।३।। धरम सिंघासन थिरै अधरमी,वेदग्य होए महा कुकरमी ।। कलिजुग ऊच बजायो तूर,श्रीचंद्र को उबरहि सूर ।।४।।७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। गाल बजाइ रिझायो शंभु,जटा जूट मुद्रा धरि दंभु ।। परम प्रेम रस लोक जनावा, नैनन तेल डार सरसावा ।।१।। ताड़ी लाई बंचन हेतु,ऊचा मंदर ऊरध केतु ।।१।। रहाउ ।। अलख निरंजन ऊची धुना,ठग बाचा अति उतम गुना ।। बक धिआनी तीरथ के तीरा,मीन दादरी खाइ दुधीरा ।।२।। मूसे हित मुंद नैन बिरानी,नहीं मंजारी बोलत बानी ।। नाच चोलड़ा अधिक पसारा, वाइ म्रिदंग भगति विस्तारा ।।३।। नकटी आवति कै उपहासा,बड बड नाकी पेखहु रासा ।। श्रीचंद्र सभ लज्जा हानी,वेस्या कुलटा भी महारानी ।।४।।७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ राजा कूड़ो परजा कूड़,कूड़ो कूड़ रहिआ भरपूर ॥ कूड़ो काजी करतो निआय,कूड़ो विस्ट कूड़ सिखराय ॥१॥ दहदिसि पसरिओ कूड़ पसारा,साच छिपायो निसि अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ वपार वापारी राता,कूड़ विहाजन मंत्री बाता ॥ कूड़े मंदर भोग लगावा,कूड़े भगवत कूड़ो खावा ॥२॥ कूड़ी पूरे ताल सलाह,कूड़े देव कूड़ परसाह ॥ कूड़ बजाए चंग मुचंग,कूड़ी सुर कूड़े अभंग ॥३॥ कूड़े पीर गगन भरमंते,कूड़े जापक कूड़े मंते ॥ सभ जग पसरिओ कूड़ पसारा,श्रीचंद्र प्रभु साच दिखारा ॥४॥७४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ कूड़ मुदई मुदालय दोइ,कूड़ मुकद्दम कूड़ बगोइ ॥ कूड़ बखिआण कचैहरी कूड़, कूड़ गवाह गवाही कूड़ ॥१॥ थाणा थाणेदार सिपाही,कूड़ वकील करे अगवाही ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ विहारा कूड़ी रास,कूड़ फूल फूला अहिसास ॥ कूड़ो राजा कूड़ो मंत्री,कूड़े जंत्री मंत्री तंत्री ॥२॥ कूड़े गुरू कूड़े ही चेले,ग्रिह ग्रिह मांगत धेले धेले ॥ कूड़े सिम्रिति सासत्र वेद,कूड़ो कूड़ जनावत भेद ॥३॥ कूड़

भयो जग साहनसाह,साच पंखधर गयो उताह ।। कूड़े करम धरम सभ छाइ,श्रीचंद्र कत साच न पाइ ।।४।।७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। कूड़े हिंदू मुसलमान,कूड़े पढ़त कुरान पुरान ।। कूड़ी संध्या तीन कराइ,कूड़े मल मल तीरथ न्हाइ ।। कूड़े जोगी पीर पैगंबर,कूड़े जंत्र मंत्र आडंबर ।।१।। रहाउ ।। कूड़ उदासी बिना उदास,कूड़ो न्यासहि बिन संनिआस ।। कूड़े बिन बैराग बैरागी,कूड़ो कूड़ लगी उर आगी ।।२।। कूड़े मंदर मसजिद थापै,कूड़ो कूड़ जपावत जापै ।। कूड़े पहिर दिखावत बानै,रक्त पीत नीलै भगवानै ।।३।। कूड़ अहिंसी हिंसा गही,कूड़े लेख लिखत पर वही ।। कूड़े मेले परब सु थान,श्रीचंद्र कूड़ो परधान ।।४।।७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। कूड़े भरते कूड़ी नारी,कूड़े पूत उपज संसारी ।। कूड़ी दुखतर कूड़े भाई,कूड़े घरपति कूड़ लुगाई ।।१।। गहि मसाल कर ढूँढन गया,कूड़ बिना कहुँ लखत न भया ।।१।। रहाउ ।। कूड़ा

मक्का मदीना काबा,कूड़ खलीफा यार सहाबा ॥ कूड़े हाजी हज्ज मुकाम,कूड़ी बांग निमाज इमाम ॥२॥ कूड़े कान्ह गोपिका धेनु,कूड़े राग रागिनी बेनु ॥ कूड़े रावण राम सुकंठ,कूड़ विभीखण दीनो गंठ ॥३॥ कूड़े छप्पर सुरसरि तीर,कूड़ो कूड़ी परी बहीर ॥ साच नाम जिहँ हिरदै वासा,श्रीचंद्र हउ ता को दासा ॥४॥७७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ कूड़े देवी देव सु थान,कूड़ो कूड़े भनत वखान ॥ कूड़े मंदर अरु दरबार,कूड़ पुजारी पूजाचार । कूड़ो कूड़ वरतिआ संसारा,दहदिसि छायो कूड़ अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ी सिखा सूत गल धोती,कूड़ी माला पुहप परोती ॥ कूड़े ठाकुर कूड़ सिंगारा,कूड़े जाचक कूड़ उदारा ॥२॥ कूड़ी आसा कूड़ा बोल,कूड़े तोल तुलाए तोल ॥ कूड़े सिध साधक गुरु चेले,कूड़ो उपजे कूड़े पेले ॥३॥ कूड़े लागे कूड़ो पाइ,मुख कूड़े दरगाह सजाइ ॥ साचै लागै सो सच पाए,श्रीचंद्र सो सच समाए ॥४॥७८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। साच मूरती सत्गुरु देव,साच समाना साचा भेव ।। साच रिदै जिस सत्गरु पूरा, साचा सबद बजाया तूरा ।।१।। साच ब्रहम साचा गुरु होइ,साचै सिख समावै सोइ ।।१।। रहाउ ।। साच गवावै मन की मैल,साच नाम दरगाही गैल ।। सच्च नाम जपु पार उतारा,साचो उतरी अम्रित धारा ।।२।। साचो बोहिथ पारगरामी,साच बिनाहे मन की खामी ।। साचे केरी बखसत भूल,साच समावै साचै मूल ।।३।। साची साख वेद विस्तारी,साचै गुण गण फूली बारी ।। साचै कै मुख साची बाता,श्रीचंद्र नित्त साचै राता ।।४।।७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। साच बिना नहिं कोई पूरा,साच बिना नहिं कोऊ सूरा ।। साच बिना प्रभु कला न परसै,साच बिना नहि आतम दरसै ।।१।। साचै गुरु मुख साचा नाम,साचै कै सभि पूरन काम ।।१।। रहाउ ।। साचै कउ प्रापति नवनिद्धि,साचै की दिन दिन प्रति ब्रिद्धि ।। साचै कउ साचा प्रतिपालै,साचै की सभ पूरन घालै ।।२।। साच कउ आंच न लागै काई,सरब सिधि साचै ही पाई ।। साचे ही सच्च वेद

उपाया,साचहुँ ते भई निरमल काया ॥३॥ साचै संत धरणि का थंभ,साच बिनासे सगला दंभ ॥ साच रता साचो हुइ जाइ,श्रीचंद्र रचिओ सच नाइ ॥४॥८०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ साचै कउ नाही भै कोइ,साचै का मुख ऊजल होइ ॥ साचै तीरथ करि इस्नान,बहुड़ि न होवै आवन जान ॥१॥ साच नाम जपु अम्रित पाया,हरि रस रसना रसन समाया ॥१॥ रहाउ ॥ साच सबद सुख महली वास,साच सबद अबिचल अविनास ॥ साच सबद दुंदभि गुरुदेव, साचो साच जनावै भेव ॥२॥ साच आचार साच सब करमा,साचा धरम साच बिन भरमा ॥ साचहुँ ते छूटै उर ग्रंथि,साचै का सद निरमल पंथ ॥३॥ साच नाम ते नामी लहै,साच आराधै हरि कर गहै ॥ साच ऊपरै नही विचार,श्रीचंद्र मति साच अधार ॥४॥८१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ गुरुमुख हिरदै साच पछाणा,बिनस गया भव आवण जाणा ॥ साच नाम मुख अम्रित बाणी,गुरुमुख साच संगि मनि माणी ॥१॥ साच रमै सोई रामाणा,साच सम्हालै साच समाणा ॥१॥

रहाउ ।। सभ ते ऊपर साच अचार,सब ते उत्तम साच विचार ।। साध संगति महि सच्च निवास,गुरुमुख आतम सच्च परगास ।।२।। सीतल वाउ मंद सुगंध,साचहुँ ते साचो गुण संध ।। गुरुमुख सच्च सदा लिव लाइ,गुरुमुख साचै तीरथ न्हाइ ।।३।। गुरुमुख सच्च सबद मन राता,हउमै ममता बिनसी ताता ।। सच्च नाम बिन मुकत न कोइ,श्रीचंद्र मन सच्च संदोहि ।।४।।८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। गुरुमुख सच्च सबद परवान,गुरुमुख सच्च दरगह नीसान ।। गुरुमुख साचो करम कमाइ,गुरुमुख साच धरम लिव लाइ ।।१।। सच्ची दरगह साचा वासै,सच्च नाम जपु हरि प्रभु भासै ।।१।। रहाउ ।। गुरुमुख सच संजम संतोख,गुरुमुख सच समावै मोख ।। गुरुमुख सच तीरथ इस्नान,गुरुमुख सच हिरदै सनमान ।।२।। साच बोल पत सिउं घर जाइ,साचो वक्खर लाहा पाइ ।। साचै निरमल भयो सरीर,साचै ते उपजै उर धीर ।।३।। साचै ते जम डरता फिरै,साच सरब भव का चित हिरै ।। साच बिना नहि हरि दरसावै,श्रीचंद्र कउ साचो भावै ।।४।।८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मनमुख झूठो झूठ कमाया,तजि अम्रित बिख कउ मुख पाया ।। झूठ संगि निसदिन परिचाय,झूठो झूठ लगावे दाय ।।१।। झूठा दरगह लहै न ठाउं,झूठा अंतरि काला काउं ।।१।। रहाउ ।। झूठ गंदगी सूकर खाइ,झूठ हाड कूकर कड़काइ ।। झूठ जूठ नहिं तीरथ वास,झूठ न उतरे धन दिअ रास ।।२।। झूठ कालिमा धोई न जाइ,झूठा जम दर चोटा खाइ ।। झूठा धरम धुरे मुँह काला,झूठा कबहुँ न भया सुखाला ।।३।। झूठा मनमुख पापा खाण,झूठा मनमुख धूलि मसाण ।। झूठे इत उत सरब गवाया,श्रीचंद्र उर झूठ न भाया ।।४।।८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मनमुख लादी झूठी खेप,मनमुख धारे झूठे भेख ।। मनमुख पाई झूठ दुकान,मनमुख झूठा लाइ दिवान ।।१।। झूठहुँ ते मनमुख दरसाइ,मुँह कालख सभ जगत लखाइ ।।१।। रहाउ ।। मनमुख के उर ईसर झूठ,मनमुख झूठ संगि जग मूठ ।। मनमुख का झूठा आचार,मनमुख का झूठा परचार ।।२।। मनमुख झूठा पेटू भया,मनमुख मरना चित्त न लहिआ ।। मनमुख झूठा राज कमाय,

मनमुख झूठो देतो निआय ।।३।। मनमुख झूठे भए वकील,झूठी सैन सिपाही कील ।। मनमुख का झूठा परवाना,श्रीचंद्र सभ झूठ जमाना ।।४।।८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। मिरतक आमिख डार मसाला,होत न अजमख मंत्रित शाला ।। नितप्रति झूठो झूठ कमाया,किमि करि किरत संग उपाया ।।१।। बिखिआ ले डूबी संसार,सत्त राम नहि पायो सार ।।१।। रहाउ ।। झूठै द्रब्यहि देव रिझाइ,जम पुर बाँधा चोटां खाइ ।। मनमुख कै झूठे उपदेस,वेसहुँ कबहुँ न मिटत कलेस ।।२।। सत्त सबद बिन मुकति न होई,सत्त जापु जपते लहि ढोई ।। सतसर न्हाए प्रभु पुर वास,सत संगति नित सत्त परगास ।।३।। सतपुरुख सत्गुरु सच थाइ,पाइ पदारथ सहिज समाइ ।। सत रवि उदै अंधेरा जाइ,श्रीचंद्र उर साचो भाइ ।।४।।८६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग भैरव ।। सनकादिक उर सत्त प्रगास,बाल बुद्धि धन रास उदास ।। जनम मरण दुख मेट समाइ,भानु प्रकास दसोदिसि छाइ ।।१।। सत्त सरूप प्रगट उजिआरा,जनम मरण मन मोह उजारा ।।१।। रहाउ ।। सत्त आतम सत्त विगिआन,अनुभव सत्त जोग परधान ।। सत्त करम बैकुंठ

समाइ,सत्त धरम कर निहचल थाइ ॥२॥ सत संतोख दया उर वास,सत्त सिमरि भव बंधन नास ॥ सत्त वाक रसना रस पूरा,सत्त उपजते कसमल चूरा ॥३॥ अंतरि सच्च मुख सच्च अलाया,चक्र चुरासी दूर पराया ॥ बिन साधू सत लहहु न थाउं,श्रीचंद्र सत सील प्रभाउ ॥४॥८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ मन अंतरि सगला ब्रहमंड,सात पताल अकास नव खंड ॥ सातों दीप अरु चौदह लोक, तीन भुवन सब देवन ओक ॥१॥ पारब्रहम का मन महि वास,राम सिमर ते होवहि भास ॥१॥ रहाउ ॥ पुरीआं नदीआं पावन धाम,सागर मेदिनि परबत ठाम ॥ चिरंजीवी रिखि सूरज चंद,उडुगन अनिक तार तम मंद ॥२॥ रिद्धि सिद्धि नउनिधि सुहाई,लख चुरासीह जोनि सबाई ॥ इंद्र कुबेर यख्य राखसस,किंनर गंधरब भोगन भखसस ॥३॥ ब्रहमा बिसनु शिव सनत कुमार, अज प्रिथु दसरथ अंशवतार ॥ गोपी क्रिसन राम सिय राजे,श्रीचंद्र के मनहि विराजे ॥४॥८८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ संत धूरि मन भांजन मांजै,मैल उतार बिखै चमकांजै ॥ गिआन अम्रित जपु राम

जमाइ,मथनी मथै बिचार समाइ ॥१॥ सुधा रसाइण पीवै कोइ,आवागउणु बहुरि नहि होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नस नस पसरै परमानंद,हउमै अहंमेव मिटि द्वंद ॥ पुस्टी निसचय तन वरधाया,पहिलवान सेवक दरसाया ॥२॥ काम क्रोध की लाई पीठ,पाइ दुमाला हरि प्रभु ईठ ॥ डंका बाजिया सत्गुरु पूरे,लज्जित भए विकार विसूरे ॥३॥ तप कंधे चढ़ि चक्र अखाड़ा,संसै भरम दूरि किअ झाड़ा ॥ द्रिढ़ बिस्वास भरोसा राम,श्रीचंद्र किय भेटा नाम ॥४॥८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग भैरव ॥ दीन दयाल क्रिपाल मुरारी,हम सेवक नित्त सरणि तुमारी ॥ चरणी राख करहु प्रतिपाला,भ्रम भै मेटि दिखावहु आला ॥१॥ क्रिपा कटाछ विलोकहु जाहि,दुस्ट दूत छुहि सकत न छाहि ॥१॥ रहाउ ॥ माया मल मिटाइ परगासा,तम अगिआन बिनासहु आसा ॥ जपु जपु नाम भए प्रभु नामी,अनिक विकारी बिनसहि खामी ॥२॥ खता बखस निज खाते डार,आगै दरगह होइ न हार ॥ तू करता सद सद बखसंद,दास निवार रखहु मन चिंद ॥३॥ अवर नहीं प्रभु तुम बिन थाउं,तुमही दीजै अपना नाउं ॥ एको एक एक उर आसा,श्रीचंद्र नित्त चरनन पासा ॥४॥९०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।।

जोजन कोटि कोटान करि,भुजा पसार लेत जन खैंच ।। जानत आपनै राखता,महा सूरवीरा खड़ पैंच ।।१।। प्रभु की सरणि गही ।। उर महिं परम आनंद भा,गंग आकासी उतर बही ।।१।। रहाउ ।। कालिंदी कालम बिनसी,निरमल नीर सुरसरी भान ।। प्रेम प्रवाह परवती बहि,चंड प्रचंड बहा अगिआन ।।२।। देस अदेस प्रविसाय दिय,सौरभ पुहप रंगीन मुहाइ ।। सीतल मंद गंध मारुत, सुधि बुधि बिसरानी काइ ।।३।। अम्रित धार रसन त्रिपती,अमर भए संग अमरन केल ।। त्रिकुटी छूटी गगन गरजिओ,श्रीचंद्र जन लीने मेल ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। दीन दरद दुख भंजना,प्रतिपालक अरि घालक राम ।। निकटि बसत सद

जिअन के,घट घट जाको है बिस्राम ।।१।। तिस का दीआ सभ को खाइ,सार सम्हाल सम्हालता पाहन भीतरि जंत उपाइ ।।१।। रहाउ ।। अस्टपदहि भी उदर भरत,मुकते खावत हंस लखंत ।। अनल हुमा नभ माहि थिरहि,चोग चुगावत हरि भगवंत ।।२।। बिनु आधार परबत नहीं,तरुवर भी थित सहित अधार ।। चौरासीह लख जोनि का,एकहि करता पुरुख दातार ।।३।। जल महि थल महि जीव जंत, पोखत प्रभु नाराइण आप ।। श्रीचंद्र सभ चिंत तजि,गोबिंद केरो जपीए जाप ।।४।।२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। संत संगति मन निरमला,हरि कीरति नित हिरदै निवास ।। मुकति पदारथ पाईए,अनुभउ आतम राम परगास ।।१।। गुरु गोबिंद धिआइ ।। सास गिरास प्रभु सिमरीए,अंतह करण विस्व लख पाइ ।।१।। रहाउ ।। करम करत सुभ वेद विहित,धरम सनातन रीति महान ।। सील संतोख संजम दया,जपु तपु नाम दान इस्नान ।।२।। तीरथ अठसठ मज्जन परब, पुंन पदारथ गुरुवर देइ ।। गऊ सेवा नेकी चंगिआई,परिहर लालस माँगन हेइ ।।३।। भाव भावनी हरि भगती,संगति साकत तिआगन काम ।। श्रीचंद्र उर सहिज निवासहि,परमधाम

पावहि बिस्राम ॥४॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ जान अजान भयो बावर,हरि की भगति बिसारी सार ॥ द्रिस्टमान जगत सभ मिथिआ,चार दिवस का कूड़ विहार ॥१॥ देखो अपने नैन पसार ॥ जिनि सिउं उरझि प्रभु बिसरायो,तिआग चलण तिनि अंती वार ॥१॥ रहाउ ॥ कोऊ न बनहै तुहि संगी,बेसक कर ले जतन हजार ॥ तन धन माल मुलख दुहिता,सुत सनबंधी साक अपार ॥२॥ मंडप महिल अटारिआं, हट पटण गढ़ कोट बजार ॥ प्रभु भुलायो जिनहि कारण,उर सिउं तिनही दीनो डार ॥३॥ संतन की सुनि साच बात,बहुबिधि कहित पुकार पुकार ॥ श्रीचंद्र भजि नाराइण हरि,प्रभु राम गुबिंद मुरार ॥४॥४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ धरती अंदरि बाहरि नभ,सस्त्र अस्त्र सिउं मरत न जोइ ॥ हिरणकसिप जिनि मार दिया,अपर कउन तिस अग्र खलोइ ॥१॥ अबिचल धुजा रही फहराय ॥ चौदह भुवन लोक

तीनों,अजय सूरमा गरजत साय ।।१।। रहाउ ।। रावण अहरावण केसी कंस,चंड मुंड धूम्र नैन ।। कुंभकरण अनकुंभ कुंभ,रकतबीज शुंभ निशुंभ ऐन ।।२।। महिखासुर त्रिमुंड कोला जंभ,दुरग चिच्छुर बिड़लाछ ।। गीध गगन माहि चढ़ दली,मुरगी चूचा लीनसि काछ ।।३।। भुज सहस्त्र सिर सहस्त्र जिनि,भीछन ईछन कोटन कोट ।। श्रीचंद्र हिरणाछ तुल,सहि न सके इक कर की चोट ।।४।।५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। दोइ दिवस जीवन जहान,किउं बिरथा गवावत मूढ ।। कवन भरोसे काल केर,बालप तरुणापो पुनि बूढ ।।१।। राम नाम जपु सार ।। बासर स्वास सभ गिण धरे,बाढ घाट नहिं होवनहार ।।१।। रहाउ ।। पेखि बाग फल फूल सुभग,मोहिओ मन चाहत लै गंध ।। दुरगंधी को परस घ्राण,आहि सिकोड़त मारुत संध ।।२।। जवन वस्तु धंधा कीनसि,नफा गवायो तोटा पाइ ।। भूषण कंचन सु विहाजे,नदरि सराफ मुलमा साइ ।।३।। म्रिग मन म्रिग त्रिसना जलहित,दौड़ दौड़ दिए सास विहाइ ।। श्रीचंद्र हथ खाली चालिओ,अब किआ ह्वै है रे पछुताइ ।।४।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। राम नाम बिन जनम गयो,भोगन माहि परिओ तन छीन ।। जो जो खायो सोई गवायो,इंद्री मारग डारि सु दीन ।।१।। कौडी बदले हीरा खोया ।। दुरलभ मानुख जनम अमुल,जिउं भाड़े भंग वंञाया ।।१।। रहाउ ।। जाचत देव सु तन मानस,किमि ऐहै हमारे हाथन ।। आगल पउड़ी कदम राख चढ़हैं,मुकति बैकुंठहि पाथन ।।२।। अतिशयता मिरतु नीच ऊच,चिंता खोइ होहि निरभीत ।। देवन पुरीआं उलंघ सभि,परमधाम हरि के संगीत ।।३।। जोनि चउरासीह लख का,चक्र भेद गगनंतर वास ।। श्रीचंद्र ब्रहम जोति का,इकरस निसिदिन जहाँ प्रकास ।।४।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। क्रिपा धार पारब्रहम हरि,लड़ि अपने संग लीने लाइ ।। सहिज जोग निधि प्रगट भई,जोती जोति समानी राइ ।।१।। अबिचल पुर महि वास ।। अनहद धुनि नित्त किंगुरी वाजत,परमानंद बिलास ।।१।। रहाउ ।। भूचर ते खेचर भए,ब्रहमंडन की करते सैल ।। उनमन सुखमनि ताप त्रयन,नासत चाचर खेले गैल ।।२।। खस्ट नेम सूधे बेधत,धग धग गगन दमामा

बाज ।। ऊधे कमल सरस बिगास,गंध लई भवरे बेबाज ।।३।। जोड़ी जुड़ी सेवक सुआमी,गमन आगमन पलानो दूरि ।। श्रीचंद्र अनुभउ पायो,नाराइण सद पेख हदूरि ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। खिड़िओ कमल भयो प्रकास,दहदिसि भ्रमर गुँजारत पुंज ।। अनुभउ उपजत चिंत विनास,सहिज समाधि सबद हरि गुंज ।।१।। परमानंद पायो उर माहि ।। पारब्रहम परमेस्वर प्रभु,पायो निज घर ही के माहि ।।१।। रहाउ ।। दरसन पाइ भए हरसन,कपट खुलाने दरसन राम ।। सीतल गंध मंद मारुत,तपत बिलानी आनंद धाम ।।२।। अनहद पंच सबद वाजे,अंतरि पूजा उपजिओ चाउ ।। पटल बिनास नैन प्रगास,अंग संग पायो हरि राउ ।।३।। भ्रमर मत्त तत्त खीने, सावल सुंदर रंग भरतार ।। श्रीचंद्र छीर निधि बूडि,लहिर लहिर की नाहिन मार ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। अम्रित वेले कंज खिड़े,स्याम निरंजन रस की धार ।। मदमत्त भ्रमर चतुर दिसि घिरि,ओअं सोहं करत गुंजार ।।१।। राम नाम शिव अंतरि तार ।। जोति प्रगटानी प्रभाकर,पसरी

किरण सहिज विस्तार ।।१।। रहाउ ।। नैन मूंद प्रीतम दरसा,सुघड़ सुजान आनंद मुरार ।। कपट खुले घूँघट उठि,रंग रलिआ माणी भरतार ।।२।। वडभागी रस मोहणिआ,द्रिग कटाख्य का किओ सुमार ।। का पति के गुण वरणीअहि,रसना वर रस चूपी धार ।।३।। सुहाग सुहागणि पाइ कै,महिली भई महिल वसि सार ।। श्रीचंद्र प्रभु रंग रंगी,तूटी तणिया तरक अपार ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। प्रभू किरपाल सरब पालक,अंतरजामी दीन दयाल ।। भगत वछल करुणामय हरि,सुख सागर नागर गुण आल ।।१।। सदा निबाहत जन की ओड़ ।। करत दुस्टता दुस्ट घने,पहुँच न साकत कोऊ तोड़ ।।१।। रहाउ ।। टेढी द्रिस्टि चितवते जो,खिन महि अंधे करता राम ।। गोली गोले संधि चलाइ,फोकी तुपक बंदूक तमाम ।।२।। राम कार काढी चहुँदिसि,दोवर तेवर खाई कोट ।। ब्रहम कवच अनविधै पहिर,पंच दुस्ट परिहारसि चोट ।।३।। साध सेन चतुरंग बली,अस्व रथ नागहि लीनी भीर ।। अबिचल राज सिंघासनहि,श्रीचंद्र थित भयो फकीर ।।४।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। ताती आँच न लाग सकत,हरि प्रभु करता राखत आप ।। जहँ जहँ भीर दास पर है,तहँ तहँ प्रगट करत परताप ।।१।। जिनि पाथर गहि पाथर कीन ।। महाविकारी अहंकारी, आप क्रिपा कर कीनसि दीन ।।१।। रहाउ ।। कंटक चुभन न तन दीनसि,फूल सस्त्र असस्त्रन बरसाइ ।। कंकर ढेर चहुँदिसि घिर,भूत ईंट जिमि लाग न पाइ ।।२।। जलति अगनि निवारी आप,मेघ पठाए अम्रित धार ।। अभिमानी मूल उपाड़िओ,सूके काठ हरे दिखार ।।३।। आपद जन की लखत हरी,छोडि सिंघासन पग नगनाइ ।। श्रीचंद्र तुरतहि आयो,राम कार कढि कीनि सहाइ ।।४।।१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। रे आपहि जलन हारिआ,जाल न साकहि कोऊ चुनार ।। सीतल सांति उर तेरड़ा,नास भए अंतरि अंगिआर ।।१।। मेरे हरि प्रभु कीनी सार ।। कीरति करते पुरुख प्रभू,दुस्ट द्रोही रहै झख मार ।।१।। रहाउ ।। जिहँ जन हरि प्रभु सेव करी,ता को कबहुँ न आई हार ।। दुरजोधन पचि हार गयो,अंबर द्रोपदि सकिओ न टार ।।२।। गरीब निवाज गोसाई,जन अपने की आपद

टार ॥ कोइ न जानै मानै जिहँ,छत्र चमर तिहँ सीस ढुलार ॥३॥ सूके हरे करत खिन महि,निघरत नरके अंबर चार ॥ श्रीचंद्र हरि लागहु पग,सभ जग करहै आइ जुहार ॥४॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ फूले फूल सुगंध सहित,सरवर हरिआवल चहुँ फेर ॥ भ्रमर मधुर गुंजारत धुनि,दूरहुँ ते चलि आवत नेर ॥१॥ सत्गुरु सबद उचारिओ मीठ ॥ पारब्रहम परमेस्वर हरि, आतम अंतरि जानहु ईठ ॥१॥ रहाउ ॥ वस्तु अगोचर पावहिगो,रस चीटी सिकता खंड पाइ ॥ अहंकारी के हाथ सुंन,बिरथा भरम भरम पछुताइ ॥२॥ रुति बिना करम कमाइआ,निहफल दुख उठाया भूरि ॥ हरि कीरति कलि फलत है,करम धरम सभ मिलिहै धूरि ॥३॥ जपु तपु संजम सील दान,जोग यग्य ब्रत पूजाचार ॥ श्रीचंद्र सुभ सजी बराता,गोबिंद जस एकहि भरतार ॥४॥१४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ म्रिगमद म्रिग न जानिओ भ्रमहि,ढूंढन धायो चौकड़ि पाइ ॥ नाम निधान अंतर उरहि,अठसठ भरम भरम जल न्हाइ ॥१॥ अंतरि राम नाम परिपूर ॥ गुरु पूरे ते पाइऐ,

पारब्रहम प्रभु सदा हदूर ॥१॥ रहाउ ॥ पंडित पड़दा पोथीआं,वाद विवादै लोक पचार ॥ नाराइण मरम न जानिओ,मिथिआ गहिओ उर अहंकार ॥२॥ स्फटिक मुंद्रा कंन पाइ,जटा भसम तन माहि रमाइ ॥ ग्रिह ग्रिह टूको माँग खाइ,त्रिपति नहीं पाई भुखिआइ ॥३॥ पूजा थाट पूजारी किया,मुल्लाँ बाँग निमाज पुकार ॥ श्रीचंद्र बिना सत्गुरु कै,भटकि भटकि जग भया खुआर ॥४॥१५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ किहँ तुलसी माला धारी,किहँ गोपी चंदन तन छाप ॥ किहँ सुरसरि तट परणकुटी,जोहत आवत जावत बाट ॥१॥ सैल सिखरि रचि मंदर चंड ॥ संख घंट दुंदभि धुनि की, नाद निनद संनद्ध प्रचंड ॥१॥ रहाउ ॥ गेरी रंग बसन धर करि,दंड लियो कर धुजा समान ॥ नील पीत हरित रक्त पट,बैठिओ कोऊ मध्य मसान ॥२॥ कटि धोती सिर सिखा ग्रंथि,चाढ़ी दाढ़ी सूत गराइ ॥ किहँ मुंडति ह्वै परमहंस,भगती भगति करी निरताइ ॥३॥ खेत्र अंन परब पर बांधिओ,कै उपदेस जगत परिचाइ ॥ श्रीचंद्र प्रभु पंथ हीन,दंभ पसारा हित करि माइ ॥४॥१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। नाम जपहु नामहि लिव करि,इस ऊपर अन नही विचार ।। संजम साच धार उरमहि,परिहर आन सकल आचार ।।१।। साधु संगि लहि मोख दुआर ।। मन निरमल संतोख द्रिढ़ करि,निसचय पूजा प्रभु करतार ।।१।। रहाउ ।। परमानंद सागर माहि,सीतल अम्रित पीवहु धार ।। दिब्य द्रिस्टि सबद धुनि उघट,अनंद विनोद मंगल संचार ।।२।। जीव जंतु वण त्रिण हरि प्रभु,एका एकी जोति सम्हार ।। आन न बीआ थीआ कत,ओत पोत घट घट आधार ।।३।। कत उपजत बिनसत कतहूँ,कतहूँ माँगत कतहुँ दातार ।। श्रीचंद्र कछु दूजो नहिं,हिन्दु मुसलिम बिप्र चंडार ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। राखणहारे राख लिए,अमित मया कीनी हरि राइ ।। बखस अपनी आपहुँ करि,परिहर अवगुण चरनी लाइ ।।१।। जहँ तहँ करते कीन सहाइ ।। निरगुणिआरे गुण हीने, गुणनिधान जग महि प्रगटाइ ।।१।। रहाउ ।। परस स्याम सभ कामन पुर,त्रिसना त्रिखा बिनासी

माइ ॥ नीम अरंड कटु अबास,चंदन वास सुगंध सुहाइ ॥२॥ कलिमल धोइ निरमल होइ,ऊजवल सोइ कुंद बिगसाइ ॥ आप भए कै आप होइ,आप खोइ कछु जान न जाइ ॥३॥ अद्भुत महि अद्भुत मिलकै,को पिल निकसहि को पिल जाइ ॥ श्रीचंद्र बिसमै हरि रस,मन बाणी करम गयो समाइ ॥४॥१८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग कमल कुसुम ॥ गरीब निवाज गोसाई,सरब जगत के तुम सिरताज ॥ ईन भरत सभ को तुमरी,महाराज हरि राज दराज ॥१॥ चौदहि भुवन तीनहुँ लोक ॥ सप्त दीप नवखंड धरा,सागर सप्त पताल अटोक ॥१॥ रहाउ ॥ देव दैत्त नर राखस यख्य,किंनर गंधरब गण आदित्त ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र गनपति,अस्ट भुजी दुरगा सम चित्त ॥२॥ मारुत क्रिसन वरतमा अप,सुरपति रिखिपति मुनिपति जोग ॥ विआस परासर पुलह पुलसत,सालव बकदालभ गण लोग ॥३॥ नम्र ग्रीव आगिआकारी कबहुँ कि,परहि आदि धुनि कान ॥ श्रीचंद्र कार कमावहि सोई,पावहिं पद निरबान ॥४॥१९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग कमल कुसुम || दीन दरद दुख भंजन प्रभु,निरंकार हरि घटि घटि विआप || खिन महि थाप उथापत है,कुदरति प्रेर जनावत आप ||१|| कादर कुदरत सो लख पाइ || महिला मंझ निवासत जो, माँगत भिखिआ दर दर जाइ ||१|| रहाउ || जिन को कोऊ न जानई,देवराज भे खिन महि सोइ || जल ते थल करि डारत है,सरवर टिटिभ अहं दय खोइ ||२|| लाइ सु धरनि पटकावई,उडत अकासहि दिब्य विमान || चीटी पंखन लगाइ करि,चाढ़ देत सतवें असमान ||३|| तरुवर सूखे हरित करत,हरे भरे सूखत निमखेक || श्रीचंद्र मन समझि बूझि,चतुराई नहि सिआणप टेक ||४||२०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग कमल कुसुम || आवण जाणा जिनि कीआ,रचि करि अपनी माया गूढ || राम नाम नहीं सिमरिआ,मोहिआ मोह महामति मूढ ||१|| जो आया सो जासि जरूर || करि पछतावा रोइ देखि,हत्थ न आसी गया मूर ||१|| रहाउ || सोच विचार पेख मन महि,का अपनी का परकी आहि || करते

पुरुख बुधी दीनी,किउं न बिचारत निज मन माहि ।।२।। सुमतिवंत सो चतुर सिआना,जानहि जोऊ भविख्यत काल ।। इहाँ निवास नहीं तेरा,सैर करत मध्य बाग रसाल ।।३।। भूतन कौतक पेख रिहा, कर गहिने हित वसतु न कोइ ।। श्रीचंद्र सत्गुरु धूरी,अंजन डार निरंजन जोइ ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। लेखा ह्वै पूरण किमि करि,अलप बुद्धि नहि जान सकंत ।। केते उपजत मानुख ते,केते बिनसत नितप्रति जंत ।।१।। लेखा करबे अंत न पाइ ।। कसमल केते हम कीए,केते पुंन सु करम कमाइ ।।१।। रहाउ ।। लकड़ी धूणे बीच जालि,केते हतन कीन हम जीव ।। भोजन दाने भखण कर,गनती गनी न पावत सीव ।।२।। गमनत पगन तरे हत भे,आवत जावत स्वास बिअंत ।। मूत पुरीख उदर केते,उपजत बिनसत आदि न अंत ।।३।। मानव कै सिर लेखा धरि,मति थोरी दीनी करतार ।। श्रीचंद्र लेखा नासहि,जपु जपु केवल नाम मुरार ।।४।।२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। गनती गनी न थाह पई,केता उदर समाया अंन ।। सास भरे तन महि केते,

केते कदम धरनि धरि गंन ।।१।। लेखा करत न परत सुमार ।। पूरण होत नहीं किहँ बिधि,गिण गिण कागद लिखत अपार ।।१।। रहाउ ।। केती चीटी पग मरदी,केती माखी मारी खिओभ ।। केते गोबर जीव सहित,धूएं जाल तपा तन गोभ ।।२।। केता मसक हतिओ करनि,केते मांगण यूका केति ।। बिन जाने बिन बूझे,लघु लघु जीव हने हैं जेति ।।३।। हिसाब हसीब करहि कवन,मन के अघ नहि लेखे जाहि ।। प्रभु बखसेगो श्रीचंद्र,इस जीव की चलति न वाहि ।।४।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग कमल कुसुम ।। किआ जाने किवें होइगो,नाराइण की दरगह लेख ।। केतिनि ग्रिह मंगि खाया,धरि करि नाना तन पर भेख ।।१।। लेन वालनि का नहिं अंतु ।। सभ सों लेंहगे लेखड़ा,गल पावहिं फाहीआं तंतु ।।१।। रहाउ ।। ढिढ वधाया मंग खाया,भार पाप निज सीस चढाइ ।। बाकी लेवहि काल दूत,दे दे कठिन कठोर सजाइ ।।२।। पारब्रहम परमेस्वर तजि,घर घर जोहत लाज बिहीन ।। प्रतिपालक चित नहि सिमरिओ,त्रिजक जोनि दुख सहहि अधीन ।।३।। जाचक साधु न जानिऐ,कसमल पुंजन केर सरूप ।। श्रीचंद्र उर निसचय करि,ते नर परि हैं नरके कूप ।।४।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।।

आई गंध पारब्रहम की,सेव साधु करि नित्त ।। दिन दिन दूना हेत चित में,हरि सिमरन लहि बित्त ।।१।। साधू सेव कमाइ ।। उलटा कमल प्रकास भया,आनंद मगन समाइ ।।१।। रहाउ ।। साधु सेव ते मन महि प्रगटै,हरि सिमरन का चाउ ।। परिहर ध्रोह मोह छल कपट,आतम राम सुआउ ।।२।। पूरन परमेस्वर सभ जगत,ऊन न काई थाइ ।। प्रतिपालक सभ जिअ जंत का,जल थल एकै भाइ ।।३।। दीन दयाल अकाल सुआमी,सरब घटाँ भरपूर ।। श्रीचंद्र चित ला नित भजै,उर ह्वै के मखमूर ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || जपि जपि प्रभु नाराइण गोबिंद,कलिमल सगले जारे || काम क्रोध अहंकार लोभ,मोह ममता गारे ||१|| आतम रोग बुरा || जिहँ नर के उर भीतरि लागिओ,कबहुँ न पाइ मुरा ||१|| रहाउ || अखीं अंध न दीसै कछु,कंनी सुणै न बाणी || जिहबा सबद बखान न सकहि,रक्त करत सभ पाणी ||२|| छुरका फिरती करक करेजे,अंग अंग तपताया || मूरछित भा सुधि बुधि बिसराई, आपन आप भुलाया ||३|| साधू संग रसाइण सेवे,सत पथ पालनहारा || श्रीचंद्र सो जन सुख पावहि,लहिहै मोख दुआरा ||४||२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || माया अगनि माहि जलत जन,गुरु मंत्र जपु धीर || अंतरि कपट कपाट खुलहि, हउमै बिनसी पीर ||१|| राम नाम की टेक || भवजल बूडत पार परत है,सिमरि सुआमी एक ||१|| रहाउ || पूरब जिन कै मस्तक लेख,संत संग लिव लाइ || एक अधार नाम नाराइण,हरि कीरतन त्रिपताइ ||२|| माया बंधन काटि सगले,अनुदिन अनद अनंद || दूजा भाउ तिआग परिहर,गाए

गुण गोबिंद ।।३।। लिव लागी इकरस गगन महि,बाजे रुणझुणकार ।। श्रीचंद्र पारब्रहम माहि,लीने खोइ अकार ।।४।।३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। जगत बाग सौरभ संजुक्त,मानुख सगरे फूल ।। हरिनाम जल संच करि,हरा भरा किओ तरु मूल ।।१।। करते की फुलवाड़ी ।। आपहि खबर करत सभ तरफ,पत पत झाड़ी झाड़ी ।।१।। रहाउ ।। सूखी टाहणी काटित तरुवर,अवरन नाहि सुखाइ ।। दल फल फुल जुत पेख पेख करि, प्रतिपालत धर चाइ ।।२।। जान बूझ न सुखावन करत,रोग निवारण काम ।। उपबन सुंदर सुगंध सुभग,विस्तारन चहि राम ।।३।। रवसाँ चहुँदिसि साफ सुथरी,सैर करन जो आइ ।। श्रीचंद्र पुहपन भगन ते,करता पुरुख रिसाइ ।।४।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। पारब्रहम परमेस्वर सिमरि,मन खिड़िया रहसाउ ।। साधुन की संगति रंग लगा, अंतरि उपजिआ चाउ ।।१।। गुरु पूरे ते पाइऐ नाम ।। घट घट अंतरि हरि प्रभु रवहि,सगलिआ

जीआं छाम ॥१॥ रहाउ ॥ जोग यग्य जप तप तीरथन,संतन चरन निवास ॥ रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि समूह,देव अदेव प्रकास ॥२॥ गुप्त प्रकट धरनि गगन माहि,सेवत साधू धूर ॥ मन बांछत फल लहित आतम,राम नाम सुख मूर ॥३॥ गिआन धिआन सुभ करम धरमन,अवर नाही थाउ ॥ श्रीचंद्र नित सेव साधू,भलो समो सुआउ ॥४॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ संत सेव महि मुहि लगायो,तन जुत अंग प्रत्यंग ॥ आन दुआर न चितवहु कबहुँ, बिन संतन सरवंग ॥१॥ एकहि धारी टेक ॥ ईत ऊत जत कतहुँ पेखतो,संतन रूप अनेक ॥१॥ रहाउ ॥ संत निवास करत मनहि पुर,चितवन आन गवाइ ॥ अठसठ तीरथ कोटि तेतीस,संतन हूँ के पाइ ॥२॥ सकल कला पूरण जगदीस,बिन संतन नहि कोइ ॥ आगम निगम पुरान कुरान,संतन वाक समोइ ॥३॥ गुण निधान भरपूर भंडार,संतन का दरबार ॥ श्रीचंद्र जिस पर हरि क्रिपा,तिस जन लहिओ दीदार ॥४॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ पवन अधारै थाप राखी,साढे त्रय मण देह ॥ अढाई सेर अंन भोगै,कछुक वासन लेह ॥१॥ साढे त्रय हत्थ थाउ ॥ अवर न काहूँ काम आवहि,जोर जोर पछताउ ॥१॥ रहाउ ॥ प्रथमे अगनि उपाय करि कै,बहुर हुँ ईंधन कीन ॥ जीव पाछे परगट कीनो,भोजन रचि दिय पीन ॥२॥ सरब प्रतिपालक आप प्रभू,योग्य अयोग्य सु जोग ॥ जहां राखै रहहि तहँ ही,बिरथी चिंता लोग ॥३॥ जल मथत नहिं घ्रित लहित कभी,रिदै देखहु नीक ॥ श्रीचंद्र इक राम बाझहुँ,अवर सगले अलीक ॥४॥७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ मात पिता गुरु जन ढिग सौंप,सिखिआ सुभग सिखाइ ॥ संचन हेतु द्रब्य लगायो, जोबन दिओ बिताइ ॥१॥ आयु गई भंग भाड़े ॥ बिरध भयो कछु होइ न आवहि,परवसि परिओ बबाड़े ॥१॥ रहाउ ॥ जेतो संचो खोयो सभी,भाई पूतन संग ॥ तन खीण कफ कंठ रोका,बल नाहिन कछु अंग ॥२॥ आइ मिहरी रुदंति पासहि,मोरे हित का कीन ॥ साक तोरन सभी छीन लिए,मैं भई

अंत दीन ॥३॥ तऊ नाहिन सूझ बूझ कछु,नाम जपन सत संग ॥ श्रीचंद्र नाराइण भजै,कबहुँ न परहै भंग ॥४॥८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ भाउ भगति गोबिंद के,हितु मानुखी अवतारा ॥ धंध बंध विस्तार मिथिआ,अंत कूड़ पसारा ॥१॥ बहुरु न आवहि वार ॥ लख चुरासीह भ्रम भ्रम मिला,जूए जनम न हार ॥१॥ रहाउ ॥ हथहुँ पउड़ी छुटकि गई जबि,पछुताए किआ होइ ॥ जरि जरि नाव पानी बूडी,वसतु न निकसी कोइ ॥२॥ बनिओ बनाउ अभी लौं सगरा,जो कुछ लेंह सम्हार ॥ मोती बिखर परहि धरनी,टूट गयो गल हार ॥३॥ जो किछु मिलै सोइ कर तोखहिं,चलना औझड़ पंथ ॥ श्रीचंद्र उर राम नाम की, द्रिढ़ करि बांधो ग्रंथ ॥४॥९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ पंखिनि राति बितावन हेतु,ब्रिख पर कीन बसेरा ॥ पहु फूटी चुहचानी चिड़ी,कूच भयो उठ डेरा ॥१॥ चोग इहां नहिं तेरा ॥ माटी कंकर खाइ निबहि न,बेसक अहै घनेरा ॥१॥

रहाउ ॥ हेत फसावन भित खिलार,द्रिस्टि बिआध ने लाइ ॥ गुण गहि दबक रहिओ बैठ इमि, स्वास न आवत जाइ ॥२॥ इत उत चुगत चुगत त्रिसना वसि,जावन की है देर ॥ भोगे भोगऊ याद करै हैं,डंडा उछरहि ढेर ॥३॥ उठि चलिआ पछुताया पंखी,मरन बिना नहि छूट ॥ श्रीचंद्र मिथिआ भ्रम परिहर,राम नाम सिउं जूट ॥४॥१०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ जो आया सो चलणहारा,का सिउं कीजहि संग ॥ जा सिउं मन पेख उरझाया,अंतहि रंग बिरंग ॥१॥ इह जग नही मुकाम ॥ मनु नल अज दिलीप युधिष्ठर,गए सकल तजि धाम ॥१॥ रहाउ ॥ बारह जोजन छत्र झूलहि,चक्रवरती बड होइ ॥ गिआरह छूहनि सैन संग महि, मढ़ी न दिस है कोइ ॥२॥ देव लोक जीतिओ दै दुंदभि,अम्रित कर महि पाइ ॥ फैलकुस सुत साह सिकंदर,रहिण न पायो थाइ ॥३॥ जोगी जती तपी ब्रहमचारी,बादसाह सुलतान ॥ श्रीचंद्र उठि अग्र सिधाइ,रहिओ न नाम निसान ॥४॥११॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग चंपक ।। ह्वै है सोय बिधातै रची,दूजी अवर न भाति ।। जोइ करावन सोई करन,हुकमहि झूलै पात ।।१।। सिआनप काहूँ न काम ।। थाप उथाप आपहि वेखै,कहूँ धूप कहुँ छाम ।।१।। रहाउ ।। सुख की आसा करदिआं को,दूख परापति होइ ।। धावत पूरब दिसि जावते,पच्छिम जाइ खलोइ ।।२।। धन संग्रह लगि चलत मारग,परबतन रुख कीन ।। दिसा दखिणि जा विराजिओ,आगल को भी छीन ।।३।। हेतु सुख चितवंत जगत जन,दुख न मांगै कोइ ।। श्रीचंद्र दुख अवस्य मिलहि,भोगहि बरबस होइ ।।४।।१२।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग चंपक ।। कोटि जुग सिउं शुरू अमर कथा,भई नहीं अबि पूरि ।। जनम कोटिक लहि नाराइण, खेल खेल परिपूरि ।।१।। मैं कहहुँ किहि भांति ।। भूतनाथ जो भयो वक्ता,सुनति अंबिका मात ।।१।। रहाउ ।। सोई दुरगा गई सुनी नहि,अंडा भयो पुनीति ।। पटल अंतहकरण ढाँपिओ,भव चितव बध चीति ।।२।। कलप अनिकन लागि काकपति,कथत है कथा सुद्धि ।। पढ़ी सुनी नहिं जानी किउं हूँ,भई

अंत लख बुद्धि ।।३।। ब्रहम नाइक वाकपति आदि,किअ समापति नाहिं ।। श्रीचंद्र को मूढ़ वकता, कथंत लिअ अवगाहि ।।४।।१३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। चात्रिक जल बिन जिउं बिललाइ,बिन पाणी जिउं मीन ।। हरि सिमरन बिन तिउं मर रहहि,तन जरजर ह्वै खीन ।।१।। संत जना को काम ।। सास गिरास दिनराति रसन,राम राम इक नाम ।।१।। रहाउ ।। भाउ अभाउ न जानहि कछहुँ,राम नाम रंगि रात ।। माया ममता अंधिआर महि,सूरज चढ़ परभात ।।२।। दूजा भाउ दुबिधा परिहर,सभ जग कीनो मीत ।। परजन पुरजन सुरजन दुरजन,इक सम उर परतीत ।।३।। पारब्रहम परमेस्वर सुआमी,करणहार करतार ।। श्रीचंद्र घट घट इक विआपक,अवरु नहीं संसार ।।४।।१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। सभ जग जिअ जंत जिन कीए,लख चउरासी जौनि ।। गहिरे सागर सैलन माहि, रिजक संबाहे तौनि ।।१।। जीवा अंदर जीव ।। सभ को प्रतिपालक गोबिंद,दानहिं अंतु न सीव ।।१।।

रहाउ ॥ जंतन हाथ न प्रभु दीन है,इक दूसर को भोग ॥ मैं मेरी मतसर महि बंध,विअरथ देहँ दुख लोग ॥२॥ मेरे कीते मुहि पालना,पूत पिता का साक ॥ दै हैं कछु कमाई कर कै,राखत नहिन झाक ॥३॥ रे अगिआन बावरे मूढ,चेत रिदै करतार ॥ श्रीचंद्र इक राम सिमरि लै,जा ते होहि उधार ॥४॥१५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ विकार सुकार चितवउ नही,करते किसि बिधि कीन ॥ दूजो को अन ठौर करता,कहहु संत परबीन ॥१॥ सगरी स्रिस्टि उपाइ ॥ गुण अवगुण इक सम हरि रचे,भाउ अभाउ न भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ अवगुण अधिक विथारिऐ जब,तहँ ते गुण उपजंत ॥ गुण की कीजै जे कर ब्रिद्धि,अवगुण तहिं दरसंत ॥२॥ भोगहुँ रोग प्रगटत निखले,रुज रहितन महिं भोग ॥ चढ़िऐ जबी आकास माहि,गिरिऐ नीचहि लोग ॥३॥ हाथ जोड़ रावत निहुर करि,आदर करत महान ॥ श्रीचंद्र कला पारब्रहम,रचन रचि अपमान ॥४॥१६॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग चंपक ।। गुण निधान प्रभु प्रीतम हरी,सिमरि सिमरि मनि सांति ।। सफल जनम भया मानुख तन,नास कीन भ्रम भ्रांति ।।१।। लागिओ प्रेम हरि तीर ।। दिन दूनो निसि चौगुन बडत भया,धीर पीर इक सीर ।।१।। रहाउ ।। गुप्त करक उर अंतरि परहि,जिहबा वरण न जाइ ।। वेदन विरति न वांछित मनहि,दाह माहि सुख थाइ ।।२।। कथनी बदनी छोर मारग,चलहि थिरत नहि पाइ ।। काहि कहिऐ काहि सुनीअहि,होस हवास गवाइ ।।३।। परमानंद गंभीर सागर,बूड मगन रस संग ।। श्रीचंद्र बिन नाम गोबिंद,अपर नहिं किछू अंग ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग चंपक ।। भसरा फूक भरत जस सास,नाम हीन नर केर ।। बिरथा लीन जनम जग माहि,भार लयो सिर ढेर ।।१।। आवन का किआ लाह ।। हरि का नाम न रसना लीन,दम का किआ वसाह ।।१।। रहाउ ।। को जानै किहुँ ठामहि मरहि,किहँ बिधि मरनो होइ ।। कवन देस कवन काल होइ,वसतु कवन संजोइ ।।२।। बालक बिरध कि तरुणापन ह्वै,जल संगम कै रौड़ ।। गहिबर अरणहि

ताल तमाल,ऊठत बैठत दौड़ ।।३।। को जारहि को गाडहि धरा,काक कि कूकर खाहि ।। श्रीचंद्र नहिं सूझ परै,किह बिध होइ बिनाहि ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। चितवहु चितव चितव सुख पावहु,पारब्रहम निरंकार ।। ईत ऊत दुहुँ लोकन सुखी, जपि जपि रिदै मुरार ।।१।। हरि को नाम सम्हार ।। अगम अगोचर वस्तु परापति,दरस लहित दरबार ।।१।। रहाउ ।। उडता मन थिर अबिचल धाम,कंचन रतन उसार ।। अनहद नाद धुनी प्रगटए,इकरस रुणझुणकार ।।२।। जलवागीर जलवे महिमत,भव सिउं छूटी कार ।। नाइक नाइका व्रित रची,अंगिआ टूटी तार ।।३।। रामहि राम राम रमि रहिआ,जा का अंतु न पार ।। श्रीचंद्र चढ़ि गगनंतर महि,पेखिओ रूप अपार ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। पारब्रहम प्रभु किरपा धारि,आपनि ओर कर लीन ।। पाप ताप परिहरन कीने,थाप दास निज लीन ।।१।। सौंपी अपनी सेव ।। गुहिअ वस्तु खनि प्रत्यख कीन,अचरज पायो भेव ।।१।।

रहाउ ॥ रतन जवाहर माणक लाल,कीमति कही न जाइ ॥ जो पेखै सो होइ हैरां,आइआ आप गवाइ ॥२॥ पहुँच न साकत जन सो कोइ,करते कला दिखान ॥ ऊपर सगले लोक हुते भे,जीवन पाए प्रान ॥३॥ अचरज सिउं अचरज मिल रहिआ,हीरे हीरा संग ॥ राम नाम श्रीचंद्र लखा,सहिज समाइ तरंग ॥४॥२०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ सत्गुरु पूरे भए क्रिपाल,अपने कीने आप ॥ दूख रोग सोक सभि बिनसे,हरि नामा जपु जाप ॥१॥ पारब्रहम हरि राइ ॥ अपना आप दिखाया आप,सत्गुरु तन उपजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम की हउमै मैल,खिन महि खोई डार ॥ निरमल मन लाख परमेस्वर,पापन भार उतार ॥२॥ माया सकल बिनासी उरहि,आतमराम जनाइ ॥ दीन दरद दुख भंजन प्रभू,सभ जग एकै भाइ ॥३॥ गिआन अंजन बुधि नैन पाइ,गुण पटलनि भा नास ॥ श्रीचंद्र घट घटन माही, गोबिंद केर परगास ॥४॥२१॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग चंपक ॥ जड़ की सेव न प्रीतम लहहि,देखहु तीरथ न्हाइ ॥ अगिआन तिमर नहि नासहै, कोटी करम कमाइ ॥ पाहन लै बूडिओइ ॥ बिनु गुरु करम कमावण केते,पार न परिओ कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ वेद वाद महि रार रचि कर,निज निज पंथ चलाइ ॥ जहँ मतसर को तिआगिबो थो,सोऊ द्रिढ़ी कुभाइ ॥२॥ कोऊ काबै महि प्रमानत,कोऊ कहि जगंनाथ ॥ भूलि भूले काट चक्रनहिं,लहिओ करि किछु हाथ ॥३॥ जाहि हितु सभी करम धरमन,करत द्रिढ़ जग जंत ॥ सोऊ बिहाइ मन श्रीचंद्र,अनिक जोनि भरमंत ॥४॥२२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ सगरी पुरीआं रट पेखी,धाम चार लख पाइ ॥ अठसठ तीरथ मज्जन किऐ,मेडक रहहि अघाइ ॥१॥ तीरथ हरि को नाम ॥ सिमरि सिमरि नाराइण हरी,पूरन सगले काम ॥१॥ रहाउ ॥ बिचरि बिचरि जग महि पेखिऐ,सभ लूटन की ठौर ॥ एहि ठाकुर सभ मूल जानहु,कहाँ भुलाने और ॥२॥ जो किछु गाँठ महि बाँध आइ,एही आगहि टेक ॥ अपर केरी न काँख राखहु,समझि

बुद्धि बिबेक ।।३।। गिआन धिआन नहि राम सिमरन,धन खोसनै उपाइ ।। श्रीचंद्र जग साधु बाझहुँ, रहिओ नरक सिधाइ ।।४।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। एक टेक हरि नाम धार उर,अवर तिआगहु आस ।। जाहि जापै आन जाचन, बिरथा लाज मरास ।।१।। काहूँ त्रिपती नाहि ।। भोग भोग विकारन रचि पचि,त्रिसना बूझत नाहि ।।१।। रहाउ ।। एक नारी भोग सु परिहर,अपरै का उर दाह ।। लाख कोटन रूप सुंदरी,केरी उर महि चाह ।।२।। अरब खरबन द्रब्य जोरिओ,कंचन रूपा दाम ।। पाट पटंबर रंग बरंग,अधिका उपजत काम ।।३।। देवराजहि राज छीनिओ,ब्रहमपुर लिआ जीत ।। श्रीचंद्र नहि आस पूरी,रहिओ सखना चीत ।।४।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। दिवस रैणि बन गहिवर गाह,झेलि नदीआं वाह ।। कर कुदाल लै धरनि खोदी, रतन मणि मनहि चाह ।।१।। बहुबिधि हारिओ खोज ।। भूख दूख तन पिआस नाहिं मन,निसदिन

भरमत रोज ॥१॥ रहाउ ॥ परबत सिखर ऊच बिन पंथ,लोभ लाभ अवगाह ॥ कंटक झाड़ बेहड़ भरमिओ,लाज कुलाज विनाह ॥२॥ गहिर गंभीर अथाह सागर,डुबकी गोते खाइ ॥ जीवन आसा धन के संगे,नहि मरनै डोलाइ ॥३॥ चितवत चितवत दिवस बिताइ,उर सिउं त्रिसन न नास ॥ नागो श्रीचंद्र उठ गयो,पूरे ह्वै गै स्वास ॥४॥२५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ जोगी भूले जोग धिआनहि,संनिआसी अहंमेव ॥ पंडित पढ़त पुराण सद ही,वेद वाद कहि भेव ॥१॥ मदमातन सुधि नाहि ॥ मोह माया भूले भ्रमहि,आतम नाहि अघाहि ॥१॥ रहाउ ॥ घुँघरु बाँधे न्रित रचाई,नाम धरिओ रामदास ॥ भगति नवे प्रकार बरणहि,भगति न उपजी खास ॥२॥ सालगिराम बिप्र पूज मानिओ,शैव लिंग शिव थाप ॥ तांत्रिक दुरगा भैरवी रचि,वरणी महा प्रताप ॥३॥ पारब्रहम परमेस्वर प्रभु,लहिओ नाही उर भेव ॥ श्रीचंद्र लखि कोटि करम,भरमत जान न सेव ॥४॥२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। सरब करमन मूल सत्त उर,द्रिढ़ धरहु बिस्वास ।। सच्चिदानंद सोऊ लहहि,सत्त रिदै निवास ।।१।। सच्च सभ गुणहि मूल ।। करम धरम अनेक अन क्रिया,पहुँच सकत नहि तूल ।।१।। रहाउ ।। न्हाइ तीरथन लाख कोटनि,मनहु न उतरसि मैल ।। महा विकार विभिचार विआधि,कैसे ह्वै सुचि सैल ।।२।। परम पूरण मिलहिं संत जन,साच मनहि संचार ।। रतनाकर भव महा गहिरो,खिन महि उतरत पार ।।३।। गिआन धिआन हरि नाम सिमरन,साच सिउं रिदै वास ।। श्रीचंद्र जिन साच जाता,ताही चरनन दास ।।४।।२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। परमेस्वर के भजन बाझउं,सगले दीसहि पोल ।। मिथिआ रसना नित प्रलापत,अंतरि खाली ढोल ।।१।। हरि के नाम बिपरीत ।। राम नाम संग बोल बोलत,धन जाचन हित चीत ।।१।। रहाउ ।। पिट ढंढोरा राम भाखत,मन कालुख मल पाप ।। अवरनहि उपदेस वरणहि,सिर भसु डारी

आप ॥२॥ पारब्रहम जिनि रिदै पछाता,मगन मनहि आनंद ॥ जनम मरण निवार उबरही,भजत भजत गोबिंद ॥३॥ छूट जंजाला जगत केरे,भए ब्रहम महि लीन ॥ ह्वै एकांती थिरे श्रीचंद्र,आतम रसहि भीन ॥४॥२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ एको सिमरहु एक सिमरहु,एक सिमरहो बीर ॥ संसार सागर माहि तुलहा,खिनहि उतरहु सु तीर ॥१॥ एक टेक गोपाल ॥ आन उपाव न काम आवति,चोटि गहित जब काल ॥१॥ रहाउ ॥ हरि नाम हीने कोटि करम,करंत नरक परंत ॥ काम क्रोध अहंकार मोह,गहि ग्राह खावत जंत ॥२॥ घोर अगनि महि परे जलहैं,कोऊ रख्यक नाहि ॥ कलप कलपन लौं नहि निवारहि,महा दूख कलपाहि ॥३॥ भजन गोबिंद सार जग महि,कली काल सु विसेस ॥ श्रीचंद्र उर ओट धारी,पायो गुरु उपदेस ॥४॥२९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ एक टेक गोपाल गोबिंद,पारब्रहम करतार ॥ राम नाम आधार जन का,नाराइण सु

मुरार ॥१॥ हरि सिमरण सुख सार ॥ महा किलविखन नास करता,मुख ऊजल दरबार ॥१॥ रहाउ ॥ पंथ बिखड़ा भीड़ी बीथी,मुकत करत हरि राम ॥ भूख त्रिसना अधिकी न जिहँ ठाँ,रस कसा सुभ्र ताम ॥२॥ संग साथी कोऊ जहाँ नहि,हरि नाम की तहँ ओट ॥ गुरज मुद्गर गदा मूसलन,लगन देइ नहिं चोट ॥३॥ अगिआन सागर खात गोते,बोहिथा इक नाम ॥ श्रीचंद्र झट होत हाजिर,करन सार परनाम ॥४॥३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग चंपक** ॥ चरन सरन दयाल गोबिंद,करतार हरी राइ ॥ कोटि जना उधार करत हो,जहँ तहँ होत सहाइ ॥१॥ ईत ऊत सद साथ ॥ ऊन नाहीं कतहूँ ठौरहि,बाट घाट पथ पाथ ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दरद दुख भंज माधव,सुख संपति संचार ॥ अनिक बिघन खिन माहि हरता,जन निज करत उधार ॥२॥ महा किलविख नाहि विआपत,जपंत ताका नाउं ॥ मध्यान रवि की घाम तीखन,तहां सु सीतल छाउं ॥३॥ सकल करमन दौत उचापत,हरत निमेख मझार ॥ श्रीचंद्र मन सदा सिमर

तहि,परहैं भव निधि पार ।।४।।३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। पाप भार मन बेड़ी भरा,भव निधि डोले खात ।। पुंन कंधी दिस न आवई,चिंता वात डुलाति ।।१।। हरि प्रभु राखहु पात ।। निहचय देहु वडिआइआं,सनमुख फुरिऐ बात ।।१।। रहाउ ।। मंत्र जंत्र नहीं पोह सकहि,हलहि न चलदल पात ।। भूतन ईटां बरस रहीआं,अंगन नाहि छुहात ।।२।। शक्ति सिधि भरमाए नही,ओरे जिउं गल जात ।। अबिचल धूणी विभूतीआं,बरसत धारा सात ।।३।। आसण बैसण असथिर सदा,राम नाम दिन रात ।। श्रीचंद्र कउ बखसस करी,अपने दर सों दात ।।४।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। अजब कम करते हरि प्रभू,सभ बिधि पूरण कीन ।। रिद्धि सिद्धि निधि चरणी लगी, आगिआकारी दीन ।।१।। कोऊ कमी न कीन ।। दूध पूत धन धाम माल ग्रिह,सरब सूख संलीन ।।१।।

रहाउ ।। जो जो आयो सो वरसायो,प्रसंन भए अति दीन ।। चौदह लोक भुवन त्रयन महि,गमन अरोक गहीन ।।२।। महाराज सिरताज सिरोमणि,कीने प्रभु अधीन ।। आसण ऊच छत्र सिर झूलत,तखत बिठाए चीन ।।३।। सरब देवते करत जुहार,कर जोरत मति पीन ।। श्रीचंद्र लहि किरत सिंघासन, भयो न कबहूँ खीन ।।४।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। पापा मति की हानि कीजै,वेद वाक वीचार ।। साधु संगति बिस्वास होइ,सच्च नाम करतार ।।१।। निगुरै मत्त न काइ ।। मन हठ बूडा अहंक्रित महि,कसमल भार लदाइ ।।१।। रहाउ ।। दिन दूना निसि चौगुणा हित,संतां की ले टेक ।। पारब्रहम मन वासई,अंतरजामी एक ।।२।। हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे,राम नाम उरधार ।। भवजल निधि महि बोहिथ लहहिं,उतरे पार किनार ।।३।। गुरु गोबिंद सद सिमरीऐ,जिस ते जापै तत्त ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम बिहूने,नहि काहूँ करि गत्त ।।४।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || जिउं जानहु तिउं राख लेहु,निज किरपा करहु सार || कलिजुग माहि जनम भयो है,पसरिओ पापन जार ||१|| भुज गहि राखहु आप || दहदिसि किलविख अंधकार महा,उपजावत संताप ||१|| रहाउ || सगरे तीरथ हीन फलन भए,जंत्र मंत्र निहकाम || जाति वरण कोऊ सुधि न रहिआ,बड़े पंथ बदनाम ||२|| अपनी भासा परिहर निखल,बानी रटत मलेछ || पुंन धाम भ्रस्ट आचरणी,भरे अंतरि सु द्वेस ||३|| देव सगरे सु तिआग अवनी,भए अंतरि धिआन || श्रीचंद्र को देहु सरणा,जहँ ते है कलिआन ||४||३५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || अनिक जोनि मांहि भ्रम भ्रम कर,दरमांदा दर ठाड़ || मानुख जनम किरपा तुम लहा,भजन दै सिरे चाड़ ||१|| हमरी सार सम्हाल || अपनी सरणि राख गोबिंदा,कर कै नदरि निहाल ||१|| रहाउ || चित्त न धरहु अपराध हमरे,तुमरी मिहर अपार || चरण सरणि जो जन कौ

देहु,होहि न तुमहि खुदार ।।२।। तुमरो किणका जन कौ मेरु,रतन पदारथ लाल ।। सगरी भूख त्रिसना बिनस है,त्रिपति संतोख विसाल ।।३।। ईत ऊत नहि डोलहुँ कतहिं,लाग तुमारै पाल ।। श्रीचंद्र पहि द्रिस्टि धारहु,पूरण होवहि घाल ।।४।।३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। लागी प्रीति गोबिंद संग,मन तन रंग भीना ।। प्रीतम अपना समार उरहि,अंतरै रस लीना ।।१।। लज्जा लोक बिसारी ।। नाची बीथी बीथी मही,फोरि चुराहि झारी ।।१।। रहाउ ।। अपना साजन सुआमी लहै,सुखी भो मन नारी ।। कंत मिलिओ दुख सगल बिनसै,गावति मंगलचारी ।।२।। बकनी कथनी बिसरी सगली,लिव मन मगन तारी ।। मात पिता भाई बहिनिआं, नाते गे संसारी ।।३।। नाराइण रावहि निजानंद,बार बार जुहारी ।। श्रीचंद्र मन सहिज लीना,खूब बाजी तारी ।।४।।३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। कूक कोयली तीर चलाहि,चातक टेर सुनाव ।। बिरहु हमारा तुम प्रकटाहु,कहु कौनहु

परभाव ॥१॥ खड़ी उडीकत तोहि ॥ काक बनेरहुँ उडत नाहीं,प्रीतम को उर मोहि ॥१॥ रहाउ ॥ नैनी नीर न बोल आवत,कैसे कहिहों बात ॥ प्रेम कानी गडी मोहि मन,करक उर न समात ॥२॥ अंतरि वेदन कहि न साकहिं,कोऊ जानहि संत ॥ अंतरजामी जान मन की,दै है धीरज मंत ॥३॥ कस्ट मेट कै हरहिं पीड़ा,मेल पुरखहि दयाल ॥ श्रीचंद्र की काँख पूरहु,होहि प्रभू किरपाल ॥४॥३८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ अनगन जंत सरणि महि लिए,पसु पंखी म्रिग नाग ॥ महाविकारी अवगुणिआर, चरन रहे तुम लाग ॥१॥ मेट दिए कुल दाग ॥ काक न कहुँ सराहत लखा,तोहि मया वडभाग ॥१॥ रहाउ ॥ सुआन सूकर विस्टा भखते,तुम ते भए सुभाग ॥ कच्छप मीनै किमि जानिओ,तुमरी लागी लाग ॥२॥ वकता रवि स्रोता जन रिखी,अचरज गायो राग ॥ गरुड़ चढ़हि नाराइण चलहि,सागर छीर तड़ाग ॥३॥ हिम गिरि पुत्री शंभु विवाही,कंजज कंजहि लाग ॥ श्रीचंद्र राखहु डोलनहुँ,दै करि आपन जाग ॥४॥३९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। ऊचे ते ऊचा हरि राइ,पहुँच न साकै कोइ ।। लाखहुँ लोक अवगाहिऐ,समसर तिल नहि होइ ।।१।। हरि हरि चरनि परंत ।। तुल अनलै जीवन बिताइ,अंतहि धरणि गिरंत ।।१।। रहाउ ।। पवन गगन महि बांधै द्रिढ़हि,अनिक कलप कै गेड़ ।। चिरजीवी वर वरसाइ कर, दहदिसि भ्रमहि अतेड़ ।।२।। सातहुँ जलनिधिन थाह लहहि,पैस पताल अनंत ।। अगनि न सकै जलाइ बदनहिं,सिद्धां पाइ बिअंत ।।३।। अणू परमाणू शक्ति धरहि,खिन खिन रूप वटाइ ।। श्रीचंद्र प्रभु पद पदम महि,सहिज सांति सुख पाइ ।।४।।४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। बिनु जाने सालाह हरि,प्रभु करता पुरुख मुरार ।। जान न ताका जान सकतै,जा का होइ सुमार ।।१।। नाराइण बेअंत ।। सिमरि सिमरि निसि दिवस प्रीतम,पार परत जन संत ।।१।। रहाउ ।। केते पुच्छण पुच्छण करहि,केते करहि वखिआन ।। केते वेद वेदांग लहहि,केते पढ़हि

पुरान ॥२॥ केते पढ़हि कुरान हदीस,केते राग निदान ॥ केते जापै जाप मंत्रन,केतन तंत्री धिआन ॥३॥ केते तीरथ सागर न्हावहि,केते तन लौं दान ॥ श्रीचंद्र प्रभु जान न साकहि,ढहि ढहि परहि निदान॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ अविनासी सत्गुरु पूरा,जास किरपा मन ठाइ ॥ आइ बसै निहचल सिंघासन, त्रिसन भूख बिनसाइ ॥१॥ रिधि सिधि निधि सभ पाइ ॥ सिर साहाँ के साह निवाज,सगल स्रिस्टि डर पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ आगिआकार सगल भू मंडल,नैन न सकत उचाइ ॥ जहँ जहँ जाउ तहाँ तुध बखसस,लोक सकल वरसाइ ॥२॥ बंधन खोल किए निरवैर,बिनसिओ दुतिआ भाइ ॥ आपा परका रहिओ न कोऊ,एका एक दिसाइ ॥३॥ छत्र चवर सीस तुहि दीओ,हीरे रतन जड़ाइ ॥ श्रीचंद्र जग ऊच विराजिओ,समता कोऊ न पाइ ॥४॥४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ मोहि दास जहँ छत्रपति हउ,सभ ते ऊचा सोइ ॥ देह धार अरु देव जेतक,तिल नहि

पहुँचहि रोइ ॥१॥ स्याम सुंदर मुरार ॥ कोटि काम नहिं पहुँच साकहि,सुभ्र रूप सुकुमार ॥१॥ रहाउ ॥ लाल माणक हीर मणिआँ,पाद नख नहि जोति ॥ धिआन धरते न टिकत नैना,चकाचौंध द्रिति उदोति ॥२॥ उमा रमा सुची ब्रहमाणी,कमल बदन अलोइ ॥ स्थंभ सम ढिग ठाढि जोहति, टकटकी द्रिस्टोइ ॥३॥ जाहिं पेखिओ सो नहि बोला,लहहि अचरज स्वाद ॥ श्रीचंद्र प्रभु चरण लागिओ,चक रहिओ विसमाद ॥४॥४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ एक ही टेक गोबिंद की,अन तिआगी सभ आस ॥ अस्ट सिद्धि नउनिद्धि रिद्धि,तिस रहि चरनन पास ॥१॥ हऊँ माँगत आन लजाऊँ ॥ सारवभौम प्रभु तिआग करि,किहँ जाचक पहि जाउँ ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि ब्रहमंड असंख जीव,नितप्रति करता सार ॥ सायर पाहन महि जंत रचि, ता कहु देत अधार ॥२॥ जीवां अंदर जीव उपाए,रिजक पुजावे सेइ ॥ हसती बहु दीना अहार है, करत गुरेज न केइ ॥३॥ चात्रिक लहहि स्वाति बूँद कहु,मरन न देतो ताहिं ॥ अजगर इक थल थिर गुजारत,श्रीचंद्र निज साहि ॥४॥४४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। क्रिपानिधान सरब सुख दाते,हउ तुमरी सरणाइ ।। हमरे अउगुन अंत नाही, बखसस करि अपनाइ ।।१।। आपन भुजा गहाइ ।। भव जलनिधि बूडत कढ लेहु,सभ बिधि होइ सहाइ ।।१।। रहाउ ।। अपर न सूझै कोऊ थाना,जापै कहहुँ सुनाइ ।। आप बुडहि कस मुहि उबारहि,लाज लागती जाइ ।।२।। सुरग पताल खोज पेखिऐ,पंच पेच गहिवाइ ।। बंदी छोड़ प्रभू नाराइण,पग गर बंध कटाइ ।।३।। चहुँ जुगन महि आइ राखत,जन की टेक सदाइ ।। श्रीचंद्र कउ आस तुमरी,तुम बिन अवर न काइ ।।४।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। मन कसौटी परख कस लाइ,हरि नामै का हीर ।। लाखहुँ दुर्जोधन दुस्ट मिलि, नहि उतरसि तन चीर ।।१।। गति सिमरन अगम अगाध ।। जो सिमरै सोई रस लए,अचरज जा का सुआद ।।१।। रहाउ ।। द्रिस्टि चढ़ै गगनंतर माहि,पेखै लोक सबाइ ।। लोका लोक अलोक सुर नर,

दिब्य विमान रमाइ ।।२।। नारद तुंबरु हाहा हूहू,किंनर गंधरब गान ।। रंभा उरवसि मेनका न्रित,पेखै द्रिस्टि समान ।।३।। अनुभउ प्रगटत देव त्रैवहि,सिद्ध सरबै समाज ।। निरमल उर लखै श्रीचंद्र,साधै जोग सु राज ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। जिनि जन हरि प्रभु आपन जाना,ता कै पूरन काम ।। सहिज सांत आनंद पाया,सुख निधान बिस्राम ।।१।। अबिचल राज कमाइ ।। देव सकले सभा पारसद,चतुरंगी सेनाइ ।।१।। रहाउ ।। दहदिसि झूलत छत्र कीरति,चमर झूलत चार ।। निद्धि नव सभ सिद्धि अगाड़ी,ठाड़ि आगिआकार ।।२।। उमा रमा गणेस सरस्वती,नित पलोटती पाइ ।। सिंह सुरभे नाग फनिपति, अग्र सीस निहुराइ ।।३।। कौन बपुरा देवन राजा,जौन फेरे अदेस ।। भुवन चौदहूँ तीन लोकन,श्रीचंद्र को देस ।।४।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग चंपक ।। हम चाकर गोबिंद केरे,जा को सगला राज ।। खावहि भोगहि प्रभू केरा,जग ते

बेमुहताज ॥१॥ पातसाहा का साह ॥ जां का राखा हरि प्रभु धणी,ता को किआ परवाह ॥१॥ रहाउ ॥ आपे सभ बिधि बणत बणाइ,अचरज कौतुक थाप ॥ गहिरे बीआबान जंगल,भोज पुजाए आप ॥२॥ जानणहारा जहाँ नाही,तहाँ करतार सोइ ॥ जहाँ देस नहि जनम भूमी,तहाँ पछाणू होइ ॥३॥ मात्रिभासा नहीं जानते,मुणमुणी बकत वाक ॥ तहाँ प्रतिपालक श्रीचंद्र का,ठाढा है बेबाक ॥४॥४८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ पति राखहु निज दास केरी,नाराइण गोबिंद ॥ तुम बिन हमरा कोइ नाहीं,तुमहिं कौ सभ चिंद ॥१॥ बांधै सस्त्र सबाइ ॥ ज्वलित अगनी पोह न साकत,किरपा बरख बरखाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हुकमी बंदे किआ कहि सकहि,पाहन मूरति मान ॥ खिन महि प्रेरत सकति आपनि,खैंच लेत हो प्रान ॥२॥ प्रबल पुरुख निदेस कारक,मिरतु बापुरी कौन ॥ महाकाल हूँ अग्र ठाढा,कीए नीची धौन ॥३॥ सरब शक्ति संपन्न गोबिंद,हरन भरन का नाथ ॥ श्रीचंद्र कउ सरब थाईं,राखतो देइ हाथ ॥४॥४६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || क्रिपा अपनी आपे ही करि,दासां राखी लाज || अपना स्वांग आप निबाहिओ,प्रभू गरीब निवाज ||१|| दुस्ट दूत गे हार || अंध भए करते प्रभु किए,चहुँ दिसि खैंची कार ||१|| रहाउ || अस्त्र सस्त्र सभ भए बिरथा,पाहन कीने फूल || आगनेय आवत लखत भे,बरस मिटावत धूल ||२|| मुदगर गुरज गदा लै हथी,भाले तुपक क्रिपाण || निसफल भए परस परघे सभ,चक्र भाल धनु बाण ||३|| ब्रहम कवच कीनो अभिमंत्रित,चहुँघा क्रिपा मुरार || श्रीचंद्र कउ राखिओ कर दै, करणहार करतार ||४||५०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग चंपक || जिनि पर मया करी जगदीस,ते लीने लड़ लाइ || साधु संग तिस ही कउ दीन,हरि हरि रस गुन गाइ ||१|| साचै सूख समाइ || डोलन ते चूके थित पाइ,अनत न कतहूँ धाइ ||१|| रहाउ || भै बिनसै भ्रम सकल बिलाने,पूरन भे त्रिपताइ || निसचल भए लागि प्रभू हरि,नित्त नए

सरसाइ ॥२॥ जनम मरन मेट थिर थाई,अबिचल राज कमाइ ॥ स्वजन परजन त्रेड़ बिनसी,एका एक समाइ ॥३॥ अमर पदारथ नाम लहि हरि,सहिज समाधि लगाइ ॥ परिपूरन सो पूरन होइ, श्रीचंद्र सत भाइ ॥४॥५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ हरि सिमरन बिनु जीवन जेता,कहुँ लेखे महि नाहि ॥ बिरथा सास गवावणे,जिउं भसरा फूक भराहि ॥१॥ तन धन बिरथा जाहि ॥ परकिआ स्वकिआ नही होति,समझ देखु मन माहि ॥१॥ रहाउ ॥ महिल मुनारे माल रूपा,बंधु सखा सुत साक ॥ कंचन हीरे माणक लाल,धरनि गही अउभाक ॥२॥ स्वासन लौ तुम ते बिछुड़ करि,पर हैं अवरन हाथ ॥ राच माच जिनि सिउं रहिआ,कोऊ भयो न साथ ॥३॥ करि अवगुण पछुतावहि पुनह,चलहि न कोई उपाइ ॥ श्रीचंद्र गोबिंद भजि लै,होहि है अंत सहाइ ॥४॥५२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ हे प्रभु प्रीतम साचे हरी,आवहु किरपा धारि ॥ तुधु बिन हमरा कोई नहीं,जोऊ करै

सम्हारि ॥१॥ रुलते फिरत अनाथ ॥ बात न पूछत को जगत महि,कैसे बीतति गाथ ॥१॥ रहाउ ॥ दहदिसि छायो अंधकारा,सूझत थाउ न कोइ ॥ मन की बिरथा कहहुँ काहीं,दुखी भरिआ रोइ ॥२॥ करक करेजे परती बहुत,सेले सरकत घाउ ॥ भांभड़ भड़कै पावक जिमै,सुपनै सूख न थाउ ॥३॥ आपणै मित्र पिआरे बिना,बन महिं राखा नाहि ॥ श्रीचंद्र जिंद एकलड़ी,गहि हैं प्रभु की बाहि ॥४॥५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग चंपक ॥ सुनहि न कूक पुकार कोऊ,धन एकलि कुरलाइ ॥ सिंघ बघेले गजन भालुक,बन भरिओ डरपाइ ॥१॥ का सिउं कहीऐ रोइ ॥ बध करबे महि रुचित चित्त जिनि,कैसे सुनि है सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ ताल तमालन सालन केर,अंधकार चहुँघाइ ॥ सां सां सबद भइआनक सुनहि, मानव द्रिस्टि न आइ ॥२॥ साथी संगी नाही कोइ,बाघ दहाड़े बान ॥ रवि की किरण न द्रिस्टि आवत,काल निसा सम थान ॥३॥ अंत समै की दंड आई,करते पुरुख मुरार ॥ प्रगट हूजिऐ श्रीचंद्र हितु,आपन धरम बिचार ॥४॥५४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग खउखट ।।

धुनिक धुनिक धुनि,परति सुनाई सुनि,काल आए पीआ ।। उमगि उमगि चित्त,बार डारों सारो बित, मनो तनो हीआ ।। अधिक अधिक चिर,रहिओ परदेस थिर,ऐहैं अब सांझा ।। मिलिहों बिसार भेद, कहिहों जेतो भयो खेद,हरै दूख मांझा ।।१।। मोहि न बिसारो हरि,आपनो संभारो करि,आसर तुहारो ।। जा की मेट डारो लीक,ताँको अंक लेहो नीक,भूल संसकारो ।। मोहन मुरारि साईं,क्रिपानिधि हरि गुसाईं, सदा संग होई ।। आपणे उबारो दास,थान दीजै चरन पास,अमरधान ढोई ।।२।। गुन गुबिंद नित्त

गाउ,सदा सूख उर धिआउ,दूजा भाव तिआगी ॥ मान मोह अहंकार,परिहर मतसर विकार, अहनिसि रहौं जागी ॥ नाराइण गई बहोड़,नाम देहु क्रोड़ क्रोड़,जिहबा रंग रंगी ॥ संत संग लाग लाग,धोवो उर केरे दाग,सोई सोई जागी ॥३॥ आनंद मगन रस,चरण कमल धस,आपा आप वारों ॥ पात्र मया तुहार,कबहूँ न आवों हार,घूँमर घुमारों ॥ धूड़ि पग सीसधार,अठसठ न्हाइ वार, बिमल मन होवै ॥ तीन लोक देव त्रयी,सुरासुर पुर कई,द्रिस्टि तर जोवै ॥४॥ हरि हरि हरि गाया, सूख सहिज समाया,आसा त्रिसना खोई ॥ मात पिता गुरुदेवा,अंतरि सुख लहि सेवा,जनम मरन खोई ॥ लिव तार अनादी,रस आनंद सादी,गोबिंद लागी लाग ॥ अनिक जनम भ्रम,अधिक लहिओ स्त्रम,अबै भयो वडभाग ॥५॥ धरणी आकास कुल,जन हित सिरजिअल,पौणा लहै सार ॥ अगनि ताप तपाए,आप आप सु लखाए,रचना सुधार ॥ मोहन मुहि मोहिओ,दूख न पोहिओ,मिल राम राइ ॥ राम राम राम जप,राम राम राम तप,श्रीचंद्र इक भाइ ॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।।

दीन दयाल सदा क्रिपाल ।। अपणी क्रिपा करहु प्रभु मेरे,इत उत राखहु अपने पाल ।।१।। रहाउ ।। हम तुमरी सरणाई प्रीतम,तुम सद द्रिस्टि सु दया निहाल ।। अवगुण हमरे चित न धरीजै,मूढ़ अगिआनी भूलत बाल ।।१।। विखै विकारन अनिक प्रकारन,उपजति उर महि अधिक खिआल ।। जान बूझ करि पड़त कूप महि,कर गहि राखिओ दीपक बाल ।।२।। मनमुख संगति निसदिन राते, ठौर बुराइआं थिर तहिं भाल ।। तुमहि निवाजनहार जगतगुरु,श्रीचंद्र परवर प्रतिपाल ।।३।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मिहर दया करि अपनी नीति ।। साधु संग उपजै बिस्वासा,हरि कीरतनि सिउं

लागै चीति ॥१॥ रहाउ ॥ ऊठत हरि हरि बैठत हरि हरि,हरि हरि कथा धरहुं उर प्रीत ॥ ईत ऊत संगी हरि नामा,सदा समारउ हरि हरि गीत ॥१॥ हरि हरि भोजन हरि हरि पानी,हरि हरि बसन निवारउ सीति ॥ हरि हरि मंडप हरि हरि महला,हरि हरि रंग रमउ रस रीति ॥२॥ हरि हरि गिआना हरि हरि धिआना,हरि हरि सहिज समाधि ग्रहीति ॥ हरि हरि नाम बिना सभ परिहर,श्रीचंद्र लायो मन हीति ॥३॥२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ साधु संग निसदिन रंग लागा ॥ हउमै निद्रा परिहर तन ते,कीरति करत सदा सद जागा ॥१॥ रहाउ ॥ बिख बिखिआ की आसा चूकी,माया रंग भंग मद भागा ॥ साधु जना अति दया सु धारी,बिगड़ा दिओ सवार सु आगा ॥१॥ एकंकार विआपक जहँ तहँ,ऊन न पेखिअत काहूँ जागा ॥ काम क्रोध अहंकार बिनासे,ठाकुर प्रेम नेम रस पागा ॥२॥ बहिओ जात कलि घोर नदी मन, कर कर धरि करि डार तटागा ॥ साजन मित्र सैन संग साथी,श्रीचंद्र प्रभु पुरुख सभागा ॥३॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। काहे जीवन बिरथा खोत ।। राम नाम जपु निसदिन प्राणी,भवसागर महि पुस्टा पोत ।।१।। रहाउ ।। रतन करोड़ मूल यदि दइऐ,एकऊ सास न प्रापत होत ।। केते गए केते जै हैं बिरथा,नितप्रति चलिओ चलतो स्रोत ।।१।। जो बीते सो हाथ न ऐहैं,बाकी जो तिनि सम्हल धरोत ।। मटका तन फूटिओ जल निसरत,खाली ह्वै है अंत निरोत ।।२।। सार समाल समझ चित भीतरि,जम सनमुख कहुँ जाहि न रोत ।। गोबिंद भजन सज्जन तुहिं कामा,श्रीचंद्र अंधिआरे जोति ।।३।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। बनी रहेगी जिउं तिउं दुनीया ।। बाग बगीचे सुंदर मंदर,हीरे लाल खचित नग चुनीआ ।।१।। रहाउ ।। धरणी माल पसू धन चाकर,अतर फुलेल सुगंध हुतनीआ ।। खान दीवान मैदान अस्व रथ,चतुरंगनि संग सभा स गुनीआ ।।१।। तरुणी तरुण साक सुत भाई,दुहिता मित्र सजन सह मुनीआ ।। नगर बगर नग अरण्य नदिआं,हदीं ठंडे गाडी मुनीआ ।।२।। दंड कुदंड

बिसिख खंड चंडण,सैफ सरोही सहिथी धनीआ ॥ तू ही नहि रहिबो इह ठाईं,श्रीचंद्र रहि रमन रमनीआ ॥३॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ किआ करहै बड पाउ पसारे ॥ साधु संगि नाराइण सिमरहु,इह जग जीवन चार दिहारे ॥१॥ रहाउ ॥ हउं बड चतुर सिआना सुंदर,हमरी भूमि द्राह नद नारे ॥ हउं अतिरथी महाबलि जोधा,हम सत्रू रण खेत्र लतारे ॥१॥ हउं गढ नाइक पायक रावत,हमरे सनमुख को जु निहारे ॥ हउं सभ धरनी राज लयो कर,तरुणि रतन गण मोहि जुहारे ॥२॥ हउं बंधउ हउं छोडउँ मारउँ,आगिआ हमरी सभ अनुसारे ॥ अहो निदान गुमान केतनो,श्रीचंद्र बैठन होइ किनारे ॥३॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ इन महिलन की मांगत खैर ॥ चित्र वचित्र चित्र करि चित्रित,गाढी नीवा पक्के पैर ॥१॥ रहाउ ॥ बडी सढील फसीद चौगिरदे,बुरज उतंग सुरंग सधैर ॥ जातरूप के कलस सुहावत,गाडी धुजा फरावत चैर ॥१॥ चूने गज गच घोटै अधिकै,मुख देखण को दरपण दैर ॥

तरवर बेल बैल म्रिग पाड़े,सारक कोक कपोती कैर ।।२।। रचि रचि खूब सवार सुधारे,गुंज बसाई धरणी मैर ।। रे मन मूढ़ सहूड़ बिचारहु,श्रीचंद्र किमि धरहैं पैर ।।३।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। रे नर,आपन आप सवार ।। गोबिंद पद अरबिंद गहीजै,जाहि न दरगह हार ।।१।। रहाउ ।। का को तू उपदेसित बवरे,बेढिओ क्रोध मोह अहंकार ।। अरपण परणकुटी अटवी कहि,आपन कंचन मोहन सार ।।१।। परत्रिअ मात बहिन भगनी रट,आप रचिओ वेस्या विभिचार ।। रूखा सूखा भोग गुजारहु,चहिऐ मोहि दुगध फलहार ।।२।। तन मन धन का अहं तिआगहु,मैं प्रसिद्ध भव वेदाचार ।। अवरन कहहि न आप कमावहि,श्रीचंद्र बहि काली धार ।।३।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु की प्रीति रीति सुखदाई ।। सांत सहिज सील सुख निरमल,काम बाम की जलन मिटाई ।।१।। रहाउ ।। हउमै पीर मिटी दुख बिनसै,बंचक बंचन लगनि न राई ।। सज्जन दुरजन भाव बिलाना,कत को आवत कत को जाई ।।१।। जात गोत अरु पात निपाती,बिप्र चंडाल सकल

गुरुभाई ।। ना को हमरा ना हम किस के,धंध बंध उठ गई निकाई ।।२।। संतन संग संत की सेवा, संत बात हत भई बुराई ।। साध संग नाराइण जपिऐ,श्रीचंद्र मन पूर रहाई ।।३।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मूढ मन हा हा करत गुजारी ।। त्रिपति न पावत काहूँ बाते,आसा महिल महान उसारी ।।१।। रहाउ ।। सुंदर अति सुभग सलोनी,चंद्रमुखि गन चहिऐ नारी ।। राज महिल ते दोगुन ऊची,तुंग उतंग किंगुरनवारी ।।१।। चार दालान उताक रसोई,बुरज झरोखेदार अटारी ।। द्रिग संकेत कार सभ सवरे,धन पावन आए वपारी ।।२।। रतन जवाहर माणक मणीआ,पंने बज्र लाल नग चारी ।। त्रिसना पूरण श्रीचंद्र किहँ,कलप कलप जूए मति हारी ।।३।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। बिखिआ महि कहु कोऊ त्रिपतायो ।। राम नाम भजबो तजि करि वर,कर सो चाइ न्हाइ खेह पायो ।।१।। रहाउ ।। ईंधन सो कबि पावक ध्रापसि,तेल डार किनहूँ विसमायो ।। तेलक चनक साख म्रिग निसिमहि,होइ निसचिंत सोइ विरमायो ।।१।। अनल कोटि नभ महि बिचरंते,

परला पार किनहि कबि गायो ।। इक ते एक चमक बड धारक,तारक मंडल को गिन आयो ।।२।। निसदिन पी पी अधराम्रित भरि,जल त्रिसना की पिआस हरायो ।। चसा दंड पल आनंद श्रीचंद्र,दिन पख मास न चहित गवायो ।।३।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मनमुख मोहिओ मोहनी रूप ।। पुत कलत मुख मिथिआ भाखत,परिओ आप त्रिअ के भग कूप ।।१।। रहाउ ।। धन मिथिआ किउं संचन करना,क्रय विक्रय धरणी संग भूप ।। किमि सुख सांति लहहि मन भीतरि,तन पावक की लागत लूप ।।१।। बिन बोहिथ नावहि तुलहे के,सागर किमि करि तरै अचूप ।। खाइ हलाहल अमर भयो को,चानण वक्त गयो तम घूप ।।२।। करणी ही गुरुमुख आभरणी,मनमुख कथनी खड़का सूप ।। धंध बंध बूडे श्रीचंद्र जु,कथ कथ कथा सुनाहि अनूप ।।३।।१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जिहँ नर हरि हरि नाम न चेता ।। मानस जनम अकारथ खोया,बिरथा जननी कउ

दुख हेता ॥१॥ रहाउ ॥ बन बंसा बंसहि उपजायो,दाहक ब्रिख मलयज निकेता ॥ सुंदर पाट पहिराय गडायो,डरना जनु हरिआवल खेता ॥१॥ कुंडी मीन धसी उर माया,तबि निकसी जबि प्राण निलेता ॥ रसकस खाए पिंड वधाए,भोग भोग तन हारिओ रेता ॥२॥ आधि विआधि उपाधि ग्रासिओ,हाइ हाइ कर स्वास भरेता ॥ श्रीचंद्र मुख थुक थुक डारहि,संगी चितवहि मरणो नेता ॥३॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ किउं नर जनम अकारथ खोया ॥ राम नाम का भजन न कीनो,चादर लंमी ताण सु सोया ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु दरगाहों चिड़ीआं कांगा,दीआ संदेस वडा करि ढोया ॥ सुणिआ अनसुणिआ कर दित्ता,आलस मानै मूँह लुकोया ॥१॥ झिमि झिमि अम्रित बरसत धारा,निज मुख पैणन दीनसि चोया ॥ फेर फेर पासे घुरड़ाइओ,सुपने जाइ भूत तन जोया ॥२॥ मालक जागे चाकर सोवै,दास कहाइ लानती होया ॥ श्रीचंद्र पंच तसकर लूटहि,बरजनहारा रहा न कोया ॥३॥१४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मूढ़े द्रिस्टि न आवत काल ।। मुच मुच लोग उदर निज पोखहि,पोट धरी सिर पाप बिसाल ।।१।। रहाउ ।। जुआन सुआन धूती सीचाने,ले बन जीवन कीआ हलाल ।। तुमरो किआ गवाया म्रिग गन,नाहक मारन पड़ा खिआल ।।१।। इंसाफै हित तुम को थापिओ,निआउ खुदाइ करहि दरहाल ।। जउ तुम अपनी मौत न चाहत,मौत इनह किउं कर करनाल ।।२।। परवरदिगार गफ्फार समारहु,दरगह होइ है इही हवाल ।। फक्कर मिलि शक्कर खा श्रीचंद्र,जीआं मारन चाल कुचाल ।।३।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साधु संग मिलि नाम जपीजै ।। भोजन पान जैस नित खाना,हरि सिमरत किउं आलस कीजै ।।१।। रहाउ ।। उठि परभात करहु इस्नानहि,नदी किनारा पिख सीरीजै ।। ओम् जाप जपहु मन एकी,लाहा लाभ लाख गन लीजै ।।१।। मन निरमल ते निरमल काया,निरमल माया राम रवीजै ।। निज पर दया चितैं जो हे मन,आपन आप दया रस भीजै ।।२।। साच सरूप बसे उर

भीतरि,कूड़ कपट करि दूर लहीजै ॥ श्रीचंद्र निसचय प्रभु मिलहै,गुरु संतन के अंग लगीजै ॥३॥१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ भजि मन हरि नाराइण पूरा ॥ बिन भाग सतसंग न पाइऐ,संत बिना नहिं बिनसै कूरा ॥१॥ रहाउ ॥ उदर मैल जग हिरदै वासी,साधू करत ताहिं चकचूरा ॥ उदर बुराई उदर खुटाई,लोभ पाप का उदरउ मूरा ॥१॥ उदर हेतु डहकै नर नारी,भेखी गयो उदर नहि सूरा ॥ उदरहुँ रंक उदरहुँ राजा,उदरहुँ काजी वढी खूरा ॥२॥ उदरहुँ पंडित कूड़ अलावहि,उदरहुँ दंभी सिर धर धूरा ॥ उदर नहीं संतन उर माही,श्रीचंद्र गुरु नूरो नूरा ॥३॥१७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ हरि माया का नाही अंत ॥ पर ते परे महा अपरंपर,पाया जावत आदि न अंत ॥१॥ रहाउ ॥ जात पाताली चाढ़े गगनी,गगनी जाते अधो गिरंत ॥ ऊचे थल सिर सागर भरि रस,सागर ठौरे थल सिरजंत ॥१॥ हिम परबत महि कमल प्रफुलित,कमलन हिम रितु महि

बिगसंत ।। पंडित मूरख मूरख पंडित,नारी नर नर नारि होवंत ।।२।। बकरी सिंघ सिंघ भव बकरी, रोवत हसतो हसत रुदंत ।। नगर उजाड़ उजाड़हि नगरी,श्रीचंद्र खिन माहि रचंत ।।३।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। रे मन जगजीवन दिन चार ।। राम नाम सिमरहु रिद अंतरि,कारज आवत अंतह बार ।।१।। रहाउ ।। पातिसाह उमराव खान बड़,मलक मलायक दुनीयादार ।। सूरबीर दीवान मुकद्दम,छोडि चले तुंग महल अटार ।।१।। रसकस मेवे दाख अंगूरी,फुल फुलवाड़ी अपन बजार ।। घोड़े हाथी रथ बहिलां सण,तीरंदाज बंदूकांवार ।।२।। नाल न किसहूँ कबहूँ चल्ले,एकल नंगे जाणा दुआर ।। जिनि सिउं हेत सि काम न आवहिं,श्रीचंद्र चित समझ गवार ।।३।।१९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। काहे दुनिआ सिउं बिरमायो ।। मोमो ठगणी बन बन मोहै,मुख मीठी अंतरि कौरायो ।।१।। रहाउ ।। साधु वेस सित लंबा जामा,दाढ़ी अधिक सिंगार सजायो ।। गल माला माथे महि टिक्का,टका बटोर कउ मन लायो ।।१।। मंदर थापिओ सालिगरामहि,पाहन थप शिव जग

डहकायो ।। मसले गड़ गड़ मसजिद बैठे,धन ठग्गण बिन काम न कायो ।।२।। भार कसमल पोट उचाई,कूड़ पसारा संगल पायो ।। जिस हित दीन गवायो मूढे,श्रीचंद्र तिस तिनहि गवायो ।।३।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सेई काम जोऊ काम न आवहि ।। जिनि हित अघ औघन सिर चायो,सोऊ तज करि दूरि परावहि ।।१।। रहाउ ।। दुगध मलाई सो जिहँ पोखत,सोऊ तुहि धर मरघट जावहि ।। जिनि के लिए धरनि विहाझी,धरनिहि ते वेई निकसावहि ।।१।। जिनि रख्यक बन सोए न निसदिन,तिनहुँ राखबि रैनि न भावहि ।। जिनि कारण ऊच महिल बनाए,महिल ते तेउ लै धावहि ।।२।। जिनि कारण संग्रहि धन कीना,धन ले तुझ कउ आगि लगावहि ।। समझ बूझ नर मूढ अयाने,श्रीचंद्र रिखि मुनि समझावहि ।।३।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। ये किआ माया केरी प्रीत ।। दोइ सेर चूनो तन ओढन,काम न आवहि अपर

ग्रहीत ॥१॥ रहाउ ॥ सुरजन को दुरजन करि डारे,अपने करत बिगाने मीत ॥ लोभ लागि सरधन के दुआरन,किंगुरि गहि कर गावहि गीत ॥१॥ कस्ट सहार न धन प्रापति भा,बटपारी पुनि धारिओ चीत ॥ ऐऊ नहीं तू बंची ऊतम,ऐऊ नही हतबो निरनीत ॥२॥ दुर प्रापति दुर राखब अति ही,दुर जावन मरणो ही जीत ॥ रे मन मूढ हूढ माया क्रिमि,श्रीचंद्र किमि लायो हीत ॥३॥२२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ राम नाम किउं नाहि चितारें ॥ परधन परदारा रंग राता,मानस जनम अकारथ हारें ॥१॥ रहाउ ॥ इह लोके कै भोग बिलासन,आगल लोकै सूख बिगारें ॥ चौरासीह लख जोनि फेर पा,नर तन मिलिओ न चीत बिचारें ॥१॥ पूरब करम पुंन बड प्रगटे,गज सम न्हाइ खाक सिर डारें ॥ हंस भयो भुगति थी मुकता,काक बनों मुख विस्टा सारें ॥२॥ सुर दुरलभ इह मानुख देही, बिखै परा मुख धसिअहुँ गारें ॥ संतन कहिओ मान नर बावर,श्रीचंद्र सुर देव जुहारें ॥३॥२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ रे मन राम सिमरि पछुताहिंगा ॥ हरिचंदउरी हितु कंचन के,गमन गमन किआ

पावहिंगा ।।१।। रहाउ ।। सारद बारिद पेखे चातिक,स्वाति बूंद किमि खावहिंगा ।। ऊची चौकड़ि धौंकड़ बाजी,म्रिगत्रिसना अघावहिंगा ।।१।। खोले भीति बैठ करि कागा,रोटी टूक लहावहिंगा ।। कोदउ खेत हरित लख हंसा,मुकताहार करावहिंगा ।।२।। अति दीरघ होइ वंस लहिरायो,आपन ही जल जावहिंगा ।। अंतु अगनि वासा ह्वै श्रीचंद्र,धूड़हि धूड़ धुमावहिंगा ।।३।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। रे मन साची इहै बिचारा ।। हाथ गहिब हित कछू नही है,सुपना एह सगलो संसारा ।।१।। रहाउ ।। सुपन त्रिआ रंग रलीआ माणी,वीरज पात उठिओ धिधकारा ।। निसि सुखपत बेसुध गवाई,भोर भयो वज कूच नगारा ।।१।। मद मत भोगन युवा बिहानी,खाट जरा परि हाहाकारा ।। रोग ग्रसिओ कर कानि न कउड़ी,दूर पराने सुत परिवारा ।।२।। नैन नीर कफ कंठ बिरूधो,कर पग हारे चलत न चारा ।। सास आस अब चूकी श्रीचंद्र,राम नाम नहिं कबहुँ सम्हारा ।।३।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अंधे किआ कर है खट खाट ।। धन धरणी तन धरणी रहि है,ऊठि सिधै हैं दीरघ

बाट ॥१॥ रहाउ ॥ उपबन ठौर असिपत्री बिचरबि,नहिर लहिर वैतरणी घाट ॥ भूमंडल सिकता तपताई,खुधिआरत पातरि धर चाट ॥१॥ दहदिसि अंधकार मग चलबो,चोभ गोखरू कंटक काट ॥ चहुँघा पावक फसिओ मध्य महि,सरन सलिल सभ डारिओ छाट ॥२॥ महा भयानक समै आइ है, जम दूतीं की पल पल डाट ॥ नाराइण गोबिंद कहु श्रीचंद्र,जे कछु इह ते मिलै उचाट ॥३॥२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ बिन हरि नाम न आवत काम ॥ एकहु एक गुबिंद सहाइक,राम राम भजि आठहुँ जाम ॥१॥ रहाउ ॥ हरि अपरंपर निरमल हीरा,मणि माणिक सोभा को धाम ॥ अम्रित पीआ बहुरि न मूआ,सहिज अनंद सदा सुख साम ॥१॥ त्रिसना त्रिखा न लागत कबहूँ,सीतल सांति लहिओ बिस्राम ॥ अजब अजीब वलायत हरि जस,माटी पाथर पुजत न ग्राम ॥२॥ करुणा सिंधु क्रिपाल क्रिपानिधि,गुपाल दयाल महा घनस्याम ॥ अगम अगोचर श्रीचंद्र प्रभु,जल थल महीअल पूरण ठाम ॥३॥२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरि प्रभु मेरा बाल गुपाल ।। अंतरजामी सभ जग सुआमी,जिअ जंत सगले प्रतिपाल ।।१।। रहाउ ।। जिहँ जन दया धार अपनाया,ता को भयो न बींगा बाल ।। जलती अगनि निवारी खिन महि,क्रिपाद्रिस्टि पिखि किए निहाल ।।१।। परिहर अवगुण निज लड़ि लाए,गगन पुचाए जात पताल ।। राख लए कर दै करि अपने,सत्रु बिदारे कड़किओ काल ।।२।। सूली सूल भई हरिआई,ढाक लिऐ परदै दै पाल ।। अचरज वडाई प्रभु मेरे की,श्रीचंद्र कउ राख समाल ।।३।।२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु जी,तू करता करि वेखहि ।। आप उपाय आप प्रतिपालहि,आपहि पाइहँ घने भुलेखहि ।।१।। रहाउ ।। आपहि भोग भुगाइ भुलावहि,आपहि डारहि लेख कुलेखहि ।। आपहि करम करावहि जीवन,आपहि बखसहि पाप असेखहि ।।१।। आपहि जीअ दान दे पोखहि,आपहि सोखहि धरम विसेखहि ।। आपहि रोग लगाइ संतावहि,आपहि जलन मिटाइ निमेखहि ।।२।।

आपहि कारण करत सबाए,आपहि धारण धारत रेखहि ।। आपहि बंधै श्रीचंद्र नर,आपहि मुकती दुआर परेखहि ।।३।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जब हम तुमरे ही ह्वै गए ।। जिउं भावै तिउं ही तुम राखहु,कहिण सुनण कछु जोग न हुए ।।१।। रहाउ ।। अपनि रजाए राखहु भूखा,अपनि रजाए भोग त्रिपतए ।। अपनि रजाए बनहि बन फेरउ,अपनि रजाए महिल तिस्टए ।।१।। अपनि रजाए सीत सरि बोड़हु,अपनि रजाए अगनि तपतए ।। अपनि रजाए भसम सिर डारहु,अपनि रजाए तख्त बैठए ।।२।। अपनि रजाए दर दरन मंगावहु,अपनि रजाए राव मंगतए ।। अपनि रजाए राख श्रीचंद्रहि,आन न भावै बिन राजए ।।३।।३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जहँ तहँ पेखउं प्रीतम पूरा ।। ताल तमाल साल बन गाढे,जल थल महीअल कहूँ न ऊरा ।।१।। रहाउ ।। तरु त्रिण लता साख पत फुल फल,एका एक सरब भरपूरा ।। सांप सिंघ भालुक

कपि सिआलहि,गो महिखी सूकर वहि नूरा ॥१॥ डाकिणि साकिणि काकिणि भैरव,बीर बैतालन प्रेत जहूरा ॥ परबत नदी मीन ग्रह नाकू,डगर बगर सगरन संग जूरा ॥२॥ नर नारी किंपुरुख चांडालन,खत्री ब्राहमण वैस सहूरा ॥ हिंदू मुस्लिम जाहिद रिंदन,श्रीचंद्र गोबिंद गफूरा ॥३॥३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ अंग संग मोरे गोपाला ॥ जहँ जहँ जाउं तहाँ तहँ संगे,सरब घटां महि सदा उजाला ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंतु लघु दीरघ सगरे,तू ही पहिर रखी गर माला ॥ राव रंक ह्वै धरणि बिराजिओ,सूरज चंद सितारे जाला ॥१॥ पारधि तान कमान बान करि,हतन हेतु धायो म्रिग काला ॥ मेचक नाग डांग हन डारिओ,स्वान जार अगनी की जुआला ॥२॥ किआ गुण तेरे रसना भाखै,औघट घाट खसम रखवाला ॥ श्रीचंद्र हरि प्रभु जिस राखै,सस्त्र अस्त्र पुहि सकै न भाला ॥३॥३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ दास निवाजक राम गुसईआ ॥ अंग संग ह्वै वरतत सभ ठां,पाहन फूलन धार

बसईआ ।।१।। रहाउ ।। बिसिख झड़ी झड़ि झाड़ बुछाड़ा,भूत ईंट तन लगन न पईआ ।। आपन अगनि चुनार भसम ह्वै,भसमीभूत हरे हरि कईआ ।।१।। बाल युवा ब्रिध काल खपाए,हने काल प्रभु राम बुलईआ ।। तारू तारू महि बड बूडत,बूडत तारे तरे तरईआ ।।२।। मिरतक तन गोरन भव दफनै,दफनै कफनै फार उठईआ ।। प्रिस्टि न लागन देतु दास की,श्रीचंद्र प्रभु प्रिस्टि पोसईआ ।।३।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जा का मीत साजन प्रभु सोई ।। तिस जन कउ कहु घाट कास की,जाकै हिरदै गोबिंद होई ।।१।। रहाउ ।। माया ताकी चरनन दासी,आगिआ हित मुख कंज विलोई ।। हुकमै पवण पाणी बैसंतर,उडाइ डुबाइ जलाइ न कोई ।।१।। चौसठ जोगिनि बावन बीरन,नाराइण मुखि शक्ति समोई ।। रिधि नवनिद्धि अठारह सिद्धी,कर जोरे हरि अग्र खलोई ।।२।। ऊच सिंघासन गोबिंद मेरे, देव अदेव फिरावत लोई ।। पातसाह सिर साहनसाहा,श्रीचंद्र दरगहि प्रभु जोई ।।३।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। किआ गुण तेरे आख वखाणा ।। तूँ ही दयाल सरब घट पूरण,तूँ ही राखत माण निमाणा ।।१।। रहाउ ।। तूँ ही उपाइक तूँ प्रतिपालक,सभ को खावत तुमरा दाणा ।। तुमहि लखाइक तुमहि चराइक,तुम ही पाइक कै मन भाणा ।।१।। तुमरी ओट न तोट कहुँ बिधि,सरब सिरोमणि तुमरो ताणा ।। तोहि भरोसै पोसै मेदनि,घर बाहर वर अन धन धाणा ।।२।। अंड ब्रहमंड खंड के मालक,जीव पिंड अरु तुम ही प्राणा ।। रसना रोम होहि जो श्रीचंद्र,तउ न कथिऐ अकथ कहाणा ।।३।।३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। कादर कुदरति सो लख पड़ऐ ।। बिसमो बिसम होइ उर भीतरि,राम नाम निसदिन रव रहिऐ ।।१।। रहाउ ।। सूरज चंद न समै खुँझावत,भरमत चक्र तार इक हइऐ ।। तारे अनिक प्रकासत निसि महि,डोलत गगन फिरत बिन पहिऐ ।।१।। जड़ तत्तन महि चेतन पिखिअत,चेतन निकसै जड़ न चलइऐ ।। साढ़े तीन हाथ कै तन महि,शक्ति अनंत न अंतु लहिऐ ।।२।। जल सिर थल

थल सिर सागर ह्वै,रंक राव खिन महि बदलइऐ ।। तड़िता अगनी बारिद बन महि,श्रीचंद्र रचि राखि रमइऐ ।।३।।३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। संतन संग रमहु हरि नाम ।। जनम मरन छूटै दुख संसै,लहहि आनंद सदा सुख धाम ।।१।। रहाउ ।। भ्रम भै मेट होइ निरवैरा,सरब मई पेखै प्रभु राम ।। जीअ दान आतम सच निहचै,सील संतोख सांत बिस्राम ।।१।। कमल प्रगास दया दिब्य द्रिस्टि,आसा त्रिसना बिनसहि ग्राम ।। गिआन नेत्र नाराइण जोती,परम पूज वथु सालगिराम ।।२।। करुणा मुदिता मैत्री हिरदै, द्वैत अपेख्या कीनो ठाम ।। अगम अगोचर गोचर लहिऐ,श्रीचंद्र गुण प्रेम ललाम ।।३।।३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जहँ जानो सो आइ न चीत ।। द्रिस्टमान कोऊ संग न साथी,कूड़ा धंध पसारा नीत ।।१।। रहाउ ।। सुत दारा पितु मात सनेही,बांधिओ इन सिउं मन का हीत ।। इह तन भी नहि संग सिधै है,धन की कवनै भांति प्रतीत ।।१।। जुग अनेक बीते भी मेदनि,हरि हूँ बहु अवतारन

लीत ।। पातिसाह साह अगनत होए,पाद एक नहि साथ विनीत ।।२।। आगल हित नहि छप्पर छायो, इहां उसारे चौड़ी भीत ।। बहुत काल जहँ पर है बसनो,श्रीचंद्र हिरदै नहि कीत ।।३।।३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। काल सदा सद सभ को हेरे ।। जो उपजिओ सो सरब बिनासी,पड़ा काल के अहनिसि घेरे ।।१।। रहाउ ।। कंठे बैठा सासन गिन है,साह रग हू ते अधिकै नेरे ।। महाबली त्रैलोक जीतिआ, खिन महि धरनि पछाड़ डरेरे ।।१।। सुरपति लौ जिन वसि करि राखै,पानी भरते देव घनेरे ।। कहु बंदे अरबिंद पदन कउ,जिनि कै राव निहुर सिर गेरे ।।२।। जहँ लग द्रिस्टि पात तिन केरी,सभ ही खरे अधो मुख जेरे ।। पल मात्र सोऊ अग्र न थिति भे,श्रीचंद्र बड वडे वडेरे ।।३।।३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सरब सिरोमणि केवल काल ।। जिहँ चाहै तिहँ अधिक दुखावै,जिहँ चाहै तिहँ करत निहाल ।।१।। रहाउ ।। जिहँ चाहै तिहँ उरध ले जावै,जिहँ चाहै तिहँ डारै पाताल ।। जिहँ चाहै धन

संपद अखुट दै,जिहँ चाहै सद रखै कंगाल ॥१॥ जिहँ चाहै मन वांछित दै है,जिहँ चाहै प्रापति दै डाल ॥ जिहँ चाहै थित अविचल थानहि,जिहँ चाहै भरमै जिउं माल ॥२॥ जिहँ चाहै अति म्रिदुल सहिज दै,जिहँ चाहै कंटक पै साल ॥ जिहँ चाहै तिहँ अमर करावै,श्रीचंद्र कर निमख खिआल ॥३॥४०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ करता काल बिना नहिं लहिऐ ॥ उतपति पालन परलै कारण,कालपुरुख भव सगरे कहिऐ ॥१॥ रहाउ ॥ सूरज चंद उपाय बिनाहै,वरुण इंद्र जम रुद्र महइऐ ॥ ब्रहमा बिसनु जोगीस मुनीसन,अवतारन सिध साध सधइऐ ॥१॥ कामी क्रोधी चोर जार लख,जपु तपु संजम करम कमइऐ ॥ पतिबरता कुलटा विभिचारिणि,संखिनि पदमिनि चित्रिनि कइऐ ॥२॥ अस्व नाग म्रिग जाति विजातिन,जोग विजोग अधर धर मइऐ ॥ मक्खी मच्छर सिंघ सिआरन,श्रीचंद्र वण त्रिण रचि रइऐ ॥३॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। काल विभाग न जानिओ जाई ।। अंध गुबार कीआ जुग छत्तीह,जुग छत्तीह धरि अवधि बनाई ।।१।। रहाउ ।। उतपति परलै माहि काल थिर,मनवंतर कई कोटि समाई ।। अणू परमाणू वणुक चवणक लख,मेल विछोड़े विछुड़ि मिलाई ।।१।। इस्थिति माहि बीज विनासन, नासन माहि प्रगटता पाई ।। कालहि ब्रहमा कालहि विसनू,कालहि शिव मूरति सरसाई ।।२।। कल्प जुग चौकड़ि निमेख लौ,पर ते परे निकट निकटाई ।। बुद्धि न जान सकहि गति गंमता,श्रीचंद्र सिमरित मति आई ।।३।।४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु माया कछु जाइ न जानी ।। सिमरि सिमरि मन आनंद पाई,प्रभु मेरे की अकथ कहानी ।।१।। रहाउ ।। जिमि चाहहि तिव ही गति दैहै,समझि भूल ते दूर दुरानी ।। रक्त बिंद की देह लहै तुच्छ,अदेह अगेह अछोर बखानी ।।१।। सर महि मीन प्राण निज थर करि,थल खजूर मीठी अनुमानी ।। चढ़ि बबूल कंटक महि बिचुरत,हारहूर लहि है खुरमानी ।।२।। सागर खार बिखै रस

बूडिओ,दुगध सिंधु पर पार परानी ॥ उदर लागि निसदिन भव भ्रमतो,श्रीचंद्र कछु बूझि बुझानी ॥३॥४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ गुरु अविनासी चिंता मेट ॥ पारब्रहम परमेस्वर पूरन,सिमरउ इकरस लागै चेट ॥१॥ रहाउ ॥ पावउ धीर पीर उर बिनसे,जनम मरण की मेटो तेट ॥ भ्रम भै मेट होहुँ निहकेवल,निरमल बुद्धी टेक सहेट ॥१॥ भावाभाव चक्र जोऊ मन के,अरध उरध कछु रहै न फेट ॥ चरन कमल बासहि रिद भीतर,साध संग रस निसिदिन भेट ॥२॥ जोति प्रगास बिगासै अनुभव, चरन संत महि रहिऐ लेट ॥ करुणामय क्रिपाल क्रिपानिधि,श्रीचंद्र ते माय समेट ॥३॥४४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रतिपालक प्रभु सदा क्रिपाल ॥ मातु पिता जिउं राखत निसदिन,अपने बालक सदा समाल ॥१॥ रहाउ ॥ डाकिणि साकिणि ग्रहन निवारै,जंत्र मंत्र सिउं पूज गुपाल ॥ ज्वलित अगनि ते करत उबारन,कबहूँ छुहै न चीत बिआल ॥१॥ महितारी मल मूत्र थान थिर,पट थान

स्वच्छ करि बाल ॥ निजि छुधिआ त्रिसना नहिं मानत,सुत जाने ते महा बिहाल ॥२॥ बाघ आए ते निज कउ डारहि,पूत न ह्वै किमि बींगा बाल ॥ अनिक बिघन ते कर दै राखत,श्रीचंद्र कउ हित चित नाल ॥३॥४५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ सत्‌गुरु ब्रहम सनातन पूरा ॥ एको एक एक रव रहिआ,वण त्रिण परबत एको नूरा ॥१॥ रहाउ ॥ जोति प्रगास महा उजिआरा,तम बिनसै मन भीतरि कूरा ॥ बिखै विकार दैत्त हित मारन,प्रगट भयो अविनासी सूरा ॥१॥ रचना विस्व आदि ते गिआता,जुग जुग सदा विआप जहूरा ॥ अंत कवन गति लहि है भव इह,सरब लोक कहु पेखि अदूरा ॥२॥ गूढ़ पदारथ हस्तामल जिमि, आतम राम गिआन भरपूरा ॥ पंच विकारन मार बिदारिओ,श्रीचंद्र किआ होवत हूरा ॥३॥४६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ सत्‌गुरु मेरा सद ही नाल ॥ जहँ तहँ रख्यक अनिक बिघन ते,दूखन दूख हरत ततकाल ॥१॥ रहाउ ॥ लोक परलोक बिखै रस एकै,जन अपने राखे जीअ नाल ॥ दै सिमरन टारत

रिद माया,काम क्रोध उर नाहि उबाल ।।१।। किआ जम बपुरा जन कउ ताड़हि,काढि मयान कर महि करवाल ।। कौन पुरी जिहँ गमनत नाहिन,अग्रज कर बंदत दरपाल ।।२।। पवन झावरी पवनाहारी,बाँधत पवन पवन की चाल ।। महिमा किमि वरणै इक जिहबा,श्रीचंद्र गुरु हरि गोपाल ।।३।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अपने जन कउ भया सहाई ।। भवसागर चिंता रस बूडत,खिन महि सत्गुरु दए तराई ।।१।। रहाउ ।। घोर महाबन निसि अंधिआरी,कर दीपक धर मारग पाई ।। इंद्री रस लागै मद माते,निरमल मन करि जग प्रगटाई ।।१।। कंद्रप पावक हिरदै दगध जन,क्रिपा द्रिस्टि करि सीतलताई ।। बांधे मोह अघन ओघन महि,पलक द्रिस्टि पिख मुकत कराई ।।२।। कोटि जनम की कालुख उर जन,चरन कमल रज कहुँ भगाई ।। परम दयाल क्रिपाल नाराइण,श्रीचंद्र सत्गुरु महि साई ।।३।।४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु सरणी तपत बुझानी ।। पारब्रहम पूरन परमेस्वर,राम नाम मुख अम्रित

बानी ॥१॥ रहाउ ॥ पावक घोर दहदिसि मन जलिआ,गोबिंद नाम सीतल दिय पानी ॥ उरझि परिओ जाली माया की,कर कैंची ले काट गवानी ॥१॥ बहिओ जात परवाहै चिंता,धीरज दे ठहरायो थानी ॥ वायु बघूले भूतन ग्रासिओ,मंत्र मार रख लिओ प्रानी ॥२॥ अंतरि फेड़ तेड़ बड डारी,पाड़ी गाड़ी भीति लिपानी ॥ त्रिसना आस परजन तड़पायो,श्रीचंद्र लहि सारंगपानी ॥३॥४९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ सत्गुरु पूरे राख लिया ॥ जनम जनम का बिछुड़ा प्रानी,पारब्रहम संग मेल दिया ॥१॥ रहाउ ॥ माया पटल घोर अंधिआरा,गिआन प्रकासै दूरि किया ॥ मुरदा कोटि जुगन मध्य गोरहि,सूर बजाइस डार जिया ॥१॥ हउमै मतसरि सड़िआ बलिआ,अम्रित कुंड धकेल दिया ॥ दहदिसि धावत धन आसा लगि,राम नाम रंग ठौर थिया ॥२॥ बवरै कूकर सम काटत जन, सत्गुरु सबद टिकाइ हिया ॥ म्रिग त्रिसना जल हित म्रिग धायो,श्रीचंद्र रस ताल पिया ॥३॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ सत्गुरु पूरे उलट दई ॥ जल महि पावक भांबड़ बलियो,तेल बिना दीपक

जलई ।।१।। रहाउ ।। काकन को भख विस्टा भोजन,हंस होइ मुकतन भोगई ।। मीनन को खैबै हितु जल महि,बगुला भगत भयो सरसई ।।१।। मल भक्खी सूकर सुआनन की,नाराइण ही देह ठई ।। हरि मारग मैं बुद्धि न प्रविसै,बावर गावर अग्र मई ।।२।। होणी कोइ न मेटन हारो,निरउद्दम रचना रचई ।। अणहोता होते कऊ खावत,श्रीचंद्र तन अतन भई ।।३।।५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु पूरे की वडिआई ।। जलनि बुझी मन सीतल होयो,रहसि रहसि हरि हरि गुण गाई ।।१।। रहाउ ।। चिंता धावत बहु परकारी,उदर भरन उद्दम बिनसाई ।। रोग असाध्य अहं मम ममता,बिन औषधि दिय दूर भगाई ।।१।। सुने कानि अज बिसनु शंभु महि,पेखिअ जोग सु द्रिस्टि संचाई ।। तुंमा नीम चराइत कटुकी,अमिअ भए नहिं पियत अघाई ।।२।। कुलटि समान्या परघर जोही,सती पवित्रता पूज कहाई ।। आमिख खावत नाहि अघावत,श्रीचंद्र तजि हिंस बिलाई ।।३।।५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु पूरे पर उपकारा ।। भव सागर चिंता रस बूडत,राम नाम मंत्र दिअ तारा ।।१।। रहाउ ।। जलधि धसत रसातल निघरत,गहि भुज गगनी किओ सितारा ।। मज्जा रुधिर कफ संभव देही,अमर भई जग जनम निवारा ।।१।। महामलीन दीन मति रंकी,सरब जगत की ऊच दातारा ।। गंदे डुंम मीन उपजानी,पकड़ पहुँचाई गंगा धारा ।।२।। चमिआरी चंडाली सूदी, ब्रहमणि होइ पूज विस्तारा ।। अंधकार घट चहुँदिसि छाई,श्रीचंद्र वगि पवन उडारा ।।३।।५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। निज उद्‌दम बिन किनूं न पायो ।। धंधे धावत दिवस बिलानो,सोच अचेतहि रैन बितायो ।।१।। रहाउ ।। मद मतवार गवार मूढ़ संग,बिरम बिरम अति समै गवायो ।। परदारन रंग रस मचिआ,जौबन कांति खोइ पछुतायो ।।१।। गरबत धन अधिकै लख आपन,धरनी जोतति ससि उपजायो ।। पेखि अनाज अगार भंडारन,रसकस भोगत पिंड बधायो ।।२।। निकट थान साधु संगति महि,मारग भूल न पांउ टिकायो ।। नाम दान इस्नान की वेला,श्रीचंद्र आलस बिरमायो ।।३।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मूढे हरि हरि सिमरनु सार ।। बाहर निकसै आन न पावहि,इन सासन कउ किआ इतबार ।।१।। रहाउ ।। जलति जुआला महा भयानक,ठहिरावन चाहत मध्य पार ।। अमित ओज सिउं करि तकराई,मूठी बांधत कोऊ बिआर ।।१।। बिन छप्पर थिर आसण बांधै,कौन न भीगिओ बारिद बारि ।। सुंदर अस्व काक पच्छ सहितन,गगन मंडल को गयो सवार ।।२।। पातसाह राजन सिरताजन,पीर पैगंबर लगी न बार ।। खान बहादर महर मुकद्दम,श्रीचंद्र गए हाथन झार ।।३।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। इन माया घर बहुते गाले ।। गाढ गंज जिनि हित करि राखी,कौडी बांध न चालिओ पाले ।।१।। रहाउ ।। मित्र न मानिओ पुत्र न मानिओ,मानिओ नाहिन दारा साले ।। सभ ते गुहजी अपनि बनाई,पाउ एक भरि गई न नाले ।।१।। अघ जालन की बसती एऊ,गुरु ब्रहमण की करती काले ।। एक मारि दूसर पहि जावति,तीसर चउथो पंचम भाले ।।२।। कोटिनि कोटि पती जिहँ कीने, पतिव्रता बन बैठी आले ।। अब लौं पूत न उपजिओ कोऊ,श्रीचंद्र नहिं छुअत कुचाले ।।३।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मनमुख संगति जनम गवाया ।। खुरकत गरधब की मित्राई,हींगत हींगत दुलत चलाया ।।१।। रहाउ ।। खावण पहिरण भोगन हेतू,नहि पावत चूल्हे मूताया ।। मदमत्त निंदा भार उचावत,मुख कौड़ा मन कपट वसाया ।।१।। सर अपसर की सार न जाणै,किलविख घोर धाम प्रगटाया ।। हलका कूकर कूड़ कमावै,भौंकत हरदम माया माया ।।२।। ओह न हिंदू मुसलिम कोऊ, धरम ईमानहुँ दूर पराया ।। परसत कालुख दाग लगत है,श्रीचंद्र साकत तजि धाया ।।३।।५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। करि किरपा गुरु देहु बुझाई ।। जनमिओ जो तिस अवस्य हुइ मरनो,जनम मरण किमि मिटै गोसाई ।।१।। रहाउ ।। अणडिठा भै उपजत मन महि,जमदूतन मग महि कठिनाई ।। विखिआनंद प्रगट फेड़े सुख,हरि सुख मूल न मन ठहिराई ।।१।। ग्रंथी जीव ईस किन डारी, त्रितिअ ब्रहम किमि है लख पाई ।। भाव अभाव कहां ते आए,किउं करि कामहि जाहि समाई ।।२।। जानै बोलै सुनै न जावत,इन को भेद हिरदै ते भाई ।। साध संग रंग उर लागे,श्रीचंद्र अनुभउ

विसमाई ।।३।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सरब निवासी हरि प्रभु पूरा ।। कमल आम चंदन गंध वासा,नैन न साकत पेख जहूरा ।।१।। रहाउ ।। भानु परकास वस्तु लख पड़ऐ,डूबी किरण न धरिऐ नूरा ।। मन उपजावत कंदरप काया,रमते तरुणि पुरुख परिपूरा ।।१।। हउमै ममता आवति उर महि,गहि करवार भिड़त रण सूरा ।। करुणा मैत्री रस जब आयो,दया धार दय दान सऊरा ।।२।। बुद्धि विकास गिआन गुरु गमिअत,आतम जानै सदा हजूरा ।। संतन संग मदुनमत गिआनी,श्रीचंद्र अलमस्त ठरूरा ।।३।।५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। संतन कै मन सदा आनंद ।। राम राम नाराइण हरि प्रभु,सिमरत सदा सच्चिदानंद ।।१।। रहाउ ।। गुण निधान पूरन परमेस्वर,अंतरजामी नाम गुबिंद ।। रस राते अहनिसि परभाते,माते मद पद अरबिंद ।।१।। गाते गीत मीत हरि केरे,परिहरि तिआगी उसतति निंद ।। प्रभु दर थिरत मस्त अलमस्ते,बेपरवाह दूर करि चिंद ।।२।। नहिं कछु बिगड़त नहि कछु सवरत,

हुकमी हुकमा सरब बुलंद ।। सुख दुख आगिआ करणहार की,श्रीचंद्र जिहँ दीनसि जिंद।।३।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मन की जाननहारा सुआमी ।। जो जन इच्छत सो फल पावत,किसू प्रकार न रहिहैं खामी ।।१।। रहाउ ।। चरन कमल नित लछमी सेवत,नउनिधि सिधि अठदसि अनुगामी ।। भरे भंडार रिधि अनतोटा,खावत खरचत तोट न धामी ।।१।। सभ किछु दीनो एकै बारी,आदिहुँ ते अंत लगि कामी ।। राई घटै न तिल भरि वध है,निसचित कीन जु अंतरजामी ।।२।। मानुख जनम दिओ सिमरन हित,वस्तू नाम रूप बेनामी ।। राम नाम प्रिय परम पदारथ,श्रीचंद्र गहि काल तमामी ।।३।।६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन को आवत कबहूँ न तोट ।। परमानंद राम रंग राते,मन ते सकल बिलानो खोट ।।१।। रहाउ ।। रिदै प्रगास गिआन गुरु गंमिअत,दुंदभि घोख दोहरी चोट ।। सूरे किमि रण खेत लजावै,जनमहि ते मरणहि सिर पोट ।।१।। सती निबाहै सत्त हत प्राणन,को साकत ता को प्रण होट ।। मस्तक दाग पेख चर लखिअत,नम्रित लोक भेट धरि रोट ।।२।। तिल ते महानिधान होत है,भोगत

भोग भुगाइ अखोट ।। जा को पहुँच न साकत कोऊ,श्रीचंद्र तिहँ लीनसि ओट ।।३।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु मेरा सदा क्रिपाल ।। पूरन परमेस्वर अविनासी,द्रिस्टि निमेखहि करत निहाल ।।१।। रहाउ ।। गुण निधान सूछम ते सूछम,वसतु लखावत जुलजलाल ।। अहं निवारक मनहि सुधारक,टारक काम क्रोध अप खिआल ।।१।। गिआन पदारथ धिआन पदारथ,प्रेम पदारथ हट्टी माल ।। नीचहि ऊच थपत खिन माही,भसमीभूत करत अघ जाल ।।२।। माया बंधन तम अगिआनहि,काट मिटावत भव जंजाल ।। पारब्रहम उर माहि लखाइक,श्रीचंद्र पाइक पामाल ।।३।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। माया मानुख पति गवाई ।। धनी दुआर जाइ गुहरावत,पैसा टका देहु मुहि माई ।।१।। रहाउ ।। पेख न छोडे मधु माखी लगि,डंसत डंसत जन बौराई ।। कोसन सिउं ऊरध नभ मंडल,गिध मासखंड हित झपटाई ।।१।। पाइ वकास दुमुही सप्पणी,दंस लयो कबि जहर न जाई ।।

संवतसर प्रति नियम धार करि,डसत रहित बिखधर बल लाई ।।२।। आज अपर कल अपर दुआर पर,माया कारण अलख जगाई ।। जिउं जिउं लहि तिउं तिउं बढि त्रिसना,श्रीचंद्र भ्रम त्रिपति न पाई ।।३।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। तीन लोक इन माया ठागे ।। ब्रहमा बिसनु रुद्र ससि सूरज,मोह माया के रस महि पागे ।।१।। रहाउ ।। गनपति फनिपति खगपति मोहे,देव सेनपति सिउं अनुरागे ।। वरुण कुबेर देवपति देवन,दैत्त दैत्तपति अंतरि दागे ।।१।। विआस परासर जयमुनि दालब,भसम भए जलती चिख आगे ।। बनवासी जलवासी पवनी,घोर नींद पड़ सोइ न जागे ।।२।। जो जनमिओ तिस ही उदरै महिं,लाइ सिंघासन बैठि सभागे ।। जिहँ जन ऊपर हरि की किरपा,श्रीचंद्र तिहँ नेड़ न लागे ।।३।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। ठगनी माया ठगत संसार ।। जंगल माहि बसत नित अहनिसि,कंद मूल ही करत

अहार ।।१।। रहाउ ।। साक पत्र भच्छ घोर अगनि महि,झूलत रहित होइ सिर भार ।। वेदन वेते हिफज किताबीं,बाणी उचरत अम्रित धार ।।१।। अनमारग जन दरस विहूने,घने परवतन गुहन अगार ।। घर धन धानन तिआग पराने,जलाहार कै पवनाहार ।।२।। वण त्रिण हस्ती घोरे बंदर, पच्छ मच्छ कछु सिंघ सिआर ।। छोडिओ कहूँ न इनहि अजीता,श्रीचंद्र सभ डारै मार ।।३।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। नाथ अनाथन हरि भगवान ।। सुखदाइक सभ अंतरजामी,मांगत हउ इक गोबिंद दान ।।१।। रहाउ ।। तुमहि छाड कत अनत न धावउं,निसिदिन जापउं सारंगपानि ।। आगिआ लागे मीठी मन महि,अन ते जाचउं नाहिन धान ।।१।। अविनासी गुरु चरन धिआवत,अंत समै मम छुटकहि प्रान ।। संतन संग संत संभाखण,संतन की सद रटहउं बान ।।२।। तन मन धन सिउं संतन सेवा,संतन चरन कमल अस्थान ।। तीन लोक महि बिन संतन के,श्रीचंद्र नहिं दरस निधान ।।३।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरि प्रभु दीनी मन महि धीर ।। दूख भूख विआपित नहिं काहूँ,बिनस गई सभ

हउमै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ अहंकार सगरो विनसानो,नाम जपत उर अंतरि सीर ॥ आधि विआधि उपाधि मिटाए,उसतति निंदा फैंकी चीर ॥१॥ चरन कमल प्रभु के आराधत,दैवी संपद होई भीर ॥ गुरु वेदन के वाक सुहाने,अन वखिआन पलाने तीर ॥२॥ सभ के संगी सभ निरलेपी,गोबिंद पेखै गहिर गंभीर ॥ सरबसु अरप सरणि प्रभु आए,श्रीचंद्र संग संत बहीर ॥३॥६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ मया कीनि गोबिंद गुसाईं ॥ बंधन काटि लिए करि अपने,राम नाम नौनिधि सउंपाई ॥१॥ रहाउ ॥ लड़ि लागे नाराइण करते,दुरमति दुबिधा दूरि मिटाई ॥ संत संग निसचल थान वासे,भ्रम भै मेट सहिज पद पाई ॥१॥ सांति दात गुण सागर प्रगटै,काम क्रोध करि प्रलय उपाई ॥ अंकुर करम देह मेदनि महि,उपजि खरी भई बहु हरिआई ॥२॥ त्रिपति अघाने सत संतोखै,अन धन प्रापत धरम सहाई ॥ जनम मरण का संसय चूका,श्रीचंद्र प्रभु माहि समाई ॥३॥६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जो जन हरि प्रभु कीना दास ।। अपना आप देइ पहिरायो,जमराजे को मेटिआ त्रास ।।१।। रहाउ ।। आतम खोइ उजाड़ी भरमत,भुज पसार कीने प्रभु पास ।। हुती न आस किहुँ बिधि कोई,पूरन सरब मनोरथ रास ।।१।। पिआस बुझानी भव मंडल की,त्रिसना भई समूल बिनास ।। राम नाम रंग राते माते,नितप्रति गाते हरि गुणतास ।।२।। सरब घटा महि अंतरजामी, किहँ कहिऐ किहँ बिधि अरदास ।। गागर सागर बीच समानी,श्रीचंद्र एकै जल रास ।।३।।७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु प्रीतम दुइ नैन निहारउं ।। एकहि जोति सगल घट भीतरि,भेद न लहिअत ब्रहम चंडारउं ।।१।। रहाउ ।। वण त्रिण पसु पंखी जल थल महि,एका एकी सरब पसारउं ।। भ्रम भै बिनसै हिन्दू तुरकन,वेद कतेबीं एक विथारउं ।।१।। कतहुँ राजा कतहुँ परजा,कतहुँ रंक धनी भव सारउं ।। कतहुँ जती कहुँ बड कामी,पतित अपतित कहुँ बन वारउं ।।२।। कतहुँ करम करत हरखाना, कतहुँ धरम सु तिआग पधारउं ।। कतहुँ प्रभु को नाम न लैहै,श्रीचंद्र कहूँ भगति समारउं ।।३।।७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ ऊजड़ थेह वसायो आप ॥ उडती धूरि दूर असमानी,करी व्रिस्टि वरसायो आप ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि बुझाई सीतल थाई,हरि हरि नाम जपायो जाप ॥ अनहद धुनि पंच तूर वजाए,मंगल मंडल सरब विआप ॥१॥ औड़ बिनासी गोबिंद भगती,राम राम रस कीरति ध्राप ॥ धरमराज पुर बैकुंठ वासा,मेटिओ सगरो बिलल बिलाप ॥२॥ संत चरन कसमल परिहरते, अंतरजामी प्रभु परताप ॥ सभ सुख नउनिधि ठाकुर दीनी,श्रीचंद्र गुण सहिज अलाप ॥३॥७२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ साकत सेती भूलि न कहिऐ ॥ राम नाम रस दुगध पिआए,सरपन ते बिख ही फल लहिऐ ॥ रहाउ ॥ अगर कपूर मिरग मद अंबर,गरधब तिआग भसम रम रहिऐ ॥ हसती नवाए गंगा जल सिउं,भी सिर छार डरावत महिऐ ॥१॥ सूकर सुआन काग रंगि विस्टा,गंध बिडार जाइ थिर थहिऐ ॥ ज्वर रोगी को घ्रित न सुखावै,गरल भयो म्रितु मारग डहिऐ ॥२॥ अरबिंदन रस

दादर किमि लहि,भूँड गूँह गोली मुख गहिऐ ।। मंदर मसजिद संत न मनमुख,श्रीचंद्र मद जूप हितहिऐ ।।३।।७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन कउ प्रभु संगे अस पिआर ।। सूरज पेखे अरविंद चकवी,उर न समावत खिड़त उधार ।।१।। रहाउ ।। मरण जीवण मीने जल संगे,इत उत बिचरत पंख पसार ।। कुमुद विकासे ससि मुख पेखै,अंतरि गंध फैलावति सार ।।१।। चंदन सिउं बिखधर लपटानो,भसम किऐ बिन तजित न हार ।। अंब परीति कोकिला बोली,बिछुड़ न जाउं प्रिय सिंगार ।।२।। स्वाति हेतु चातिक करि पी पी,बूंद एक कउ लागी तार ।। जल बिंदू पा मुख महि सीपहि,श्रीचंद्र जीवन दिअ ढार ।।३।।७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। चरन कमल संग लागी प्रीत ।। राम नाम निसदिन जन मुख महि,हरि कीरति रति गावन गीत ।।१।। रहाउ ।। आन काज सिउं काज न कछुए,बिगसि बिगसि नाराइण चीत ।। बिसरि गई दुबिधा दुचिताई,हउमै ममता बिनसी भीत ।।१।। जल थल महिअल सरब निवासी,

मायापति गोबिंद हिय मीत ।। नामो भोजन नामो पाणी,नामो सोवन उठबो नीत ।।२।। चलबो नाम बैठबो नामा,बिसरी लोक लाज कुल रीत ।। यारां संग बहारां हरदम,श्रीचंद्र अम्रित रस पीत ।।३।।७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मन बेधिओ गोबिंद पद कंज ।। रस वसि फस भवरा नहि निकसिओ,सरब निधान प्रीतम हरि गंज ।।१।। रहाउ ।। ढोल बजायो रंग सुहायो,सती पती हित तिआग न संज ।। प्रान प्रिय हित जरनो मरनो,गमी खुशी जुत सूख न रंज ।।१।। तंत न मंता सोच न चिंता,आवण जाण रहिओ भ्रम भंज ।। एकहि आसा दरस पिआसा,जीवन सफला तिआस अगंज ।।२।। कबि मीना जल ते बिछुरै है,सरप कबहुँ तजि धावत गंज ।। जन की प्रीति चीत नहि दूजो,श्रीचंद्र बूडिओ सर मंज ।।३।।७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जीवन जन कउ सिमरण नाम ।। हरि हरि जपत सदा रंग राते,माते राग नाद सुख धाम ।।१।। रहाउ ।। परिहर निंदा तात पराई,बन बेहड़ निरजन थित ठाम ।। गोबिंद नाराइण

मनमोहन,मन महि राखिओ अहनिसि राम ।।१।। लंमी ताण निहचिंत हुइ सोए,करणहार कर है सभ काम ।। सहिजे आवण सहिजे जावण,सहिजे ही अस्थान विराम ।।२।। सहिजे बैठण सहिजे ऊठण, सहिजे खावण पीवण ताम ।। सहिजे बोलण सहिजे चूपी,श्रीचंद्र सहिजे चर ग्राम ।।३।।७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरिजन कऊ हरि हरि सद भाव ।। साधु संग भीतरि बिस्रामा,नाम दान इस्नानै चाव ।।१ रहाउ ।। काम क्रोध तजि बिखै विकारन,मन ते मेटिओ सकल दुराव ।। हरि हरि जस मद अहनिसि राते,रंगे रंग अपार अमाव ।।१।। सरबे थाईं एक गुसाईं,गंगा जल गोबिंद को नाव ।। करम धरम संजम सुचि नियमन,सतसंगति भजि केवल ठाव ।।२।। जिनहि पठाए सोई लिजावै, आपन भाणै खेल खिलाव ।। सभ को कीता उस ही केरा,श्रीचंद्र मिलि हस हस पाव ।।३।।७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पारब्रहम का अंतु न पार ।। हरि हरि जाप जपत दिन राती,हरिजन लीन रहित इकसार ।।१।। रहाउ ।। कोटि जुगन जिनि भई है,चांपन चिल्ले चलाए पहार ।। नेम सिअंदन सिंधु

रचाए,नग पंखन जिनि दीन बिडार ।।१।। ढेर दई चौकड़ि गति गमनत,पेखे ब्रहमा बहु अवतार ।। पंखिनि भासा के जोऊ गिआते,बोलति चीटी जाननहार ।।२।। संगिआ चिरजीवी जिहँ होई,हार गए तेऊ बल हार ।। किनहूँ भेद न लखिओ प्रभु का,श्रीचंद्र हरि सिमरन सार ।।३।।७९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु सिमरन की लागी पिआस ।। आरबला जुग कोटिनि पाऊं,चौदह लोकन तनन उजास ।।१।। रहाउ ।। रोम रोम प्रति जिहबा उपजै,नाहिन विआपै भूख पिआस ।। जपत रहउ प्रभु नाम सदा ही,बिरथा जाइ न कोऊ स्वास ।।१।। आधि विआधिनि ते सद मुकता,आन पदारथ की खिन आस ।। इक थल थित तजि सरब संभाखन,ढोआ जन कहुँ देउ न पास ।।२।।। पारब्रहम लिव एकै अंतरि,जीवन सरब बिताऊं खास ।। तऊ न बूझै त्रिसना मोरी,श्रीचंद्र हरि नामहि आस ।।३।।८०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हमरे बसि नहि कछु ऐ सुआमी ।। जिउं भावै तिउं खेल खिलावै,तूँ प्रभु सभ घट

अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ जिस तूँ चाहहिं निज पग लावहिं,जिस चाहहिं तिस थपहैं कामी ॥ जिस चाहहिं तिस निंद करावहिं,जिस चाहहिं उसतति गुन ग्रामी ॥१॥ जिस चाहहिं भोगत अस्तुती,जिस चाहहिं सत्रुता बदनामी ॥ जिस चाहहिं इक थान निवाजहिं,जिस चाहहिं दर दर भटकामी ॥२॥ जिस चाहहिं तिस त्रिसन निवारहिं,जिस चाहहिं तिस अंन जल खामी ॥ जिस चाहहिं तिस नाम जपावहिं,श्रीचंद्र पूरन परधामी ॥३॥८१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ माधो,हमरे वसि कछु नाहि ॥ जैसे पूरब तुम लिख दीनो,तैसहि करमन रति मन माहि ॥१॥ रहाउ ॥ किसहूँ लायो हरि भगती महिं,किसहूँ पठायो बहुते राहि ॥ किसहूँ सत संतोख द्रिढायो,किसहूँ त्रिसन जरायो भाहि ॥१॥ किसहूँ बन बन भ्रम भरमायो,किसहूँ नहि मल विआपी काहि ॥ किसहूँ राज सिंघासन दीनो,किसहूँ भिखिआ हेतु निबाहि ॥२॥ कोऊ महा उदार दातारा,कोऊ कौड़ी दे न सकाहि ॥ कोऊ संत संग रंग राता,श्रीचंद्र मन तनहि उमाहि ॥३॥८२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु जू,बखस लेहु निज दास ।। अपनी मया धार गुरु गोबिंद,राम नाम दीजै मन आस ।।१।। रहाउ ।। आन पदारथ कऊ नहिं चाहउ,निसिदिन रवउ प्रभू गुणतास ।। दुआर तुहारे ओर निहारउं,परमेस्वर पहि ही अरदास ।।१।। जलन बुझै सीतल मन होवै,सत संगति महि बीते सास ।। प्रेम पदारथ हिरदै उपजै,जगत पदारथ रहउं उदास ।।२।। हउमै रोग न तन उपजावउं, तुमरे अग्र चरावत मास ।। जब लगि जीवउं इह जग भीतरि,श्रीचंद्र नहि मिटै पिआस ।।३।।८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। रत पीणे राजे भव होए ।। दंड देत लखि निरधन प्राणी,बाटपार नहिं मारत कोए ।।१।। रहाउ ।। साधु दुखी निज ग्रिह दुर बैठे,निआउ नाम गति होयो लोए ।। वढ्ढी देइ न खून सजा लहि,धरम गयो धन अग्र पलोए ।।१।। लबरे बिचरत निडर होइ करि,हिंसा रत पथ महा खलोए ।। देव स्थानन प्रविसी माया,सत्त वाद धरि पंख उडोए ।।२।। कूड़ वाक्य बिन ठौर न काई, पाप विकार प्रचुरै भोए ।। काल रात्री विआपी दुनीया,श्रीचंद्र ससि हरि हरिओए ।।३।।८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। भव महि नाहिन को रखवारो ।। लूच लवार अवार कबाड़न,बिचरत धरणी रचि परिवारो ।।१।। रहाउ ।। बिन राजे कै परजा दुखारी,महिल प्रवेसे रत पर नारो ।। महर मुकद्दम लहू पीवणे,धन लूटन जिनि परम बिहारो ।।१।। वड्ढी लै कै देत गवाही,सम ना स्वेत जामा गर चारो ।। अपराधी छूटत बिन दूखण,साधू बंधित दोख समारो ।।२।। बंदी खाने मंदर भोगन,भंग अफीम सुरा परिचारो ।। आमिखहार विथार घनेरो,श्रीचंद्र निर कउन बिचारो ।।३।८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सावक पावक बुझन न पावै ।। ईंधन त्रिअ बहु बिधिन सकेली,तेज प्रचंड सु अधिक जलावै ।।१।। रहाउ ।। बिखै वासना पवन संग लहि,ज्वाल अकास धधकती जावै ।। संसारी लगि काम जलत है,भुन भुन काल खाइ डकरावै ।।१।। जवन उपाव न सांत होत है,दिन दूनी निसि चउगुन थावै ।। जनम काल ते मरण प्रयंतै,जलत सु बारिद गुरू न पावै ।।२।। आपणी किरपा करै हरि सुआमी,तिसि जन साधू संग मिलावै ।। बंधन काट करत निज दासा,श्रीचंद्र तिसु जलन

बुझावै ॥३॥८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ पारब्रहम की अमित वडाई ॥ नाम दान देइ जन अपने,आतम अंतरि सांति उपाई ॥१॥ रहाउ ॥ भड़भड़ पावक भाठ भखाना,अनिक जीव जलते तड़पाई ॥ साध संग रस हरि हरि पायो,हउमे मेटि एक लिव लाई ॥१॥ आधि विआधि उपाधि बिनासी,पीड़ गवाइ सुखहि सरसाई ॥ जनम जनम के बिछुड़े मेले,लख चौरासी जोनि बिहाई ॥२॥ दुबिधा नास भई मन मानिआ,संसै भ्रम दए बिनसाई ॥ सिलक काटि पद ऊच निवाजे,श्रीचंद्र सभि झुकत लुगाई ॥३॥८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ परमेस्वर जिस किरपा धारी ॥ नित नित नाम जपत हरि रसना,मोह माया की प्रीत बिसारी ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहम सभ मध्य रविआ,खत्री ब्रहमण वैस चंडारी ॥ वण त्रिण एको एक पछाता,दुबिधा मेट भए निरंकारी ॥१॥ निरमल हिरदै प्रभु गुण गावत,त्रिसना भूख गुबिंद

बिडारी ॥ अपनी बखसस कीनी करते,सांत भए उर हउं परिहारी ॥२॥ संत संग बैकुंठ समाए,नैनी पेखिओ राम मुरारी ॥ त्रिपति न आवत नाम उचारत,श्रीचंद्र धन्य जनम सुधारी ॥३॥८८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ गुरु गोबिंद सदा किरपाल ॥ प्रतिपालक जन कउ सद हितकरि,नाम दान दे करत निहाल ॥१॥ ताती वाउ न लागन पावै,राम कार चहुंदिसि करि डाल ॥ दुरजन खड़्ग वगावत बध हित,ताहि बचावत ह्वै करि ढाल ॥१॥ भूख दूख नहि निकटै आवत,सदा समालत हिरदै बाल ॥ बन बेहड़ निरजन थल भीतरि,करत दिखावन मारग चाल ॥२॥ सागर बोहिथ बूडत तारे,खुंझे कउ पहुँचावत साल ॥ औखी घड़ी न देखन पावै,श्रीचंद्र रख्यक गोपाल ॥३॥८९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ नाराइण की वडी वडियाई ॥ नीचहि ऊच करत खिन भीतरि,अपने मेले मेल मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ उदर भरन हितु दर दर जोहत,राज सिंघासन चवर झुलाई ॥ कोइ न जानै कोइ न मानै,तिनि पद परती सरब लुगाई ॥१॥ फटा लूगड़ा लोचत ओढनि,पसमंबर तन पर

ओढाई ।। आदर कोइ न देवत जिनि कउ,होवे न निरादर काई ।।२।। जिन की कोइ न सुनत पुकारा, श्रीचंद्र बात बताई ।। करते हाथ अपने महि राखी,सभ बिधि की ठकुराई ।।३।।९०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। संत की सेवा सदा सुहेली ।। धरमराइ का लेखा चूकै,जनम मरण गति परे परेली ।।१।। रहाउ ।। मोह मिथिआ महि डारत जोऊ,साकत सेवा अधिक दुहेली ।। साधु संग नवनिधि सिधि प्रापत,गुणनिधान प्रीतम हरि मेली ।।१।। मनमुख मुख जोड़न कीने,कालुख दाग लगत उर चैली ।। मन निरमल संग संभाखण,राम नाराइण गोबिंद सैली ।।२।। महा आनंद हरि कीरतन,संग साधू परण कुटैली ।। पक्के धौलर मनमुखन केर,श्रीचंद्र विखधर वसैली ।।३।।९१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरि राखत पैज भगत जन केरी ।। हाथ देइ राखिओ प्रहलादै,प्रगट भयो प्रभु थंम उधेरी ।।१।। रहाउ ।। अविचल पद ध्रुव को हरि दीनो,रिखिवर घूमत चार चुफेरी ।। संपद निखूट सुदामै पाई,लाज द्रौपदी गई न गेरी ।।१।। सरब सिधि हनुमान बडाई,चरन कमल कौसलपति

हेरी ।। पारथ रथ हाँक गिरधारी गमनिओ,कौरव कुल नासी इकबेरी ।।२।। जल अगनी भै पवन निवारे,परबत छार करत बिन देरी ।। गोपाल दामोदर रिखिकेस प्रभु,श्रीचंद्र रहि है जन नेरी ।।३।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन की करत रखिआ प्रभु आप ।। राम कार नाराइण खैंचत,लगत नही तन को संताप ।।१।। रहाउ ।। जो जन ऊपर वार प्रहारत,ढाल धार बोचत पग दाप ।। जहँ जन भीर परत अणहोनी,करि उद्दम गोबिंद प्रधाप ।।१।। अपर नहीं तिहँ सम को दूजा,खिन महि मेटै सगरे पाप ।। गरबिन गरब निवारण कारण,बहु प्रकारी रचित कलाप ।।२।। भीतरि बाहरि जन निरजन थल, घट घट पट पट सरब विआप ।। श्रीचंद्र मन सिमरहु सुआमी,चंड प्रचंड अखंड अमाप ।।३।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हउमै करत करत दुख पाईऐ ।। रावण हउमै मार निवारिओ,कोटिहुँ मित्र न भए सहाईऐ ।।१।। रहाउ ।। सवा लाख नाती लख सुत जुत,कुंभकरण से जोधा भाईऐ ।। चतुरंगनि

छौहणी कई कोटी,मेघनाद सेनापति राईऐ ।।१।। मंत्री बुधिमान सारण से,कुंभ अकुंभ निकाय लखाईऐ ।। कंचन नगरी शिवपूजा रति,आगिआकारी देव महाईऐ ।।२।। सूपकार निसिपति दिनपति जिहँ,पावक रजक करम हेराईऐ ।। निमख गरब श्रीचंद्र बिनासिओ,अटकिओ राम न सागर खाईऐ ।।३।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सरब थान प्रभु रखिआ कीन ।। हाथ देइ राखिओ करि अपना,करते पुरुख गुपाल प्रबीन ।।१।। रहाउ ।। दोखी दुस्ट रहे झख मारत,सस्त्र अस्त्र को चलन न दीन ।। जंत्र मंत्र जन बांध खलारे,मूरति पाहन समसर चीन ।।१।। चहुँदिसि कोट हरी किरपा का,मुहकम द्वारै बज्र जड़ीन ।। गोली गोला तुपक तुफंगन,भूत ईंट इत उत फैंकीन ।।२।। दामोदर श्रीपति जन पालक,मालक दुहुँ लोकन पति दीन ।। श्रीचंद्र सिमरउ दिन रैणी,सदा सहाइक गहर मिहीन ।।३।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पारब्रहम का बडा प्रताप ।। कोइ न पहुँचनहारा दूजा,अलख अखंड प्रचंड

अमाप ॥१॥ रहाउ ॥ करते कै हथ सरब वडाई,जिस चाहै तिसु देवै आप ॥ ऊचहि नीच करत खिन माही,नीचहिं ऊच सिंघासन थाप ॥१॥ ऊणे भरे भरे करि ऊणै,आकरखी उदकरखी जाप ॥ इक पल लगत न पुंनी डारत,चाढ़त सात लोक ग्रिह पाप ॥२॥ पग बेड़ी बंधन हारे,बंदसाल छुटकाइ अमाप ॥ श्रीचंद्र गोबिंद गुण गावै,चित प्रसन्न उर माही ध्राप ॥३॥९६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ अकथ कथा हरि कथी न जाइ ॥ काकभसुंडी सदा सद गावत,उड उड पेख पेख बिसमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सेसनाग नित नवतन नामन,दुइ सहस्र जिहबा न मुकाइ ॥ विआस परासर नारद सारद,पिपलायन आदिक समुदाइ ॥१॥ सनक सनंदन सनत कुमार सु,परम रिखीसर मुनिन महाइ ॥ धिआन मगन शंकर थिति इकरस,अक्खर मुख से वरण न जाइ ॥२॥ थकि थकि पंछी अंतरिच्छ से,उतरे धरनी पर बल लाइ ॥ अलख अकथ अगम अपार,श्रीचंद्र कथ कथ सिर निआइ ॥३॥९७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || अनाथन नाथ गुपाल मुरारी || सरनि पाल जन जन प्रतिपालक,अरि दल घालक प्रभु गिरिधारी ||१|| रहाउ || सूखम से सूखम करि कहिऐ,स्थूलन स्थूल पुकारी || सरब संग सभ से निरलेपा,सरब रूप अनरूप बिहारी ||१|| कवन ब्रहम को माया कहिऐ,को कथतो को ह्वै अधिकारी || कवन आइ पुनि कवन जाइगो,को है जिहँ यह खेल खिलारी ||२|| किहँ रचना के भेद बनाए,को है जिन सभ दए उजारी || श्रीचंद्र जिहँ समाधान नहिं,ताहूँ के हम अहैं पुजारी ||३||९८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || बखसनहार गोबिंद गुण धाम || जन के अनिक पाप खिन भीतरि,भस्म किए नाराइण राम ||१|| रहाउ || जात पात न बिचारी कोऊ,जा को दीनो हरि प्रभु धाम || ईंधन ढेर सकेल बनायो,रंचिक पावक भसम तमाम ||१|| सारी आयु बिताई कसमल,तोते हेत भनिओ मुख नाम || अजामेल रति वेस्या भोगनि,पुत्र नाराइण अंत भनाम ||२|| कोऊ पुन्य करम अरु तीरथ,जपु

तपु संजमु नियमु न याम ।। मया अपार सुमार न आवत,श्रीचंद्र माधव घनस्याम ।।३।।९९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। करि करि अवगुण झड़ झड़ पड़ीऐ ।। तन धन जोबन सरब गवाए,रोड़ रोड़ जल नैनहुँ झड़ीऐ ।।१।। रहाउ ।। पुस्ट आहार जेता किछु खाइऐ,सरब बिरथा हानी सड़ीऐ ।। गौर रंग सुंदर पट अंबर,पिखत सरीर भसम उडि मड़ीऐ ।।१।। भुजदंड बलवंडन करि कर सम,न्हाइ राख छानत सिर धड़ीऐ ।। गरबवंत चातुर अति सोभा,बिनसत लागि एकउ घड़ीऐ ।।२।। रसकस भोग भोग मद माता,गालन टोए गहर निहड़ीऐ ।। ईहां रोग नरक दुख आगै,श्रीचंद्र झुर झुर मन कड़ीऐ ।।३।।१००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पाप कसंमल रुचि पछुताणा ।। मनमुख संगति मद आमिख रुचि,परधन परतन संग लुभाणा ।।१।। रहाउ ।। निसिदिन बिखै भोग रंग राता,मन चंचल का नहीं टिकाणा ।। एक ते एक बड चढ़ै उपद्रव,दया बिसारि हिंस लपटाणा ।।१।। रतन अमोलक सास गवाए,मूल न पायो एक

दुगाणा ।। सगली आयु बिरथा विहाई,बल वीरज पत रहिओ न ताणा ।।२।। पाछलि गई न आगलि पाई,काल सीस चढ़ि दयो निसाणा ।। मन मूरख अजहूँ नहिं समझत,श्रीचंद्र बिन साधु सुजाणा ।।३।।१०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। करि अवगुण पछताहिंगा मन ।। जोबन धनु प्रभुता कउ खुइ करि,हाथ झाड़ि उठि जाहिंगा मन ।।१।। रहाउ ।। जिनि सिउं हित ठानै रचि रहिओ,तिनि ते कछू न पावहिंगा ।। रतन जानि पर नारि लुभायो,मल मूत्र रुचि आवहिंगा ।।१।। लच्छन निरे निगम आगम लखि,या ही सिउं चित लावहिंगा ।। पग डोलब कर शक्ति बिहूने,नैनन कछु न लखावहिंगा ।।२।। कंठे कफ अटपट मुख बोलब,पुत्र मित्र न सुखावहिंगा ।। साधु संग हरि भजन तिआगै,श्रीचंद्र गुरड़ावहिंगा ।।३।।१०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अबिचल नीव सत्गुरु राखी ।। महाप्रलय महि डोलत नाही,ब्रहमा बिसनु रुद्र भे साखी ।।१।। रहाउ ।। ठाकुर थान सुहाना ऊचा,चौंधित पेखत जो जन आखी ।। चमक दमक रतनन

मणि खच्चित,टिकण न पावत ऊपर माखी ।।१।। चतुर दिसा फूलन फुलवाड़ी,भंवर गुंजारत संघन लाखी ।। हरि हरि नाम हरी हरिआवलि,संत संग जुरते अभिलाखी ।।२।। मोरन त्रितकार मंद बरखा,छहिबर घाम बिनासी भाखी ।। आनंद मगन राम रंग राते,श्रीचंद्र जिनि उर नहि काखी ।।३।।१०३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पति राखी गुरु सत्गुरु पूरे ।। परदा मूल न उघड़न दीनो,जै जैकार चतुरदिसि तूरे ।।१।। रहाउ ।। अंतरि हउमै मैल निवारी,निरमल उर सभ मिटै विसूरे ।। सत संगति अम्रित सर न्हाए,काक कलंक मिटाइ ठरूरे ।।१।। जनम मरण का संसै मेटिओ,आनंद मगन सहिज भरपूरे ।। दुबिधा पीड़ बिनासी सगली,जहँ तहँ पेखिओ प्रभू हजूरे ।।२।। अचल समाधि अगाध सरूपी, नाहि डुलावत वायु बघूरे ।। जल थल महीअल सरब निवासी,श्रीचंद्र सनमुख थित नूरे ।।३।।१०४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जा की जोति सगल घट छाई ।। वण त्रिण परबत सरब निवासी,जीव जंत महि एक समाई ।।१।। राहउ ।। सरब निरंतर वही प्रकासिआ,सूरज चंद जाहिं परछाई ।। गगन मंडल पाताली सगली,ऊन न जापहि कवनहुँ थाई ।।१।। खत्री ब्रहमण सूद वैस सभ,डोम चंडारन भेद न काई ।। साधु संग जिनि हरि रस पाइआ,दसदिसि दीपत दीप महाई ।।२।। माया पटल उछेद गवायो,बुद्धि प्रगास भई लिव लाई ।। आधि विआधि उपाधि मिटाई,श्रीचंद्र अनुभउ विगसाई ।।३।।१०५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अविनासी गुरु जिहँ मन वासा ।। रसना राम नाम रंग राती,तीन लोक परिहर चित आसा ।।१।। रहाउ ।। मद मतसर करकन की सरकन,साध संगि कर बिनसि बिनासा ।। उनमत भए बिहाने बंधन,चितवत पारब्रहम परगासा ।।१।। धावत फिरत मूढ़े घर अपने,रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि निवासा ।। मन बांछत पायो वर प्रीतम,त्रिपति संतोख दया अविनासा ।।२।। एको एक एक सभ रविआ,दूजा नाहिन को भव भासा ।। पेख पेख बिगसिओ हरि लीला,श्रीचंद्र द्रिढ़ उर

भरवासा ।।३।।१०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मोरे नाही जात अरु पात ।। पारब्रहम की सगली स्रिस्टी,भेद रचे सुत तात अरु मात ।।१।। रहाउ ।। ब्रहम उपाइ बिसनु प्रतिपाले,रुद्र संघारत सगल संघात ।। जैसो जनम ब्रिधबो तैसो,मरणो सभ सिर वैसी भाति ।।१।। रजो बिंदु महि भेद न कोऊ,पवण पाणी पावक इक जाति ।। आदिऊ करम बंध तन साजा,काल सरब को भे अवसात ।।२।। रहिण न पाए वडे वडेरे, पातिसाह साह रंक परात ।। सरब जीआ का सुआमी सोऊ,श्रीचंद्र सिमरत दिन रात ।।३।।१०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। किआ किछु करि है नर चतुराई ।। करत करत स्रम धंधे धायो,अनिक भांति तन नाच नचाई ।।१।। रहाउ ।। छलवल कपट धपट धन पायो,मारग ही तसकर हर जाई ।। पुत्र मित्र तजि साक संबंधिन,देस छोडि परदेस सिधाई ।।१।। लै लाहा ग्रिह भीतरि आया,रुज ग्रासिओ निरधनता पाई ।। कै मुहताजी जी जी भाखत,कंचन रजत भूमि अपनाई ।।२।। प्राण निकस जम लोक सिधारे,

निहफल होई सरब कमाई ।। श्रीचंद्र गोबिंद गुण गावै,नरहरि दीनबंधु रघुराई ।।३।।१०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन की कीनी प्रभू सहाइ ।। कोटि सस्त्र दुरजन परिहारे,वरसत पुहप सुगंधित साइ ।।१।। रहाउ ।। भूत ईंट तन छोहि न साकत,रामकार चहुँदिसि घिरिआइ ।। चारा चलत न ऊपर जन के,कर दीना करते हरि राइ ।।१।। दामण कामण कछू न लागै,राम नाम जपु जपु विगसाइ ।। अंतरि अगनि दुजन तन दाहिओ,चंड प्रचंड ज्वाल महाइ ।।२।। गोली गोला कहुँ उडानै,आंधी गोबिंद क्रिपा वगाइ ।। दामोदर नाराइण सिमरत,श्रीचंद्र नित नित विगसाइ ।।३।।१०९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु मेरे का बड परताप ।। गुन गोबिंद गाउ दिन राती,राम नाम हरि जपीऐ जाप ।।१।। रहाउ ।। बिघन न लागै तिल का काहूँ,अनुदिन कीरतन रसना ध्राप ।। वेदन सगल गवाई तन ते,जनम जनम के खोए पाप ।।१।। निरभै भए एक रंग राते,आधि विआधि नसे त्रै ताप ।।

दुसमन दूत रहै झख मारत,पोहि न साकै दहदिसि विआप ।।२।। जहँ जन सिमरत तहँ हरि प्रापत,कर दै राखत ऊच सथाप ।। धिआइ धिआइ आनंद मगन रस,श्रीचंद्र हरि होयो आप ।।३।।११०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जा को दीनी हरि प्रभु धीर ।। दूख भूख तिसु जन न विआपै,चूकी अंतरि हउमै पीर ।।१।। रहाउ ।। त्रिसना सकल बिनासी मन ते,उतर गई आसा गंभीर ।। आवण हरख न जावण चिंता,जो होवण गोबिंद तदबीर ।।१।। जो किछु करणा सो करि रहिआ,बपुरा मानुख कवन सु कीर ।। घोड़ा उड असमान पयाना,द्रिस्टित नहिं असवार सरीर ।।२।। सिर सभ लेख कलम तिसु लेखा, पेखा नहिं कर कबहूँ बीर ।। श्रीचंद्र तनु धनुख प्रहारत,दहदिस पिखिअत केवल तीर ।।३।।१११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु मेरे का अंतु न पार ।। को कर सकत परामरश ता का,अलख अगम अगोचर

सार ।।१।। रहाउ ।। बन पातन किहँ गिन कर राखिओ,पात पात की रेस अपार ।। पावक फुलिंग रेत के किणके,तन रोमन कउनै निरधार ।।१।। गगन मंडल उड्डगन केतक है,केतक गमन अगमनी चार ।। धरणि खंड सूधे कै मूधे,अध ऊरध थापै किम धार ।।२।। केते जीव कितक गुण डारे,केतो दान देत दातार ।। केती विद्या केती बुद्धी,श्रीचंद्र अनमोल सुमार ।।३।।११२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। गोबिंद माया अचरज भाई ।। किआ परमेस्वर को प्राक्रिती,करि विभाग काहूँ न जनाई ।।१।। रहाउ ।। तन मन कतहूँ नहि परिछिंना,बुद्धि जीव अन नहि द्रिस्टाई ।। हरी जगत की एको हस्ती,वसती वसत शक्ति सकताई ।।१।। रहाउ ।। गुण को काहूँ सरूप न पिखिअत,बात बनावत ताल मिलाई ।। दीपक तलै अंधेरा विआपत,अंधी अंधा कूप गिराई ।।२।। रामी शिव कामहि भा जारत,अद्भुत कथ कथ लोक हिराई ।। श्रीचंद्र कस कथहि अकथहि,राम राम अखर दुइ गाई ।।३।।११३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन कउ कहु का की परवाह ।। अठदस सिद्धि नउनिद्धि रिद्धि पेखत,मुख जा का करि

चाह ॥१॥ रहाउ ॥ कर जोरे दर ठांढै बिनवत,सिर साहां बड साहनसाह ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र सूरज ससि,देवराज चाहत रज राह ॥१॥ आकल मस्त राम रंग राचे,राजासन कै मरघट सुआह ॥ गीत गुबिंद विरागी हासब,सूख दूख तन बेपरवाह ॥२॥ खीर खंड घिउ दुध मलाइआं,सूखी रोटी चने भुनाह ॥ खाइ अघाइ टांग धर सोए,श्रीचंद्र चिंता कहु काह ॥३॥११४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ जन की टेक एक हरि नाम ॥ आन ओट निज चीत न धारत,सिमरत गोबिंद आठहुँ जाम ॥१॥ रहाउ ॥ साक सैन सुत राज तिआग,पग नाराइण लीनी साम ॥ हउमै खोइ भए मन निरमल,करम कुकरम बिनासी घाम ॥१॥ सुख दुख दाता एकहुँ सुआमी,सरब धरम धन माधव धाम ॥ गुण गावत सभ त्रिसना नासी,आनंद पायो चीत अराम ॥२॥ दूजी थाउं न सूझत मन महि, सरब सिरोमणी रमणो राम ॥ सगली अटक झटक दै चूकी,श्रीचंद्र निहचल बिस्राम ॥३॥११५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ पारब्रहम जन रहै समाइ ॥ माया मोह बिनासिओ मन ते,नाम जपत नाराइण

राइ ॥१॥ रहाउ ॥ द्रिस्टिमान नहि स्थिर कदाऊ,राच माच का सिउं बिगसाइ ॥ सूख दूख अनुचर प्रभु प्रेरक,जिउं चाहै तिउं देइ पहुँचाइ ॥१॥ तिस पठए तब ही तन पायो,जब सद्दे तब चलनो भाइ ॥ आपे जनमै आपे मरसी,आपहि सभना रिजक संबाइ ॥२॥ भुगता भोग आप ह्वै रहिओ,आपहि भोगन कीनु उपाइ ॥ परमेस्वर तन संत बनायो,श्रीचंद्र आपहु भव आइ ॥३॥११६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ संतन कै घर केवल राम ॥ कीरतन कथा गुबिंद गुणानुवाद,राग नाद स्तुति मूरध ग्राम ॥१॥ रहाउ ॥ सहिज संगीत सीत चंदन तरु,बिखधर बिख बिनसै बिस्राम ॥ संगम तीर नीर वर निरमल,बेणी मज्जन निसि रहि जाम ॥१॥ रसना रसी रसक परिवारित,दुरमति कूड़ न पापन ठाम ॥ देवगुणी संग देव समूहन,पी पियूस हरि जन मरमाम ॥२॥ त्रिगुण बिनास अगुण उर उरझे,दामोदर दयाल सुख धाम ॥ सो रस सोई जानै रसीआ,श्रीचंद्र अन कउ नहि काम ॥३॥११७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ अकथ कथा हरि कथ कथ कहिऐ ॥ कहि कहि जबहिं अकहि पद पाइऐ,तबही

हरि हरि रटते रहिऐ ॥१॥ रहाउ ॥ उड उड मन पंखी असमानी,भूमि पतार सुधी बिसरइऐ ॥ राम नाम रसना रस लीनी,रसकस कउन विचार सुनइऐ ॥१॥ सबद प्रगास भए धुनि उपजै, धुनि पर धुनि अनरूप हनइऐ ॥ गाइ गाइ अनगाइ प्रगट ह्वै,अनगाए विसमाइ समइऐ ॥२॥ जोती जोति जोति बिगसावै,जोति जोति किमि भेद अलइऐ ॥ दुइ ते एक जबै अनुभव रचि,श्रीचंद्र सिख गुरु इक भइऐ ॥३॥११८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ विद्या वेद अवेद वखानी ॥ किहुँ प्रस्तार न किओ बंध कित,अंकन लड़ी न अजहुँ जुड़ानी ॥१॥ रहाउ ॥ पाणी अगनि पवण की भासा,समझ सुनाई किनहुँ न गिआनी ॥ पेखिअत अणु न किउं हूँ जतनै,द्रणुक द्रणुक किहँ कारण जानी ॥१॥ किमि उपजायो किम बिनसायो,गोरख धंधा खुलत न गानी ॥ बोलब गत ह्वै चूपब गत ह्वै,अगत गतहि गत अगत समानी ॥२॥ तन पाहन जड़ चैतन हीना,चैतन मन बुधि पर बानी ॥ श्रीचंद्र बिसमै बिसमायो,मौन अमौन समाधि चितानी ॥३॥११९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मेरे मन,हरि हरि नाम अधारा ।। गुरु अविनासी आगिआ कीनी,राम राम जपते सुख सारा ।।१।। रहाउ ।। हरि हरि सिमरन ते आवहि,सगले कारज देत सवारा ।। आप उपावै आप प्रतिपालै,आपहि करनैहार संघारा ।।१।। करण कारण समरथो सुआमी,जिउं भावै वरतै वरतारा ।। जल थल जिअ जंतु वण त्रिण महि,सरब विआपक एकंकारा ।।२।। तिस बिन दूजा कोई नाही, सदावरत जिस अखुट अपारा ।। माया पटल उडानो श्रीचंद्र,नरहरि दीनबंधु पिआरा ।।३।।१२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। नर नाराइण अंतरयामि ।। मिहर उपाई लज्जा राखी,सदा समालहुँ हरि हरि नाम ।।१।। रहाउ ।। मुख जो कुछ सबद प्रगासा,कीनो पूरण पुरुख तमाम ।। जोर खड़ग किछु शक्ति न मो पै,भै धर कांपत खड़े इमाम ।।१।। एका एकी गमत आए मही,चतुरंगनि जोधे धाम ।। दीन दयाल क्रिपाल गुसाईं,तुमही नासे दहदिसि खाम ।।२।। हे जगदीस,कवन गुण बरनहुँ,ऊरध बास गिराए धाम ।। सुआमी श्रीचंद्र का सोऊ,पहुंच न साकत जा कउ काम ।।३।।१२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || प्रभु जी,तूँ मेरी लज पात || दोखी दुस्ट लगे लागू बण,अनिक बिधिन करते उतपात ||१|| रहाउ || बैठत उठत सदा संग लागै,टेढी वेढी भनते बात || निरदोसी कउ दोस बतावन,सहज सुभावक तिन को घात ||१|| लोभ ग्रसे मन अंध मंदमति,संत संग नाहिन सु सुखात || कूड़ी संगति कूड़ विहाझन,कूड़ उपाव चितव दिनराति ||२|| कसमल भार धार सिर ऊपर,उर वांछत नित सुख कुसरात || जिस के सीस हाथ करते का,श्रीचंद्र को डारहि झाति ||३||१२२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || जिहँ जन प्रभु की सरणि निहारी || चितवत अनिक उपद्रव दोखी,पचि पचि परे महा झखमारी ||१|| रहाउ || दुस्ट सभा दुरजोधन बैठा,दुहसासन द्रुपदा न उघारी || ग्रसिओ ग्राह गज वाह न कोऊ,धार सुदरसन काटसि तारी ||१|| अपना जान निवाजिओ जा कउ,भलो बुरो कछु नहि हरि धारी || दहदिसि बधिक घेरिओ हरिनी,कल वरताइ गोबिंद उबारी ||२|| सगरे

साजवाज कर राखै,ऊच नीच कस सकत बिचारी ॥ संत सहाय सदा रघुराई,श्रीचंद्र निहचय उर धारी ॥३॥१२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ राखत लज्जा पति गिरधारी ॥ सभ सिउं परदा जगत मझारी,भूसन बसन पहिर झलकारी ॥१॥ रहाउ ॥ परम निसानी पतिव्रता वर,सोहति संगे कापड़ डारी ॥ जहाँ दूजा तहँ घूँघट पटका,एको एकी परिहरि सारी ॥१॥ प्रीतम प्रेम परम रस अम्रित,पीत न त्रिपते भरी पिआरी ॥ चूकी भीत चीत निरमल सुध,काम क्रोध माया बिख मारी ॥२॥ अपनी जान आप प्रतिपारी, कारज भार आप सिर धारी ॥ मन मोहन सोहन अति सुंदर,श्रीचंद्र गोबिंद मुरारी ॥३॥१२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ पतित पावन प्रभु नाम तुमारा ॥ इक मन ह्वै जिहँ जन चित लायो,परिहर अउगुण निखल विकारा ॥१॥ रहाउ ॥ कोटिन कोटि नीच भे ऊचै,धरमराज लौ चरन जुहारा ॥ जगनाइक गोबिंद ब्रज बल्लभ,पावन धरि पावन भंडारा ॥१॥ गनका ते को अधमा नारी,राम भनत सुक हेतु

सवारा ।। अजामेल बिखली पति पापी,गयो प्रभू पुर मुकत दुआरा ।।२।। सधना सैन कबीर सु धंना, पावन भा रविदास चमारा ।। नामदेव छीपा जग जानै,श्रीचंद्र हरि लहिओ दीदारा ।।३।।१२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरिजन हरि होए इक रंगा ।। जात पात कुल काण मिटाई,प्रभु सो मिले जमुन जल गंगा ।।१।। रहाउ ।। रक्त बिंदु कर संभव इह तन,गोबिंद बिन कब भयो उतंगा ।। काम अनुरक्त मात पितु सुत भा,अंग प्रत्यंग अपावन ढंगा ।।१।। मूत्र दुआर ते उतपति जा की,विस्टा गरभ निवास न चंगा ।। जूठ कूठ की बुद्धि बिहाई,युवा भयो बड डील सुरंगा ।।२।। भव पुरीख ते उदर भरिओ तुछ, वस्तू अपवित्र धसी सरबंगा ।। राम नाम जपु राम सु होए,श्रीचंद्र खोए भ्रम भंगा ।।३।।१२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साचे साधू बेपरवाह ।। राम नाम रट निसदिन लागे,ऊठत बैठत साह गिराह ।।१।। रहाउ ।। धनी अमीन भूमीपति ठाकुर,खान उमराव कहा पातिसाह ।। नैन उघाड़ न पेखत कबहूँ,पर घर जाचन के सिर स्वाह ।।१।। पाहन ईंट रचे हरि मंदर,अठसठ तीरथ जल

परवाह ॥ पाणी पाथर परिहर सिमरित,हरि नामन गुण अगम अथाह ॥२॥ जबि दैहैं तब खैहैं पीहैं,प्रभु दर थित भे धूणा डाह ॥ तजि बैकुंठ तिआग खगपति हरि,श्रीचंद्र परसन चित चाह ॥३॥१२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ जोग जुगति सत्गुरु सिखलाई ॥ ऊरध पवन प्रगास भई है,सहिज समाधि अगाध लगाई ॥१॥ रहाउ ॥ असुर नदी का मूल बंधाना,भूचर ते खेचर बिगसाई ॥ ओंकार धुनि अनहद बाणी,स्त्रवणन दुंदभि घोख समाई ॥१॥ भेदत खट चक्रन की धरनी,अरविंदन ते गंधी आई ॥ कुंडली छाट भुजंगमि ठाढी,मेरुदंड खिड़की खुलवाई ॥२॥ जोती आले भीतरि चमकति,गंगा उतरि अकासहुँ धाई ॥ तन मन सुधि बुधि गई हिरानी,श्रीचंद्र सुंन ताड़ी लाई ॥३॥१२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ सहिज जोग सत्गुरु परगासा ॥ नेति धोति तन मन सुध कीना,उलटा कमल खोल मुख खासा ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथ अठसठ संगम बेणी,त्रिकुटी छूटी जोति विगासा ॥ गंग अकासी

अमल कलल महि,डुबक डुबक रव उदभव भासा ॥१॥ तंती तांत वजी बिनु सुंदरी,मुद्रित मुद्रा अविचल रासा ॥ आवागमन सास बिनु बोलियो,खोड़सि प्रणव धुनी अवकासा ॥२॥ पदमासन थित अचल सिंघासन,सहिज समानो खुले अकासा ॥ परम पदारथ पाय क्रितारथ,श्रीचंद्र द्रिढ़ निरमल रासा ॥३॥१२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ ताला दीनो सत्गुरु खोल ॥ बज्र कपाट जड़े अन मोती,द्रिढ़ सांकर कुंजी नहिं कोल ॥१॥ रहाउ ॥ भ्रम की छाति भीति संसै गण,अनथिति मंदर अंदरि पोल ॥ दहदिसि अंधकार बिनु जोती,डर डर मरत भूत के ढोल ॥१॥ ओम् सबद डारि स्त्रवनन महि,श्रीमुख वाक बखानिओ बोल ॥ अनहद सहिज धुनि पंचन मिलि,राग नाद न्रित कीन निरोल ॥२॥ हउमै दुबिधा दूर बिनासी, दीपक बालिओ तेल बिनोल ॥ तखते छूटे लहिओ प्रगासा,श्रीचंद्र मणि रतन अमोल ॥३॥१३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ मन रे,राम नाम मुख बोल ॥ रतन जवाहर मणीआ हीरे,पंने लाल न पुजत

अमोल ॥१॥ रहाउ ॥ जगत पदारथ हीन परमारथ,होहि क्रितारथ अंतरि खोल ॥ अलपलाली पंड पराली,धंधे धावण छोडहु रोल ॥१॥ सत्गुरु पूरे पूरण वस्तू,एक नाम हरि दीनी टोल ॥ बैकुंठहुँ ते ऊपर जाई,सप्त पातालहुँ आनी फोल ॥२॥ कउन बिचारी धरनी सारी,की पातसाही फीका घोल ॥ दुइ अखर अखर करि राखहि,श्रीचंद्र को साकसि तोल ॥३॥१३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ गोबिंद नाम के संत वापारी ॥ राग नाद व्रित संग फैलाई,हरि कीरति मेदनी भरि सारी ॥१॥ रहाउ ॥ सुइना रुपा कासी तांबा,काचा काच न चलत संगारी ॥ जैसी वस्तु विसाहिऐ जग महि,तैसो ही फल लहि निरधारी ॥१॥ धन भोगन को कारण बन है,भोग रोग तन महि विस्तारी ॥ राज पदारथ रसकस सगले,त्रिपति न त्रिसना काहुँ निवारी ॥२॥ झूठी काया झूठी माया,कदम एक संग नहिन पधारी ॥ हट्टी साधु पूँजी प्रभु नामन,श्रीचंद्र पहुँचत दरबारी ॥३॥१३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ साकत भाव न हरि हरि नाम ॥ कस चंदन को करब वपारा,ढोयो ढोरन काचो

चाम ।।१।। रहाउ ।। लाहणि कैस कलालनि मेलै,कच्ची मिट्टी बासन खाम ।। दूध शेरनी के हित चहिऐ,कंचन गड़ित रचायो बाम ।।१।। बगुला काग अहिंसा कैसी,डडि मच्छी विस्टा जिनि ताम ।। जपु तपु सत संतोखु दया किहँ,काम क्रोध रस मोहिओ भाम ।।२।। परनिंदा रत निसदिन बीतै,साधु संग किमि तीसर जाम ।। मद आमिख को भोगनहारा,श्रीचंद्र किमि सिमरहि राम ।।३।।१३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मेरे गोबिंदा जिउं राखहि तिउं रहिऐ ।। जिउं तुध भावहि तिवै नचावहिं,तैसहि खेल खेल निरवहिऐ ।।१।। रहाउ ।। दूख भूख तेरी आगिआ पिआरे,अहं मान दूखन महि पड़ऐ ।। जहँ जहँ दाणा तहँ तहँ खाणा,जहाँ न खाणा तहाँ न खड़ऐ ।।१।। जहाँ पठावहि तहँ चल जावहिं, जहाँ बैठावहि तहाँ बिठइऐ ।। कबहुँ राज नगर सुंदर रमि,कबहुँ सिंधु पहाड़ गमइऐ ।।२।। कबहुँ एक बूँद जल नाही,कबहुँ सरबत मीठ ठरइऐ ।। कबहुँ छत्र सिंघासन सिहजा,श्रीचंद्र कब रोड़न सइऐ ।।३।।१३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभ जु,तू ही सहायक मेरो ।। हम निसदिन चितवत बुरिआई,तुम प्रभु देवत दान घनेरो ।।१।। रहाउ ।। अपनी मिहर आप ही करते,हमरी ओर न कबहूँ हेरो ।। हमरे अवगुण चीत न धरते,पाप कसंमल नाहि चितेरो ।।१।। छप छप अनिक कुकरम कमाते,क्रिपा कटाख्य पेख निस्तेरो ।। किआ गुण तेरे वरणै रसना,सिर नहि होवत मोहि उचेरो ।।२।। माया मुहि निघरत बड गरते,गहि भुज काढहु ह्वै अति नेरो ।। साधु संग दीजै करि नदरी,श्रीचंद्र लघु ते लघु चेरो ।।३।।१३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभ जु,मुहि अति दीन बिचारो ।। कवन मूल ते केता कीनो,किमि कर कहहुँ सु सरब समारो ।।१।। रहाउ ।। जनम जनम के रंक महानै,साहनसाह कर बंदे जेरो ।। सूके टूके ग्रिह ग्रिह जोहत,सदावरत वरसात घनेरो ।।१।। चीथड़ तन पहि ओढ न पावत,पाटंबर पर द्रिस्टि न गेरो ।। कौड़ी कौड़ी को थे तरसत,अंजुल भरि भरि द्रब्य उडेरो ।।२।। पर घर जाइ सेव हित लागहि,पाइ परत सेवक जग चेरो ।। श्रीचंद्र किमि आख वखाणै,गुणनिधान गुण अगम घनेरो ।।३।।१३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। संत संग दीजै प्रभु सुआमी ।। उर ते सगल बिनासहि बंधन,निसिदिन सिमरउ अंतरजामी ।।१।। रहाउ ।। दूख भूख त्रिसना सभ नासै,बिनसै मन ते मिथिआ कामी ।। अहनिसि गुण गावउ रंग राता,राम जपत पद लहहुँ अनामी ।।१।। दूजा अवर न कोऊ सूझै,एक ओट गुणनिधि परधामी ।। जनम मरण को संसै चूकै,अंतरि वासै सीतल नामी ।।२।। हउमै रोग जलन पर परिहर, बिख बिखिआ छूटै ज्वर आमी ।। निरमल मन ऊजल मति रावण,श्रीचंद्र की भरीऐ हामी ।।३।।१३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जन के पाप सगल प्रभु छीने ।। हरि हरि नाम मुख उज्वल,मन निरमल करमन गति लीने ।।१।। रहाउ ।। नाराइण गोबिंद कथा रस,राग नाद कर ताल नवीने ।। माधव बिना न दूजा पेखत,सगली स्रिस्टि द्रिस्टि रति हीने ।।१।। दीन दयाल सदा प्रतिपालक,मालक घालक खालक चीने ।। अम्रित रस पायो गगनंतर,मउलिओ तन मन अंतरि भीने ।।२।। धरम निवास परम

पद पावन,पतित पुनीति किए हरि दीने ।। गिआन प्रगास दसोदिसि चानण,श्रीचंद्र चित चतुर प्रबीने ।।३।।१३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। गुण निधान प्रीतम प्रभु मेरा ।। जिनि जिनि धिआया तिनि सुख पाया,हउमै बंधन सगल निबेरा ।।१।। रहाउ ।। सिमरि सिमरि हरि रूप समाए,काम क्रोध मोह बिनसिओ घेरा ।। सगले जीव जंतु प्रभु कीने,जो जो दीसै सो सो तेरा ।।१।। खत्री ब्रहमण सूद चंडारन,स्वपच चमारन पोच बसेरा ।। माइ बाप हित पूत लडावन,स्याम गौर गोधूम न हेरा ।।२।। अवगुण जाण न मात चितारे, पूत दुखी दुख लखत घनेरा ।। बखसणहार बखसि करि अपनी,श्रीचंद्र कै भयो सु नेरा ।।३।।१३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पति राखहु गोबिंद गुपाला ।। अनिक बिधिन के अवगुण भीतरि,तन पर ओढे स्वेत दुसाला ।।१।। रहाउ ।। मन चितवत निसदिन बुरिआई,साध मौन बैठिओ सून्य आला ।। काम क्रोध

अहंकार विआपै,कर धर फेर दिखाई माला ।।१।। तिलक लिलाट सूत्र गल डारे,परधन परतन जोहत जाला ।। पहिर दिखाए ऊजल बसनन,अंतरि कपट भयावन काला ।।२।। ठग्गण हित तन वेस बनायो,दंभ निधान गुमान गुआला ।। दीन दयाल क्रिपाल बखस लिहु,श्रीचंद्र हरि सरणि गुपाला ।।३।।१४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। दुख महि काहूँ निकट न जाईऐ ।। राम राम जप जपत इकाकी,भाणा गोबिंद सीस टिकाईऐ ।।१।। रहाउ ।। पर घर स्वान स्वान जब हेरहिं,भौंकत काटत मिलत सबाईऐ ।। सुख पहुँचावन की मुख बातें,अंतरि तन मन धन हरि जाईऐ ।।१।। मेरो चारा प्रभु दरबारा,मैं मुख मंत्रिन संग सहाईऐ ।। विस्ट दीवान मुकद्दम जेते,मेरो कथन न सकत हटाईऐ ।।२।। मद आमिख इन करहु रसोई,पांच सहस्त्र मुद्रा दिवाईऐ ।। कूड़ बोल धन हर लै जावहि,श्रीचंद्र मत चित्त बिरमाईऐ ।।३।।१४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ कोऊ दूख का संगी नाहि ॥ जब ही राम गए बन भीतरि,भूति संबंधी लोक बिनाहि ॥१॥ रहाउ ॥ पांडव एकल भए दास रहि,काहूँ न गही आइ तिनि बांहि ॥ आपद केवल न्रिपति नल भोगी,मीर वजीर पीर घर मांहि ॥१॥ सीता संग न रघुवर गमनिओ,गरभवंत वेदन लख वाहि ॥ मत आसा कीजै काहूँ नर,दुख काटनहारा नर नाहि ॥२॥ भज उर सेससाइ गोबिंदै, सागर लहरी सांत कराहि ॥ जौ सुख देह न मेटे कोऊ,श्रीचंद्र दुख नाहिं हराहि ॥३॥१४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ कारण करण गोबिंद गुपाल ॥ इकमन इकचित भजहु सदाई,सुख दुख भीतरि हाल बिहाल ॥१॥ रहाउ ॥ परारब्ध वसि आवन जावन,भोग अभोग आनंद मलाल ॥ इक आवत इक जावत बवरे,हरि आगिआ महि भोगत काल ॥१॥ जलतो जनमिओ जलतो बिचरत,जलतो ही रवि मरहै लाल ॥ आसुतोस संपद सद दाता,वसन न कुटीया लई बिहाल ॥२॥ कंज पछाड़त सागर लहरीं,कमलज थिरता नित्त भूचाल ॥ करते पुरुख हाथ निज राखै,श्रीचंद्र जड़ करम

विसाल ।।३।।१४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। नाराइण की वडी वडिआई ।। सिमरि सिमरि रंग माणहु निसदिन,हरि हरि नाम सदा सुखदाई ।।१।। रहाउ ।। जन की पैज रखे नित गोबिंद,आपहि आपनि कल वरताई ।। नीचह ते ऊचै करि थापहि,ऊचै नीचै करत सदाई ।।१।। बकरी बन सिंघ घास खवावहि,हस्ती कंधे अजा चुगाई ।। राज सिंघासन देवत रंकहि,रंकन अग्रज भूप झुकाई ।।२।। अंन दाना सीचाना खाणा,गो महिखी आमिख वरसाई ।। थल महि जलनिधि श्रीचंद्र प्रगटत,सोख समुद्रन धूड़ उडाई ।।३।।१४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। गोबिंद की गति कही न जाइ ।। जिउं भावै तिउं ही कर वेखै,उलट पुलट नित नित बिगसाइ ।।१।। रहाउ ।। जल महि अगनि अगनि महि पाणी,आपहि राखत बणति बणाइ ।। मित्रहि सत्रु करत खिन माही,सत्रु मित्र करता सद भाइ ।।१।। जनम महि म्रितु,म्रितू महि जनमा,सुख महि दुख,दुख महि सुख जाइ ।। धरनी चरत अकास चढावहि,चढै आकास पाताल पठाइ ।।२।।

उज्जड़ थेह वसावत नगरन,राजन नगर उजाड़ कराइ ।। भोगी जोगी,जोगी भोगी,श्रीचंद्र करि करि हरखाइ ।।३।।१४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जिस जन ऊपरि गोबिंद हाथ ।। तिस को कोइ न पहुँचनहारा,सिर पर खड़ा अनाथन नाथ ।।१।। रहाउ ।। अनिक उपाव चितव नहीं पावै,प्राण नाथ की गहरी आथ ।। भगति भाव प्रभु दया भंडारा,नहि प्रापत धर रगड़े माथ ।।१।। दुखीआ जीवन कोऊ न चाहै,नहि मरना भावत नरनाथ ।। गति मिति करते की वडिआई,जानी जात साधु के पाथ ।।२।। जिसहि निवाज साज सभ साजे,वाजे वजत म्रिदंगन साथ ।। इंद्र उपिंद्र फनिंद्र मुनिंद्र सु,श्रीचंद्र कीरति कथ काथ ।।३।।१४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मै मेरी जिहँ रोग लगाना ।। माया मगन प्रभु नाम न जानै,इत उत पेखत फिरत दिवाना ।।१।। रहाउ ।। इत ते पावहि इतहि गवावहि,सिर निज कालर भार लदाना ।। भूमि

हमारी हमूँ भूमिपति,अपर न दूजा मोहि समाना ।।१।। अंत विगूता कर कछु नाही,साढे तीन हाथ समसाना ।। जोगी भोगी पंडित गुणीए,मूठे माया मोह निदाना ।।२।। घ्रित पिआज लसन महि फेरी, दरबी लहिओ न रसकस खाना ।। राम नाम बिन हउमै मूसे,श्रीचंद्र भए नरक रवाना ।।३।।१४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। पाप घटा घन छाई जोरे ।। जहँ तहँ फिरत प्रजा धन हिरते,सेनापती सिपाही घोरे ।।१।। रहाउ ।। लूटत मारत निसंग धावड़ी,कोऊ न करत ताहि हटको रे ।। जेतक महर मुकद्दम विस्ट सु,बिन वढ्ढी नहि सुनत निहोरे ।।१।। भई अदालत द्रब्यवान की,निआउ न पिखिअत धरनी टोरे ।। धन हेती हलकाए कुत्ते,भौंकत काटत दहदिसि दौरे ।।२।। रईयत रंक सहिम सद सदमे, अंदर मुख रोवत बिन रौरे ।। किरपा धारि कल्की अब आवउ,श्रीचंद्र बिनवत कर जोरे ।।३।।१४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। अघ ओघन धरनी सभ छाई ।। गरज गरज तड़िता सम कड़कत,महिखी रंक प्राण बिनसाई ।।१।। रहाउ ।। मदमत्त लोभी भरी कचहिरी,कड़कन पक्का खेत गवाई ।। बसन बिहून प्रजा

भै भीती,भाग भाग चाहत लुक ठाई ।।१।। छप्पर टूटे सिर पड़ ओले,दै धन सगरो जान बचाई ।। आयू पावस बीती नाहिन,नहि विषान घट घोर घनाई ।।२।। चिंत गरीबी दिन जीवन के,काटन हेत बनी कठिनाई ।। दीन दरद दुख भंजनहारे,श्रीचंद्र की सुनहु दुहाई ।।३।।१४९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। कुत्ते हलकाए रखवारे ।। अपन पराया सूझत नाही,काट काट हलकाव बिथारे ।।१।। रहाउ ।। दंड चलावत धन हरबे हितु,दोसी दोसन धरत किनारे ।। करत कराहन निरधन रईयत,भौंकत खाइ खाइ हडवारे ।।१।। आदिहुँ ते अंतम लग जेते,राज पुरुख धन लोभ बिगारे ।। गिआन विहूणी अंधी परजा,राह न सूझत राज दुआरे ।।२।। कूड़ा राजा कूड़ दिवानी,कूड़े बोल बोल भभकारे ।। बिन गोबिंद न सूझत कोऊ,श्रीचंद्र जोऊ सुनहि पुकारे ।।३।१५०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। प्रभ जू,मैं किमि दरसन पावउं ।। दूरि देस अंतरि बहु जोजन,बिन पग कैसे तुम ढिग जावउं ।।१।। रहाउ ।। रवि ससि तड़िता कोटि तेजि तुहि,हीन द्रिगन किमि कहु लखवावउं ।।

सप्त आकास पाताल खंड नव,बपु किमि कर मानव सहलावउं ।।१।। वण त्रिण सागर परबत पंखी,तुमरी बाणी करन बिना हउं ।। लख कोटी उस्तति लख ग्रंथन,मैं गूंगो किह बिधि करि गावउं ।।२।। तीन शक्ति मन बुधि गिरा दीनी,तुम सभ ही ते परे परावउं ।। आपहु आप अपणी मया ते,श्रीचंद्र गोचर चलि आवउं ।।३।।१५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभ जू,तुम बिन कवन उबारे ।। किहँ भीतरि एतो बल पिखिऐ,जलती बलती अगनि निवारे ।।१।। रहाउ ।। दहदिसि लोग फिरत भभकाते,कर भीतरि ले नगन करवारे ।। लहिर लोभ हरकाए कुत्ते,आपन परका सगल बिसारे ।।१।। महिखी एक करदमे लिबड़ी,छींटति वग्ग चुतरफी डारे ।। विस्टा भूंड बदन महि लागी,अरबिंद सौरभ नाहि समारे ।।२।। हड्डों रोड़े केरे सुआनहि,खीर खंड सिउं किआ बिउहारे ।। श्रीचंद्र जोऊ मदमाते,कर ते अम्रित भूमि लुडारे ।।३।।१५२।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ सूझत नहिं हरि तुम बिन थाउं ॥ जां की सरणि गहे सुख पाइऐ,दीसति नाहिन जग महि ठाउं ॥१॥ रहाउ ॥ आप छुडावन हेत सिधावउ,पेखउं मारत जम गण नाउं ॥ तीव्र नदी वेग महि बहिते,देत दिलासे कंठिनि गाउं ॥१॥ जोगी जती तपी ब्रहमचारी,रामदासीए भगत प्रभाउ ॥ संनिआसी जैनी वर ब्रहमण,काम अगनि दगधे हरिआउ ॥२॥ आस्त्रम चार धाम अरु पुरीआ, कसमल कलल गहिर दरियाउ ॥ श्रीचंद्र पापन भरि बोहिथ,वणजारे चाले तजि गाउ ॥३॥१५३॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ बिनती बिना अवर कछु नाहीं ॥ तुम राखउ को मार न सकहै,तुम मारउ को रख न सकाहीं ॥१॥ रहाउ ॥ मारन राखनहार एक ही,बिना पुकारे सरब जानाहीं ॥ अंतरजामी घट महि थिर भा,भाखन सुनन न आन कहाही ॥१॥ हाथी की चिंघार सभ जनिअत,चीटी बोलन सो लख पाहीं ॥ रखिआ हेतु सिंघ बिललावै,अजा भी अरज करत बिललाही ॥२॥ चटिका जाहिं चरण चहि लागी,जुरे बाज भी सरण तकाहीं ॥ श्रीचंद्र जिहँ बिनवत पावन,पतित भि ता की ओट

लखाहीं ॥३॥१५४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ सुनु अरदास सुआमी मेरे ॥ टोल मटोल सगल बिधि फोलियो,अघ ओघन बिन अपर न हेरे ॥१॥ रहाउ ॥ लोभ लहिर नदीआ मन बूडिओ,डुबकिन खातो घूमनि घेरे ॥ भक भक कंठ प्राण बेबस भे,द्रिस्टि न परत कोऊ जन नेरे ॥१॥ सनमुख चित्रगुप्त दफतर करि,लेख कुकरम दिखावत प्रेरे ॥ खावण पहिरण के जेऊ साथी,भाग गए लख बिपति बडेरे ॥२॥ दीन दयाल सरणि प्रतिपालक,बखसस करहु जानि निज चेरे ॥ तुम बिन श्रीचंद्र को नाहिन,संकट काटहि जो अब ढेरे ॥३॥१५५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ संकट काटनहार गुसाई ॥ जहां न कोऊ राखनहारा,तहां तहां प्रभु होत सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के बालक सोऊ निवाजे,जिनहि फसाए सोऊ छुडाई ॥ जिनहि उपाए पालहि सोऊ,जिनहि दिए द्रिग सोऊ लखाई ॥१॥ जिनहि चढ़ाए अपने बेड़े,सोऊ वंझ ला पार

कराई ॥ नीच कीट अगनी चहुँघाई,पंख लगाए वेई उडाई ॥२॥ सज्जण मीत कुटंब सहाई, नाराइण हरि प्रभु साबाई ॥ दिन रैणी श्रीचंद्र धिआवै,कोट ओट चरनन चित लाई ॥३॥१५६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ बिन हरि नाम न आवसि कामा ॥ ओट कोट खाई चहुँघाई,परल अगार अरगला धामा ॥१॥ रहाउ ॥ मंदर बाग चराग साख गिरि,माल सबाब मकीन अरामा ॥ हस्ती घोरे बहिल सिअंदन,जोड़े सकल पटंबर बामा ॥१॥ सस्त्र अस्त्र सारंग सर भीखन,तीछन धार खड़ग लोह जामा ॥ नेब खवास दास दीवानन,मुनसि मुस्सदी चतुरंग सामा ॥२॥ अंत काल सगरे तजि भागहि,श्रीचंद्र गहु रे चित रामा ॥ देख उपाव रचाइ घनेरे,टार न साकहि रवि सुत नामा ॥३॥१५७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ गोबिंद नाम बिन बिरथे काज ॥ रंग राग रस बडे अडंबर,राम नाम बिन मिथिआ पाज ॥१॥ रहाउ ॥ बन सघनन महि खेल सिकारन,गहिवड़ स्वान सीचाने बाज ॥ ऊचे मंदर गज

गच सेतन,ऊपर बांधी धुजा दराज ।।१।। चित्रित पाहन मूरति चंचल,हीन बसन कंदुक उरु आज ।। पुहप वाटिका चहुँदिसि घेरे,मिस्टि सुगंध द्रिस्टि रस राज ।।२।। दासी दास अंग सिहरावत, अंगराज पट रेसम साज ।। आज मिले कल बिछुरहि श्रीचंद्र,परों लोचते अन सिरताज ।।३।।१५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। इक खिन दुनीआ टिकन न पाई ।। जानिओ जात न कब उपजत भे,रवि ससि उडुमंडल भरमाई ।।१।। रहाउ ।। अनिक जुगन की बात पुरानी,जीव उपाइ विरंचि चलाई ।। उद्भिज चरित लखै नहि जाही,खट मासन भरि थिति कठिनाई ।।१।। सुरसरि जल चल परत सिंधु महि,इकरस कलपन अवधि बिहाई ।। गेड़े गिड़त अथाह सागरै,समै अतीति न गिणती पाई ।।२।। जब ते तन तब ते सासनि गति,करि सुमार सभ रिसि न जनाई ।। चक्र चक्र चक्रयो कुंभारहि,श्रीचंद्र लख चक्र न जाई ।।३।।१५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग गूजरी** ।। करते कुदरत अगम अपार ।। जल तरंग वाह नाले नदिआं,नद सर टोभे सागर

सार ॥१॥ रहाउ ॥ सिकत कनूके थल सिर भारी,दरिआ जीरे गनत न पार ॥ जंतन रोम कहो किहँ भाखे,बन पातन भी है भरमार ॥१॥ चंड प्रचंड कितक भव माही,फुलिंगन विस्व करो निरधार ॥ गुणी गुणन गुण भेद न पायो,अंगुल ठोक जंत्र की तार ॥२॥ जहाँ बुद्धि तहँ सुधि न काई,सुधि बुद्धि हीन निहफली कार ॥ गहिर गंभीर अथाह अगाहे,श्रीचंद्र लख कोटि जुहार ॥३॥१६०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ बखसणहार गोबिंद गुरु मेरा ॥ राम नाम दीनो रिद मंतर,अघ ओघन का छांटिओ डेरा ॥१॥ रहाउ ॥ मद माया की त्रिसन घनेरी,आसा कोट चोट दै तोरा ॥ अनिक पाताल आकासी धातो,सत्गुरु सबद लिआयो मोरा ॥१॥ चितवत परधन हिरन उपायन,पायन परसत निज तज छोरा ॥ कसमल तीरथ जल बोरन हितु,रहिओ न कछहुँ मुझ पै भोरा ॥२॥ हउमै धरति करत कतलामा,तिआग परायो तुपकन घोरा ॥ त्रिपति न नैन रूप रंग राते,श्रीचंद्र बिन रूपहि जोरा ॥३॥१६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। बिन गोबिंद अवर नहि दूआ ।। किआ किछु करौं काहुँ पै छप करि,करता पुरुख थिरो मन कूआ ।।१।। रहाउ ।। महा अघन किहँ ठाँ गुपतै रचि,जां के भीतरि विआप न हूआ ।। सप्त पातालन लूक कमावै,प्रगटत धरनि अकास अकूआ ।।१।। अघ ते अघी पुन्य ते पुंनी,करम कुकरम सु धरमी बूआ ।। मसतक लेख लिखत नित हरि प्रभु,विस्व पठित बिन पंडित रूआ ।।२।। जपु नाराइण गहिबर बनहर,पात पात लखहैं अनसूआ ।। निसचय राम नाम रति एकहि,श्रीचंद्र भव भाव जनूआ ।।३।।१६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अंत न होवत कोऊ सहाय ।। जब ही बिपत आइ भव प्रबली,मात पिता सुत दार पराय ।।१।। रहाउ ।। खावण पहिरन के वणजारे,साक संबंधी सुहिरद सभाय ।। जित दिन मिलै नहीं कछु तिनि कौ,मूतत चूल्हे लाज तजाय ।।१।। मनमुख ते फल गंद पाइऐ,खाधा पैधा बहै नदाय ।। संग नीच ते पद नहि ऊचा,करि करि जतन रहहि पछुताय ।।२।। साधु संग हरि हरि जप प्रगटै,

सांति सहिज अंतरि सुखदाय ॥ अउघट घाट बाट दुखदाई,श्रीचंद्र सिमरौ हरि राय ॥३॥१६३॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ जहां न होवत कोऊ सहाय ॥ तहँ नाराइण को इक नामा,अपने जन कउ लेत बचाय ॥१॥ रहाउ ॥ सस्त्र अस्त्र चहुँदिसि घन बरसत,भूत ईंट सम लगन न पाय ॥ रामकार के घेरे भीतरि,डाकिणि साकिणि बीर न जाय ॥१॥ अभिमंत्रित कर कोट रचायो,तीर तुपक किउं कर प्रविसाय ॥ मूरति पाहन धनुस चढ़ायो,दुस्मन हुटे मूँह की खाय ॥२॥ मनमुख सेना सेनापति बिन,गुरुमुख गोबिंद द्रिस्टि धराय ॥ अत्रपत्र सिर संतन दीनो,श्रीचंद्र जै जै मुख गाय ॥३॥१६४॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ परमेस्वर की सभ थां जीत ॥ का जानो किछु करते कीनो,दुस्मन दूत भए भै भीत ॥१॥ रहाउ ॥ अजगैबी अनि चंड प्रचंडक,काम क्रोध गढ़ लीनो जीत ॥ अहंकारी की जड़ पुट डारी, खारे सागर काल अतीत ॥१॥ आपै आप सहाई होआ,आदि जुगादी संतन मीत ॥ दुस्ट दूत पचि मूए सगरे,परत तुसार अकासी सीत ॥२॥ निहचल आसन अबिचल राजा,दहदिसि जा को गावत

गीत ॥ निरभै होइ सिमर भगवानै,श्रीचंद्र गरबी हरि नीत ॥३॥१६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ दहदिसि घोर घटा घन जोग ॥ अगन अस्त्र बरसत ओरन सम,झुलसत भुलसत रंक सु लोग ॥१॥ रहाउ ॥ तड़ तड़ तड़िता कड़कत दुबिधा,कोऊ थान न बैठन होग ॥ गए बिहाय मरे पर पाछै,दंभी प्रगटै भोगत भोग ॥१॥ कल पसार मुख कच छूटै वर,बिचरत खावन हेत अजोग ॥ देत किलकटी काली धाई,लंकुड़ व्रित भैरवी सोग ॥२॥ दाढ़न दैत्त चबावति दुरगा,नगन अंग मेचक संजोग ॥ चंड प्रचंड अखंड चड़ी भव,श्रीचंद्र गन जंतु विजोग ॥३॥१६६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ हरि हरि नाम सिमर मन माहि ॥ बडो अडंबर बाघ बघंबर,अंत संग कोऊ नहि जाहि ॥१॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबंधी,सैन साक सभ भाग पराहि ॥ पहिरन खावण भोग बहानै,धन छीनन की निसदिन चाहि ॥१॥ कब मरहै ह्वै खाली विहड़ा,लंमी सिर धरि सोइ हैं बाहिं ॥ जीवत बैठो मल कर धरनी,जूह निदानी बुइ हैं वाहिं ॥२॥ घर महि कंचन मुहरां दाबी,

मरै काढ कै भोग भुगाहि ।। देख बिचार सोच नर जिअ महि,श्रीचंद्र को तेरो नाहि ।।३।।१६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। दुनीआं के अंदरि बड पोल ।। मुख पै मीठी मीठी बाते,अंतरि बिखिआ राखी घोल ।।१।। रहाउ ।। सुनते धुनि मोहित सभ नगरी,पेखिओ निकटि ते खाली ढोल ।। आपद जान पीठ दे भागत,मल मल डारत पग पग रोल ।।१।। बंदसाल कै जामन ह्वै है,जब ही संपति ह्वै है कोल ।। जब जानै अब मांगहि हम ते,पै हैं नही रहहि धर टोल ।।२।। जब लौं हाथी मंदर घोड़े,तब लौं पास बहालहिं बोल ।। चेत अचेत मूढ़ मन मेरे,श्रीचंद्र हरि नाम अलोल ।।३।।१६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। औखै वेले कौन सहाई ।। दुनीआं के सनबंधी जेते,बिपत देख सभ जात पराई ।।१।। रहाउ ।। सुख मे घेरे रहत चुफेर,साक सैन सुत बंधप भाई ।। वस्तु बिनासी संगी भागे,नेड़े आवत बापु न माई ।।१।। पहिरण खावण के वणजारे,दुख समै लखि पीठ दिखाई ।। करम न धरम झूठ उर गाढा,लंपट लोभी काम लुभाई ।।२।। कूड़न कूड़ी प्रीति जनाई,ठगणहारी विऊँत बनाई ।।

रे मन भजि गोबिंद गुपालहि,श्रीचंद्र जोऊ साच सखाई ।।३।।१६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अनहोणी नहि कबहूँ होइ ।। करते पुरुख जोऊ लिख राखा,निहचै ही वरतेगो सोइ ।।१।। रहाउ ।। पारब्रहम जो पूरब लिखिआ,पच्छिम जाइ न साकहि कोइ ।। जे निरधनता परारब्ध महि,नर गण भव किमि धन संजोइ ।।१।। जौ पातसाही तखत बिराजन,भाजन भिखिआ नाहिन लोइ ।। जिहँ भोगन रसकस मद आमिख,साक न भोगहि प्राण विगोइ ।।२।। नर जिहँ राति दिवस भ्रम भ्रमणो,एकासन अविचल न थिरोइ ।। संतन की सुनि साची बाणी,श्रीचंद्र नित राम रमोइ ।।३।।१७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साधु संगि जपीऐ सद राम ।। हरि दरगह मुख ऊजल होई है,मंगल खेम सहिज सुख धाम ।।१।। रहाउ ।। अनिक जनम जोनिन लख भरमण,छूटि आनंद लहहि बिस्राम ।। हउमै खोइ सांत पद वासा,भटकण दुआर दुआर तजि धाम ।।१।। दुस्मन दूत न कोऊ दीसत,सगले मीत पुरुख

अरु बाम ।। एकंकार सरब महि रविआ,नाहिन ऊनउ कौनिहुँ ठाम ।।२।। घर बाहर खंडी ब्रहमंडी, सदा सच्चिदानंद घनस्याम ।। सभ प्रतिपालक सभ का मालक,श्रीचंद्र गोबिंद गुण धाम ।।३।।१७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभु बिन आन न मांगण जाउं ।। जहँ जहँ सिमरी तहँ तहँ हाजर,सगल जना हरि भोग भुगाउं ।।१।। रहाउ ।। साल तमाल जाल विस्तारे,फल फुल संजुत ठंडी छाउं ।। हस्ती सिंघ बाघ कपि भालुक,कंद मूल चुणि अग्र टिकाउं ।।१।। बिखधर महि अम्रित प्रगटायो,मयाधार मूओ जीवाउं ।। तुंमे नीम अमर फल देवत,जिंन भूत नित सेवत पाउं ।।२।। अचल चलाए थल सिर जल करि,उजड़ थेह बसाए गाउं ।। चेत चेत चित अच्चुत क्रिपाला,श्रीचंद्र अनुदिन रहसाउं ।।३।।१७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हरि जू,मै जन सरणि तुमारी आया ।। दूख भूख त्रिसना सभ चूकी,राम नाम हरि

गुण निधि पाया ॥१॥ रहाउ ॥ मिट गई आसा बहु परकारी,एकंकार गुबिंद धिआया ॥ मनमोहन नाराइण मिलिओ,आनंद मंगल सहिज समाया ॥१॥ कोटि सूर दहदिसि उजिआरा,अंधकार सभ दूरि पराया ॥ सीतल मंद सुगंध बिआरी,ससि प्रगटिओ नभ अमिय चुआया ॥२॥ त्रिकुटी छूटी खुले कपाटा,जोती जोति मिली रस छाया ॥ आधि विआधि उपाधि विनासे,श्रीचंद्र हरि चरण समाया ॥३॥१७३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ तुमरी महिमा अपर अपार ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र सूरज ससि,कहि कहि सरणि परे हरि दुआर ॥१॥ रहाउ ॥ विआस परासर नारद सारद,बकदालभ सिउं जोगाचार ॥ गिआनी धिआनी परम मुनीसर,जैनी बुद्ध सिद्ध अवतार ॥१॥ पीर पैगंबर वली गौंस लख,देव दैत्त नर के आकार ॥ जल पवनै अगनी आधारित,कलपन लौं थित पग इक सार ॥२॥ ऊरध बाहु जटा जूटन धरि,लटकत अधो भए सिर भार ॥ अगम अनंत अथाह सुआमी,श्रीचंद्र नहि पायो पार ॥३॥१७४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभु ते नाहिन कछहूँ छानी ॥ घट घट पट पट भीतर रविआ,अंतरि बाहरि सभ बिधि जानी ॥१॥ रहाउ ॥ किआ को तिसते लूक कमावै,सगरो भव जा की रजधानी ॥ जल महि जल थल महि थल सोऊ,पवन पवन महि अन न कहानी ॥१॥ जीव जीव अपने महि लाखत,पावक पावक रूप समानी ॥ आपन आप न आप लुकावत,अनहद सबद रटत सद बानी ॥२॥ कण रेणी वण त्रिण दल फल फुल,साख कांड कर ब्रिख महानी ॥ पारब्रहम परमेस्वर आतम,श्रीचंद्र रम रस रंग मानी ॥३॥१७५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ बिनति सुनहु प्रभु दीन दयाल ॥ हम निरगुण मति थोरी राखत,निज जन जान करहु प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ तुमरी सेवा तुम ही जानहु,अगिआनी किआ जानहि बाल ॥ जपु तपु संजम कछू न साधा,घाली नाहिन भगती घाल ॥१॥ चल पैरीं तीरथ नहीं परसे,धाम तुहारे नहि पग डाल ॥ मारग संत न हिरदै द्रिढ़िओ,चाली नहि अधिआतम चाल ॥२॥ अवगुण कोटि भरे मन

भीतरि,जनम अनेकन लागी काल ।। बखस लेहु अपने जन जानी,श्रीचंद्र देहु आसरा लाल ।।३।।१७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। तुमहि भरोसे आहर करिआ ।। कछू पदारथ हम पहि नाही,निरजन थान रहउ निरवरिआ ।।१।। रहाउ ।। लोक पचारा आवत नाहिन,मुख मीठी गिर बोल न सरिआ ।। साह पातसाहन के दुआरन पहि,धन हित उर नहिं जरिआ ।।१।। कुलहाड़ कुदाल न तंगुलि लांगुल,जै है बोहल कैस उडरिआ ।। कर पग द्रिग घ्राणन स्रवणन बिन,तिन कौ भी तू ही प्रतिपरिआ ।।२।। मारग बिन पाहन के चीटे,भोजन देवन कै परवरिआ ।। माधव कारज करबे हेते,श्रीचंद्र गोचर भा खरिआ ।।३।।१७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। राजन राज गरीब निवाज ।। सिर पावन तन नांगे जग महि,लज्जा राखत श्री महाराज ।।१।। रहाउ ।। संगी साथी साक बिना जन,सभ बिधि सकल सवारहि काज ।। बिन आधार गहिर बन बासी,पति आदेस सिंधुजा साज ।।१।। अथाह अगाह गंभीर सललपति,बे खेवट किअ

पार जहाज ।। जेठ घाम औड़ अति भीषण,बरखा कीनी वारिद राज ।।२।। महारंक नहि गाँठि विराटिक,धनद किए नउनिधि इंदराज ।। पातसाहां सिर साचा साहिब,श्रीचंद्र की राखहि लाज ।।३।।१७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अति चिंता की घूमनघेरी ।। पूरन पारब्रहम परमेस्वर,पार करबि बेखेवट बेरी ।।१।। रहाउ ।। दहदिसि पवन बहे बहु तीछन,ऊची मौज उठति भव केरी ।। गए मलाह पराय जिअ लै,चप्पू बाँस बहे बिन देरी ।।१।। एकल मैं ही रहिओ भीतरे,निकटि न अपर परति कोऊ हेरी ।। डक डोले खावत गहिरे जल,संनिद्ध मरणे काल परेरी ।।२।। द्रिस्टि न आवत कोऊ कंठा,धीरज छूट गई सभ मेरी ।। हे भगवान,मया घर आवहुँ,श्रीचंद्र कऊ आसा तेरी ।।३।।१७९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जहां न कोऊ होत सहाय ।। करुणा निधान दया के सागर,तहँ जन अपने आप बचाय ।।१।। रहाउ ।। दारा मीत सुता सुत नाती,साक संबंधी धन के दाय ।। बिपति परी सभ ही

तजि भागत,पूछन निकट न कउ दुख आय ।।१।। इक मरतो दूसर लख लूटत,विसमय भयो विसमता भाय ।। बहिओ प्रवाह म्रितु कउ प्रबलो,पेखत चाखत चीत न पाय ।।२।। कपिनी सुत तपते बारू महि, पग तल दाब न रहम कमाय ।। नाराइण गोबिंद गुपाला,श्रीचंद्र पर द्रिस्टि धराय ।।३।।१८०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सरणि राख प्रभु दीन दयाला ।। हम ते कछु होइ सकत नहि,अपनी ओर निहार गुपाला ।।१।। रहाउ ।। जपु तपु संजम कछू न साधा,नाम तुहारो रटिओ न माला ।। दुस्टन संग रहिओ निसि बासुर,मूल न भगती घाली घाला ।।१।। काम क्रोध अहंकार विगूता,पाप बिखै मग चाली चाला ।। कवण बुराई जो मुहि नाही,किहँ मुख बिनति करौं नंदलाला ।।२।। निहार बिचार जबहि उर पेखौं,दहदिसि पसरिओ काला काला ।। मधुकैटभ मरदन गिरिधारी,श्रीचंद्र पकड़िओ तुहि पाला ।।३।।१८१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। कोऊ उपाउ न सूझत मोही ।। अघ ओघन दहदिसि घिर राखिओ,फेड़ गेड़ पड़ि देउं न

दोही ।।१।। रहाउ ।। परनिंदा रत निसिदिन बीतत,साधु संगत को महान द्रोही ।। माया मल लागी मन काला,किसहूँ भांति न जानिओ तोही ।।१।। लोभ लहर लग धन हित भागिओ,रूपवंति परदारा जोही ।। दया मया को ठाउं न कोऊ,जीव जंतु कर करदन कोही ।।२।। सिर बुरिआईआं को गढ़ दुरगम,इक मेरा ही ठग ध्रोही ।। हे मायापति जन प्रतिपालक,श्रीचंद्र चितवो बिरदो ही ।।३।।१८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। अघ ओघन घट घिर घहिराई ।। बिखै उपल सभि ओरन बरसत,महाकलंक चोट सिरलाई ।।१।। रहाउ ।। अंधी परजा गिआन विहूणी,खेती फलित सरब नस्टाही ।। अंन धन ग्रिह भीतरि नहि आयो,हाइ हाइ की बाल दुहाई ।।१।। जीवन जन गन चिंता रोजी,उदर हेतु बहुबिधि भटकाई ।। द्रब्य खसोट हतत नर नारी,तसकर काली राति चराई ।।२।। वढ्ढी बिन नहि राजे सुनहै,बिल बिलापती सकल लुकाई ।। पारब्रहम परमेस्वर माधो,श्रीचंद्र कित रहिओ छपाई ।।३।।१८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || कुत्ते मूँह कलि आयो घोरा || जटा जूट सिर डार विभूती,अंतरि लोभ बिखै झकझोरा ||१|| रहाउ || तन सगरे पर रोम न कोऊ,पावक काम जरित मन कोरा || भगवा पहिर भगवत बन बैठो,सभा कामिनी रस चित्त बोरा ||१|| सासत्र वेद पुराण बखानै,सुआन हेत दूकन चलि जोरा || एही धाम तीरथ इह न्हावहु,बक बक चाहत द्रब्य बटोरा ||२|| काले मंत्र जंत्र काले लिखि,काले लेख बनाइस मोरा || करुणामय गोपाल गोबिंदा,श्रीचंद्र कऊं देहु दर धोरा ||३||१८४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || अंध धुंध वरती चहुँ ओरा || रात्रिकाल महाँ अंधिआरी,कहूँ न चानण दिखिअत भोरा ||१|| रहाउ || राजे प्रजा लड़ावत आपहि,आपहि मेल करावत जोरा || आपहि धन दे मंदिरा थापहि,आप बेअदबी हित चित लोरा ||१|| आपहि हिंदू तुरक बनावत,आपहि करत विवाह अजोरा || आपहि राजे तसकर साजहि,आपहि वरजित चढ़ कर घोरा ||२|| आपहिं सभा समाज

हितैसी,आपहि सभा समाज बिछोरा ॥ करणहार करतार क्रिपाला,श्रीचंद्र चितवै किहँ ओरा ॥३॥१८५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ कहहु काल ते किमि करि बाचहिं ॥ परबत काट गुफा रचि बैठो,बज्र कपाट जड़े द्रिढ़ साचहिं ॥१॥ रहाउ ॥ परी भीड़ बन की उठि भागिओ,कांटन बदरि आस्रम ढाचहिं ॥ चहुँदिसि जल महि मंदर पाके,पैठ अनंद किओ मन माचहिं ॥१॥ सप्त कोट खाई सातन महि,कीन निवास महिल रच काचहिं ॥ जहँ तहँ काल धरि क्रिपान कर,अग्रज ठाढि चहित नर पाचहिं ॥२॥ पाहन ब्रहमा बिसनु स रुद्रहि,हेतु उबारन कै न उबाचहिं ॥ महा मूढ चित बूझ न पावहि,श्रीचंद्र निरतत करि नाचहिं ॥३॥१८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ भागत मूढ़ काल ते कहा ॥ कवन थाउं जहाँ नहि मरहैं,कवन देस को कुंटहि लहा ॥१॥ रहाउ ॥ जा के अग्रज माथो रगड़त,तेऊ काल बसि होए महा ॥ सूरज चंद्र सुरेस गणेस

जलेस,महेस फणेसहि दहा ॥१॥ कहाँ गए सभ पीर पैगंबर,गौस कुतब को द्रिस्टि न पहा ॥ भरत रु प्रिथु नल पंडु कौरव,गौरव जिनहि जात नहि कहा ॥२॥ भागै भीरु बीर नहि छोडै,होडै हुडत न नीतिक नहा ॥ महा मूढ भै भीत चीत महि,श्रीचंद्र सनमुख जूझ रहा ॥३॥१८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ प्रभ जु,कीने नाहिन पंथ ॥ उदर भरन हित दंभी लोगन,प्रभू भजन तजने की संथ ॥१॥ रहाउ ॥ सास गिरास सिमरन आदेसै,तजि करि काँच बंधायो ग्रंथ ॥ कवन जीव जु हरि नहिं कीना,किउं करि लायो जल कै मंथ ॥१॥ तुरक कउन असमानो उतरो,हिंदू कवन अवीरज तंथ ॥ पाहन देवन किहँ कर ऊचै,दीनी कवन वस्तू कबरंथ ॥२॥ भरम भुलाने मूढ़ दिवाने,पहिर बसन मानै मुख पंथ ॥ ऐ मुग्धे,तन धरणी पर है,श्रीचंद्र मग प्रभ सिमरंथ ॥३॥१८८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ पारब्रहम महि बंधु न कोऊ ॥ दुस्ट विगारे महा हतिआरे,हिंदू मुसलिम थापै

दोऊ ।।१।। रहाउ ।। बौधी जैन शैव वैसनव की,संगिआ रचि दंभ दिअ ढोऊ ।। ठाठ बाठ करि काजी ब्रहमण,जंग रंग दुंदभि घोखोऊ ।।१।। स्याम स्वेत हरि पीत धूम्रन,पहिर बसन रणखेत रचोऊ ।। काम दुस्ट अरु नाम साधु लखि,अचरज मान नाराइण होऊ ।।२।। हत नर चहित मोख निधाना,कहहु नरक तब लहि है कोऊ ।। भव भूले हरि जानहि नाहिन,श्रीचंद्र सभ जौन संजोऊ ।।३।।१८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। थीयो बडो कसंमल कोइ ।। अद्वय ब्रहम ब्रहम मुख भाखत,नर गन हतत दया दिय खोइ ।।१।। रहाउ ।। हित रखिआ जेऊ भुजा उचावत,बक बक भव द्रिग दीन बिगोय ।। महा अनाथन लूटत मारत,लिंग सैल लख भोग भुगोय ।।१।। गोर मड़ी रचि कूड़ कमावहि,खाइ सरीनि निहचंतै सोय ।। रख्यक भख्यक तीरथवासी,मक्का अपर मदीना लोय ।।२।। अघ गढ़ सुरसरि बेणी जमजम, किमि करि पापन सकहैं धोय ।। धरणि पुकारे प्रभु दर ठाढी,श्रीचंद्र को साधू ढोय ।।३।।१९०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पारब्रहम को बडो प्रताप ।। कोटि सूर सम पहुँच न साकत,दुतिय न भासत दीजै थाप ।।१।। रहाउ ।। सुर नर देव असुर गन जेते,ऊपर नैन न साकत झाप ।। सिर साहन के साचा साहिब,चरन कमल नासत त्रै ताप ।।१।। लाख आकासन ते अति ऊचो,लाख चंद्र वर सीतल ध्राप ।। लाखों इंद्र उपिंद्र मुनिंद्र,न त्रिपतति जपत अजपा जाप ।।२।। चौदह लोक भुवन त्रै जंतुन,मयाधार कर देवत आप ।। महाराज राजन सिरताजा,श्रीचंद्र सभ रहिओ सु विआप ।।३।।१९१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साधु सरोवर मज्जन कीजै ।। राम नाम निरमल जल पूरन,डुबकी ले अंतरि मल छीजै ।।१।। रहाउ ।। पाहन हुँ ते महा कठोर मन,निमख माहि मोमहुँ नरमीजै ।। दावा दिब्य जठर त्रै पावक,निवरि सीत मंदर थिर थीजै ।।१।। मिलत विमान इमान घनेरो,सरब लोक चल दरसन दीजै ।। बिन पंखन के सैल समूह,सुपंख धार सुरपुर गमनीजै ।।२।। पंगु चरण अंधे कै द्रिग वर, बहिरे करण अजीवन जीजै ।। सदावरत लागो मन मूढ़े,श्रीचंद्र रस अमिय पिवीजै ।।३।।१९२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पंथ बनावत मूढ़न लोग ।। जटा जूट तन भसमि रमावहु,दीरघ नखन अपावन भोग ।।१।। रहाउ ।। पारबती रितु रंगे बसनन,पहिर लखावत बाणा जोग ।। विजिया चरस गलोले आफू,मद रस मत्त न विआपत सोग ।।१।। मल मूतर यूका तन धारउ,हरिपुर प्रविसत अटकन होग ।। लिंग दराज नगन होय बिचरहु,नाम धरम उपहासी लोग ।।२।। त्रिपति न पावत वीरज खावत,कंथा चीर मलीन संजोग ।। एऊ जे मारग बैकुंठहि,श्रीचंद्र को नारक जोग ।।३।।१६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। भूले नर तन बेख मझार ।। लंबी दाढ़ी झँबू झाड़ी,बधिक बाध लगायो जार ।।१।। रहाउ ।। दीरघ चोला चहुँदिसि झोला,व्रित अखाड़े वेस्या नार ।। उरध त्रिपुंडी तिलकन मुंडी, तुलसीमाला लिअ गल डार ।।१।। पंचाग्रित टुक टुक वरतावत,मस्तक भसमि रचाई धार ।। अगिआनी गादी थिर ऊची,गुरु बडो भव कलि आचार ।।२।। डोम रबाबी भाट मिरासी,राग रागनी विरदोचार ।। श्रीचंद्र हरि राम नाम तजि,बिन संजम बहि काली धार ।।३।।१६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रेम पंथ पायो नहि प्रानी ।। दंभ लागि सभ अवधि बिताई,सूझ न सूझी अकथ कहानी ।।१।। रहाउ ।। लोभ चीत तीरथ अठसठ महि,मल मल नहायो निरमल पानी ।। परधन परनारी रति लागै,मुख मीठी अति भाखी बानी ।।१।। साधु संग नहि सेव कमाई,भगति छाप करि धरी निसानी ।। मन कठोर हरि नाम बिहूना,भेदे नाहिन पाहन पानी ।।२।। त्रिसना काम अगनि का जारा,सीतल होत न कतहूँ थानी ।। संत संग जप गुरु गोपालहि,श्रीचंद्र रंग रउ असमानी ।।३।।१६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। काहे जनम अकारथ खोत ।। राम नाम बिन अभिमानै रति,अति ऊचौ जानत निज गोत ।।१।। रहाउ ।। कामिनि सर कामनि जल पूरन,दिओ बहाइ मानवी पोत ।। कोसन लौ चलि साथ गयो है,ह्वै निसचिंत रहिओ पर सोत ।।१।। कूड़ पदारथ संचित स्वारथ,आग लगी ग्रिह कूपहि खोत ।। जिनि सिउं राचि माचि चित लायो,तजहि अंतु सभ नाती पोत ।।२।। खावन चहित खजूर दाख वर,

तौ काहे तरु बबूरन बोत ।। साध संग गोबिंद रंग रंगे,श्रीचंद्र लहि जोती जोत ।।३।।१९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। पार लगावहु हे करतारा ।। जान सुखाला कदम धरिओ था,जा परिओ जहँ सागर खारा ।।१।। रहाउ ।। ग्रिह तजि बनवासा रचि रहिओ,मन बूडिओ जल महा विकारा ।। पंचाग्नि तापत हति पंचन,मारत मो को गहि तरवारा ।।१।। होइ इकांत द्रिग मूँद धिआनी,अग्रज पेखउ नारि सिंगारा ।। जिहबा बोल न भाखउं किहँ सिउं,क्रोध चढ़ायो नैनन तारा ।।२।। अब सूझत नहि दाव सु कोऊ,जाते ह्वै है पार उतारा ।। तुम बिन का पहि करउ बेनती,श्रीचंद्र नहि सुनने हारा ।।३।।१९७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। परिओ असमंजस महि भारी ।। पारब्रहम बिन रूप स्थित है,धिआन धरउ किहँ भांति निहारी ।।१।। रहाउ ।। निरतन परमेस्वर प्रधाना,किहिं बिधि सेवा होहि तुमारी ।। पग बिहून भगवान गोबिंद है,किमि सहायता हेतु पधारी ।।१।। कर नाहिन हरि करते केरे,दान देत किमि स्रिस्टि अपारी ।। बिन नैना करुणामय प्रभ जू,करम सुकरम पेखि निरधारी ।।२।। सरब धरम ते

रहित मुरारी,भेटैं कैस धरम धुर धारी ॥ जो जानै सो होइ नहीं वह,श्रीचंद्र कउ पंथ दिखारी ॥३॥१६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ किहँ बिधि पार उतारा होइ ॥ साच पंथ उर जानउ नीका,कदम न चाल सकउं इक दोइ ॥१॥ रहाउ ॥ माया झूठी मैं लखि लीनसि,तिआग न होवत जतन विगोइ ॥ जानत हउ बिखअन संग खुआरी,तऊ बिखै ही चितवनि लोइ ॥१॥ करम न पहुँचित प्रभु निरबानी,कबहुँ करम न दीनै खोइ ॥ मन तरंग सागर अति गहिरा,मन तरंग ही निकसन जोइ ॥२॥ जाको आज लखउ ब्रहम गिआना,वही काल अगिआन विलोइ ॥ घूंमनघेर अथाह गाखड़ी,श्रीचंद्र निरवारउ कोइ ॥३॥१६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ तुमरी गति प्रभु लखी न जाई ॥ न सरूप भी तेरो कहिअत,है तुमरी ही भी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ सूछम ते सूछम करि वरणत,बिरधन बिरध भि कहिओ सुनाई ॥ व्यक्त

कथित तुमरो ही विग्रह,अनव्यक्त करि तुमहि लखाई ।।१।। पुन्य अपुन्य कुकरम सुकरमी,धरम अधरमी तुमहि बताई ।। माय अमाय गिआन अगिआनहि,काम अकाम क्रोध सांताई ।।२।। अप्राक्रित प्राक्रित अपरमित,परमित रंग अरंग जनाई ।। बोल अबोलहि द्रिस्टि अद्रिस्टिहि,श्रीचंद्र सिमरत बिगसाई ।।३।।२००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। दास अपने को संग सखाइ ।। जलती अगनि आप निरवारे,घन घनहर घट घिर बरसाइ ।।१।। रहाउ ।। पाथर ईंट दुस्ट कर धारे,मूरति पाहन से थिर थाइ ।। तोप तुपक चलि गोरा गोरी,रामकार महि नहि प्रविसाइ ।।१।। आदि जुगादि सदा सुखप्रद,हेतु प्रहलाद थंभ ते आइ ।। बनवासी पांडव संपद बिनु,हितु गोबिंद कौरव रण घाइ ।।२।। सागर गहिरे बूडत बोहिथ, होइ मलाह प्रभु पार लगाइ ।। अम्रित करत हलाहल घोरा,श्रीचंद्र निज कल वरताइ ।।३।।२०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हे प्रभु,आप लखावहु बाट ।। नाम तुहारो निसदिन सिमरहुँ,कबहुँ भरोसा होइ न

घाट ॥१॥ रहाउ ॥ केता हूं संकट सिर आवै,तुमरा दिआ तजउं नहि ठाट ॥ अणहोणी निंदा निंदक की,सुन करि मुहि मन होइ न उचाट ॥१॥ मनमुख संगति ते गुरु गोबिंद,तन आपन कऊ डारउं छाट ॥ अहनिसि गुरुमुख दरसन दीजै,सीस धरउ पग रज मुख चाट ॥२॥ जत सत संजम धरम करम मै,दंभ न आवै नट करि नाट ॥ दीन दयाल गुपाल मयानिधि,श्रीचंद्र कउ राखहु डाट ॥३॥२०२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ साधन बिनती बिना कछु नाहि ॥ जपु करतो जपसी थक परतो,तप रति तपसी हार पराहि ॥१॥ रहाउ ॥ अखर टूट जात मंत्रन सिउं,लिख जंत्रन थाके परवाहि ॥ तंत्रन ढूँढ चूँडि सिर लीनो,सिद्ध न होवत जनम गवाहि ॥१॥ करम करतहुँ बिघन अनेका,जाचक जाचा को परवाहि ॥ धरम महा डूँघा जलपति सर,पार न पावत जे चल जाहि ॥२॥ गिआन धिआन संजम सभ नेमा, कूड़ि विगूते रहि अध माहि ॥ करुणानिधि भगवान बीठले,श्रीचंद्र की गहिओ बाहि ॥३॥२०३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ अपने प्रभु पहि बिनउ बखान ॥ बिघन विनासक जप के आदियू,अंत पाक सुभ

करती दान ॥१॥ रहाउ ॥ पठिन पाठ विद्या वेदन महि,चिंत ग्रस्त नहि होवहि हानि ॥ कुंठित बुद्धि मानुख तन माही,पहुँचि न साकत पूरण गिआन ॥१॥ है तो अंतु मानवी चित व्रिति,सूछम ते सूछम रत धिआन ॥ वाक्य वाक की करुणा चाहत,होइ न भंग कहूँ कित मान ॥२॥ तीरथ वरत सील संतोखहि,करम धरम सत दया निधान ॥ पूरण परमानंद मनोहर,श्रीचंद्र रख्यक भगवान ॥३॥२०४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ जपु तपु संजमु कछू न साधा ॥ धन लोभै लगि बिचरिओ निसदिन,जंतन अधिक पहुँचाई बाधा ॥१॥ रहाउ ॥ पाप विकार बिखै रस मातो,तेली बलद दार रजु बाधा ॥ कूड़ कमाई नित्त कमाई,मनमति सागर परिओ अगाधा ॥१॥ कौड़ी दान न रंकहि दीनो,न्हाइ निवारत आधि सु विआधा ॥ धरम करम को मारग भूलिओ,भरम भुलाना करमन बाधा ॥२॥ साधु संग बिस्राम न उपजिओ,राम नाम हरि मन न अराधा ॥ जिउं जानहु तिउं बखसन कीजै,श्रीचंद्र गोबिंद पति राधा ॥३॥२०५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। भव भीतरि सुख है किहँ ठाउ ।। हिंदू दुखीए मुसलिम दुखीए,घर घर पेखिअत सगले गाउ ।।१।। रहाउ ।। रोग ग्रसत महाराजे दुखीए,पिता पूत बंधुप हत चाउ ।। भरता दुखीआ नारी दुखीआ,सुख हित बैठे घात लगाउ ।।१।। पढ़त कुरानहि मुल्लां दुखीआ,दुखीआ पंडित वेद विदाउ ।। दुखीए जोगी जती तपीसर,दुखीए जपी जपत हरि नाउ ।।२।। दुखीए तीरथ वासी बैठे,छप्पर पल्लव तरु करि छाउ ।। तन दुख मन दुख धन दुख कारण,श्रीचंद्र सुख भूल भुलाउ ।।३।।२०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। किउं भूलो सुख हेतु अयानो ।। दुखी मुहम्मद मक्का तिआगिओ,मरण परयंत न लहिओ ठिकानो ।।१।। रहाउ ।। दुखी हुसैन पिआसा मूआ,दुखीआ हसन हलाहल पानो ।। पीर पैगंबर वली मीर सभ,सैयद भी दुख करत बखानो ।।१।। दुखीआ रामचन्द्र बनवासा,सीता दुखीआ

महिल बिहानो ।। दुखीए कौरव पांडव गोबिंद,रावण कंस जरासंध जानो ।।२।। दुखीए कच्छप मंदर धारिओ,दुखीआ सेस सीस धरि धानो ।। जो आयो भव महि सो दुखीआ,श्रीचंद्र किहँ काज हिरानो ।।३।।२०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु पूरे दीनो नाम ।। जपु जपु जाप सहिज सुख पाइऐ,आगै दरगह आवहि काम ।।१।। रहाउ ।। सगल विकार जाहि मन केरे,होइ निवासा अबिचल धाम ।। माया मैल जनम जनमांतर,धोइ निवारत निरमल राम ।।१।। एका मूरति सगले भुवनी,पारब्रहम परमेस्वर स्याम ।। सगरे जिअ जंतु तिसु केरे,पूरब पच्छिम विआपत आम ।।२।। दूजा कोऊ न सूझै प्रानी,जाइ माइ थाप इक ठाम ।। सदा अनंद मनहि परगासा,श्रीचंद्र रस अनुभव ताम ।।३।।२०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मनमुख संग सदा दुख पाइऐ ।। बिख बिखिआ के चाखत चाखत,मरण संनिधि तुरत ही जाइऐ ।।१।। रहाउ ।। म्रिग म्रिगत्रिसना को जल चाखत,भटकत भटकत प्राण गवाइऐ ।।

कोइले के मंदर महि पैसे,बिन कालुख अन किआ वथु पाइऐ ॥१॥ सिर पर कालर बोझ उठायो,जाइ बाजार न दाम लहाइऐ ॥ फंडर धेनु आन घर बांधी,घीउ दूध माखन किमि खाइऐ ॥२॥ रेते केरि दीवारन ऊपर,छात पाइ पावस बितवाइऐ ॥ हरि चंदउरी श्रीचंद्र पिखि, नगर सुवरन न जान लुभाइऐ ॥३॥२०९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ पंडित बोड़ी भारत नाउ ॥ काजी मुल्लाँ वड्ढी खोरे,थिरी कचहरी कूड़ निआउ ॥१॥ रहाउ ॥ कंन पड़ाए जोगी होए,हत्थ खप्पर मंगण के दाउ ॥ तुलसी माला पहिर दिखाई,दाड़ी झाड़ी जाल बिछाउ ॥१॥ रुंड मुंड संनिआसी बणगे,नंग लिंग करन को चाउ ॥ मन ते बिख बिखिआ नहि तिआगी,भए उदासी दुतिया भाउ ॥२॥ माया मुते उदरहि जुते,भरम विगुते नरके ठाउ ॥ भगवन है इकरार तुहारा,श्रीचंद्र कलकी बनि आउ ॥३॥२१०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभु आवनको को है काला ॥ पाप बोझ ते धरणी डोलति,जहँ जहँ होवत महा

भूचाला ॥१॥ रहाउ ॥ बगल किताबहि दाढ़ी काटी,चाड़ी खावत रंकन जाला ॥ मुख ते मीठी वेदन बाणी,धन हित जाचन दुआर भुपाला ॥१॥ तेल डार द्रिग अस्त्रु पातित,प्रेम भगति बदनाम समाला ॥ चेले संग सकेले झूमत,ठूठा हत्थ किओ मूँह काला ॥२॥ कूड़ वपारा कूड़ भंडारा,राजा परजा कूड़ कुचाला ॥ हे गोबिंद दीन दुख भंजन,श्रीचंद्र तजिऐ जल आला ॥३॥२११॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ पढ़ि पढ़ि निसदिन भरम भुलाने ॥ आप न बूझहि लोक बुझावहि,मूरख अंध घोर अगिआने ॥१॥ रहाउ ॥ केते मूंड मुंडाइ तच्छामुच्छ,केते दाढ़ी केसन रोमन हानै ॥ केते जटाजूट नख बाढे,केते तन मुनिपट पहिराने ॥१॥ केते कंठ काठ की माला,केते तिलक छाप रुचि ठानै ॥ केते स्त्री वेस सिंगारित,केते लाल पीत पट मानै ॥२॥ केते न्रित नाट करि गावत,ताल म्रिदंग तूरान बजानै ॥ अवरन सो किमि पंथ दिखावहि,श्रीचंद्र जिनि द्रिग न लहानै ॥३॥२१२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ गोबिंद नाम बिना सभ धंधा ॥ गल रुद्राछ पहिर पट भगवे,ग्रिह ग्रिह जाचत दंभी

अंधा ॥१॥ रहाउ ॥ अधिक बटोरे चेले बारक,चालिओ गुरु हित छंदा बंदा ॥ रास रचाइ लोग डहकायो,रावण सीता मेली फंदा ॥१॥ राम बनिओ अन काम बिहूना,बुद्धि मलीन माय मति मंदा ॥ जगत ठगत हरि भगति बिहाई,धरम करम तजि भए स्वछंदा ॥२॥ वाट लीन आपहुँ जमपुर की, लिए संग करि कोटिक बंदा ॥ कलि आया उडि धरम पलानो,श्रीचंद्र गुरु अंधी अंधा ॥३॥२१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ साहिब अनिक जनम भ्रम आयो ॥ तन मन धन थिति कहूँ न पाई,तेली बलद चक्र चलि धायो ॥१॥ रहाउ ॥ हसती घोड़े सिंघ सयार कपि,सूकर सुआन माजारी गायो ॥ महिखी अजा गाडर भालुक,म्रिग रोझ झंखार चीत चीतायो ॥१॥ गोध गीध कंक काक कोकिला,सारक सारस सुक चटिकायो ॥ चीटी मसक गरुड़ नागन कुल,नकुल बाघ खटपद झिल्लायो ॥२॥ साल तमाल दरभ दूरबा,बदिरि आमर अणरूख अखायो ॥ हरि सिमरन की बेला नर तन,श्रीचंद्र मुसकिल कर पायो ॥३॥२१४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मूढ़े,फिर पाछै पछुतै हैं ।। पउड़ी छुड़की हाथ न ऐहे,समै गयो किमि करि कर पैहैं ।।१।। रहाउ ।। गिणती नही जेत गए स्वासा,लाख कोटि दै एक न लैहैं ।। ओज तेज बल वीरज शक्ति,चल जैहै कर पग न हिलै हैं ।।१।। बैन अटपटे रसना निकसहि,जल प्रवाह द्रिग नाहि थंभै हैं ।। सिम्रित सगल बुद्धि बिसरै है,कफ कंठहि रूंधो स्वासै हैं ।।२।। सुत दारा मित भाई बंधु,आसा पुरहि न जल ग्रासै हैं ।। हरि के भजन बिहूने श्रीचंद्र,वासा करहैं जमवासै हैं ।।३।।२१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। बिनती हरि प्रभु आगै करि रे ।। पावन पतित पुनीत परमेस्वर,सभ बिधि दैहै सो घर भरि रे ।।१।। रहाउ ।। जा के दान देत न निखुटे,नहि पछुतावै दै रज जर रे ।। देइ न पूछै बहुरि हिसाबहि,ता की आस रिदै निज धर रे ।।१।। दाति समान न ता की पहुँचहि,धरणि सबाई के नरवर रे ।। सुर नर असुर कुबेर सेस लौं,जाँ कौ जाचत लज्जाहर रे ।।२।। अठदस सिद्धी नव ही निद्धी, सदा रहित जाँ के कर तर रे ।। माया पति भगवान बीठुला,श्रीचंद्र सुआमी नरहरि रे ।।३।।२१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जा कै निधि सिधि भरे भंडार ।। तूं ताही की सेव कमावउ,कतही कबहुँ न आवहि हार ।।१।। रहाउ ।। ब्रहमा बिसनु रुद्र ससि सूरज,नारद सारद सुरपति सार ।। जलेस धनेस सेस सुर पुंगव,सभि दर ठाँढे करन पसार ।।१।। रिखिवर मुनिवर विआस परासर,भ्रिगुवर साल अनंत अपार ।। पीर पैगंबर गौस कुतब हर,उलम इमाम मुहम्मद यार ।।२।। वरसावत जा के कर हूँ ते,तौ भी वसतू देत न हार ।। अनिक जुगनि सदाव्रत लायो,श्रीचंद्र अधिकै विस्तार ।।३।।२१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रेम रसाइण जो जन राता ।। साक सैन सुत सुता संबंधी,तोड़ दिओ सभ जग को नाता ।।१।। रहाउ ।। मजनू मजनू काटै परबत,बोलै लैली लैली राता ।। कच्चा घड़ा न जाणै सोहनी, भूलि नदी महीवाले गाता ।।१।। तत्ती रेत पई जा सस्सी,पुंनू पूनमि चंद पछाता ।। हीरे हीरा रांझा लद्धा,साहिबां मिरजा ही इक जाता ।।२।। तन छूटै पर प्रेम न तूटै,दूख भूख महि सहिज समाता ।। बिखिआ अम्रित करत प्रेम इक,श्रीचंद्र पी रस मन माता ।।३।।२१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || पावक प्रेम बली तन जाहि || बंधन सगले तन के जारे,लाट प्रकासी मिथिआ स्वाह ||१|| रहाउ || राज भाग को छत्र सिंघासन,तजि करि गही जंगली राहि || सबर पिआला भरि भरि पीता,अंतरि दुखित न काढी आहि ||१|| भाया मरना परम खुसी चित,ओथे मारे नहि को धाहि || आया स्वाद विछोड़े प्रेमहि,जोड़े महि तरंग के नाहि ||२|| प्रेमी सुरति चढ़ी असमानी,हफत वलायत रही हिठाहि || अनल मुकाम जाहि विचरंतो,श्रीचंद्र चिड़ीआ न लखाहि ||३||२१६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || जिनि जन सहिओ प्रेम को तीर || जपु तपु संजमु तिस ही भीतरि,तन दुख केरी होइ न पीर ||१|| रहाउ || घोड़ सवार दौड़ पुर अगमे,अग्रज निकसिओ सूरा धीर || भव पावक चहुँदिसि प्रचंड महि,सीतल मंद सुगंध समीर ||१|| हरि प्रभु भगति चोलिका पहिरी,नारी निरति किरति रति सीर || पलका पलक न उखड़ी लागी,टकटक द्रिस्टि सु दिब्य गंभीर ||२|| सोवत जागत बैठत उठते,रंग सुरंगिओ मन सुच चीर || वाक्य प्रवाह पाप बहि जावत,श्रीचंद्र भागीरथि

नीर ॥३॥२२०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ परमेस्वर की झलक अथाह ॥ कोटिक करामात की लहिरी,रिद्धि सिद्धि नउनिधि अगाह ॥१॥ रहाउ ॥ जपत नाम दर प्रभु जन ठाढे,धूणा डारिओ तन मल सुआह ॥ दीजै दरसन हे अदरसना,नहीं तु तुव सनमुख मर जाह ॥१॥ केतिक भाणा निज सीसन धर,भूख पिआस न कहूँ जनाह ॥ केतिक हठ करि जाचत गोबिंद,आप देहि तबि डारहि ग्राह ॥२॥ केतिक एक पाउं ऊरध बाह,ठाढे कलप बितावत चाह ॥ क्रिपानिधान जान घट घट की,श्रीचंद्र तोखित हरि नाह ॥३॥२२१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभु मेरे को अखुट भंडार ॥ हाथ जोड़ जाचत जन सगरे,देदे दान न परै सुमार ॥१॥ रहाउ ॥ जती सदावहि जत ही मागहिं,ब्रहमण मांगत ब्रहमाचार ॥ भगती भगत करत दिन राती,गुणनिधान गुण ऊच अधार ॥१॥ विद्या विखम वेदिअन याची,पढ़ि पढ़ि सबदहि करत

विचार ॥ करम करत करमन अधिकारी,धरमी धरम प्रीति उरधार ॥२॥ दूसर देह प्रवेस निकसबो, जनम अनेक निहारब धार ॥ पोखित सभ को हरि नाराइण,श्रीचंद्र गोबिंद मुरार ॥३॥२२२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ गोबिंद जीउ,आपहि लेहु निबाहि ॥ खिन खिन भूल परत मन मेरा,चलत चलत उलटो पग राहि ॥१॥ रहाउ ॥ बैठो होइ इकांत सथानी,कर माला कामिनि चितवाहि ॥ तजि घर बार गयो बनमाही,चितवति कंचन महिल थिराहि ॥१॥ संसै तजन हेतु सत संगति,उपजत घने न जिनि सिर बाहि ॥ मंदर गमनिओ क्रोध निवारन,प्रगट भयी नर गन हनि चाहि ॥२॥ परसे अठसठ लोभ न विआपै,इंद्र राज ते त्रिपतत नाहि ॥ चक्र अनेक पड़िओ मन मेरा,श्रीचंद्र कछु नहि अब वाहि ॥३॥२२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ एकहि आस नाराइण केरी ॥ टोह टाह सभ साक निहारे,बिन गोबिंद ढही अन ढेरी ॥१॥ रहाउ ॥ जो नर बंधे आसा फासी,बंदे की हरि सकत न बेरी ॥ जा पहि गयो आस चित

धारी,होइ निरास अयो मुँह फेरी ॥१॥ कूड़े सनबंधी भव सारे,बिपति हेठ तजि जात परेरी ॥ जब देखहि धन सभ मिल आवहि,बात बनावहि होइ अति नेरी ॥२॥ बनी केर सभ ही जग गाहक, अनबनि की अनबनिता टेरी ॥ पारब्रहम परमेस्वर रामहि,श्रीचंद्र उर थापिओ हेरी ॥३॥२२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभु बिन आन न राखनहारा ॥ आन आस सगली कउ परिहर,राम नाम बड राख सहारा ॥१॥ रहाउ ॥ टूटी नाउ बही सभ पाटी,आपहि लिआवहि निकटि किनारा ॥ जहां न जन बिचरत कबि भूली,तहां देत खट रस आहारा ॥१॥ ग्रीखम मध्याहन थल बारू,सीतल पानि मया करतारा ॥ भुज दो बांध दुस्ट गहि लीनसि,दीनसि चाड़ि हरी कर दारा ॥२॥ जहँ जहँ भीर परी जन ऊपर,किसहूँ बिधि चालत नहिं चारा ॥ माधव तहँ ही खिन महि प्रगटत,श्रीचंद्र निज बिरद सम्हारा ॥३॥२२५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभ जू,तो ही कऊ जन लाज ॥ राखहु पैज दास अपने की,एका टेक गरीब

निवाज ॥१॥ रहाउ ॥ अलप बुद्धि किमि जान सकै है,तुमही करते हो सभ काज ॥ मन छोटा तुच्छ अहैं विचारा,लखत नहीं प्रभु रूप दराज ॥१॥ द्रिस्टि विकारी जन तन लागी,परदा डारिओ मुख महाराज ॥ अद्रिस्ट अगोचर अगम अथाहा,उतर अकासै गैबी साज ॥२॥ जल ते थल थल ते जल करते,खिन महि रंकहि देते राज ॥ पत राखउ पूरन परमेस्वर,श्रीचंद्र तुव साज असाज ॥३॥२२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ राम,हम तुमरी सरणाई ॥ काम क्रोध अगनी के जारे,तुमरी ही चित ओट तकाई ॥१॥ रहाउ ॥ करि विचार इक अनुभव पाया,तूँ ही मीत सखा संगि भाई ॥ वसि अगिआन वटोरत मिथिआ, जो दरगाहे हुइ न सहाई ॥१॥ लाग परे भव झूठ पदारथ,माया मूठे लहहि सजाई ॥ हितकारी लोगन बन बैठे,निज हितु सगरो दीन भुलाई ॥२॥ हम ढिग पुरवहु कामन सगरी,जग जन गन कौ रहे डहकाई ॥ मन डोलत लख आपन करणी,श्रीचंद्र प्रभु बखस मिलाई ॥३॥२२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभु जी,आपहि पंथ दिखावउ ॥ अगिआन अंधेरा चहुँदिसि पसरिओ,लख न सकत

हम थाव कुथावउ ।।१।। रहाउ ।। नैन नही लकुटी कर नाही,कंटक बन बेहड़ घिरि आवउ ।। भुज पकड़नहारो को नाही,गाव निकट नहि किहँ गुहरावउ ।।१।। हसती सिंह साँप फुंकारत,भूत कूक भयभीत डरावउ ।। गड़े गरत पग कैसे धारउ,सूझत नाहिन कोऊ उपावउ ।।२।। सभ बिधि हीन दीन बेचारा,भूलिओ सगरे थेवहु थावउ ।। बिन बैठन कछु आन न सूझिओ,श्रीचंद्र तजि कत धावउ ।।३।।२२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु सरणि सदा सुख वास ।। मंत्र राम नाम जपु निरमल,आतम गिआन महा परकास ।।१।। रहाउ ।। हिरदै सांति मैतरी सभ सिउं,दुबिधा दूरि सगल आभास ।। एकंकार अधार जीव का,ताहूँ दीने सास गिरास ।।१।। जहँ जहँ जाउं तहाँ हरि ठाकुर,खंड ब्रहमंड पाताल अकास ।। हउमै खोई अगनि निवारी,साधु संग पूरण बिस्वास ।।२।। पंच सबद धुनि अंतरि प्रगटी,राग नाद रस परम विलास ।। परमानंद मगन मन निसदिन,श्रीचंद्र जम को हरि त्रास ।।३।।२२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || पूरन पारब्रहम गुरुदेव || अगम अगोचर प्रभु अविनासी,सुर नर असुर न पावत भेव ||१|| रहाउ || दरसन भेटत मैल उतारी,अंतरि आतम निवरे भेव || सुनत वाक पद सांति निवासा,दुबिधा दूर बिनासी देव ||१|| पुरि बैकुंठ साधु की संगति,संसै छेप विपरये छेव || रिद्धि सिद्धि निधि कवन विचारी,मुख ताकत हित लागन सेव ||२|| कोटि मुकत चरणन के माही,रेत कनूक पड़े लख ऐव || तीनहुँ लोक भुवन चौदहिं महि,श्रीचंद्र अन तूल न देव ||३||२३०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग गूजरी || गुरु की चरण सरणि निस्तारा || जनम जनम का स्याम आवरणा,दूरि किओ रवि सम भुनसारा ||१|| रहाउ || भवसागर मन बेवसि पौते,पेखिओ उत्तर दिसा ध्रुव तारा || बूडि नदी जन गोते खावत,औचक मौज किनारे डारा ||१|| गांठ न कौड़ी भूख पिआसै,जनु घट पायो भरो दीनारा || निसि अंधिआरी गहिबर बन महि,टांडा लहिओ जात वणजारा ||२|| मोह परिवारे कै बेगारी, पोट डराइ हरायो भारा || निघरत हस्ती दल दल श्रीचंद्र,पग तल कीनो खुसक पहारा ||३||२३१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। सत्गुरु सबद बजायो नाद ।। तन मन सुद्ध सिख म्रिग भूली,चाहि मरन को उपजिओ आदि ।।१।। रहाउ ।। फन फैलाय फनी सिर ढोरत,स्रोत बिहानी बीनहि साद ।। टक टक बांध चकोर निहारै,ससि रस माती रंग अहलाद ।।१।। आंब्र मौल रंग रितुराजहि,कोकिल कूकैं उठी अगाज ।। निरतति पैल पाय पावस महि,केकी केका को है काज ।।२।। रैनि बिहानी प्राची रवि उद, चकवी जानिओ अनंद अनाद ।। अनहद सबद विपंची पंचा,श्रीचंद्र अचरज विसमाद ।।३।।२३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। किहँ पायो रस नाद अगाधा ।। स्रवण बिहूनि आम्र उपबन महि,वैर विरोध काक उर नाधा ।।१।। रहाउ ।। कंबू चटिका बिजड़ मुरगा,बत मुरगाब संग बिन साधा ।। कंक गिद्ध नभ मंडल डोलत,कोक चकोर दिवस निसि बाधा ।।१।। सारक सारस सिखी असंगत,कीरन मेल तजन मग लाधा ।। मानस बिना हंस नहि थिरते,भ्रिंग पतंग झिली अनुराधा ।।२।। जाति सजाती सबद

समावै,गुरुमुख गुरुमुख संग समाधा ।। कोकिल कोकिल को बिगसावै,श्रीचंद्र मन महि रंग राधा ।।३।।२३३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग गूजरी ।। मानुख तन सफलै गुरु सरणा ।। चिंता लागी मन मानव कै,गुरु उपदेस करत है हरणा ।।१।। रहाउ ।। निसि अंधिआरी कूह अमावस,सत्गुरु सबद उदै तन तरणा ।। जंगल भ्रम गाढो तरु कंटक,मारग डारि उतारत परणा ।।१।। भव जलनिधि त्रिसना की लहरी,चित बोहिथ चिंता परिहरणा ।। करदम रस त्रिण भाव लुकाना,संभल संभल पग हाथी धरणा ।।२।। परमानंद नीर सर बुद्धी,सूक रहिओ गुरु सबदी भरणा ।। देव न पहुँच सकहि तिस जन कउ,श्रीचंद्र वथु अजरी जरणा ।।३।।२३४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग गूजरी ।। पक्का रंग गोबिंद को नाम ।। दुनीआं रंग कुसुंभा कच्चा,नाहि सहारत करड़ी घाम ।।१।। रहाउ ।। जबि लग ग्रिह महि अंन धन वसतू,तबि लग लोगन आवन धाम ।। जबि खावन

पहिरण नहि पावहि,तबि मुख भाखत कटू कलाम ॥१॥ उदर भरत बदनै रहि उस्तति,भूखै निंदा ठामहि ठाम ॥ संपद हेत नरन की भीड़ा,बिपदा पड़त भजत कहिं काम ॥२॥ लोग लुगाई अवधि विभूति,बन खंड तिआग पराई राम ॥ हरि हरि राम नाम आराधउ,श्रीचंद्र नहि पौहै याम ॥३॥२३५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभ जू,तूँ मेरा मै तेरा ॥ सुख दुख वरतहि हुकम तुमारे,चितहि न बिसरैं काहूँ बेरा ॥१॥ रहाउ ॥ घर बाहरि तेरा भरवासा,सरब ठौर महि सद ही नेरा ॥ काल करम गति तो महि नाही,जल अगनी सम तोहि बसेरा ॥१॥ नित सुन सुन कर तोहि सलाही,सुन निंदा तजि जाउ न डेरा ॥ पंखी धुनि परभात बखानी,कुदरति भनत सुबहान बटेरा ॥२॥ रटत नाम तव तरुवर बन के,झूलत झूलन झुकत झुलेरा ॥ गोसाईं साहिब करि किरपा,श्रीचंद्र कउ दीजै नेरा ॥३॥२३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ प्रभ जू,अवगुण मुहि न चितारो ॥ मानुख तन अवगुण ते उपजै,अवगुण ही करतो

प्रतिपारो ।।१।। रहाउ ।। बिरधापन भी छूटत नाही,कबर लात भी करत सुमारो ।। जुगह जुगंतर ते चलि चाला,ब्रहमा बिसनु बुडे दुर धारो ।।१।। जयमुनि आदि मुनीस महानै,नारद जैस रिखीस विचारो ।। छूट न साकै अवगुण तिन ते,मैं किआ जंतु अनाथ समारो ।।२।। पग पग कदम कदम महि भूलत,माया मोह न कोऊ सहारो ।। तुम किरपाल सरण सुख दायक,श्रीचंद्र कउ नहि दुरकारो ।।३।।२३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। संतन संग राम परकास ।। हउमै रोग जाइ मन तन ते,रवि बारह सम होइ उजास ।।१।। रहाउ ।। माया निसि अंधिआरि अमावस,सत्गुरु सबद चंद्र परिभास ।। अगनि सागर भव जल ते अहनिसि,साधु संगि सीतल जल रास ।।१।। तन ठंडा मन ठंडा जपते,राम नाम नित्त सास गिरास ।। दुबिधा दूरि गई दुख भागे,सरब जगत इक राम निवास ।।२।। हरि हरि कथा कीरतनि रुणझुणि,राग नाद घन ताल सुआस ।। तन नाराइण साधु विराजिओ,श्रीचंद्र नहि अनतै आस ।।३।।२३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ सत्गुरु सरणि गोबिंद गुण गाउ ॥ खीर सागर हरि नाम निधाना,सत्गुरु सबदी रतन लहाउ ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि प्रचंड बिखै बिखिआ रति,राम नाम सीतल दरिआउ ॥ त्रिबिध ताप संताप जगत सभि,हरि हरि औखधि दूर हटाउ ॥१॥ मनम्रिग म्रिगत्रिसना महि भागति, सत्गुरु चरणि लहै हरिआउ ॥ गरत पिआ हस्ती तल निघरत,सत्गुरु आसर निहचल ठाउ ॥२॥ जल बिहूनि मीना तड़फत कउ,संत संग जल निधि कउ पाउ ॥ सारंगधर भगत वत्सल प्रभु,श्रीचंद्र सत्गुरु को नाउ ॥३॥२३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ संतन संग सहिज प्रकासा ॥ दुबिधा दूरि बिहानी मन ते,परमातम गोबिंद निवासा ॥१॥ रहाउ ॥ एकंकार सगल घट माही,दूजा अपर न भव महि भासा ॥ जबि सूरज आयो मध्याहन,तबि अंधेर किमि रहै अवासा ॥१॥ कामिनी पंथ निहारे वाढी,पति मिलि राती भोग विलासा ॥ दुस्ट विकार मनहि प्रफुलित,बरख संत किअ नास जवासा ॥२॥ तन मन धन जब ही

हरि लीनो,को जावै अन ते करि आसा ।। गोबिंद क्रिसन मुरारि साधु तन,श्रीचंद्र पेखिओ उर खासा ।।३।।२४०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गूजरी ।। संतहु मोरि करो कलिआना ।। मोह माया महि निसदिन फासिओ,इत उत बिचरत भयो दिवाना ।।१।। रहाउ ।। परकी कउ अपनी करि मानिओ,बिख बिखिआ महि मत्त हिराना ।। जिनि सिउं लागि जनम सभ खोयो,धन हीनो लख तेऊ पराना ।।१।। लागि कुटुंब अघन की पोटहि, चलन न दीनो मग भगवाना ।। संचि संचि द्रब्य सुख कउ चाहिओ,दुखप्रद भयो गयो ढिग आना ।।२।। कीने भोग रोग तन उपजे,वाँछित मान लहिओ अपमाना ।। महा दुखी सरणी मैं आयो,श्रीचंद्र लखि अपन बिराना ।।३।।२४१।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग गूजरी ।। भजि मन राम नाम सरणाई ।। मानुख तन दुरलभ जग पाइआ,लख चउरासीह गेड़ गिड़ाई ।।१।। रहाउ ।। जीअ जंतु खग म्रिग भव जेते,सभि सिरताज दई प्रभुताई ।। सभ को नत्थ

चलावत मानव,हस्ती सिंघ बाघ बाजाई ॥१॥ अकल सकल सबहूँ ते नीकी,पहिरन भोगन बियोंति बनाई ॥ अपर काज अन जोनिनि भावत,सिमरन नाम इसहि वडिआई ॥२॥ आपन फरज पछानहु प्रानी,भजि गोबिंद राम लिव लाई ॥ पउड़ी छुड़की हाथ न ऐहै,श्रीचंद्र रहि हैं पछुताई ॥३॥२४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ रसना सफल बखानै राम ॥ जपत जपत मन निरमल होवै,तब ही आइ बिराजहिं स्याम ॥१॥ रहाउ ॥ उतरे बिख बिखिआ मद मस्ती,द्रिगन परसिऐ गोबिंद धाम ॥ चित्त बऊरा दहदिसि को धावत,अबिचल थान लहहि बिस्राम ॥१॥ निसा अविद्या घनी अंधेरी,दिनपति उदै भए दुइ जाम ॥ भांडा कच्चा ह्वै है पक्का,भट्ठे सह पावक की घाम ॥२॥ रंगे रंग मजीठी लाले,मोह लोभ कोह तिआगै काम ॥ भाउ भगति साधू की संगति,श्रीचंद्र नहि विआपै आम ॥३॥२४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ कहहु काल किआ चित्र बनायो ॥ मिथिआ भ्रम लाग छोभिओ मन,मरणै निकटि आप चलि आयो ॥१॥ रहाउ ॥ सुता कवन राखै ग्रिह भीतरि,निज भगनी घर किनहिं बसायो ॥

काहूँ की पतनी है माता,कवन हेतु मन कउ डहकायो ॥१॥ कवन चिहन लागिओ तन तोरे,घाव घनो करि तीर सिधायो ॥ सत्रु मित्र कउ जग महि मेला,जल महि अगनि बंध रखायो ॥२॥ सुख दुख करते केर रजाई,मानुख जतन काज नहि कायो ॥ रिदै बिचार काल आगमनहिं,श्रीचंद्र धूणा तन तायो ॥३॥२४४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ मनमुख संगि महा दुख विआपै ॥ लोभ लहिर मन भीतरि जागै,काम क्रोध अगनि परतापै ॥१॥ रहाउ ॥ अन प्रभाव निज चीतहि आनै,पर ऐसवरय परधन संतापै ॥ दिवस चार जग जीवन पाया,जुग अनेक कै साधन थापै ॥१॥ त्रिपतावत नहि एकउ नारी,तीन लोक की वरन कलापै ॥ सेर अढाई जा कउ चहिऐ,लाय अंबार भंडार अमापै ॥२॥ त्रिसना जलत जलत दिन राती,बहु परकारी करतो पापै ॥ साधु संगि गुरु मया बिहूना,श्रीचंद्र कबहूँ नहि ध्रापै ॥३॥२४५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ भजि गोबिंद होइ छुटकारा ॥ त्रिसना पावक मन जल रहिआ,हरि हरि नाम सीत

जल धारा ॥१॥ रहाउ ॥ हरकाई कुत्ती आसा इह,काटत अनिक नरन बरिआरा ॥ सभ जग की पातिसाही पाई,छत्र सिंघासन चमरहि ढारा ॥१॥ भोग भोगतो त्रिपतै नाहिन,रूपवंति लहि कोटिक दारा ॥ चंड प्रचंड पावक की जुआला,कबै अघाइ तेल की धारा ॥२॥ महिल सराई हस्ती घोड़े,जोड़े जोड़े अंतु न पारा ॥ एको राम नाम अखर महि,श्रीचंद्र जग करहि पुकारा ॥३॥२४६॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ साधु संगि भजीऐ भगवान ॥ मन निरमल मुख ऊजल ह्वै है,हउमै ममता हरै निसान ॥१॥ रहाउ ॥ तन मन धन दीजै संतन कउ,पोह न साकत उर अभिमान ॥ पारब्रहम परमेस्वर सिमरत,नाहिन उपजत झूठ गुमान ॥१॥ एकंकार सरबमय पूरन,जल थल महीअल एक समान ॥ सरब सूख आनंद मंगल रस,गिआन प्रकास सदा कलिआन ॥२॥ सहिज समाधि प्रीति हरि भगती,अस्टदसे सिधि निधि निधान ॥ काम धेनु चिन्तामणि दुआरे,श्रीचंद्र द्रुम कलप प्रमान ॥३॥२४७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साधु संगि गोबिंद रंग लागा ।। नाम जपत त्रिसना सभ बिनसै,परा पूरबल उत्तम भागा ।।१।। रहाउ ।। जनम जनम का सोया मोह मय,पैरी टुंब उठायो जागा ।। महा कुराह बेहड़ बन माया,पंथ लवाइ चलो धरि आगा ।।१।। बिख बिखिआ रस परम विकारी,मन ते निवरी धधकत आगा ।। अघ जेठ की घामै राही,सीतल जल हरि भगती लागा ।।२।। कूड़ा रंग कुसुंभ उडाना,लाल मजीठी पहरिओ बागा ।। अहनिसि धुनी सहिज मस्ताना,श्रीचंद्र धोए कुल दागा ।।३।।२४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। साधु सरोवर मन इस्नानै ।। निरमाइल आतम परकासा,पावन होए पाप मिटानै ।।१।। रहाउ ।। पारब्रहम परमेस्वर करता,ऊच नीच थिति सरब इस्थानै ।। डोम चंडाल बिप्र सूद सभ,बिनि विरंचि उपजाइ न कानै ।।१।। कुदरत करणहार जो कीनी,मेट न साकत भव निरबानै ।। भूत भाव मानव उर गिआना,लखत भविख्य आप भगवानै ।।२।। तड़िता बिन बादर तड़तावै,जल महि अगनि प्रगट उथानै ।। दीन दरद दुख भंजन हरि प्रभु,श्रीचंद्र सिमरित कलिआनै ।।३।।२४९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ संत संगि प्रभु पेखिओ नेरा ॥ जल थल महीअल पूरन करता,घट घट अंतरि सरब बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ सगले जीअ जंत हरि प्रभु के,काहूँ दूर न काहूँ नेरा ॥ मनमुख काम विआपी माया,हउमै बंधन पैखड़ पेरा ॥१॥ बिख बिखिआ मल अंतरि लागी,अंधै कउ दिन माहि अंधेरा ॥ संत संग मन निरमल बुद्धी,राम जपत नित सांझ सवेरा ॥२॥ लाहा लाभ परातम भासा,भयो प्रकास प्रभात वधेरा ॥ सफल जनम मानव संतन ते,श्रीचंद्र दुख ढाहिओ डेरा ॥३॥२५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग गूजरी** ॥ रंगे रंग गोबिंद गोपाल ॥ स्वास स्वास सिमरत हरि रामहि,रसना रटती नामन माल ॥१॥ रहाउ ॥ सद ही सूख आनंद घनेरा,प्रेम रसाइण बूडे लाल ॥ जनम मरण की चिंता नासी,मै ममता मेरी पामाल ॥१॥ दुबिधा गई भया परगासा,अनुभउ पाया नूर कमाल ॥ चढ़ि घोड़े असमानी चाल,नैन संतोखे रूप निहाल ॥२॥ दूर न जाना अंतरि माना,धुनी समाना बंसी ताल ॥ अगम अगोचर अपर परंपर,श्रीचंद्र लहि जलज लाल ॥३॥२५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मै हरि दासन दास तुहारा ।। मुल्ल खरीद गुलाम बापुरा,जिवै चलावहि चालनहारा ।।१।। रहाउ ।। जित्थै राखहिं तित्थै रहिना,जो देवहि सो खाइ अहारा ।। नंगे तेरे भुक्खे तेरे, तेरे रंक तेरे दातारा ।।१।। तजी सिआणप चिंत बिसारी,निसदिण पड़े रहित दरबारा ।। प्रतिपालक गोपाल गुसईआं,खेल खिलावहि पुतरी दारा ।।२।। तुमरे चरित न जाई लखणे,अगम अनंत बेअंत अपारा ।। दीजै नाम दान दर ठाढो,श्रीचंद्र तुछ जंतु विचारा ।।३।।२५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। हम चेरे गोबिंद गुसाई ।। अविनासी सभ जग प्रतिपालक,आपहि लाजहि दास रखाई ।।१।। रहाउ ।। सार समाल सदा गल लावहि,बालक जिमि राखत हरि माई ।। अनिक बिघन ते आप बचावत,साप सिंघ विआघ्र हसताई ।।१।। अगिआन विवस्था सूझत नाही, करनहार निज पैज धराई ।। जिस का बिरद उसे की द्रिस्टी,झुक झुक परती पैर लुगाई ।।२।। नीचहि करि ऊच स्थापै,पारब्रहम निज कला फिराई ।। राम नाराइण हरि प्रभु जापत,श्रीचंद्र

पाई वडिआई ॥३॥२५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ ताती वाउ न लागन पाई ॥ पारब्रहम प्रभु पूरन सुआमी,कर दै लीने दास बचाई ॥१॥ रहाउ ॥ जल पूरन सरिता की मौजैं,उडी रेत असमानहि छाई ॥ अगनि घटा चहुँदिसि ते बरसत,फूल बहार खिड़े समुदाई ॥१॥ आजुध गहि मानव जुद्ध उतरे,पाहन मूरति करि दिखलाई ॥ कवन विचारी डाकिणि साकिणि,राम कार ढिग जलनि सबाई ॥२॥ पिता हमारो वड समरथा,अणबण बणति बियोंति बणाई ॥ दास अपने कउ राखनहारा,श्रीचंद्र गोबिंद गुसाई ॥३॥२५४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग गूजरी ॥ रे मन,भजि हरि गुरु गोबिंद ॥ ईहां ऊहां सरब काल महि,जिसहि हमारी विआपै चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि जिहँ प्रतिपारे,अब भी वे ही राखत जिंद ॥ संकट कोटि निवारे खिन महि,पारब्रहम पूरन बखसिंद ॥१॥ अउगुण दासन चीत न राखत,कोट ओट जिहँ पद अरबिंद ॥ दास अपने कउ देत वडाई,लोग लाख करते रहि निंद ॥२॥ पढ़त कुरान भुलाने

मुल्लां,अकल कला प्रभु लहहि न बिंद ।। हरि भगवान भगति का निकटी,श्रीचंद्र प्रभु राज नरिंद ।।३।।२५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। मन,काहे तू भरम भुलाना ।। बिनसनहारी झूठी दुनीआं,ता सिउं लागै भयो दिवाना ।।१।। रहाउ ।। पूरन पुरुख परंपर करता,प्रतिपालक प्रीतम भगवाना ।। तिहँ तजि धन हित लाग परायो,नहि बूझिओ किआ अपन बिगाना ।।१।। भूमी द्रब्य न संग सिधै है,छाडि चले पातिसाह दिवाना ।। सुख रंचक हित नारि लुभायो,सभ सुख मूल राम नहिं जाना ।।२।। राचि माचि जिनि सिउं चित लायो,तिनहुँ उचाइ धरिओ मसाना ।। मूरख अंधे मुगध अयाने,श्रीचंद्र ठग मूरी खाना ।।३।।२५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। माधव,अपनी बूझ बुझाइ ।। ढूंढि ढूंढि हम थाक परे हैं,तू छप करि कित बैठो

जाइ ।।१।। रहाउ ।। चार धाम पुरीआ सत परसी,अठसठ तीरथ चलि चलि नहाइ ।। सातहुँ सागर सातहुँ नदीआं,जल पावन लखि धोई काइ ।।१।। यग्य अगनि पावन समधा जुत,तन होमिओ रत्ती कटवाइ ।। सगल समग्री सरबसु दाना,द्विजन कै करि दीन उठाइ ।।२।। करम करे अधिआतम अधिकै,अंतरि तमहि अंधेरा भाइ ।। करि किरपा मेलउ साधू जन,श्रीचंद्र लख लेउँ लखाइ ।।३।।२५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। भगवन,रोग रहित जन कउन ।। मया धारि निज आप जनावउ,जा ते द्रिस्टि परे तुव जउन ।।१।। रहाउ ।। खटपद कमल गंध लपटाना,तन बिनसानो साधै मउन ।। करी बिनासिओ करिनी कामहि,अंकुस सीस सहारिओ तउन ।।१।। रस रसना कै मीन बिनासिओ,फाधिओ बडिस छुटो जल भउन ।। स्रवणि नाद धुनि हरिन सिधायो,चारा गयो बिचारा सउन ।।२।। जलित ज्वाल लखि धयो पतंगा,राता तन मन करबे हउन ।। मानुख महि पंचहु धरि दीने,श्रीचंद्र अब उबरे कउन ।।३।।२५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। प्रभू,वगाई कैस हवाइ ।। मातु पिता संग तिआगि पधारे,साक संबंधि गए कित धाइ ।।१।। रहाउ ।। जो जन ताकत थे बारिक मुख,अब बिललावत पान न पाइ ।। लख भूखो भोजन दैबो कह,पीठ फिराइ न बदन दिखाइ ।।१।। खावन पहिरन लोभ विगुते,मित्र कहावत सत्रु सबाइ ।। अन धन खूटे सज्जन टूटे,ग्रिह ते खोल लिजावत गाइ ।।२।। किआ पुकार को रंकन सुनि है, रिदै निवास कियो जिनि माइ ।। राम नाम बिनु कौन सहाई,श्रीचंद्र देखहु पतिआइ ।।३।।२५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग गूजरी ।। जप मन,राम हरी गोपाल ।। अवर कछु नहि काज तुहारे,दीन दरद दुख हरि नंदलाल ।।१।। रहाउ ।। अंतरि बाहरि सदा संग प्रभु,नित प्रतिपारे सार समाल ।। रंचक अंच न लागनि पावै,सीतल अंक नाम प्रभु नाल ।।१।। हउमै रोग जाइ सुख प्रापत,अविनासी गुरु चालहि चाल ।। कामधेनु चिंतामणि ग्रिह महि,कलप ब्रिख छाया सिर भाल ।।२।। कवन विचारे माणक हीरे, मणी जवाहर पंने लाल ।। राम नाम तुल्य पुजत न कोऊ,श्रीचंद्र करि रिदै खिआल ।।३।।२६०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।।

इह जग चलणहार है,थिर नाहिन कोई ।। पातिसाह उमराव खान,सभ जावहि लोई ।।१।। दामिनि झिलमिलकार सिउं,खिन पल की बाजी ।। साथ न कोऊ चालसी,अंतहि लख ताजी ।।२।। गोइल आया गोइली,दिन चार बिताई ।। रुत फिरी खड़ सुकिआ,तुरिआ लै गाई ।।३।। माड़ी महिल अटारीआं, सभ ही छड जाणा ।। झूठा हेत वधाइ कै,किउं फिरत भुलाणा ।।४।। समझ बूझ चित सोच ले,जित रहहि सुखाला ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम जपु,गमनहि सुरसाला ।।५।।१।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। सोई सुखीआ ईत ऊत,जिनि नाम धिआया ।। हउमै दुबिधा खोइ कै,गुण गोबिंद

गाया ॥१॥ साधु संगति कै वारणै,हरि पंथ लगाया ॥ अंतरि चानण होइआ,नहि मोहिआ माया ॥२॥ तपति बुझी सीतल भए,त्रैताप मिटाया ॥ मानुख जनम सुहेलड़ा,हरि लेखे लाया ॥३॥ काम क्रोध अहं लोभ मोह,पंज चोर भगाया ॥ ऊजल मुख दरगह हरि,पूरा गुरु पाया ॥४॥ राम नाम जपु दिनस राति,अगिआन गवाया ॥ सभ महि एको वरतदा,श्रीचंद्र लखाया ॥५॥२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जिनि जिनि नाम धिआया,से सदा सुहेले ॥ गुरु प्रसादी उबरे,हरि रंग हरि केले ॥१॥ सबद गुरू रस माणिआ,अम्रित ते ऊचा ॥ माया मोह विसरजिआ,अघ जालन मूचा ॥२॥ दुरमति लागै मनमुखी,निज जनम विगोया ॥ राम नाम नहि जापिआ,जीवत ही मोया ॥३॥ जिस लावै लड़ि आपणै,तिस संत मिलाई ॥ गोबिंद सिमरण लाग कै,जीवन पद पाई ॥४॥ मगन भया रंग राम कै,तन मन बिगसाना ॥ मति ऊची मन उजला,श्रीचंद्र गिआना ॥५॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हरि हरि नाम धिआय मन,जो संगी तेरो ॥ इह जग ब्रिख सुहावड़ा,इक रैन

बसेरो ॥१॥ उठ परभातै चलणा,दिसि गिआन न कोई ॥ चुगत चोग कित जा रहै,को द्रिस्य अलोई ॥२॥ उदर भरन सिउं काज हैं,गंठे किछु नाही ॥ आपन आप सवार लै,संतन पग पाही ॥३॥ फिर पछतावहि गहिलड़े,जब वक्त विहाई ॥ सिर धुण हाथन मलत रहिं,भरि सास हवाई ॥४॥ नाम नाराइण माधवै,हरि प्रभु धिआवो ॥ श्रीचंद्र संग साध कै,विच मुकत समावो ॥५॥४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मनमुख मरहि विकार महिं,निज जनम गवाया ॥ आगल लोक न सूझई,मोहिआ बिख माया ॥१॥ भोगहुँ भोग उपायन,अग्ग अंतरि माची ॥ दुखै दुख वरतायन,त्रिसना रस पाची ॥२॥ नाम निधान बिसारयन,कउडी के काजा ॥ ग्रिह ग्रिह मांगत भीखिआ,राजन महाराजा ॥३॥ गुरुमुख आप पछाणिआ,अधिआतम रंगे ॥ नाम धिआया संत संग,मन नाहिन भंगे ॥४॥ सहिज समाधि उपाधि गति,अनुभव इक रामा ॥ ताप निवारे गिरह ते,श्रीचंद्र अनामा ॥५॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ काहे पाउं पसारिऐ,जबि है उठि जाणा ॥ संग न कोऊ चालही,फिरि है

पछुताणा ।।१।। अनिक कस्ट कर संचिऐ,धन माल अपारा ।। अंतहि भया पराइआ,चलिआ वणजारा ।।२।। पापा केरी गंठड़ी,निज सिर उचवाई ।। गल संगल जम पाइआ,कर लिय अगवाई ।।३।। चित्रगुप्त दफतर भरा,काले लिख लेखा ।। उमर बिताई बाद ही,जग परे भुलेखा ।।४।। संतन के बलिहारणै,जिनि बात बताई ।। श्रीचंद्र गुण गाइ लै,गोबिंद चित लाई ।।५।।६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। नाम नाराइण वीसरै,मरणो तित जापै ।। पारब्रहम चित आया,जीवन पद भापै ।।१।। मनमुख संगति पाइऐ,पापन के भारा ।। संगति गुरुमुखि की लहहि,हरि भगति भंडारा ।।२।। परमेस्वर ते भुलिआ,रसकस उरझाई ।। राम नाम जपु अहनिसहि,गुरुमुख संगि पाई ।।३।। कंचन तन लोहा भया,मनमुख रंग राता ।। कच्च गुरमुखी संग ते,हीरा विगसाता ।।४।। संत संग गुण गाइऐ,अम्रित रस रामा ।। गरब गवाइऐ श्रीचंद्र,निहचल बिस्रामा ।।५।।७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे वरणिऐ,प्रभु अगम अपारा ।। निघरत जातो सिंधु भव,दै हाथी तारा

॥१॥ सत्गुरु पूरा भेटिऐ,निज जनम पछाता ॥ सबद गुरू हीरा लहा,चमकत बड गाता ॥२॥ अनहद नाद सुहावणा,गुरु सबद सुणाइआ ॥ माया मोह विसारिआ,चानण हरि पाइआ ॥३॥ कालख जनम अनेक की,गुरु सबद भगाई ॥ परमेस्वर प्रभु पाइआ,वडी वडिआई ॥४॥ लिव लागी नाराइणै,संतन परतापै ॥ श्रीचंद्र हउमै गई,गुरु सबदी जापै ॥५॥८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मैं सेवक गोबिंद का,अन चीत न धारी ॥ गुरु अबिनासी भेटिआ,रंग लाग मुरारी ॥१॥ दूख न विआपै कदे जिअ,भुख त्रिसन निवारी ॥ हउमै दुबिधा दूरि करि,जपिआ गिरिधारी ॥२॥ भुल्ला मारग पाइआ,कंटक हत झारी ॥ गई बहोड़ी आयुखा,कलिकाल मझारी ॥३॥ आपहि चाल चलाइआ,खंडे की धारी ॥ बींगा पाउ न पाइऐ,नित त्रितित नारी ॥४॥ हरिआ मोह अपार तन,निसि नास अंधारी ॥ श्रीचंद्र रंग लाल भा,जपु जपु त्रिपुरारी ॥५॥९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ तूँ दाता सभ जीअ जंतु,प्रतिपालक पूरा ॥ जानहि बिरथा जिअ की,सभ कल

भरपूरा ।।१।। जिनि जिनि सेविआ बाल बुद्धि,दुख कीने दूरा ।। जहाँ न कोई देव नर,मुख डारसि चूरा ।।२।। अगिआन अंधेर गवाइआ,प्रगटाइस नूरा ।। राम रसाइण चाख कै,बिरधापन घूरा ।।३।। सत्गुरु मेल मिलाइआ,मत नाम सरूरा ।। आतम रता गुरुमती,दुरमति चकचूरा ।।४।। लड़ पकड़ायो आपणा,संगि साधू सूरा ।। श्रीचंद्र हरि नाम जपु,मन भयो ठरुरा ।।५।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जा प्रभु का हउ दासरा,तिस ही कउ लाजा ।। आपहि करि संजोग कउ,पूरे सभ काजा ।।१।। अउघट घाट निवार कै,करि पार उतारा ।। रुड़दा जांदा मोह नद,लहिओ जाइ किनारा ।।२।। दुरमति रंग मिटाइ कै,गुरुमत सिखलाई ।। मोह कुटंब निवार कै,दीनी भगताई ।।३।। उझड़ जांदे अग्र होइ,गुरु मारग पाए ।। सुता दुंब उठालिआ,हरि रंग लगाए ।।४।। जोग जुगत निधि पाइआ,लिव तार अडोली ।। श्रीचंद्र सत्गुरु सरणि,हरि हरि बुल बोली ।।५।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मात पिता सुत बंधु जन,छडि चल्लण भाई ।। संग न कोऊ चालई,ऊच महिल

सराई ॥१॥ पेखि पेखि बहु माल धन,काहे विगसाई ॥ तिआग चलहुगे एत ही,जिनि सिउं चित लाई ॥२॥ बिरथा गरब वधाइआ,वथु सांभ पराई ॥ खसम संभाली वसतू सभ,बेगारी पाई ॥३॥ भाड़ी भाड़ा ही लहहि,अन सेर अढाई ॥ साढे तिंन हथ मेदनी,मलकीअत थाई ॥४॥ साधु संगि प्रभु सिमर लेहु,होहि अंतु सखाई ॥ जनम सवारे श्रीचंद्र,नाहिन पछुताई ॥५॥१२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मात गरभ की पावकहुँ,जिनि लिओ उबारा ॥ बिंदु न साकी जाल सिउं,नित्त दगधि अहारा ॥१॥ जनम दिओ संग सेवको,दाईअन निरधारा ॥ बिनु दांतन के जाण कै,दूधै दिअ धारा ॥२॥ मल मूत्र माँ सांभई,राखत पोचारा ॥ अनिक भांति भोजन दिए,कीनी प्रतिपारा ॥३॥ डाकिणि साकिणि साँप अगि,राखिओ करि सारा ॥ लाड लडाइ खेलाइआ,पितु अधिक पिआरा ॥४॥ सभि बिधि रचन रचावता,हरि प्रभु करतारा ॥ श्रीचंद्र बिस्वास रख,अब भी नहिं हारा ॥५॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || किआ गुण तेरे वरणीऐ,प्रभु दीन दयाला || जबि ते लीनो जनम हम,तुम कीनि संभाला ||१|| अनिक भांति के बिघन गण,सभ ही दिए टाला || मेवे अनिक प्रकार के,भोजन रस आला ||२|| सुंदर पाट पटंबरहि,रितु जोग रसाला || बिन दामन सेवक दिए,कीनी प्रतिपाला ||३|| भरम भुलाया क्रितघन,मग परा कुचाला || नाराइण मधुसूदनो,माधव गोपाला ||४|| तिआग लगा अन काज सिउं,ग्रिह बंध जंजाला || अजहुँ समझ श्रीचंद्र मन,प्रभु महा क्रिपाला ||५||१४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || जननी चीत अवगुण नही,सुत केर हजारा || प्रभु बखसिंद दयाल है,चित्त लेहु सम्हारा ||१|| लाख खते पग पड़त ही,खिन महि निरवारा || बिन भूली मानुख नहीं,जानत हरि सारा ||२|| कामहुँ करते कीनु है,तन मानव कारा || किमि कामहि नहि वसि ह्वै,एहि जीव बिचारा ||३|| लाई माया मोह ही,किमि करहि संघारा || अल्प बुद्धि अगिआन रास,मुहि ही उरधारा ||४|| केवल चितवन चाहता,मन की करतारा || देरि न ता कउ बखसते,श्रीचंद्र लवारा ||५||१५||

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। साहिब दात अतोलड़ी,कब निखुट न जाई ।। नाम भंडारा वरतते,वध दूणि सवाई ।।१।। जपु तपु संजम नाल लहि,झूठी वडिआई ।। ताप गवाए हत्थ फेर,तन आप चढ़ाई ।।२।। इक थल मींह पवाइआ,धुप कस्ट उठाई ।। बछड़ा मेल दुहाइआ,आटा दैं गाई ।।३।। धागा बद्धा बांझनी,पुतहुँ वरसाई ।। कूड़ी शक्ति धार कै,किन सांति पाई ।।४।। संत पड़े दर प्रभू कै,बखसस तिनि थाई ।। नाम गुबिंद गोपाल के,श्रीचंद्र महाई ।।५।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। जो जन प्रभू निवाजिआ,तिसु दूरि न कीता ।। जिनि मन दीना पारब्रहम,तिसु प्रभु मन दीता ।।१।। परमेस्वर की सरणि मै,मन सीतल सीता ।। बिखिआ तपत निवारीआ,हरि सरित सरीता ।।२।। भाउ भया गुरुमुख मना,गा गोबिंद गीता ।। आपा आप पछाणिआ,आपहि विगसीता ।।३।। दुबिधा खोई एक ह्वै,पर रूप अभीता ।। बंदे अंदरि बंदगी,खावंद परतीता ।।४।। ता कउ कोइ पुज्जई,लख कोटि पुनीता ।। सेवक साधु समाइआ,श्रीचंद्र अतीता ।।५।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। एकंकार आराधिऐ,भय दूजा भागै ।। साधू सेव कमाइऐ,हउमै नही लागै ।।१।। करणी करम कमाइआ,नहिं अंतरि दागै ।। काम क्रोध अहंकार मोह,संगि साधां ठागै ।।२।। राम नाम रंग रत्तड़े,नाही अन लागै ।। आतम गरब निवारिआ,रस सीतल पागै ।।३।। नींद अविद्या परिहरी,हरि भगती जागै ।। चानण गिआन प्रकासिआ,प्राची दिसि बागै ।।४।। पाप विकार मन ते छुटै,गुरुमती थागै ।। श्रीचंद्र हरि हरि जपत,संतन पग पागै ।।५।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जो प्रभु झलक दिखाइ कै,अपने करि लीनै ।। चाल निराली तिनहुँ की,हरि रंग रंगीनै ।।१।। लालो लाल गुलाल से,अम्रित सिंचीनै ।। उबट चलत पग डगमगै,मद मत्त प्रबीनै ।।२।। मारग खंडे धार पै,नहि डोलत बीनै ।। नैन संतोखे प्रभू दरस,अन चाहन छीनै ।।३।। पुरजन परजन परिहरै,बनवासा लीनै ।। लिव लागी गोबिंद सिउं,प्रीतम हित चीनै ।।४।। आए सफले जगत महिं, आतम रस भीनै ।। तिनि संगति श्रीचंद्र लहि,रंग रवहि नवीनै ।।५।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हीरे लखता जौहरी,जोती का गिआनी ।। कंचन लखे सराफ ही,कसौटी तानी ।।१।। रोग पछाणत वैदराज,करि नाड़ि गहानी ।। सालिहोत्री जाण है,असपान कहानी ।।२।। न्रित नटी समझति रिदै,पग ताल पछानी ।। राग नाद सुर मूरछा,गाइक अनुमानी ।।३।। सिद्ध सबद करि भाखता,विआकरण सिआनी ।। बन मारग बधिक लहै,म्रिग आवन जानी ।।४।। पारब्रहम परमेस्वरै,लहि संत सुजानी ।। साधू संगति श्रीचंद्र,कथ अकथ कहानी ।।५।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सिहजा सेस विराजणा,बणिआ भगवानै ।। चौदहँ लोकन गमन गति,खगपति परधानै ।।१।। सीस ऊँचाई मेदनी,सेसै ऊँच थानै ।। रवि पावक का वेड़िआ,जग अरपित पानै ।।२।। महिखे शुंभ निशुंभ हति,दुरगा वडिआनै ।। कमलज डोलत कमल थिरि,जिअ जंतु रचानै ।।३।। नंग धड़ंगे गंग सिर,हर भंग पिआनै ।। सील धरम जप करम को,करता रस जानै ।।४।। दूख भूख रस साध का,किमि आन पछानै ।। पर उपकारी मुंड दे,श्रीचंद्र सिआनै ।।५।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। प्रीतम प्रेम निबाहिऐ,सिर भेट चढ़ाई ।। सूली ऊपर अनल हक,धुनि सुनी लुगाई ।।१।। तत्ती तविऐ व्रित रचि,मन ते विगसाई ।। ग्रीबा आगै खड़ग करि,नहि सी अलाई ।।२।। रहि भूखे नहि मंगिआ,दै राम दुहाई ।। भक्ख राख अणडोल रहि,अन आस तजाई ।।३।। लटकि रहहि सिर भार ह्वै,दुख सूख मनाई ।। ऊरध बाँह उभारीआ,बहु कलप बिताई ।।४।। पंच अगनि तप तापिआ,तन मास जलाई ।। श्रीचंद्र तिनि संत जना,हरि झलक लखाई ।।५।।२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मनमुख वेई जाणिऐ,जत संजम तिआगी ।। मुखहुँ भगति वखाण करि,जग लोगन ठागी ।।१।। गुरुमुखि वेस बणाइआ,विभिचारन पागी ।। आसा त्रिसना कूकरी,भौंकति मुख झागी ।।२।। वेद वचन परमान करि,लोभै दव जागी ।। तीरथ न्हाता किआ करहि,चित वित की लागी ।।३।। पाखंड करमु न पाइऐ,हरि जोति सभागी ।। लोक दिखावा धरम नहि,उर मिटत न दागी ।।४।। मन ते पाइऐ पारब्रहम,गुरुमुख सरणागी ।। अंतरि गोबिंद श्रीचंद्र,मेलहुँ वडभागी ।।५।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। लागी लगनि नाराइणै,किआ जगत विचारा ।। दूख भूख नहिं विआपई,उर नाम अधारा ।।१।। मोह माया सभ वीसरै,रंग मत्त खुमारा ।। किसहि जणावहि आप कउ,दूजा निरवारा ।।२।। आपहि रविआ आप महि,सगले संसारा ।। चिंत बिहानी जीवनै,जीवन रस सारा ।।३।। कीरति करम कमाइऐ,उर मोह गुबारा ।। किआ भव किआ हम किआ लहहि,सभ सूझ विसारा ।।४।। सुधा समानै राम नाम,किहँ साद उचारा ।। श्रीचंद्र साधू सरणि,होइ पार उतारा ।।५।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मै तन मन तिनि सौंपिआ,जिनि नाहिन चाहा ।। चाहनहारे आदमी,दुखदाइक माहा ।।१।। विरले जन संसार महि,जिनि लालस तिआगी ।। सतगुरु पूरे संग मिलि,होए वडभागी ।।२।। सबद कमाई कीतिआ,रंगे हरि प्रेमा ।। सफल जनम जग आइआ,उर चाह न छेमा ।।३।। दुख ते सुख परगट भया,चित अनंद अपारा ।। अखुट खजाना नाम धन,खाइ खरच न हारा ।।४।। साधु सरणि जो जन परे,तिनि कमी न काई ।। श्रीचंद्र तिहुँ लोक महि,ऊच पदवी पाई ।।५।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। संत करहि किआ लालसा,तन मन धन केरी ।। सभ ही गुण भरपूर है,विचरत नित फेरी ।।१।। जिनि सरबसु निज तिआगिआ,पर का किमि ग्राहैं ।। मोख पदारथ परम धन,पा सदा उमाहैं ।।२।। परमारथ हरि भजन संगि,मन प्रीति लगानी ।। नितप्रति रसना बोलदी,गुरु गोबिंद बानी ।।३।। उर निरमल बिन लालसा,नाराइण वासा ।। जपु गोबिंद गोपाल राइ,सिम्रित हरि स्वासा ।।४।। धंन धन्य जग आइआ,साधू अवतारा ।। श्रीचंद्र कुल सफल भी,सभ संग उधारा ।।५।।२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सात समुंदहि नदी सत,तीरथ अठसाठा ।। पंच सरोवर न्हातिआ,मन छूटि न गाठा ।।१।। कदे सरीर न सुद्ध होइ,मल मूत पलीता ।। लाखों जल घट डार कै,धो काची भीता ।।२।। मनमुख सेती संग करि,मल सगवी लाई ।। देव देवालै परस कै,उर लोभ जमाई ।।३।। मूरति पाहन कंचनै,सिर मुकुट सवारा ।। हीरै नैनी जड़ित करि,त्रिसना विस्तारा ।।४।। अंधी अंधा कर गहै,नहिं लहि हैं कूआ ।। संत बिहूना श्रीचंद्र,भव डुब डुब मूआ ।।५।।२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मन धोवै गुरु सबद संग,तबि होइ पुनीता ॥ अठसठ तीरथ मज्जना,तिनही पुन्य कीता ॥१॥ जिस अंतर मल उतरी,जिस कालुख खोई ॥ जिस किछु पाइआ साधु संग,मन जानै सोई ॥२॥ जिनि मन पढ़िआ आपणा,सोऊ महा गिआनी ॥ फीकी अग्रजै ताहि कै,कथ वेद पुरानी ॥३॥ पढ़े कुरान पुकारिआ,धुनि ऊच अलाई ॥ भरम भुला मन अंधुला,अंधेर ढुहाई ॥४॥ संत संग मन सुद्ध होइ,स्यामहु भव रामा ॥ तूल न संतन श्रीचंद्र,लख कोटि कलामा ॥५॥२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ संत संगति ते पाइऐ,जपु तपु नियमाई ॥ सत संतोख दया धरम,कर केरि कमाई ॥१॥ परधन परतन परत्रिया,कुतसित हरि कामा ॥ इंद्री वसि करि राखीए,परिहर परधामा ॥२॥ गुरु सबदी मन मांजीए,लहिऐ मन रूपा ॥ मन गुह गहरी जाइ कै,लखि जोती भूपा ॥३॥ जोती धुनि जब मन सुनै,तबि कुछ कछु पावा ॥ धुनि की कार कमावणी,प्रभु मारग धावा ॥४॥ धारा खंडे चलीए,बहु कलपन ताई ॥ जोती धुनि श्रीचंद्र सुनि,संतन गति पाई ॥५॥२९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || सत्गुरु सबदै लगिआ,मन निरमल होआ || पइआ छीरनिधि पोत गहि, हरि दरसन जोआ ||१|| तित ही ठवरै सिंधुजा,चरनन संगि लागी || कमलज सगरी स्रिस्टि लखि, भव लहिओ विरागी ||२|| उलटा खेल पिरंम दा,मन साज समाया || तन महि मन मन तन बिखै, किनहि भेद न पाया ||३|| मुख सिउं कहिओ न जात कछु,नाही अन नाहीं || मन गति अद्भुत अद्भुती,छाहीं पर छाहीं ||४|| मन साधै सिध होइऐ,मन मोख निधाना || श्रीचंद्र गुरु सबद लग, मन भा निरबाना ||५||३०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || मन माया मन ब्रहम ह्वै,मन साच असाचा || मन प्रिव्रिति निव्रिति मन,मन पक्का काचा ||१|| मन प्रक्रिति अप्रक्रिति मन,मन धरम अधरमा || मन आस्तक मन नास्तक,मन करम अकरमा ||२|| मन रागी मन राग तिआग,मन मोह अमोहा || काम क्रोध मन लोभहुँ,मन छोडि खरोहा ||३|| मन जोगी मन भोगीआ,मन नारी पुरुखा || मन निरभै भै भीत मन,मन अंतरि पुरखा ||४||

मन जंजाली वेड़िआ,मन हरत जंजाला ।। मन अकाल श्रीचंद्र है,मन सरब सु काला ।।५।।३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मन तीरथ सुच संजमी,मन जत सत पूरा ।। मन गहि खड़ग दुंदभि दए,मन रंकन धूरा ।।१।। मन बूडा मन तर रहा,सत सागर नारे ।। मन लाखो नभ पार पर,मन गमन पतारे ।।२।। मन साजत बैकुंठ पुर,मन जमपुर राचे ।। मन सत राज चलाइआ,मन के गन काचे ।।३।। मन तन साज सवारिआ,तन ही मन कीना ।। जहँ मन तहँ तन होत नहिं,तनि मन तजि दीना ।।४।। भूमि बुद्धि गुरु सबद काठ,गडि खूब टिकावो ।। श्रीचंद्र मन भूत कउ,इत कारज लावो ।।५।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तन मन धन जिहँ प्रभु दिआ,सो सिमरहु भाई ।। हरि सिमरन तजि जगत महि,को सांत समाई ।।१।। भव रचना करि पेखिऐ,पावक भड़काई ।। त्रिसना घट आकास कब,किहँ भरिआ आई ।।२।। एक मनुख न भरि सकै,उदरन लोगाई ।। लख उपकार कमाइऐ,सिर पाइऐ छाई ।।३।।

जिनि इह जगत उपाइआ,प्रतिपालै साई ।। राजा रंक बणाइ कै,सभ रीति चलाई ।।४।। जिउं भावै तिउं राखता,करि नीच उचाई ।। भजि गोबिंद गुपाल राइ,श्रीचंद्र लखाई ।।५।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। लख चउरासी भ्रम भ्रम,पाई नर देही ।। साधु संग गुरु सबद रंग,भज राम सनेही ।।१।। कारज कछू न सार हैं,भव आल जंजाला ।। जीअ की बिरथा नास है,भज हरि गोपाला ।।२।। त्रिपतित नहिं कबि इंद्रीअ,लख भोगत नारी ।। हरि हरि नाम अराधिऐ,भुख सरब बिदारी ।।३।। लहहि सुमेरु कुबेर धन,संतोख बिहूना ।। गोबिंद नाम जपंतिआँ,मन पूरन पूना ।।४।। महिल अटारीं वास करि,अन आसा लाई ।। संत संग त्रिण छापरी,श्रीचंद्र अघाई ।।५।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सच्चे ही सच्च सिरजिआ,भव खेल अपारा ।। सच्ची धरती साजीआ,सच्च सागर खारा ।।१।। सच्च अकास पताल सच्च,सच चंद सतारा ।। पवण पाणी बैसंतरा,सच्चा आकारा ।।२।। सत्त जोती सूरज रचा,त्रैलोक उजारा ।। सच कारण सच्चो करण,सच्चा पासारा ।।३।। निगमागम सच्च

संजमो,सच्चो वरतारा ।। सच्ची कुदरति धारीआ,सच करणैहारा ।।४।। गुरु सबदी सच पाई,सच्चा दीदारा ।। सच्चे सच्चा मिल रहै,श्रीचंद्र मझारा ।।५।।३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु परसादी पाइऐ,सच करम कमाई ।। मैं मेरी सभ वीसरै,सच्ची वडिआई ।।१।। सच्ची भगती रतिआ,सच्च जोति दीपाई ।। सच्ची संगति मिले सच्च,बिछुड़े न कदाई ।।२।। सच्चा गुरु सेवा सच्ची,सच कीमत पाई ।। सच्चा ही जपु जापिऐ,सच्च ताप तपाई ।।३।। सच्च पदारथ पाइ कै, सच्च रहै अघाई ।। सच्च मुकति सच संत संग,सच धरम मिलाई ।।४।। सच संतोखै सत दया,सच्च थान सुहाई ।। श्रीचंद्र सच लाग लगि,सच माहि समाई ।।५।।३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। कूड़ न चल्लै खसम नाल,हरि प्रभु सचिआरा ।। कूड़ मुलंमा पाजिआ,परखै सुनिआरा ।।१।। कूड़ै लालच लगिआ,बद्धे सिर भारा ।। चित्रगुप्त लेखा लिखै,सच कूड़ नितारा ।।२।। सच्चा वणज वणंजिऐ,मस्तक चमकारा ।। सच्चा धन पल्लै धरे,को ठगणहारा ।।३।। तिहुँ लोकी सच्च

परखिऐ,मुल पाइ अपारा ।। गुरुमुख सच्च विहाजिआ,सच्चे दरबारा ।।४।। सच्च करणी हरि भगति भाव,सच रूप उजारा ।। साध संगति सच नाम लगि,श्रीचंद्र उधारा ।।५।।३७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। संत संगति सिउं लागिआं,हरि नाम निवासा ।। संत संगति सिउं लागिआं, सच्चा भरवासा ।।१।। संत संगति सिउं लागिआं,सदगुण भरपूरा ।। संत संगति सिउं लागिआं, हउमै दुख दूरा ।।२।। संत संगति सिउं लागिआं,नहि आवण जाणा ।। संत संगति सिउं लागिआं, मीठा प्रभु भाणा ।।३।। संत संगति सिउं लागिआं,संजम संतोखा ।। संत संगति सिउं लागिआं, बिनसे कुल दोखा ।।४।। संत संगति सिउं लागिआं,मुख ऊजल नूरा ।। श्रीचंद्र संत लागि करि,वर मुकती हूरा ।।५।।३८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सचा सत्गुरु सेविऐ,मन वसि गति आणै ।। अंदरहुँ गरबै दूरि करि,चल्लै हरि भाणै ।।१।। जाप अजपा जापिऐ,सतसंग समाई ।। दया सील ब्रत जपु धरम,परमारथ पाई ।।२।।

एकंकार आराधिऐ,सुरगति दरसावै ।। त्रिकुटी छूटै जोति लख,अनहद धुनि गावै ।।३।। सच्चा जग सच्चा थिरा,सच्चे हरि संता ।। चीत न विसरै काल त्रिहुँ,निरमल गुरु मंता ।।४।। आपा आप पछाणिऐ, आतम रंग रांगै ।। नाम दान इस्नान द्रिढ़,श्रीचंद्र सु मांगै ।।५।।३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरुमुख हरि आराधिऐ,पाईए परगासा ।। अगिआन अंधेरा नास ह्वै,अधिआतम वासा ।।१।। सांत समाणै सहिज निधि,चंदन चंच भासा ।। प्रेम पदारथ पाइ कै,मन चढ़ै अकासा ।।२।। लगा रंग अपार ही,लालो लाल खासा ।। नाम खजाना संत संगि,द्रिढ़ता द्रिढ़ रासा ।।३।। सुरती सुरति मिलाईआ,गति रोध सु आसा ।। गरब गवाए जात तन,होइ दासन दासा ।।४।। गुण गोबिंद वखाणीआ,मन मत्त बिनासा ।। श्रीचंद्र भ्रम भै गइआ,रस राम रमासा ।।५।।४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। दुरत बिनासै साधु संगि,सच्च तीरथ न्हाइऐ ।। राम नाम जपु दिनसु राति,पूरै गुरु पाइऐ ।।१।। सुत्ता मन उठि जागिआ,निस मोह बिहानी ।। ऊची धुनि कंनी पड़ी,संखी सबद

बानी ॥२॥ गिआन सूरज परकास करि,तम गया पलाई ॥ उर बड़ संसै मिट गई,हरि राम दुहाई ॥३॥ जोती जोति उजालिअहुँ,नग प्रेम लभाना ॥ गुरु मंतर गुंठ फोलिआ,लभ साह खजाना ॥४॥ कोटिक करम न पुज्जई,हरि नाम समाना ॥ गुरु परसादी श्रीचंद्र,नवनिधि निधाना ॥५॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ किआ कहीए गुण तेरिआं,हरि अगम गुसाई ॥ जिस तूँ मेलहि आप सिउं,तिसु दुबिधा जाई ॥१॥ अंतरि सांत सरोवरै,निज महिल स्थाई ॥ नाराइण दर जाइ कै,बिसमय बिसमाई ॥२॥ क्रोध निवार अनंद भा,सत रूप समाई ॥ गोबिंद आंगन उतरिआ,माया पग लाई ॥३॥ गुरुमुख प्रेम दीवानिआ,प्रभु डंड मचाई ॥ आवण जाणा मेट कै,जोती जोति पाई ॥४॥ परमानंद अपार रस,किमि जीभा गाई ॥ श्रीचंद्र मसतुल मस्त,कहि राम दुहाई ॥५॥४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ भरते हीनी भारजहि,नहि राग सुहाई ॥ सूरे आजुध हीन ने,जंग जीत न पाई ॥१॥ बिन अनुराग न सोभई,भाई सिउं भाई ॥ बिन बसंत रितु लत्तिका,जावत कुमलाई ॥२॥

बिना चंद्रमा जामिनी,पग पग डरपाई ।। निरधन ग्रिह के माहि जन,आवन न सुखाई ।।३।। बिन पंकज सरवर सुभर,सोभा न सुहाई ।। बिना भ्रिंग के मालती,बिरथी गंधाई ।।४।। बिना कमठ के लच्छ पर,नहि बिसिख पुजाई ।। श्रीचंद्र बिन साधु संगि,अवगति नर जाई ।।५।।४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। घोरे बिना न होइ को,कबहूँ असवारा ।। राग तान के गिआन बिन,नहि गावनहारा ।।१।। बिन प्राची पिअरी परे,नाहिन भुनसारा ।। बिन अरविंद मिलिंद भी,सोभित गुंजारा ।।२।। बिना चांद नहि चंद्रिका,कोटहुँ ध्रुवतारा ।। बिन बेड़ी पावस नदी,नहि होवत पारा ।।३।। नैन बिहूना नहिं लखै,रंग रूप अपारा ।। हत्थ तुपक जिहँ नहि गही,सरदूल न मारा ।।४।। पग बिन नाही चालणा,बिन कर नहि कारा ।। गुरु साधु बिन श्रीचंद्र,नाही हरि दुआरा ।।५।।४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जटा जूट नख दीरघा,कन मुंद्रा पाई ।। अलख निरंजन बोलदा,धुनि सिङी वाई ।।१।। पहिरे भगवे बसन तन,सभ मूँड मुँडाई ।। संगि चेलका झुंड करि,अठसठ मजनाई ।।२।।

पुरी सुदामा दुआरिका,मधु मिथला जाई ।। अवधि बनारस जगंनाथ,आवंतिक थाई ।।३।। जंत्र मंत्र चेटक किए,बड सिद्ध कहाई ।। ऊँच सिंघासन साजिआ,धुनि रागन लाई ।।४।। रचे भुअन भागीरथी,मंडप तुंग छाई ।। हरि भगति विहूना श्रीचंद्र,नर गण डहकाई ।।५।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। कुत्ते मूँह कलि आया,जन काटन हेतै ।। लोभ विगुते मूढ नर,मद माया सेतै ।।१।। देव सकल धर पंख तन,चालै नभ पंथा ।। पाहन थिर भे मंदरीं,भूले सद ग्रंथा ।।२।। जपु तपु संजम हीन भव,दंभी विस्तारा ।। जहँ तहँ धरम न जोहिऐ,करमन लगि खुआरा ।।३।। मारग वेद न मन गहै,मुख रिचन उबाचा ।। चीतहुँ काल बिसारिआ,काचै संगि माचा ।।४।। मूरख पंडित अग्रणी, हुज्जत परिचारा ।। राम नाम बिन श्रीचंद्र,भ्रम भवै गवारा ।।५।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। कल्लर बोवत बीज कै,बोहल नहि पाइऐ ।। म्रिग त्रिसना जल हेत लगि,बिरथी सभ धाइऐ ।।१।। पाहन बेड़ी जो चढ़ै,कंठे किमि जाइऐ ।। नीर विरोलै अनिक बिधि,हरि कस्ट

उठाइऐ ॥२॥ मंदर हरि चंदउरड़ी,किहँ बास लहाइऐ ॥ अतर न अक्कहुँ ऊपजै,लख मेल मिलाइऐ ॥३॥ सरपहिं दूध पिआलिआं,बिख नाहि हराइऐ ॥ पाली फंडर धेनु लख,नहि खीर दुहाइऐ ॥४॥ काचे घट पानी भरे,खिन थिर न रहाइऐ ॥ बिन गुरु पूरै श्रीचंद्र,कलि राम न पाइऐ ॥५॥४७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ झूठे करम कमाइआ,अंतरि नहि भीजै ॥ माया मूठे दुरमती,मन नाहि पतीजै ॥१॥ आपन आप भुलाइआं,मनमुख अगिआनै ॥ अठसठ तीरथ नाइआ,बूडा अभिमानै ॥२॥ आसा त्रिसना बांधिआ,उर महा अंधेरा ॥ सुरन गिरा मुख महि रही,फेड़न कै घेरा ॥३॥ साधु संगि भै ऊपजै,हरि भगती लागै ॥ दया धरम सच पाईए,सोइआ मन जागै ॥४॥ गुरु पूरे ते पाइऐ,सच नाम वडाई ॥ जोति जगाई श्रीचंद्र,मग सूझसि नाई ॥५॥४८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ साधु संगि भजि काल द्रिढ़,जपु नाम अकाला ॥ तीनहुँ वस्तू विसाहिऐ,तूटै जम जाला ॥१॥ नाम दान इस्नान संगि,सहजे मग जाणा ॥ सच गांठि संतोख उर,हरि मंनण

भाणा ॥२॥ संत सेव मुख राम राम,करुणा रस रंगा ॥ कर जिहबा उर उज्जला,सच लाल उमंगा ॥३॥ हउमै त्रिसन अगिआन तम,बिनसै लहि जोती ॥ हीरे माणिक मणकिआं,संग पोए मोती ॥४॥ धरम करम भ्रम भेद बिन,आसन सच्च पाइऐ ॥ चित्रगुप्त श्रीचंद्र दुख,जमदूतन हाइऐ ॥५॥४९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ मनमुख सेती संगि करि,मुंह कालिख लागै ॥ धोए लाख अनेक जल,नहि उतरस दागै ॥१॥ फेड़े फेड़ कमाइऐ,माया की आगै ॥ जिउं जिउं करहि बुराईआं,चंगिआइआं भागै ॥२॥ तिउं तिउं जल्लण धस्सीए,बहु गहिरे पागै ॥ बाहरि धोई लाख जिउं,उर मेचक कागै ॥३॥ गुरुमुख संगति पाइऐ,उच मस्तक भागै ॥ परमहंस मोती चुगहि,मानस होय बागै ॥४॥ नाराइण गोपाल गुण,सिम्रिति अनुरागै ॥ माधव राम श्रीचंद्र प्रभु,गावत निसि जागै ॥५॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ रामो राम निधान है,अनखुट अपारा ॥ गुरु परसादी पाइऐ,गुरुमुख निस्तारा ॥१॥ गरब गवाए आपणा,अधिआतम सारा ॥ जोती जोति प्रगासिऐ,बिनसै

अंधिआरा ॥२॥ सत सील सुच संजमै,जीवन लिवतारा ॥ साधु संगि हउमै गई,जपु नाम अधारा ॥३॥ निरमल करम कमाईए,बिचरत संसारा ॥ राम नाम सच वणज है,गुरुमुख वणजारा ॥४॥ अहनिसि लाहा अगला,अनुभव सुख सारा ॥ हरि हरि नामै लगिआ,श्रीचंद्र सवारा ॥५॥५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ नौका जग महि पार लगि,सभ बिछुड़ि जाना ॥ भिंन भिंन पंथी परे,इक दूजे अञाना ॥१॥ नहीं सूझि कहँ जाइ हैं,कहँ ते भए आना ॥ कित कूपै पानी पीऐ,किआ खाना दाना ॥२॥ दम किहँ बल बहि लए हैं,बितै हैं मध्याना ॥ रैणि लगे ग्रिह जा थिरहि,किआ चलब बिहाना ॥३॥ तौसा केतिक संग है,करबे गुजराना ॥ कवन मेल मिलिऐ हमै,किमि काम कमाना ॥४॥ अलप बुद्धि मत अलप सी,किआ लहि अगिआना ॥ एक आस श्रीचंद्र हरि,करते भगवाना ॥५॥५२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ माधव मोहन गोबिंदा,जन सरणि तुमारी ॥ राखहु अपने चरन मै,हरि किरपा

धारी ॥१॥ कोऊ करम न जानउ,किमि भजहुं मुरारी ॥ मोह माया अगिआन वसि,नहि कछू समारी ॥२॥ निसि अंधिआरी पोत सिंधु,दिसि भ्रम मझारी ॥ बिन आसर रिद डोलई,जीवन गा हारी ॥३॥ निकट न सूझत कोऊ नर,किहँ करऊँ पुकारी ॥ सभ बिधि सभ आसा चुकी,नभ ओर चितारी ॥४॥ तेरे जन सच बोल है,जल थल गिरिधारी ॥ तेरी टेक गोपाल राइ,श्रीचंद्र निहारी ॥५॥५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ पेखहु आपन ओर प्रभु,हरि किरपा धारे ॥ हम ते कछू न होइ है,थक परे दुआरे ॥१॥ करम धरम नहि जानऊ,भरमे भरमारे ॥ तूँ ही राखनहार है,माया संसारे ॥२॥ भरम भुलाने अंधुले,लकुटी करि डारे ॥ जे तूं देहैं मिहर करि,नैनन दिस तारे ॥३॥ तब ही हम कछु लहि सकहि,भव अंधु गुबारे ॥ करहु क्रिपा जगजीवना,दासन दासारे ॥४॥ मेलहु अपने संत जन,गहिं भुजा पसारे ॥ भ्रम भै छेद मिलाइऐ,श्रीचंद्र मुरारे ॥५॥५४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हम दासन के दासरे,प्रभु खसम हमारा ॥ ऊचे ते ऊचा महा,जा का दरबारा ॥१॥

अनिक जुगति करि रचि रहिआ,जोऊ संसारा ।। ऊच नीच लखि कोटि जंतु,कछु अंत न पारा ।।२।। कुदरत कीम न पाईए,प्रभु अलख अपारा ।। बिन बिनती नहि जाणऊ,हरि बिरद तुमारा ।।३।। सुनत तुहारो रूप बिनु,किमि लहउं दीदारा ।। मैं गरबै गरबानिआ,तूँ गरब प्रहारा ।।४।। मिहरंमत करि आपणी,मति देहु गवारा ।। मन महि नित्त निवास रहि,श्रीचंद्र मुरारा ।।५।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किस बिधि प्रीतम हरि मिलै,जन संत बतावौं ।। कवन भांति सेवा करउं,किआ कहि रीझावों ।।१।। कवन करम करि पहुँच हउं,ढिग प्रीतम पावौं ।। मन माया महि वेड़िआ,नहि छूट सकावौं ।।२।। जबि जानति द्रिगवंत मैं,तबि अंध लखावों ।। बधरो बन स्त्रोता बहहि,बिन सबद सुनावौं ।।३।। कर चाहत कछु ग्रहण को,खाली पछतावौं ।। पग धावन बिन नहि रहहि,धावौं नहि जावौं ।।४।। हरि सज्जन प्रभु मेरिआ,कित पंध पंधावौं ।। निकटि होइ श्रीचंद्र के,सुनु लेहु अलावौं ।।५।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। लागी प्रीति गोबिंद प्रभु,अब तजी न जाई ।। अन कउ जाइ निहोरिऐ,फिरि फिरि पछुताई ।।१।। जग महि लोगन बिबिध बिधि,घन दई दुहाई ।। सुनी गयो लखि दंभ कउ,चित रहिओ लजाई ।।२।। काहूँ पाहन थापिओ,को वाक अलाई ।। को जल बूंदन बांटई,तुलसी दल पाई ।।३।। फल फुल मेवे भोग रस,दुनीआ डहकाई ।। इक आवहिं इक जावहीं,सिर छाई पाई ।।४।। पूरब पच्छिम उत्तरी,दक्खिन मोह माई ।। मनमोहन श्रीचंद्र कउ,निज देह सुझाई ।।५।।५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मैं अंधुला अगिआन मति,किछु सूझत नाहीं ।। बन मैं सुनत न कोऊ कहि,को गहै न बाहीं ।।१।। सूँ सूँ धुनि कानन परे,पातन खरकाहीं ।। हस्ती सिंघ दहाड़ ही,भय सो उर दाहीं ।।२।। हित खावन के ढिग अहै,उपचार न पाहीं ।। सिर पीटऊ द्रिग जल ढरै,भरि स्वास उभाहीं ।।३।। गरत कि सर पब्ब है किधौं,पग धरउं किथाहीं ।। चित चक्रित बिलपत दुखी,नदि बहित अथाहीं ।।४।। साखाम्रिग भालुक स्रिंगाल,धुनि सुनि दै धाहीं ।। कीनि पुकार मुरारि हरि,श्रीचंद्र महाहीं ।।५।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। भोरी कोकिल कूकती,कारो रंग लीना ।। को तुव सुनहि पुकार को,कारो है सीना ।।१।। स्रुति आंबन कै तन नही,तरु पांति अचीना ।। रूप तुहारो काक सिउं,मेली सोऊ कीना ।।२।। चटिका कीर कपोत लव,चक्रहिं नहिं चीना ।। जल नभ भेद विजातीआ,धुनि सुनी न मीना ।।३।। नाग हरिन हूँ नहि सुनी,ता ते अन लीना ।। पुहप प्रफुलित राज रितु,सभ नेहे हीना ।।४।। बिरही बिरही को लखै,पति पतनी जीना ।। हरि प्रीतम हित श्रीचंद्र,कूकी उर दीना ।।५।।५९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। अगम अगोचर साहिबा,किउं करि तुहि पावों ।। करहु क्रिपा जग जीवना,हरि संत मिलावों ।।१।। नाम दान इस्नान करि,प्रभु भगति द्रिढ़ावौं ।। करम धरम सुच संजमा,जत सत सिखलावौं ।।२।। तीरथ ब्रत सु सील दया,जम नियम कमावौं ।। करुणा मुदिता मैतरी,उर में ठहिरावौं ।।३।। दूख न देवौ किसे जिअ,सभ नर गल लावौं ।। साधु चरन नित सेव करि,सुख सहिज समावौं ।।४।। गोबिंद मधुसूदन हरी,माधव मुख गावौं ।। मया तुमारी श्रीचंद्र,अत्यंत लखावौं ।।५।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हमरे करम न लखहु प्रभु,तुम मया करीजै ॥ अलप बुद्धि अगिआन मति,नहि परिहरि दीजै ॥१॥ तुहि पेखत अवगुण रते,पापन के भीजै ॥ निंद करहि संत साधु की,प्रभुता ते खीजै ॥२॥ विभिचारी परत्रिअ रति,मोह लोभ प्रसीजै ॥ बाहरि ऊजल कापड़,अंतरि कालीजै ॥३॥ निरवैरे संग वैर रचि,दुरबोल बुलीजै ॥ केतो कछु वरणन करउ,पावक नहि बीजै ॥४॥ काम क्रोध के वसि परे,त्रिसना रस गीजै ॥ तउ हू भुजधर श्रीचंद्र,प्रभु मेल मिलीजै ॥५॥६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ तेरे गुण हउं किआ कहां,हरि अंतरजामी ॥ चीत न धारहु कबहुँ भी,दासन की खामी ॥१॥ दीन दयाल क्रिपाल प्रभु,करुणा रस धामी ॥ लाखहुँ ही तुम तार ले,बड कोही कामी ॥२॥ पतितहुँ पतित पुनीति करि,राखै सरणामी ॥ तुम वडिआई तुमहि कउ,बन है अन कामी॥३॥ निपजे रक्त रु बिंदु ते,खाटैं बदनामी ॥ सुभ मग पग नहि राखिआ,सूकर मल ठामी ॥४॥ चरन कमल की टेक दै,कीजै अनुगामी ॥ श्रीचंद्र लघु ते लघू,तुम बडे बडामी ॥५॥६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिस ठाकुर का दास हउ,सो सभ ते ऊचा ।। डाढे ते डाढा महाँ,मूचे ते मूचा ।।१।। टेढी आंख न को लखै,लख प्रभु के चेरे ।। सस्त्रधारि लख दुस्ट गन,खिन माहि निबेरे ।।२।। जहँ जावउं तहँ नाल है,प्रभु अंतरजामी ।। घट घट पेखनहार सों,किमि करहि खुनामी ।।३।। मुहि निरगुण मति थोरीआ,तिस गुण नहीं जाता ।। बखसनहारा दास का,हरि करम बिधाता ।।४।। सिर साहां के साह बड,बहु पर उपकारी ।। श्रीचंद्र कर सीस धरि,सभ दुरत बिदारी ।।५।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुन गावउ गोबिंद के,जिनि सभ कछु दीना ।। निरगुण कउ गुण बखस कै,अपना करि लीना ।।१।। क्रिपा कटाख्य विलोकिआ,दुख दूर पराने ।। नर नारी गन मन हिरे,हित सेव लगाने ।।२।।सभ पर के निज के भए,हरि किरपा धारी ।। भाव भगति प्रगटी रिदै,मुख महि बनवारी ।।३।। कल अपनी वरताइआ,अद्भुत जग माही ।। नाराइण प्रभु राम स्याम,हरि जाप जपाही ।।४।। क्रिपा मींह वरसाइआ,सभ स्रिस्टि ठराई ।। श्रीचंद्र करुणानिधे,बड छहबर लाई ।।५।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ दुस्टी सभा विगुचिऐ,भाउ दूजा पाईऐ ॥ काम क्रोध मद वासना,रसकस वडिआईऐ ॥१॥ दुखै दुख कमावणा,लै वढी खाईऐ ॥ कूक पुकार न को सुणै,दुखवंत लुगाईऐ ॥२॥ पति पावण हित जाइऐ,पति जाइ खुहाईऐ ॥ कूड़े कूड़ा मिल रहहि,कूड़े मग धाईऐ ॥३॥ कूड़ी नीयत कूड़ धन,कूड़ी रज साहीऐ ॥ कूड़ प्रधान दिवान खान,कूड़ों परिचाईऐ ॥४॥ कूड़े मलक जगीदार,सिकदार अलाहीऐ ॥ श्रीचंद्र तजि कूड़ कौ,सच्चे लिव लाईऐ ॥५॥६५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ सेवक सेव कमावणी,जे साहिब भावै ॥ जो कछु देह सु खावणा,जो देह सु पावै ॥१॥ सिर ते मंनण हुकम है,जिउं प्रभु फुरमावै ॥ जे बहिणा मुख सिउं कहा,सुख लहि बेदावै ॥२॥ नाह न कबहूँ बोलणी,सेवक को भावै ॥ कार कमावण मुद्दआ,बखसस हरि नावै ॥३॥ मन की प्रीति निहारिऐ,सेवक वरसावै ॥ जल नीवाणै जावणा,सुक ऊचै थावै ॥४॥ दभ गरीबी जाण कै,नहि पुटिवावै ॥ गरब गवाए श्रीचंद्र,गुरुमुख हरि धिआवै ॥५॥६६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जपु जपु जपु उदगीथ का,सुख सहज समाया ।। राम नाम दोइ अखरै,थिर सास कराया ।।१।। जिनि धिआया हरि हरि प्रभु,तिनि ही रस आया ।। ऊझड़ि जांदे पंथीए,मारग दिखलाया ।।२।। मन खड़ सुक्का टुंड,गुरु हरिआ लहिराइआ ।। पाणी प्रेमहि पाइ कै,करि अमर थिराइआ ।।३।। अभर भरिआ सुभर सर,अम्रित हरि राइआ ।। पाप विकार दुख रोग हरि, अमरापद पाइआ ।।४।। बारह वंनी कंचनहि,नहि बाहुड़ ताइआ ।। गुरुमुख आतम विगसिआ, श्रीचंद्र तलाइआ ।।५।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। कच्चा रंग कुसुंभड़े,धुप्पै उड जाणा ।। मनमुख सेती संग करि,बहुड़ो पछुताणा ।।१।। दिन दुइ प्रीति न चलई,नहिं पहिरण खाणा ।। जिच्चर रस कस पावते,तिच्चर संग साणा ।।२।। खाणा पीणा मुकिआ,गंदे गंदाणा ।। दुख महि साथ न देवई,मग तिआग पराणा ।।३।। पक्के सेती संग

करि,सुख सदा विहाणा ।। आपद जब सिर आवई,थिति पक्का माणा ।।४।। संत न जमपुर विछुड़ते, किआ लोक विडाणा ।। पक्के साधू श्रीचंद्र,जिनि मंनिआ भाणा ।।५।।६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। हांडी काठ चढ़ाइ कै,किनि रिद्धो भात ।। आमिख सुरा अहार ते,किहँ भी कुसलात ।।१।। धन धरती कै लोभ लगि,किहँ हने न तात ।। कामिनि काम विआपिआ,को नहि नर घात ।।२।। सत्रु मित्र जहँ गिआन नहि,सिर चढ़ है बात ।। मूरख सेती संग करि,को नहि पछुतात ।।३।। दिनसु रविहि जिहँ पेखिआ,वहि पेखहि राति ।। जिहँ बहु भोगहि भोगिआ,रोगी वही गात ।।४।। थान थान महि मान जिहँ,अपमान वसात ।। बिनु नाराइण श्रीचंद्र,थिति कौन रहात ।।५।।६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। कलप अनेकन आरजा,वसि कालहि होणा ।। भोगन भोग भुगाइअन,अंत रोणा धोणा ।।१।। कीरति लोक वखाणई,करि करि वडिआई ।। बिना भजन भगवान के,सहि ही बिनसाई ।।२।। स्यंदन हस्ती पाखरै,चतुरंगनि संगी ।। दुंदभि घोख कराइ कै,जीतै सरवंगी ।।३।।

कर जोड़े अग्रज थिरै,अनुचर गण राजा ।। विजै डंक तिहु लोक महि,ऊची धुनि बाजा ।।४।। थिर नहि कोऊ रहि सकै,किउं करहि पसारा ।। संगति साधू श्रीचंद्र,थिति गुरु करतारा ।।५।।७०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। राम नाम की टेक गहु,भजि गुरु सरणाई ।। साधु संग बिन जीवना,सभ निहफल जाई ।।१।। सोना रुपा माल धन,को संग न जाई ।। भजि गोबिंद गोबिंद प्रभु,संतन लिव लाई ।।२।। रंकन दान दिवाइ कै,बडि कीरति पाई ।। अंनखेत्र कुरुखेत्रै,बहु ले वरसाई ।।३।। भूमि बसन विप्रन दए,धुज तुंग फहराई ।। मिलि जाचक सभ ही कहहिं,भल भल फुरमाई ।।४।। पहिर दुसाले मखमली,लोगन दिखराई ।। बिनु हरि सिमरन श्रीचंद्र,कूड़ी वडिआई ।।५।।७१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। संग न चाले कहूँ के,घोड़े रथ नाग ।। भजि नाराइण हरि प्रभू,करि इन कउ तिआग ।।१।। जनम जनम के पूरबल,तुव जागहि भाग ।। चरण कमल गुरुदेव महि,होवै अनुराग ।।२।। नींद अविद्या सो रहिआ,अब तौ उठि जाग ।। सत्गुरु नाद वजाइआ,सुन रे स्रुत लाग ।।३।।

तुर चल्लणु इस जगत ते,पड़ जाणा आगि ।। लागी पंगति जुगन ते,नहि कबहू थागि ।।४।। खावत नहि त्रिपतासिआ,कलि काला नाग ।। श्रीचंद्र गोपाल हरि,भजि रामहि राग ।।५।।७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। एक कदम जे चलीए,नाराइण ओरै ।। कोटिक सो चलि आवई,हरिजन कै धोरै ।।१।। जाचउ मया मयाकरहि,नहिं क्रुधित भोरै ।। दोखन दोख न परिहरै,कबहू द्रिग फोरै ।।२।। कोटि अपराधी बखस करि,रंगे पट कोरै ।। अतुट खजाने तिनहुँ दै,चुनते भठ भोरै ।।३।। पेखत नाही जात पात,सुनतो हटकोरै ।। रूप रंग नहि जानई,लख कारे गोरै ।।४।। जो जो आया सरणि मै,अम्रित झकझोरै ।। हरि सिउं वरसाए श्रीचंद्र,अब लौ नहिं थोरै ।।५।।७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। आवउ गावण हारिओ,गुण प्रभु कै गावहिं ।। सत्गुरु पूरै भेट कै,अविनासी रावहिं ।।१।। आपन आप निवार कै,रंग प्रेम समावहिं ।। भाणा साहिब सीस धरि,हरि पुरुख धिआवहिं ।।२।। मल माया मोह परिहरै,उर निरमल थावहिं ।। आंगण छाड सिंघासनो,फल फूल

बिछावहिं ।।३।। पहिरहि बाग सुहावणा,पग किंकिणि रावहिं ।। करि कीरति नाराइणै,ऊचै गुहरावहिं ।।४।। साखी संत गोपाल कहि,नहि बिरथा जावहिं ।। हरि प्रभु सिमरत श्रीचंद्र,कैवल्य पद पावहिं ।।५।।७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पवण पाणी बैसंतरो,हुकमै वरतारा ।। सूरज चंद सतारिआं,गरदानै डारा ।।१।। चुगण चोगै जीअ जंतु,किछु अंतु न पारा ।। गुरुमुख मनमुख हुकम महि,वरतति संसारा ।।२।। नरमी गरमी अंदरीं,फिरते फेरारा ।। मनमुख द्रिस्टि जगत महि,गुरुमुख निरारा ।।३।। हुकमहि खाली गगन है,को भरनैहारा ।। पावक राखत पाहनै,हुकमन करतारा ।।४।। मनमुख हुकम न बूझई,मन माहि अफारा ।। गुरुमुख हुकम पछाणिआ,श्रीचंद्र मुरारा ।।५।।७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। ऊच नीच सभि हुकम महि,भरमहि भरमाए ।। धुरि करते फुरमाइआ,तित कारज लाए ।।१।। केते मंगण मंगते,हनुमान सदाए ।। केते गोपी क्रिसन होइ,रंग रास रचाए ।।२।।

रामचंद्र केते भए,रावण रण घाए ।। इंद्रजीत कुंभकरण भे,लछमन सिय माए ।।३।। जहँ दाणे तहँ खावणे,सनि वेख सबाए ।। पैरीं पायल मानवी,ठुमकत ठुमकाए ।।४।। अकल कला नहिं बुझई,सभ कार लखाए ।। श्रीचंद्र हुकमै बधा,हरि तार लगाए ।।५।।७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। भाणै अंदरि सांत है,भगती लिव लाई ।। सभ थल भाणा वरतदा,नहि रंचि फिराई ।।१।। जल महि बोहिथ पाइऐ,वथु भारि लदाई ।। भाणै महल बुलाईए,सच खसम रजाई ।।२।। मारग जांदे भाणिओ,रहि भुल भुलाई ।। भावै भाणा सेवकहि,गुरु सेव कमाई ।।३।। सच्ची कार कमावणी,सच्ची वडिआई ।। भाणै अंदरि आइआ,भाणै उठ जाई ।।४।। सुख दुख भाणै विच हहि,वस चलै न काई ।। साधु संग भाणा लहहि,श्रीचंद्र समाई ।।५।।७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हुकम मंन विगसावणा,गुरुमुख रिद भावै ।। करते केरे हुकम महि,जग कार कमावै ।।१।। खड़सुक कीते इक प्रभु,इक हरा लहिरावै ।। इकनी रेता उडि रही,इक जल

अनथावै ॥२॥ इकना धरनि उपाय कै,आकास उडावै ॥ इकना आपै बखसदा,इक आप खुवावै ॥३॥ इकना अगनि न साड़ई,इक पाणी दहावै ॥ इकना भरम भुलाइंदा,इक मारग पावै ॥४॥ कोइ न दिसै बाहरा,सुर असुर नरावै ॥ श्रीचंद्र पारब्रह्म प्रभु,हुकमहि वरतावै ॥५॥७८॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ संतन हरि प्रभु मंनिआ,रंग लाल बणाया ॥ बिख बिखिआ सभि परिहरी,सूही हरि माया ॥१॥ इको इक वरतदा,जल थल महि राया ॥ साजे भांडे आप ही,फिर करदा जाया ॥२॥ जे भुख ओसे दित्तीआ,को सकत रजाया ॥ जे तुधु त्रिपति अघाइआ,को भुख तिहाया ॥३॥ आप भुवाली दितीअन,बड चक्र चलाया ॥ मतसर अंदरि पाइ कै,निज आप लुकाया ॥४॥ सत्गुरु पूरा जे मिलै,मति दे समझाया ॥ मन मैला श्रीचंद्र सुद्ध,हरि नाम धिआया ॥५॥७९॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ गुरुमुख मन समझाइआ,हरि बोले बोला ॥ परमेस्वर गोपाल गुण,रंग रंगणि चोला ॥१॥ सुख दाता दुख भंजना,प्रभु पुरुख अतोला ॥ गोबिंद जन प्रतिपालदा,दातार अमोला ॥२॥

त्रिभंगी मनमोहनो,सावल रंग ढोला ।। खेल खिलावै जीअ जंतु,बनि धनठि विचोला ।।३।। हेठ उताहां जावई,झोलति हरि झोला ।। आपे रखै आपणौ,पावक मध्य होला ।।४।। प्रेम पलीता जन दिआ प्रगटाऐ सोला ।। दासन दासा श्रीचंद्र,गोलन का गोला ।।५।।८०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। हरि जन नाम धिआया,रस सुधा समाना ।। नाराइण गोबिंद हरि,अपना करि जाना ।।१।। मन मंने परतीति होइ,सर सांत सनाना ।। राम नाम गुण कीरतनि,निसि दिओस बिहाना ।।२।। सहिज समुंद विरोलिआ,रतनान लभाना ।। मोहनि मोहिआ रसमि रंग,अनमोल खजाना ।।३।। असंख नाम प्रभु प्रीतमै,नित रसन बखाना ।। प्रेम ठगउरी पाइ कै,हरि कीआ दिवाना ।।४।। मैं तिस का उह मेरड़ा,मध्य आन न आना ।। प्रभु तिनि मै सो प्रभू मै,श्रीचंद्र समाना ।।५।।८१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। आपे बोली बोलदा,मध्य संतन आई ।। संता अंदरि बैठ कै,मारग बतलाई ।।१।। चाल निराली गुरुमुखी,पग पग हरि नाई ।। गुरु दीखिआ प्रभु मन वसै,जपु तपु लिव लाई ।।२।।

हउमै दुबिधा दूरि करि,अठसठ सर पाई ।। मन निरमल मुख उजला,हरि दरगह जाई ।।३।। निहचल मति पहिराइआ,वडी वडिआई ।। आवण जाणै परिहरै,प्रभु अगम समाई ।।४।। विछुड़िआ हरि मेलिआ,गोबिंद जपाई ।। लाला गोला संत का,श्रीचंद्र कहाई ।।५।।८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि दासन को दासरा,सद चरनी लागउं ।। सेवक सेवा लाइऐ,होइ उतम भागउं ।।१।। चरन धोइ अम्रित पीओ,उतरे उर दागउं ।। सीतल कीना नाम दे,बखसाए आगउं ।।२।। कीरति सबद वखाणीए,परभातै जागउं ।। दया धरम संतोख सत,जपु तपु अनुरागउं ।।३।। सच्चा साक न तुटई,सद रहै सुहागउं ।। सच्चा सउदा हट सच,कसौटी पागउं ।।४।। ईत ऊत नहि डोलई,धाइऐ सुभ मागउं ।। साधु संगि श्रीचंद्र रस,पाइऐ वडभागउं ।।५।।८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राम राम जोई रमै,सोई रामाणा ।। हउमै जाति गवाइ कै,हरि संग समाणा ।।१।। पूरा सत्गुरु पाइआ,सिर भाणा भाणा ।। जपु जपु नाम गुबिंद का,खोया आपाणा ।।२।। साधु संगि

रस आइआ,संतोख सु जाणा ।। सील बरत तप निसचला,आसन बंधाणा ।।३।। अच्चुत अलख अगम हरि,सद संग सुहाणा ।। मोह माइआ बिख बीसरी,रस अम्रित पाणा ।।४।। आप खोइ आपहि भए, हरि नेड़ा आणा ।। श्रीचंद्र संत पाइआ,अनुभव रंग माणा ।।५।।८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। संतन के परसाद ते,हरि नाम धिआया ।। सत्गुरु पूरा भेटिआ,रस प्रीतम पाया ।।१।। राम नाम गुण कीरतन,मंगल पद गाया ।। मुख अम्रित संचार कै,मुरदा जीवाया ।।२।। बिखै विकार मिटाइ कै,सुख सांत समाया ।। हउमै रोग बिनासिआ,दारू हरि खाया ।।३।। अगिआन तिमिर सभ दूर भा,रवि रस्मि दिखाया ।। भरमत फिरत विदेस महि,अपने घरि आया ।।४।। जनम जनम का वीछुड़ा,पारब्रहम मिलाया ।। क्रोध काम हरि श्रीचंद्र,निसचल ठहिराया ।।५।।८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राम राम रम राम राम,रमि राम रमीजै ।। हरि हरि हरि हरि हरि हरे,हरि हरि हरि भीजै ।।१।। माधव माधव माधवा,माधव मधु छीजै ।। कैटभजित गोपाल प्रभु,मुर हरन

जपीजै ॥२॥ स्याम गुबिंद गोपाल देव,प्रतिपाल जनीजै ॥ गिरिधर रावण हारीआ,दैतारि कहीजै ॥३॥ अंतरजामी सुखनिधान,कंसारि भनीजै ॥ दीन दरद दुख भंजनहि,सत्रुन अनछीजै ॥४॥ बनवारी बंसीधरा,कुबिजा रंग गीजै ॥ सीतापति श्रीचंद्र कहि,राधावर लीजै ॥५॥८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ एकंकार आराधिऐ,सभ ही वसि आणै ॥ परम सांत सुख पाइऐ,चलि सत्गुरु भाणै ॥१॥ गुरुमुख चाल निरालीआ,हउमै हरि जाणै ॥ दरगह बाह लुडाईए,रंग रलीआं माणै ॥२॥ राग नाद सभ परिहरै,सच मारग धाणै ॥ प्रभु बिन अवरु न पेखणा,तिहुँ लोक रंञाणै ॥३॥ लेवा देवी एक संग,अन छोड टिकाणै ॥ बखसस बोहल पाइआ,धन धान वधाणै ॥४॥ साधु संगति कै वारणै,जित लागि सिआणै ॥ दासन दासा श्रीचंद्र,पायो निरबाणै ॥५॥८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ मुंद्रा कंनी गुरु सबद,सिंङी हरि वाई ॥ राम विभूति तन मली,आदेस जगाई ॥१॥ गुरु गोरख उपदेसिआ,जनमै नहि जाई ॥ ताड़ी लागी नाम महि,धूणी हरि

माई ॥२॥ रावल रायो राम राम,अचरज मत पाई ॥ अलख निरंजन गाइऐ,गुण भीखिआ ताई ॥३॥ राज विहाइआ दुरमती,धुनि सुणी लुगाई ॥ आया चेले संग लै,जोगी पथ आई ॥४॥ सहिज समाधि समाणिआ,अन आस चुकाई ॥ नैन संतोखे राम रंग,श्रीचंद्र गुहाई ॥५॥८८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ राम नाम सुख ऊपजै,परिहरि जग आसा ॥ मानुख केरी प्रीति का,कूड़ा भरवासा ॥१॥ दुख में भागत संग तजि,हितु सास गिरासा ॥ लोभी धोखै पूतला,दुख मै भजि पासा ॥२॥ प्रेम लोभ बिप्रीति पख,उलटै अहिसासा ॥ अंतरि काले लोभीआ,मंद मंदे वासा ॥३॥ सच्चे परदा पाइआ,जल गंद विनासा ॥ तन धन जाणै आपणा,हनि मित्रन खासा ॥४॥ मरना चीत न आयो,जीवन थिरवासा ॥ संतन काल पछाणिआ,श्रीचंद्र सुखासा ॥५॥८९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ लोक लाज निंदा को परिहर,राम नाम चित लाईऐ ॥ सच्चे मारग चलदिआं,मन भै न रखाईऐ ॥१॥ सच्च पिता दुइ पूत जन,लिव रखत महाईऐ ॥ निरभै निरवैर पद,संग सच्च

सहाईऐ ॥२॥ परमेस्वर कै दाहनै,सच वस्तु सदाईऐ ॥ बाम अंग महि कूड़ है,पथ उझड़ जाईऐ ॥३॥ सच्चे केरा रूप रंग,को साधू पाईऐ ॥ कूड़ा जग बिउहार लख,लोभै अगवाईऐ ॥४॥ मनमुख कूड़ि विआपिआ,केवल धन दाईऐ ॥ सच्चा साधू श्रीचंद्र,रत राम रमाईऐ ॥५॥६०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ सच्चा सत्गुरु पूरनो,सच्च धरमसाला ॥ सच्ची हटी संत संग,सच्चा हरि माला ॥१॥ गुरुमुख सच्च वापारिऐ,धन खटिआ लाला ॥ गुरुमुख गुरुमुख मेल करि,राम नाम समाला ॥२॥ जौहरी हीरे माणिका,वणजे परवाला ॥ कौण कमी तिस ग्रिह विच,जित सच्च समाला ॥३॥ सच्च सच्चे ते पाइऐ,सच्चे गुण आला ॥ सच्चा रंग न उतरे,दुख लहै उजाला ॥४॥ सच्ची दरगह साख सच्च,सच धरम सुखाला ॥ साधन सच्च विहाझिआ,श्रीचंद्र भूपाला ॥५॥६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ माई,मै सच्च लधिआ,संतन पहि जाई ॥ पूरन अविनासी गुरू,सच्च पैज रखाई ॥१॥ मैं सिर गुरु पहि भेट धरि,हरि शुकर अलाई ॥ स्त्रुत द्रिग रसना नासिका,नहि हरकत

काई ॥२॥ का को वरजै को रहहि,जब स्वास पराई ॥ काढो काढो सभ भनै,सनबंधी भाई ॥३॥ जो हितु राख भनत है,बावर सभ गाई ॥ मारग एको पाइआ,गुरु चरण सिधाई ॥४॥ आवण जाणा रहि गया,चूकी अन धाई ॥ राम नाम सत श्रीचंद्र,मुख कहहु लुगाई ॥५॥६२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ सत्गुरु पूरा पाइ कै,चरनाम्रित घूटा ॥ अनुभव सबद प्रकासिआ,सभि बंधन तूटा ॥१॥ मै मेरी हउमै गई,ममता मद छूटा ॥ राम नाम धन लाधिआ,सच पुंज अखूटा ॥२॥ हम काहूँ के सत्रु नहि,को मित्र न जूटा ॥ आपा परका दूर भा,अम्रित रस घूटा ॥३॥ उलट कमल सूधा भया,बिन सूर सरूटा ॥ बिख बिखिआ संगि भरमता,गुरु सबदी छूटा ॥४॥ एको एक पछाणिआ, अन रिस्ता टूटा ॥ हरि दासन को दासरा,श्रीचंद्र सु गूटा ॥५॥६३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ सोई थान सुहावणा,जित प्रीतम वासा ॥ दरसन पेखा जाइ कै,सफलहि मम सासा ॥१॥ मन मुरझाए आन पहि,जा होए निरासा ॥ धन बिन गुरु ही मान दै,रंकन रख

पासा ॥२॥ रोगी कुस्टी प्राणीआ,घर औखधि रासा ॥ कंचन कायाकार करि,वेदन सभ नासा ॥३॥ तम अगिआन पलाइआ,रवि रस्मि प्रकासा ॥ दहदिसि चानण होइआ,भ्रम भ्रिति हरासा ॥४॥ दासन दासा दास हउ,दासहि पग पासा ॥ दयाल दमोदर माधवा,श्रीचंद्र अवासा ॥५॥६४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ बिन साधू जग जीवना,पावक महि जलना ॥ तड़पत अहनिसि रैनि दिन,कहुँ परत न कलना ॥१॥ सांति न आवत नाग उर,तजि चंदन पलना ॥ पाणी सीतल नहि लहा,अठसठ सरि मलना ॥२॥ अंतरि अगनि बुझई,हिमगिरि चलि गलना ॥ सागर उर महि जल रहा, बिरखन चित बलना ॥३॥ लख चुरासीह जोनि का,मन भांड उबलना ॥ पाहन अंतरि अगनि धर, थिर भयो अचलना ॥४॥ सर सीतल संतन सभा,मानस को थलना ॥ श्रीचंद्र थिर गहिर महि,कबहूँ नहि टलना ॥५॥६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ सभि सुर जा को बंदते,सो देवन देवा ॥ कवनै कमल विराज कै,कमलज रचतेवा ॥१॥

कैलासै ताड़ी लगा,संकर लहिओ भेवा ।। कहा नाराइण छीर सिंधु,लछमी चर सेवा ।।२।। बैकुंठहि थिति कलपद्रुम,सुरधेनु अछेवा ।। आराधित चिंतामणी,रोगन नस्टेवा ।।३।। कुबेरु सुमेरु गनेस सेस, गंधरब किंनरेवा ।। हंस अनल खगपति हुमा,अन अनिक लखेवा ।।४।। बिनु संतन की रसन ते,नहि जान सकेवा ।। सभि तजि साधू सरणि महि,श्रीचंद्र रमेवा ।।५।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। एको नाम आधार है,जित मन आघाई ।। त्रिसना भुख न का रहै,निधि सूख समाई ।।१।। कारै नामहि लगिआ,मन तन सरसाई ।। मिथिआ मोह भ्रम बिनसना,सभि दूरि पलाई ।।२।। सच्चा सत्गुरु सेविऐ,तम दिआ उडाई ।। एकंकार अराधिआ,जिनि स्रिस्टि उपाई ।।३।। अस्ट सिद्धि करतल बसी,आदेस तकाई ।। गुण गावहि गुण उचरहि,गंध प्रगटिआई ।।४।। राम नाम जपु जाप को,सतसंग वडाई ।। साधु सेव श्रीचंद्र रत,अंतरमुख थाई ।।५।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गोबिंद गोबिंद गाइऐ,गन पाप परानै ।। अंतरि बसिआ पारब्रहम,गुण अगम

समानै ।।१।। अंध घोर अगिआन महि,प्रगटिओ नभ भानै ।। तरु परमल तन वेड़िआ,सीतल नागानै ।।२।। दुरमति उझड़ भरमतो,चित गयो ठिकानै ।। कीरति हरि हरि राम नाम,नित रसना गानै ।।३।। भव जलनिधि बूडत हुते,बोहिथ हरि पानै ।। गुण निधान सिधि पाइऐ,रिद भूमि खुदानै ।।४।। जहँ जहँ जाइऐ देस महि,लहिऐ बड मानै ।। नाराइण भजि श्रीचंद्र,सभ दूखन हानै ।।५।।९८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। संत रेणु मस्तक धरी,जागै बडभागा ।। जनम जनम का सोइआ,गुरु सबदी जागा ।।१।। कालख पाप विकार के,धोए सभ दागा ।। लहिरी नाल पछाड़िआ,मन कंठे लागा ।।२।। करम विहूणा दुरमती,गुरुमती पागा ।। फेरे जनम अनेक के,काटे मोह तागा ।।३।। धरमराइ अब किआ करहि,दफतर लगि आगा ।। गई बहोड़ि मिलाइआ,ठहिरायो भागा ।।४।। माया पैखड़ पैर का,कट डारो खागा ।। सेवक का सेवक भया,श्रीचंद्र सभागा ।।५।।९९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे संमला,गोबिंद गुसाई ।। नउनिधि सिधि ठाकुर दई,सभ भुख

गवाई ॥१॥ जनम जनम के रंक जन,थापिओ महिसाई ॥ नाम प्रभू गोबिंद के,सभि स्रिस्टि तराई ॥२॥ जलती अगनि अखंड ज्वाल,सीतल रस पाई ॥ बिखिआ बिखै निवार कै,अम्रित सरसाई ॥३॥ बहु जोनिन महि भरमते,निहचल ठहिराई ॥ पाप नदी प्रवाह बीच,नावक हरि राई ॥४॥ भुज गहि ऊपर चाढ़िआ,कंठे दिय लाई ॥ बलिहारी श्रीचंद्र गुरु,जित सोझी आई ॥५॥१००॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ आकल अकल लुभाइआ,अहंकार विगूता ॥ मोह माया उर पाइ कै,भरमै विचि सूता ॥१॥ नित नित सास विलोकई,नैनी जमदूता ॥ चित्रगुप्त लिख राखिआ,दफतर अनछूता ॥२॥ काले काले लेख लिख,काले मग जूता ॥ जमदर बद्धे मारीअहि,पितु माता पूता ॥३॥ करदम महिखी लिबड़ी,पूछ वगहि छूता ॥ मनमुख संगति दूख घन,सुख नाहिन लूता ॥४॥ गुरुमुख हरि गुण गावणा,तजि अंतरि हूता ॥ मस्तो मद अलमस्त मस्त,श्रीचंद्र अवधूता ॥५॥१०१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ गोबिंद गुणी निधान,हरि प्रभु सिमर मन ॥ सभ किछु तिस ही केर,तन मन अपर

धन ॥१॥ किछु न चलै उपाव,लाखहुँ करि जतन ॥ जो करणा तिसु आप,मंत्र न काहूँ जन ॥२॥ पहिरन खावण वत्थु,राखी आप सन ॥ कीड़े पाथर बीच रहि,हैं अति प्रसन ॥३॥ जल महि थल देत, लगत न एक छन ॥ धनवानन को रंक,रंकन अतुट धन ॥४॥ उथल पुथले काज,कारण जो करन ॥ श्रीचंद्र आराध,पल पल नहि पतन ॥५॥१०२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ जो जो जग महि उपजिआ,तिस चलण वेला ॥ केतेउ पाव पसार ले,उठ जाण इकेला ॥१॥ कब्जा कीनसि धरनि सभ,धरनी धकतेला ॥ खड़े सिंगारे गज बरे,रथ अस्व तबेला ॥२॥ दासी दासन राणीआं,सुत सुता कबेला ॥ सैन साक सनबंध बंधु,संगन सभि मेला ॥३॥ अरब खरब द्रब्य भांड साल,आभरन सकेला ॥ पछुतावा धर सीस पै,भारा सरि पेला ॥४॥ चलिआ विखड़े मारगै,बड जंगल बेला ॥ राम नाम जपु श्रीचंद्र,ह्वै संतन चेला ॥५॥१०३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ मोहनी माया मोहिआ,सगलो संसारा ॥ कोटिन महि विरले कोऊ,जिनि गिआन

उजारा ॥१॥ वेखै झिलमिल चमकणा,आकास सितारा ॥ बूझत दैवग्य ढिगहि जाइ,किस्मत किमि तारा ॥२॥ तिफल तसल्ली डार कै,धन लूटिओ सारा ॥ बातन बात पुचारिआ,तुव अवधि अपारा ॥३॥ पुन्य दान तिथि वार लख,ग्रिह मंत्र उचारा ॥ निकटि न आवै काल मुहि, कीनै उपचारा ॥४॥ पितु प्रहलाद न जानिआ,वस अंध गुबारा ॥ श्रीचंद्र भव थिर नही,भजि राम मुरारा ॥५॥१०४॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ बडे तुम्हारे कह गए,पितु मातु पितामा ॥ तू ही किआ एकल रहहि,मोहिओ हरिबामा ॥१॥ अज रघु प्रीछत नल से,दसरथ सुत रामा ॥ मांधाता प्रिथु बेणु कुरु,सांतनु अस्वथामा ॥२॥ करण दुरजोधन धरमराज,बभ्रुवाहन नामा ॥ जनमेजय मेधा सुरांक,अरजुन वर स्यामा ॥३॥ अभिमन्यु वैराट्य त्रिग,मिथलेस भिरामा ॥ जरासंध सिसुपाल कंस,रावण अहि भामा ॥४॥ अगनत गये न जानही,मूरख मन कामा ॥ थिर नाराइण श्रीचंद्र,भजि हरि हरि रामा ॥५॥१०५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हे मन,राम धिआइ ले,जो संगी तेरो ।। जग दिन चार सुहावणा,उठ चलसी डेरो ।।१।। दुरजन सिर पर खड़ा है,कर खड़्ग उजेरो ।। किआ जानै कवनै घड़ी,कब आफत गेरो ।।२।। दिनसु न मारग टोलिआ,निसि अंध अंधेरो ।। आंधी झंझावात ने,बड ब्रिख निबेरो ।।३।। तुच्छ त्रिणन को आल्हणा,धर परै बिखेरो ।। गहिर पड़ी नभ मंडलै,चितवनि द्रिग हेरो ।।४।। अजहु समझ भजि राम नाम,खस करहु बसेरो ।। बिन गोपालहि श्रीचंद्र,को आहि न नेरो ।।५।।१०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रे मन,गहिले बावले,कहु राम पुकारा ।। नाराइण उस्तति बिना,दहदिसि अंधिआरा ।।१।। जपु जपु नाम गोबिंद का,पाइओ उजिआरा ।। संनी मूल न लगई,मन जागनहारा ।।२।। वथु लहहि घर आपणी,मणि मोल अपारा ।। धरणि देख पग धारिऐ,किउं पेखत तारा ।।३।। चरण नैन सिउं गरत लख,उर करहु संभारा ।। हरि के नाम बिहूनिआ,दुख नरक गुबारा ।।४।। भजि गोबिंद दयाल हरि,माधव करतारा ।। श्रीचंद्र पुनि पुनि कहहु,श्री राम मुरारा ।।५।।१०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ गुरु हरि जग महि आइ कै,धुनि बंसि बजाई ॥ सुधि भूलि गो बछड़िआ,प्रभु ओर सिधाई ॥१॥ महा गवार गुपाल गन,पनही नहिं पाई ॥ कपि मंडल भालुक मुहे,अरपित निज जाई ॥२॥ रंग रूप बिन गोपिका,चित्त कान बसाई ॥ स्याम न जानै सोहणी,नादैं बिसमाई ॥३॥ जे पति को पतनी सुझै,तब बसन हराई ॥ जग सभ परदे पेखई,बेपरद गुसाईं ॥४॥ मूढ आइ हरि चरन महि,जग पूज कहाई ॥ श्रीचंद्र स्तुति लाइ कै,सुनिऐ प्रभु राई ॥५॥१०८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ नमस्कार बहु बार ही,इकसु हरि आगै ॥ समसर दूजा को नही,जिहँ लावउं लागै ॥१॥ असंख देव वर देवीआं,दर पर थिति मांगै ॥ अस्टदसे सिधि नव निधी,दै बेरि सु तिआगै ॥२॥ केते मांगत धरम रति,को करमानुरागै ॥ केते राजन बिरधता,केते सुभ जागै ॥३॥ केते भगती भाव सिउं,हरि सिमरन पागै ॥ केते गुण गण जाचई,केते चमकागै ॥४॥ केते सहिज समाधि लिव,केते बैरागै ॥ पारब्रहम प्रभु श्रीचंद्र,देवत सरबागै ॥५॥१०९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। ऊचे ते ऊचे प्रभू,हम सरणि तुमारी ।। दासन दासे दास की,रखु पैज मुरारी ।।१।। चादर सेत उढाय कै,नहि कीजै कारी ।। त्रिहुँ लोकन को राज भोग,किमि बनहि भिखारी ।।२।। जिहँ दर जग वरसावई,तिहँ ह्वै हटतारी ।। सागर मिहरंमत सुधा,तुम करहो खारी ।।३।। जिहँ थिति बिपदा हरन हित,जन करत पुकारी ।। किआ अब वे घर घर फिरहि,अपदा की मारी ।।४।। तुम ही कउ लज्जा परहि,जब अंग उघारी ।। तुट्ठा सच्चा पातसाह,श्रीचंद्र समारी ।।५।।११०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तेरे दासे सभ कहहि,अविनासी राजे ।। आपन मेले आप महि,सभि पड़दे काजे ।।१।। रूप दिवायो आपनो,करि मिहर दराजे ।। धरणी बिचरत मसक से,कीने खगराजे ।।२।। हस्ती सिआल भगायनु,गाजे हरि गाजे ।। कउण बिचारे जंत जग,सुरदेव न ताजे ।।३।। बिन आजुध रण खेत जित,जस दुंदभि बाजे ।। दुस्टन सेना सघन घन,बिन वायु सु भाजे ।।४।। सभ बिधि तुमही राखता,दासन की लाजे ।। सिर साहाँ पातसाह हरि,श्रीचंद्र बिराजे ।।५।।१११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। दास तेरे की पारब्रहम,पूरन वडिआई ।। लाख कोटि दुर जतन सिउं,नहिं घटित घटाई ।।१।। सभ कारण करता करै,सभ बिओंति बणाई ।। उठति मौज जल नदी बहि,धूसरि धूलि छाई ।।२।। हरे भरे तरु उपबनहि,पावक पसराई ।। गैबी नाद वजाइआ,गैबी दल आई ।।३।। धरनी खुसक पहाड़ महि,रस पसरिओ धाई ।। खग खंडे असि लोह घट,नभ ते वरसाई ।।४।। मिरतक प्राणन पाइ कै,जन दुस्ट कुहाई ।। एक मुख श्रीचंद्र का,किमि हरि गुण गाई ।।५।।११२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। वडे मेरे साहिबा,तुधु अंतु न जाणा ।। आखण आख न जापई,वड चोज विडाणा ।।१।। अगनत कीते जीअ जंत,अगनत अंन दाणा ।। अगनत भोग भुगायन,अगनत भुख भाणा ।।२।। अगनत सिध समाधि साध्य,थिर लहिओ टिकाणा ।। अगनत खंड पाताल नभ,अगनत आडाणा ।।३।। अगनत छत्र झुलाइंदे,अगनत बिन ताणा ।। अगनत जल महि बिचरदे,अगनत धर धाणा ।।४।।

इकना भुख न उतरी,इक रज्ज विहाणा ।। इक जीभ श्रीचंद्र जन,हरि सेस न गाणा ।।५।।११३।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु गोबिंद सलाहिऐ,पाइऐ फल मंगा ।। हरि प्रभु सिमरत रैनि दिन,चंगे ते चंगा ।।१।। पाप विकार उतारिअन,निरमल जल गंगा ।। तुटै हउमै मोहड़ा,उर प्रेम सुरंगा ।।२।। आल जंजाल खिआल का,तजि छोडिओ पंगा ।। एकंकार अपार हरि,मनि रंगणि रंगा ।।३।। सहिज समाधि विकास उर,दुरगुण सद जंगा ।। तिआग बसन त्रिबेणि जल,न्हायो तन नंगा ।।४।। नाम खुमारी मस्त मत,अणतुट उमंगा ।। डोलण चूका श्रीचंद्र,हरि हरि अंग अंगा ।।५।।११४।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। हम दासे नाराइणै,हरि दास पिआरा ।। सार समालत दास की,सभ बिधि करतारा ।।१।। बन बेहड़ गहिबर घना,कंदमूल अहारा ।। देंदा रिजक संबाहि जन,विच सागर खारा ।।२।। लगन न पावत रंचि अंच,चहुँदिसि हरि कारा ।। जलनिधि लहिरी बूडतै,दै हस्ती तारा ।।३।। सिंघ बिलाई ह्वै गए,नहिं जंतु संघारा ।। थल महि दास निहार कै,सीतल दै नारा ।।४।।

जहँ जहँ जन भीड़ा पड़ी,तहँ तहँ निस्तारा ।। अगम अगोचर श्रीचंद्र,जन नैन निहारा ।।५।।११५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पारब्रहम परमेस्वरै,सिमरउ दिन रैना ।। हरि जन कउ उपमा बिना,नहि पर है चैना ।।१।। एकंकार धिआइऐ,रहिहै कोउ भै ना ।। दुरमति भ्रम विकार पाप,ह्वै है सभ छैना ।।२।। लेखा समवरती जितो,नहि बाकी दैना ।। सभ महि एको पसरिआ,दूजा कोऊ है ना ।।३।। छत्री ब्रहमण सूद्र वैस,बोधी अरु जैना ।। हिंदू मुसलिम पूजई,एकै रंग रैना ।।४।। संसै भीति निवार कै,धारै गुरु बैना ।। अगम अगोचर श्रीचंद्र,लखिओ इन नैना ।।५।।११६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। दूजा भाउ तिआगिआ,इक नाम धिआई ।। एको एक निहारिआ,सभ सच्चा साईं ।।१।। राम राम रसना रटत,कर संत सिवाई ।। मन निरमल मुख उज्जला,दरगह पति पाई ।।२।। साध चरन कुरबान हउ,जिनि बूझ बुझाई ।। आवा गउण मिटाइ कै,प्रभु संग समाई ।।३।। तपत निवारी जिअ की,अंतरि सांति आई ।। सरब विआपक अपर पर,चूकी अन धाई ।।४।। स्वास स्वास

हरि सिमरिऐ,दुख दूर पराई ।। सुफल घड़ी श्रीचंद्र सो,जितु हरि गुण गाई ।।५।।११७।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग काफी ।। राम नाम हरि कीरतन,वडभागी पाया ।। सत्गुरु अपना भेटिआ,अविनासी राया ।।१।। सभ महि इक वरतदा,अन भाउ चुकाया ।। आतम राम विगासिआ,गुरु सबद सुणाया ।।२।। कंचन काया कसीऐ,कसवटी लाया ।। परखि खजानै पाइआ,फिरि नाही ताया ।।३।। हरि नामै धुनि प्रगटी,गुरुमुख रहसाया ।। अगिआन अंधेरा मिटि गया,सूरज दरसाया ।।४।। दहदिसि जै जैकार भा,गुरु नाद वजाया ।। पारब्रहम श्रीचंद्र उर,सद रहहि समाया ।।५।।११८।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग काफी ।। अवगुण मेरे बखसिअन,अपनी कलधारी ।। घोर नदी महिं बहि रही,नौका निस्तारी ।।१।। अहनिसि सिमरित राम नाम,गोबिंद बनवारी ।। निसि अंधिआरी कारीआ,पहु फुटी चारी ।।२।। जपि जपि नाम नाराइणै,भ्रम चादर फारी ।। नाद वजाया सत्गुरू,गूलन भगदारी ।।३।। चंडालिनि भागीरथी,न्हाइ जनम सवारी ।। बांसहुँ परमल होइआ,गुरु गंध पसारी

।।४।। तुंमे कौड़तणि गई,हिंदवाणा सारी ।। कथी न जावति श्रीचंद्र,गुरु महिमा भारी ।।५।।११६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। हम ते कछू न होवई,प्रभु अंतरजामी ।। अपराधी सद भूलते,क्रोधी अरु कामी ।।१।। योग्य नही हम अवगुणी,राते पहनामी ।। आपनि ओर निहार कै,राखहु सरणामी ।।२।। तेरा दित्ता खावई,हम लूण हरामी ।। बिखयन पंथ पधारही,सम सूकर ग्रामी ।।३।। उर लोभी कालुख भरा, जोहहि पर बामी ।। लुक लुक पाप कमावई,धस सूने धामी ।।४।। जिउं भावै तिउं बखस लेहु,करीए अनुगामी ।। मया तुमारी श्रीचंद्र,इक भरई हामी ।।५।।१२०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। दहदिसि पसरिओ जाल जम,बाचउं किमि ताते ।। अंतरि बैठी सरपिणी,उगलति बिख वाते ।।१।। रंग सफेद सुहावणे,अंदरि रत राते ।। आचारी ब्रहमचार के,मद कंद्रप माते ।।२।। गिआन विहूणे विप्र जग,मुख स्त्रुतिन बकाते ।। कंनी मुंद्रा भसम तन,जोगी बन जाते ।।३।। माला तुलसी कंठ धरि,धन हेरि हिराते ।। माणस खावण हारड़े,माणस नहिं खाते ।।४।। पड़ी बहीर अपार

ही,नरके सु सिधाते ।। मया करहु श्रीचंद्र पहि,हरि संग संगाते ।।५।।१२१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। करणहार करतार प्रभु,राखहु सरणाही ।। अवगुण चीत न धारीए,दीजै निज बाही ।।१।। ढूँढ थके सभ जगत महि,आसर को नाही ।। संगि तिआग करि भाग गे,पिखिअत नहि छाही ।।२।। मात पिता हितु नहि रहा,जन अपर कहाही ।। सुख प्रापति नित बांछते,सुख प्रापति नाही ।।३।। पहिरण खावण लोचते,फाके न रहाही ।। सभ संपद के मित्र जे,आपदि तजि जाही ।।४।। नाराइण गोबिंद बिन,बिनती कहु काही ।। मयानिधि श्रीचंद्र परि,निज द्रिस्टि वगाही ।।५।।१२२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। पूरण परमानंद प्रभु,देहु अपना नाउं ।। पावक सागर जगत महि,तुम सीतल छाउं ।।१।। खिन खिन डोलत बहुबिधी,थिति तुमरे पाउं ।। चक्क घुमिआर भुवाइआ,इक टेक टिकाउ ।।२।। तेली संदे बलद को,फेरा हटवाउ ।। नलिनी पाउन पकड़ीआं,सुक कउ छुड़वाउ ।।३।। तेलक साखाम्रिग गहित,अब रैण मुकाउ ।। झिल्ली कंटक बाधिआ,किल्ली उचवाउ ।।४।। आपहि

आप पधार कै,करि पार गिराउ ।। आसा भरवासा तुमहि,श्रीचंद्र रहाउ ।।५।।१२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तन मन संतन सौंपिआ,हरि हरि जपु लीना ।। आपन चरन लगाइआ,इहु जीव मलीना ।।१।। नहि सेवा नहि सिमरनो,सुभ करम न कीना ।। दया धरम संतोख ब्रत,उर रेख न चीना ।।२।। बिखै विकारी वेड़िआ,निरधन अति दीना ।। चोर जार आचार हीन,कामिनि जल मीना ।।३।। पास न कोऊ बहिण दे,दुरमत मद पीना ।। जा पहि जावउ आस करि,लौटिओ मन हीना ।।४।। संत क्रिपाल दयाल हरि,कहि कटू न छीना ।। तिहुँ लोकन श्रीचंद्र सम,दूसर नहि चीना ।।५।।१२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जनम जनम के पुंन सभ,सनमुख हुइ आए ।। जन वैरागी भेटिआ,हरि हरि रंग लाए ।।१।। मैल उतारी मांज के,निरमल चित भाए ।। कपट दंभ स्रिंगाल गे,सिंहनाद नादाए ।।२।। मन ते कबहुँ न बीसरै,अविनासी राए ।। राम नाम पावक बली,त्रिण भार जलाए ।।३।। सुधा सुधाकर किरण सिउं,मुरदे जीवाए ।। गोबिंद गुणी निधान प्रभु,उर ते प्रगटाए ।।४।। सिर साहां का

पातिसाह,नहि आवै जाए ।। सीस भेट वे लै गया,श्रीचंद्र लवाए ।।५।।१२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ मानस तन बापुरा,मल मूतै भरिआ ।। तीरथ अठसठ बोर कै,कहूँ सुद्ध न करिआ ।।१।। कंठ नासिका नैन स्रुत,रस मंदै ढरिआ ।। नवै छिद्र अपवित्र स्रव,गंदै मग परिआ ।।२।। देव देवालै जाइऐ,विस्टा तन जरिआ ।। पहिरि दिखावा ओपरा,गुड़ महि बिख खरिआ ।।३।। मन महि मद मतसर अहं,उबलै अगि बरिआ ।। कछु कछु अनुमानै लखउ,मरिआ कै मरिआ ।।४।। ऐसा कउ ऐसा मिला,जिनि अजरा जरिआ ।। राम राम श्रीचंद्र कउ,घट सुभर भरिआ ।।५।।१२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जब लगि आसा उदर की,तब लगि नहि उपकारा ।। जब लगि भाउ अभाउ है,तब लगि ही दरारा ।।१।। जब लगि जानै आप कउ,तब लगि दुखिआरा ।। जब लगि करम प्रधानता, तब लगि पसारा ।।२।। जब लगि गिआन प्रगास नहि,तब लगि अंधिआरा ।। जब लगि उर फुरना फुरै,तब लगि जंजारा ।।३।। जब लगि न संजम सील ब्रत,तब लगि नर हारा ।। जब लगि आवण

जावणा,तब लगि संसारा ॥४॥ जब लगि सुणबो पेखणा,तब लगि धूँ धारा ॥ साधू संगति श्रीचंद्र, पाईऐ छुटकारा ॥५॥१२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जहां न द्रिस्टी द्रिस्य द्रिग,तहँ देखै कोऊ ॥ जहां आकास न सूर चंद्र,तहँ गमनै कोऊ ॥१॥ जहां न मारग पाइऐ,अवलोकै कोऊ ॥ जहां न पावन की क्रिया,तहँ चिन्ह सु कोऊ ॥२॥ जहां न कर को करम है,तहँ करतो कोऊ ॥ जहां न मन को भाव ह्वै,भावन कहु कोऊ ॥३॥ जहां न बुद्धी बुद्धवर,तहँ बोधा कोऊ ॥ जहां न गति कछु जाणिऐ,तहँ गंता कोऊ ॥४॥ चरण सरणि संत पावनै, जानैगा ओऊ ॥ प्रगटत मंत्र अमंत्र पद,श्रीचंद्र अलोऊ ॥५॥१२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हरि हरि हरि हरि हरि कहे,हरि हरि ह्वै जाई ॥ रसना गीधी राम नाम,रम राम समाई ॥१॥ प्रेम समुंद समाणिआ,लहिरा उमड़ाई ॥ आपा उछलै आप महि,आपा विगसाई ॥२॥ आपा जाणै आप कउ,आपा रस पाई ॥ पारस कहूँ न भाखई,अपनी प्रभुताई ॥३॥ जब

लोहउ कंचन करै,सभ लखै लुगाई ।। मलय ने पेखिओ जगत किहँ,गंधन सरसाई ।।४।। बिन बोले मुख वाक कहि,संतन वडिआई ।। राम अमोला पाइआ,श्रीचंद्र बुलाई ।।५।।१२६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। गुण गावत गोबिंद कै,मन तन परफूलै ।। गोपाल दयाल करुणानिधे,रंग रंग चलूलै ।।१।। मदमस्त वाक्यन वीसरै,चवराहे झूले ।। परमानंद समाइआ,धरणी की धूले ।।२।। एको एक वखाणिए,बाणी रस घूले ।। राम राम गुण कीरतन,अन रागन भूले ।।३।। अनुभउ जात न कहँू पै,उर बेधित सूले ।। मौनी हरि हरि धिआवई,सभ हरित कठूले ।।४।। मस्तक जोति प्रकासई, धन संग अलूले ।। नाराइण माधव प्रभू,श्रीचंद्र जलूले ।।५।।१३०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। रस रामै रम राम राम,होइ चुप चबोला ।। रंगा रंग अगंमड़ै,तन कोरा चोला ।।१।। एको एक पछाणिआ,सत्गुरु सच बोला ।। मोह माया सभ छुटकिआ,हरि अंतरि झोला ।।२।। काढि खड़ग कर नचिआ,पग नाहिन डोला ।। छाण उडाई तुख घणी,रम रामहि रोला ।।३।। रोग सोग तन

सहित हनि,अम्रित झकझोला ।। अगम अगम अगाध बोध,अति अगह अतोला ।।४।। नरहरि मनमोहन हरी,स्यामहि टकटोला ।। साधु जना प्रभु पाइआ,श्रीचंद्र अमोला ।।५।।१३१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। बीज मंत्र हरि राम नाम,रिद माहि समाया ।। घोर घटा घन पसरिआ,उमड़ी झंझवाया ।।१।। कछु कछु बूंदा बाँदड़ी,पावक विसमाया ।। राम पिआरे राम कहु,रामहि सभ माया ।।२।। डारहु बसन उतार सभ,मिल कै हरि राया ।। वेस नही सुहाग हरि,सुख सहिज समाया ।।३।। जे जानहि प्रभु आपणा,दूजा को भाया ।। गूढ़ा रंग हरि प्रेम का,थिर है धुप छाया ।।४।। सबद बिना नहिं अक्खरो,अनहद नादाया ।। आए संत पराहुणे,श्रीचंद्र सुणाया ।।५।।१३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। परि पायन गुरु साधु के,दुरमति हउं तिआगी ।। देइ संदेसा प्रिय का,हरि पुरुख विरागी ।।१।। डाइण खाया जगत सभ,गुरु मंत्रित भागी ।। सुधि बुधि सभ बिसराइ कै,सोई अब जागी ।।२।। एक न बिसवा जाहि का,भे भूमी भागी ।। धावन धावत रह गए,प्रभु चरनन लागी ।।३।।

जाल जलाया चंडिका,छुटिगी म्रिग आगी ।। नादहि नाद समाइआ,तजि कुंडलि नागी ।।४।।
सुका हरिआ ब्रिख छा,घामै थिति मागी ।। दामोदर श्रीचंद्र दाम,बांधिओ अनुरागी ।।५।।१३३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। कित मुख राम सालाहिऐ,गुण अगम गुसाईं ।। हरि हरि हरि हरि नाम कहि,पर रहिऐ पाईं ।।१।। जहँ कछु है तहँ कछु नहीं,जाईं अनजाईं ।। अगह अगाह अथाह प्रभु,रसना किमि गाईं ।।२।। गति मिति कछू न जाणीऐ,विसमय विसमाईं ।। भरम भुलाना अंधुला,वाकहि स्रुत लाईं ।।३।। बधरो मत्ता सेसनाग,प्रभु नाम अलाईं ।। दोलन दोल झुलाइआ,फण छत्र फैलाईं ।।४।। सावल सुंदर राम राइ,किमि नर गुण गाईं ।। पी रस अम्रित मस्त भा,श्रीचंद्र रहाईं ।।५।।१३४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। मन वैरागी आइआ,कच नगरी फेरे ।। मांगत मांगत उरझिआ,दस नारी डेरे ।।१।। भोगत त्रिपति न पावई,पुनि पुनि अन हेरे ।। एक पुरुख वसि नहि चलत,लगि सांझ सवेरे ।।२।। ब्रिखों उठे सोइ कै,थिरि काग बनेरे ।। सुञे घरों निरास हो,उडि चला अगेरे ।।३।। नहिं

नगरी नहिं नारीआं,जिनि वाल लमेरे ।। होरसि देस सिधाइआ,पर पुरुखन घेरे ।।४।। पछतावत सिर धुण रहिआ,इत उत कउ हेरे ।। राम राम श्रीचंद्र भनि,जो आवहि नेरे ।।५।।१३५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। उठि चलण फुरमाइआ,जोगी कै ताईं ।। उरझि रहिओ रस प्रेरिआ,इंद्रीअन कै भाई ।।१।। मरणा चित्त न आइओ,जोऊ सच सदाई ।। करते पुरुख भुलाइआ,को तिसहि चिताई ।।२।। जे पूरबि होवै लिखिआ,मिलि संत सुभाई ।। अंतरि बीजिआ उगवै,हरि रामहि नाई ।।३।। बोहल भाउ जमाइऐ,गाहण गुण गाई ।। जपु तपु कोठै पाइऐ,मत प्रेम बढाई ।।४।। जिस घर अंन दाणा घणा,सभ तिस की पाई ।। कितही कंम न हिच्चीऐ,श्रीचंद्र गुसाई ।।५।।१३६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सरणि समरथ अकथ की,जा का बड ओला ।। पैज रखै सद दास की,पा दीरघ चोला ।।१।। मेट न साकत देव गण,हरिदासन बोला ।। घट वध को कर सकै,इक रत्ती तोला ।।२।। चले चाल चलाइआ,प्रभु सुंदर ढोला ।। मुख मीठा मन उज्जला,प्रिय प्रीतम रोला ।।३।। सिमरि सिमरि

नाराइणै,अम्रित झकझोला ।। लड़ि लगिऐ परमेस्वरै,को कबहूं डोला ।।४।। गूढ़ै रंगणि रंगीऐ,तन खाली खोला ।। संत पाइ लगि श्रीचंद्र,रम राम रमोला ।।५।।१३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। उसतति वरण न सकिऐ,हरि प्रीतम पिआरे ।। अचरज कउतक प्रभू के,जनहित निस्तारे ।।१।। जुग जुग दाव लगाइआ,चलवाई सारे ।। कउण विचारा जंतु जग,जो तिसु नो मारे ।।२।। ओसे हेतु बणाइआ,नभ धरनि पतारे ।। जिनि अपणा प्रभु पाइआ,कबही कत हारे ।।३।। इको इक वखाणिऐ,हरि पुरुख मुरारे ।। भाउ भेद भ्रम दूरि धरि,इक रूप निहारे ।।४।। वार जाउ लख बेरीआ,संतन चरनारे ।। राम राम रसना रती,श्रीचंद्र अपारे ।।५।।१३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिनि जिनि धिआया पारब्रहम,सो हरि ही होए ।। जनम मरण दुख काटिआ,सुख सुखपति सोए ।।१।। अगम अगाध अलख प्रभु,मन माल परोए ।। किलबिख काटे अनिक कोटि,तन सुरसरि धोए ।।२।। तपत बुझी त्रिसना अगनि,ठरि सीतल भोए ।। मिथिआ सिर गुरु भेट धरि,नाही

कबि रोए ॥३॥ सच्चा सौदा वणजिआ,लद्धा हरि गोए ॥ खेप चलाई लद्द गुण,रतनी हीरोए ॥४॥ तम की रिजम न दिस्सई,प्रभु सूरज लोए ॥ श्रीचंद्र हरि सिमर कै,हरिजन हरि होए ॥५॥१३६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ संतन कै बलिहारणै,जिनि दितड़ा नाउं ॥ उझड़ जांदे दुरमती,आए गुण गाउं ॥१॥ भरम भेद गया सेवते,एको इक थाउं ॥ गुरु परसादी निहचला,थिति चकी दरांउ ॥२॥ घुमणघेर गवाइआ,वारोलीं वाउ ॥ कंढे थिरे अनंद सिउं तरिआ दरियाउ ॥३॥ हार सिंगारी खोड़सी,डाइण बदनाउं ॥ ग्रीसम घाम दुपहिरड़ी,बट संघणि छाउं ॥४॥ थोड़े जल की माछुली,जलरास समाउं ॥ राम राम श्रीचंद्र कहि,रामहि मिलि जाउं ॥५॥१४०॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ हे सत्गुरु सुणि बेनती,देहु नाम अधार ॥ चहुँदिसि जलता अगनि भट्ठ,करि सीतल ठार ॥१॥ काम क्रोध भरमाइआ,छलेड़े छल डार ॥ जो नाही सो मानिआ,चोरन रंग चार ॥२॥

आपन गांठै आप छोरि,धन दीन विगार ।। बहिकावै भूतन परै,धसिओ पर बार ।।३।। म्रिग त्रिसना महि धावता,आसा करि नार ।। बहुत जनम के बीछुड़े,मेलहु दरबार ।।४।। गुण गावहि गोपाल के, हरि किरपा धार ।। अंतरि दुख श्रीचंद्र का,दीजै निरवार ।।५।।१४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सुणु बेनंती मेरीआ,हरि दीन दयाला ।। नाम दान जन दीजिऐ,बिनसै दुख जाला ।।१।। संतन संग बिताइ हउं,सभ आयु विसाला ।। चीत न आवै आन ठौर,थिर हउ हरिआला ।।२।। राम राम रम राम राम,अक्खर दुइ माला ।। परमानंद महान लिव,संग साधू पाला ।।३।। नाराइण तुव धिआन बिन,चितवनि सभ घाला ।। अगम अगोचर साहिबो,इन नैन निहाला ।।४।। करम धरम सुच सील ब्रत,जपु संतन चाला ।। ओर निहारत श्रीचंद्र,प्रभु परम क्रिपाला ।।५।।१४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। दीन दयाल सुख सागरा,पूरन अनखंडा ।। हम तुमरी सरणागता,भुजदंड प्रचंडा ।।१।। नाम दान दासहि दिजो,गुण गाउ अदंडा ।। तुम बिन आन न पेखिहउं,खंडा ब्रहमंडा ।।२।।

लूक तुमारी लुक रहउ,नहि विआपै चंडा ।। जीवन दरस दयाल देव,सूरा बरबंडा ।।३।। नवनिधि पावउ भगति हरि,मन तन चित मंडा ।। तेरा नाम अपार धन,अन मंगण भंडा ।।४।। संत मिलावहु मिहर करि,पेखउ वत दंडा ।। मेल लेहु श्रीचंद्र जन,अपनी कर चंडा ।।५।।१४३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। दीन दरद दुख भंजना,सत्गुरु गुण पूरे ।। आपनि सरणी राखीए,मुख वाक्यन सूरे ।।१।। दूख दरद वड रोग माइ,हर औखध चूरे ।। तूं दाता सभ जीअ का,किहँ पेखि न झूरे ।।२।। स्रिस्टि सबाई मंगदी,होई धरि मूरे ।। चार पदारथ दान दे,कबि भए न ऊरे ।।३।। दहदिसि जन प्रगटाइअन,बिख बिखिआ दूरे ।। सभ सुख नउनिधि रिद्धि सिद्धि,तुधु विच भरपूरे ।।४।। जिनि कउ तुम कर धारिआ,तिनि पायो नूरे ।। औगुण बखसे श्रीचंद्र,लिय मेल हदूरे ।।५।।१४४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। हरि किरपा जिनि धारीआ,तिनि संत मिलाया ।। राम नाम मुख मंत्र दे,डुबदा कढवाया ।।१।। अनिक जनम का सोइआ,पग टुंब उठाया ।। अहो राम के राम कहु,सच मंत्र

द्रिढ़ाया ।।२।। वेगारै छुडवाइ कै,हरि कारे लाया ।। सच्चे राज बहालिआ,सिर छत्र झुलाया ।।३।। सच्च खजाना नाम धन,मन जपु रहसाया ।। पंच सबद धुनि अनहदी,हरि नाद वजाया ।।४।। मारग दसहु संत जनहु,कित दुआरै आया ।। अगम अगोचर श्रीचंद्र,अंतरि दरसाया ।।५।।१४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मनमोहन मन मोहिआ,बलि बलि नित जावां ।। करहु क्रिपा हरि प्रीतमा,दरसन तुधु पावां ।।१।। तुमरे बिन खिन खिन जोऊ,जुग जुग बितवावां ।। उर की वेदन किहँ कहा,बिन महरम थांवां ।।२।। प्रभु प्रीतम कबि आइ है,पूछत रहुँ कांवां ।। तुम बिनु महा दुहेलड़ी,किमि रैण बितावां ।।३।। बिरहै बेधी जिंदड़ी,किमि माणै छावां ।। मेलहु सज्जण संत प्रभु,हरि के गुण गांवां ।।४।। तन मन सीतल होइ है,प्रभु रंग समावां ।। श्रीचंद्र दर संत के,दीजै हरि नावां ।।५।।१४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे संमला,हरि प्रीतम राया ।। सार समाले राखही,सुत जनु पितु माया ।।१।। अनिक उपद्रव टार कै,राखत सरणाया ।। चार पदारथ दान दै,कबहूँ न जनाया ।।२।।

जो जो सरणि पधारिआ,खाली न सिधाया ।। मन चिंदिआ फल पाइआ,जिनि नाम धिआया ।।३।। अगनि सागर ते निकसि कै,थिरि सीतल थाया ।। जालण कट्टण वालड़ा,खड़सुक लहिराया ।।४।। आए विचोले संत जन,हरि के लड़ि लाया ।। काम क्रोध श्रीचंद्र मिटि,निरबाण समाया ।।५।।१४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुण गावत गोबिंद के,मन निरमल होआ ।। रामै राम सालाहीऐ,दरगाहे ढोआ ।।१।। संत सुहागन सीस पर,रस चंदन चोआ ।। दुरमति खोई तिलक कढ,मद मत्सर खोआ ।।२।। अम्रित रस हरि कीरतन,उर माहि समोआ ।। कबरों मुरदा उठिआ,फिरि बहुर न मोआ ।।३।। अचरज सिउं अचरज मिला,दुबिधा बिनसोआ ।। माटी केरे पूतले,अनमाटी लोआ ।।४।। जोति समाणी जोत महि,दूजा नहि कोआ ।। जल कउ जल किआ कहि सकहि,श्रीचंद्र बगोआ ।।५।।१४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। साजन मेरा हरि प्रभू,सूरा बलवाना ।। सरणागति जन राखता,दै करि निज

पाना ॥१॥ आंख उचाइ न पेखही,दुरजन परधाना ॥ थरि थरि स्रिस्टी कांपई,पेखत किरपाना ॥२॥ लालो लाला पहिरिआ,फुलवाई बाना ॥ धड़ि धड़ि गेरे धरनि पै,बलवंड जुआना ॥३॥ गैबों उतरा सैन लै,भैरव मासाना ॥ दुंदभि घोख सुनाइऐ,घहरत घमसाना ॥४॥ पंखी तुरग नचाइआ,कलकी महराना ॥ पाप बिनासे श्रीचंद्र,द्रिढ़ गाड निसाना ॥५॥१४९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ चहुँचकीं धुनि प्रगटई,धौंसा घहराई ॥ स्याम घटा चतुरंगनी,नभ मंडल छाई ॥१॥ कोऊ रूप न लख परै,सैना की धाई ॥ धुजनी भूत पिसाच गन,भैरव भभकाई ॥२॥ नच्ची दुरगा खड़ग लै,संग काली माई ॥ घोर प्रलय उमड़ी जगत,सागर उछलाई ॥३॥ उदकरखै की अवधि घटि,आकरखा लाई ॥ काल पुरुख प्रगटाया,कलकी कहि गाई ॥४॥ दुरजन मेटि उबारिअन,संतन हरखाई ॥ आवणहारा आइआ,श्रीचंद्र सहाई ॥५॥१५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ भूत भविख्य भवान महिं,हरि का वरतारा ॥ सरणि सूर भगवान प्रभु,सारंग

टंकारा ॥१॥ नंदग कर चमकाइआ,खर सानै धारा ॥ प्रकासित चक्र सुदरसना,चहुँदिसि बरिआरा॥२॥ धरणि अकास पताल लों,पसरिओ धुंधकारा ॥ प्रगटिआ आप अकाल हरि,धर तेज करारा ॥३॥ आवण जाणा स्रिस्टि महि,निज नियम चितारा ॥ दुस्ट दलन दल मलन कउ, दै चलिओ नगारा ॥४॥ दुरजन खेत खपाइअन,संतन जैकारा ॥ दोखी दैत्त विडारई,श्रीचंद्र मुरारा ॥५॥१५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ आपै हर प्रभु राखता,जन पैज सवारी ॥ पकड़ पछाड़ै दुरजना,संतन हितकारी ॥१॥ बंधन बंध भवाइअन,दर दर हंकारी ॥ नदरि उपट्ठी जे करै,धरि उलटै सारी ॥२॥ जिनि के अंतरि भाउ नहि,पछतै हैं भारी ॥ करते सभ हथ रखीआ,निज कला संभारी ॥३॥ हरि किआ भाणा भावता,नहि सूझि गवारी ॥ समरथ अकथ अगोचरै,नर किमि निरधारी ॥४॥ दामोदर बंधन छुटै,अरजुन तरु पारी ॥ सिमरि गुपाल दयाल हरि,श्रीचंद्र मुरारी ॥५॥१५२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || अग्रज श्री नाराइणै,बिनु बिनै न चारा || जे हरि सुनि है क्रिपाधार,ह्वै है निस्तारा ||१|| प्रभु क्रिपाल गोपाल का,इक अहै सहारा || भाई मीत सुत बंधु जन,सभ कूड़ पसारा ||२|| पासे होवत तिआग कै,पेखै दुखिआरा || जगत जितिक बिउहार है,माया विस्तारा ||३|| सारंगधर भगवान हरि,सूरा बरिआरा || सरणि आइ की राखता,लज पात मुरारा ||४|| एको जप सालाह इक,अन भाव बिसारा || बिनु करतार न श्रीचंद्र,भै काटनहारा ||५||१५३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || जिहँ जिहँ मुस्किल बनति है,जन ऊपर भारी || तहँ तहँ त्रिभंगी प्रभू,करता रखवारी ||१|| जन की टेक दयाल हरि,गोबिंद मुरारी || आन न दूजा सूझई,करता प्रतिपारी ||२|| रखिआ की अंबरीस की,दरसन परिहारी || रिखिवर दुरवासा महा,दुरगति करि डारी ||३|| टिटभ उबारे हरि प्रभू,सागर करि छारी || संघारिओ हिरणकसिपु,हरि प्रहलाद उबारी ||४|| आपन बिरद पहिचान कै,बन नंदग धारी || पराधीन श्रीचंद्र जन,कीजै मुकतारी ||५||१५४||

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। राजे रत पीणै भए,नर वड्ढी खोरे ।। निआव हेतु जहँ जाइऐ,धन सोइ टटोरे ।।१।। छीन लेहु जो कछु धरौं,दिनि माल बटोरे ।। जिनि भावन किआ निआव देहँ,किआ तिनि के धोरे ।।२।। बाहरि चिलमिल चिलकणे,अंदरि स्याह घोरे ।। तजि हरि सरणि सिधाइऐ,जिहँ जोर अजोरे ।।३।। जबि बेड़ी पापनि भरे,हरि चाहत बोरे ।। जन गरीब के रख्यका,कोऊ दूरि न तोरे ।।४।। जे चाहहिं खिन इक बिखै,धर पानी खोरे ।। श्रीचंद्र हिरणाखसों,ए नहि बरजोरे ।।५।।१५५।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। गोबिंद सिरजे निआव हितु,राजे धर माही ।। रंडि दंड तिनि ले गई,नैनन मटकाही ।।१।। लाल पगड़ीअन बांध सिर,बुत थिरे सिपाही ।। तस्कर पकड़ धन खोस कै,बंद छोरि भगाही ।।२।। साधू भोगत दंड कउ,चोरन पतसाही ।। भूखी परजा कर सहहि,मुसदंड हसाही ।।३।। तूँ जग का जग तेरड़ा,भरवासा नाही ।। कला न जे वरताइ हैं,किमि जानहि साही ।।४।। पूरब वाक चितारि उर,कहूँ ऊँचे बाहीं ।। हरि जू आवहु श्रीचंद्र,बिलमउ किमि काहीं ।।५।।१५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। कूड़ै गंढणि गंढि कै,सभि लोक सुणाए ।। जन की रखिआ कउ हरी,पग पनही न पाए ।।१।। ग्राह ग्रहिओ गज हेतु प्रभु,कट तंतु छुडाए ।। लज्जा राखी द्रौपदी,बसनन न हराए ।।२।। लाखों नारी अब पिखै,दुस्टन सत हाए ।। भूत भवानहि मेल करि,निसचिंत कहवाए ।।३।। चिंत भवन मन पर रहिओ,हरि पार लंघाए ।। तुम बिनु कौन समोधई,हे करता राए ।।४।। अगम अगोचर पारब्रहम,गोचर हो आए ।। वाक्यन काल बितीत भा,श्रीचंद्र अलाए ।।५।।१५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पारब्रहम समझाइऐ,हरि विग्रह धारी ।। कहुँ कमलज कहुँ रुद्र भा,कहूँ भयो मुरारी ।।१।। चामुंडा नैना भयो,कामाख्या कारी ।। रामचन्द्र राधापती,बंसी गिरिधारी ।।२।। सालगिराम दुआदस लिंगी,असवद संगारी ।। मसजिद देव दिवालयां,गिरजन विस्तारी ।।३।। सत्त असत्त न बूझिऐ,जन भंवरि मझारी ।। सत्गुरु मेलहु दया करि,जोऊ पार उतारी ।।४।। गति मिति तब ही लख सकउ,कछु अनुभउ सारी ।। मोह विनासै श्रीचंद्र,सत साध संगारी ।।५।।१५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। आरय सफा उठाईआ,जैनी आसीने ।। बौधी ते पुनि बिप्र करि,गोले परबीने ।।१।। खलजी तुगलक लोदीआं,सैयद सूरीनै ।। मुगल थापे पातसाह,धरि तेज नवीनै ।।२।। रुंड मुंड कटि तुंड सों,भुजदंड बलीनै ।। बहुत बारि नारी धरनि,पट लाल ओढीने ।।३।। क्रिसन राम निज जनम थल,मसजिद संगीनै ।। विस्वनाथ कूपै गिरा,भयधार मलीनै ।।४।। जहां देवालै नहि रहिओ,किमि कलकी चीनै ।। परमेस्वर श्रीचंद्र किमि,कहियत बल हीनै ।।५।।१५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मूढ न जानै आप कउ,पर कउ किमि जानै ।। अधिआतम सत करम बिन,पठि पुस्तक नानै ।।१।। धरम न जानी धारणा,किमि धरम बखानै ।। संजम नियम प्रवेस नहि,जत सत किमि भानै ।।२।। चउसठ विद्या हीन नर,किआ वेदन गिआनै ।। सरफ नाभ बिन किआ लखै,करि पाठ कुरानै ।।३।। इक इक जानणहार को,गुरु कहि परमानै ।। सभ गिआनी सत्गुरु लहहु, आतम परधानै ।।४।। पाहन बोड़िओ हिंदूअन,सण मुसलमानै ।। बिन सत्गुरु श्रीचंद्र हरि,नाहिन

अनुमानै ।।५।।१६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। विद्या अनिक प्रकार की,अक्खर गन माला ।। आदि अंतु नहि पाइऐ,आखियानन जाला ।।१।। अपरा परा बखानिऐ,तिनि नाम रसाला ।। घसि घसि बहुरो पार पर,अनुभउ रंग साला ।।२।। स्रोत नेस्ठा उलंघ करि,जोती उजिआला ।। हरि की किरपा कटाख्य ते,छुटि ग्रंथि विसाला ।।३।। सारद नारद तुंबरू,हाहा हूहू नाला ।। उमा रमा ब्रहमाणीए,संगिआ पद डाला ।।४।। मया अगोचर पावई,सत्गुरु पद आला ।। परमेस्वर कउ श्रीचंद्र,अंग संग निहाला ।।५।।१६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिसु जन अपनी मया ते,हरि संग मिलाए ।। किआ उपमा तिहँ की कहाँ,किछु वरणि न जाए ।।१।। जिहबा कउ स्त्रुत नहीं है,स्त्रुत जिहब न पाए ।। अणबण ही जे बण परे,अणबण किउं गाए ।।२।। कछु कछु है परदे थिरा,सुनिअत सबदाए ।। सत्त बिना नहि परसिऐ,झाती लखि

पाए ॥३॥ रूप न रंग न रेख भेख,नहिं चिह्न लखाए ॥ सरकत करकत भीतरों,गूंगो बक्ताए ॥४॥ बिन सबदै कै सबद है,बिन द्रिग दरसाए ॥ श्रीचंद्र संतन कहा,नाराइण गाए ॥५॥१६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ किआ कहिऐ इस रसन ते,परि घूमनघेरे ॥ तुमरे गुण हैं हे प्रभू,कै हैं इहु मेरे ॥१॥ गुणी बिना गुण कहूँ नहीं,पेखै हम ढेरे ॥ जे तुहि गुण तौ गुणी तुम,किउं नाहिन हेरे ॥२॥ मथुरा मिथिला अवधिपुरी,दुआरावति नेरे ॥ कासी सुदामा वंतिका,जेतक हैं डेरे ॥३॥ तीरथराज भागीरथी,कालिंदी जेरे ॥ गया खेत्र हरि हर लहा,कुरुखेत्र निबेरे ॥४॥ पुस्कर अपर कटाख्य पिखि,हिंगलाज बसेरे ॥ गुणी न लहि चक श्रीचंद्र,जक परिओ बडेरे ॥५॥१६३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जो हरि नाम न जापिऐ,उर जालै दावा ॥ गुण मन गुणी समालीए,म्रितु छुटै न धावा ॥१॥ कवन दिसा अब भागीए,को मिलत न रावा ॥ तन भीतरि मन वास है,अन कहूँ न ठावा ॥२॥ पारब्रहम मन दुइ नहीं,जहि निसचय पावा ॥ मन सनमुख मनमुख कहा,गुरुमुख न रहावा ॥३॥

तन अनंत मन हूँ अनंत,एहि भेद भ्रमावा ।। एकी भाव न होत कबि,लख किए उपावा ।।४।। सतगुरु नाम द्रिढ़ाइआ,कछु झलक लखावा ।। सतगुरु मग श्रीचंद्र चलि,सुख खेम समावा ।।५।।१६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। बलिहारी गुरु आपणे,सद सद बलि जाउं ।। गुरु किरपा ते पाइऐ,हरि अगम अथाउं ।।१।। सतगुरु तुट्ठा देवई,अम्रित प्रभु नाउं ।। सतगुरु परसाद ते,सदा सच्च रहाउं ।।२।। सतगुरु चरनी लगिआं,नाही जम थाउं ।। सतगुरु सबदी मेलिआ,सच प्रेम सुभाउ ।।३।। जनम पदारथ सफल ह्वै,गुरु सबद कमाउ ।। जपु तपु संजम दया धरम,गुरु सबद समाउ ।।४।। सरब पदारथ सभ फला,गुरु तुट्ठे पाउ ।। जग महि सतगुरु पूज है,श्रीचंद्र महाउ ।।५।।१६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु परमेस्वर पारब्रहम,निरंकार अभेव ।। गुरु गोबिंद गोपाल राइ,गुरु ही सुरदेव ।।१।। अठसठ तीरथ गुरू है,गुरु ब्रहमा सेव ।। कामधेनु गुरु पारिजात,गुरु हरता भेव ।।२।। रोग निवारक चिंतामणि,सतगुरु लख देव ।। कारण करण करावणो,सतगुरु जग देव ।।३।। जंत्र मंत्र

तप सिद्धि फल,सत्गुरु ते लेव ।। नारद सारद सत्गुरू,पद नाद यतेव ।।४।। रिद्धि निद्धि सत्गुरु है,गुपतो प्रगटेव ।। सत्गुरु सभ सिर आइआ,श्रीचंद्र लखेव ।।५।।१६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु बिनु झखण झखीऐ,भरमैं संसारा ।। गुरु बिनु भवजल निधि बिखै,बूडत नर नारा ।।१।। गुरु बिनु गुण नहि जापई,अंधिआर उजारा ।। गुरु बिनु जग बन पाइ कै,पावत नहि पारा ।।२।। गुरु बिनु न्हाइऐ सुरसरी,सिर पापन भारा ।। गुरु बिनु वेद पुरान पठि,बाधिओ जंजारा ।।३।। गुरु बिनु पढ़त कुरान को,दोजख महि डारा ।। गुरु बिनु करम कमावणा,उर पावक बारा ।।४।। गुरु बिनु उरझत दंभ महि,जपु तपु यग्य दुआरा ।। गुरु बिनु सत्त न बूझई,श्रीचंद्र गवारा ।।५।।१६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। संतन तन मन सौंपिआ,सुख सहिज समाया ।। संत चरन मन लाइकै,रस आनंद पाया ।।१।। संत क्रिपाल दयाल हरि,प्रभु दरस दिखाया ।। संत क्रिपा ते जागिआ,नहि सुपन भुलाया ।।२।। संत संग लहि राम नाम,परिहर उर माया ।। मुहि संतन का आसरा,तिहुँ लोक धिआया ।।३।।

संत प्रसादि तीरथ सफल,जम पंथ पराया ।। संत द्रिढ़ाया धरम करम,सत मारग भाया ।।४।। संत वाक सतलोक ते,सत ले भव आया ।। श्रीचंद्र सत संचिआ,सत परिचै लाया ।।५।।१६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जे नाराइण पावणे,मन इछ तुमारे ।। सेवहु साधू भाउ करि,साचै दरबारे ।।१।। सच्चे मारग पाइ कै,सभ पाप बिदारे ।। बिन साधू नहि बिनस है,कूड़े पासारे ।।२।। साधू जापु जपाइआ,रस राम रमारे ।। साधू परमेस्वर भया,हितु लोक उधारे ।।३।। लाख कोटि महि एक जन, विरला संसारे ।। सत्त तुपक हरि दारुऐ,लख माया डारे ।।४।। जीत वासना त्रिहुँ गुणी,धौंसा धुंकारे ।। वजी वधाई श्रीचंद्र,दिग जै जैकारे ।।५।।१६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु पूरे ते पाइऐ,हरि नाम अमोला ।। प्रेम पदारथ अमल रस,थिति सदा अडोला ।।१।। तोटा मूल न आवई,खाणी मणि लोला ।। गोबिंद राम नाराइणै,माधव मुख बोला ।।२।। मन तरंग थिर अंतरहि,लिव तार न डोला ।। बाद तिआगी कलपना,रंग लाल सु चोला ।।३।। अघ

ओघन बिनसावई,प्रभु नाम अलोला ।। संजम सत संतोख ब्रत,हीरे बड मोला ।।४।। मज्जन अठसठ कीनिआ,अम्रित झकझोला ।। सहिज समाया श्रीचंद्र,गुल गोलन गोला ।।५।।१७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि की कार कमाइऐ,गुरु पूरे पाई ।। सुधा नाम उर माया,सभ त्रिसन बुझाई ।।१।। काम क्रोध अहंकार लोभ,मुह चोर पराई ।। अनिक जनम की लग रही,छूटी उर काई ।।२।। मानस तन दुरलभ महा,सोझी फुर आई ।। कूड़ प्रपंच बिडारिआ,सच अंतरि पाई ।।३।। दुबिधा दुरमति दूरि करि,गुरुमत बिगसाई ।। बिख बिखिआ चितवत नही,रम राम गुसाई ।।४।। साधु संगि कै बासबे,कलिमल न रहाई ।। हरि हरि हरि हरि श्रीचंद्र,हरि हरि लिवलाई ।।५।।१७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अघ ओघ रत पापीआ,हरि राखहु दुआरे ।। लोभ लागि हिंसा करत,उर दया

बिसारे ॥१॥ लूक कमावत जगत ते,तुम पेखत सारे ॥ जपु तपु संजम करम रत,परपंच विथारे ॥२॥ अंतरि अहनिसि रम रही,माया ममता रे ॥ साचो धरम न सूझई,कालम सिउं कारे ॥३॥ किआ कहिऐ मन इस की,क्रितघन महा रे ॥ राम नाम जानिओ नहीं,संतन पग पारे ॥४॥ जहँ जाइऐ थूकि थुकि,ध्रिग ध्रिग कहिता रे ॥ अपराधी निरगुण महा,श्रीचंद्र तुमारे ॥५॥१७२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ बिन जिहबा जो जापिऐ,को जानै नामा ॥ बिन नैनन जिहँ पेखणा,को रूप ललामा ॥१॥ बिन स्त्रवणा सुणि हरखई,को वरणभिरामा ॥ घ्राण बिना जिहँ गंध लहि,को कुंद सु जामा ॥२॥ कर बिन जाहि कमाइऐ,को ऐसो कामा ॥ पग बिन जहँ पधारिऐ,को है वह धामा ॥३॥ त्वक बिन जाहि सपरश है,को वसतु सु आमा ॥ बिनु मन को फुरनो जिसहि,को भनिऐ सामा ॥४॥ बिन बुद्धी के बोध जिहँ,को भासत तामा ॥ पारब्रहम श्रीचंद्र प्रभु,पूरन बिस्रामा ॥५॥१७३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। साधु चरन रज सेविऐ,मन इच्छ पुजाई ।। दरसन भेटत साधु का,दुरमति दूर धाई ।।१।। पानी ढोइऐ सीस करि,नम्रित थिर थाई ।। पक्खा ढोरत नवनिधी,कर भीतरि आई ।।२।। सच्च बोल साधू जना,अन कूड़ भगाई ।। क्रिपा द्रिस्टि अवलोकते,रस सांत समाई ।।३।। काम क्रोध अहंकार मोह,बिनसी उर काई ।। तम अगिआन विडारिआ,रवि गिआन चढ़ाई ।।४।। मै मेरी हउमै गई,इकसि लिव लाई ।। महिमा अगम अगाध बोध,श्रीचंद्र लखाई ।।५।।१७४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। रूप न रेख न रंग किछु,नहि जात अरु वरना ।। चक्र चिहन नहिं पाइऐ,तन भेख न भरना ।।१।। करम क्रिया नहि ताहि की,धरमऊ नहि धरना ।। मन बुधि इंद्रिअ गोलिका,कारज नहि करना ।।२।। नेड़ न दूरी जाहि मैं,आचार न चरना ।। भूत भविख्य भवान का,वितिरेक न हरना ।।३।। धरनि आकास पताल बिन,गंधरब किंनर ना ।। अद्भुत ते अद्भुत महा,नहि उरझ सुधरना ।।४।। किमि लखीए किम बूझीए,पर परा अपरना ।। संत सेव श्रीचंद्र करि,अनुभउ

ढर झरना ॥५॥१७५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ सेवा ते मन निरमला,कै होत कठोरा ॥ गिआन गरीबी देवई,कै करतो गौरा ॥१॥ यग्य भलाई करम,कै बुरिआई ठौरा ॥ धरम नीति मन मैल हरि,किधों मैल बटोरा ॥२॥ दान देत नम्रित लहहि,कै अहंक्रित जोरा ॥ निरमानत्व विदिआ करत,कै मानद घोरा ॥३॥ देवालै आसत लहहि,कै नासत लोरा ॥ काम भोग सांति करम,कै असांति ओरा ॥४॥ सरब नास करि क्रोध,कै रख्यक सिरमोरा ॥ सुखद साधु श्रीचंद्र,कै दुखदाइक होरा ॥५॥१७६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ सुख दुख आन न देवही,न बाहरऊँ आए ॥ आपन कीआ भोगणा,करणा जिसु भाए ॥१॥ पर कउ दोसी मूढ़ नर,भाखत ठहिराए ॥ जग महि करम प्रधानता,जो करे सु पाए ॥२॥ गिआन करम सिउं मेल करि,प्रभु रचन रचाए ॥ गिआनहिं जपु तपु संजमो,सोऊ करम कहाए ॥३॥ करम करत मुख ऊजला,संगिआ ग्यप जाए ॥ तन महि हरि हरि महि तनहि,लखिऐ स्तुति भाए ॥४॥

धरम करम अरु गिआन त्रै,एकै दरसाए ।। कुंजी साधू श्रीचंद्र,ताला खुलवाए ।।५।।१७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सत्गुरु नाराइण अहै,कोऊ भेद न भाई ।। आपै कउ आप लखत,जोउ मध्य समाई ।।१।। पर कउ पर नहिं जानई,लख करत उपाई ।। जिहँ मन जिहँ पद महि थिरा,तहँ गति दरसाई ।।२।। को वेता तहँ गति कथै,मन घाइन घाई ।। जब अन ठौरी मन गती,तब छूछ रहाई ।।३।। मन सत्गुरु सिख मन लहिओ,सबदै लिव लाई ।। सत्गुरु अंदरि वरतदा,हरि अगम गुसाईं ।।४।। हरि हरि मेल मिलाइआ,जोती जोताई ।। पूरण साधू श्रीचंद्र,रम राम रमाई ।।५।।१७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किउं कर संत मनाइऐ,किउं पूज चढ़ावैं ।। खावहि भोगहि एक सम,पहिराय दिखावैं ।।१।। सोवन जागन चालनो,बैठन उठि धावैं ।। मूत्र पुरीसा लेन देन,भ्रम भेद न पावैं ।।२।। गुरुकुल भीतरि पाठ स्तुति,करम नेष्ट नावैं ।। चंचल गुरु चंचल मनहि,चंचलता जावैं ।।३।। संत संग सुभ करम रत,हरि नाम धिआवैं ।। गिआन करम मिलि धरम लहि,मोखंतर ठावैं ।।४।। करम भूत

भव्य गिआन सिउं,अब धरम थिरावैं ।। साधु समागम श्रीचंद्र,अनुभव अगमावैं ।।५।।१७९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अंतरि भाव न मनमुखी,मुख कूड़ कहानी ।। गरदभ भार उचाइआ,स्तुति वाक जबानी ।।१।। मन कउ मन का राह है,सच कूड़ पछानीं ।। जिस अंतरि हरि बसि रहिआ,हरि सरब समानी ।।२।। कूड़ा पाज सु उघड़े,जग परखनवानी ।। होइ मुलंमा कीम किआ,सरमिंदा धानी ।।३।। बीचि सराफै हीरिआं,कंचन पहिचानी ।। भाए ही रंग निखरे,सचि गुरु सिखानी ।।४।। भोगण खावण पहिरने,मिथिआ अभिमानी ।। सच्च साधु श्रीचंद्र उर,चंदा असमानी ।।५।।१८०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे वरणीए,हरि अगम अपारा ।। घट घट अंतरि वरतदा,सभ जानणहारा ।।१।। सच्चो करतल आवई,रंग कूड़े टारा ।। आंच न सच्चे कंचनै,ताए सुनिआरा ।।२।। रत्ती तोल न घाट होइ,तुलीऐ तुल धारा ।। सूली खड़ग कमान तीर,खुंडा भा आरा ।।३।। मासा मासा मास करि,होमिओ तन सारा ।। परमानंद न मावई,जामा चाकारा ।।४।। अहंब्रहमास्मि अनलहक

धुनि,जग विस्तारा ।। संतन तन श्रीचंद्र दाह,हरि अतन निहारा ।।५।।१८१।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग काफी ।। संतां मारग धरम का,दै सीस सवारा ।। कंटक दोखी हूंझ कै,करि पासै डारा ।।१।। कबि प्रहलादहि पेखिआ,बिन मौत सहारा ।। मुकति कहहु किआ वस्तु है,बिन काल नजारा ।।२।। सीस तली कर धार करि,गलि यार निहारा ।। मरण खरीदत सूरमा,कायर अपधारा ।।३।। भामा खोड़ सिंगार रचि,हेरत को पिआरा ।। भोग मोख दुइ संग सिर,लहि देवणहारा ।।४।। मन जिनि मोह पसारिआ,कर सुधा विडारा ।। श्रीचंद्र साधन लखा,सिर धड़ ते निआरा ।।५।।१८२।।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

।। राग काफी ।। आवहु पीवणहारिहो,परमानंद सुद्धा ।। प्रेम पिआला भरि रहिओ,हथ संत समुद्धा ।।१।। पीवत ही तन मन हरा,रस आतम उद्धा ।। अंदर बैठा आपनै,दुआरहि अनिरुद्धा ।।२।। होका लोक सुणाइआ,चोआ हरि गुद्धा ।। मरजीअड़े धाए सकल,हुइ सुद्ध बिसुद्धा ।।३।। मद मत नाच नचाइआ,बिन सीसी जुद्धा ।। जब लगि मन दुस्मन खड़ा,किमि मिटहै क्रुद्धा ।।४।। राम

राम रट दिनस राति,हरि दीनस बुद्धा ।। अबिचल सुख श्रीचंद्र लख,संतन चख चुद्धा ।।५।।१८३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। नाराइण अठखेलिआं,गुरुमुख मन आईआ ।। हरि भावे तिउं वरतणा,हरि संगि मिलाईआ ।।१।। हरि गुण निधान प्रीतम प्रभु,सभ सिउं लिव लाईआ ।। सभे सखीआं साहिबे,नहि अपर पराईआ ।।२।। कौड़ा किसे न भाखई,गलि मेलि रखाईआ ।। सभे जानण आपणा,आतम विगसाईआ ।।३।। भाउ भगति भगवान संगि,सच करम कमाईआ ।। धरम धुरंधर आदि पुरुख, संतन लगि गाईआ ।।४।। करि कीरति आनंद रस,हरि चरन समाईआ ।। पूरे सिउं श्रीचंद्र हिल,पूरन वल धाईआ ।।५।।१८४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। महिल सचे पातसाह का,अति ऊचो ऊचा ।। विरला कोऊ पहुँचई,पुंनी बड़ मूचा ।।१।। विस्ट सु भाई पाइऐ,पूरब करि सूचा ।। लेख लिखाइआ उज्जला,महली हरि भूचा ।।२।। नाम निधान विगासिआ,को सम न पहूचा ।। मन मोहण पिआरा प्रभू,सच्चे मन रूचा ।।३।। जिहँ जन मेल

मिलाइआ,गंधन जिउं गूचा ।। अगम अथाह अगाध बोध,गुरु गिआन समूचा ।।४।। बाणी संत समाइआ,माता संगि चूचा ।। राम राम श्रीचंद्र कथ,कलपन अन हूचा ।।५।।१८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अकथ कथा समरथ की,को गुरुमुख पावै ।। कहि कहि गुण गोबिंद के,कहिणो सकुचावै ।।१।। कहिऐ प्रीतम आपणै,जिस कहिण सुखावै ।। झरना झरदा निज्झरों,गुरुमुख मल न्हावै ।।२।। मति कालख सभ नास करि,कर भानु उगावै ।। चौदहँ लोक प्रकास लहि,मन कमल खिड़ावै ।।३।। पिरम पिआला प्रेम का,पी त्रिपति न आवै ।। उनमत मत विसारीआ,मत्ती विगसावै ।।४।। राज महिल पग धार कै,बाहरि नहि जावै ।। हरि हरि हरि कहि श्रीचंद्र,हरि हरि हरि रावै ।।५।।१८६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिनि जानिआ हरि प्रीतमहि,सो तिस ही जेहे ।। आपहि प्रगटिआ जगत महिं,धर मानुख देहे ।।१।। बन्ह बहाली माइआ,द्वारै निज गेहे ।। भेद न जानै मूल को,जल आवत रेहे ।।२।।

अपरंपर पारब्रहम हरि,किमि खावत हेहे ।। झोल झुलावत दरभ दल,वायू रल खेहे ।।३।। आपन आप वधाइअन,तरु डारसि थेहे ।। सहिज समाया पिरम रस,हरि अगम अगेहे ।।४।। आपै सिउं आपै मिलै,तजि गागर नेहे ।। अद्‌भुत अद्‌भुत श्रीचंद्र,किमि करि वरनेहे ।।५।।१८७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। भवरा बीधा कमल रस,दिन दिया बिताई ।। धूप न जानै दूख को,सभ संग बिहाई ।।१।। मातु पिता सुत बंधु जन,बनिता जुत भाई ।। रैनि परी नहि निकसिआ,गया जीउ पराई ।।२।। कंज खिड़े देह जल पड़ी,आवरण खाई ।। पूरा प्रेम निबाहिऐ,निज प्राण गवाई ।।३।। पेखणहार न जानई,अंतरि लिव लाई ।। देह बिनासी खोईआ,नेह संत समाई ।।४।। प्राणपती कै प्राण है,उर चिंता काई ।। हरि हरि हरि भजि श्रीचंद्र,हरि माहि रलाई ।।५।।१८८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। अकथ कथा हरि प्रेम की,को सज्जण आखै ।। तन सौंपउं मन देव हउं,धन आगै राखै ।।१।। बाहरि कछू न राखहउं,वस्तू कोटि लाखै ।। जीउ समरपउं आपणा,तजि प्रति अभिलाखै ।।२।।

प्राण तिआग सेवा करउ,जो कछु मुख भाखै ।। किआ बपुड़ा यह सीस है,जेऊ प्रेम न चाखै ।।३।। देह बिछौणा छाइऐ,चरनन तरु आँखै ।। नैणा बिना निहारना,प्रीतम को नाखै ।।४।। राम राम हरि राम राम,रम राम रमाखै ।। प्रेम पिआला श्रीचंद्र,पी पी मन माखै ।।५।।१८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पावक प्रेम प्रगासिऐ,तन मन जल जाई ।। कोऊ बचावनहार नहि,घट पानी पाई ।।१।। जलनिधि सोखत छिनक में,तऊ नहि विसमाई ।। नंदन खांडव सोक बिनु,सभ भसम कराई ।।२।। साक सैन साजन सखै,छोडत नहि भाई ।। छत्र सिंघासन राज पाट,रथ नाग जराई ।।३।। फरश बिछौणे मखमली,अतलस दरिआई ।। साड़ फूक सभ धर दए,तन हूँ बिनसाई ।।४।। बुझत न लागी कहूँ बिधि,लख जतन कराई ।। एको अक्खर श्रीचंद्र,हरि राम दुहाई ।।५।।१९०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। उबरन सिउं बूडन भलो,हरि प्रेमहि धारा ।। तोड़ विपंची मोड़ मुख,तुणका इक तारा ।।१।। जीवन चिंता तिआग कै,चित मरन विचारा ।। सागर रुड़िओ जात है,नैनन कै नारा ।।२।।

रण रंग खेतै नचिआ,कर खड़ग करारा ॥ जीत नगारा वजिआ,भुइ पर तन ढारा ॥३॥ उपजि विरोलै उतसाह,धूली विस्तारा ॥ सूं सूं सबद विआपिआ,सुलगत अंगिआरा ॥४॥ जै जै धुनि नभ छाया,चढ़िआ बरिआरा ॥ पुहप यान श्रीचंद्र का,दहदिसि उजिआरा ॥५॥१६१॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ संतहु आवहु दया करि,गाइऐ हरि गीता ॥ अमर कथा गोबिंद की,लख पतित पुनीता ॥१॥ आंडा गंदा सुद्ध होइ,अचरज रस कीता ॥ अब लगि दाग न छोड़ई,कलपन बहु बीता ॥२॥ उमा न त्रिपती आज लौं,सीसन अरपीता ॥ बूझहु जाइ विरंचि कउ,कछु कहिऐ मीता ॥३॥ नैन न खोलि निहारता,शंकर रस पीता ॥ बिख उगलत नित सेसनांग,हरि नहि भैभीता ॥४॥ किआ कहिओ किआ किहँ सुनो,किआ कहबि बकीता ॥ हरि रस बूडे श्रीचंद्र,अनुभूति अभीता ॥५॥१६२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ पूरे सत्गुरु चरन सरनि,जोग जुगती पाई ॥ बंधन मेटे जिअ के,हरि हरि लिव लाई ॥१॥ दिन दूणी निसि चउगुणी,निधि चढ़ी सवाई ॥ लेवणहारे लेवही,बिन तोटि

महाई ।।२।। जपु जपु नाम निरंजना,आदेस लखाई ।। कंनी स्त्रुति सु मुंद्रिका,खेचर छिति धाई ।।३।। सबदै सिंङी वाइ कै,भव अलख जगाई ।। सुंन मंडल महि सहिज पद,मन थिर सु रहाई ।४।। गुरु चेले की संधि खोइ,ताड़ी हरि नाई ।। अगम अगोचर श्रीचंद्र,जोती दरसाई ।।५।।१९३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। छडि चलणा संसार,मन समझाइले ।। धरि है गरब गुबार,कूड़ अवाइले ।।१।। जगत रहहि इस भाति,गहिमा गहिम बन ।। तेरा नाम निसान,न रहसी कोइ तन ।।२।। कउण वसतु तुधु संगि,आई जान ले ।। पर की अवस्य तिआगनि,द्रिढ़ चित ठान ले ।।३।। रैणि बितानी एक,अधिक पसार किउं ।। सोई करहु बिबेक,परै न भार जिउं ।।४।। सुख चाहत मन तोर,तउ संत पास जा ।। हरि सिमरन संतोख,श्रीचंद्र आस ला ।।५।।१९४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। इह जग भीतरि मित्र,न कोई आपणा ।। झूठे करत चरित्र,धन चहि खापणा ।।१।। जेतो कूड़ कबाड़,मानुख तन विखै ।। पसु पंखिन महि तेता,नाहिन तूँ पिखै ।।२।। झूठ फरेब तूफान,धर

असमान का ।। मानव रिदै निवास,नहि अनुमान का ।।३।। सकल विगाड़ी काम,नर नहि त्रिपतई ।। मरकट भालुक जीव,अवसर पिखतई ।।४।। भजि हरि संतन मेल,जे किछु पावणा ।। उजड़ जाइगो खेल,श्रीचंद्र गावणा ।।५।।१९५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। चित्त न लाई भूल,भव बिख घट भरा ।। जिसु जिसु पीता एहु,सोई है मरा ।।१।। पेख तमासा जगत,मन समझाइऐ ।। तबही कछुक गिआन,रिदै रहाइऐ ।।२।। डंडे रोड़ी गुड़ की,कौतुक कपि लहौ ।। खावण रहिओ दूरि,मरना चित्त चहौ ।।३।। माया किसहूँ संत,भोगी सुख सहित ।। बिनसि गए बहु जंतु,संचित ही रहित ।।४।। पूजत माता बहिन,सुता अरु भानजी ।। श्रीचंद्र भोगन ते ही नारि,पति पहिचान जी ।।५।।१९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। त्रिसना आसा लगि,न जनम गवाइऐ ।। विसमै कदे न अगि,तेलै पाइऐ ।।१।। वित्त बटोरत चित्त,चिट्टे बाल भए ।। खावण रहिओ किति,निकटी काल भए ।।२।। पिता पितामह गए,

आसा चिता जल ।। नाती पूत उमाह,अंतरि रहै बल ।।३।। डारी सिर पर स्वाह,आगा खोइआ ।। करम भूमि महि नाम,न कबही बोइआ ।।४।। सड़दे बलदे वेख,श्रीचंद्र भागिआ ।। राम कहित सत्गुरु की,चरनी लागिआ ।५।।१९७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। सुरग नरक का दुआर,इह तन मानवी ।। जित चाहै पग धार,अंतरि जान जी ।।१।। लख चुरासी जोनि,भोगत जुग गए ।। समै सुहावा अबही,आयो हथि तुवै ।।२।। जो चाहै बनि जाह, तुमारी इच्छिआ ।। सिर साहा पातसाह,कै माँगहु भिच्छिआ ।।३।। देव दैत्त यख्य किंनर,गण गंधरब हो ।। पसु पंखी तरु पाहन,कीट पतंग भो ।।४।। श्रीचंद्र उपकारी,संतन भाखिआ ।। हरि हरि नाम निधान,कीजै काखिआ ।।५।।१९८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। सभ नर दीजै जाल,पावक बरस कै ।। जेती नवखंड धरनी,पावन फरस कै ।।१।। सातहुँ सिंधु मझार,आप जनाईऐ ।। राग रंग रस चारु,नारि नचाईऐ ।।२।। अरब खरब भंडार,

द्रब्य वधाइओ ।। देस भूमि घर बार,अधिक सजाइओ ।।३।। फुलवाड़ी फुल,रंग बंरगै लाइ कै ।। रंग तमासे खूब,पेखै चाइ कै ।।४।। श्रीचंद्र सुख नाहि,बिन हरि नाम कै ।। सच्चै कै वापारी,लेत न चाम कै ।।५।।१९९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। पूरन गुरु परसादि,नाम धिआईऐ ।। झूठी कारै लगि,न आप वंञाईऐ ।।१।। खाली पल्ले मन,हीरा राम नाम ।। दरगह बैठ सराफ,दै है घणे दाम ।।२।। खावहु खरचहु रज्ज,तोटि न आवई ।। सौदा लाहेवंद,गुरुमुख पावई ।।३।। कागद कलम सु धंन,मसी धंन है ।। लिक्खण लेख भी धन्य,नाम जु मन्य है ।।४।। श्रीचंद्र नाराइण,मंन वसाइआ ।। साधू सज्जण धन्य,जग महि आइआ ।।५।।२००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। मिलिआ मानुख जनम तोहि,जीवन के काजा ।। राम राम सिमरउ मना,राजन महाराजा ।।१।। अब के समै समाल ले,बोवहु हरि नामा ।। चूक जाहि जउ काल ते,किआ खावगु

तामा ।।२।। खरचि न होवहि गांठि मै,परदेसी दुखीआ ।। मांगत हूँ नहि मिटत है,उदरै की भुखीआ ।।३।। कब लउं कवन देहगो,याचे तो भोजा ।। आखर तुझ ही कऊ बनै,रहिबो बड रोजा ।।४।। हरि दरगह बात कउ,संतन बतरावा ।। श्रीचंद्र राम राम राम,सच टेक टिकावा ।।५।।२०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अति दुखीए बड पातसाह,भूमी के राजा ।। को गनीम चढ़ आवई,चतुरंगनि साजा ।।१।। धन ते धनवान दुखी,बड पेखिओ जाई ।। भोगण पहिरन तिआग कै,संचित बल लाई ।।२।। रोग गरासे जन समूह,बिलपत जल ढारा ।। पुत्र मित्र बिउहार लगि,दुखीआ संसारा ।।३।। गुणवानन गुण ग्रहण करि,सनमान न पावा ।। घट लाखन जऊ नीर डारि,उर बुझै न दावा ।।४।। श्रीचंद्र इक एक ते,दुखीए जग लोगा ।। सुखीआ साधू सोऊ लख,जिनि हर रस भोगा ।।५।।२०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिनि हरि नाम न सिमरिआ,सोई दुखवंते ।। त्रिसना कबहूँ न बुझई,दिन राति जलंते ।।१।। भोगत त्रिप्ति न कामिनी,कामी अगनंते ।। त्रिपते नाहिन धनपती,धन धरा गडंते ।।२।।

पढ़ पढ़ पाठक पुस्तकां,अन अन चितवंते ।। अक्खी त्रिप्ति न पावई,कौतक पिखिअंते ।।३।। त्रिपतति जिहबा नाहि कबि,खट रस खावंते ।। सुनते कान न त्रिपतत भे,नव रस छंदं ते ।।४।। घड़ा आकासहि किन भरा,सत सिंधु पवंते ।। श्रीचंद्र आसा बुझहि,हरि राम रमंते ।।५।।२०३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। सीतल नाम निधान हरि,संतन मिलि पीवहु ।। मरना बहुरि न होइ है,जुग जुग जीवहु ।।१।। अम्रित पी मन अमर होइ,अमरन महि थीवहु ।। ऊचे ते ऊचा महिल,लहिहो चिर जीवहु ।।२।। परमानंद सु प्रेम रस,नाहिन अउखीवहु ।। सच्चा मारग प्रभु पुरी,बिनु कंटक रीवहु ।।३।। हरि सिर पुहप चड़ाइआ,अघ ओघ नसीवहु ।। सगला भव सनबंधु लखि,वैरी न लखीवहु ।।४।। सत्गुरु पूरे चरन लागि,अरबिंद खिड़ीवहु ।। श्रीचंद्र सफला जनम,हरि मेल मिलीवहु ।।५।।२०४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। गोबिंद के गुण गाइऐ,कलिमल सभि भागै ।। पंच दूत दोखी महा,डर लवै न

लागै ॥१॥ कलि कालुख की कोठरी महि,लाग न दागै ॥ बिखै विकारी भट्ठ महि,जालहि नहि आगै ॥२॥ तिस ही जन हरि नाम रस,जिसु मसतक भागै ॥ साधू संगति पाइ ही,प्रभु सिउं अनुरागै ॥३॥ सच्चा नेहु न तुटई,तूटहि कच तागै ॥ पिरम प्रेम तन खचि रहिआ,सद ही रंग रागै ॥४॥ मया गुपाल दयाल की,हरि कीरति जागै ॥ श्रीचंद्र मन वसि गया,संतन सिउं पागै ॥५॥२०५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ अम्रित हरि हरि नाम हरि,सत्गुरु ते पाया ॥ अनुभव पूरन ब्रहम प्रभु,रिद महि प्रगटाया ॥१॥ जगत जलन ते निकसि कै,सुख सिंधु समाया ॥ जीवन मिलिआ अनंदमय,नित नाम धिआया ॥२॥ त्रिपति अघाया पिरम रस,नाहिन भव ताया ॥ परमेस्वर सो मेल करि,फिर गेड़ न आया ॥३॥ हरिआ भरिआ बाग जग,ठंडी तरु छाया ॥ आसा तपति बिनास भी, पंथी हरखाया ॥४॥ अतुट पदारथ नाम धन,रंकै कर आया ॥ श्रीचंद्र सोऊ जाण है,जिनि हरि गुण गाया ॥५॥२०६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || सत्गुरु पूरन पारब्रहम,अविनासी सूरा || सरब कला समरथ प्रभु,बचनन का पूरा |१| तम अगिआन विनासता,नभ महि रवि चढ़िआ || सदा सहाइक दास का,सभ थाईं खड़िआ ||२|| बिघन न कोई लागता,सत्गुरु सरणाई || अगनि विकारन परिहरत,सीतल ससि भाई ||३|| सिर देवन के देव वर,राजन सिर ताजा || छत्र सिंघासन कीरती,दहदिसि सुभाजा ||४|| निरभै निरवैरा गुरू,जग का हितकारी || श्रीचंद्र धंन धन्य गुरु,बड परउपकारी ||५||२०७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || गुरु समान अन देव नहि,गुरु पूरनकामी || पारब्रहम परमेस्वरो,गुरु अंतरजामी ||१|| गुरु बिसनू करता पुरुख,गुरु ही महादेवा || चार पदारथ सकल सिधि,लहि सत्गुरु सेवा ||२|| ईहां ऊहां सरब सूख,सत्गुरु लहिऐ || जो मंगिऐ सोई मिलै,किछु थोड़ न पईऐ ||३|| गुरु चिंतामनि कामधेनु,गुरु अम्रित सोमा || सत्गुरु सेवै पारिजात,लहिऐ सद भोमा ||४|| सत्गुरु बेणी न्हाइ कै,फिरि जनम न आवै || सत्गुरु सेवत श्रीचंद्र,निरबाण समावै ||५||२०८||

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। गुरु सर सुधा समाइआ,पीवत निरबंधा ।। गुरु सर न्हाए अघ कटत,लहि आनंद कंदा ।।१।। गुरु सर अठसठ तीरथी,सुरसरी ते पावन ।। गुरु सर डुबकी लाइऐ,फिर बहुड़ि न आवन ।।२।। गुरु सर का सिख मीन होइ,सुख संग बिहारै ।। गुरु सर पाइआ जाहि नर,सगले कुल तारै ।।३।। गुरु सर सुभर नाम रस,मल हउमै खोई ।। गुरु सर अति उजल भई,मति खनली धोई ।।४।। गुरु सर बिमल बिबेक लहि,हरि एक समाना ।। गुरु सर मज्जन श्रीचंद्र,पाइआ निरबाना ।।५।।२०६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सत्गुरु मत दुरमति हरत,हरि नाम दिवाया ।। गुरु अविनासी सेविआ,अमरापद पाया ।।१।। रैनि अविद्या नास भी,गुरु रवि प्रगटाया ।। गुरु चरनन रज पाइ कै,मन मुकर मजाया ।।२।। अम्रित सत्गुरु चरण पी,रस प्रेम समाया ।। गुरु परसादी जाणिआ,सब महि हरि राया ।।३।। सत्गुरु जग महि आइकै,सच नाद वजाया ।। सत्गुरु कै उपदेसिऐ,गुणनिधि उमड़ाया ।।४।।

सत्गुरु सबदी रंग रंगे,गूड़े बिन माया ।। श्रीचंद्र सत्गुरु सबद,गोबिंद दरसाया ।।५।।२१०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। आदि निरंजन सत्गुरू,अविनासी देवा ।। सत्गुरु के परसादि ते,पईअत हरि भेवा ।।१।। जनम मरण दुख काट कै,सत्गुरु किओ मोख ।। पारब्रहम उर थिर किया,अंतरि हर दोख ।।२।। सत्गुरु परम क्रिपाल भे,जपु तपु दिअ दान ।। सत्गुरु के परसाद ते,चूका अभिमान ।।३।। मान अपमान न चित्त धार,गुण रामहि गाइऐ ।। सत्गुरु के परसाद ते,निहचल मति पाइऐ ।।४।। गुरु सेवे मन मोह मिटै,अउगुण निस्तारा ।। श्रीचंद्र गुरु सेविऐ,लहि मोख दुआरा ।।५।।२११।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सत्गुरु निरमल गिआन सर,सभ पाप निवारै ।। चरन पवित्र सत्गुरु के,निरगुण निस्तारै ।।१।। गुण निधान सत्गुरू पग,बुद्धि ऊजल करता ।। सत्गुरु दाता नाम धन,संसारै भरता ।।२।। सत्गुर तुठै पाईऐ,हरि भगति भंडारा ।। सत्गुरु कै परसाद ते,रस अम्रित धारा ।।३।। सत्गुरु परउपकारीआ,करता जीअ दाना ।। नाम दान इस्नान का,सत्गुरु खजाना ।।४।।

चार पदारथ नवनिधी,गुरु चरण निवासा ।। श्रीचंद्र सत्गुरू ते,पूरन सभ आसा ।।५।।२१२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। गुरुमुख हरि गुण गावणा,सद सहिज समाणा ।। गुरुमुख हउमै तिआग कै,सुभ करम कमाणा ।।१।। गुरुमुख ताड़ी अचल लिव,परमेस्वर भाणा ।। गुरुमुख गरब गवाइआ,सांति रस माणा ।।२।। गुरुमुख साधू संग सुख,जपु तपु सच्च साणा ।। गुरमुख रिदै कसउटड़ी,तन दुख सहाणा ।।३।। अंदरि सच्च मुख सच्च ही,गुरमुख बचनाणा ।। मनमुख नाम न चेतई,कूड़े लपटाणा ।।४। मनमुख रंग कुसुंभला,धुप्पै उडि जाणा ।। सफल दरस गुरुमुख सचे,श्रीचंद्र पछाणा ।।५।।२१३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। मन तन संतन सौंपकै,अबिचल सुख पाया ।। संतन के परसाद ते,प्रभु नाम धिआया ।।१।। सबद समाणे संत कै,मन मोह मिटाया ।। संत संगि बिस्वास होइ,सभ ब्रहम समाया ।।२।। अंतरि मैल उतारीआ,निरमल होइ आया ।। गुण निधान हरि राम नाम,संतन ते भाया ।।३।।

प्रेम भगति लिव लाइ कै,इको हरि गाया ।। संत परमहंस उज्जला,मानस रहसाया ।।४।। लाल पदारथ कीमती,संतन दिलवाया ।। श्रीचंद्र संत चरण धोइ,अम्रित मुख पाया ।।५।।२१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पारब्रहम परमेस्वरो,सभ अंतरजामी ।। घट घट एको रवि रहिआ,पूरन सभ धामी ।।१।। वण त्रिण जोति समाईआ,किस ठौर न कामी ।। सभ तेरे तू सभस दा,नर किंनर बामी ।।२।। उदभिज अंडज जेरजीं,दाता नित्त तामी ।। एक जंतु किआ पावई,जाणन गुण ग्रामी ।।३।। भाखिआ भाव अपार लख,पूरत सभ कामी ।। इकमनि जिनी धिआया,तिनि स्त्रिस्टी थामी ।।४।। संतन पाछै लाग कै,गमनत दुर ठामी ।। श्रीचंद्र सद पूरनो,सेवक अनुगामी ।।५।।२१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। करता पुरुख निज मया ते,गुण अगम लखावै ।। सेवक कै सिर हत्थ धरि,तिंन लोक दिखावै ।।१।। घट घट अंतरि विआपिआ,आपै दरसावै ।। जपु तपु संजम साधिऐ,हरि द्रिस्टि चलावै ।।२।। गुपता रूप प्रगटाइआ,संतन तन आवै ।। मिहरंमत करि आपणी,असमान

चढ़ावै ॥३॥ माजारै पर किरपा करि,सिंघन भजवावै ॥ चिड़ीआं बाज सिकार किअ,हरि समरथ दावै ॥४॥ जिनि कउ कोइ न जानई,तिनि स्रिस्टि लखावै ॥ क्रिपा कटाख्य हरि श्रीचंद्र,त्रिण मेरु दिखावै ॥५॥२१६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ मनमुख सेती संग करि,मुख कालख लाई ॥ धोते लाख न उतरै,पर निंद कमाई ॥१॥ गुण लोचत पचि पचि मूआ,अगनी भड़काई ॥ निंदा करि ऊचा चढ़ै,तल तल धसि धाई ॥२॥ बेमुख सेवा संत ते,तामस उर छाई ॥ पर कउ गड्ढा खोदता,गिरि आप मराई ॥३॥ शेर काठ अनवाया,हरि प्राण पवाई ॥ निंदक कउ हनवाया,प्रभु कला वधाई ॥४॥ जिउं जिउं सोभा लोड़ता,तिउं तिउं सिर छाई ॥ श्रीचंद्र साधू सुखी,परनिंद विहाई ॥५॥२१७॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ गोबिंद गुण सद गावणा,गुरुमुख मन भाया ॥ राम नाम रस कीरतन,करताल वजाया ॥१॥ सगली स्रिस्टि नाराइणै,हरि नाद सुणाया ॥ पाप खोइ निरमल किए,प्रभु राम

जपाया ||२|| लोभ मोह अहंकार दूत,मेटी सभ माया || सच साधु सच सेवको,सच्च नाम समाया ||३|| सच्चो सच्च प्रगासिआ,भवरे रस आया || डुब्बा प्रेम अथाह सर,मरजीवे भाया ||४|| रतन जवाहर माणकी,झोली भरि लाया || श्रीचंद्र मस्तक मणी,वडभागी पाया ||५||२१८||

ओम् पारब्रह्मणे नमः

|| राग काफी || संत संग मन निरमला,मति ऊजल होई || संत संग हरि हरि जपत,हउमै मल खोई ||१|| संत संग रस प्रेम रंग,काली बुधि धोई || संत संग गुण गाइऐ,हरि दरगह ढोई ||२|| संत संग सच पाईऐ,लिव कूड़ विगोई || संत संग रति करम धरम,पाखंड बिनोई ||३|| संत संग जपु तपु दया,जत सत प्रगटोई || संत संग परमेस्वरहि,व्रिति धार थिरोई ||४|| संत संग निगमागमी,सत सोझी होई || संत संग श्रीचंद्र गहि,दुख रहहि न कोई ||५||२१९||

ओम् पारब्रह्मणे नमः

|| राग काफी || नाम निधान अखुट धन,सत्गुरू दिवाया || सूका हरिआ होइआ,दल सीतल छाया ||१|| चार पदारथ सरब सिद्धि,करतल दरसाया || सुभर सरवर संत संग,मन कमल

खिड़ाया ॥२॥ ऊचे ते ऊचा प्रभू,रंग महिली पाया ॥ वाजे वज्जे चहुँजुगी,धुनि पंच अलाया ॥३॥ सुरझी उरझी कुंडली,गुरुमंत्र द्रिढ़ाया ॥ पी अम्रित त्रिसना बुझी,पाई अन काया ॥४॥ अगम अगोचर पारब्रहम,सभ द्रिस्टी आया ॥ श्रीचंद्र गुरु संग करि,हरि अलख लखाया ॥५॥२२०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ गुण गोबिंद नित गाइ कै,मन सहिज समाना ॥ सच्चो सच्च विगासिआ,नहि रहिओ बिगाना ॥१॥ उलट कमल परगासिआ,रंग राम दिवाना ॥ भाई मीत बंधप सखा,नाराइण जाना ॥२॥ दूजी दुविधा दुरमती,दुरतो न रहाना ॥ आपा आप पछाणिआ,आपे विगसाना ॥३॥ पारब्रहम पूरन प्रभू,घट भीतरि माना ॥ जत सत संजम सील ब्रत,संतोख प्रमाना ॥४॥ आवत नाहिन कतहुँ ते,जावत नहि आना ॥ श्रीचंद्र सत्गुरु मया,हरि लहिओ खजाना ॥५॥२२१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मुहि निरगुण प्रभु बखसिआ,हरि करणेहारे ॥ पाप विकार उतारिअन,अपने कर धारे ॥१॥ सेवा सरी न मोहि ते,दुरमति के मारे ॥ पंच दूत घर मूसई,लकुटी ले टारे ॥२॥ राखा

होया आप प्रभु,सभि दुस्ट निवारे ।। करणी करम सु लाइओ,जपु तपु ब्रत धारे ।।३।। मानस जनम सु सफल भा,आतम निरधारे ।। बंधन ते छुटकाइ कै,अपने करि धारे ।।४।। एको सच्च प्रकासिआ,कूड़ै निरवारे ।। श्रीचंद्र नित सास सास,हरि नाम चितारे ।।५।।२२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तारहु तारनहार प्रभु,जन सरणि तुमारी ।। मैं अजान निरगुण महा,तुम परउपकारी ।।१।। अउगुण धरत न कबहुँ चीत,उर सार समारी ।। पाप करम रत पेख कै,देहु दान अहारी ।।२।। वेकारी चित वेड़िआ,नाहिन तिरस्कारी ।। भक्ख अभक्ख न जाणऊँ,पेटू बड भारी ।।३।। नाम दान इस्नान की,उर रीति न धारी ।। मति थोरी अति मूढ मन,संगति गावारी ।।४।। करुणामय प्रभु बखस लेहु,कर मस्तकधारी ।। श्रीचंद्र सरणागती,त्राह त्राह मुरारी ।।५।।२२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। महिमा तुमरी किआ कहा,हरि गुण निधि पूरे ।। अवगुण राता किआ कहै,नाहिन उर नूरे ।।१।। पुहपक पेख अकास महि,नरकी जन झूरे ।। चित दुरमति लगि वासना,गुरुमति न

सऊरे ॥२॥ लोभ मोह अहंकार ग्रसि,परधन पिखि सूरे ॥ इंद्री रस लपटाइआ,तरु बिखिअन मूरे ॥३॥ किआ जानै सत पंथ सो,राचिओ द्रब्य कूरे ॥ अगिआनी मति अंधुला,संतन ते दूरे ॥४॥ कहिबे जोग न बुद्धि जिहँ,कटुता भरपूरे ॥ श्रीचंद्र तुव दर परा,लिहु मेल हदूरे ॥५॥२२४॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ हम बारिक तुम पिता है,प्रभु करणैहारा ॥ तुम बिन लाख उपाव ते,नाही छुटकारा ॥१॥ मन पितु का ही द्रव है,लख कै निज बारा ॥ अन पहि कहिऐ बेनती,ध्रिग ध्रिग कहि टारा ॥२॥ पिता नाम ऊचा करहि,अवगुण भंडारा ॥ मुँह पनही खा आइऐ,रचि करम विकारा ॥३॥ बहुरि बहुरि चित आवई,पितु परम दयारा ॥ सरणि,सरणि मुहि राख लेहु,जग के दातारा ॥४॥ नहि सेवा बन आवई,नहि निरमल कारा ॥ श्रीचंद्र तुमरा भया,करि नहि धधकारा ॥५॥२२५॥

ओम् पारब्रह्मणे नम:

॥ राग काफी ॥ सुण बेनती मेरीआ,हरि दीन दयाला ॥ अपनी सरणी राखिए,महा निरगुण बाला ॥१॥ बिचरत अन ही ठौर महि,बंध अवगुण पाला ॥ कऊआ कउ विस्टा रुचै,परमल नहि

भाला ॥२॥ खीर खंड घिउ तिआग करि,हड्डि सुआन स्रिगाला ॥ बिल्ली लाइ समाधि जो,मूसे की भाला ॥३॥ लागि लोभ भरमाइआ,तजि संतन चाला ॥ गणति न आवत मोहि कउ,सभ अवगुण जाला ॥४॥ तू बखसंद दयाल प्रभु,निरगुण की ढाला ॥ श्रीचंद्र सरणी परा,लखि महा क्रिपाला ॥५॥२२६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ हमरे धन इक राम नाम,अन आस गवाई ॥ संगि सखा इक राम नाम,सभ ठौर सहाई ॥१॥ मातु पिता सनबंधु साक,सभ तिआगे भाई ॥ राम नाम जपु जपु रिदै,भुख रही न काई ॥२॥ रिधि सिधि नउनिधि इक,हरि गुरु बतराई ॥ मन वांछित सभ पाइऐ,सद अनंद रहाई ॥३॥ राम नाम परताप सिउं,सभ स्रिस्टि निवाई ॥ रख्यक सिंघ हरि राम नाम,गज सयार भगाई ॥४॥ तरु सुक्का बन पाप गन,हरि पावक लाई ॥ श्रीचंद्र गति मुकति सभि,प्रभु नाम समाई ॥५॥२२७॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ जग महि सुफला आइआ,हरि हरि लिव लागा ॥ आसा त्रिसना तिआग कै,प्रभु

सिम्रित जागा ॥१॥ संत संग तिनी पाया,जिनि मस्तक भागा ॥ प्रेम पदारथ पाइकै,सोधिओ निज आगा ॥२॥ कीरति गाई राम नाम,त्रित नाद सरागा ॥ मान अपमान वंञाया,हउमै बंध तिआगा ॥३॥ निरमल उर हरि जस लहै,नस्टे दुर दागा ॥ भया समाहा राम रंग,मन मोहित रागा ॥४॥ राम राम धुनि सुनत ही,जम सकत न खागा ॥ श्रीचंद्र का सरवसो,हरि राम अनागा ॥५॥२२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जहां न भाई मीत है,नहि कुटुंब सहेरा ॥ जिस मारग अंधकार घन,कछु परत न हेरा ॥१॥ जहाँ ग्रीस्म रितु घाम अति,नाही जल झेरा ॥ जहां छीनते दंड हनि,पुन्य जीवन केरा ॥२॥ जहँ भीड़ी मोरी महां,चलबे कउ प्रेरा ॥ मूत्र पुरीखा जहँ सरी,गहि जबरन गेरा ॥३॥ मारू थल बारू तपत,धरबो नंग पेरा ॥ बिन बसनन असिपत्र बन,ब्रिण करत गहेरा ॥४॥ हुंमसि धुंमसि दहदिसा,कूकत नर ढेरा ॥ श्रीचंद्र बिन राम नाम,कोऊ होइ न तेरा ॥५॥२२९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मन रे,किउं डोलत भरमहि,कहु राम पिआरे ॥ राम नाम बिन कोउ जन,बूडत नहि

तारे ॥१॥ टोह टाह मैं पेखिआ,कहउं तोहि पुकारे ॥ जनम अमोलक मानुखा,जूए मत हारे ॥२॥ दुबिधा नदी दुहेलड़ी,मन बुधि किनारे ॥ निसचय तरुवर मूल सिउं,जुत बेग उबारे ॥३॥ समझ बूझ उर आपने,मत रहि अंधिआरे ॥ करि विचार पिख ले सकल,सुत बंधप नारे ॥४॥ पत्र प्रभू लिखि भेजिआ,स्वेतन करि कारे ॥ श्रीचंद्र ए ही समै,कहु राम उचारे ॥५॥२३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ रे मन,भ्रम तजि द्रिढ़ होइ,भजि रामहि नामै ॥ जग ते चलनो अवस्य है,उठि अपनै धामै ॥१॥ यहिं की वस्तू न साथ ह्वै,रहिगी सभ ठामै ॥ आगै कउ रिद धारिऐ,जो आवहि कामै ॥२॥ सास अमोलक है मिलै,तुम कउ बिन दामै ॥ बिरथा खोइ न जगत महि,रंग राग ललामै ॥३॥ तेरा साथ जो देवहै,सो जानउ लामै ॥ राम राम भजि राम राम,हरि राम सु रामै ॥४॥ आन न कोऊ काम है,बिन राम सु जामै ॥ श्रीचंद्र इक जाणिआ,संतन पग पामै ॥५॥२३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हरि हरि नाम धिआइऐ,मिलि संत संगारे ॥ परमेस्वर पारब्रहम प्रभु,कई जंतु

उबारे ॥१॥ जमदूतन घेरिओ अजामिल,हरि गणन उधारे ॥ सूआ पढ़ावति वेस्या,मुख राम पुकारे ॥२॥ नाराइण संग मेल ली,नहिं पाप चितारे ॥ भाख्या गज हरि लखी,झट ऊठि पधारे ॥३॥ तंतु ग्राह सर छेद कै,अपनो कर पारे ॥ मानुख तौ भगवान कउ,लख सकत प्रकारे ॥४॥ किउं नहिं धावहि बेग सिउं,जउ रिदै समारे ॥ हरि हरि भजि श्रीचंद्र कहि,राखहि निज दुआरे ॥५॥२३२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ कोऊ न निथावां होइ है,जिहि हरि हरि धिआया ॥ प्रभू निमाणन माण है,संतन लखि पाया ॥१॥ गुण गोबिंद नित गावणा,जन ताण सबाया ॥ मातु पिता सुत साक सैन,जन का हरि राया ॥२॥ सदा सहाई संत का,एकहि रघुराया ॥ जहँ सिमरत तहँ ही खड़ा,कर खग लहिराया ॥३॥ हिरनाखस हिरणकसपहुँ,जिहँ मार गिराया ॥ को बपुरा मानव अहै,सकै आंख उचाया ॥४॥ समरथ अकथ अगोचरा,अमितोज महाया ॥ सिमरि सिमरि श्रीचंद्र प्रभु,मन महि रहसाया ॥५॥२३३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। रे मन,तेरो काज एतु,रिदयो नहिं डोलीं ।। प्रभु अवगुण न चितारई,तूँ नाहिन बोलीं ।।१।। बिन सुआमी हरि आपने,नहिं ढोलन ढोलीं ।। तूँ कबि खाली नहि रहहिं,भरता प्रभु झोलीं ।।२।। महा क्रिपाल दयाल प्रभु,सभ जानत पोलीं ।। जो मानुख तिस का भया,तिस सहितो लोलीं ।।३।। सुनि ले कथा प्रहलाद की,गति भई जु होली ।। आपन आप तिआग के,जा पर प्रभु कोली ।।४।। सभ बिधि करता राख है,जन परदे गोली ।। अवर काज नहिं श्रीचंद्र,जपु नाम अतोली ।।५।।२३४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। कारज सोई कीजिऐ,जोऊ अंतु सुखावै ।। प्राणी की लोचा एही,कब होहिं न हावै ।।१।। सरब ठौर कलिआन होइ,सुख खेम बिहावै ।। खावहि खरचहि भोग है,कब तोट न आवै ।।२।। रूपवंत सुंदर त्रिआ,मन कउ त्रिपतावै ।। ऊच थान विराज कै,मुख वाक अलावै ।।३।। कोउ अग्र कु भाखई,गन सीस निवावै ।। होइ अतोटा द्रब्य ग्रिह,ऊच महिल सुहावै ।।४।। सभ निधान हरि एक महि,जपु जपु

हरखावै ।। श्रीचंद्र प्रभु किरपा ते,जन अनंद समावै ।।५।।२३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। संत प्रसाद जपिआ प्रभू,आतम लिव तारा ।। पारब्रहम परमेस्वरै,निज नैन निहारा ।।१।। सभे मीत साजन सखे,इक भाईचारा ।। रहिओ न दूजा कोऊ जन,भिंन भेद निवारा ।।२।। हरि ही इह जग होइ कै,निज रूप दिखारा ।। को प्रक्रिति परमित परा,माया विस्तारा ।।३।। आपे ही आप पारब्रहम,सभ थान मझारा ।। देस काल वसतू कहा,जल तरंग किनारा ।।४।। सुर नर असुर बनाइ कै,किअ युद्ध नजारा ।। श्रीचंद्र जगदीस का,बड खेल अपारा ।।५।।२३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। बाल बुधि हरि सेविऐ,ध्रुव अविचल राजा ।। आयुस पंच सु बरख महि,हरि हरि जपु साजा ।।१।। भयो न उत्तम उत्तमा,मां बाप सु लाजा ।। मारग उलट न रूझिओ,ग्रिह केर समाजा ।।२।। भै भ्रम भेद विहाइयो,नारद महाराजा ।। लाखहुँ तारे पचि रहै,थिर नाहि बिराजा ।।३।। सप्त रिखीसर चक्र गति,मुनि कुंभज गाजा ।। सत्गुरु ते ऊचो भयो,सिख भगती काजा ।।४।। राम नाम

निसचल अटल,तिहुँ लोक दराजा ।। श्रीचंद्र चरनारबिंद,भवरा गन राजा ।।५।।२३७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। **राग काफी** ।। असंख नाम परमेस्वरै,सिमरत हरि लोगा ।। जोऊ जपै गति पाइ है,सदा रहति असोगा ।।१।। असंख भाखिआ देस देस,असंख मही जोगा ।। असंख आचार विहार है,असंख संजोगा ।।२।। शक्ति असंख प्रधान हरि,बिन संख्यक भोगा ।। असंख बिधी प्रगटाईए,असंख विजोगा ।।३।। असंख मेल करि संख सिउं,ध्वनि ऊच समोगा ।। असंख जाप जपीए प्रभु,असंख उद्योगा ।।४।। मुकत असंख पुकारीए,भगती परि भोगा ।। श्रीचंद्र असंख लहि,रंग राग सरोगा ।।५।।२३८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। **राग काफी** ।। जपु गोबिंद नाराइणै,संतन गति पाई ।। राम नाम गुण कीरतन,सभ स्रिस्टि मुहाई ।।१।। एको नाम निधान हरि,दुख भुख बिनसाई ।। हउ बंधन जबि तूटिआ,सगरे गुरुभाई ।।२।। पाइआ लाहा लाभ नाम,चूकी अन धाई ।। राखा गोबिंद राइ हरि,संतन सभ थाई ।।३।।

आपे आप प्रगटाइआ,हरि कला वधाई ।। अहंकारी ऊचे सिरी,गड धरनि रहाई ।।४।। सदा सिमरि पारब्रहम गुरु,मन तन त्रिपताई ।। श्रीचंद्र हरि हरि जपत,हरि रूप समाई ।।५।।२३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पाप बिना धन मिलै नहिं,सोऊ संग न जाई ।। जतन लाख कर संचिऐ,तऊ जात पराई ।।१।। राजे चोर सैन अरु नारी,खोसत मिलि भाई ।। अगनि रोग धन हरन हित,तन महि उपजाई ।।२।। धन धरनी रहि दबिआ,अन राव चढ़ाई ।। भगदड़ पड़ी पराइऐ,मन महि पछुताई ।।३।। सुख साधन कर मेलिऐ,दुख सहहि महाई ।। भाग बिना सुख किहँ मिला,लख किए उपाई ।।४।। जिहँ करते सिर लिखिआ,सिमरउ लिव लाई ।। श्रीचंद्र नही अंक को,भव सकत मिटाई ।।५।।२४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। काम अगनि के जारिआ,किउं मुंद्रा पाई ।। बाहरि भेख उदासीआं,उर काला भाई ।।१।। जत बिहून कत जोग है,बूझहु मन ताई ।। चित वैराग न उपजिओ,मुख तिलक चढाई ।।२।। संजम इंद्री परिहरै,रामदास कहाई ।। रति भग तन भगवे पहिर,अति लाज लगाई ।।३।। जटा

मुकुट भस्मांग जुत,नख अधिक बढाई ॥ प्रेम भगति बिन भगवती,भगती दिखराई ॥४॥ पाप जगत हरि बखसता,हरि अघ न मिटाई ॥ श्रीचंद्र तौबा करउ,तब ही गति थाई ॥५॥२४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मस्तक लेख लिखाइ करि,नर देही धारी ॥ मरणो अंतु अवस्य है,को सकत न टारी ॥१॥ भरम विआपै मध्य महि,गई बुधि सु मारी ॥ अजा बनाई कूकरी,मग मिलि बटपारी ॥२॥ पंडित वेद वखाणई,धन हेतु उचारी ॥ आप जु बूडा कुंभियहि,अन कउ किमि तारी ॥३॥ धरम नाम परपंच रचि,लूटन उपकारी ॥ तीरथ नरक थान भे,वासी विभिचारी ॥४॥ धोती कटि तग कंठ महिं,मग निरे संचारी ॥ श्रीचंद्र बिन राम नाम,खलकत परि खारी ॥५॥२४२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ करमा केरा मारिआ,कहि ब्रहम सु पूता ॥ कर गहि पत्री धाइआ,भागन उद्यूता ॥१॥ कांडी गिण मिण भाखीआ,ग्रह चाल सँजूता ॥ आपन करम न जाणई,अन कउ कर पूता ॥२॥ अपकरमी का धान चहि,उच करम भनूता ॥ अंने गुरु ते पाइ किमि,मारग सुख यूता ॥३॥ कंटक

सिहजा ऊपरै,कौनऊ नर सूता ।। सुत आसा तिहँ वैद सिउं,जा को ग्रिह ऊता ।।४।। हथ वसि करते पुरुख जिहँ,सो सिमरि पुनूता ।। श्रीचंद्र अन टेक तजि,संतन संगूता ।।५।।२४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। एकउ सिमरउ भायरउ,हरि गुणी निधाना ।। जल थल महीअल पूरिआ,पूरन भगवाना ।।१।। खिन महि थाप उथापदा,जिअ जंतन नाना ।। जा कउ किरपा धारीआ,तिस ऊच स्थाना ।।२।। जतन न पाइऐ पारब्रहम,लख कोटि विधाना ।। जिहँ जन हरि प्रभु की मया,तिन ही पहिचाना ।।३।। करम धरम लख संजमा,लगि मोख न पाना ।। महा अनुग्रह प्रभू का,संतन उर जाना ।।४।। काढि गरत ते राख ले,दै कर निज पाना ।। श्रीचंद्र दामोदरै,अपना करि माना ।।५।।२४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अहो उथारे दबिआ,उठि जाग समारी ।। तो ते ही हैं ऊपजे,जिनि सिउं भै धारी ।।१।। तुझ ते बाहरि कछु नहीं,पेखउ घर सारी ।। तेरे भीतरि मूरती,सभ गोरी कारी ।।२।। तू ही सुर असुरा भया,तू ही नर नारी ।। तू ही निरवैरा महा,तूँ दुस्मन भारी ।।३।। जैसी तुमरी भावना,तैसो

दरसारी ॥ जो चाहहि सोई मिलहि,धरि उर द्रिढ़तारी ॥४॥ निसचय सिमरत राम नाम,संतन संगारी ॥ श्रीचंद्र सद मोख खेम,बंधन मुक्तारी ॥५॥२४५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ जिन कउ भाउ भगति प्रभु,दई किरपा धारे ॥ सेई सुखीए लोक महि,हरि नाम सम्हारे ॥१॥ प्रभु पुर वासा पावही,मग खुले दुआरे ॥ सगले भाई मीत तिनि,साजन मन पिआरे ॥२॥ त्रिसना अगनि बिनासीआ,मोह लोभ निवारे ॥ पर का बुरा न चितवते,रति पर उपकारे ॥३॥ संतोख समाइआ उर बिखै,राम नाम चितारे ॥ आधि विआधि उपाधि हरि,जिअ जंतुन सारे ॥४॥ लिव लागी नित संत संग,जीवन मुक्तारे ॥ श्रीचंद्र तिनि मेल प्रभु,परसउं चरनारे ॥५॥२४६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ बिन किरपा जगदीस की,सतसंग न पाई ॥ संत संग बिन नहि लहहि,प्रभु नाम वडाई ॥१॥ बिनु नाराइण के भजै,मन मिटै न काई ॥ बिनु काई के खातमे,नहि हरि झलकाई ॥२॥ हरी झलक के लखै बिनु,जग ब्रहम न भाई ॥ जगत ब्रहम जानै बिना,भ्रम भेद न जाई ॥३॥

भ्रम भेद जाए बिना,ग्रंथी अधिकाई ।। बिनु ग्रंथी कै छोरिऐ,एकत्र कहाई ।।४।। एकत्र तबही पाइऐ, जब आप मिटाई ।। श्रीचंद्र आपा हरित,आपा ह्वै जाई ।।५।।२४७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। पूरब भाग जागै कहहु,प्रभु मया सु कहिऐ ।। साधु संगति की द्रिस्टि कहि,निजि क्रिपा भि लहिऐ ।।१।। एकै कै ही चार नाम,हरि जनन भनै हैं ।। हरि हरि नाम उचारनो,सभ पुंन सनै हैं ।।२।। प्रभु सिमरत रस मगन भा,बहु द्रिस्टि चलाई ।। तीन अगोचर भ्रम वसी,गोचर इक आई ।।३।। सोई द्रिढ़ कर बाधीआ,गुरुमुख निज पाले ।। ताही के परसाद ते,जपु तपु ब्रत घाले ।।४।। घाल घाल स्रम पाइऐ,कछु हाथ न आवै ।। श्रीचंद्र संग साधु करि,सभ लेखै पावै ।।५।।२४८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। ऊच सिंघासन पहि थिरा,हरि सज्जण मेरा ।। आप न चाहहि मिलन कउ,रचि राखै घेरा ।।१।। लाखउं परदे अग्र करि,दीपक गुल नेरा ।। पंच पंच पंच पंच पंच,पंच पंच पंचेरा ।।२।। जौ मेलन हित चाहहै,मिटि जात अंधेरा ।। दीपक तेल न बातीआ,चानण अधिकेरा ।।३।। किहँ कारण

किमि प्रगटिओ,किहँ ताहिं परेरा ।। बोध गवायो बोध लहि,हरि भाउ भनेरा ।।।४।। अक्खर अपर लखाइ कै,इक अक्खर हेरा ।। श्रीचंद्र संतन सभा,निसि अंतु उजेरा ।।५।।२४९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। बावर साधु समान है,नहि मान अमाना ।। लोहा कंचन हीर कच,इक सम उर जाना ।।१।। राजा रंक बराबरी,आना अरु जाना ।। द्रिग हीना द्रिग धारई,कछु लखत न आना ।।२।। अकल खोइ पाई अकल,बड कौतुक भाना ।। नास सरीरै लहि सरीर,नगरी उदिआना ।।३।। बिन बोला बहु बोलता,स्त्रुत सुंन समाना ।। बहुत भ्रमत अनभ्रमई,गंधी अन घ्राना ।।४।। बिन आतम को नहि लखत,एह खेल महाना ।। श्रीचंद्र बिन साध के,नहि किनहु पछाना ।।५।।२५०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। चतुरभुजा गोबिंद की,देइ दान सबाया ।। दो भुज ते न बटोरई,लख कीन उपाया ।।१।। छीनत रोक न सकिऐ,बल लाइ महाया ।। अगम अगोचर साहिबो,संतन समझाया ।।२।। जउ देहि नैन अगम कै,तब अगम लखाया ।। अकथ कथा किमि बूझीऐ,स्त्रुत स्त्रुत समाया ।।३।। विस्मय

गति किमि पाइऐ,बिनु विसम सुभाया ।। राम राम धुनि अधुनि,अनुभव दरसाया ।।४।। उमड़ी सागर लहर घन,जल दहदिसि छाया ।। श्रीचंद्र रम राम राम,रामहिं मिल जाया ।।५।।२५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पूरा सत्गुरु भेटिआ,पाया प्रभु पूरा ।। सदा सहाइक संग हरि,कहुँ ठौर न ऊरा ।।१।। राम राम जिनि धिआया,भ्रम भेद विडूरा ।। पाप विकार सु भाग गे,पंच दूतन चूरा ।।२।। माया मोह परिहर सकल,उर लहिओ जहूरा ।। संत जना की रेणुका,ले मस्तक धूरा ।।३।। सभ मध्यै एको निरख,दुतिया ते दूरा ।। सांत समाणी आतमा,हरि जोती नूरा ।।४।। गुण गावत गोबिंद के,चित अधिक सरूरा ।। साधु सेव श्रीचंद्र लगि,प्रभु पेख हदूरा ।।५।।२५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। आन उपाव न छूटीऐ,बिन हरि हरि नामा ।। वल छल कर धन संचीऐ,नहि आवत कामा ।।१।। दूध मलाई खंड घ्रित,पालिअ नर जामा ।। संग न सोऊ चालई,अन को सुत बामा ।।२।। दिणे राति स्त्रम करि रचे,गजगच वर धामा ।। रहिण न कोऊ देवई,दुइ चार भि जामा ।।३।। बन

उपबन जागीर धर,कंचन अरु दामा ।। पाट पटंबर बिबिध बिधि,मखमल अभिरामा ।४।। बदने अनिक सुगंध जुत,जल सीतल आमा ।। श्रीचंद्र तजि चाल है,करि आगल सामा ।।५।।२५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रे मन,को तेरो नहीं,किउं मोह बढायो ।। चमत्कार सम बीजुरी,अस्थिर लख पायो ।।१।। हरि चंदउरी मध्य किनहुँ,नर वास रचायो ।। काहूँ तरुवर छाय को,दिसि एक लखायो ।।२।। उपजत रवि जिहँ ठाम ते,पुनि नाहिन जायो ।। पिता पितामह आदि सभ,पुनि कबि दरसायो ।।३।। सरिता जल जो बहि गयो,पलटि सोउ नह आयो ।। परवाहत भव कलप गे,द्रिस्य नए बनायो ।।४।। काल विनासत आज लग,नहि उदर अघायो ।। श्रीचंद्र भजि राम राम,होहि संग सहायो ।।५।।२५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। चक्र सुदरसन घूमही,जुग बीते कोटा ।। इक आवहि इक जावही,नितप्रति अनटोटा ।।१।। बाल अवस्था खिर गई,युवा बंध लंगोटा ।। व्रिधापन आ डंक दिअ,लीनसि गल घोटा ।।२।। उदर मात के सास अन,गति धरत अमोटा ।। जनमत औरे भांति है,भ्रमते लघु मोटा ।।३।। कुस तरुवर

लव सरब महि,पवना अवरोटा ।। पावक हूँ तन माहि रहि,इकरस नहि ओटा ।।४।। अन जल केरी चक्रगति,लख लेहु सहोटा ।। करणहार थिति श्रीचंद्र,मन सिमरि गुरोटा ।।५।।२५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राम राम धुनि प्रगट ह्वै,मरने की धारा ।। सत्त राम सभ भनत है,शव कंध उठारा ।।१।। बिन मौतों सत्त सिध नहि,उर करहु बिचारा ।। मुकत कहा मरणे बिना,कीजै निरधारा ।।२।। प्रिथमै मरण पछानिऐ,सत्गुरु कै दुआरा ।। मनमुख मरणों डरत है,कूड़ै कर पिआरा ।।३।। गुरु सरणाई पाइऐ,मरबे अखतिआरा ।। मर कै ही ह्वै लीन तन,पारब्रहम मझारा ।।४।। जग महि आया मरन हेतु,सभ पुरुख स नारा ।। लख्य मुख्य श्रीचंद्र एक,मरणो संसारा ।।५।।२५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जग जीवन जिनि जानिआ,सेई मनमुख लोगा ।। कूड़ विहाजहि कूड़ लहि,कूड़े रचि भोगा ।।१।। गुरुमुख सच्च वापारीआ,संग संत संजोगा ।। कूड़ा गंढ न चलई,परिचाइन गोगा ।।२।।

सच्चा निहचल थान है,नहि होइ विजोगा ।। मुकत पदारथ राम नाम,सच्च गुरु ते होगा ।।३।। कच्च हरित सद सच्च वथु,कच हीरक जोगा ।। अंतरि किरण प्रकासिआ,रवि सच उद्योगा ।।४।। सत्गुरु सच्चा पातसाह,उर नासित सोगा ।। श्रीचंद्र हरि राम नाम,गुरुमुख हरि रोगा ।।५।।२५७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। गुरु की कार कमावणी,सच्च करणी साई ।। परिहर माया मोहणी,सच नाम समाई ।।१।। कूड़े लालच लगिआं,सच्च कीम न पाई ।। धंधै धावत रहि गए,मरनो निकटाई ।।२।। आइ गया पछताया,कछु बूझ न पाई ।। राम नाम हरि कीरतन,सच रंग सुहाई ।।३।। पाज मुलंमै उघड़ै,कूड़ी लिवलाई ।। गुरु सराफ नदरी धरे,कसवट्टी कसाई ।।४।। फिट्ट फिट्ट जग भाखई,कूड़े दरसाई ।। सच्च संत श्रीचंद्र प्रभु,सच्ची वडिआई ।।५।।२५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। पूरा सत्गुरु सेविऐ,मन तन लिव लाइ ।। राम नाम सच्च पूरिआ,पूरन जन पाइ ।।१।। जिनी सेविआ भाउ करि,तिन अंतु छुडाइ ।। हउमै कूड़े बंधना,कटि दूरि गिराइ ।।२।।

सिला अलूणी चट्टीऐ,असि धार चलाइ ॥ सच्च हेतु सिर अरप कै,गुरुमुख विगसाइ ॥३॥ दीन हेतु लड़नो भलो,प्रति चाह न काइ ॥ मन निरमल सच उर लहहि,उपकार कमाइ ॥४॥ मनमुख सच्च न भावई,कूड़ै लपटाइ ॥ श्रीचंद्र सच साधु संग,को बिरला पाइ ॥५॥२५६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ जिनी सच विहाजिआ,संतन लिव लाई ॥ कूड़ा लालच छोडिआ,सच कार कमाई ॥१॥ सच्चै अंदर चमक है,सची प्रभुताई ॥ अगनि ताउ कंचन सहै,मुलंमा न सहाई ॥२॥ सच्ची सीता पावकउं,नहि जलै जलाई ॥ तत्ती तवी नचाइऐ,रंग राग ध्वनाई ॥३॥ सच्चे ही सूली थिरे,सिर भेट चढ़ाई ॥ सच्ची भगती सच्च मन,सच गुरू महाई ॥४॥ सच्चा मंत्र राम नाम,सुनि भूत भगाई ॥ सच्चा सउदा श्रीचंद्र,को गुरुमुख पाई ॥५॥२६०॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ तत्ते तवे एक बूंद,धसि छेक करावै ॥ सच्चे अंदरि कूड़ छिट,चित विंन सिधावै ॥१॥ कूड़े सिउं मरना भला,सच्चे उर भावै ॥ सच्च ब्रिख फल मिठड़ा,रस अम्रित आवै ॥२॥ सच्चा सच्चे

कऊ लहहि,सच्च राम समावै ।। रामों ही सच्च ऊपजै,रामै लहिरावै ।।३।। साच समुंद विरोलिऐ, मणीआ सच्च पावै ।। सच्ची कीमत तां लहहि,सच्चे प्रगटावै ।।४।। सच्ची संगति मेल प्रभु,जे तुधुनो भावै ।। श्रीचंद्र सच सच्च है,नित सच रहावै ।।५।।२६१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। प्रीति सची हरि नाम की,सच संगति मेला ।। सच्चे गुरुमुख सेंवदे,सचे रंग केला ।।१।। सच्चा सत्गुरु पाइऐ,सच मंत्र सुहेला ।। सच्चा सेवक भाउ सच,सच अंदर भेला ।।२।। सच्ची भगति नाराइणी,सच नामी पेला ।। करणी सच्ची सच्च की,बहु माहि इकेला ।।३।। सच्च सूर घोड़े चढ़ा,गहि हाथ सकेला ।। प्रणव धनुख सच्च चाढ़िआ,तन तान रुहेला ।।४।। बेधे सच्चा जोधवर,मन कूड़ दुहेला ।। श्रीचंद्र सच्चा स्थिति,दिगविजै महेला ।।५।।२६२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सच्च विप्र सच तखत बहि,सच्च प्रजा सु पारी ।। सच्च गया अरहंत पहि, तिनि लिओ संभारी ।।१।। बुद्धहि सच समालिआ,धर जीती सारी ।। वारी आई शंकरहि,किअ सच

प्रतिपारी ॥२॥ सच सिंघासन राजिआ,अत्रपत्र झुलारी ॥ कूड़ अये भे जाचिकी,सिर खेह उडारी ॥३॥ सच्चे कीमत सच्च हथ,सो करहि सुमारी ॥ सच्चे ही मुख उजले,सच्चे दरबारी ॥४॥ सच्चे सच्च निवाजिआ,आपन कर धारी ॥ श्रीचंद्र सच गहि रहिआ,सच संत मुरारी ॥५॥२६३॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ सच्च भाउ जिनि पाइआ,तिनि भाग उचेरा ॥ सच्ची छाया सीतली,सच ब्रिख वडेरा ॥१॥ सच्चे ठंढि अलौकिकी,बैसंतर ढेरा ॥ सच्चा सागर मथीऐ,रतना गण हेरा ॥२॥ सिर कीमति दे पाइऐ,मुल तुच्छ घनेरा ॥ चुंबक सच्च विखालिआ,लोह सूची घेरा ॥३॥ सच पावक परजालिआ,अघ ईंधन ढेरा ॥ भस्म देह बुधि धरतीए,प्रभु अंकरु गेरा ॥४॥ परमानंद अंन बोहिलै,पा अनंद उजेरा ॥ श्रीचंद्र सच्च मंदरहि,ला बैठा डेरा ॥५॥२६४॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ राम नाम नित सिमरिऐ,मिलि संतन संगा ॥ कूड़ा मोह सभ बिनस जात,हरि हरि

रंग रंगा ॥१॥ सीतल जल हरि नाम महि,मज्जन सतसंगा ॥ सगले पाप उतारिअहि,सच पावन गंगा ॥२॥ कबहूँ नाहि औखीविऐ,मदमात्ते भंगा ॥ जोधा कूड़ संघारिआ,सच राता जंगा ॥३॥ फतह भई मन जीतिआ,संगे चतुरंगा ॥ सच सिंघासन थापिआ,सच नाम उमंगा ॥४॥ सचे ही सच सच लहि,सच जपु तपु चंगा ॥ सचा सत्गुरु श्रीचंद्र,सची सिखि मंगा ॥५॥२६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ निरमल बुधि बिबेकीआं,सच नाम वडाई ॥ सचा सत्गुरु सेविऐ,हरि कीरति गाई ॥१॥ करणी निरमल निरमली,पुन्य दया कमाई ॥ राम नाम रवि उदै ते,उर कमल खिड़ाई ॥२॥ मधुप मन मधु सच महि,घुल आप गवाई ॥ लब लोभ काम क्रोधहुँ,कूड़ा घन घाई ॥३॥ नभ रिद साची पवन चलि,घट कूड़ उडाई ॥ स्वाति बूंद सच सीप सिख,पीवत तल धाई ॥४॥ मुकता मौतों प्रगट ह्वै,नक नत्थ सुहाई ॥ श्रीचंद्र प्रभु गोबिंद पति,गल लाइ मिलाई ॥५॥२६६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ अनिक जनम के बीछड़े,बहु जोनिन धाए ॥ तेली संदे बलद जिउं,भरमै

भरमाए ॥१॥ दुखै दुख विआपिआ,मर जनम सबाए ॥ जुग कोटिन की अवधि महि,नहि थिरे कदाए ॥२॥ कीट पतंग मीन कुरंग,गज अस्व कहाए ॥ कपि भालु सारक सारसै,कछु गनत न आए ॥३॥ बडे भाग मानुख बने,बुधिवंत लखाए ॥ सत्गुरु पूरण संत संग,आतम दरसाए ॥४॥ राम नाम जप जाप करि,निहचल पद पाए ॥ श्रीचंद्र थिर साधु संग,नहि चक्र चलाए ॥५॥२६७॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ अवसर मानुख देह कउ,बीजउ हरि बीजा ॥ कोटि जुगन लौं काटिऐ,चउरासी कीजा ॥१॥ करम भूमि रितु कलू माहि,चतुगुण प्रगटीजा ॥ राम नाम बिनु मोखप्रद,भव आन न थीजा ॥२॥ जेही रितु तेहा थीओ,फल लहहि अमीजा ॥ आन रितू अंन बोइऐ,हथ झाड़ चलीजा ॥३॥ करम सौच धन दान कलि,नहि फलित कदीजा ॥ राम नाम संतन सरणि,भाव भगति लहीजा ॥४॥ ईत ऊत सफला फलहि,सुख सहज समीजा ॥ श्रीचंद्र नहि निखुटई,हरि राम सु बीजा ॥५॥२६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रे मन,जपु गोबिंद नाम,पावहि उर सांता ।। पावक त्रिसना बूझई,हरि रामहि कांता ।।१।। हउमै रोग न लगई,प्रभु नाम चितारे ।। जहँ तहँ सभ बिधि सूख लहि,अपगुणन बिसारे ।।२।। अठ्ठे पहिर आनंद सिउं,सिम्रित भुनसारे ।। हीरे हीरा बेधिआ,गुरु सिख पिआरे ।।३।। आपन राम धिआइआ,उर मेरी नासी ।। आतम प्रगास पाइआ,रस कमल विगासी ।।४।। कीरति गाई राम नाम,सुख सहिज सुहेला ।। श्रीचंद्र आनंद लहा,संतन कै मेला ।।५।।२६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि हरि नाम धिआइऐ,संतन कै संगा ।। हउमै मेरी सभ नास होइ,नहि पाइऐ भंगा ।।१।। नाम धिआवण नाम जपु,बहु करम सु चंगा ।। साध संग रंग भेटिऐ,प्रभु नाम उमंगा ।।२।। चार पदारथ अस्ट सिद्धि,करतल सरबंगा ।। सुणि कीरति हरि गुण रवै,घन ताल म्रिदंगा ।।३।। राति सुहावी सोहणी,हरि रंग सुरंगा ।। कलप ब्रिख अरु कामधेनु,प्रभु देवै मंगा ।।४।। चिंतामणि हरि राम नाम,गोपाल त्रिभंगा ।। श्रीचंद्र भजि स्वास स्वास,संतन कै ढंगा ।।५।।२७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिनि गुरमुख नाम धिआया,आए परवाना ।। जनम सवारहि आपणा,कुल को बखसाना ।।१।। संगी सगले तारीअन,जिति आवन जाना ।। धरनि पुनीत पवित्र सोइ,हरि जनन बसाना ।।२।। महल सराइ अटारिआ,पावन अस्थाना ।। पावन घोड़े रथ बहिल,जन के अन याना ।।३।। भोजन पावन सोइ है,जोऊ साधन खाना ।। हरि हरि भजत पवित्र सभ,जो कछु इह ठाना ।।४।। पावन एकहु राम नाम,अन सरब अपाना ।। सिमरु मना नाराइणै,श्रीचंद्र बखाना ।।५।।२७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि प्रभु का दर छोडि कै,अन मंगण जाईऐ ।। पूर मनोरथ होत नहिं,तब लाज मराईऐ ।।१।। मानुख हरि का मंगता,मंगै पछुताईऐ ।। मिथिआ वस्तू जि चाहीऐ,को सकत पुराईऐ ।।२।। आसा त्रिसना अगली,मन भुख तिहाईऐ ।। दूजी वस्तू पाइ कै,कबि नहि त्रिपताईऐ ।।३।। कलप ब्रिख हरि एक है,मन चिंदिआ पाईऐ ।। देंदे तोटि न आवई,खाइ खरच रहाईऐ ।।४।।

जीअ सगल कउ दान देइ,दाता हरि राईऐ ।। अन दर नहि कब श्रीचंद्र,फिर मंगण जाईऐ ।।५।।२७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। लाज पात हरि राइ है,सभ हरि जन केरी ।। क्रिपा कटाख्य जउ हेरता,नहि जावत फेरी ।।१।। अनिक जनम की मैल कटि,मिटि जात हनेरी ।। बुधि प्रकास विकासई,अघ टार घनेरी ।।२।। पैरी बंधन करम की,झट काटत बेरी ।। आप ही आप राखता,जग बंध निबेरी ।।३।। लाख जतन जउ हूँ करै,चलती न किसे री ।। जन की सुनत पुकार कउ,होइ नेरे नेरी ।।४।। करि बिनती करतार पहि,जो सभ कछु हेरी ।। श्रीचंद्र सरणी परा,नाराइण पेरी ।।५।।२७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। एको नाम धिआइऐ,अन आसा तिआगै ।। मन चिंदिआ वर पाइऐ,नामै लिव लागै ।।१।। सोइ रही परारब्ध जो,हरि सिमरत जागै ।। हरि हरि नाम जपंदिआ,भ्रम भूतन भागै ।।२।। तंत्र मंत्र जंत्र सकल,झुकते हरि आगै ।। डाकिणि साकिणि काकिणि,नहि साकत खागै ।।३।।

सरब सिरोमणि राम नाम,काटत दुख दागै ।। साध जना लख पाइआ,करि करि अनुरागै ।।४।। इक मन जपिऐ जाप कउ,होइऐ वडभागै ।। श्रीचंद्र का एक प्रभु,जिनि कारक ठागै ।।५।।२७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। नाम अनंत नाराइणै,देइ मोख निधाना ।। मन की व्रिति संजोइ करि,निज लख सिधाना ।।१।। मुक्त आभासी बंध का,बुद्धी परवाना ।। चित्त परोए सूचिका,हरि ब्रहम समाना ।।२।। घसि पाहन प्रगटाइऐ,पावक रंग नाना ।। पारद मन थिर होत है,औषधि संधाना ।।३।। सिम्रिति ही उपजाइऐ,जोती ब्रहमाना ।। दुहुँ जोगन ते जोग ह्वै,सूछम गति भाना ।।४।। मन महि रमीऐ राम राम,आपहि रामाना ।। श्रीचंद्र अनुभउ लहहि,मुक्ता अनुमाना ।।५।।२७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। भीखक भिखिआ मांगई,निज उदरै काजा ।। अलख निरंजन भाखते,आवत नहिं लाजा ।।१।। सिर पर करज चढ़ाइआ,देवेगु दराजा ।। सिंङी सुरत न बाजई,नगरी कै बाजा ।।२।। फटकी मुंद्रा कान धरि,मुद्रा ते भाजा ।। गुरु गोरख नहि बूझिआ,वेखै करि साजा ।।३।। जोग जुगत तब

पाइऐ,जोगीसर राजा ।। राम रसाइण मत्त ह्वै,दसमे दर गाजा ।।४।।। अलख अगम अगोचरा,रस अम्रित भ्राजा ।। श्रीचंद्र आदेस करि,आदेस समाजा ।।५।।२७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। भगती भाव विहूणिआ,हरि नाम न पल्लै ।। पाखंड करम न जातिआ,गल्ले सण गल्लै ।।१।। दुरमति मूठे दुरमती,जम मारग घल्लै ।। सत्गुरु सच द्रिढ़ाइआ,हरि सिमरन चल्लै ।।२।। पाइआ लाहा लाभ नाम,थिरि राम अचल्लै ।। परमेस्वर मन भूमिका,गड थंम अहल्लै ।।३।। गुरुमुख संगति राम नाम,जोधे हत्त खल्लै ।। तिहुँ लोकी जस गावई,मुख बल्लै बल्लै ।।४।। गुण गावहु गोपाल राइ,धर दरगह मल्लै ।। श्रीचंद्र साधू वचन,हरि राम अटल्लै ।।५।।२७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। नाम धिआए अहनिसा,चढ़ीऐ हरि यानै ।। लाखउं जोजन छिनक महि,गमनत भगवानै ।।१।। चौदहुँ लोकहुँ ते परा,सातहुँ असमानै ।। पातालहुँ पाताल पिखि,निज माहि समानै ।।२।। चमत्कार लख बीजुरी,चकचौंध नैनानै ।। अस अनेक चमकावही,सूरा बलवानै ।।३।।

पंधी पंध पवाइआ,पंधे सोऊ जानै ।। नगर महिल फुलवाड़ीआं,फुल नए पुरानै ।।४।। राम नाम संग सैन सुर,दै चढ़ै निसानै ।। संत सभा श्रीचंद्र बहि,कछु कहि बखिआनै ।।५।।२७८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। नाम जपत नाराइणै,सुख सांत सरीर ।। राम नाम रस बेधिआ,नाही जम पीर ।।१।। उलट कमल परगासिआ,जुत गंध समीर ।। दहदिसि चानण नाम का,ग्रिह गहिर गंभीर ।।२।। पैंडा कट लख जोजनी,हरि आयो तीर ।। विपदा बिखिअन तस्करी,प्रभु नासी भीर ।।३।। देह नगरी अगनी लगी,दर कड़ी छतीर ।। गहिमा गहिमी दुर गई,पाइआ प्रभु नीर ।।४।। जपते गुरुमुख राम नाम,संग परी बहीर ।। संत संग श्रीचंद्र प्रभु,हरि नाम जहीर ।।५।।२७९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सफल सेवा संत साधु की,परलोक सहाई ।। मनमुख सेवा कीजिऐ,बहुरो पछुताई ।।१।। उत्तम मत तब पाइऐ,संग संत रहाई ।। संगति कीजै मनमुखी,तरकत दुख दाई ।।२।। जड़ तन जड़ वेसी रचे,नर हनत कसाई ।। मानुख भीतरि हरि बसै,सोऊ मार

गवाई ॥३॥ बांधे केते जूट सिर,केतिन सिर छाई ॥ केतिन दीरघ दाढ़ीआं,मूछें कटवाई ॥४॥ केते मूँड मुंडावही,भगवा पहिराई ॥ श्रीचंद्र बिन राम नाम,वादान लराई ॥५॥२८०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ गुरुमुख मनमुख जाणिऐ,जे संगति कीजै ॥ गेहूँ चनक पछाणिऐ,लख कै दुइ बीजै ॥१॥ मनमुख सेती संग कर,मन अंतरि छीजै ॥ मन तन रत्ते राम नाम,संतन संगीजै ॥२॥ पंथ कोरड़ूँ जे थिआ,दंदी रड़कीजै ॥ गुरुमुख दाल स्वादली,खाधै त्रिपतीजै ॥३॥ गुण निधान संग साधु का,सुखीआ भव जीजै ॥ बेधिआ पर उपकारई,मन द्रब्य रवीजै ॥४॥ बिन मन द्रब्यहि गमन किमि,प्रभु पुरी करीजै ॥ श्रीचंद्र जल निधि सनेह,संग संत लहीजै ॥५॥२८१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ रामहि प्रेम संदेसड़ा,किहँ गुरुमुख गाया ॥ अनहद सबद प्रगासिआ,तुर नाद वजाया ॥१॥ रंगा रंग अगछमी,इक रस धुप्प छाया ॥ तन धन नास न टूटई,रंग करते लाया ॥२॥ चढ़िआ जाइ सुमेरु सिर,अबिचल सद थाया ॥ दूजा भाउ न सुझई,अंतरि हरि राया ॥३॥

पूरा पूरे पाइआ,पूरे कऊ धाया ।। पूरे पूरा मेल करि,नाही निकसाया ।।४।। नादा तउ सुनी नही, सुनी न नदाया ।। अम्रित रस श्रीचंद्र चखु,मुख बोलु न भाया ।।५।।२८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। प्रेम भगति हरि पाइऐ,सत संग सुभाई ।। दुबिधा प्रेम मिटावई,रंग रंग मिलाई ।।१।। जपु तपु संजम दया धरम,जत सत तोखाई ।। उदर सु प्रेम समाईऐ,सगरी वडिआई ।।२।। बिछुड़िआ मेले हरी,करि प्रेम सहाई ।। दूख भूख नहि जोहई,सची लिव लाई ।।३।। सोखित मूल न जगत दुख,तरुवर हरिआई ।। जल तब ही लउ आखिऐ,जब लउ न सुखाई ।।४।। बिन सनेह नहिं जीवना,धर धूरि धुमाई ।। श्रीचंद्र रुचि राम राम,रामहि ही समाई ।।५।।२८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अंतरि राम नाम धुनि प्रगटै,सच्ची लिव लागै ।। जागत सोवत सुपन महि,कबहूँ नहिं तिआगै ।।१।। बिन जिहबा जपु जापता,बिन घ्राण सुँघागै ।। बिन स्रवणा कै सुणै जोइ,बिन लागै लागै ।।२।। सच्चा नेहु अतूट है,बिन तनहूँ भागै ।। पावक प्रेम प्रज्वल कै,बिन दागै दागै ।।३।। नाच

नचावै बिना सिर,ठुम ठुम धरि पागै ।। गोला सो बिन मोल का,उपजै अनुरागै ।।४।। अनुकंपा निज चित्त की,प्रगटावत रागै ।। धंन धंन श्रीचंद्र जन,जपि राम सरागै ।।५।।२८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मन सवार लिव तुरग चढ़ि,चढ़ि जात अकासी ।। आगै ते आगै चलै,जग पेखि विलासी ।।१।। पवन अगमी पवन वेग,देवन उपहासी ।। नेही नेह निहाइआ,छुटकन दुख रासी ।।२।। बंधा लोक न जाणई,गल केही फासी ।। हेतु छुडावन बंध कै,चर राम प्रभासी ।।३।। आपै आप मिलाइआ,किहँ आप कहासी ।। दूजा होइ तउ भाखिऐ,एकै न अलासी ।।४।। राम राम श्री राम राम,रम राम रमासी ।। राम राम बिनु श्रीचंद्र,अन बोल लजासी ।।५।।२८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे वरनिऐ,हरि परम पुनीता ।। तू कारण मेरे साहिबा,हउ तेरा कीता ।।१।। तेरा दित्ता खाइऐ,दित्ता ही पीता ।। पहिरहि तेरा ही दिआ,अन नाही चीता ।।२।। तेरी मिहर सु बिचरते,सागर भय भीता ।। तेरी किरपा विदेस महि,निज देस लखीता ।।३।। बिन साकां

तेरी क्रिपा,सभ साक रु मीता ।। बिन महिली महिली थिरे,तुध क्रिपा विनीता ।।४।। अनतोटा सभ किछु दिआ,रथ अस्व सुरीता ।। सो किमि मनहु विसारिऐ,श्रीचंद्र अलीता ।।५।।२८६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सभ गुण तेरे साहिबा,को नाही मैंडा ।। सभ किछु तेरा काढिऐ,तूँ मैं हउ तैंडा ।।१।। तुध बिन आन न सूझई,को देवणहारा ।। देंदे तोट न आवई,अनखुट भंडारा ।।२।। इकना भगती प्रेम देह,इक देवत दाना ।। इक लागै हरि नाम रति,इक यग्य विधाना ।।३।। इक निसिदिन विचरत रहत,अठसठ इस्नाना ।। इकना करम कमाइआ,संधिआ पाठाना ।।४।। इक मन धरम धराइआ,पढ़ पाठ पुराना ।। सभै जाणन आपणा,श्रीचंद्र महाना ।।५।।२८७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। जितु लाए तित ही लगे,किआ जंतु विचारे ।। इकना चानण बखसिआ,गाढे अंधिआरे ।।१।। इकना मारग पावही,इक जाहि उजारे ।। इक हरि भगती लाइअन,इक सोच विचारे ।।२।। जिस तूँ मेलहि सो मिलै,हरि भगत पिआरे ।। राम नाम गुण कीरतन,निसि दउत

सवारे ॥३॥ इकना आप भुलाइंदा,मनमुख संगारे ॥ हउमै माया मोहिआ,नर मानुख मारे ॥४॥ कउन जु किसहि उबार है,अरु कउन बिगारे ॥ करते हत्थ श्रीचंद्र,सभ भव केरी कारे ॥५॥२८८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जपु तपु संजम साध कछु,इक मींह पवाइआ ॥ अनिक जतन वरदान दै,घरि पूत जमाइआ ॥१॥ मुख बोले इस्नान करि,भै भूत मिटाइआ ॥ क्रिपा द्रिस्टि करि ऊपरै,तन रोग गवाइआ ॥२॥ वाक्य उचारत म्रिदुल मुख,बाहरहुँ मुड़वाइआ ॥ लोक उचारत धंन धन्य,धन धान वधाइआ ॥३॥ सनमानत अग्रज थिरे,जस कीरति गाइआ ॥ मंदमति सोए खेत को,चिड़ीआं चुगवाइआ ॥४॥ अंतरि सांति न ऊपजी,मन मोहिआ माइआ ॥ श्रीचंद्र श्री राम कहु,किउं परा कुराहिआ ॥५॥२८९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ अपने जपु तपु हेतु करि,कछु सिद्धी पाई ॥ वसि कर लीने भूत प्रेत,जखिणी बल लाई ॥१॥ आगिआकारी वीर भे,सिहजा उचवाई ॥ देस विदेसहुँ गुप्त ही,वस्तू निकटाई ॥२॥

जन आवत ढिग पेख कै,दिलि बात बताई ।। गुप्त प्रगट खिन महि भया,कित ते कित जाई ।।३।। तन हीना हो सबद कहि,वसि करी लुगाई ।। इक आवहि इक जावई,रख आसा काई ।।४।। बहु बरखन की आरजा,भव माहि बिताई ।। श्रीचंद्र इक राम बिनु,सिर खेह पवाई ।।५।।२९०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मारग बिखड़ा राम का,को गुरुमुख पावै ।। देव दैत्त नर पुरी ते,ऊचो दरसावै ।।१।। असंख जपी जपु साधते,तप तप लिव लावै ।। जोग धिआन बिस्राम करि,उडि ऊरधि जावै ।।२।। भगती भगति नवधा करी,बडि प्रेम सुभावै ।। वैरागी वैराग धरि,कहुँ मुख न लगावै ।।३।। यग्य करम रति होइ कै,सुचि संजम रावै ।। धरम कमायो धरमीऐ,जिअ दया मनावै ।।४।। संधिआ त्रैकालै करै,मुख मौन रहावै ।। सभ ते ऊचो राम नाम,श्रीचंद्र कहावै ।।५।।२९१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। करम करे अधिआतमी,सभ लोक दिखावा ।। हउमै वड्डा रोग है,मन दुख उपजावा ।।१।। चक्र बनाए चंदनहि,मस्तक तिलकावा ।। मौन साध जप माल गहि,गुप्ती रहसावा ।।२।।

परउपकारी जानीए,भल भल जस गावा ॥ रेसम पहिरत तन बिखै,सुचि संजम भावा ॥३॥ ऊचे आसन राग नाद,धुनि उचरत रावा ॥ उनमीलत अनमीलतो,नैनन द्रिस्टावा ॥४॥ सिद्ध कहायो सिद्धि लाइ,सिर छत्र फिरावा ॥ श्रीचंद्र इन साधिऐ,रस राम न आवा ॥५॥२९२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ रे मन,राम आराधीऐ,जोऊ अंतु छुडावै ॥ मन मैला जबि सुद्ध होइ,मन ही लख पावै ॥१॥ बाहरि देह पखालिऐ,मन धोयो न जावै ॥ मन छुप छुप अवगुण करै,जग कउ डहकावै ॥२॥ अंतरि की मल उतरै,संतन सर न्हावै ॥ निरमली काया ऊजली,आपा प्रगटावै ॥३॥ अनहद धुनि मन ते जगै,हरि हरि गुण गावै ॥ मन ते पाप विकार छुटि,मुह लोभ हरावै ॥४॥ मन जानै भगवान कउ,तउ सहिज समावै ॥ श्रीचंद्र मन मनै कउ,उच सीख पढ़ावै ॥५॥२९३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ रे मन,मित्र पिआरिआ,भजि गोबिंद सरणा ॥ मन आसा सभ तिआग करि,निहचल गहु परणा ॥१॥ एका टेक गुपाल राइ,मन रंजन करुणा ॥ भामिनि मीत सुहृद सखा,नाराइण

चरणा ॥२॥ जहँ जाइऐ तहँ संग साथ,जीअन का तरणा ॥ सभना कै रिद भावता,नारी आभरणा ॥३॥ अम्रित सोमा चित महि,पीवत किउं डरणा ॥ दीन दयाल दामोदरै,माधव संतरणा ॥४॥ क्रिपा करकै आपणी,दै संत सिमरणा ॥ मन छूटै जंजाल ते,श्रीचंद्र गुहरणा ॥५॥२९४॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ राम नाम जो जन जपै,सो सुखीआ संसारा ॥ धनपति धन अनगणत संचि,दुख लहिओ अपारा ॥१॥ पुत्रहुँ नहि चाहते,तिहँ आयु वडारा ॥ साक संबंधी भाईआ,जालन का कारा ॥२॥ आदि दुख मध्य दुख लहि,अंतु दुख आगारा ॥ मरतो जब ही पेख है,सगरो परिवारा ॥३॥ सभ की आसा एहु ह्वै,मुहि दै धन सारा ॥ जौ काहू लिख देइ नहिं,बडि निंद उचारा ॥४॥ क्रिपण न कौड़ी देवई,आए ध्रिगकारा ॥ श्रीचंद्र नाम नाराइणै,जग पार उतारा ॥५॥२९५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ पति राखत गोबिंद प्रभु,जन की सभ थाई ॥ अउखी घड़ी न देख हैं,हरि होत सहाई ॥१॥ दुस्ट दुरजन जब घेर है,आजुध उछलाई ॥ करता कल वरताइंदा,रहिं हत्थ उताई ॥२॥

चहुँदिसि अगनी वरसदे,रती आंचि न लाई ॥ सागर बोहिथ फूटिऐ,प्रभु पार लगाई ॥३॥ निगलत मच्छ जु जनन कउ,रख्यक होइ साई ॥ बन महि भूत पिसाच लख,मुख देख पराई ॥४॥ विकटहुँ विकट सु थान महि,कर देइ बचाई ॥ सिमरि सिमरि श्रीचंद्र हरि,सभ आस पुराई ॥५॥२९६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ नाम धिआवहु जीअरे,तजि अवर जंजाला ॥ अंतह काम न आवही,ग्रिह राज सु माला ॥१॥ सोई जन सुखीआ सदा,जिहँ राम समाला ॥ राग रंग रस भोग महि,नट नाटक जाला ॥२॥ राज पदारथ सभासद,मंडप चित्र साला ॥ बाग बगीचे पुहप गंध,मेवे तर आला ॥३॥ इक आवहि इक जावही,कर देत बिसाला ॥ नैन संकेती दूख सूख,परजा भुगताला ॥४॥ अंतरि वेदन बहु दुखित,पेखहु भूपाला ॥ राम नाम बिन श्रीचंद्र,नहि सुख तिहुँ काला ॥५॥२९७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ कूड़ पसारा जगत का,जा सिउं लपटायो ॥ किसहूँ संग न आयो,नहि संग सिधायो ॥१॥ दमक दामिनी छिनक भरि,जिहँ तुध डहकायो ॥ छाया तरुवर नहि थिरत,जा सिउं

बिरमायो ।।२।। युवा पाइ गरबत भयो,बिरधै पछुतायो ।। जो कछु भोगन पाइयो,दुइ दिन न थिरायो ।।३।। को गनीम चढ़ि आवई,सभ तिआग परायो ।। जो उपकार गरीब पिखि,चित्त महि नहि भायो ।।४।। इह लोकहि दुख पाइआ,परलोक भि लायो ।। हरि नामै बिन श्रीचंद्र,कहु किनि सुख पायो ।।५।।२६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रे नर,अग्र सिधावनो,जिहँ मारग भीड़ा ।। अब मानत लज्जा घनी,तब होइ न ब्रीड़ा ।।१।। जमदूतन तन नगन करि,देनी बड पीड़ा ।। संतन कहिओ पुकार कै,लागिओ रस क्रीड़ा ।।२।। सुनि कै धरिओ न चित्त महि,कामनि रंग लीड़ा ।। धनपति जानिओ आप कउ,साधु रंक लखीड़ा ।।३।। इत स्रवणहुँ उत स्रवण काढि,धन गांठि जकीड़ा ।। कहूँ जो प्रेरिओ दान हित,वट रखी झपीड़ा ।।४।। छडि चलिआ पछुताइआ,जोनी पा कीड़ा ।। श्रीचंद्र चित सोच ले,सिर मुकती बीड़ा ।।५।।२६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मन तन संतन सौंपिआ,हरि नाम विहाझा ।। परमेस्वर उर भीतरै,मन कीनसि

साझा ।।१।। अगम अगोचर पारब्रहम,जोती प्रगटाई ।। एको एकी रव रहिआ,नहि आवै जाई ।।२।। अलख निरंजन सेविआ,फिरि भूख न लागी ।। अतुट खजानै साहिबै,मध्य होए भागी ।।३।। त्रिसना सगल विनास भी,जपु नाम मुरारी ।। झलक छपी तन भीतरै,संग संत निहारी ।।४।। जमदूतन का भै गया,हरि हरि लिव लागी ।। उर निरमल श्रीचंद्र सिउं,बड ऊचे भागी ।।५।।३००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। राम नाम जिहँ जापिआ,तिस जेड न कोई ।। दात दीन हरि नाम की,किरतारथ लोई ।।१।। उलटै मुख कराइ कै,आपा अवलोई ।। ऊरध कमल परगास भा,दिब्य द्रिस्टि समोई ।।२।। सभ मै एको पसरिआ,निज पेखिओ सोई ।। कीरति साचै नाम की,मन प्रगटी खोई ।।३।। अचरज ते अचरज लखा,मति विसमय होई ।। आन न दूजा सूझई,दुबिधा तिआगोई ।।४।। सत्गुरु पूरा भेटिआ,जिनि अलख लखोई ।। संत प्रसादी श्रीचंद्र,हरि मंत्र रटोई ।।५।।३०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। हरि हरि नाम न जापिआ,आया बिरथारी ।। वस्तू स्वास अमोलकी,ऐवें खो

डारी ॥१॥ मिथिआ सेती उरझि कै,बाजी जग हारी ॥ कबी न बच है काल ते,नर कच्ची सारी ॥२॥ लाहा लाभ गवाइआ,लद कल्लर भारी ॥ इह अवसर ते चूकिआ,लहि है नहिं बारी ॥३॥ खाली रह गी करम भूमि,नहि समै समारी ॥ दरगह तोसा नहिं लहा,मन उद्यम धारी ॥४॥ बहु पछतावहि बापुरा,सहि डंड अपारी ॥ राम नाम भजि श्रीचंद्र,कछु लेहु उबारी ॥५॥३०२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ मनमुख सेती संग करि,ह्वै है पछुताणा ॥ अवस्य हि कालो होइगो,लहि काल टिकाणा ॥१॥ जिस नर महुरा चखिआ,तिस ही मर जाणा ॥ पेड़ सहित जड़ काटिऐ,सिर भार पराणा ॥२॥ बिन बोहिथ सागर धसै,को पार सिधाणा ॥ बुद्धि विहूण वापारिऐ,धन कैस कमाणा ॥३॥ भूखी बिल्ली चूहिऐ,राखी करवाणा ॥ बन महि रंकहि घेर कै,चोरों किआ पाणा ॥४॥ आपन आप विगाड़िआ,किआ तिस सवराणा ॥ गुरुमुख संगति श्रीचंद्र,सुख लहहि अजाणा ॥५॥३०३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ समझि अजहुँ मन मूढ़िआ,हरि नाम सम्हाले ॥ ऐथै ओथै संग प्रभु,निबहै तुध

नाले ॥१॥ जपु जपु नाम गुबिंद का,नहि विआपै काले ॥ जहां जहां दुख भीड़ है,हरि करहि सुखाले ॥२॥ दुरजन केरे आजुधी,प्रभु नाम सु ढाले ॥ कटु वाक्यन ते उर विखै,पर है नहि छाले ॥३॥ जो आवहि बध हेतु करि,घर मुड़हि उताले ॥ पारब्रहम परमेस्वरो,जन कउ प्रतिपाले ॥४॥ आंख उचाइ न पेख हैं,भुइं ओर निहाले ॥ राम नाम जपु श्रीचंद्र,रख्यक जन बाले ॥५॥३०४॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ नाम धिआवहु जीअड़े,संतन सिख लेई ॥ रखवाला हरि नाम है,तिहुँ लोक सदेई ॥१॥ करज चुकावत दास का,हरि साह सुतेई ॥ कंटक बन को साफ करि,मारग द्रिस्टेई ॥२॥ जल बूडत कउ थल करत,थल तपस हरेई ॥ चंड प्रचंडित चंड कह,खिन महि विसमेई ॥३॥ भूखा वेख न सकई,खट रस मेलेई ॥ अनिक बिघन हरि दास के,कारज साधेई ॥४॥ अपना कीनसि जाहि कउ,नहि जात पुछेई ॥ सद दयाल श्रीचंद्र प्रभु,कटु नाहि बुलेई ॥५॥३०५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ पग जिनि एक उठाइआ,हरि प्रभु की ओरा ॥ हरि प्रभु जोजन कोटि कट,आवत जन

धोरा ॥१॥ गज अरपित इक कमल गहि,प्रभु ओर निहोरा ॥ जीवन अरपित आपणा,हरि नवल किसोरा ॥२॥ रक्त बिंदु करि निंमिआ,इक सिर पद जोरा ॥ कोटि सीस हरि बखस कै,तऊ मानत थोरा ॥३॥ कौड़ी एक जु भेट धरि,पद पदमनि ठौरा ॥ अरब खरब नवनिधिन जुत,सभ सौंपसि कौरा ॥४॥ रे मन भूले बावरे,पेखउ हरि ओरा ॥ तुच्छ खरच लाहा घनो,श्रीचंद्र बटोरा ॥५॥३०६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ करुणा करि कै आपणी,हरि देहु दीदारा ॥ मैं अनाथ तुव चरन सरणि,बड अवगुणिआरा ॥१॥ तू सरब कला समरथ हहिं,प्रतिपालनहारा ॥ तोटा कदे न आवई,तुव पूर भंडारा ॥२॥ कोटि असंख जन जाचते,प्रभु पुरुख दातारा ॥ मन वांछित फल देवहीं,घटि घटि करि सारा ॥३॥ जिनि जिनि सेविआ भाउ करि,से पार उतारा ॥ तुच्छ जीव कण रेत सम,सिर मुकुट सवारा ॥४॥ पहुँच न साकै कोइ तुधु,हरि अगम अपारा ॥ सरणि दास श्रीचंद्र प्रभु,अपना करि तारा ॥५॥३०७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि हरि नाम धिआइऐ,होइऐ परवाना ।। अपने जन की राखहै,हरि पुरुख भगवाना ।।१।। जन महि आपहि राखता,कर सकत विडाना ।। गुह्य भेद विच लुक रहिआ,अनरूप रूपाना ।।२।। रंगे रंग संबंध है,रंग रंग पछाना ।। रूपवंत कउ रूप ही,करि सकत सु भाना ।।३।। कथते संत अरूप कउ,तिस बीच समाना ।। आपै कउ आपा लहहि,आपै बिसमाना ।।४।। अकथ कथा प्रभु केरीआं,कहि साधु सुजाना ।। जपु जपु गोबिंद श्रीचंद्र,सुख खेम लहाना ।।५।।३०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। आइ मिलि संत पिआरिओ,हरि गीतन गावहु ।। मन निरमल प्रभु नाम जपु,गुरु पुरुख मनावहु ।।१।। प्रीतम अपणा पाइ कै,मन तन बिगसावहु ।। माया बंधन खोइ कर,हरि रूप समावहु ।।२।। संत जना की रेणुका,ले मस्तक लावहु ।। हउमै मेरी परिहरै,आतम दरसावहु ।।३।। अगम अगोचर पारब्रहम,निकटी लख पावहु ।। पैखड़ पैरी बांधिआ,जन मुक्त करावहु ।।४।। प्रभु क्रिपाल क्रिपानिधे,संग साधु धिआवहु ।। राम राम श्रीचंद्र कहि,हरि राम मिलावहु ।।५।।३०९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। जिउं जानहु तिउं राख लेहु,हरि अंतरजामी ।। हम ते कछू न होइ है,उर महि बड खामी ।।१।। तुमरी सेव न जानऊ,मन कपटी कामी ।। लोभ लाग अन सेविऐ,खटिऐ पहिनामी ।।२।। तुमरो किओ भुलाइ कै,अन पंथन गामी ।। जिनि कीआ सो चीत नहि,कीए अनुगामी ।।३।। साधु संग रंग तिआग कै,गे साकत ठामी ।। नाम तुमारा नहि लिआ,प्रतिपालक सुआमी ।।४।। दुरमति दुरत विगूतिआ,नितवासा धामी ।। मिहर द्रिस्टि श्रीचंद्र पहि,करि पारगरामी ।।५।।३१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हम तुमरी सरणागता,प्रभु पुरुख प्रबीनै ।। एक ओट तुमरी गही,जन दीन मलीनै ।।१।। तुम सभ गुण भरपूर है,हम अवगुण पीने ।। प्रतिपालक हरि राइ तुम,हम जाचक दीने ।।२।। तुम चितवउ उपकार कउ,हम मुख मोड़ीने ।। तुमरा दर सद खुला है,हम पग न रखीने ।।३।। हमरी ओर तुव द्रिस्टि है,हम नाहिन चीने ।। तू चाहत नितप्रति हमहि,हम भाउ बिहीने ।।४।। तू जन सदा समालता,हम दुरजन बीने ।। बड उपकारी श्रीचंद्र,हरि नित्त नवीने ।।५।।३११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || जो जन हरि हरि जापई,सो नीच न होई || रक्त बिंदु करि निंमई,सभ जेतक लोई ||१|| राजा रंक बराबरी,जनमिओ सम सोई || मिथिआ धन भरम पाया,विखमा द्रिस्टोई ||२|| करता सभ का नाइको,जिनि जोति समोई || इंद्री मन देवन सकल,सम एक धरोई ||३|| जिनि अपरंपर सेविआ,मति ऊत्तम होई || मन की मैल उतार कै,निरमल जानोई ||४|| सेई उत्तम जगत महि,हरि हरि मन पोई || श्रीचंद्र तिस चरन धूड़ि,परसत मल धोई ||५||३१२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग काफी || दिवस चार जग खेल है,बहुरो तजि जाणा || इह थल कोऊ नहि रहा,किआ राजा राणा ||१|| करमी दरगह सुख है,करमी दुख पाणा || मंदा मूल न कीजिऐ,होइहै पछुताणा ||२|| जेहा बीजै सो लुणै,खेतैं करमाणा || किक्कर ते कंटक लहहि,किमि होहि रञाणा ||३|| दुख दित्ते दुख पाईअहि,सुख सूख समाणा || रुति आई हरि नाम की,नहिं सोइ अञाणा ||४|| कहु मुखहुँ श्री राम राम,रम राम रमाणा || नाम नाराइण श्रीचंद्र,मन तन उर भाणा ||५||३१३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। नाम सिमरु नामै जपहु,नामै लिव लावहु ।। अहनिसि नाम धिआइऐ,मन तन हरखावहु ।।१।। ऐथे सभ सुख नउनिधां,दरगह सुख पावहु ।। करम भूमि सत बीज कै,बोहल घरि लिआवहु ।।२।। खावहु खरचहु अनिक बिधि,भुगतहु भुंचावहु ।। करजा मूल न सिर चढ़हि,मुकते दिसि आवहु ।।३।। बिचरहु सुख सों सुरखरू,भै चीत न लावहु ।। आदर करिहै धरमराज,जम घुरक हटावहु ।।४।। दिण दूणा निसि चउगुणा,मुख तेज लखावहु ।। समता नाहिन श्रीचंद्र,उपमा किमि गावहु ।।५।।३१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। थोड़े जल की माछुली,किआ माण करेई ।। धीवर पाए जाल को,पकड़ेगा बेई ।।१।। नैन सुलोनी सुंदरी,रुदनावै तेई ।। कउनो सुनै पुकार इस,हितवंत न केई ।।२।। भक्खन हित जो मास चहि,बेदरदे सेई ।। वसि पई अस जालमा,तन चाम चटेई ।।३।। पाथर किवें पसीजई,उर अगनि

मचेई ॥ अउघट रुद्धी एकली,भागै संगि जेई ॥४॥ जे सागर हरि पावती,केलति गुरबेई ॥ बिन नामै श्रीचंद्र कउ,मन नाहि चुभेई ॥५॥३१५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ फूल फूल किउं बिगसिआ,अब ही कुमलाणा ॥ पाणी ही तुव नास है,जा महिं लहिराणा ॥१॥ कालख अंदर बेधिआ,अंधिआर रमाणा ॥ पवण वेग ते झड़ गए,पर भए पुराणा ॥२॥ काली होई देहुरी,मित नाहि सिञाणा ॥ सज्जन ही दुज्जन भए,किआ अपर कहाणा ॥३॥ सर भरिआ जस सुभर सिउं,तूँ खरा रँञाणा ॥ अचरजमानी तूँ थिरा,दिन चल्लण जाणा ॥४॥ काले संग तिआग गे,करि काला बाणा ॥ श्रीचंद्र भजि साधु संग,हरि नाम सुजाणा ॥५॥३१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ गुरुमुख जपु प्रभु नाम कउ,उर हउमै खोई ॥ त्रिसना अगनि निवारीआ,निरमल मत होई ॥१॥ काया झूठी बिनसनी,तजि दूर खलोई ॥ पाप विकार कमाईऐ,जे थिरीए लोई ॥२॥ राम नाम जपु दिनसु राति,सगरी मल धोई ॥ हरि प्रभु सज्जण सभसि दा,दूजा नहि कोई ॥३॥ जिनि

इह जगत उपाइआ,तिस माहि समोई ।। साधु संग नित राम रमि,सेते अवलोई ।।४।। लिव लागी गोबिंद सिउं,गुण हार परोई ।। हरि गोपाल श्रीचंद्र जपु,हरि दरगह ढोई ।।५।।३१७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। जन की टेक हरि नाम है,जिसु जेवडु न आना ।। नाम प्रताप जन विचरते,सातहुँ असमाना ।।१।। मुख ते बोलिआ सफल ह्वै,हरि हरि रस साना ।। हरि हरि लिखती कलम धंन,कागद परवाना ।।२।। धन मसू जित लिक्खिआ,प्रभु नाम सुजाना ।। अकथ कथा हरि राम नाम,जुग जुग किअ गाना ।।३।। जित सुणिऐ मन रहसीऐ,गुण अनंद निधाना ।। धंन धंन जन जग आया,दै चलहि निसाना ।।४।। राम राम हरि राम राम,सुख निधि भगवाना ।। रसना रटती श्रीचंद्र,अलह रहमाना ।।५।।३१८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। प्रभु प्रतिपालक सभस दा,सभ दा हरि साईं ।। जित्थै जाइऐ जगत महि,विआपक तिसु थाईं ।।१।। गुरु पूरे ते पाईऐ,हरि नाम सखाई ।। हउमै बंध छुडाइ कै,हरि हरि लिव लाई ।।२।।

रिद्धि सिद्धि नवनिद्धि सभ,चौगिरदहिं छाई ।। हरि जन हरि हरि धिआइंदा,हरि तिसहि धिआई ।।३।। माता बारक पालदी,बारक भी माई ।। ओत पोत हरि रव रहिआ,हरिजन हरि भाई ।।४।। अनरूपा रूपी भया,हित आप जनाई ।। श्रीचंद्र संत चरन सेव,करि मुकत लहाई ।।५।।३१९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। नाम जपत गोबिंद का,नहिं विआपत पीरा ।। मन तन अंतरि सांत है,लहि त्रिबिधि समीरा ।।१।। राम नाम रस बेधिआ,नहि डोलत धीरा ।। गया विरोध विवाद सभ,लख सके सु बीरा ।।२।। सबद मेलि सुख ऊपजै,अनहिल्ल सरीरा ।। उलटि कमल परगासिआ,भवरा रस लीरा ।।३।। वाजे वजे चहुँ जुगी,हरि भेटिआ तीरा ।। संत सहाई नाम के,तुम दीनसि चीरा ।।४।। अनहद धुनि प्रगटाइआ,प्रभु गहिर गंभीरा ।। श्रीचंद्र मन मगन भा,लगि बारक खीरा ।।५।।३२०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। किआ गुण तेरे संमला,मेरे हरि पिआरे ।। बांह पकड़ कर काढ लिअ,बूडत भव नारे ।।१।। निज चरनी ला रखिअन,सभ पाप बिदारे ।। अगनि बिनासी काम क्रोध,मींह मया सु धारे ।।२।।

अवगुण नाहिं चितारिअन,अपने करि पारे ।। एती पाई तुझहि ते,अन नहि संसारे ।।३।। अबिचल राज दिवाइआ,दूत दुस्ट संघारे ।। सुर नर असुर सु पायकी,करते दरबारे ।।४।। कारी निसा बिनास भी, लोई भुनसारे ।। राम राम श्रीचंद्र भनि,निरगुण निस्तारे ।।५।।३२१।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। मेरे प्रभु अविनासीआ,मैं तेरा चेरा ।। खिन पल मनहु न वीसरहि,हरि प्रीतम मेरा ।।१।। पाप विकार भगाइ कर,कीनै निज जेरा ।। चरण कमल श्री रामराइ,निज दास बसेरा ।।२।। सिर साहां पातसाह तूँ,ठाकुर सु बडेरा ।। जो जन तुझहि निवाजिआ,तिस ऊरध डेरा ।।३।। धुज ऊची गोबिंद की,तिहुँ लोकन हेरा ।। सरणागत प्रतिपालदा,दै चरनन नेरा ।।४।। नाराइण श्री राम राम,कहिऐ लख बेरा ।। संत सरणि श्रीचंद्र गहि,हरि रंग रंगेरा ।।५।।३२२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। जपु जपु नाम नाराइणै,ऊतम पद पायो ।। मात पिता नहिं संग जिहँ,ध्रुव अचल थिरायो ।।१।। प्रहलादहि के बध नमित,थंभा तपतायो ।। तातहि को संघार किअ,वर काम न

आयो ॥२॥ जन हित कौतुक अद्भुतन,जग कउ दिखरायो ॥ तपत कड़ाहे न्हाइ कर,सुधना हरखायो ॥३॥ धुज मयूर को प्रगट ह्वै,हरि रूप लखायो ॥ रखिआ कर चंद्रहास पै,बुधि ध्रिस्ट लजायो ॥४॥ बिप्र सुदामै संपदा,हरि सकुचि पठायो ॥ भजि हरि नामहि श्रीचंद्र,सभ बिधि सरसायो ॥५॥३२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ राम नाम परताप ते,चिरजीवी होए ॥ गुण गावत गोबिंद के,नारद नहि मोए ॥१॥ आतम राम प्रगासिआ,सनकादि अनंदे ॥ वालमीकि गुण गाइ कै,आनंद सुछंदे ॥२॥ विआस परासर जयमुनि,हरि राम धिआया ॥ गिआन पदारथ पाइ कै,फिरि जोनि न धाया ॥३॥ बलि राजा कै दुआर थित,हरि कुटिआ साजी ॥ जिनि हरि नाम आराधिआ,जग जीती बाजी ॥४॥ चार पदारथ पाइऐ,प्रभु नाम अराधै ॥ जनम जीत ले श्रीचंद्र,मिलि संगति साधै ॥५॥३२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ जिनि रस हरि हरि नाम का,खीवे सद भाई ॥ सतगुरु पूरा पाइआ,हरि नाम

समाई ॥१॥ इकरस अहनिसि सेविऐ,प्रभु राम सहाई ॥ अंतर की मल उतरहि,चमकै हरि राई ॥२॥ सात आकास पाताल की,हरि सोझी पाई ॥ अगम गति हरि नाम की,विसमय विसमाई ॥३॥ थोड़ा उद्दम जीव का,हरि प्रगटै आई ॥ जल थल महिअल पूरिआ,हरि अगम गुसाई ॥४॥ संत जना की टेक गहि,प्रभु नाम धिआई ॥ श्रीचंद्र हरि आइ कै,सभ पीर मिटाई ॥५॥३२५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ जपु जपु नाम गुबिंद का,अंतरि सुख सार ॥ मन तन हलका होइआ,सभ लाथा भार ॥१॥ तपत बुझानी अंतरी,हरि वरसिआ बार ॥ मोहन रूप दिखालिआ,किरणै भुनसार ॥२॥ उर महि प्रगट प्रताप भा,गा तम अंधिआर ॥ नउनिधि पाई नाम टेक,डोलत नहि चार ॥३॥ सहिज सूख मन लीन ह्वै,भा ठंडा ठार ॥ आपा आप मिलाइआ,आतम उजिआर ॥४॥ छूटो माया जाल ते, गोबिंद निहार ॥ श्रीचंद्र निरमल भया,मन संत संगार ॥५॥३२६॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग काफी ॥ हरि गुण गावत संत संग,कलिमल सभ नाठे ॥ सहिज सुहेले सद सुखी,हरि हरि धन

गाठे ।।१।। राम नाम जपु दिनस राति,गुरुमुख मन साठे ।। खुला चित मैदान भा,टूटी अरि हाठे ।।२।। ऊची बुद्धि विकासई,भेद भ्रमहि ढाठे ।। भाव भगति उर बेधिआ,कामादिक माठे ।।३।। त्रिहुँ कालन की सूझ भी,राजे किआ माठे ।। संतन तूल न पुजनी,रस राम सुराठे ।।४।। हरि भगती ते हीन नर,जनु सूके काठे ।। श्रीचंद्र रत राम रंग,संतन की चाठे ।।५।।३२७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। साहां पातसाहां सिरे,हरिजन सनमानी ।। कुलवंता चतुरा पंडित,नहि तुल्य सुगिआनी ।।१।। छत्रपती सूरा बडो,जंगी अभिमानी ।। वेता खट सासत्रन कउ,चहुँ वेद वखानी ।।२।। अंग प्रत्यंग सोध करि,मुख भनतो बानी ।। प्रतिस्टा मान संसार महि,ऊचो अस्थानी ।।३।। सुभ आचारवंता सुजन,रूपवंता प्रानी ।। सभ जन मध्य पूजिअत,गुणवान प्रधानी ।।४।। धनवंता जन जानई,जाचक गन दानी ।। संत बराबर श्रीचंद्र,नहि पहुँचत सानी ।।५।।३२८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग काफी ।। गुरुमुख मन समझाइऐ,हरि हरि लिव लाई ।। सदा सहाई जिय का,हरि पुरुख

सुभाई ।।१।। करते कै हत्थ सरब किछु,जो चहहि कराई ।। जै भावै तै मान दै,भावै त रुलाई ।।२।। हुकमै तख्त बैठाइंदा,हुकमै भिख धाई ।। हुकमै थल सिर सर करै,सर देइ सुखाई ।।३।। हुकमै जग महि उस्तती,हुकमै निंदाई ।। हुकमै रज खवाइ है,हुकमै भूखाई ।।४।। हुकम न बूझे बपुड़ी,भूली लोगाई ।। हुकम पछाणै श्रीचंद्र,सद जपै गुसाई ।।५।।३२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। बहु कलपन पछुताइऐ,उर अधिक विखादा ।। कबहुँ थिति न पाईऐ,मोहै परमादा ।।१।। अनिक तरंगी भरम पचि,नहिं मिटत विवादा ।। कबहूँ नर ह्वै ऊरधी,कबहूँ चर मादा ।।२।। कबहूँ पसु पंखी भया,कबहूँ भव सादा ।। कबहूँ अकल लतीफ मुख,कबहूँ उनमादा ।।३।। कबहूँ परखत खोटिआं,कबहूँ नरजादा ।। कबहूँ रेसम पट धरे,कबहूँ रोमादा ।।४।। राम नाम बिन भरम भुला,थिति नहीं इरादा ।। श्रीचंद्र द्रिढ़ करि गहहु,हरि हरि रस स्वादा ।।५।।३३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। सुंदर नारी भोग रस,लपटै लपटाई ।। धन संचै लगि त्रिसन महि,धरि लिओ

दबाई ॥१॥ नट नाटक अखाड़िआं,कौतुक सरसाई ॥ भूमि खरीदी अधिक ही,हदाँ वरधाई ॥२॥ वापारी होइ विचरिआ,परदेस कमाई ॥ धीआं पूत संजोग वसि,अति लाड लडाई ॥३॥ हीरे लाल जवाहरी,घरि कमी न काई ॥ दुरजन जीतिओ डंक दै,सिर छत्र ढुराई ॥४॥ राम नाम बिन सुख कहां,सभ खोज लुगाई ॥ जपु नाराइण श्रीचंद्र,मन सांत समाई ॥५॥३३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ राम नाम बिनु थिर नही,कोऊ भव माहीं ॥ दिनस लीन ह्वै रैणि महि,रैणी दिन माहीं ॥१॥ उदकरखै महि जीव जंतु,बहु केल कराही ॥ आवत ही अकरख कै,सभ सुंन समाही ॥२॥ जुग छत्तीह अंधकार कै,परलै विदताही ॥ बहुरो भव उपराजिआ,धार परवाही ॥३॥ कई कोटि ब्रहमा भए,बिसनू कोटाही ॥ अंतु रुद्रन आइओ लखि,उपज विनाही ॥४॥ थिर नाराइण केवला, मर जनमत नाही ॥ संतन कै परसाद ते,श्रीचंद्र लखाही ॥५॥३३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ सच्चा नाम धिआइऐ,मिलि संतन संगा ॥ पाप कसंमल उतरहिं,जल परसत

गंगा ॥१॥ सत संतोख कमाइऐ,चोखा रंग रंगा ॥ गुरुमुख सेती संग करि,हरि सिमरन ढंगा ॥२॥ त्रिसना मेटि समाइऐ,हउमै करि भंगा ॥ दूजी दुबिधा परिहरै,मन निरमल चंगा ॥३॥ मनमुख भुख विआपई,थिर होत न अंगा ॥ कहूँ न तड़िता कर गही,माया सरबंगा ॥४॥ म्रिग जिउं धावत कल्लरै,तन नासत नंगा ॥ राम नाम तजि श्रीचंद्र,दुख दूखन रंगा ॥५॥३३३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हरि सिमरत मन तन सुखी,उर अंतरि सांता ॥ दूख विनासहि सकल ही,नासत भ्रम भ्रांता ॥१॥ तम महि किरण प्रकास भी,तड़िता की कांता ॥ गगन मंडल धुनि पाईऐ,रंग राग अभांता ॥२॥ सात आकासी बेध कै,चंद चढ़िओ सुभांता ॥ सप्त रंग पातसाह के,चमकत दियुति सांता ॥३॥ पवण वेग रथ घूमई,सत छत्र सुहाता ॥ मारिओ अहंकरण सूरमा,दिअ डंक प्रखिआता ॥४॥ बिन जानै जानिओ सकल,त्रिहुँ लोकन बाता ॥ पारब्रहम भजि श्रीचंद्र,पद सहिज समाता ॥५॥३३४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हम बारक गोबिंद के,प्रभु पालनहारा ।। सास सास संमालता,सच खसम हमारा ।।१।। सरप अगनि ते राख करि,नित्त करदा सारा ।। काकिणि साकिणि डाकिणी,करि दूरि निवारा ।।२।। पेख न साकत छुधावंत,दै रुचिर अहारा ।। सगली स्रिस्टि सेवक कीन,छिनि छिनि करि पिआरा ।।३।। खेलहि बिगसहि अनंद सिउं,सभ धरनि मझारा ।। बसन ओढावत सुंदरन,मुख चुमि सिंगारा ।।४।। काई कमी न राखीआ,हरि पूरि भंडारा ।। पिता क्रिपाल गुसाईआ,श्रीचंद्र सम्हारा ।।५।।३३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सरणि परे हरि प्रभू के,दुआरे हम बारा ।। जन पालक गोपाल हरि,भव का दातारा ।।१।। दीन दरद दुख भंजनो,माधव अरि घारा ।। पावन पतित दयाल सच,करता प्रतिपारा ।।२।। अगम अगोचर पारब्रहम,परमेस अपारा ।। पूरन पुरुख सुजान जन,अवगुण परिहारा ।।३।। क्रिपा आइतन सामरथ,अघ काटन हारा ।। मन रंजन सु निरंजनो,जन भरन भंडारा ।।४।। भुजदंड अखंड प्रचंड घन,बलवंड जुझारा ।। कर सिर धारे राखता,श्रीचंद्र सम्हारा ।।५।।३३६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग काफी || आवहु संत पिआरिओ,हरि कीरति गावहिं || सत्गुरु सेवहिं भाउ करि,प्रभु पुरुख मनावहिं ||१|| आठ पहिर करि जोड़ रहि,मुख ओर तकावहिं || जहँ बैसालहि बैस हैं,जो कहहि कमावहिं ||२|| कहहि जे इह थल बैठीअहि,मन अनत न धावहिं || जो पीआलहिं पीव हैं,जो देहँ सु खावहिं ||३|| भाणै अनंद मनाइ हैं,दुख भुख सहावहिं || चरन कमल सरणागती,कबि छोडि न जावहिं ||४|| दिन बीते आराधते,निसि सिमरि बितावहिं || तुझ ते बाहर श्रीचंद्र,लख जनम न धावहिं ||५||३३७||

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग काफी || गुरुमुख मन परगासिआ,हरि राम रमाणा || सत्गुरु सेवै आपणा,सुख सहिज समाणा ||१|| सुख दुख करते वस्सि है,सिख मंनण भाणा || रामो राम रमीजीऐ,रामै रम जाणा ||२|| आसा त्रिसना लाह कै,हरि जस रंग माणा || जे निंदहि सभ लोक मिलि,नहिं तजहुँ टिकाणा ||३|| जे सभ लोक सलाह ही,तऊ आपन जाणा || अविनासी सत्गुरु चरन,मन रंग रंगाणा ||४|| जनम जनम

का लाभ लिय,पारब्रहम पछाणा ।। सभ निधान श्रीचंद्र इक,सत्गुरु चरनाणा ।।५।।३३८।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। एत कमाई मोह ते,एती द्रिढ़तारी ।। राम नाम जपु संजमो,सत्गुरु सेवारी ।।१।। संत सरणि परपक्क होइ,हरि हरि आधारी ।। कालख मन की उत्तरै,तड़िता चमकारी ।।२।। गरज गगन बिन बादलों,गैबी अवतारी ।। चतुरंगनि बीरन चली,दल मल दरबारी ।।३।। सच्च नगारा वजिआ,धुनि महा भयारी ।। आया तखत अकास ते,हूरन परिवारी ।।४।। अबिचल राज सुहावणा, दोही संसारी ।। अत्र पत्र हरि श्रीचंद्र,दिसि चतुर झुलारी ।।५।।३३९।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। संत जना के संग करि,हरि नाम धिआया ।। गुरु अविनासी सेविआ,सभ भार चुकाया ।।१।। जनम जनम का लदिआ,कंध झाड़ गवाया ।। दुबिधा दूजा परिहरै,इक सच्च समाया ।।२।। चार पदारथ पाइअन,मन त्रिपत अघाया ।। संतोख रुख अम्रित फला,खावत नहि आया ।।३।। पारब्रहम परमेस्वरै,विआपक दरसाया ।। कोटि जुगन सिउं सो रहिआ,गुरु टुंब जगाया ।।४।। निसि

अंधिआरी विगत भी,रवि चढ़िओ सवाया ।। नाराइण जपु श्रीचंद्र,इकचित्त समाया ।।५।।३४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। प्रभु माली ने लाइआ,दुनिया का बाग ।। पाणी सिंचित आलबाल,इकचित सिउं पाग ।।१।। केचित साखा छांटई,केचित बड़ताग ।। केचित पेडन काटता,केचित नव लाग ।।२।। केचित सुंदर पुहप वर,केचित फल साग ।। केचित पातन पांत वरु,केचित काँडाग ।।३।। केचित वाड़ी लाईआ,केचित सु तड़ाग ।। केचित सिसिर न सूकई,केचित छाँगाग ।।४।। जिउं भावे तिउं थान दे, जिउं भावै काग ।। करते हत्थ श्रीचंद्र सभ,अन सकत न थांग ।।५।।३४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मनमुख रिदै न भीजई,हरि हरि गुण गाइ ।। अंतरि कपट कठोर भव,नित कूड़ कमाइ ।।१।। माया मोह चित धोह रचि,सुभ वेश बनाइ ।। चंदन अगर कपूर साउ,कागै न सुहाइ ।।२।। विस्टा सवादे मोहिआ,विस्टा ही लपटाइ ।। करता दूरि पछाणिआ,कालुख दागाइ ।।३।।

कूड़े करम कमांवदा,जग हित परिचाइ ।। पाप विहाझहि पाप लहि,पापहि पतिआइ ।।४।। एत्थे दुख घनेरिआ,ओत्थे दुख पाइ ।। सत्गुरु बाझहुँ श्रीचंद्र,लहि नरक सजाइ ।।५।।३४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राम नाम की गति नही जानी,माया भरम भुलाना ।। जा सिउं राचि माचि चित लाया,अंतु सोऊ तजि जाना ।।१।। जिस कउ अपना करि करि राखिआ,ओऊ भया बिगाना ।। पेखत चाखत बोलत चालत,समझत नाहि दीवाना ।।२।। करम लिखिआ करते धुरि मस्तक,बहुरि बहुरि पछुताना ।। रोवत जनमा रोवत वरधा,रोवत ऊठि सिधाना ।।३।। कबहूँ ऊचा कबहूँ नीचा,डोलत जनम बिहाना ।। खिन पल घड़ी हरख सो बीती,निसिदिन सोग लगाना ।।४।। दिवस उदै ते धंधे लागा,रैणी सोइ बिताना ।। भजि गोबिंद श्रीचंद्र कहित है,जौ कछु चाहत पाना ।।५।।३४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राम सिमरि ले बावरै,जो संग सिधारे ।। जेते माया रंग रस,कूड़े पासारे ।।१।। दिन दुइ चार सुहावणे,बहुरो पतझारे ।। भाई मीत न को रहहि,पिखि नैन उघारे ।।२।। द्रिस्टमान सभ

बिनस है,नहिं संग सिधारे ।। तन धन सिउं चित मोहिआ,भरमत भरमारे ।।३।। किसहूँ संग न चालिआ,तू नयो न आ रे ।। जैसे आगल गए हैं,जैहैं मुख कारे ।।४।। अजहूँ समझ कछु नहि गयो,जउ राम समारे ।। नाराइण भजि श्रीचंद्र,तुझ संग पधारे ।।५।।३४४।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। भजु गोबिंद गुपाल राइ,हरि गहिर गंभीरा ।। काछी बुद्धि न पावई,बेकीमत हीरा ।।१।। काकरि चोर न जानई,मखमल के चीरा ।। रस लोहू चिच्चड़ लगा,किआ जानै खीरा ।।२।। मद रस माता अहनिसा,पीवत नहि सीरा ।। रुचित जाहि इंद्राइणी,आमहि कबि ल्हीरा ।।३।। गधे सुहावति रूड़ीआं,कब सिहजा धीरा ।। कबहूँ मरकट साजिआ,घर सरिता तीरा ।।४।। नरहरि माधव राम हरि,मधु कैटभ चीरा ।। संत बिना नहि श्रीचंद्र,उर समझत पीरा ।।५।।३४५।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। अपनै जान निवाजीए,हे गोबिंद रामा ।। तुझते विछुड़ न पाईए,इक कौडी दामा ।।१।। रेत तपत रवि तेज ते,किआ गरब गुलामा ।। सभ ते वडा तू धणी,हम सेवक सामा ।।२।।

तूँ अविनासी पुरुख है,हम काचे खामा ।। अबिचल तुध वडिआईआ,राचे पहिनामा ।।३।। अगम अगोचर लाल हरि,अंतरि ते स्यामा ।। गुण निधान भरपूर प्रभु,हम अवगुण धामा ।।४।। त्रिगुणातीत अतुल्य तूँ,हम भूतक जामा ।। सरणि सहाई श्रीचंद्र,पूरहु मम कामा ।।५।।३४६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। जिनि की लेखे पति पवहि,सेई परवाना ।। कोऊ कमी न ताहि ग्रिह,जपतो भगवाना ।।१।। सभ जग जाचक दर तिनहि,जिहँ हरि सिमराना ।। करामात साहिब बडो,प्रभु तुल्य न आना ।।२।। जिउं चाहहि तिउं राख लै,कापड़ ओढाना ।। करम अकरम न सोचता,नहि जान अजाना ।।३।। सोच पोच धनि निरधना,नहि करत पछाना ।। निंदक दुस्ट हरामखोर,कब तिआग पराना ।।४।। चार अचार विचार गति,भव मान अमाना ।। बूझत नाहिन श्रीचंद्र,करि द्रिस्टि सुजाना ।।५।।३४७।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। पतित पुनीति करे घने,किछु अंतु न आवै ।। चमरेटे अपने करत,कब सकुच न

जावै ॥१॥ मुसलमान कोरी भगति,दै नहि सरमावै ॥ आप हरी नाऊ भयो,कस नाऊ धकावै ॥२॥ कूकर विस्टा भोगई,प्रभु सुआन सदावै ॥ सूकर पुरीखा खान को,हरि बिनु को धावै ॥३॥ उत्तम जाति न जाट की,गल गोबिंद लावै ॥ गनिका तिआग न दूरि धरि,नहि भींडु घुरावै ॥४॥ नाराइण तहिं नाम है,जोऊ नीच हितावै ॥ सिमरि सिमरि हरि श्रीचंद्र,मन महि बिगसावै ॥५॥३४८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ करण कारण करता पुरुख,जो चहे सु करणा ॥ जल थल महीअल पालई,जीआं का परणा ॥१॥ कबही दूर न करत है,जोऊ आवत सरणा ॥ मनमोहन भव सोहना,भरिओ द्रिग करुणा ॥२॥ दीन दरद दुख भंजना,असरन की सरणा ॥ गंज गनीमन गरब गंज,संतन का भरणा ॥३॥ नरहरि नवल किसोर नाथ,नर नारि निहरणा ॥ नीलकंठ नाराइणा,निररूप न वरणा ॥४॥ मधुसूदन कैटभ जित,हिरनाखस हरणा ॥ महाजोध श्रीचंद्र प्रभु,दैत्तन दल दरणा ॥५॥३४९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ करुणामय करतार प्रभू हरि,सुण बिनती दीना ॥ छुप छुप करत विकार नितप्रति,

बहु करम कमीना ॥१॥ अपराधी बड दुनी महि,हम सर नहिं चीना ॥ लोभ लागि हत्या करत, अति दीन मलीना ॥२॥ कामी क्रोधी लोलुपी,दंभी परबीना ॥ ठग द्रोही सभ देस के,छल बल उर पीना ॥३॥ जन जानै जो करम मुहि,नहिं निकट लगीना ॥ महा कुकरमी पाप रति,मुहि सम नहि कीना ॥४॥ सरणि चरण की ताक कै,आए भव बीना ॥ क्रिपाधार श्रीचंद्र पहि,राखहु निकटीना ॥५॥३५०॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ परमेस्वर संदेस ले,दुख जग महि आया ॥ सिखिआ सुभ द्रिढ़ाईआ,प्रभु नाम जपाया ॥१॥ करता सुख महि वीसरै,लपटाए माया ॥ पारब्रहम परमस्वरै,जा कउ लड़ि लाया ॥२॥ सोई होया ताहि का,जिस नामै धिआया ॥ मन भीजा गोबिंद संग,जल जलहि समाया ॥३॥ दुबिधा दूजा परिहरै,एकै लिव लाया ॥ दुख सुख सम करि जाणिआ,मन नाहि डुलाया ॥४॥ राम नाम गुण अनंद सिउं,चित माहि वसाया ॥ पूरा सोई श्रीचंद्र,जिस अबिचल थाया ॥५॥३५१॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। चरण कमल नाराइणै,लपटी नित माया ।। निज पितु केरे धाम महि,हरि घेर वसाया ।।१।। सुख सिउं सोइ न साकई,सिहजा सरपाया ।। सेस निचिंत न कबहुँ भा,गरुड़ै भै पाया ।।२।। महा दुखी भगवान है,नाभी कमलाया ।। इकतु पासे लेटते,जुग कोटि बिताया ।।३।। चिंता मनहुँ न उत्तरै,अज मरन चिताया ।। मत सगरो जग नास होइ,परलै उपजाया ।।४।। दूखी सांझ उपाइ कै,सूखी प्रभु घाया ।। साधु सोइ ऊंच श्रीचंद्र,जिनि दुख सहाया ।।५।।३५२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। मेरे हरि प्रभु कौतुकी,मन नाहिन जाणा ।। अहनिसि नाम धिआईऐ,प्रभु चोज विडाणा ।।१।। कमलहुँ कमलज भव लहा,कमलहि थित ठाणा ।। भोजन कबहुँ न पाया,बहु कल्प बिताणा ।।२।। सभ ते उत्तम विदिअमान,नहि सागर न्हाणा ।। नितप्रति डोलत दुखित अति,लहिरीं उच्च ताणा ।।३।। आगिआकारी पूत नहिं,किआ करहि निमाणा ।। केवल लछमी बिसनू पहि, निरधन दुख धाणा ।।४।। उचरत वेद न सुख लहिओ,संखै भै माणा ।। साधु संग दुख संजमो,श्रीचंद्र

रमाणा ।।५।।३५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। सरब पदारथ देवई,सरबे जग ताई ।। सिर गंगा जट जूट महि,सोयो कभी नाहीं ।।१।। कापड़ मिलै न पहिरबे,नंगे अंगाही ।। बाघ म्रिग गज चरम महि,निसि दिवस बिताही ।।२।। भोजन भंग धतूर का,मद मत्त महाही ।। समरारी समरहि रता,लिंग वरधिओ जाहीं ।।३।। तोते अमर करावई,मरता सोऊ आही ।। चांद न टारत मस्तको,गल साप रहाही ।।४।। नील कंठ महि राखिआ,तऊ म्रितु पाहीं ।। श्रीचंद्र भव दूख सहि,हरि राम रमाही ।।५।।३५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। उकति सिआणप तिआग करि,गहु साधू सरणा ।। हरि हरि नाम जपंदिआ, कलिमल कलि हरणा ।।१।। निरमल मति परगास ह्वै,अगिआन निदरणा ।। जपु तपु संजम दया धरम,उर भीतरि जरणा ।।२।। माया मोह परिहर सकल,करणी आचरणा ।। कूड़ कपट दंभ बिनस है,सच्चो सच परणा ।।३।। दूख न देई किसे जीअ,दुखिअन उबरणा ।। चित्त गरीबी भूसणहि,पहिरत

जनु तरुणा ॥४॥ राम नाम जपु दिनसु राति,अन नाहि सिमरणा ॥ सहिज अनंदित श्रीचंद्र,अबिचल आसरणा ॥५॥३५५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ मनमुख नाम न सिमरई,पचि मूओ विकारा ॥ ऐथे सुख न पावई,मरि होइ खुआरा ॥१॥ जम दर बद्धे मारीअहि,को लए न सारा ॥ दुखो दुख विआपई,सिर जोनी भारा ॥२॥ मनहु कुसुद्धे पाप मय,मोह ध्रोह विचारा ॥ दया बिना नर मारई,मन अंदरि कारा ॥३॥ सत्गुरु पूरे हीणिआ,अपकरम विथारा ॥ गुरुमुख होवै साधु संग,हरि नाम चितारा ॥४॥ मन उजल दरगह लहे,प्रभु पुरुख पिआरा ॥ सदा सूख श्रीचंद्र तिहँ,मुखि राम सम्हारा ॥५॥३५६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ कूड़ पाल मन बांधिआ,निति त्रिसना विआपी ॥ मनमुख नाम न जापई,हउमै उर थापी ॥१॥ काल जाल दहदिसि परा,फासत जन पापी ॥ सदा कुकरम कमावई,प्रभु भाउ न जापी ॥२॥ नित माया नो लोचदा,आसा संतापी ॥ करता पुरुख भुलाइआ,जीवन नित थापी ॥३॥

दुख सुख बद्धी आतमा,करमी गति भापी ॥ आवै जाइ भवाइऐ,थिति नाहि कदापी ॥४॥ सतगुरु पूरा भेटिऐ,हरि हरि पद मापी ॥ श्रीचंद्र अनुभव भया,रस राम सदा पी ॥५॥३५७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ धुरि पूरब होवै लिखिआ,संतां संग पाईऐ ॥ हउमै गरब वंञाय कै,हरि हरि चित्त लाईऐ ॥१॥ सच्चा करम कमाईऐ,मुख उज्वल भाईऐ ॥ राम नाम रस आइआ,हरि रंग समाईऐ ॥२॥ बाहुड़ि जनम न पाईऐ,प्रभु मेल मिलाईऐ ॥ कंचन काया निरमली,फिरि जोनि न ताईऐ ॥३॥ एकंकार पसारिआ,लिव इकरस लाईऐ ॥ मन महि परमानंद रंग,सुख खेम मनाईऐ ॥४॥ त्रिसना पावक बूझई,अम्रित मुख माईऐ ॥ अवर न उत्तम श्रीचंद्र,बिन राम सहाईऐ ॥५॥३५८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ अहंकार मुठे बेगारी,धरम करम न सूला ॥ हरि के नाम विहूणिआ,बिरथा दुख मूला ॥१॥ अणहोंदा होंदा लहै,होंदा उर भूला ॥ अहनिसि त्रिसना अगली,आसा चित तूला ॥२॥ अखड़ कहूँ सकीए,करमन करि पूला ॥ मानुख जनम गवाइआ,बिखिआ रस घूला ॥३॥ राम नाम

धन निरमला,सगरे सुख मूला ॥ दरगह पैधे जाइऐ,मन मगनहि झूला ॥४॥ साधु जना संग जाप करि,बिनसे अहं हूला ॥ गोबिंद सिमरत श्रीचंद्र,दीवा नहि गूला ॥५॥३५९॥

ओम् पारब्रह्मणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ हरि हरि नाम धिआइ कै,रस अम्रित पीआ ॥ रंग राम आनंद मगन,कब नाहि अउखीआ ॥१॥ अमरा पदवी थित भए,सद ही भव जीआ ॥ पाप विदारत अहनिसा,सुरसरि मजनीआ ॥२॥ गगन मंडल ते उतरे,घट देवन लीआ ॥ जोति प्रकासी अंदरहुँ,सभ चानण थीआ ॥३॥ दहदिसि हरिआवलि घनी,मन कमल खिड़ीआ ॥ अमिअ सरोवर साधु संग,दुरमति बिनसीआ ॥४॥ जीवन मुक्त हरिजन लखे,गुरुमति प्रगटीआ ॥ राम नाम श्रीचंद्र लहि,चिरजीवन थीआ ॥५॥३६०॥

ओम् पारब्रह्मणे नम:

॥ **राग काफी** ॥ जिनि जन गोबिंद सिमरिआ,तिनि की उत्तम सोइ ॥ हरि कीरति उर प्रगटई,चहुँ जुगी तिहुँ लोइ ॥१॥ देव सभ आगिआकारीया,सनमुख रहहि खलोइ ॥ जिउं जिउं भाणा प्रभू का,

वरतत अनुभव होइ ।।२।। गूढ़ा चढ़िआ लाल रंग,उड न जाई जोइ ।। रसना रंग नाराइणै,धुनि विसमादी गोइ ।।३।। चार कुंट महि रम रहिआ,अबिचल सच्च समोइ ।। गुरु प्रसादी प्रगट भी,सच्च गिआन उर लोइ ।।४।। मन लागा हरि नाम सिउं,मगन अनंद रस चोइ ।। साधू चरनन श्रीचंद्र, पाप कसमल खोइ ।।५।।३६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। दुरमति नाम विहूनड़े,मन खोटे उर ध्रोह ।। पाखंड करम कमावही,अंतरि बांधे मोह ।।१।। कालुख चित मलीन भे,लागी राम न छोह ।। जगत दिखावै धरम रति,बुधि अपमानै कोह ।।२।। संत सरणि भुलिआ,मूठे महा सु लोह ।। त्रिसना विआपै सद दुखी,पुत्र कलत्रन रोह ।।३।। जाल फसाइआ म्रिग मन,छूट न साकत ओह ।। जम दर बद्धा मारीअत,पर सिर लेखा जोह ।।४।। करते मस्तक लीखिआ,जिउं भावै तिउं होह ।। राम नाम बिन श्रीचंद्र,चहुँदिसि पसरिओ मोह ।।५।।३६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। इन जीवन वसि कछू नाहिं,जिउं प्रेरे तिउं चालहिं ।। करते ही जिनि लीखिआ,से लागहि संत पालहिं ।।१।। मन परमेस्वर भाउ बसै,जपु तपु संजम घालहिं ।। गुण गोबिंद उचारीआ, रसना रंग रसालहिं ।।२।। मोहन माधव स्यामघन,हरि प्रभु राम समालहिं ।। तोटा कदे न आवई, खाइ खरच बंध पालहिं ।।३।। आप तरहि संगी तराहिं,कुल भी उधरहि नालहिं ।। जित्थै जित्थै पैर धरहि,धरति पुनीति निहालहिं ।।४।। तरु पाहन म्रिग पंखीअन,काट देत जम जालहिं ।। कुरबानै श्रीचंद्र तिनि,जिनि उर नाहिन कालहिं ।।५।।३६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हरि प्रभु करते जिनहुँ की,लेखे पति पाई ।। संत दरस करवाइ कै,हरि राम धिआई ।।१।। दया धरम अबिचल अचल,अम्रित रस आई ।। मन निहचल गोबिंद सिउं,हरि कीरति गाई ।।२।। ध्रोह मोह वलछल गए,कूड़ कपट विहाई ।। गुह्य खजाना पाइआ,मस्तक दीपाई ।।३।। दिन दुइ जीवन कारने,किमि पाप कमाई ।। सोई संचहु जीअड़े,जोऊ सदा सहाई ।।४।। चोर उचक्का

तां लगै,जां मिथिआ भाई ।। राम नाम श्रीचंद्र गहि,रस सुधा रसाई ।।५।।३६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। कुंभ एक दुइ थापीअहि,बिखि अम्रितधारा ।। सुख दुख पाप सु पुंनीअहि,मन बीचि बिचारा ।।१।। देव दैत्त भे ग्राहकी,सच कूड़ पसारा ।। बिरख सुहावै पंखिवर,चोगी अनहारा ।।२।। गुरुमति दुरमति घट भरा,पीवत निरधारा ।। गुरुमुख मनमुख भोगई,रस भोग निरारा ।।३।। जिनि कउ मस्तक भाग हैं,लहि संत संगारा ।। राम नाम रंग रतिआं,नहिं अपर अपारा ।। ४।। चढ़ी खुमारी नाम की,मद कहा खुमारा ।। संत कलालन श्रीचंद्र,रस सुधा अगारा ।।४।।३६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हे प्रभु मेरे गोबिंदा,गुण कवण वखाना ।। असंख दान हरि देवई,जिहँ तूल न आना ।।१।। लाखों धन जे मूल दे,को लहहि न पाना ।। कर रसना द्रिग पाद स्रुत,अनमोलक प्राना ।।२।। तन धन धामन मीत लख,अन बसनन नाना ।। पवण पाणी बैसंतरो,बसुधा तरु भाना ।।३।। ससि सूरज दीपक दिऐ,रस सुधा समाना ।। दिन कारी सोवन निसा,हरि कीन विधाना ।।४।।

सिमरै नाही मूढ़ नर,क्रितघन अघखाना ।। सत्गुरु चरनी श्रीचंद्र,जपु हरि भगवाना ।।५।।३६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रे मन,तूँ किउं सो रहा,उठि जाग पिआरे ।। दिन दुइ चार सुहावने,बहुरो अंधिआरे ।।१।। आगै चलना अवस्य है,देख नैन पसारे ।। मित्र भाई सभ चल गए,तुम भए किनारे ।।२।। कवन ले गयो बांध कै,धन भार अपारे ।। किआ तूँ संग ले चाल है,एती न विचारे ।।३।। राति बिहानी धाइगो,होवत भुनसारे ।। सिर पर केतक लाद है,कालर के भारे ।।४।। विखम नदी है लंघणी,चित लेहु चितारे ।। राम राम श्रीचंद्र कहु,जोऊ पार उतारे ।।५।।३६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तन मानुख दुरलभ मिला,नहि खोइ अजाना ।। जग जीवन दिन चार है,बहुरो चल जाना ।।१।। इस ही भीतरि ऊपजैं,निरमल हरि गिआना ।। चउरासीह लख जोनि महि,इस तुल्य न आना ।।२।। मोख दुआर हरि खोलिआ,तूँ पाट लगाना ।। हरिजन संगति पाइ कै,कुंजी कर पाना ।।३।। गुरु उपदेस कमाइऐ,कर जोग विधाना ।। अंतरि चानण ऊपजै,लहि मुकति निधाना ।।४।। भाउ भगति

करणी सफल,आगै का खाना ।। गोबिंद गोबिंद श्रीचंद्र,रस पी त्रिपताना ।।५।।३६८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। **राग काफी** ।। जिनि मन नाम धिआइआ,सेई जग आए ।। जनम तिना का सफल है,हरि कीरति गाए ।।१।। आगै चलण जाणिआ,मन मोह हटाए ।। सत्गुरु की करि चाकरी,सद सच्च समाए ।।२।। कूड़ पाल कट डारीआ,निरमल द्रिस्टाए ।। आवण जाणा जगत है,थिर को न रहाए ।।३।। मात पिता सुत बंधु जन,पूरब जो जाए ।। जबि वेऊ नहि दीसते,तुम किमि ठहिराए ।।४।। इह पुर पादन चलित के,जैहैं बिनसाए ।। द्रिढ़ निसचय धरि श्रीचंद्र,हरि हरि नित धिआए ।।५।।३६९।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। **राग काफी** ।। सत्गुरु आगै जोदड़ी,दीजै हरि नामा ।। मोह मलिन मति मेरीआ,आयो तुम सामा ।।१।। तुध जेवडु नहि अवर को,फंध काटै यामा ।। तू ही मंत्र द्रिढ़ाइ कै,हरिहै मन कामा ।।२।। हम अजान नहि जानई,तुम गिआनन धामा ।। मनहु कुसुद्धे पाप रति,नित चरित अकामा ।।३।। खते असंख कमावते,छिनि छिनि कालामा ।। मोहि न कोई राख है,लख चित पहिनामा ।।४।। बखस लेहु अति

बिखई जीउ,काटहु मग बामा ॥ तुम क्रिपाल अति श्रीचंद्र,हम अघी हमामा ॥५॥३७०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ सरणि गही करुणानिधे,जिहँ सम नहिं दूजा ॥ करत निताप्रति आरती,आरत जन रूझा ॥१॥ धूप दीप सेवा करउ,चंदन घसि पूजा ॥ फूल सुगंधित अरप करि,मन सांत उरूजा ॥२॥ भोग चित्त प्रभु लाइऐ,नहिं लागहि ऊजा ॥ मै जन तेरा दास हउं,आरती भनू जा ॥३॥ कोटि जनम की लालसा,हरि नाम जपूजा ॥ पूरन करि करुणापते,गोपाल तनूजा ॥४॥ मैल उतारहुँ अंदरहुं, लाखहुं तुमहू जा ॥ मनमोहन श्रीचंद्र उर,वासहु सभहू जा ॥५॥३७१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग काफी** ॥ कवन कवन गुण वरनीऐ,प्रभु अंतरजामी ॥ पर उपकारी दानीआ,अनपेखत खामी ॥१॥ जिअ जंतु प्रतिपालदा,रविआ सभ ठामी ॥ सूखम से सूखम महा,बिरधन बड नामी ॥२॥ जिमि जिमि जन गन चितवई,तिमि तिमि परिनामी ॥ नेड़े ते नेड़ा दिसहि,दूरहि दुरगामी ॥३॥ जानै कोइ न केतड़ा,तुव रूप अगामी ॥ अपने दास निवाजई,कर दै करि सुआमी ॥४॥

अवगुण को न चितारई,होवै अनुगामी ।। नितप्रति सिमरउ श्रीचंद्र,वासै हरि ठामी ।।५।।३७२।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। पंच तत्त की देह का,कबि नाही थिरना ।। लाख बरस की आरबल,तबहूँ ह्वै खिरना ।।१।। किआ गुमान तन सुंदरहि,जिसि कालहि घिरना ।। वाड़ी रहिसी थिर सदा, उठि चालहि हिरना ।।२।। मूल बिहूने पेड चढ़ि,सिर भार सु गिरना ।। बाग बगीचे फूल फल, नहि देखन फिरना ।।३।। कंघी केस सवारिऐ,अंतु होगु बिखिरना ।। बिखम नदी असगाह पै, कछु चहिअत तिरना ।।४।। राम राम श्री राम रम,रामहि रम सिरना ।। काम राम श्रीचंद्र है, अन नाहिन धिरना ।।५।।३७३।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग काफी ।। सुणु बेनंती मेरीआ,प्रभु दीन दयाला ।। सरणि परे तेरे दास की,लज राख गुपाला ।।१।। कलिजुग घोर अंधार महि,हरि देहु उजाला ।। जम जेवर दहदिसि परा,जिअ फासै जाला ।।२।। चिंता मिथिआ चितवते,ग्रिह काज जंजाला ।। वेकारी चित्त वेड़िआ,निकटी अति

काला ॥३॥ जनम गवाया मानवी,आसा विकराला ॥ कछू न हथ वसि कीन हम,करि लंमा खिआला ॥४॥ फेड़ कमाया लहैंगे,जिमि घाली घाला ॥ बखसस करि श्रीचंद्र पहि,पकड़ावउ पाला ॥५॥३७४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ दीन दयाल सुख सागर सुआमी,करता पुरुख मुरारी ॥ तुम बिन ओट न कोई सूझै, राखहु लाज हमारी ॥१॥ मनमुख संगति नितप्रति वासा,लागै सदा विकारी ॥ सेवा साधु न कीनी कबहूँ,गरबत रिद अहंकारी ॥२॥ बुरे करम कउ नित उठ धाए,जानी निसा न कारी ॥ जपु तपु संजम दया धरम,सत जत संतोख न धारी ॥३॥ हउमै बंधे मोह फास महि,पेखत द्रिग परनारी ॥ सर अपसर की सार न जानी,कुकरम रंग मंझारी ॥४॥ अपनी करणी जावहुँ नरके,आस तुमारी धारी ॥ करि मिहरामत श्रीचंद्र परि,बिगड़ी लेह सवारी ॥५॥३७५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ हम अगिआनी दुरमत बेधे,तुमरी गति नहि जानी ॥ बखस लेहु प्रभु बखसनहारे,

आस तुमारी ठानी ।।१।। जे करि अवगुण फोल दिखाऊँ,थूकहि लोग सुजानी ।। कवन कागद लेखा लिखीहै,ऊख होइगी कानी ।।२।। मन भरिआ कछु कहिन न आवै,खोलहुँ कैस जबानी ।। सभ ही बुरे करम मो माही,प्रगट घोर निसानी ।।३।। आगल सोच सोच पछतावउ,को ह्वै है मुर जानी ।। कालुख लागै कालुख पै हैं,कापड़ स्वेत सुहानी ।।४।। करणहार किरपाल गुसईआ,सिम्रित बात पुरानी ।। पावन पतित दयाल श्रीचंद्रहि,धूलि देहु कंज पानी ।।५।।३७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तन सुंदर लख गरबत,माटी रुल जाई ।। प्राण बिछोड़ा होइगो,को रख न सकाई ।।१।। मात पिता सुत मीत जन,पेखत सभ भाई ।। हंस उडर करि बापुरो,एकल जै धाई ।।२।। करम कमाणे संग होहि,नेकी बुरिआई ।। लेखा मंगै धरमराइ,सिर करज विखाई ।।३।। छोटा मूल न होई है,तिल रत्ती राई ।। मिथिआ द्रिस्टि बंधानिआ,किछु बूझि न पाई ।।४।। अजहुँ समझ भजि राम नाम,लए अंतु छुडाई ।। पारब्रहम बिन श्रीचंद्र,अन ओट न काई ।।५।।३७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। किआ तू गरबहि मान करि,कुल ऊच कुलीना ।। मावत नाही अंग महिं,पिखि अधिक जमीना ।।१।। भाई बंधु सहसरों,मम भुजा लंबीना ।। चतुर सिआणा पंडिता,गिआनी परबीना ।।२।। चार दिवस का चानणा,अंधेर बसीना ।। युवावंत आचारिओ,ऊचे आसीना ।।३।। माल खजाना हेम धन,रूपै हूँ कमी ना ।। सुंदर नारी ग्रिह वसी,दासहि दासीना ।।४।। किसही संग नचालही,एहि महल जमीना ।। राम नाम भजु श्रीचंद्र,चहि अबिचल जीना ।।५।।३७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तखत थिरै धरि पातसाह,सिर चमर ढुलारा ।। रावत सीस निवावई,थिति खड़े कतारा ।।१।। चंद्रमुखी गजगामिनी,महिली बहु नारा ।। अस्व सिअंदन नागनी,चतुरंग सम्हारा ।।२।। सेवत दासी दास घन,जल पाट पखारा ।। म्रिदुल सेज छा आस्त्रन,उपधान सवारा ।।३।। पान फूल गंधन महा,चहुँदिसि विस्तारा ।। सेवक सेना संग ले,बन खेल सिकारा ।।४।। वरज न साकत कोऊ भव,जित चहित पधारा ।। राम नाम बिन श्रीचंद्र,मिथिआ पासारा ।।५।।३७९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ रे मन,भजि ले राम नाम,जोऊ संग सहाई ॥ राग रंग अठखेलीआं,लगि रहिओ भुलाई ॥१॥ द्रिस्टमान सभ बिनस है,अबिचल मत पाई ॥ कूड़ पदारथ मोह वसि,साचै द्रिस्टाई ॥२॥ जिनि सिउं हेत लगाइओ,सभ तिआग पराई ॥ सखा मीत साजन सगल,शमशान पहुँचाई ॥३॥ बाहुड़ बात न पूछई,किआ सिर पर आई ॥ करम कमाणे लिखिआ,फल तैस लहाई ॥४॥ दुरलभ तन जग पाइकै,दिय रोड़ अजाई ॥ भजु गोबिंद श्रीचंद्र कहि,करि साच कमाई ॥५॥३८०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ साध न साकत तन क्रिया,लिय मंच स्थाना ॥ मूत्र पुरीखा हेत हुं,भुज गही सिधाना ॥१॥ परिवारै जन पेखई,हित खाना पाना ॥ तन मलीन धारण किए,पट कीमतवाना ॥२॥ निकटि खलोए बंधु जन,नहि परत पछाना ॥ कंठ रोक कफ द्रिढ़ भई,कर पग अचलाना ॥३॥ औखध रोग न छांटई,उलटो वरधाना ॥ वाक्य न भनत सपस्ट करि,जिहबा हकलाना ॥४॥ शक्ति न पासा पलटबे,भए लंमे प्राणा ॥ पछतावत श्रीचंद्र उठि,चालहि अन थाना ॥५॥३८१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। रक्त बिंदु ते निंमिआ,रतबिंदु लुभायो ।। मूल अकास न जानई,कहि द्रिढ़ जड़ लायो ।।१।। कौतुकहारा भूल करि,कौतुक बिरमायो ।। आगल बात बिसार दिय,उरझिओ प्रभु मायो ।।२।। बवरे नहि उर समझिआ,थंभा इह वायो ।। तेल निखट्टे मूड़िआ,किहँ दीप दीपायो ।।३।। आल जंजाल विसाल रचि,मरना बिसरायो ।। कुंद कली मुरझावई,रवि उदै हो आयो ।।४।। स्यामहुँ स्वेत बनाय कै,हरि पत्र पायो ।। राम नाम पढ़ श्रीचंद्र,रामहि दरसायो ।।५।।३८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। बिनु सीखै ही सीख हैं,रति त्रीअन संगा ।। जग महि गुरुकुल कहां है,सिखवंत कुढंगा ।।१।। जार चोर जूआरिए,बटपार निसंगा ।। परद्रोह कुटिल कुनीति कै,हिंसा नर अंगा ।।२।। बहुबिधि नाच नचावई,करि करि तन नंगा ।। चितहुँ मानव बूझई,अवगुण सरबंगा ।।३।। संत सिखावत रैणि दिन,उर धार उमंगा ।। राम रमहुँ वडभागीअहु,जल पावन गंगा ।।४।। मनमुख सूझ

न आवई,पड़ि रंग दुरंगा ।। समझत नाहिन श्रीचंद्र,मारग हरि चंगा ।।५।।३८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मिलहु पिआरे जिअ के,मुहि सुमति द्रिढ़ावउ ।। हरि हरि अकथ कथाइऐ,गुण अगम सिखावउ ।।१।। निसि जागण हरि कीरतन,आतम त्रिपतावउ ।। पाणी पक्खा पीस कै,सतपुरुख मनावउ ।।२।। सोग विजोगी मोहिआ,संजोग समावउ ।। दुख सागर महि बूडतो,तुलहा हरि पावउ ।।३।। पावक त्रिसना मचित हउं,सीतल जल नहावउ ।। कबहूँ पास न छाडिहउं, तुम निकटि बिठावउ ।।४।। मैं अजान मति थोरीआ,करि मया बुझावउ ।। मिलै राम श्रीचंद्र कउ, भव फेरन आवउ ।।५।।३८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। मंगलचार घणा,संतन घर माही ।। सदा सूख आनंद,हरि हरि गुण गाही ।।१।। ब्रहम पसारा पसरिआ,जेतक जग आही ।। साजन मीत सुजान गल,मेलउ करि बाही ।।२।। अबिचल थान बैठाइऐ,नहि चक्र कटाही ।। भरम भुलावा दूरि है,पेखउ इक चाही ।।३।। मन ते भेद

गवाइऐ,हरि ब्रहम सबाई ।। चितउं न बिसरै रामराइ,प्रभु अगम अथाही ।।४।। सास सास सिमिरत रहउं,हरि अकथ कथाही ।। तन फल पावै श्रीचंद्र,गोबिंद सरनाही ।।५।।३८५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। अपराधी हम भूलई,तुम बखसनहारे ।। रक्त बिंदु संभव भए,पर रहे विकारे ।।१।। कछू न कीनो करम सुभ,बड अवगुणिआरे ।। नहि गुण नहि चंगिआइआं,नहि धरम अचारे ।।२।। मनमुख संगति दिनै राति,बुरिआईआं धारे ।। कामी कपटी लंपटी,द्रोही ठग भारे ।।३।। उर दंभी भरपूर भा,लगि पापन कारे ।। वेस धरहि भल माणसी,त्रिसना के मारे ।।४।। राती संनी मारही,दिण नैण मुँदारे ।। मया धारि श्रीचंद्र पर,रखु सरणि मुरारे ।।५।।३८६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। बिखै विनोदन उरझ करि,नहिं राम सम्हारा ।। दुरगंधी लग प्रेम सिउं,मदमत्त लवारा ।।१।। साधु संग तजि दूर भे,मन मूढ गवारा ।। बाधे अवगुण गंठड़ी,सिर भार अपारा ।।२।। आल जाल जंजाल महि,फसि जनम विगारा ।। बिन अघ ओघन अपर कछु,नहिं किय संचारा ।।३।। रुचि

आवत नहि अमिअ सिउं,बिखिआ पी धारा ।। दया धरम अरु मैतरी,करि दूर विडारा ।।४।। पेखउं द्रिस्टि पसार जबि,सभ कारा कारा ।। राम बिना श्रीचंद्र चित,नहि अपर सहारा ।।५।।३८७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। राच माच जा सिउं हम लागे,ते काहूँ नहि संगे ।। बीजुलि चमत्कार खिन पल का, नैन चुँधावत अंगे ।।१।। रसकस होछे सिउं लपटाने,तजिओ सुधा रस चंगे ।। पाप विकार नितहि चित चितवत,राते बिखिआ रंगे ।।२।। पावत रहन न इह भव भीतरि,भन है लोग लफंगे ।। रहिओ न परदा निजी कुकरमन,चहुँदिसि होए नंगे ।।३।। निसिदिन चाल कुचाली चाले,रचिते ढंग कुढंगे ।। साधु संग तजि राम नाम हरि,लागै सुआन कुरंगे ।।४।। निरंकार निरवैर गुसइआं,बखस लेहु कर ढंगे ।। कारण करणा श्रीचंद्र तुम,रचना रच सरबंगे ।।५।।३८८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। प्रतिपालक अगम गुसाईआं,अवगुण न चितारे ।। अपनी सरणी राख जन,कई कोटि उधारे ।।१।। गनिका अरु अजामिल से,बहु लिए सवारे ।। पतित करम जिनि बहु घने,खिन महि कट

डारे ।।२।। बखससस ता की नहिं लखी,किहँ जीव विचारे ।। अघ ओघन खिन महि हरे,जिहँ चहित उबारे ।।३।। जपु तपु संजम धरम करम,सम द्रिस्टि न सारे ।। दास तेरे की बेनती,करि दया मुरारे ।।४।। कछू न करणी कीन हम,मूढ़ मुगध अवारे ।। ओर निहारहु आपणी,श्रीचंद्र सम्हारे ।।५।।३८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हम ते कछू न होवई,हे करते साईं ।। तूँ ही कर मिहरमती,हम तुमरी पाईं ।।१।। मन वेकारी वेड़िआ,जपु तपु न कमाई ।। अनिक जतन करि थक परे,नहि थिरत कदाई ।।२।। सारो दिन रतकार महि,निसि सोत बिताई ।। पेट न तबहूँ भरि सका,किमि तोहि धिआई ।।३।। पुत्र कलत्र कउ भरत ही,सभ आयु गवाई ।। राम नाम नहि सिमरिओ,संग साधु बिहाई ।।४।। करम धरम जपु संजमो,नहि दया वडाई ।। अवगुण जेतिक जगत के,सभ मो तन भाई ।।४।। हरि गोपाल दयानिधे, उर ओट तकाई ।। मेल लेहु श्रीचंद्र कउ,परिहर बुरिआई ।।५।।३९०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। लख चउरासीह जोनि महि,भ्रम भ्रम आए ।। जहँ जहँ ठौरहि पग धरा,किय पाप

सबाए ।।१।। सिंघ साप तन धार के,बहु जंतु हताए ।। मीन भए मीने भखी,बगुला डडु खाए ।।२।। चटिका चीटी खावई,चीटी मासाए ।। बिन ही कारण मरकटे,जीवन कउ घाए ।।३।। गनति न आवति कहूँ बिधि,अघ जेतक थाए ।। कागद कोटि न अपड़ै,लेखा लिखवाए ।।४।। मयानिधे निज मया धारि,राखहु सरणाए ।। अवगुणिआरो श्रीचंद्र,प्रभु लाज रखाए ।।५।।३९१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। हम ते कछू न होइ है,हरि प्रभु वडिआई ।। मन वेकारी वेड़िया,नित पाप कमाई ।।१।। काढ खड़ग सिर पर खड़ा,कलि घोर महाई ।। अलप आयु मति हीणिआ,किछु पेश न जाई ।।२।। माया जाल पसारिआ,चोगा छिड़काई ।। पंखी मानस फाथिआ,किआ फटकन भाई ।।३।। मौत बिना अब सामणे,कछु द्रिस्टि न आई ।। बिन करतार न सूझई,जोऊ होहि सहाई ।।४।। आसा सभ ही लाहि कै,मन ढेरी ढाई ।। नाराइण श्रीचंद्र जन,तुमरी सरणाई ।।५।।३९२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग काफी ।। तुमरी ओट गोपाल राइ,तुम जीउ पराना ।। तुमरा दित्ता पहिर है,तुमरा ही खाना

।।१।। जिथै जाइऐ जगत मै,तू है सभ थाना ।। तुझ ते बाहरि किछु नही,हरि सरब निधाना ।।२।। तुध भावै ता बखस लेह,अघ ओघ खजाना ।। जपु तपु संजम कछू नाहि,नहि पाठ पुराना ।।३।। तीरथ मज्जन नहि किओ,नहिं समझसि गिआना ।। ढूँढि सरब बिधि मनहि कउ,नहि पुन्य लखाना ।।४।। बिरध भयो तन खीण अति,खिन पलहि सिधाना ।। राम नाम बिना श्रीचंद्र,कत नही टिकाना ।।५।।३९३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। हरि हरि नाम आराधिऐ,सगरी मल धोई ।। हरि कीरति बिन कहूँ बिधि,नहि चानण होई ।।१।। सरब निधान हरि कीरतन,पावै नर कोई ।। मस्तक जिस के भाग है,सत संग समोई ।।२।। तिस ही का मुख उज्जला,जापै तिहुँ लोई ।। कमल प्रगास गुबिंद रवि,भवरे सिख जोई ।।३।। मारग मुक्ता गुरमुखी,अटकाव गयोई ।। दुबिधा दूजा भाउ तजि,इक चित्त अलोई ।।४।। पैधा हरि दरगाह का,सुर जै जै गोई ।। प्रवाना हरि श्रीचंद्र,हरि हरि पहि ढोई ।।५।।३९४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग काफी** ।। जिनि प्रभु नाम अराधिआ,दरगह परवाना ।। तीन लोक चौदह भुवन,तिहँ वजा

निसाना ॥१॥ ब्रहमा बिसनू रुद्र ससी,रवि इंद्र हिराना ॥ गंधरब किंनर यख्य गन,सुर असुरन माना ॥२॥ हाहा हूहू तुंबरू,नारद निरताना ॥ सारद दुरगा इंदिरा,दरसत धर पाना ॥३॥ कउन विस्व महि ऐस है,जो नाहि झुकाना ॥ पातसाहा पातसाह सो,जिहँ राम हिताना ॥४॥ राम सिंघासन राजिआ,अबिचल हुकमाना ॥ राम नाम इक श्रीचंद्र,जिहँ तुल्य न आना ॥५॥३९५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ आवउ संत पिआरिओ,हरि कथा सुनावहु ॥ अंतरि अगनि प्रचंड चंड,हरि जल विसमावहु ॥१॥ कपट कपाटै खोल कै,हरि रूप लखावहु ॥ जनम जनम का वीछुड़ा,हरि संग मिलावहु ॥२॥ अंधेरे ते काढ कै,चानण मग पावहु ॥ गई बहोड़ो निधि हरि,रंकी बिहरावहु ॥३॥ बंद छुड़ावउ दास की,दुखीआ दुख हावहु ॥ भवजल निधि महि बूडतो,गहि भुज निकसावहु ॥४॥ मिहर तुमारी होइ है,हरि दरस समावहु ॥ गुरु अविनासी श्रीचंद्र,अबिनास करावहु ॥५॥३९६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ पंथ तुहारा पेखहउं,कब प्रीतम आवहि ॥ चोटा खावत बिकल अति,गल मेलि

हसावहि ॥१॥ मोह अरु सोग विजोग गति,संजोग समावहि ॥ आपहि आप अपान रति,नहि आप लखावहि ॥२॥ अचरज कौतुक देख करि,अचरज ह्वै जावहि ॥ ऐसी होवहि मनहि महि,अन कतहि न धावहि ॥३॥ मन भावंदा मीत हरि,निज कंठ लगावहि ॥ विछुड़ जोनि न धाव हैं,हरि हरि गुन गावहि ॥४॥ आन न जिहँ थल बस रहिओ,तिहँ वासा पावहि ॥ नाराइण जपु श्रीचंद्र,मन तन बिगसावहि ॥५॥३९७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग काफी ॥ जिहँ मन नाम धिआया,तिहँ हउ बलिहारी ॥ सात सुमद्र समानिआ,दुबिधा उर मारी ॥१॥ कीनी सत्गुरु चाकरी,तन मन धन वारी ॥ राम नाम जपु दिनसु राति,पंच दूत विडारी ॥२॥ आतम राम प्रगासिआ,मन मोह निवारी ॥ जीवन मुकत सुहावना,भव भार उतारी ॥ सभो करज उतारिआ,अनतोट भंडारी ॥ धंधा सभसि उलाहिअन,हरि नाम विहारी ॥४॥ सच पातसाही अमर सच,सच रिद संचारी ॥ सच्चो सच्चा श्रीचंद्र,सच्चै वापारी ॥५॥३९८॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग काफी || संत जना की धूरि ले,निज मस्तक लाई || आतम अनुभव पाइआ,मन मोह मिटाई ||१|| निहचल सूख थान लहि,बिनसी अन धाई || अवर न दूजा कोऊ है,सगरे गुरु भाई ||२|| वरणास्त्रम महि भेदि कर,हरि रचन रचाई || मनमुख संगत झूठ लहि,गुरुमख सच पाई ||३|| चितवत मिथिआ चितवनी,सभ जात गवाई || सच्च राम सच्च साधु संग,साची लिव लाई ||४|| सच्च मंत्र गुरु रगड़िऐ,मस्तक तिलकाई || आंच न लागहि श्रीचंद्र,सच्च अंतु सखाई ||५||३९९||

ओम् पारब्रहमणे नम:

|| राग काफी || सेवहु सत्गुरु आपणा,निसि दिनस सवारे || एक सहाई राम नाम,जिअ लेहु समारे ||१|| नीचे ते ऊचा करत,नहि लागति बारे || वरण जाति नहि बूझिऐ,साचै दरबारे ||२|| जिनि हरि प्रीतम धिआया,हरि तिसहि पिआरे || हट्ट सराफी परखिऐ,हेमे नहि कारे ||३|| सत्गुरु मालक दिलां दा,दे हाक पुकारे || जपिअहु गुरमुख राम नाम,सद संग तिहारे ||४| मन निरमल मुकरहि लहहि,हरि रूप निहारे || हीरे हीरा श्रीचंद्र,बेधे हरि दुआरे ||५||४००||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।।

सत्गुरु सेवे सदा सुख,दूख न कतहूँ थांइ ।। राम नाम उपदेसिऐ,अंदरि सच्च समाइ ।।१।। एको साहिब मन वसाइ ।। सफल जनम जग आइआ,बिनसै दूजा भाइ ।।१।। रहाउ ।। सत्गुरु सेती चित्त लाइ,पाया नाम निधान ।। लाहा हरि धन खट्टिआ,हऊमै गया गुमान ।।२।। साचा साहिब रवि रहिआ,चहुँ जुग तीनो लोग ।। आवै जाइ न साच थिति,जनम मरन हरि सोग ।।३।। जो जन राते नाम सिउं,हउ तिन बलिहारै जाउं ।। सदा सुहेले श्रीचंद्र,दरगह निरमल थाउं ।।४।।१।

ओम् पारब्रह्मणे नम:

|| राग धनासरी || हउं बलिहारी तिनहुँ कै,जिनि संग जपिऐ नाउं || राम नाम गुण गाईअहि, अनुदिन सच्च समाउ ||१|| मन रे राम नाम जपु साच || झूठी दुनीआं विनसनी,राम नाम बिन काच ||१|| रहाउ || कूड़ पसारा मोह का,बिनस जाइ दुख रोइ || राम नाम सद सच्च है,दरगह बेली जोइ ||२|| भीड़ी गली अंधेरीऐ,दीपक बल है राम || सुख सउ पंध कटाईऐ,चानण महिल तमाम ||३|| साधू की मन ओट गहु,राम नाम लिव लाइ || मन बांछत श्रीचंद्र लहि,पति सिउं सच समाइ ||४||२||

ओम् पारब्रह्मणे नम:

|| राग धनासरी || झूठी कारे लग्गिआं,सुख न पाईऐ मूल || फिर पछतावन ना परै,अब ही लखीऐ भूल ||१|| प्राणी हरि हरि नाम सम्हाल || गुरु पूरे ते पाइऐ,सदही निबहै नाल ||१|| रहाउ || जित्थै लेखा मंगिऐ,चावल रत्ती तोल || तित्थै संगी राम नाम,बखसावै ह्वै कोल ||२|| औखी घड़ी जु आइ है,करता राम सहाइ || भाई बंधु कलत्र पुत्त,रहि जावै मुंह बाइ ||३|| संता की सिख रिदै धरि,राम रमहु वडभाग || सुख ही सुख श्रीचंद्र लहि,मूल न लागै दाग ||४||३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || रत्ते रंग नाराइणै,पारब्रहम निरंकार || जग महि आए धरम हित,जीवन करत उधार ||१|| केवल राम नाम आधार || आप मुकत संगी तराहि,बोहिथ सिंधु मझार ||१|| रहाउ || आसा दूजी तिआग कै,चरन कमल रंग लाइ || रसना उचरत राम नाम,हरि कीरति गुण गाइ ||२|| आधि विआधि उपाधि गति,तीनो ताप निवार || सांत सहिज निधि परविसै,राम नाम मन सार ||३|| जगत पिता प्रतिपालई,सरब देस सभ थान || चिंत बिनासी श्रीचंद्र,करते पेखि निधान ||४||४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || गुण गावहु गोबिंद के,मन तन देह सवार || हरि हरि नाम जपंत सद,सच्चा इहु वापार ||१|| अवर न मन महि दूजी आस || हरि हरि नाम धिआइऐ,इक मन सास गिरास ||१|| रहाउ || संत जना संग मिल रहहि,नाम बसै मन आइ || हउमै मोह विसारिऐ,दुख बिखिआ जल जाइ ||२|| अम्रित नाम पदारथो,सत्गुरु ते सिख लेइ || अनुदिनु रिदै सम्हाल हरि,सांत पई उर

तेइ ॥३॥ क्रोध लोभ सभ तजि गए,चोर पहिरूए आग ॥ मन सुत्ता श्रीचंद्र का,संत संग उठि जाग ॥४॥५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ संत जना मिलि पाईऐ,हरि हरि अम्रित नाम ॥ सदा सुख हरि मन बसै, अमरापद बिस्राम ॥१॥ जपु मन राम नाम सुख सार ॥ जनम पदारथ जीतिऐ,नाहिन दरगह हार ॥१॥ रहाउ ॥ परमानंद निधान रस,राम नाम गुण गाइ ॥ आल जंजाल विकार तजि, निरमल होवहि काइ ॥२॥ नउनिधि अठदस सिद्धि सभ,हरि कै चरन मझार ॥ नउतन नाम गुबिंद के,सिमिरत रसना चार ॥३॥ प्रेम पदारथ सो लहै,जिस मन संतन प्रीति ॥ गगन मंडल महि श्रीचंद्र, वासा नाम सु चीति ॥४॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ जोगी रंग सु जोग का,भोगी भोग सु प्रान ॥ गुरुमुख होवै सो लखै,हरि हरि नाम

निधान ॥१॥ संत जना की अम्रित बाणी ॥ राम जपत सुख सहिज समावै,जनम मरन गति दूरि विहाणी ॥१॥ रहाउ ॥ जल थल महिअल पूरिआ,साहिब सच्चा सोइ ॥ जिनि सेविआ प्रभु आपणा, तिस जन दूख न होइ ॥२॥ गुरु गोबिंद सालाहिऐ,उपजै ब्रहम गिआन ॥ काम क्रोध मोह बिनस है, हउं चूकै अभिमान ॥३॥ जिनि जिनि नाम धिआइआ,तिनि कै सभ कोइ ॥ तिहुँ कालन की श्रीचंद्र, अंतर प्रगटी लोइ ॥४॥७॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ आवहु संत पिआरिओ,हरि हरि गुण रावेहिं ॥ सच्चा साहिब सेविऐ,मन निरमल विगसेहिं ॥१॥ संतां संगति गिआन प्रगास ॥ दुरमति हउमै पाप खय,प्रेम पदारथ भास ॥१॥ रहाउ ॥ चरन धूड़ि सच साधु की,हरि हरि नाम उजेर ॥ मस्तक होवै लिखिआ,पावै प्राणी फेर ॥२॥ जनम जनम का विछुड़िआ,साधू संग मिलाइ ॥ आतम भीतरि प्रगट ह्वै,हरि हरि हरि हरि राइ ॥३॥ चाहहुँ मुकति सो पाइऐ,संत संग कर वास ॥ सरब पदारथ श्रीचंद्र,संतन चरन निवास ॥४॥८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || ओट गही हरि नाम की,संतां की सिख लेइ || सद सेवउ गुरु आपणा,तन मन आगै देइ ||१|| दुरमति दुबिधा दई वंञाइ || उतर आकासों आया,साहिब सच्चा राइ ||१|| रहाउ || थान सुहावणा सोहणा,जित प्रीतम का वास || खेम कलिआण तित दिन भा,कमल होआ परगास ||२|| चहुँदिसि ठंडी मारुतहि,परमानंद विथार || मन की अक्खीं वेखिआ,हरि प्रीतम निरंकार ||३|| तख्त सच्चा पातसाह थिर,करता सदा निआउं || हुकम चलावै श्रीचंद्र,दे दे आपणा नाउं ||४||६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || हरि गोपाल नाराइणै,डेरा पाया आइ || दहदिसि भी हरिआवली,सूके तरु लहराइ ||१|| गावहु गावहु अम्रित बाणी || परमानंद समाधि साध,हरि हरि नाम समाणी ||१|| रहाउ || दरसन डिठा पारब्रहम,नैन सिरानै सीर || मन महि आया सहिज रस,सकल बिलानी पीर ||२|| दहदिसि चौदह भुवन महिं,एका जोति मुरार || पसु पंखी वण त्रिण सकल,एकंकार पुकार

।।३।। अनहद बाणी ऊपजी,सुंन समाधि समाइ ।। श्रीचंद्र मन ऊजला,पाया प्रीतम राइ ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। राम नाम रंग रतिआ,सगल मेटिआ भार ।। नित सुख सच्चा सेविआ,तजि हउमै अहंकार ।।१।। धुनि अनहद हरि नाम ।। सुणि त्रिपति अघाईऐ,निहचल पाइऐ ठाम ।।१।। रहाउ ।। जिनि जिनि हरि हरि धिआया,भव जलनिधि गोपाद ।। खिन महि पार परानिआ,मन साचा विसमाद ।।२।। हरि प्रीतम सालाहि उर,सहिज अनंद विराग ।। भरिआ पिआला प्रेम रस, अचरज ता का राग ।।३।। गई उपाधि विआधि सभ,साचै सुख भरपूर ।। नाम जपत श्रीचंद्र जन,ठाढै प्रभू हजूर ।।४।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। नाम अराधत सदा सुख,मन तन सांत सरीर ।। साधु संग हरि गुण

रवहि,बिनसी दुतिआ पीर ॥१॥ हरि हरि नाम जपत आनंद ॥ सदा सुहेले सहिज रस,निवरे हउमै फंद ॥१॥ रहाउ ॥ रत्ते साचे नाम सिउं,दुख बिखिआ परिहार ॥ आठ पहिर हरि सिमरना, साचा एहु अधार ॥२॥ त्रिसना भूख न लागई,जपु जपु नाम गुपाल ॥ माया बंधन काटिआ, नदरी नदरि निहाल ॥३॥ नेड़ै दिस्सै पारब्रहम,परमेस्वर भगवान ॥ सभ घट पूरन श्रीचंद्र,जल थल एक समान ॥४॥१२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ मन की मैल उतारीअहि,साध संग लिव लाइ ॥ जनम पदारथ सफल होइ, गिआन पदारथ पाइ ॥१॥ भाई रे,हरि गुण सदा विचार ॥ सिमरत सिमरत चानणा,पाइऐ गुरु मति सार ॥१॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुख काटीऐ,प्रेम पदारथ संग ॥ हउमै चूकै मोहड़ा,राम नाम इक रंग ॥२॥ गुरुमुख होवै रस लहहि,हरि गुण रिदै समार ॥ अगिआनहि प्रतिपाल हरि,प्रभु पेखे निरधार ॥३॥ धनवंते से जानिऐ,राम नाम चित्त लीन ॥ मिथिआ माया श्रीचंद्र,संतन उर ते छीन ॥४॥१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || जग मिथिआ मत भरमिऐ,दिन दस खेल पसार || कछु चालै कछु चालसहि, अपनी अपनी वार ||१|| थिर नाही कोऊ संसार || जो आइआ सो जावसी,कौतुक कूड़ अपार ||१|| रहाउ || जिनि सिउं चीत लगाइआ,राति दिनसु इक रंग || तिनही कउ तजि चालणा,परिहर कापर नंग ||२|| जे कछु लै कै आइआ,प्रानी इहु जग माहिं || तउ ही कछु लै जाइगा,समझत उर महि नाहिं ||३|| साधु संगति कै वारनै,जिनहि द्रिढ़ाया नाम || राम बिना श्रीचंद्र सभ,दुख दायक परिनाम ||४||१४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || कूड़ै रंगनि रंगिऐ,मन तन फीका होइ || पछुतावत उठि चालसी,मनमुख दरगह रोइ ||१|| गुरमुख राम नाम गुण गाइ || पति परमेस्वर पाईऐ,दरगह पैधा जाइ ||१|| रहाउ || कूड़ै सभे साक हहि,सुत भाई मित नारि || इन की संगति लगिआं,नित नित होहि

खुआर ।।२।। भार न कोइ वंडावसी,तित साचे दरबार ।। पाप चढ़ावहि बहुबिधी,मनमुख नर पुचकार ।।३।। चित चेतहु हरि राम नाम,सुख सिउं आगै जाइ ।। अबिचल वासहि श्रीचंद्र,जनम मरण नहि पाइ ।।४।।१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। संता संगति पाइऐ,राम नाम परगास ।। उलट कमल परगासिऐ,तूटै माया फास ।।१।। दुख बिखिआ रस माहि ।। खिन पल सुख कै कारणै,जनम जनम पछुताहि ।।१।। रहाउ ।। चमत्कार तड़िता बिखै,किन लिए महिल उसार ।। कोठे छत्ती दौड़ता,नहिं गिरिओ सिर भार ।।२।। मुट्ठी भीतरि किहँ धरी,सूरज किरण संभाल ।। पातिसाह को जगत महि,जाहि न विआपिओ काल ।।३।। मूरख मुगध अयाणिआ,साच पदारथ नाम ।। साधु संगि श्रीचंद्र लहि,राम नाम जिअ काम ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। वडभागी ते संत जन,जिनि प्रभु नाम धिआया ।। हरि दरगह मुख ऊजला, तिआगी परिहर माया ।।१।। राम राम जपिआ दिन राति ।। बरसाने हरिदुआर ते,पाई अम्रित दाति ।।१।। रहाउ ।। क्रिपा कटाख्य विलोकते,जन रिद नाम समाइ ।। माया का भ्रम दूर करि, गिआन पदारथ दाइ ।।२।। अंतरि पटल विनास कै,चानण किअ तिहुँ लोइ ।। चिंता सगल विसारीआ,करता करे सु होइ ।।३।। सच नाम उर ऊपजै,सांत सहिज निरबान ।। गोबिंद नामहि श्रीचंद्र,सदा खेम कलिआन ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। चिंता घूमनघेरड़ी,भव जलनिधि माही ।। मन गोते बहु खावई,को गहै न बाही ।।१।। सत्गुरु दया करहु मम साईं ।। मै अनाथ गरीब निमाणा,अन आसर को नाहीं ।।१।। रहाउ ।। लहिरी अधिक पछाड़िआ,बल सभ निखुटाई ।। कूक पुकार तब ही करउ,जउ कहूँ

लखाई ।।२।। नेड़ा कोउ दीसत नहि,जल ही जल माही ।। मरनो ही सनमुख लखउं,अन सूझ न पाही ।।३।। दीजै जीवन दान कउ,नभ मारग आही ।। राम नाम कहि श्रीचंद्र,गति अंतु लहाही ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। अवर ओट नहिं सूझई,कलि घोर अंधारे ।। करम धरम वरणास्त्रमी,को कार न सारे ।।१।। एको राम नाम है सार ।। जो जो जपै तिस की गति होवै,भवनिधि उतरे पार ।।१।। रहाउ ।। रुति होइ बीज बीजिऐ,फल पावै अंन खेत ।। बिन रुताँ कछु होइ नहि,लहहि स्रम बिन हेत ।।२।। चक्की कलीं चलाइआ,पीसै करम सबाइ ।। तन धर भीतरि जमत नहि,बहुरि बहुरि पछुताइ ।।३।। बिन पाहे कोरे बसन,रंग न चढ़ई कोइ ।। सत्गुरु सेवे श्रीचंद्र,राम राम मुख गोइ ।।४।।१९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। दंभ पसारा चहुँदिसि,कलिजुग माया हेत ।। तन धरमी मन पाप रति,कूंज

चुगति नित खेत ।।१।। इन बिधि भगति न होइ ।। तिलक जनेऊ धोतीआं,नख जट वेस किओइ ।।१।। रहाउ ।। लंमी दाढ़ी जाल रचि,फासत लोग सिकार ।। सदाव्रत देवालिआं,वेदैं पाठ विकार ।।२।। बाहर जती सदावंदे,अंदरि नारी प्रीत ।। भगति करत निसि जागई,ऊचै गावत गीत ।।३।। ठग्गण हितु उपदेसते,मज्जन कीजै कुंड ।। राम नाम बिन श्रीचंद्र,रंगे रंग चुलुंभ ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। काजी मुल्लां ऐकठे,ठाट जमाती संग ।। लबां कटाइआं मुंह सिउं,लिंग कटाइआ अंग ।।१।। चढ़हि मसीति मुनारे धाइ ।। ऊची बांग पुकारई,जुंमै इकठ कराइ ।।१।। रहाउ ।। मुसलिम जाइ बहिसत महि,अगनि जलावै हिंदु ।। मूरख मन डहकावई,म्रितक तन कहि जिंदु ।।२।। काबे हज्ज परवान ह्वै,जमजम नीर पिवाइ ।। नाम खुदाइ भूलिआ,असवद संग चुमाइ ।।३।। पाथर मारे खोलिआं,मन महि रहिआ सैतान ।। नाम विहूणे श्रीचंद्र,लहहिं न कहूँ अमान ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || अंधुले भरम भुलाणिआं,नाम न पाया चीत || कूकै मुल्लां भुक्खड़ा,घर मेरा ही मसीत ||१|| दिल महि नहीं यकीन खुदाइ || उदर भरन हित जगत महि,पढ़ि कुरान डहिकाइ ||१|| रहाउ || जे पैगंबर अब नहीं,भरहि उगाही कौण || काजी ठग घर पैसिआ,फास मुरीदा धौण ||२|| ग्रिह खुदाइ को जंदरा,गया रसूल लगाइ || सौंपी कुंजी किसै नाहि,उमत्ति दोजख जाइ ||३|| घत भुलेखा मूढ़िआं,पंज नमाजी ठाट || बिन अल्लह की बंदगी,श्रीचंद्र घट घाट ||४||२२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || वेद पुरान कुरान मिलि,ऊची कहिओ पुकार || कछू काज नहि अवर सभ,राम नाम सच सार ||१|| दाता अलह राम नाम || जग महि कोऊ न दीसई,भेखीं लहि पहिनाम ||१|| रहाउ || ऊची कुल सैयद कही,ब्रहमण मुख भगवान || गौस पीर वैरागीअहि,संनिआसहि परमान ||२|| जोगी ब्रहमचारी जती,तपी उदासी घोर || हरि की भगति विहून सभ,विचरत माया चोर ||३||

भेख धरै नहिं पाइऐ,करता पुरुख मुरारि ।। बिना राम श्रीचंद्र जग,मरि मरि होइ खुआरि ।।४।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। छिल लाहू काबे थिरै,दुआरहि बंद कराइ ।। एक घड़ी महि हाजीआं,लारा बहिशत लगाइ ।।१।। अब लौं काबा गया बहिशत ।। तुम कउ कैस पुजावही,नाकस खुदा शिकस्त ।।१।। रहाउ ।। दिल साबत ग्रिह अल्लह का,पैश पैगंबर ताक ।। खुश्बू बायद बंदगी,खुस निस्शत ओताक ।।२।। कबहुँ रसूल न आइआ,बुरगू कबरों देइ ।। नाकश अकल न जाणई,कातल अलह हेइ ।।३।। जुहद मुनासब दिल दरूँ,साहिब दिले कुनीद ।। साहिब दिल दर दीदना,श्रीचंद्र तागीद ।।४।।२४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। धरनि पुकारी रोइ कै,हरि प्रभु के दरबार ।। पारब्रहम करता पुरुख,कंन धरि सुनहु गुहार ।।१।। निघरत जाति गरीब पतार ।। मो ते चुकिओ न जावई,अघ ओघन का भार ।।१।।

रहाउ ।। मंदर रचै सुहावणै,देवन मूरति धार ।। चरनाम्रित भुंचावही,वेस पावनी चार ।।२।। कूड़ै जाल पसारिआ,नैवेदहि आहार ।। नीर गंध दधि दूध घ्रित,चंदन कापर सार ।।३।। भोग रुचिर पूजा रते,पाहन रिदै बिचार ।। दंभ विगूते श्रीचंद्र,ले बूडे संसार ।।४।।२५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सुणु बेनंती मेरीआ,हरि प्रभु नेड़े होहि ।। कीजै आपनि ही मया,उर भीतरि रख छोहि ।।१।। कोऊ साध मिलाइ ।। क्रिपा करि कै जो रिदै,देवै राम बसाइ ।।१।। रहाउ ।। जिहँ भेटत दुरमति हिरै,सुद्ध बुद्धि प्रगटाइ ।। ध्रोह मोह कालुख लहै,निरमल होवै काइ ।।२।। सत संतोख समाइऐ,जपु तपु लखीअहि नाल ।। राम नाम रंग रत्तिआ,नहि पोहै जमकाल ।।३।। मुकत पदारथ पाइऐ,सिमरत हरि के चरण ।। सफल जनम जग श्रीचंद्र,राम राम मन धरण ।।४।।२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। हरि हरि नाम जपत जन साधू,कालहि मार बिदारै ।। मुकत दुआरा हरि हरि

रस महि,हउमै अंक निवारै ॥१॥ राम राम लागी लिवतार ॥ उनमत्त भए राम रंग राते,चढ़े अपार खुमार ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सुहेले सभनी थाईं,सरबै देसन माही ॥ ओट गही पारब्रहम सुआमी,बहु लंबी तन बाही ॥२॥ अखुट खजाना संती पाइआ,वरसावत जन हेरे ॥ खावत खरचत भुंचावत है,नैन न कबहूँ फेरे ॥३॥ राम नाम कि गति जिहँ जानी,पायो सरब निधाना ॥ जनम जनम का श्रीचंद्र सोया,भुज गहि टुंब उठाना ॥४॥२७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ बिखवत इह संसार पदारथ,पेखत ह्वै मन काला ॥ जो नर भुंचि भुंचि नहि थाके, तिनि केरा कया हाला ॥१॥ प्रभ जू,बखसहु दास ॥ क्रिपा कटाख्य करहु अवलोकन,काटहु माया फास ॥१॥ रहाउ ॥ रवि प्रतिबिंब मुकरि द्रिग हेरै,अंध भवत जन तेई ॥ जिनि जिनि कंचन थैली पेखी,नैनहीन भे सेई ॥२॥ मात पिता सुत साजन हूँ ते,धन लहि करत किनारा ॥ संग न काहूँ चालिओ दरगह,धरम करम दिअ हारा ॥३॥ ध्रिग ध्रिग खाया पीआ भोगा,ध्रिग ध्रिग अंग चढ़ाया ॥

राम नाम तजि श्रीचंद्र नर,अहिला जनम गवाया ॥४॥२८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ लाख करोर जोरि स्रम कीना,अरब खरब लौ धायो ॥ देस विदेस गयो तजि घर वर,सागर सात अथाहयो ॥१॥ त्रिसना अधिक अधिक अधिकायो ॥ गयो अकास पेख दिग मंडल, दरब गंठि करि लिआयो ॥१॥ रहाउ ॥ करि चोरी ठगी बुरिआई,बटपारी जिअ घायो ॥ धन धरती महि गडहि दबायो,चाहन अनत सिधायो ॥२॥ गगन कुंभ कबि नीर भरो है,म्रिगत्रिसना के थायो ॥ पर ते परे परे पर पर ते,थाह न किनहूँ पायो ॥३॥ भोग भोग कामिनि नहि त्रिपते,बाद गवाई कायो ॥ साधु संगि श्रीचंद्र भजहु हरि,नित्त पदारथ आयो ॥४॥२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ दुरलभ मानुख जनम है,हरि भजि ले भाई ॥ लख चउरासीह जोनि महि,मिलि है

वडिआई ॥१॥ दर गोबिंद का अंधे आया ॥ भाग बुरे सिर खुरकन लागा,आगै आगै धाया ॥१॥ रहाउ ॥ पाइ गेड़ फिरि कोटि जुगन लौं,सिर धुनि धुनि पछुताइ ॥ हरि हरि नाम न जापई,मरि जनमै दुख पाइ ॥२॥ पाहन योनि कठोर तन,बिन परलय नहिं अंतु ॥ काक सरप मारे बिना,कबहूँ नाहि मरंत ॥३॥ संतन कहिओ पुकार कै,अब भजु नाम मुरार ॥ राम नाम बिन श्रीचंद्र,बूडहि काली धार ॥४॥३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ सत्गुरु सेवहि आपणा,से वडभागी माइ ॥ जनम मरन गति नास भइ, निहचल पाई थाइ ॥१॥ रामहि राम नाम गुन गाइ ॥ अंतरि गिआन चराग ते,तम अगिआन नसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सेवा साधू पुरुख की,दुरमति मैल हरंत ॥ अठसठ तीरथ पुन्य फल,संतन चरन बसंत ॥२॥ पूरब होवै लिखिआ,मस्तक उत्तम भाग ॥ साधु संग तबि भेटीऐ,जागै उर वैराग ॥३॥ राम नाम हिरदै बसै,धुनि उपजै मन मोहि ॥ हरि मेले श्रीचंद्र चित,बिनसै माया धोहि ॥४॥३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सोग विजोग सूख अरु दूखा,माया मोह अपार ।। काम क्रोध पुनि लोभ मोह वसि, मन महि थित अहंकार ।।१।। माया केरे रूप अपार ।। हिरदै भीतरि हरि प्रभु बैठा,दहदिसि करि अंधिआर ।।१।। रहाउ ।। कागद केरी हस्तिनी,मूरख गज न समार ।। कुंडी मुख महि निगलई, मीना मास विचार ।।२।। लागि वासना कमल महिं,भवरा मरण विसार ।। काल न सूझत हरिन मन, नाद रंगि मति मार ।।३।। आपन आप भुलाइ कै,पर रंग गहित गवार ।। पारब्रहम श्रीचंद्र इह, उर ते देत विडार ।।४।।३२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सगली स्रिस्टि नासवंत,अवियक्ता अविनास ।। माया अरु पारब्रहम का, एता अंतर भास ।।१।। मन महिं अनिक प्रकार तरंग ।। मूरति उर महि पेखिअत,सुंदर रूप सुरंग ।।१।। रहाउ ।। आपन आप उपाइऐ,आकासी वर फूल ।। धनुस चढ़ायो ससे स्रिंग,बांझ

सुतहि गहि तूल ।।२।। परबत खायो चीटीअहि,अजहूँ भुखी धाइ ।। सीत विआपिओ कूरमहि, पावक चंड तपाइ ।।३।। अनहोंदा होंदा भया,होंदा भाजा दूरि ।। परमेस्वर तजि श्रीचंद्र,फिरहै छानत धूरि ।।४।।३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। वाक जाल माया महा,निरमल रसना चारु ।। सारद रसवत वाइऐ,हितु मोहन संसारु ।।१।। माया रूप सु बहुत प्रकार ।। कई कोटि गिण हारीए,पाइऐ नाहिन पार ।।१।। रहाउ ।। रिखिराजन जीवन लखा,लख चउरासी योनि ।। चारहुँ खाणी बाणीआ,त्रयीदेवा रचि भौन ।।२।। कुंडल ते कुंडल परै,गोरख धंधै माहि ।। उरझ उरझ कै पचि मूआ,सुलझा कबहूँ नाहि ।।३।। जुग चारे वेदन पढ़हि,अनिक बिधिन मत सार ।। भरम बिना श्रीचंद्र उर,पूरन ब्रहम बिचार ।।४।।३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। जनम न जानहि आपणा,मरणै नाहिन सूझ ।। जब ही दीनन कछु लहहि,तब

कछु पावहि बूझ ॥१॥ संत कथत एही वखिआन ॥ अगिआनी नर मूढ़ मति,जनम मरन लहि गिआन ॥१॥ रहाउ ॥ जीउ दिआ जिहँ पारब्रहम,सार करेसी सोइ ॥ को भूखे त्रिपताव है,जिहँ ग्रिह अंन न होइ ॥२॥ रचि राखी प्रारब्ध तिहँ,प्रथमे बहुरि सरीर ॥ निखुटी रासी प्राण जुत,कोइ न बन्है धीर ॥३॥ चलित पछानहु रिदै महि,राम नाम बिन तोल ॥ भजि गोबिंद श्रीचंद्र मन,लहिऐ पूरन मोल ॥४॥३५॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ एकंकार आराध मन,सत्गुरु चरनी लाग ॥ निरमल मति विगासई,अंतरि गिआन चराग ॥१॥ गुरु पूरे की पउ सरणाई ॥ अगिआन अंधेरा दूरि करेसी,वथु अमोल लखाई ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि के मन महि भउ नहीं,भगति करहि किमि सोइ ॥ बत्ती दीपक तेल अगि,सामग्री ते लोइ ॥२॥ पूँजी साच सम्हाल कै,लाहा लै परथाइ ॥ बिनु रासी वापारीआ,द्रिग ताकै मुंह बाइ ॥३॥ गुरुमुख सच्च विहाझिआ,राम नाम ले पाल ॥ उरि परमानंद श्रीचंद्र,नदरी नदरि निहाल ॥४॥३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। थिर रहिणा तो है नहीं,जे जीवहि जुग कोटि ।। परमेस्वर ते भुलिआ,सिर सहिहै जम चोटि ।।१।। जलते पेख लेहु शमशान ।। मंडप महिलीं तिआग कै,एही करम निदान ।।१।। रहाउ ।। खेहू खेह मिलाइआ,गोर चिता दुइ राह ।। लेखा सभना के सिरै,पेखहु मन अवगाह ।।२।। जल महि धरनी विचरती,उर महि पावक धार ।। पवना जाइ अकास को,कोइ न साकसि टार ।।३।। राव रंक पातसाह कउ,मारग चालण एहु ।। नाम बिहूणे श्रीचंद्र,पिखिअत ऊचे थेहु ।।४।।३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। खाइ रसाइण अनिक बिधि,भोगै नारि कुमारि ।। रहिणा नाही एतु जग,एहि निसचय जिअ धारि ।।१।। प्राणी राम नाम चित सार ।। दरगह अंदरि जाइ कै,पड़ै न करनि पुकार ।।१।। रहाउ ।। जिहँ प्रभु उदर लगाइआ,सोई देइ अधार ।। जीवन भी तिस हथ वसि,चिंता चित विकार ।।२।। मानुख गनत न आवई,केते दाणै खाइ ।। किहँ जनमा किहँ पलेगो,कित्थै जाइ

समाइ ॥३॥ संजोग विजोग अरु सूख दूख,प्रभु धुरि सों करि दीन ॥ हरि वडिआई श्रीचंद्र,मानव सकत न चीन ॥४॥३८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग धनासरी** ॥ सच्च लहिआ सचिआरीआं,सच्चे सिउं करि मेल ॥ सच्चे ही वडिआईआ,सच्चो सच्चा खेल ॥१॥ संता संगति गुरुमुख पाइ ॥ सच्चा सौदा राम नाम,लाहा अगम अमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनीं सच्च विहाझिआ,पूरे सेई लोग ॥ अनुदिन सदा अनंद रहहि,कबहुँ न विआपै सोग ॥२॥ भाउ भगति गोपाल की,रत्ते सदा निहाल ॥ बिखिआ पोह न सकई,सच्चा नाम सम्हाल ॥ सत्गुरु ते सच पाइऐ,तजि कूड़ा अभिमान ॥ सच्ची संगति बैसणा,सच्ची पति परवान ॥३॥ सच्चे जेडु न पुजई,नउ खंडी तिहुँ लोइ ॥ सच्चो सच्चे श्रीचंद्र,सच्चो सच्ची सोइ ॥४॥३९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग धनासरी** ॥ कूड़ी मती मनमुखी,आपणि सुआइ मिलंत ॥ कूड़ी वडिआई करन हितु,मोहन

जीअ जंत ॥१॥ कूड़ै गंढण रहहिं गंढाइ ॥ मुख मिठे परचाइंदै,कूड़ पदारथ भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि अगनि न बुझई,त्रिसना लहि असमान ॥ कूड़े लालच लगिआं,कूड़ दिवावहि मान ॥२॥ संचि कूड़ कालख लगी,जगत पछानै भूर ॥ कूड़ा दरगह मारीअहि,उतरै नाहि विसूर ॥३॥ सच्चे कूड़े नहि मिलहि,तम चानण इक संग ॥ श्रीचंद्र सच राम नाम,रंगिओ गूढ़ै रंग ॥४॥४०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ मन साखी करि बूझ लेहु,सच्च नाम हरि वत्थ ॥ ओथै कूड़ न गडई,जिथै सच अकत्थ ॥१॥ अंदरि संता सच समाइ ॥ मरणा मूल पछाणिआ,सच्चै सिउं चित लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सच करणी करि पाइऐ,सत संतोख सु गिआन ॥ सच राम भरपूर है,आतम सच्च पछान ॥२॥ सच सरोवर सुधा का,कूड़ बंधानी पाल ॥ मन पाइन उलघावई,गुरुमुख सबद समाल ॥३॥ सच्चा सत्गुरु सच्च नाम,सच्च साध सच देव ॥ उर निज पाइआ श्रीचंद्र,अगम अगोचर भेव ॥४॥४१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। एक टेक गोपाल की,अवरहि आस निरास ।। जिहँ जन उर निज राखीऐ,आवत नाही पास ।।१।। मन रे,राम नाम करि आस ।। पाछै नहिं पछुताईऐ,खाली हत्थ करि जास ।।१।। रहाउ ।। जल थल महीअल पूरिआ,प्रतिपालक गोबिंद ।। किउं डोलत है मनहि माहिं,सरब जिआं जिस चिंद ।।२।। पाहन अंदरि कीट कर,भोजन दीन सवार ।। सरबे उदर भरंत हैं,भूखे देत न मार ।।३।। मुकतां हंसहि देवई,नागन दादर मीन ।। चिंता तजि श्रीचंद्र मन,राम नाम चित चीन ।।४।।४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सफल सेव सत्गुरू की,गोबिंद देत जनाइ ।। आन सेव सभ बिरथीआ,बहुरि बहुरि पछताइ ।।१।। भाई रे,साचो सुख सतसंग ।। परमानंद निधान रस,कबहुँ न होवै भंग ।।१।। रहाउ ।। राम नाम जपु दिनस राति,सास गिरासीं ढोइ ।। संचि खजाना नाम धन,तोटा कबहुँ न होइ ।।२।। दिन दूणा निसि चउगुणा,लाहा लाभ अपार ।। ऐथे लहि वडिआई,आगहि परम

सुखार ॥३॥ मन निरमल मति ऊजली,सत्गुरु चरनी लाग ॥ हरि रंग रंगे श्रीचंद्र,जिनि के उज्जल भाग ॥४॥४३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ सभ जग केरी ओट तजि,पारब्रहम मन धिआइ ॥ सरबे देस सुहावणे,जित्थे धरीए पाइ ॥१॥ परमेस्वर ते ऊन न काइ ॥ परंपरा अपरंपरो,परिपूरन सभ थाइ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जतन रचि पालदा,स्वादल संगि अहार ॥ चउरासीह लख जोनि महि,जिअ अगणत अपार ॥२॥ भिंन भिंन रस सरब महि,निज मन जानै जीव ॥ सभ घटि बैठा भोगई,करता पुरुख अथीव ॥३॥ चाकर सच्चे साहिबै,देन दुहाई नित्त ॥ नदर करेंदा श्रीचंद्र,ढाहै नाही चित्त ॥४॥४४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ जिनि मन राम सम्हारिआ,सुखीए सेई लोग ॥ चिंता मूल न विआपई,सोग विजोगी रोग ॥१॥ परमानंद गुबिंद गुण गाइ ॥ परम पदारथ पाइ कै,ईत ऊत त्रिपताइ ॥१॥

रहाउ ॥ नउनिधि पाई राम नाम,खोलिआ अतुट भंडार ॥ जो आवै सो भुंचई,परम भोग दरबार ॥२॥ पटा लिखायो नाम प्रभु,सत्गुरू की छाप ॥ अगै अटक न होवई,गोबिंद रखै आप ॥३॥ जिनि जिनि नाम धिआया,तिनि सिर छत्र फिराइ ॥ साहिब सच्चा श्रीचंद्र,सरब विआपक राइ ॥४॥४५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग धनासरी** ॥ पातसाह हरि पारब्रहम,करता पुरुख मुरारा ॥ चार पदारथ नउनिधी,सिद्धी सरब भंडारा ॥१॥ ता कै सेवक कउ का की तोट ॥ मन तन जिहँ जन अरपिआ,ता कै परति न खोट ॥१॥ रहाउ ॥ परमेस्वर सभ ते वडा,ऊचे ते अति ऊच ॥ ताकी वसतु भुंचावई,जग जन करम समूच ॥२॥ बडि पातसाही अमर सच्च,सच महलीं सच थान ॥ चतुरंगनि सच नाम की,दुस्टन हरत गुमान ॥३॥ जित्त वल वेखै नदरि करि,करमी होहि विसाल ॥ सभ जाचक दर श्रीचंद्र,नदरी नदरि निहाल ॥४॥४६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सा वेला धन धन्य है,जितु डिठा गुरु दरसार ।। मूरत घड़ी सुहावणी,खिन पल नाम आधार ।।१।। जपु जपु राम राम निरधार ।। मानुख तन सफलाइआ,भेटिआ प्रभू मुरार ।।१।। रहाउ ।। सेज सुहावी पुहप गंध,उज्जल रिदै सुधार ।। पंच सबद धुनि वाजीआ,आगम हरी पुकार ।।२।। मंगल गान सुरांगणा,पति पाया दरबार ।। न्रित्त नचावण आइआ,राग नाद धुनि चार ।।३।। सबद सुंन प्रगटाइआ,कमल खिड़े भुनसार ।। अनंद भया मन श्रीचंद्र,भेटिआ अपर अपार ।।४।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। पूरब पुन्य प्रताप हरि,सत्गुरु मिलाइआ ।। किरपा करि कै आपणी,हरि नाम द्रिढ़ाइआ ।।१।। अंतरि आतम सांत वसाई ।। भटकणि सगरी दूरि भी,हरि चित्त समाई ।।१।। रहाउ ।। कालख लाथी बुद्धि की,रवि किरण प्रकासी ।। चिड़ीआं चुहकी पहुफुटी,प्रभु आया रासी ।।२।। अनंद मंगल गुण गाइऐ,दिनरात सुहेले ।। मगन भए रस राम सिउं,रंग रलीआ केले ।।३।। जपु जपु नाम नाराइणै,गगन चढ़ि धाए ।। सहिज भयो श्रीचंद्र मन,गोबिंद प्रगटाए ।।४।।४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || विसरै इक खिन राम नाम,दुख अधिक सरीरी || आधि विआधि उपाधि की, मन भई तगीरी ||१|| सही न जाई अंतरि पीर || दहदिसि चितवत कस्ट अति,वैद न लहि तदबीर ||१|| रहाउ || आसव रस चूरण घनैं,कुआथ कलक अरु मांड || धातू अपर रसाइणै,सहिओ सीस निज डांड ||२|| काल धनुख सर साधिआ,रही न उर महि धीर || सत्गुरु आवहु दया करि, मन महि उपजै सीर ||३|| एकंकारै मंत्र सिउं,झाड़ा कीनसि झब || पाप ताप श्रीचंद्र का,दूरि परायो हभ ||४||४६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || कीनी मया गुरुदेव सुआमी,मेटिआ सगल अंधेरा || दूरहि दूर दूर अति दूरी, निकटि दिखायो नेरा ||१|| अविनासी सत्गुरु का दास || चउदह भुवनन तीन लोक मै,चहुँ कुंटी दहदिसि हरि भास ||१|| रहाउ || जिउं जिउं पेखन हित भव दौड़िओ,तिउं तिउं बही अंधेरी || भूतन बावरोले चायो,पटकायो अन नेरी ||२|| काहूँ करम धरम यग्य होमा,मौन गौन आचारा || काहूँ

तीरथ पाठ पुराना,मत कुरानी सारा ॥३॥ राम नाम तजि भरम भुलानै,फाथै माया जाला ॥ सत्गुरु पूरे श्रीचंद्र कउ,गोबिंद दीनो माला ॥४॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ मोहि न राखत पास निज,अवगुण जान धिकारे ॥ भटकि भटकि दर दर रहा,नहि लहिओ सहारे ॥१॥ हार परिओ सत्गुरु सरणाइ ॥ अवगुण नाहि विचारिओ,राखिओ चरनी लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि अपराध भरे परे,ध्रोह मोह मन क्रूरि ॥ लोभ कपट कुटिलता,परद्रोह ठगी भूरि ॥२॥ बिस्वास घाती क्रितघन हउ,हरामखोर बटपार ॥ लूण हरामी गुनहगार,कामी लोलुप सार ॥३॥ चोर जुआरी जान भी,चित्त न आनै सोइ ॥ सत्गुरु पूरन श्रीचंद्र,मन द्रव बखस लिओइ ॥४॥५१॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ केती बखसस हरि प्रभू,को जानै प्रकार ॥ असंख खते खिनि माफ करि,राखै अपनै दुआर ॥१॥ ऐसो सत्गुरु को दरबार ॥ जाहि न राखत कोऊ जग महि,करत न सो तिरस्कार ॥१॥

रहाउ ॥ पाप विकार मिटाइ कै,कीने अनिक महान ॥ बहु जोनिनि महि भ्रमत जो,किए खेम कलिआन ॥२॥ नरक घोर महि बूडते,लुब्ध अगिआन लवार ॥ चरनि लगाए आपणे,सागर पार उतार ॥३॥ मो समान अपराध रत,भव में नाही कोइ ॥ मया कीन श्रीचंद्र पै,अपनायो बहि गोइ ॥४॥५२॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ सदा सहाई संग प्रभु,सरणि सूर गोपाल ॥ पैज जनन की राखता,नदरी नदरि निहाल ॥१॥ मिहरबान रहमान क्रिपाल ॥ दासन का हितकारीआ,दुस्ट दलन का काल ॥१॥ रहाउ ॥ महिखासुर मधु कैटभै,चंड मुंड धूम्राछ ॥ सुंभ निसुंभ अरु रक्तबीज,दुरग जंभ हिरनाछ ॥२॥ केसी कंस चाणूर अघ,बक अरु बकी बिआल ॥ जरासंध धेनुक सकट,हनत न लागिओ काल ॥३॥ कुंभ अकुंभ अनकुंभ से,कोल त्रिमुंड खटमुंड ॥ संतन हित श्रीचंद्र प्रभु,मारे झुंडन झुंड ॥४॥५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। दासन की सुण बेनती,देहु दरस गोपाल ।। तुम ते हरि प्रभ बीछड़े,बिचरत भव दुर हाल ।।१।। अपने दासहिं लीजे मेल ।। हम ते कछू न होइ है,करि किरपा नहि पेल ।।१।। रहाउ ।। सभ बिधि करि करि थके,गई न कछहूँ पेस ।। सरणि परे की राख लेहु,तुम आगै आदेस ।।२।। तीरथ ब्रत संजम किए,अंतरि मोह भरपूर ।। जपु तपु करम कमाइआ,हरि प्रभु जानिओ दूर ।।३।। मिहर करहु प्रभु आपनी,कंठ लगाओ दास ।। जनम मरण कटि श्रीचंद्र,हरि जन की अरदास ।।४।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। मया करहु प्रभु आपणी,दासहि लेहु मिलाइ ।। करम धरम अरु नेम ब्रत,नाहिन जात कमाइ ।।१।। बिनय सुनहु हरि दीन ।। मन लोभी कपटी महा,तुम कउ सकत न चीन ।।१।। रहाउ ।। जो कछु करम कमाइआ,दंभ धारि हितु लोभ ।। जउ काहूँ सच्च भाखिआ,हिरदै उपजिआ छोभ ।।२।। तीरथ न्हाते मैल मन,नाहि उतारी भूर ।। उलटे बिखै विकार भे,उर भीतरि वड क्रूर ।।३।। तुम बिन सुननेहार भी,भव महि नाहिन कोइ ।। रिद महि मिहर उपाइ कै,श्रीचंद्र लिहु ढोइ ।।४।।५५।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ मधुसूदन हरि मिहरबान,प्रभु गोपाल गोबिंद ॥ मया धार करि आपणी,राख चरन अरबिंद ॥१॥ पाओ न जोनिन गेड़ ॥ सच्चे साहिब बखस लेहु,पेखहु नाहिन फेड़ ॥१॥ रहाउ॥ कामी क्रोधी लोलुपी,चोर जार ठग धाम ॥ विभिचारी दुरतान रत,निंदक लूण हराम ॥२॥ जूआरी परवादीअहि,थाउं नही भव कोइ ॥ सभ अवगुण भरपूर मुहि,गुण का नाम न होइ ॥३॥ जे भावै तां बखस लेहु,करि किरपा किरपाल ॥ तुम बिन करते श्रीचंद्र,कोऊ न लावै पाल ॥४॥५६॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ मो अनाथ का कोऊ नहि,भव महि राखनहार ॥ सभि अवगुण लखि मोह कउ,देवत दूरि विडार ॥१॥ सरणि तुमारी प्रभू गुपाल ॥ बिखै विकारी वेड़िआ,लीजै आप सम्हाल ॥१॥ रहाउ ॥ दूजी थाउं न सूझई,जिस पहि करउं पुकार ॥ मो कउ सनमुख पेख कर,पीठ देत संसार ॥२॥ करण कारण क्रिपा निधान,बिनु कारण क्रिपाल ॥ सरणि परे की राख लेहु,गोबिंद दीन

दयाल ॥३॥ मोह माया का मारिआ,आइओ तुमरै दुआर ॥ राख लेहु श्रीचंद्र कउ,अपने चरण मझार ॥४॥५७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ कारण करण क्रिपाल प्रभु,राखहु अपने दुआर ॥ मै निरगुण मति थोरीआ,करि न सकत उपचार ॥१॥ आपे ही तुम लेहु उबार ॥ चिंता घूंमन घेरड़ी,सागर इहु संसार ॥१॥ रहाउ ॥ आसा लहिर पछाड़ई,लीजै पार उतार ॥ नहि बेड़ी नही तुलहड़ा,नहि बोहिथ नहि तार ॥२॥ वंझू खेवट चप्पूअन,नाही साधन चार ॥ भुजबल थाका मुख भरा,पाणी गोते मार ॥३॥ चारा सभ ही रह गया,पूत मीत पितु नारि ॥ सीघ्र आओ श्रीचंद्र,बूडत कंढे चारि ॥४॥५८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ चीति आपणै समझि मत,जतन किऐ ह्वै काज ॥ लख सिआणप चातुरी,खिन महि होत अकाज ॥१॥ परमेस्वर कै सभ वसि ॥ जिउं भावै तिउं ही करहिं,ह्वै है तैस अवसि ॥१॥ रहाउ ॥ देस विदेसी धाया,वत्थु लाद जहाज ॥ धन खाटै ग्रिह को चला,मारग चोर हिराज ॥२॥ रोवत जावत

जंगली,नख धर खोदी छाइ ।। मुहरन कंचन गागरै,पाय सु हसतो आइ ।।३।। अन हतने कौ जाइऐ,लौट न आवै गेह ।। वडिआई श्रीचंद्र हरि,जिहँ चाहै तिहँ देह ।।४।।५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। सुणु बेनंती मेरीआ,साजन मीत सुजाण ।। तूहीं मेरा आसरा,तूँ ही मेरा ताण ।।१।। ईत ऊत तू ही गोपाल ।। जिउं तुध भावै तिउं भला,दासहि करो सम्हाल ।।१।। रहाउ ।। जित्थै जाइऐ जगत महिं,तित्थै तेरी माइ ।। खाली नाही को जगह,जल थल रहिआ समाइ ।।२।। भूखे रहण न देवई,बन सागर महि सोइ ।। कबहूँ पवन भखावही,कबहूँ धान समोइ ।।३।। हाथी सिंघ पहुँचावही,बिबिध प्रकारी भोज ।। सदा सालाहहि श्रीचंद्र,नाराइण लखि चोज ।।४।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। रामहि नाम जपेंदिआं,भ्रम भै सगरा नास ।। पारब्रहम परमेस्वरहि,मन महि

धरिऐ आस ॥१॥ तिस बिन दूजा नाही कोइ ॥ जल थल महीअल एक प्रभु,जिउं भावै तिउं होइ ॥१॥ रहाउ ॥ चंड अगनि सीतल करै,सागर देत सुकाइ ॥ ठंडी सूरज किरण ह्वै,ससि अगनी वरसाइ ॥२॥ निघर रसातल जावते,ऊचै चढ़ै अकास ॥ आकासै लहि सुधा घर,जनम मरै मरि जास ॥३॥ राजे रंक घने करे,रंकन दै है राज ॥ नाराइण चरित श्रीचंद्र,लख नहि सकत समाज ॥४॥६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग धनासरी ॥ बखसणहारे बखसिआ,अपने बेड़े चाढ़ ॥ भव सागर महि बूडते,कंढे दीनसि चाढ़ ॥१॥ साचे साहिब केरे ताण ॥ सगरी चिंत बिनासीआ,खान पान पहिराण ॥१॥ रहाउ ॥ बन गहिबर महि आगि ते,आपहि रख्य कराइ ॥ निगलत ही निकसाइओ,अजगर उदर फराइ ॥२॥ तेरी मिहर दयाल प्रभु,सागर थाह किओइ ॥ पार उतारन कारने,कास्ट दीनो ढोइ ॥३॥ नदरि तेरी बिगसानीआ,भागै जात बिताल ॥ पार न पावत श्रीचंद्र,बखसस हरि प्रभु लाल ॥४॥६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || हम गोले हरि खसम के,साचा साईं सोइ || दासन तखत बिठावई,सद क्रिपाल प्रभु होइ ||१|| जन कउ पहुँच न साकसि कोइ || करते का हत्थ सिरै पर,जुग जुग इस्थिर लोइ ||१|| रहाउ || ब्रहमा बिसनु महेस यख्य,किंनर गंधरब देव || इंद्र उपिंद्र नरिंद्र सभ,जन के चरन पूजेव ||२|| रमा उमा सारद सुची,राम क्रिसन अवतार || संत पाद रज बांछई,सिमरत नाम मुरार ||३|| सभना सिर साधु जन,थापै साच पछान || बिना संत श्रीचंद्र किहँ,होत नहीं कलिआन ||४||६३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग धनासरी || मरन लहै सिमरन सजे,तबि कछु पावै भेद || सिमरन ही साधु जन,पाय अलख अछेद ||१|| संत संग बैकुंठ निवास || जनम मरण दुख कटीअहि,पूरन सगरी आस ||१|| रहाउ || गिआन पदारथ पाईअहि,भरम भेद करि दूर || मोह अगिआन विकार गति,पारब्रहम भरपूर ||२|| साधु संगि मन निरमले,सूझे हरि दरबार || दूत दुस्ट नहि विआपई,अंतरि सच्च

सम्हार ।।३।। राम नाम रंग रातिआं,उनमति मद रस पाइ ।। आप आप महि श्रीचंद्र,रमिआ गोबिंद राइ ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। जिनी नाम बिसारिआ,तिनि का गया मूल ।। मर जनमै नित ख्वार है,कबहुँ न उतरहि सूल ।।१।। अहनिसि विआपै माया काम ।। मनमुख संगति लगिआ,कहूँ न सुख बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। जिनि कउ जाचहि सद सदा,सोई थिरतो जाइ ।। पुनि पुनि मन पछुतावहीं, किछू न पल्लै पाइ ।।२।। कोइलै कै वापारीआ,मुँह काला तन स्याह ।। जल मल हस्ती न्हाइआ,निज सिर डारी स्वाह ।।३।। आइ गया झुरि झुरि मुआ,परिआ वसि जंदार ।। हरि नामै बिन श्रीचंद्र,नित नित होहि खुआर ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। जिनि कउ साधू भेटिऐ,सेई सुखीए लोक ।। दरगह पैधे जावही,कतहुँ न होवै टोक ।।१।। परवाना हरि नाम ।। तिना परापति भाईआ,जिनि सत्गुरु सिउं काम ।।१।। रहाउ ।।

साकत निगुरे बेमुखी,लागी माया कूर ।। कूड़ा सउदा रासि कूड़ि,कूड़ो लाभ हदूर ।।२।। कूड़ी खेती बीजिऐ,बोहल कूड़ जमाइ ।। वापारी नहि वणजई,सिर धुण धुण पछुताइ ।।३।। संसारै की वस्तु सभ,अग्गै साथ न होइ ।। राम नाम धन श्रीचंद्र,सच्चा बेली सोइ ।।४।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। वडिआई हरि नाम की,नित नित वधै उतांह ।। सदा सूख हरि मन बसै,थंमै दरगहि बांह ।।१।। भाई रे,राम नाम जपु सार ।। अहनिसि रिदै समाल तूँ,कदे न आवै हार ।।१।। रहाउ ।। जग जूआरी आइआ खेलै पासा सार ।। हरि हरि नाम विहूनड़े,उठि तुरे हत्थ झार ।।२।। सत्गुरु मिलिआ जिनां कउ,जुगत द्रिढ़ाई नाम ।। मन जीते लाहा लहिओ,सूख सहिज बिस्राम ।।३।। वापारी गुरुमुख जना,हरि हरि नाम खरीद ।। लाभ मोख श्रीचंद्र गहि,भव सिउं लई रसीद ।।४।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग धनासरी ।। मानुख तन दुरलभ लहिओ,राम नाम जपु चीति ।। साधु संग बैसण मिलै,सच्चे सच्च

प्रतीति ॥१॥ एकंकार सम्हाल ॥ चहुँ जुग त्रिहुँ कालन बिखै,नहि विआपहि कबहु काल ॥१॥ रहाउ ॥ अम्रित नाम पदारथो,वडे भाग तै पाइ ॥ अमरापद हरि पाइऐ,सदा सदा विगसाइ ॥२॥ जोति समाणी जोति महि,जल जल एकै रंग ॥ चउरासीह नहि धाइऐ,राम नाम परसंग ॥३॥ अबिचल राज सुहावणा,डोलत कतहूँ नाहि ॥ अत्रपत्र सिर श्रीचंद्र,दहदिसि ठंडी छाहि ॥४॥६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग धनासरी** ॥ सुख न कतहूँ पेखिऐ,जनम मरन कै गेड़ ॥ दुख सागर धक डारिआ,माया चहुँदिसि वेड़ ॥१॥ गुरु गोबिंद धिआइ ॥ माया जाली काट कै,साचै सुख भुंचाइ ॥१॥ रहाउ ॥ त्रिसना बैताली ग्रसा,रूप अनेक असंख ॥ अणहोंदे निसि पेखिऐ,सुपन पदारथ लंख ॥२॥ जागत ही सभ खीन ह्वै,रूप रेख गई खोइ ॥ इह जग केरे बिखै भोग,आगै चलिआ रोइ ॥३॥ सत्गुरु चरनी लागई,मन सुतै जागाइ ॥ राम नाम जपु श्रीचंद्र,अबिचल सूख समाइ ॥४॥६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग धनासरी** ॥ खाए अमल रंग रंगिआ,पर नारी रस मूढ़ ॥ खिन पल काम सुआद लै,पछुतायो

मन गूढ़ ॥१॥ राम नाम रस पाइ ॥ अउखीवा नहिं थीवहि,मन मत्ता गुण गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ बुद्धि मटकी कस दीखिआ,जपु खमीर गुणधाम ॥ नाली सुखमण उतरी,सुरा पीव निसकाम ॥२॥ पिआले मन महि दलमलै,पोसत दोसत राम ॥ महा अनंद सु मगन मत्त,हरि नामै निसि जाम ॥३॥ अनुभव सुआद न कहि सकत,रंगा रंग अनादि ॥ विसम सुरति श्रीचंद्र की,करणी अनहद नादि ॥४॥७०॥

ओम् पारब्रहमणे नम:

॥ राग धनासरी ॥ साजन मित्र सुजान सोइ,जिनि धिआया हरि नाउं ॥ जिनि मन नाम न ऊपजै, तिनां कतहु न थाउं ॥१॥ जिउं आवहि तिउं जाहि ॥ अंतरि अगनि न बुझई,त्रिसना किए सुआह ॥१॥ रहाउ ॥ कालख जनम जनमांतरी,लागी अंध अंधार ॥ आगल भाउ न सूझई,ठग मुट्ठा संसार ॥२॥ कूड़ी वडिआई लगा,अहंमेव लग चोर ॥ वस्तु गवाई बुद्धि की,साकिओ नाहिन होर ॥३॥ पूरण सत्गुरु आइओ,नाद वजायो जाग ॥ राम नाम धन श्रीचंद्र,राखिओ उत्तम भाग ॥४॥७१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।।

साधू संगति पाइऐ,प्रभु किरपा जास ।। हरि हरि नाम धिआइऐ,सफलै सभ सास ।।१।। गोबिंद नाम उजास ।। हिरदै गगन प्रकासिआ,हरि सूरज भास ।।१।। रहाउ ।। जिउं जिउं जाप नाराइणा, तिउं तिउं उजिआस ।। पंच चोर मन ते भगै,पाया बहु त्रास ।।२।। जम जागात न लगई,गुरु कै अहिसास ।। पारब्रहम परमेस्वरै,पूरण बिस्वास ।।३।। आसा चिंत बिहानीआ,बिचरे आकास ।। श्रीचंद्र पूरण भया,हर अन दुहसास ।।४।।१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन रत्ता हरि नाम सिउं,डोलण ते चूका ।। आपन आप पछाणिआ,का को कहि

मूका ॥१॥ इत उत झाकन ते रूका ॥ एको ही सनमुख भया,लख रिदै अचूका ॥१॥ रहाउ ॥ कहिओ न जाई अदभुता,असचरज अलूका ॥ मोहन मुहि मन मोह लिओ,बेणू धुनि कूका ॥२॥ तन मन धन की लोड़ किआ,जबि प्रीतम हूका ॥ जीवालै की किआ कहा,मरनै की बू का ॥३॥ कहां गई कहँ ते आई,त्रिसना सर सूका ॥ श्रीचंद्र किआ अपर है,जब प्रगटी लूका ॥४॥२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ आप पछाणै आप होइ,आपा मिट जाई ॥ साधु संग जब पाइऐ,चूकै अन धाई ॥१॥ सहिजा जीवन पाई ॥ जहँ जहँ पेखउ पारब्रहम,अन द्रिस्टि न आई ॥१॥ रहाउ ॥ लै आयो लै जाइ का,कहँ को अब जाई ॥ पारब्रहम पूरण धनी,सभ लोक समाई ॥२॥ वण त्रिण परबत नदी नद,जीअ जंतु लखाई ॥ एको एक वरतदा,नहि आवै जाई ॥३॥ गुरु अविनासी पाया, दिब्य द्रिस्टि दिखाई ॥ श्रीचंद्र सभ सुख निधाँ,हरि संग मिलाई ॥४॥३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ रे मन,सोच विचार देख,किआ हाथ तुमारे ॥ करणहार ही कर रहिआ,सभ काज

अपारे ।।१।। भजि मन हरि हरि नामा ।। औघट घाट न को रहिओ,पूरण भए कामा ।।१।। रहाउ ।। कउन सहाइक चितवता,जब कारण करता ।। अनमेले को मेलत,अचरज हरि चरिता ।।२।। देस विदेसहुँ आय कै,खिन महि सनमूखे ।। उजरत उजर बिहाइ कै,कारज करि सूखे ।। ३।। चितवन चित पहिचान कै,हरि प्रभु गोसाई ।। श्रीचंद्र आहर लगा,जन हित सरसाई ।।४।।४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जपु जपु नाम गुबिंद का,पूरण सभ काज ।। जहँ तहँ हरि प्रभु राखता,दासन की लाज ।।१।। सभनी थाईं हरि का राज ।। सिर साहाँ पातिसाह है,महाराजन राज ।।१।। रहाउ ।। आगिआकारी जीव जंतु,तिस के मुहताज ।। सागर बूडत घोर महि,भए पार जहाज ।।२।। नगन न होवत दास हरि,कोटि कापर साज ।। अगनी आंच न लागई,बादल सिर गाज ।।३।। कीरति करत अनेक जन,प्रभु गरीब निवाज ।। श्रीचंद्र गोबिंद गाइ,तिस माहि विराज ।।४।।५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाराइण नित गाइऐ,मिलि संत समाजै ।। उर निरमल ते जानीऐ,अपरंपर

राजै ॥१॥ हरि गुण गाइऐ नीत ॥ एको एक बखानीऐ,तजि दुतिया विप्रीत ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संग प्रभु,निहचल तिस धामा ॥ ता कै ग्रिह कहु किआ कमी,जिहँ प्रीतम रामा ॥२॥ लछमी कर जोड़े खड़ी,हरि की अगवाई ॥ रिद्धि सिद्धि नउनिधीआं,मुख पेखत चाई ॥३॥ कामधेनु चिंतामणी,तरु कल्प सुहाया ॥ श्रीचंद्र पूरन धनी,बैकुंठै राया ॥४॥६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ संत संग महि वास ते,कलिमल गण नासै ॥ मनमुख सेती संग करि,किलबिख को आसै ॥१॥ संतन सिउं मुख ऊजल होइ ॥ जनम जनम की हउमै कालख,साधु संगि सरि धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ संत जाइ परलोक महि,भुज पकड़ छुड़ावै ॥ मनमुख इस ही लोक महि,बंधन गल पावै ॥२॥ संत चरण की राख ते,दूध पूत सवाया ॥ मनमुख की संगति किए,सिर छाही पाया ॥३॥ एक लीर दै संत को,द्रौपदि नहिं नगनी ॥ श्रीचंद्र मनमुख खिलत,सगरी पति भगनी ॥४॥७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ जल जाओ एह वडपना,उर नाम न आवै ॥ संग संतन कै नीचहूँ,ऊचा पद

पावै ।।१।। संत संग हरि प्रभु को नाम ।। सदा सूख कलिआण सहिज,हरि पूरण बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। रंग रूप रस नाद वाद,कुंभी लै जाई ।। संत संगि हरि भाखणा,रौरव सांताई ।।२।। रस मिस भोग सिहजा सिरी,गति अधो निसानी ।। संत संगि प्रभु गुण रवै,किरतारथ बानी ।।३।। सरब गुणा गुण उत्तमो,संतन कै संगै ।। श्रीचंद्र उर सांत रस,गुण रवण त्रिभंगै ।।४।।८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिहबा जलउ जलावणी,हरि नाम न जपिआ ।। सिक्का ढालउ करण तिस, सुणिआ अन थपिआ ।।१।। नाराइण जपि अंग सुहाइ ।। अम्रित फल रस अंतर पाइऐ,एक सबद लिव लाइ ।।१।। रहाउ ।। हाथन संत न सेविआ,से महा अपवित्त ।। पारब्रहम नहि सिमरिआ, भठ भखता चित्त ।।२।। गुरु दरसन हित चरन जो,नहिं चालत पंगा ।। नैन न परसहि संत जन, बहि सोगी गंगा ।।३।। निहफल आयू परबतीं,बिन सेवा साधा ।। श्रीचंद्र संतन बिना,बहु आधि उपाधा ।।४।।९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। चरण धूड़ि गुरु साधु की,ले मस्तक लावउ ।। चरण धोइ रहिरास कर,सुभ थान बिठावउ ।।१।। करहु किरपा करुणापते ।। दासहि दै उपदेसरा,जिस ते पाइऐ परम गते ।।१।। रहाउ ।। जनम जनम के बीछुरे,करि मिहर मिलावउ ।। रूप रंग कछु ढंग नहिं,निज संग रलावउ ।।२।। जलते माया अगनि महि,कैसे सुख होई ।। काम क्रोध मोह वासना,पति सगरी खोई ।।३।। मिलै संत धीरज दई,हरि नाम द्रिढ़ाया ।। श्रीचंद्र सत्गुरु सबद,अविनासी राया ।।४।।१०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जहँ जानो सो चीत नहिं,मिथिआ संग लागा ।। गज गच महिल उसार कै, बिसरायो आगा ।।१।। मरणा चीत न तेरे ।। अंधघोर लपटाइआ,माया कै घेरे ।।१।। रहाउ ।। बटपारी ठगी करी,सिर भार उठाया ।। बिख सागर तुझ लंघणा,बोहिथ बिन धाया ।।२।। जग महि आयो जनम लै,हित जनम मिटानै ।। परिचै झूठै परिचिआ,मग भूल दिवानै ।।३।। खाकी नूरी संग नहिं,किउं भ्रम भ्रम भूला ।। श्रीचंद्र लहि अलह को,सभ ही सुख मूला ।।४।।११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गोबिंद गोबिंद जपदिआं,सभ ही सुख पाए || पूरे सत्गुरु की किरपा,मन अलख लखाए ||१|| नाम नाराइण जब चित्त आए || धरती ऊपर उपज कै,गगनंतर छाए ||१|| रहाउ || सरब सिद्धि करतल तिसहि,कीरति हरि गाए || हउमै ममता बीसरी,प्रभु रूप समाए ||२|| ऊंधा कमल प्रगासिआ,ऊरध मुख हूआ || आपा आप पछाणिआ,को रहिओ न दूआ ||३|| आपन नाच नचाइआ,आपे ही पेखी || श्रीचंद्र आपहि भया,आपहि अवरेखी ||४||१२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || बिन गोबिंद गोबिंद के,कुछ साथ न जाई || राज मिलख सिकदारीआं,पग बंधन पाई ||१|| नाम राम जपु सदा सुहेला || आनंद मगन विनोद रस,हरि प्रभु सिउं केला ||१|| रहाउ || सदा समालै दास को,उर अंतरि धारै || आपहि आप उपाइआ,आपहि प्रतिपारै ||२|| आपहिं गुण गावाइंदा,आपहि रस दाता || आपहि आप खेलाइंदा,कर खेल बिधाता ||३|| हरि हरि नाम धिआइऐ,जाइऐ दरबारै || श्रीचंद्र गुरु क्रिपा ते,नित्त नाम सम्हारै ||४||१३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || शिव शिव रटते शिव भए,जन वर सरसाए || नाराइण नाराइणै,नर नर लख पाए ||१|| नामहुँ ते नामी सद भाए || आवत है जन हिरदै महि,कलि प्रगट जनाए ||१|| रहाउ || ब्रहमा ब्रहम अराधते,बिसनू हरि गाए || निरगुण निरगुण जापिआ,सरगुण गुण साए ||२|| गणपति दुरगा सरस्वती,अन देव सबाए || रवि ससि मंगल कारकै,सिध साधक राए ||३|| सीतापति राधावरै,जन जपत महाए || श्रीचंद्र सिमरन करै,अपरंपर छाए ||४||१४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || जिहँ जन हरि प्रभु सिमरिआ,सोऊ मुकताया || अपर परंपर पारब्रहम, परमेस्वर पाया ||१|| जग महि सफल सु आया || राग द्वेस सभ परिहरै,निरमल भई काया ||१|| रहाउ || पंच दूत वसिभूत कर,दुंदभि घन वाया || जनम मरण का चक्र मिटा,निहचल ठहराया ||२|| अंधकार अगिआन का,रवि रसम मिटाया || सुधा सरस बरसाइ कै,मन हरा कराया ||३|| सूका खेत जमाइआ,अंन धन वरसाया || श्रीचंद्र हरि राम भजि,सभ कर महि आया ||४||१५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाम ठंडि मन महि परै,आतप सभि नासी ।। आपा आप पछाणिआ,पाया अविनासी ।।१।। सत्गुरु पूरा मेरे संग ।। नाम दान मन महि दिआ,कबहुँ न होवहि भंग ।।१।। रहाउ ।। कौतुक प्रभु कै देखीऐ,जग अनिक प्रकारा ।। छत्रपती कित बन रहिआ,कित बगली धारा ।।२।। महाराज त्रिसना जलै,सुखी साधु समाजा ।। महारानी कामै ग्रसी,परिहर सभ लाजा ।।३।। संता दासी सील निधि,हरि सिमरण लागी ।। श्रीचंद्र नहिं नरक तिस,निरवारी आगी ।।४।।१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। उद्दम साधू संग का,उर सांति बसावै ।। संगति कामी जनन की,मन को बहु तावै ।।१।। संता संगति गुण निधान ।। मन चित्त इक अराधिऐ,पूरन हरि भगवान ।।१।। रहाउ ।। तोटा मूल न आवई,हरि अखुट भंडारा ।। भाई मीत कुटंब बंधु,उधरै परिवारा ।।२।। जिनि जिनि नाम धिआइआ,होया परवाणा ।। गोबिंद गोबिंद रटत ही,होए निरबाणा ।।३।। पाप ताप मन ते गए,हरि माहि समाए ।। श्रीचंद्र प्रभु जापीऐ,संता संग पाए ।।४।।१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन ठग खिन महि दुस्ट बन,बध जीव करंता ।। संग न तिआगिओ जात है, चितवत चित संता ।।१।। चानण जातो पड़ै अंधार ।। चालत चालत सुरग को,पड़तो नरक गुबार ।।१।। रहाउ ।। होम यग्य तीरथ करै,त्रिसना उपजावै ।। सुरसरि जाइ इस्नान करि,परत्रिअन हितावै ।।२।। साधू संगति पाइ कै,दुध पूतन आसा ।। परमधाम भगवान का,बहु द्रब्य विलासा ।।३।। दया धरम प्रतिपालता,हिंसक पसु करमा ।। श्रीचंद्र संतन लखा,मन उनमत्त धरमा ।।४।।१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पापी लोभी मन भया,बहु करम कमावै ।। कौडी कौडी के लिऐ,हरि धरम गवावै ।।१।। आपन धुनि न आप हितावै ।। सदा सदा अंतरि बसै,हरि प्रभु समझावै ।।१।। रहाउ ।। लोभ लहिर में बूडिआ,बधिरो बन जावै ।। फल कलिमल सनमुख लखै,तउ चित न बसावै ।।२।। भोगहुँ ते रोगी घणी,पेखत अनिकेई ।। अंध भया नहि जानइ,होते नैनेई ।।३।। अंतरि बैठा हरि प्रभू,वरजित बुरिआई ।। श्रीचंद्र अवहेलि धुनि,जा नरक समाई ।।४।।१९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जहाँ मान अपमान तहँ,जानत उर संता ।। अभिमानै कै हीनपन,सद संग रहंता ।।१।। द्वंद बिहाइ सिमरि हरि भाई ।। सूख जहां तहँ दूख बड,चित धर द्रिढ़ताई ।।१।। रहाउ ।। राज सिंघासन हान करि,बनमाहि निवासा ।। मंच बिराजित नित्त जो,पग नगन सिधासा ।।२।। अनिक त्रिअन के भोग रति,ग्रिह छाडि पराए ।। कंचन मंदर संगमरी,कानन ली थाए ।।३।। अमरावति को जावते,भयो वास पाताला ।। श्रीचंद्र गोबिंद भजि,सद रहहिं सुखाला ।।४।।२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। करन करावनहार प्रभु,सभ अंतरजामी ।। आपन हाथैं राखई,जग कार तमामी ।।१।। खिन महि थाप उथापनहारा ।। जिहँ बिधि राखै तिउं रहै,किआ जंतु विचारा ।।१।। रहाउ ।। मानुख जतन अनेक ते,धन पावन काजै ।। देस तिआग उठि धाइआ,कछु सरिओ न काजै ।।२।। पूरब को गमनिओ चहहि,लग लोभ महानै ।। करते वायु वगाईआं,पच्छिम पधरानै ।।३।। ऊठत बैठत चलन खान,पहिरन बसनाई ।। श्रीचंद्र सभि हाथ प्रभु,नर वसि नहि काई ।।४।।२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। कारण करते वसि है,जिउं प्रेरे करणा ।। जिवें जिवाए जीवना,जिउं मारे मरणा ।।१।। जहँ जहँ भेजे तहीं सिधाना ।। मालक हरि भगवान है,हम कहिआ कमाना ।।१।। रहाउ ।। चाहै भोग भुगाइंदा,चाहै उपवासा ।। चाहैं सुरग पहुँचाइंदा,चाहै नरक वासा ।।२।। चाहै तखत बिठाइलै,चाहै भीख मंगावै ।। चाहै मंदर कंचनी,चाहै बन भरमावै ।।३।। चाहै पैरी जगत पाइ, चाहै बात न पूछै ।। श्रीचंद्र भजि पारब्रहम,रत आतम सूझै ।।४।।२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। कोउ न हरि बिन मारई,को सक न जिवाई ।। जिउं जिउं प्रभू चलावई,चलनो तिउं भाई ।।१।। करते केरी सभ वडिआई ।। जैसी बिधि बिधिना रची,नहिं हटै हटाई ।।१।। रहाउ ।। जे कर चिंता कीजिऐ,तिल नाहि घटाई ।। जे करि आसा राखिऐ,नहि रती वधाई ।।२।। देस काल वस्तू सहित,धुरि कलम वगाई ।। थोड़े जीवन काज लगि,मनमुख डहकाई ।।३।। जो कुछ करणा सो करहु,सत हुकम रजाई ।। श्रीचंद्र उर एक नाम,अन चिंत बिहाई ।।४।।२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || संतन के परसाद ते,गोबिंद गुण गावहुँ || चरन कमल उर धार द्रिढ़,इक नाम धिआवहुँ ||१|| जहँ राखहि,तिहँ ही थिर होऊ || कारण करण करावनो,तिस बिन नहिं कोऊ ||१|| रहाउ || मान अमान गवाइऐ,हरि चरणन आसा || आपहि सूख सवालदा,आपहि दे त्रासा ||२|| आपहि भोग भुगाइंदा,आपहि निरलेपा || आपहि आप उपाइंदा,है अपनी खेपा ||३|| आपहि दास रखाइंदा,नहिं कीमति पाई || श्रीचंद्र मन आनंद भया,हरि की वडिआई ||४||२४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || अनिक जनम के बिछुरे,लीने लड़ लाई || पूरब करम मिटाइ कै,राखै सरणाई ||१|| गुरु अविनासी राया || अपनी किरपा धार कै,दास चरनी लाया ||१|| रहाउ || दुस्मन दूत न जोहई,कीनी द्रिढ़ ओटा || सस्त्र अस्त्र प्रभु नाम के,प्रहारन चोटा ||२|| कवच गरीबी धारिआ,निसचल मन होइआ || महामंत्र ओम् जपै,अस्त्रन कहु ढोया ||३|| आवागउण निवारिआ, सूरे परधाना || श्रीचंद्र दुंदभि दिआ,चोटा भगवाना ||४||२५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन ते पाप मिटाइ कै,कीने निज दासा ।। जनम करम मल उत्तरी,हरि नाम प्रकासा ।।१।। गोबिंद जस गाइऐ नित नीत ।। मगन भए रस राम के,बिनसी बिप्रीत ।।१।। रहाउ ।। आपहि ही प्रतिपालदा,जग पालनहारा ।। लड़ि लाए की लज्जा,राखत करतारा ।।२।। अगम अगाध अगोचरै,गुरु प्रगट दिखाइआ ।। अगिआन अंधेरा मिट गया,अनुभउ दरसाइआ ।।३।। नित नित सार सम्हालदा,प्रभु अंतरजामी ।। सरब सिधि श्रीचंद्र कै,कीनी अनुगामी ।।४।।२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। बिख बिखिआ पसरी घनी,दई सुधि भुलाई ।। सुत दारा रस मोहिआ,नहि नाम धिआई ।।१।। जम काल जब पकड़ चलाया ।। नरक घोर गुबार मग,मनमुख पछताया ।।१।। रहाउ ।। ऊहां काम न आवई,जिनि कारन मरिआ ।। लेखा देणा आपणा,आपहि जो करिआ ।।२।। जमदूतन गहि बांधिआ,सिर मुदगर मारा ।। सिकता भठ तपाइ कै,पथ सगल पसारा ।।३।। पग पग कंटक गाडई,दुख भूख सतावै ।। श्रीचंद्र हरि नाम बिन,कैसे सुख पावै ।।४।।२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। करते पुरुख प्रेर कै,माया ठहराई ।। मनमुख राम न जानई,फिरि फिरि लपटाई ।।१।। निसदिन पापो पाप कमाई ।। चित्रगुप्त लिखि लिखि धरहि,करि प्रगट दिखाई ।।१।। रहाउ ।। आगे सो प्रत्यखं भए,जो रखै छिपाई ।। लख चुरासी जोनि महि,बहु लंबी धाई ।।२।। जुगह जुगंतर भरमते,थिति भई न राई ।। बडे भाग ते जीव नै,मानुख देह पाई ।।३।। नैन खोल संगि साधु कै,प्रभु सिमरि कमाई ।। श्रीचंद्र इस समै को,मत देह गवाई ।।४।।२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधू संगति पाईए,हरि हरि जपु जापा ।। आपा आप मिटाईए,तब सूझै आपा ।।१।। प्रभु मेरा सभनी थाईं ।। गुरु किरपा ते जाणीए,घटि घटि सहिज समाई ।।१।। रहाउ ।। सबद सचे मन बेधिआ,मिटिआ अंधिआरा ।। सभ घटि अंतरि रवि रहिआ,हरि अगम अपारा ।।२।। वण त्रिण त्रिभुवन विआपिआ,को थाउं न ऊणी ।। पसु पंखी चर अचर महि,प्रज्वलित सो धूणी ।।३।। परदा दुई दूरि करि,संग संत समाइऐ ।। हरि हरि हरि हरि हरि हरे,श्रीचंद्र अलाइऐ ।।४।।२९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || सार सम्हालै दास की,घट औघट घाटा || बन बेहड़ कंटक भरा,खिन इक महि छांटा ||१|| जन की बाट सुखाली || आपहि कीनी करणैहारै,नाराइण बनमाली ||१|| रहाउ || बिघन न लागै तिल का कोई,होया आप सहाई || कंठ लाइ राखै निज दासा,प्रतिपारक पितु माई ||२|| द्रिस्टि धार राखै जन अपनै,लगन न देतो सेका || ब्रिसचिक सरप दंस ते राखै,निज की कर दै टेका ||३|| अस्त्र सस्त्र तन जोह न साकै,ब्रहम कवच चहुँघाई || श्रीचंद्र हरिदास जान कै, अपनी पैज रखाई ||४||३०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || हरि हरि नाम औखध मुख पाया,बिनसे तीनहुँ तापा || रोग सोग दुख जरा मरा, सभ हर दीनो संतापा ||१|| सहिज सूख आनंद बिस्राम || ईत ऊत की चिंत बिनासी,सिमरत गोबिंद नाम ||१|| रहाउ || सार समाल दास जन राखै,आधि विआधि बिनासै || राम रसाइण रसना चाखिआ,हउमै दुबिधा नासै ||२|| भाव भगति उपजी चित्त भीतरि,सूख सांत निधि पाया || क्रिपा

करी जन मेलिओ अपना,सगला दुरत मिटाया ॥३॥ तीनहु ताप निवारणहारा,दुखहंता सुख रास ॥ श्रीचंद्र उर अंतरि पाया,सहजि समाधि परगास ॥४॥३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सत्गुरु पूरा भया सहाई,सगले काज सवारै ॥ जहँ जाईए तहँ सहिज सुहेले, मंगल सूख अपारै ॥१॥ जीअ जंत सभ वसि करि दीने ॥ आगिआकारी सदा सहाई,राम नाम रस भीने ॥१॥ रहाउ ॥ पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन,सगले जीअ तुमारे ॥ जिहँ चाहहिं तिहँ सेव लगावहि,चाहहिं तिसहि बिगारे ॥२॥ तुमरा हुकम न मेटे कोई,तीन लोक परतापा ॥ निज दासन को सोभा दीनी,आप जपायो जापा ॥३॥ भाव भगति सिउं मति गति पूरी,नर नारी जैकारा ॥ श्रीचंद्र हरि नाम दिवायो,ब्रहमण सूद चंडारा ॥४॥३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ राखी पैज दास अपने की,काम क्रोध बिख मारे ॥ सदा सहाई सभनी थाईं, बालक जिउं प्रतिपारे ॥१॥ मात पिता हरि मेरा ॥ बिघन न लागै तिल का मूलहुँ,आनंद सूख

बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ आगे कोइ न नैन उचावै,मन आगिआ सुख पावै ॥ करि सतकार भोजन सभ अरपैं,हरि हरि नाम धिआवै ॥२॥ वडो प्रताप अगम गुसाई,दहदिसि कीरति छाई ॥ सहिज चंदोआ सिर ताणिआ,चवर राम छबि छाई ॥३॥ निरगुणिआरे महा अगिआनी,अपनी चरनी लाए ॥ निगमागम सभ सोझी होई,श्रीचंद्र सरसाए ॥४॥३३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ संतन दासा होइ रहु,तो पावहि माणा ॥ माण निमाणे तूं धणी,बड ताण निताणा ॥१॥ राम राम जपु राम रमाणा ॥ माया पटल बिनासिआ,आनंद सरसाणा ॥१॥ रहाउ ॥ करता पुरुख अराध नित्त,मंन हरि सिर भाणा ॥ सभ जग विदितो नाम प्रभु,नहि कोऊ रवाणा ॥२॥ सफल जनम हरि दास का,मिटि आवण जाणा ॥ लिव लागी गोबिंद सिउं,होए निरबाणा ॥३॥ मोह सोग सभ परिहरे,कलि कीरति गाणा ॥ श्रीचंद्र हरि दास कै,सद सद कुरबाणा ॥४॥३४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ आजुध धरि प्रभु नाम का,मन सिउं नित्त लूझै ॥ आतम रति नित द्रिढ़ रिदै,हरि

हरि महि जूझै ॥१॥ महाबली सूरे हरि संत ॥ पंच रिपू गढ़ जीत कै,गदगद बिगसंत ॥१॥ रहाउ ॥ राग द्वेस वसि मोह करि,ब्रहम फासी डारी ॥ काम क्रोध की सैन विऊह,भगति शक्ति प्रहारी ॥२॥ ब्रहम लख्य नेजा चलै,आसा त्रिख मारे ॥ दुंदभि धुनि ओंकार की,हरि सत्रु विकारे ॥३॥ हउमै ममता भागगी,तसकरि रिपु नारी ॥ पारब्रहम गढ़ फतह कर,श्रीचंद्र हुलारी ॥४॥३५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ पारब्रहम परमेस्वरो,सभ जग सिरताजा ॥ सिर साहां पातिसाह है,राजन महाराजा ॥१॥ तिहँ सेवक किस मुहताजा ॥ सभ सिर हुकम चलाया,करि सबद अगाजा ॥१॥ रहाउ ॥ देव दैत्त नर कौन है,जोऊ पकड़ै बाजा ॥ मार धाड़ धरि भूमि महि,छीने सभ साजा ॥२॥ मेर तेर सभि बीसरी,अग अग्रज भाजा ॥ कपट दंड छल छिद्र गण,सिर डार सलाजा ॥३॥ जीत भई नवखंड महिं,संतन जस भ्राजा ॥ श्रीचंद्र छूटी तणी,उर आनंद दराजा ॥४॥३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ हरि गुण रमत पवित्र मन,नहिं छुअत विकारा ॥ तन धन सरवसु सरब ही,

संतन परवारा ॥१॥ प्रेम भगति उर पाई ॥ सहिजै सहिजै गावीऐ,गोबिंद वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम की कालखा,सभि दूरि परानी ॥ पावन ते पावन भए,अम्रित पी बानी ॥२॥ माया मद सूते परे,बहु जोनि भरमाए ॥ नाराइण मुख उचरते,अविचल पद पाए ॥३॥ उर ते कबहुँ न बीसरे, दीनन दुख भंजा ॥ श्रीचंद्र भजि राम राम,संतन चित रंजा ॥४॥३७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ कोटी कोटि कोटि लख तन ह्वै,संतन सेव करीजै ॥ रोम रोम लख कोटी जिहबा, रामहि राम जपीजै ॥१॥ मन को त्रिपति न धीर ॥ अनिक बार हरि करता जपीए,थिर ह्वै प्रेम गहीर ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि कोटि मनवंतर पावहु,आरबला अधिकाई ॥ काकभसुंडी सम लोमस के, चिरजीवी अखवाई ॥२॥ कौतक कोटि जुगन के पेखहुँ,हरि प्रभु के अवतारा ॥ नैन सिरावहुँ दरसन परसन,चर चर गगन निहारा ॥३॥ नाराइण तन भी परसै है,उर उपजे संतापा ॥ श्रीचंद्र कउ एकहि दीजै,नाम नाराइण जापा ॥४॥३८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ तीन देह सभि बिनसनहारी,तीन लोक मिटि जाई ॥ तीनो देव भुवन दस चतुरहि,द्रिस्टि न परहि कदाई ॥१॥ एको ब्रहम सदा अबिनासा ॥ द्रिढ़ करि भजि मन ताकै चरणा, अवर तिआगहु आसा ॥१॥ रहाउ ॥ पउण पाणी बैसंतर बिनसै,बिनसहि तरुवर सैला ॥ इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र बिनासहि,मेरु हिमालय गैला ॥२॥ देव देहुरे तीरथ संगम,गोरख सिद्ध बिनासी ॥ सुर नर असुरै पीर पैगंबर,कुतबे गोंस सिधासी ॥३॥ दत्त दिगंबर आदि नाथ लों,परी बहीर अपारा ॥ श्रीचंद्र अविचल अविनासी,पारब्रहम करतारा ॥४॥३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ करणहार करतारै कुदरत,थिर को रहिण न दीनो ॥ रे मन,तू भी काल चितव चित,किउं ऐंठत ह्वै पीनो ॥१॥ चार दिवस को जीवना ॥ सुंदर काया रूप सवाया,अंत भसम ही थीवना ॥१॥ रहाउ ॥ सुलतान खान सूरे बड पूरे,जिनि सभ जगत निवाया ॥ साहनसाह सिंघासन बैठे,बहु जोजन सिर छाया ॥२॥ स्यंदन अस्व नाग दर ठाढे,दुआरपाल गण राजै ॥ कंचन दंड

लिओ अगवाई,भाट नकीबन बाजै ।।३।। चले छोडि कर लंबी धाई,साथ न दासन लीनो ।। श्रीचंद्र थिर नाम नाराइण,सत्गुरु सबदी चीनो ।।४।।४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। रे मन,थिर रहना नहीं,किउं करहि पसारा ।। इक आवहि इक जावही,लागी बड लारा ।।१।। एकल आया एकल जाना ।। आपन कीआ पावना,किउं कूड़ कमाना ।।१।। रहाउ ।। राव रंक चलि जाइ है,तरुणा अरु बाला ।। महिल मुनारे थिर नहीं,तन धन गन माला ।।२।। कोऊ रहिओ न रहैगो,उर समझ बिबेका ।। गढ़ मंदर गचगीरिआँ,उपबनन समेटा ।।३।। परिस्त्रम अति ही करै,संचै हिम रूपा ।। श्रीचंद्र संग नहिं चलहि,डारहु भ्रम कूपा ।।४।।४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। इह जग कोऊ थिर नहीं,दिन चार नजारा ।। रंग रूप रस बाद महि,नहिं जानत सारा ।।१।। राम सिमरि पछुताहिंगा ।। जिनि के लिए पाप करहिं,संग न कोऊ जावहिंगा ।।१।। रहाउ ।। दारा मीत पूतन सिउं,कूड़ा नेहु लाया ।। कीता पावहिं आपणा,पूछै धरमराया ।।२।। भार अधिक

सिर लद्दिआ,अउखा मग जाणा ।। साकत की संगति कीए,फिरि फिरि पछताणा ।।३।। अजहुँ समझ चित्त चेत करि,हरि सिमरन सारा ।। श्रीचंद्र भुजा ऊच करि,तुहि कहिओ पुकारा ।।४।।४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। तेरे संग न चलई,जग कै पदारथ ।। तन धन माल मताह सभ,किआ करहिं स्वारथ ।।१।। एक सहाई राम ।। इक चित हो के भज मना,आवहि अंतह काम ।।१।। रहाउ ।। कूड़ पसारा कूड़ का,कूड़ो होइ जाई ।। जग हित कीए स्रम की,कूड़ी वडिआई ।।२।। साचे की संगति किए, काचो परिहरीए ।। काच विहाझहि काच लहिं,बोझा सिर धरीए ।।३।। राम नाम गुण गाइलै,संग साधु पिआरे ।। श्रीचंद्र किउं कूड़ लगि,निज जनम विगारे ।।४।।४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। लख चौरासी भरमते,दुरलभ देह पाई ।। कूड़े लालच लागि के,दई बिरथ गवाई ।।१।। गोबिंद नहीं धिआइआ ।। इत उत धंधे धावणी,स्रम ऐंवैं पाइआ ।।१।। रहाउ ।। अहनिसि चिंता चितवता,किछु हाथ न पावै ।। बंधिआ सुत कर वासन,नभ फूल लिआवै ।।२।। कमठ

पीठ कबि बार होहिं,सिकता महि तेला ।। भेड़ पूँछ भादों नदी,को पार परैला ।।३।। बहुबिधि कहिओ पुकार के,समझहु उर भाई ।। श्रीचंद्र इक राम बिन,नहिं कोऊ सहाई ।।४।।४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गंगा उतरी गगन ते,विंग तिड़ंगी ।। मीन चलै ऊरध दिसा,सुर सिद्ध भिड़ंगी ।।१।। नेम आधार विचारा ।। सरपिणी कुंडल परिहरै,टपके अम्रितधारा ।।१।। रहाउ ।। खिड़की खोले परसीए,आलै वथु पाई ।। प्राण गुरू परकासिआ,गति अगम लखाई ।।२।। त्रिकुटी छूटै परसिऐ,निरमल उजिआरा ।। लख बिजलीआं चमकई,झिलमिली नजारा ।।३।। अनहद धुनि आनंद रस,मन मगन समाना ।। श्रीचंद्र गुरु किरपा ते,दर दसम खुलाना ।।४।।४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सुरसरी मेली क्रिसना,त्रै संगम ठहराया ।। मन मानस जब न्हाया,सरस्वती समाया ।।१।। मन पावन खोडस कहलाया ।। कबहुँ चढ़त उतरत कबी,खोड़े बिगसाया ।।१।। रहाउ ।। आइ सिधि सनमुख थिरी,चित्त हेत जनाया ।। पाद पाद घन नाद संख,घंटा खड़काया ।।२।। पुरुख

जोग निंद्रा ग्रसा,सुर दुंब उठाया ।। कमल खिड़े गंधमादनी,दल सहस लखाया ।।३।। पूरा सत्गुरु जे मिलै,तबि अनंद सवाया ।। श्रीचंद्र तहँ मगन है,कथ कथन न आया ।।४।।४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि जानिआ प्रभु आपणा,तिस कै बलिहारी ।। अनिक बार बंदन करउ,मुख नाम उचारी ।।१।। पूरे सत्गुरु कै कुरबान ।। राम नाम रस पाइऐ,गोबिंद गुणी निधान ।।१।। रहाउ ।। सबद अनाहद वजिआ,म्रिग चित न चलाई ।। धंध बंध सभ गिरि पड़े,हरि हरि लिव लाई ।।२।। सेवा सेवक सफल भई,लख अलख समाजा ।। आइ सिंघासन थिति भया,महाराजन राजा ।।३।। प्रीतम प्रीति पछाण कै,प्रिय वादन कीना ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम जपु,सीतल मन सीना ।।४।।४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन ते कबहु न टारीऐ,निज दास लखाई ।। लाख कोटि अउगुण भरे,मन कालुख छाई ।।१।। दीजै अपनी सरणि गुसाई ।। नहि जानत अगिआन मति,गुरु सेव कमाई ।।१।। रहाउ ।। असंख खता नित करत है,भलि नाम न राई ।। अनिक भेख वल छल भरा,चाहहु नित माई ।।२।।

तामा तमह प्रापति,लख कूड़ कमाई ।। उदर भरन के काज हिय,कछु सूझ न पाई ।।३।। अंध घोर ते काढि लेहु,सुनि कूक दुहाई ।। श्रीचंद्र कउ सत्गुरु,निज भुजा गहाई ।।४।।४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। भाउ अभाउ जब लगि अहै,तबि लगि हरि नाहीं ।। आपा परका जउ लउ, बिखिआ परछाहीं ।।१।। पारब्रहम महि अपर न होई ।। एको एका सरबमय,घट पट महि सोई ।।१।। रहाउ ।। राग द्वेस का थाउं नहिं,नहि हिन्दु व तुरका ।। पति परमेस्वर पाइए,दूरै करि बुरका ।।२।। को आया को जावसि,तिस बिन नहि कोई ।। मातु पिता सुत बंधु जन,प्रभु करता जोई ।।३।। मन निरमल के भीतरे,गोबिंद निवासा ।। श्रीचंद्र प्रभु निरखिऐ,आतम इक आसा ।।४।।४९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिन कउ किरपा धारिआ,संतन संग दीना ।। गुरु उपदेस कमाइआ,आतम रस भीना ।।१।। गुरु सबदी मन निरमल होइ ।। सहिजै सहिज समाइआ,एको सच्चा सोइ ।।१।। रहाउ ।। राम नाम रस बेधिआ,किछु कहनु न जाई ।। गुरु परसादी उबरे,हरि हरि लिव

लाई ॥२॥ भै भंजन प्रभु पाइआ,बिनसै अंधिआरा ॥ सभ घट एको पसरिआ,जोती उजिआरा ॥३॥ गुण गोपाल वखाणीऐ,सुख सांति सुहेला ॥ अमिय सरोवर श्रीचंद्र,आनंदित केला ॥४॥५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ मन बोहिथ बिख लादिआ,भवसागर दीना ॥ कंधी नदरि न आवई,त्रिसना झोलीना ॥१॥ सत्गुरु बेड़ा पारि लगाइ ॥ झखड़ वाउ अंधेरीआ,गहि वंझ बचाइ ॥१॥ रहाउ ॥ घुमणघेरी फाथिया,बुद्धि गई हिराई ॥ साज समाजा रुढ़त है,जीवन भी जाई ॥२॥ नक्र बक्र भै दायकन,देखत भयभीता ॥ मुख पसारे आवही,भखन हित चीता ॥३॥ मोह लोभ लिय जात हैं,बांह दीजै रामा ॥ श्रीचंद्र कउ अपर सिउं,सर हैं नहिं कामा ॥४॥५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ जिउं जानहु तिउं राख लेहु,प्रभु किरपा धारे ॥ सेवा कछु न जानऊ,नहिं करम कमारे ॥१॥ हम मूरख मुगध अजान ॥ सरणि तुमारी आइआ,राखहु हरि भगवान ॥१॥ रहाउ ॥ निसदिन रचिओ कुटुंब सिउं,छल छिद्र कमाए ॥ लोभ लाग सभ भूलिओ,किआ अपन पराए ॥२॥

बिखै बिकारन पर रहिओ,किछु सूझ न लोई ।। अग्रज गति नही जानीआ,किस बिधि फल होई ।।३।।
द्रिस्टि धार निज बखस लेहु,पापी अगिआना ।। श्रीचंद्र इक टेक हरि,अन चीत न आना ।।४।।५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अनिक बिघन नहिं पोह सकहि,जिस करता राखै ।। सरब ओर ते ओट करि,भरता नित साखै ।।१।। हाथ दै उबारै आप ।। अउगुण को न चितारदा,सगल स्रिस्टि को माई बाप ।।१।। रहाउ ।। आजुध हेतु प्रहारने,गहि दुस्ट खड़े हैं ।। झंझावात चलाईआ,थिर थाइ दड़े हैं ।।२।। पाहन आए धार कर,नहिं शक्ति चलाई ।। पग बंधन को डार करि,थित करत गुसाईं ।।३।। देख न साकत जनन को,द्रिस्टी ते हीने ।। श्रीचंद्र निरंकार नर,मूरे करि दीने ।।४।।५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दुस्ट दूत सभ ही भगे,हरि प्रभु परतापा ।। बिघन न तिल का लागता,जप हरि हरि जापा ।।१।। मन मेरे एकंकार आराध ।। आपहि हरि प्रभु राखता,दै कर अपने साथ ।।१।।

रहाउ ।। मारग बिखड़े औखी घाटी,सगरे थान सहाई ।। गहबर बन बेहड़ के भीतर,अपनी भुजा गहाई ।।२।। जोति जगाई अंधकार महि,गूह्य वसतु दिखलानी ।। कपट कूड़ वल छल छिद्रन की, अंतर गती सुझानी ।।३।। भए क्रिपाल सुआमी मेरे,परदे खोल दिखाए ।। श्रीचंद्र का रख्यक गोबिंद,आपहि सूझ सुझाए ।।४।।५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। चौदह भुवन वसी तुम प्रीतम,तीन लोक संसारा ।। देवी देव देहुरे तीरथ,जीव जंतु बिन पारा ।।१।। एकहि ओट सुआमी ।। बिनसनहार सगल जग पेखिअहि,थिर हरि अंतरजामी ।।१।। रहाउ ।। कोटि दुरग लाखहु करि थापै,खाई परल प्रगारा ।। जल थल महिअल थित नहि कोऊ,किआ इह जंतु विचारा ।।२।। बीच परबतन गुफा बणाई,पैस पाताल बसंता ।। चढ़ै आकास न काल छोड है,गहि ले जावहि जंता ।।३।। रिदै सम्हाल चलण की बाता,हरि प्रभु सिमरहु भाई ।। श्रीचंद्र इक राम नाम बिन,दूजी ओट न काई ।।४।।५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || धन जोबन सुत बनिता संगी,सगल तिआग सिधाना || राज मिलख सिकदारीआं,किआ करहि गुमाना ||१|| संग न कोऊ मीत || बंधन जा कै बांधिआ,तूटहि अंत प्रीत ||१|| रहाउ || चमतकार दिन चार का,कोऊ संग न साथी || कूड़ै मोह लपटाइआ,सियंदन पत हाथी ||२|| मेरी मेरी करत है,धन माल संचाही || उठि चलता पछुताइआ,जम पंथ पराही ||३|| नाम नाराइण सिमरिऐ,होइ अग्र सुहेला || श्रीचंद्र संग साधु का,दरगह हरि मेला ||४||५६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गोबिंद केरे करतबन,किछु अंतु न आवै || जिउं चाहहि तिउं करत है,जिउं करते भावै ||१|| हरि कै चोज विडाण || आपहि खेल खिलाइंदा,सदा सदा निरबाण ||१|| रहाउ || अंतरजामी आप प्रभु,करि थाप उथापै || ऊखर खेत जमाइंदा,जल महिं थल थापै ||२|| बिन थंमा नभ थंमिआ,तारे द्रिस्टाई || किआ जानहु किस हेतु ते,जोती दीपाई ||३|| कोइले ते हीरा थीए,हरि केरी लीला || श्रीचंद्र भजि पारब्रहम,बहु रंग रंगीला ||४||५७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि माटी ते साजिआ,दुरलभ इह सरीर ।। मन महि अनिक पदारथा,भर दिऐ गहीर ।।१।। सिमरहु सो प्रभु सुआमी ।। अगम अगाध अगोचर करता,घट घट अंतरजामी ।।१।। रहाउ ।। बिंदु माहि जिनि सभ किछु पाया,रक्त स्नायु मज्जा ।। बोलण चलण उठण बैठण, देखण सुणना सज्जा ।।२।। कमल चक्र गण ग्रंथी सीवा,मरम इस्थल रचि राखै ।। देव दैत्त गंधरब किंनर यख्य,ब्रहमा बिसनू साथै ।।३।। सरस्वती शिवा शिव सिंधुजा,थाप दीन सहसाई ।। श्रीचंद्र भजि पारब्रहम प्रभु,मानुख देह वडाई ।।४।।५८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुण गावत गोबिंद के,मन उपजै सांति ।। काम क्रोध मोह लोभ मद,बिनसै भ्रम भ्रांति ।।१।। आनंद मगन विनोदा ।। आतम सहिज समाइआ,बड लहहि प्रमोदा ।।१।। रहाउ ।। गुण ते गुण ही पाइऐ,कछु कहन न जाई ।। अवगुण ते अवगुण लहहि,प्रभु बणत बणाई ।।२।। गुण निधान परगट भया,चानण संसारा ।। आपा आप पछाणिआ,नवनिधि भंडारा ।।३।। जिनि पल्ले गुण बंधिआ,को रहहि न कामी ।। श्रीचंद्र गोपाल भजि,जग करहि सलामी ।।४।।५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ नाम धिआइआ जिनि प्रभू,सूख सहिज निवासा ॥ सत्गुरु पूरा पाइआ,आतम परगासा ॥१॥ सभि निधि आतमराम ॥ गुरु पूरे ते पाइऐ,निहचल हरि का धाम ॥१॥ रहाउ ॥ वडभागी हरि गाविआ,सच नाम समाधी ॥ दुबिधा दूरि बिलानीआ,रस राम अगाधी ॥२॥ जोगीसर नित खोजते,तप साध घनेरा ॥ गुरु पूरे ते पाइऐ,रवि उदै सवेरा ॥३॥ किरपा करहि जिस आपणी,लड़ि लए लगाई ॥ श्रीचंद्र रम राम राम,रम राम रमाई ॥४॥६०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ आवागवन निवारीए,हरि हरि जप जापा ॥ त्रिभुअन तिसहि समावही,पूरन परतापा ॥१॥ जपु जपु गोबिंद बाणी ॥ सूख मंगल कलिआण निधि,सहिज समाधि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ त्रिसना अगनी विसमई,सीतल हरि पाइआ ॥ अगम अगोचर साहिबो,अंतरि प्रगटाइआ ॥२॥ धाई कीनी गगन को,मन घोड़ सवारै ॥ गुरु परसादी जीत मोह,दुंदभि धुंकारै ॥३॥ काम क्रोध बिख वसि किऐ,जम को भै होवा ॥ श्रीचंद्र रस राम सिउं,नित नवां निरोवा ॥४॥६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गोबिंद गोबिंद धिआइऐ,मिलि संत समाजा || अम्रितधारा गगन ते,टपकै सुर साजा ||१|| विसम विसम विसमाद समाया || पंच सबद धुनि वाजिआ,अनुभउ प्रगटाया ||१|| रहाउ || गरज गरज गुरु वरसदा,दामिनि चमकारा || तार विपंची विसतरी,रंग राग सुमारा ||२|| गिआन महारस पाइआ,वजी वाधाई || जनम मरण दुख परिहरे,हरि हरि लिव लाई ||३|| सहिज समाना भीतरे,नहिं अनत सिधाया || श्रीचंद्र घट चंद चढ़ि,सुध सबद अलाया ||४||६२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || तेरी सरणि दयाल प्रभु,तूं अगम गुसाई || गुरु किरपा ते पाइऐ,हरि रंगि समाई ||१|| मन निरमल हरि नामै || पूरे गुरु बखसस करी,प्रभु मिलि निहकामै ||१|| रहाउ || रंग लागा गोबिंद संग,सुधि बुधि बिसराई || चिंता सगल बिलानिआ,दुख भूख न काई ||२|| दुहीं जहानी एक हरि,सद संग हमारे || तुझ सिमरित तुझ ही भए,भव चढ़ै किनारे ||३|| दिन दूणा निसि चउगुणा,लहि परमानंदा || श्रीचंद्र मन मानिआ,प्रगटे गोबिंदा ||४||६३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। एको नाम धिआइऐ,कलि महि परवाना ।। अवर न दूजा सिमरिऐ,जनमै मर जाना ।।१।। सरब सिरोमणि सिमरन राम ।। हलत पलत मुख ऊजला,दरगह आवहि काम ।।१।। रहाउ ।। देव देवालै तीरथी,रट रट दुख पाए ।। भंन बरफ जल सेविआ,बिरथा कस्टाए ।।२।। बन बन फिरि ढूँढत थके,किछु हाथ न आया ।। भरी विगार विगारीआ,सिर भार उठाया ।।३।। राम नाम बिन फोकटै,साधन दुख मूला ।। श्रीचंद्र चित हेत करि,हरि हरि अनुकूला ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। हम दासे तिसु ठाकुरै,जो सभ ते ऊचा ।। लख चौरासीह जिअ जंतु,को सकै न पहूचा ।।१।। अगम अगाध धणी ।। ऊचे ते ऊचा महा,कीमति कहा गणी ।।१।। रहाउ ।। लख अकासी जाइऐ,चढ़ि मरुत विमाना ।। आगै अंतु न पाइऐ,होइ गिरै हैराना ।।२।। कोटि तैतीसा देवतन, निज शक्ति धराई ।। हरि नाराइण गोबिंदै,नहिं लहिऐ राई ।।३।। तूँ दाता हरि सभसि दा, हम जंतु विचारे ।। दया धार प्रतिपालीए,श्रीचंद्र सम्हारे ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। हम चाकर गोबिंद के,साहिब गुण पूरा ।। आपहि अपनी मिहर करि,राखहिगा सूरा ।।१।। ता को कोइ न पहुँचनहारा ।। जो जो गरब करै वडिआई,सो परमेस्वर मारा ।।१।। रहाउ ।। जिहँ जिहँ भव महि पैदा कीना,तिहँ तिहँ दिय अभिमाना ।। अभिमानी कउ नेत गिरावै,ठाकुर हरि भगवाना ।।२।। ब्रहमे लहिओ न नाली अंता,शिव नहीं लिंगहि पावा ।। कई बार जनमिओ भव माही,बिसनू लहिओ न थावा ।।३।। नारद सारद करत खवासी,गरब प्रहारी रामा ।। श्रीचंद्र प्रभु दासन दासा,बखसणहारा स्यामा ।।४।।६६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधु संग मन निरमला,अठसठ मजनाया ।। सत्त पदारथ नाम हरि,मन सुद्ध वसाया ।।१।। गोबिंद सिमरि सुहेला ।। अंतरि रतन प्रगासिआ,रस आनंद केला ।।१।। रहाउ ।। सत्‌गुरु चरन सेविऐ,हरि भगत सुहाई ।। आधि विआधि सभ परिहरै,प्रभु जोति दीपाई ।।२।। गंग गोदावरि न्हाइए,नाराइण नामा ।। सूख सहिज उर पाया,हरि कीरति धामा ।।३।। सगले तीरथ

पुंन फल,प्रभु सिमरन माही ।। श्रीचंद्र ठाकुर सिमर,कसमल मिटि जाही ।।४।।६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पारब्रहम प्रभु सेविऐ,उत्तम फल होई ।। एका टेक गोपाल की,तिस बिन नहि कोई ।।१।। एको एक सरब जग विआपा ।। जीव जंतु सभ रूप तिसहि के,तीन लोक परतापा ।।१।। रहाउ ।। ब्रहमा बिसनु सेस शिव,नारद सारद सोई ।। क्रिसन राम नरसिंघ नाराइण,नर कछु आन न होई ।।२।। वण त्रिण त्रिभुअन जोति सु एका,खंड मंडल पाताला ।। एकहि सूत परोए मणीआ,रतन जड़ाऊ माला ।।३।। जो जो दीसे सो सो तूँ है,निरंकार आकारा ।। श्रीचंद्र सभ घट घट पट पट,एको एक पसारा ।।४।।६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिस जन ऊपर तेरीआ,प्रभु किरपा विसाला ।। तिस ही मिलिआ साधु संगि, भ्रम छुटे जंजाला ।।१।। करणहार साचा करतार ।। तिस बिनु आन न सूझई,बखसनहार मुरार ।।१।। रहाउ ।। सगले बंधन काट कै,निज चरनी लाए ।। परमेस्वर का आसरा,सगरी जग जाए ।।२।।

देवनहार अपार प्रभु,सभ भरे भंडारा ॥ तोटा मूल न आवई,खाइ खरच सुधारा ॥३॥ पारब्रहम जिनि सेविआ,तिस भुख न काई ॥ श्रीचंद्र आनंद मगन,नित नाम धिआई ॥४॥६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ हउमै मेरी परिहरी,लड़ि अपने लाए ॥ औगुण सभि मिटाइ कै,परसाए पाए ॥१॥ एका टेक गोपाल ॥ आन बिसारी चिंत सभि,हरि हरि नाम सम्हाल ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गोबिंद नित गाइऐ,कसमल सभि हरणा ॥ सदा सहाई संगि प्रभु,जीआ का परणा ॥२॥ दुस्ट दूत सभ वसि कीए,धुर कीनी छापा ॥ बेमुहताजा अलख हरि,जपिओ इक जापा ॥३॥ पंचभूत निज वसि भए,आगै नहि खंघै ॥ श्रीचंद्र गहि ओट हरि,भवसागर लंघै ॥४॥७०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ नाम सिमरि गोबिंद का,कसमल सभ चूरै ॥ पुंन दान चंगिआइआं,संगि साधू धूरे ॥१॥ हरि हरि सिमरि प्रानी ॥ काची देहा बिनसनी,जिउं बुद बुद पानी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि भगती रस आइआ,सुख आतमनंदा ॥ लाह नाम धन खटिआ,कमला बिगसंदा ॥२॥ दीन दरद

दुख भंजना,प्रतिपाल क्रिपाला ।। नाम उचारत दुख मिटै,संग हमहि जंजाला ।।३।। नर नाराइण गाइऐ,सभ अंतरि सोई ।। श्रीचंद्र मन हरि बसै,दासी सभ लोई ।।४।।७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाराइण को तिआग कै,रचिआ संग दासी ।। अंतह साथ न चालई,सहि जग उपहासी ।।१।। तन धन साथु न जाइ ।। मिथिआ रस लपटाइआ,फिरि फिरि आवै जाइ ।।१।। रहाउ ।। कई कोटि जिनि जंग किऐ,हथ खाली चल्लै ।। थैली संच हजारहा,कौडी नहीं पल्लै ।।२।। माइ बाप मित्र भ्रात सभि,संचन इक आसा ।। काहूँ संगि न चालई,रचि अजब तमासा ।।३।। अनिक पाप वल छल किऐ,तऊ भई न काहू ।। श्रीचंद्र बिनु राम नाम,नहिं संग निबाहू ।।४।।७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। कपि न तिआगै चनन कउ,सभ आयु दुखारा ।। नलिनी दाना चाह करि,सुक पिंजर डारा ।।१।। मोह कुटुंब की फासी फास ।। गरधब भारै लदिआ,डंडा पीठ सहास ।।१।। रहाउ ।। करत करत स्त्रम थकि परा,आसा नहिं पूरी ।। लाख कोटि अरब खरब भे,तऊ रहे अधूरी ।।२।। जिउं

जिउं आवहि द्रब्य कर,तिउं अधिकी त्रिसना ।। इंद्र राज कउ पाइ कै,पुनि चाहै जिसना ।।३।। भोग भोग कै खपि रहिआ,अगनी अधिकाई ।। श्रीचंद्र भजि राम नाम,सुख लहहि महाई ।।४।।७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दुरलभ देह खोई अगिआनी,बिरथा धंधै धाया ।। निसदिन रटतै आयु गवाई, मनमुख माया माया ।।१।। किसहि न केरी होई ।। जो जो पेखिओ सो सो लागिओ,आपन आपा खोई ।।१।। रहाउ ।। पिता पितामह जिनि सिउं लागे,अपने जनम गवाए ।। पोते पुत्र नाती नातिन, सोउ राह तकाए ।।२।। जनमत ही बड रोग सु लागिओ,मरघट लौं नहि छूटा ।। साधु संग हरि भजन बिना,रहिओ हाथ इक ठूठा ।।३।। सरब निधान नाम हरि कीरति,रे नर,द्रब्य अमोला ।। श्रीचंद्र रिद तोरे अंतरि,किउं नहिं लीनो टोला ।।४।।७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। भाउ अभाउ दूरि करि मन रे,हरि कीरति नित्त गाइ ।। पारब्रहम परमेस्वर

माधो नितप्रति करहि सहाइ ॥१॥ अउघट घाट न देखन पाइ ॥ मानस बपुरे कहा बिचारे,जम ते लेत छुडाइ ॥१॥ रहाउ॥ सस्त्र अस्त्र बिधि अनिक प्रहारै,कर दै लेत बचाइ ॥ चउ तरफहुँ अगनि निवारै,लगै न तात्ती वाइ ॥ २ ॥ बणत बणावत सगरी आपहि,ब्रहम कवच सरसाइ ॥ दुस्टन वार भूत की ईंटै,लगत न कोऊ घाइ ॥३। राम कार चहुँ गिरद ठान कै,ओट करत हरि राइ ॥ श्रीचंद्र कउ निरभै कीनो,दासहि लिओ बचाइ ॥।४॥७५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ साधू संगति पाइऐ,हरि कीरति नामा ॥ ऐथे सूख घनेरिआ,सद सहिज अरामा ॥१॥ राम नाम जप जप आनंद ॥ सरब खेम कलिआण निधि,नहिं विआपै द्वंद ॥१॥ रहाउ ॥ सभ निधान हरि नाम महि,बाकी नहि काई ॥ तूल न ता कउ पुजई,जग की ठकुराई ॥२॥ हरि हरि हरि हरि गाइ करि,रस परम सुहावा ॥ सुरपुर राज न तूल है,गोबिंद गुण गावा ॥३॥ रसना गीधी राम नाम,मन अनंद समाना ॥ कारण करता करि रहिआ,सभ काज सुहाना ॥४॥ जिसहि

पिआले राम रस,तिस की किआ रीसा ।। श्रीचंद्र सभि झड़ि पड़हि,अग्रज जगदीसा ।।५।।७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग बिलावल** ।। दो दिन के मिहमानड़े,करि चलण तिआरी ।। साथी तुमरे चलि गए,तेरी अब वारी ।।१।। देह निमाणी सुञी होइ ।। माल धन मंडप माड़ीआं,नाही तेरी कोइ ।।१।। रहाउ ।। जहँ जाणा सो चीत करि,किउं गाफल सोइआ ।। बालक ते बूढा थिआ,हरि बीज न बोइआ ।।२।। पूरब पाका खाइआ,भुख अग्र भि होई ।। कीते बाझहुँ आपणे,फल पाइ न कोई ।।३।। लिआया किआ,लै जाइ किआ,धरि उर महि गिआना ।। श्रीचंद्र निसि बीज ले,जो दिन महि खाना ।।४।।७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग बिलावल** ।। मानुख देही लोचदे,सुरपति से देवा ।। है सोई तुम को मिली,किउं खोइ अभेवा ।।१।। हरि सिमरन की बेला ।। समै प्रापति सोहणा,हो अग्र सुहेला ।।१।। रहाउ ।। एक घड़ी आधी घड़ी,सत संगत कीने ।। हीरे रेत बिखेर कै,कछु तो ले बीने ।।२।। लाख कोटि द्रब्य खरचते,इक सास न पै हैं ।। हरि हरि हरि हरि कीनिआ,आगै न लजै हैं ।।३।। आपन करम कमाया,आपे ही

भोगहिं ।। श्रीचंद्र गोबिंद भजि,सुख दोनहुँ लोकहिं ।।४।।७८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मद माया कै बावरे,हरि नाम धिआए ।। तन धन संग न जाइगो,जा सिउं उरझाए ।।१।। आपन परका जान ।। करते अपनी वसतु का,कीया तुझहि निगहबान ।।१।। रहाउ ।। मालक ही मालक रहहि,निज वसतू केरा ।। दास न मालक होइगो,होइ अंतु निबेरा ।।२।। जिहँ अपनी करि मानिआ,नहि तेरी सोई ।। धरमराज की सभा महि,कस करहि विगोई ।।३।। आपनु रामु न जानिआ,होइ अंतु सहाई ।। श्रीचंद्र लगि कूड़ सिउं,किमि साच लहाई ।।४।।७९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधु संग बिनु जीवना,ध्रिग करम कमाया ।। पाप पाथर सिर लदिआ,पंध लंमे पाया ।।१।। बिरथा भार उठाइआ ।। दारा सुत दुहिता हितू,किछु संग न जाया ।।१।। रहाउ ।। जिनि कारण स्रम पाइआ,तजि अंतु सिधाए ।। धरमराज जबि बूझि है,किआ कहगु सुनाए ।।२।। खावण वाले जेतड़े,नठ होहिं परेरे ।। एकल ही जिंद आवई,जमदूतन घेरे ।।३।। बुरे करम का फल

बुरा,भोगहिगा प्राणी ।। श्रीचंद्र जपु राम नाम,संगि साधु सुजाणी ।।४।।८०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग बिलावल** ।। कीता पाइऐ आपणा,किउं बुरा कमाइऐ ।। साथ न काहूँ देवणा,किउं करि पछुताइऐ ।।१।। मन रे,सोच समझ करि काम ।। तोर करम तुझ संग है,जबि जै हैं जम धाम ।।१।। रहाउ ।। रत्ती मासा तोल कढि,तोलै तोलणहार ।। कागद सनमुख आइहैं,चित्रगुप्त के दुआर ।।२।। धरम कमावै धरम निवै,फेड़े आकड़खान ।। कोई लाह न सकई,वा की चढ़ी कमान ।।३।। नरक अनेक बखानिऐ,सुरग न दूजा कोइ ।। श्रीचंद्र हरि नाम का,गाहक बिरला होइ ।।४।।८१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग बिलावल** ।। पूरा सत्गुरु सेविऐ,हरि हरि जपु प्रीती ।। साधु संगि गुण गाईए,इक गोबिंद नीती ।।१।। दरगहि सुख सिउं जाइ ।। आतमराम पछाणिआ,हरि सर निरमल न्हाइ ।।१।। रहाउ ।। गुण ते अउगुण बखसीअहि,मन द्रवै गुबिंदै ।। दुरलभ नाम पदारथो,वडभागि रवंदै ।।२।। आतम जिन्ही पछाणिआ,परमातम सेई ।। एको एकी है रहहि,हरिजन हरि लेई ।।३।। धूड़ि तिना दी

पाइऐ पूरबले करमा ।। श्रीचंद्र संग साधु बिनु,नाहीं जग धरमा ।।४।।८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अम्रित वेले उठि कै,हरि नाम धिआइऐ ।। साधु संगति विच जाइ कै,नम्रित पद पाइऐ ।।१।। चरनारबिंद समाए ।। जनम मरन का भै गया,हरि कीरति लिव लाए ।।१।। रहाउ ।। जग महि लाहा हरि भगति,कोई गुरुमुख पावै ।। आपा आप निवार कै,हरि संग समावै ।।२।। दूणी चौणी करामात,गोबिंद गुण गाए ।। राम नाम रस बेधिआ,मन भवर न धाए ।।३।। जीवन पद प्रभु नाम द्रिढ़,उपजै बिस्वासा ।। श्रीचंद्र दुहुँ लोक महि,नर हरि बिस्वासा ।।४।।८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। धुज पेखहु नाराइणै,संग प्रितू लगाई ।। इक आवहि इक जावही,थिर रहहि न काई ।।१।। लंमी परी बहीर ।। सभ जग चलता पेखीऐ,पीर फकीर अमीर ।।१।। रहाउ ।। बादसाह उमराव खान,ढाहि डेरे जासी ।। रिंद मलंग जाहिद सभहि,को रहन न पासी ।।२।। घड़िआ भजै अंत को,किआ कूड़ कमाणा ।। आपण कीता पावणा,मन समझ अयाणा ।।३।। जिन कै मस्तक

भाग है,तिन साच पछाता ॥ श्रीचंद्र देह मानुखै,प्रभु नाम धिआता ॥४॥८४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ करम जिना कउ पाइआ,तिनि हरि लिव लाई ॥ साधु संगि रस आइआ,हरि भगति कमाई ॥१॥ नाम जपु नामे लिव लाइ ॥ गुरु पूरे ते पाइऐ,अंतरि आतम राइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिहबा अम्रित बोंलदी,गुरु गोबिंद नामा ॥ मन संतोख समाइआ,प्रभु पूरन कामा ॥२॥ छाती सीतल उर सुखी,नाराइण भाखा ॥ लाभ नाम धन खट्टिआ,इक ते होइ लाखा ॥३॥ रतन जवाहर माणका,हरि जस मन माहि ॥ श्रीचंद्र हरि नाम वणज,बिनसी अन चाहि ॥४॥८५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ जिनि के पल्लै नाम धन,से पूरे साह ॥ अखुट खजाना पाइआ,हरि कीरति लाह ॥१॥ सत्गुरु पूरे के वेसाह ॥ लाहा लाभ हरि खट्टिआ,दरगहि वेसाह ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गुबिंद नित गाविऐ,मन तन आधारा ॥ अम्रित सोमा झरि रहिआ,निझर रस धारा ॥२॥ निरख गगन विसमै भए,गारुड़ असवारी ॥ परमानंद समाइ रहि,हरि नाम उचारी ॥३॥ जीवन पद

जीवन मुकत,सद सहिज सुहेले ।। श्रीचंद्र बहु जनम के,हरि विछुड़े मेले ।।४।।८६।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। आपहि मेल मिलाइंदा,संगि साधु सुजाना ।। साच नाम द्रिढ़ बांध उर,सिख साच समाना ।।१।। रसि रसि हरि गुण गाइ ।। दूजी दुबिधा दूर करि,नामै रहहि समाइ ।।१।। रहाउ ।। कीरति गुरु गोबिंद की,चानण उजिआरा ।। रतन पदारथ नाम हरि,सद अखुट भंडारा ।।२।। नित खावत खरचत घना,कबि निखुटि न जाई ।। दिन दिन दूणी चौगुणी,गोबिंद वडाई ।।३।। चाख नाम हरि मस्त भे,कहि सुने न बोला ।। श्रीचंद्र की निद्धि सिद्धि,प्रभु नाम अमोला ।।४।।८७।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। पूरा प्रभु आराधिऐ,पूरे गुरु संगा ।। पूरण अनुभउ पाइऐ,पूरण रंग रंगा ।।१।। पूरण पूरण होइ ।। आदि जुगादी एक प्रभु,पूरण पुरुख समोइ ।।१।। रहाउ ।। पूरण क्रिपा क्रिपाल की,पूरण गुण होया ।। पूरण मन चित भरि रहिआ,ऊरापन खोया ।।२।। पूरण भरे भंडार निधि,पूरण सिधि पाई ।। पूरण जपु तपु संजमी,पूरण वडिआई ।।३।। पूरण गिआन

प्रकासिआ,पूरण लख पाया ।। श्रीचंद्र पूरण भया,पूरण सरसाया ।।४।।८८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि जन पूरण पाइआ,तिनि उपजी धीर ।। औखध पाया नाम प्रभु,बिनसी सभ पीर ।।१।। आतम राम पाइआ ।। चानण गिआन चराग कै,सभ जग दरसाइआ ।।१।। रहाउ ।। वडभागी से जन भए,हरि हरि लिव लाई ।। झखड़ वाउ न डोलई,थिरता मेराई ।।२।। अबिचल तखत सुहाइआ,जस चमर ढुलावा ।। सगल स्रिस्टि दासी खड़ी,सिर हुकमु निवावा ।।३।। दुंदभि कीरति दहदिसा,बड घोख करंता ।। श्रीचंद्र सभ मिहर करि,द्रिढ़ किअ भगवंता ।।४।।८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दासहि हरि प्रभु राविआ,सभ गणत मिटाई ।। हाथ देइ प्रतिपालदा,गोबिंद गुसाई ।।१।। जिनि उदरै महि पालिआ ।। कौन काम तब होतो करता,कवन सहाइ सम्हालिआ ।।१।। रहाउ ।। कारण करते वसि है,जिमि चाहै करणा ।। जीअ जंतु प्रतिपालदा,सेवक सद परणा ।।२।। पाहन कीट उबारिआ,निज करुणा धारै ।। रे मन! तू किउं डोलता,हरि लेह सम्हारै ।।३।। लख

चौरासीह जोनि को,जिनि रिजक संबाहा ।। श्रीचंद्र किआ तोर सिरि,वह नाही नाहा ।।४।।६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अनिक रंग हरि केरिआ,फुल फूल बनाही ।। मधुर सुगंधित विआपए,मन हरख उपाही ।।१।। प्रभु की दात अपार ।। बहुत भाति नियमत दई,गणत न परहि सुमार ।।१।। रहाउ ।। सीत निवारण हेतु हरि,अगनी दई थापी ।। जल दीआ अनमोलका,पिय पुंनी पापी ।।२।। तलपा तलप सुहावणी,हितु दई अरामै ।। पवण दई इस जीव कउ,स्वासन के कामै ।।३।। सीतल छाया मधुर फल,तरुवर रचि राखै ।। श्रीचंद्र मन निरगुणा,गोबिंद न भाखै ।।४।।६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मल मूतर भरि राखिआ,मानुख तन माही ।। पाटंबर सुभ पहिर न्हाइ,निरमल द्रिस्टाही ।।१।। ऐंडी बैंडी चालत चाल ।। तुहरे युत सिर पागड़ी,भुजा लुडावत हाल ।।१।। रहाउ ।। ठुम ठुम पग धर राखता,हस्ती की निआई ।। आंख तरे किहँ ना लहै,मूछन ऐंठाई ।।२।। वल छल छिद्र अनेक बिधि,उर भीतरि राखै ।। घोड़े चढ़ै सिकार हित,लीने संग साखै ।।३।। मूल न बूझै

आपणा,खाकू रुलि जाणा ।। श्रीचंद्र मन जान बूझि,कस भयो अयाणा ।।४।।६२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। बिरध भया अंग साक तजि,पुत्रन परिहरिआ ।। खटिआ डिउड़ी डारिआ,पौत्रन रस परिआ ।।१।। कंठ बिरूधउ कफ कै संग ।। हाय हाय निसिदिन रटै,राम नाम मुंह भंग ।।१।। रहाउ ।। अंग अंग महि वात रुज,भरि करक करेजा ।। बच खुच भोजन जो रहिआ,नुह पुत्रन भेजा ।।२।। परिओ मंच पछुतात है,किमि माइ विहाजी ।। रूखा सूखा खात है,बिन लवणस भाजी ।।३।। तऊ मुख सिउं न राम कहि,अस मूरख बंदा ।। श्रीचंद्र अब भी समै,साहिब बखसंदा ।।४।।६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दिन पल घड़ी महूरतन,आयु बिनसावै ।। केस गहे कर काल ने,निसदिन फहरावै ।।१।। जीवन है दिन चार ।। अजहुँ समझ मन माहि नर,भजि मुख नाम मुरार ।।१।। रहाउ ।। संग न कोऊ जाइ है,कंचन अरु रूपा ।। धन बिरथा संचन किआ,सहि सीत अरु धूपा ।।२।। जिन कारण दुख सह घना,रचि ऊच अटारी ।। मिलि सगरे ले जाहि है,मरघट असवारी ।।३।। सोच

समझ उर पेख ले,कोऊ नहि तेरा ।। श्रीचंद्र आखर भवहि,जंगल महि डेरा ।।४।।६४।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। सत्गुरु पूरे की दया,सभ निद्धि अरु सिद्धि ।। सत्गुरु पूरे की दया,पूरण सभ बिद्धि ।।१।। पूरे सत्गुरु के परसादि ।। पारब्रहम प्रभु पाइऐ,आदि जुगादि अनादि ।।१।। रहाउ ।। पूरे सत्गुरु की दया,नहि झूरन होइ ।। पूरे सत्गुरु की दया,दुख रहै न कोइ ।।२।। पूरे सत्गुरु की दया,सरधा चित्त पूरी ।। पूरे सत्गुरु की दया,हरि गुण भरपूरी ।।३।। पूरे सत्गुरु की दया,सच रिदै निवासा ।। श्रीचंद्र गुरु दया ते,रिद कंज प्रकासा ।।४।।६५।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। चरण धूड़ि जन संत की,किलविख सभ नासै ।। अठसठ तीरथ मज्जना,वड पुन्य प्रकासै ।।१।। संत संग मन की मल खोइ ।। हउमै मेरी माया,दूरि सगल ही होइ ।।१।। रहाउ ।। तीरथराज प्रयाग तहँ,संगम त्रिबेणी ।। मथुरा कासी कांची पुरी,साकेत उज्जैणी ।।२।। पुस्कर खेत्र प्रभास लख,नरबद ओंकारा ।। गया गोदावरी दुआरिका,हरिदुआर अपारा ।।३।। पावन नदीआ

सप्त सिंधु,अरु संगम गंगा ।। श्रीचंद्र साधू चरन,वास ते इक संगा ।।४।।९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरुमुख संगत सफल है,मुख ऊजल होई ।। मनमुख सेती संग करि,नहि दरगह ढोई ।।१।। अंतरि गिआन परकासा ।। जपु तपु सत संतोख ब्रत,संग साधू वासा ।।१।। रहाउ ।। रूखो भोजन भूमिसैन,मन सांति समावै ।। छत्तीह अम्रित भोजनो,कभी नहि त्रिपतावै ।।२।। संगि साधु के नगन अंग,सोभा बडि लहीए ।। पाट पटंबर साकतै,बहु अपजस पईए ।।३।। परण कुटी महि वास करि, रस रामहि नामा ।। श्रीचंद्र साकति महिल,अगि प्रजवल कामा ।।४।।९७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। काम अगनि महाराणिआ,बड दूख उपावै ।। दासी साधू चरन की,हरि जपि त्रिपतावै ।।१।। सभ सुख नवनिधि नाम ।। करम धरम संजम लहहि,संत चरण बिस्राम ।।१।। रहाउ ।। माया सापनि नित डसत,मनमुख संगि पाया ।। संत संग प्रभु गुण रवहि,आतम द्रिस्टाया ।।२।। त्रिसना आसा मोहिआ,तिहुँ लोक न ठामा ।। साधु संग कीरति करहि,मिलहै सुरधामा ।।३।।

साकत संगति पाइ कै,दुरमति उपजाई ॥ संगति साधू श्रीचंद्र,हऊमै परिहराई ॥४॥६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ साचो साहिब मन बसै,जपु तापु सुहाया ॥ निरमल ते निरमल भया,सुख सहिज समाया ॥१॥ पूरे सत्गुरु मेल मिलाइ ॥ भटक भटक स्रम पाइआ,इकतु कै घरि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ निरगुणआरे मानसा,गुण सिउं भरपूरे ॥ कामी क्रोधी क्रूर सिउं,भए परम जहूरे ॥२॥ जलते अंतहकरण महि,सीतलता आई ॥ कौड़ी कौड़ी खोजते,धनवंत महाई ॥३॥ विआधि मिटाई सरब ही,अमरापद पाया ॥ श्रीचंद्र अघ मेट कै,उलंघी हरि माया ॥४॥६९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ जहँ जानो चित्त राख कै,हरि नाम जपीजै ॥ साधु संगति कै बासवै,कलिमल सभ छीजै ॥१॥ अनुदिन नाल पिआरे रंग ॥ प्रेम पदारथ पाइआ,हरि प्रीतम कै संग ॥१॥ रहाउ ॥ नाम जपत गोबिंद का,मूके रस लीना ॥ महामूढ़ अनभिग्य जन,मोहिओ म्रिग बीना ॥२॥ अंधे कउ गुरु मिहर करि,लकुटी पकराई ॥ हीन चरन बिनु साधनै,चढ़ियो गिरि धाई ॥३॥ कर बिनु तार

विपंचीआ,स्रुति मूर छमाना ।। श्रीचंद्र गगनंतरी,अनहद ननदाना ।।४।।१००।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन प्रसन्न चित पेखिऐ,हरि रंग अपारा ।। जाचत ग्रिह ग्रिह कहँ फिरत,कहँ छत्रप धारा ।।१।। नाराइण कै सरब सरूप ।। देवी देव दिवालया,ब्रहम शिवै गण भूप ।।१।। रहाउ ।। घट घट वासी अंतरजामी,सभ ते परे परेरै ।। सद ही साधू संगमी,सबहूँ के नेरै ।।२।। वण त्रिण पसु पंखी सरब,आपे ही होया ।। सभ ते सदा निरालमा,कबहुँ नहि मोया ।।३।। सभ की टेक आधार इक,सद जीवन हारा ।। श्रीचंद्र कै उर बसै,सभ पोखनहारा ।।४।।१०१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिउं जानहुँ तिउं राखीऐ,अपनी सरणाई ।। भूलनहारे जीव हम,बहुबिधि चूकाई ।।१।। हम पापी तू पाप प्रहारि ।। अपनी किरपा धारि प्रभु,राखहु अपने दुआरि ।।१।। रहाउ ।। खिन खिन माया मद मते,अघ कोटि कमावै ।। कूड़ कपट वल छल घणे,रत द्रोह रमावै ।।२।। कामासक्त न सूझई,गति जम घर केरी ।। सुत दारा के मोह की,बंधी पग बेरी ।।३।। जान बूझ कर

दीप लै,गिरिहैं कूपाई ।। श्रीचंद्र की भुज गहहु,किरपा करि गुसाई ।।४।।१०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। हम चाकर गोबिंद के,ठाकुर अति भारा ।। औगुण को न चितारदा,सच्च साहु हमारा ।।१।। सद बखसिंदा दीन दयाला ।। जनम जनम के किलबिख काटे,पोए अपनी माला ।।१।। रहाउ ।। नीच जात करम नीच अति,सभ बिधि विभिचारी ।। निसदिन रति बिखिअन महि,द्रिढ़ चोरी जारी ।।२।। करत बखीली साधु की,दुस्टन संग हेता ।। जपु तपु सतु संतोख का,कबहुँ नहिं चेता ।।३।। राखहि अपनी मिहर करि,निज चरनी लाए ।। श्रीचंद्र इत ऊत महि,प्रभु सदा सहाए ।।४।।१०३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। महल जाइ परवेस भे,सभ सजन सुहेले ।। मारग बात बतंगड़े,लगि रहे इकेले ।।१।। जिन गुण पल्ले पाइआ ।। से सज्जन मुख ऊजले,प्रभु प्रीतम पहिराइआ ।।१।। रहाउ ।। परे कुराही घूमते,अपवाद रचाए ।। निसदिन मायासक्त ह्वै,बहु भेख रचाए ।।२।। निद्रावसि परि

रैण गई,दिन कामहि लागै ॥ नाराइण के भजन हेत,कबहूं नहिं जागै ॥३॥ रीसां करत तिनाड़ीआ,जो प्रभु के होए ॥ श्रीचंद्र को मया कर,दरगह दिहु ढोए ॥४॥१०४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई,मूरख अगिआना ॥ लालच महि इत उत फिरत, इहु जनम बिताना ॥१॥ प्रभु सरणाई राख ॥ जैसे कैसे तेरिआ,लावहु अपनी काख ॥१॥ रहाउ ॥ उदर भरे सम पसू के,सोइआ निसचिंता ॥ चितवत अनिक विकार उर,भूलिओ भगवंता ॥२॥ मारत जीव न संक कछु,कब दया न पाली ॥ भाव न धारिओ साधु संगि,मनमुख गति चाली ॥३॥ औगुण नाहिं चितारिऐ,हरि करुणा धारै ॥ भुज गहि लीजै श्रीचंद्र,रख अपनै दुआरै ॥४॥१०५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ द्रिस्टमान जग पेख कै,तहिं ही उरझाई ॥ लेखा देना सिर रहिओ,परि लंबी धाई ॥१॥ बिखै विकार भुलाया ॥ मानुख जनम अमोलक बिरथा,आपन आप गवाया ॥१॥ रहाउ ॥ परधन परनारी सिउं राता,चितवत अनिक विकारा ॥ लोभ मोह माया ममता महि,सुधि

बुधि दई बिसारा ।।२।। आगै साथ न लीनो कछहूँ,पाछै की भी खोई ।। किआ जानहु किस बिधि गति ह्वै है,किहँ थल मिलिहै ढोई ।।३।। दीन दयाल क्रिपाला,भवभंजन भै हारी ।। अजामिल सिउं श्रीचंद्र जानहुँ,कबहुँक दीजहि वारी ।।४।।१०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अंधकार जग कूप महि,सूझत कछु नाही ।। चिंता नदी गंभीर महि,पर गोते खाही ।।१।। हे प्रभ जू,भुज गहीए ।। जिउं तिउं जतन बनाइ कै,अपनी ओर रखईए ।।१।। रहाउ ।। हम ते कछू न होइ है,सुभ करम सुआमी ।। महा कुकरमन महि परे,रति परत्रिअ कामी ।।२।। बंचक ठग बटपार क्रित,मन माहि बसाए ।। सुभ संतन के दरस हित,पग मग नहि पाए ।।३।। राम नाम सिमरिओ नहीं,जोऊ अंतु छुडावै ।। श्रीचंद्र आयू गई,अब किआ बन आवै ।।४।।१०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। रे मन! तबि पछुताइ हैं,जबि जम वसि होई ।। दंड परहिं सिर ऊपरै,को सुनहि न दोही ।।१।। सिमरहु हरि हरि नामा ।। अंतु काल मैं काम आइगो,पै हैं गोबिंद धामा ।।१।।

रहाउ ।। केस गहै फहरावहिं बवरे,गिन गिन पेखत स्वासा ।। पक्ख वार दिन संबतसर लौं,चीनत निसदिन मासा ।।२।। एकऊ स्वास न ऊपर ह्वै है,जतन करे लख कोटा ।। साजन मीत सखा सनबंधी,कोइ न करि है ओटा ।।३।। मंडप महिल अटारी मिलखन,पूछ न आगै होई ।। श्रीचंद्र इक राम नाम बिन, काम न आवहि कोई ।।४।।१०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नारा हरि हरि नाम का,ता सिउं रुचि नाही ।। पाप विकारन तोट सिउं,रचिओ उतसाही ।।१।। बिखिअन रसि राता ।। गोबिंद सिमरण छाड कै,फिरिओ उदमाता ।।१।। रहाउ ।। संग न काहूँ चालई,माया धन माला ।। जहाँ निवासी होहिंगा,नहि सिमरिओ आला ।।२।। स्रम कर संचिओ जेतको,सो इत ही छोरा ।। काहूँ नाहिं छुड़ाइओ,जम मारग भोरा ।।३।। सोच समझ कर पेख ले, को वसतु तुमारी ।। श्रीचंद्र संतन कहा,भजि नाम मुरारी ।।४।।१०९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अवगुणिआरै मानसै,गुण कीजै साई ।। अपनी ओरे खैंच लेहु,निज करुणा

पाई ॥१॥ खता बखस गोबिंद ॥ हम ते कछू न होइ है,तुमहि बचावहु जिंद ॥१॥ रहाउ ॥ को कुकरम बाकी रहिओ,जो नाहि कमायो ॥ निसदिन पड़े विकार महि,परधन चोरायो ॥२॥ धरम पंथ जानिओ नहीं,रच रहिओ कुटंबै ॥ संतन संगति तिआग कै,गहि दंभ विडंबै ॥३॥ किआ गति कहीए मानवी,मुख कही न जाई ॥ श्रीचंद्र सरवग्य प्रभु,बखसस फुरमाई ॥४॥११०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ तेरा नाम पुकार कै,निज उदर भरंते ॥ सूझत नाहिन लोभ वसि,बहु पाप करंते ॥१॥ हरि जी दीजै नैन ॥ अंधे लकुटी हीन को,बिन साथी सुख है न ॥१॥ रहाउ ॥ मारग बिखड़े पड़ गए,कंटक की झाड़ी ॥ गरत गंभीर अपार है,अबी चलन अगाड़ी ॥२॥ सुनत न कोऊ पुकार को,बहु रहिओ बबाड़े ॥ रैणि अंधेरी कारीआ,कस चढ़हुँ पहाड़े ॥३॥ संत कहित तुम निकट अति,सुनहि चीटी बाता ॥ श्रीचंद्र कउ बखस लेहु,भगतन के ताता ॥४॥१११॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ चरन सरन गोबिंद की,सुन आए नामा ॥ किरपा द्रिस्टि सभ पर करहि,ऊचा

जिस धामा ॥१॥ कोटिन कोटि उधारै ॥ छाती चौड़ी ताहिं की,अपने न बिसारै ॥१॥ रहाउ ॥ बिखै कीट को काढ कै,दै सुरग पुजाई ॥ तेली केरे बलद की,बिनसै सभ धाई ॥२॥ भवसागर महिं बूढते,कंढे दिअ चाढ़े ॥ जाचन लाखहुँ आए हैं,जाचक के बाड़े ॥३॥ गुरु सरि न्हाए काक बक, परमहंस भए हैं ॥ श्रीचंद्र हरि नाम जपु,अघ कोटि खए हैं ॥४॥११२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ संत जना की मिहर ते,मेर तेर बिनासै ॥ अंतरि आतम प्रगटै,आतम बिस्वासै ॥ आपा आप मिटाइ कै,पारब्रहम बिलासै ॥ पूरन भए न डोलही,भीतरि अहसासै ॥१॥ रहाउ ॥ करता पुरुख पूरन करै,संतन की आसै ॥ सीत बिनासन कारणै,दै लट्ठै खासै ॥२॥ जन की टेक हरि नाम है,जपु जपु परगासै ॥ लागी लाग श्रीचंद्र कउ,रहि संतन पासै ॥३॥११३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ दीन दयाल क्रिपाल प्रभु,दुख भंजन हारा ॥ जिस लड़ि लागै पाइऐ,निधि सिधि अपारा ॥१॥ तोट न आवत मूल ही,बखसस भंडारा ॥ कसमल पाप निखुट जाहि,चानण

अंधिआरा ।।१।। रहाउ ।। नाम जपति पैरी पए,सगरो संसारा ।। जनम जनम मल उतरै, अनुभउ उजिआरा ।।२।। पारब्रहम लख पाइआ,संतन आगारा ।। महा मंत्र श्रीचंद्र द्रिढ़,राम नाम उचारा ।।३।।११४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरु पूरे की ओट गहि,पाया हरि नाम ।। सूख सहिज आनंद घना,निसचल बिस्राम ।।१।। तख्त बिठाए सत्गुरू,करि कीरति छाम ।। दान नाम पक्के किए,बिनसे सभ खाम ।।१।। रहाउ ।। ऊचे ते ऊचा घणा,गुरु गोबिंद धाम ।। आतम अंतरि तोखिआ,नहि क्रोध अरु काम ।।२।। लागी तारी गुरुमुखी,अविनासी नाम ।। चरण कमल श्रीचंद्र लहि,बिनसी उर घाम ।।३।।११५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अनिक प्रकारी पेखिऐ,हरि प्रभु के रंगा ।। पाट पटंबर पहिर कबि,बिचरै ह्वै नंगा ।।१।। बैठ सिंघासन सोभई,चहुदिसि चतुरंगा ।। साथी संग न को दिसै,अंगन सहलंगा ।।१।। रहाउ ।। तान बितानै चमर ढुरि,अंग रंग अनंगा ।। तरु छाया अस्वत्थ थिरा,पावक पंचंगा ।।२।।

भोजन छत्तीह किसम कै,भूखा चरचंगा ।। कब बाहन श्रीचंद्र चढ़ि,कबही निहसंगा ।।३।।११६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। किआ किआ गुण प्रभ वरनिऐ,करते गोसाई ।। किरपा करके आपणी,दै मेरु चढाई ।।१।। थापै अपनी मया ते,दै राज बडाई ।। आपे आप जणाइंदा,भिखिआ हितु धाई ।।१।। रहाउ ।। मणि माणक खचि महिल महि,सिहजा सुभराई ।। बन बेहड़ भरमावई,कंटक लपटाई ।।२।। दै अहार त्रिपतावई,को आवै जाई ।। पवनाहारी श्रीचंद्र,प्रभु के गुण गाई ।।३।।११७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि जन नाम धिआइआ,सोई वडभागा ।। सरब सूख निधि पाइआ,हरि कीरति लागा ।।१।। सगल कलेस मिटाइ कै,अनहद रस पागा ।। मलनि महा मोह नींद ते,कलि भीतरि जागा ।।१।। रहाउ ।। अगिआन अंधेरा मिट गया,बलि गिआन चरागा ।। मुकता भोगन भोगई,वड हंस सु कागा ।।२।। बेपरवाह अलमस्त मद,मगना रंग रागा ।। श्रीचंद्र जग जनमिआ, भी मात सभागा ।।३।।११८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सागर बूँद मिलाइ कै,नहिं भिंन करेई ।। अस्ते सूरज किरण को,नहि कोइ लहेई ।।१।। पारब्रहम जो मिल रहै,नहि जनम मरेई ।। एको एक वखाणिऐ,दूजा नहि केई ।।१।। रहाउ ।। पवण पवण को मेल ह्वै,अंतरि बहिरेई ।। आजुध अनिक प्रहारिऐ,कट नभ न सकेई ।।२।। जोती जोति समाइऐ,गुरु चेले भेई ।। आतम आतम श्रीचंद्र,मिलि भे मुक्तेई ।।३।।११९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दरगह पति परवाण ह्वै,हरि नाम धिआइआ ।। रस परमानंद मगन भे,लिव चरन समाइआ ।।१।। आवागवन निवारिआ,अनुभउ पद पाइआ ।। जोती जोति प्रकास करि,चानण प्रगटाइआ ।।१।। रहाउ ।। काम क्रोध अहंकार तजि,सुख सहिज समाइआ ।। आपा परका परिहरै, इक एक लखाइआ ।।२।। पूरण चंद्र परकास ते,सागर लहराइआ ।। परमेस्वर श्रीचंद्र लहि,आतम सरसाइआ ।।३।।१२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। हंस होइ चुंज पाइ के,दुधु पाणी छाणै ।। सोना लहहि निआरीआँ,खाकहुँ रंग माणै ।।१।। नाड़ी ग्रासै वैद कर,रुज करै वखाणै ।। धूएं अगनि पछाणिऐ,ऊची सिख साणै ।।१।। रहाउ ।। हीरा कांच सराफ की,इक नदरि पछाणै ।। जाती परखै को कीआ,नारी मरदाणै ।।२।। गंधी मुस्क पछाणई,कमलै कुंदाणै ।। श्रीचंद्र गुणवंतिआ,संतन संगाणै ।।३।।१२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मच्छी पाणी बीछुड़ै,बिनु मरण न कामा ।। पंकज रस भवरा बिधा,सद लहै अरामा ।।१।। सबद सुरति जन मोहिआ,मिरतक भे आमा ।। सुणिआ नाद कुरंग स्त्रुति,कालै का नामा ।।१।। रहाउ ।। हथनी पेखी हाथीऐ,भई मौत कलामा ।। गुड़ रोड़ी रस मक्खीऐ,छुटा नहि जामा ।।२।। सत्गुरु सिख सलाहिऐ,तन तिआगै धामा ।। श्रीचंद्र मुकति मुकति कहि,पिखि मरन ललामा ।।३।।१२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || जपु तपु सतु संतोख ब्रत,इक प्रितू सेधा || नवनिधि सभ सिधि सो लहै,जो मौते बेधा ||१|| काल बिना कछु हाथ न आइ || सिर साहां कै साह,जोऊ काल धिआइ ||१|| रहाउ || मारो मारी करि रहै,जोग यग्य समाइ || मन मारै हउमै मरै,मारा अपनाइ ||२|| जो किछु वसतू पेख कै,प्रापत हित चीत || मरने ते ही पाइऐ,देवन की प्रीत ||३|| परम सिद्धांत प्रेम को,इक मरन मझारा || मरने ते ही श्रीचंद्र,दीसै प्रभु दुआरा ||४||१२३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || राम मरा को नाम है,वाल्मीकि जनायो || मरने ही ते राम है, नीकै समझायो ||१|| जे कछू धरमो पाइऐ,सोऊ मरन पिछाड़ी || सरब कला समरथ है,इक मरना ताड़ी ||१|| रहाउ || मरनो टलै न मूल कबि,किए कोटि उपाया || देव दैत्त पसु नाग नर, कालै मुख आया ||२|| सीझै मरनो जाहि को,जीवन के काला || श्रीचंद्र वह परम पुरुख,प्रभु कीओ निहाला ||३||१२४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सद ही काल धिआइऐ,जिनि जग उपाया ॥ वण त्रिण त्रिभुवन काल वसि, इक चोज बणाइआ ॥१॥ ब्रहमा बिसनु शिव गणपती,कालहि के कीने ॥ इंद्र उपिंद्र फनिंद्र गण, खगपति सभ चीने ॥१॥ रहाउ ॥ अठारह भार बनसपति,वरुणादिक देवा ॥ काल उपाए काल पाल,कालहि खप तेवा ॥२॥ काल बिना जोगीसरन,नहि मुकति पछानी ॥ श्रीचंद्र नर काल वसि, गिआनी अगिआनी ॥३॥१२५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ बुरो करत हुँ भलो फल,कालहिं नर दीना ॥ भलो करत दुर पाक है,कालहिं सु अधीना ॥१॥ गगन चरत पाताल गिरहिं,पाताल अकासी ॥ तसकर छूटत बंद ते,साधुन को फासी ॥१॥ रहाउ ॥ पंडित मूरख बन रहहि,मुगधन पंडिताई ॥ विभिचारी जन मुकत भे, रिखि सूली पाई ॥२॥ कीरति लही अकीरती,मंदन जस होवा ॥ श्रीचंद्र गहनी गती,कछु जाइ न जोवा ॥३॥१२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || साधू संगति लाग कै,रस प्रेमहि पावै || लोहा कंचन होइ है,पारस छुहि जावै ||१|| पाहन दिलों पसीजई,सिल जीत लखावै || तुम्मा कौड़प खोइ कै,अम्रित सरसावै ||१|| रहाउ || चंदन हौवहि निंम तबि,परमल संग रावै || पेखै चंद आकास का,सागर उमड़ावै ||२|| सूरज पंकज प्रेम करि,मुख आप खिड़ावै || श्रीचंद्र प्रभु प्रेम लहि,मानव उर आवै ||३||१२७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || पूरै भाग परापतै,साधू का संगा || अनदिन हरि गुण गाइऐ,हरि हरि रंग रंगा ||१|| जनम मरण दुख मेट कै,आनंद अभंगा || जीवन मुकत संसार महि,कीरति जस चंगा ||१|| रहाउ || पाप कसमल परिहरै,चरनन रज गंगा || दिन दिन दूना हेत है,निधि चीत तरंगा ||२|| जो इच्छै सो पाइऐ,पूरन सब मंगा || श्रीचंद्र परमल परस,सीतल सरबंगा ||३||१२८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || प्रभु प्रेम प्रभु किरपा ते,प्रगटै उर आई || अंतरि ही पाइऐ,गुपती वथु साई ||१||

नैन त्रितीअ प्रकासिऐ,कल कला सुहाई ।। घट घट भीतरि रवि रहिआ,इक एक गुसाई ।।१।। रहाउ ।। चानण चौदह भुवन ह्वै,तम सगल नसाई ।। सागर छीर न्हाइऐ,निरमल जल पाई ।।२।। हउमै मेरी परिहरी,इक जोति समाई ।। आवा गउण हत श्रीचंद्र,अबिचल थित ठाई ।।३।।१२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सागर प्रेम अथाह महि,इक लहिर उपाई ।। आतम राम राम कै आतम,सूझ बूझ बिनसाई ।।१।। राम प्रेम कै प्रेम राम है,प्रेमहुँ तेहि सुझाई ।। जगत हरी कै हरी जगत महि, ढूँढन अब कह जाई ।।१।। रहाउ ।। जपु तपु संजम पूजा ब्रत,सभ ते प्रेमहुँ सरसाई ।। अम्रित प्रेम पिआला पीवै,खीवै त्रिसन बुझाई ।।२।। सत्गुरु सिख प्रेम कै नाते,जाति पाति न रहाई ।। श्रीचंद्र लहि प्रेम पदारथ,मौतहुँ अग्र सिधाई ।।३।।१३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधू संगति लगिआं,मिट जाए क्रोधा ।। साधु संगति महि पाइऐ,आतम परबोधा ।।१।। संत संग रस पाइआ,अजिता भट जोधा ।। संत संग आनंद लहि,मन मंदर सोधा ।।१।।

रहाउ ॥ साधु संग होइ निरमला,कसमल मल धोधा ॥ संत संग मन वासिआ,नाराइण बोधा ॥२॥
साधु संग जपु तपु लहै,दुख लहि अन होधा ॥ श्रीचंद्र रम साधु संग,जापिओ अविरोधा ॥३॥१३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ गुरुमुख होवै सो लहहि,हरि नाम परीत ॥ गुरु उपदेस कमाइऐ,आतम की जीत ॥१॥ मनमुख पइआ विकार महि,खोई परतीत ॥ काम क्रोध लपटाइआ,हउ की भीत ॥१॥ रहाउ ॥ गुरुमुख आप पछाणिआ,सरला करि चीत ॥ मनमुख गया जहंनुमहि,हरि किओ न मीत ॥२॥ गुरुमुख दरगह मंनीअहि,गा गोबिंद गीत ॥ श्रीचंद्र गुरुमुख भया,राम नामै हीत ॥३॥१३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ अंतरि बाहरि सदा सदा,हरि संगि सहाई ॥ सरब थान महि रमि रहिआ, जगदीस गुसाई ॥१॥ जिथै जाइऐ जगत महि,सभ बणत बणाई ॥ आप आपणे करि दए,नाही

वैराई ।।१।। रहाउ ।। जो जो वस्तु लोड़ीऐ,सोऊ देत पुजाई ।। पैज रखै निज दास की,माँगण वरजाई ।।२।। मन चितवै सो पाइंदा,हरि के गुण गाई ।। ईत ऊत नहि डोलदा,श्रीचंद्र धिआई ।।३।।१३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पूरे गुरु ते पाइऐ,अंतरि परगासा ।। गुरु उपदेस कमाइऐ,नित सास गिरासा ।।१।। गुरु पूरे की चाकरी,निहचल बिस्वासा ।। सबद सुरति सुख ऊपजै,दुख तीन बिनासा ।।१।। रहाउ ।। बिनु गोपाल गुबिंद के,अन नाही आसा ।। संत संग मन ऊजल,कलिमल बिध्वांसा ।।२।। गुरु अविनासी पारब्रहम,अखंड बिलासा ।। श्रीचंद्र गुरु चरन रति,सफले सभि सासा ।।३।।१३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। चलणहारा जगत सभ,नहि किसहि मुकाम ।। गोइल आया गोइली,रुँधहि बहु ठाम ।।१।। दिन दुइ चार बिताइ कै,उठि चलहि तमाम ।। झूठ पसार पसारिआ,नाही किहँ काम ।।१।। रहाउ ।। वणजारा जग आइआ,लाहा हरि नाम ।। खेप आपणी तां लहहि,थिर संतन गाम ।।२।। झूठा वणज वणजि करि,होईए बदनाम ।। साचा सौदा श्रीचंद्र,इक सत्गुरु धाम ।।३।।१३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। संत संगि हरि जापणा,गुरुमुख नाम वेसाह ।। हउमै मेरा परहरै,गुण गोबिंद नित लाह ।।१।। रंग रतै परमेस्वरै,जगत ते बेपरवाह ।। अन पहि किउं कर जाइऐ,गुरु भेटिआ पातिसाह ।।१।। रहाउ ।। सभ संसार निवाइआ,लड़ि पकड़े हरि नाह ।। इको आस कमाइऐ,सच्च वपार सलाह ।।२।। मनमुख कूड़ विहाजिआ,तोटा प्रभ दरगाह ।। श्रीचंद्र नहि डोलई,हरि प्रभु का गहि राह ।।३।।१३६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। म्रिग काले लगि वाड़ीए,गल फाही पाई ।। लोभ मांस को खाण हेतु,मच्छि कुंडि फहाई ।।१।। बेधिआ रस फुल वासनै,भवरे म्रितु आई ।। गिल्ली रोड़ी चख कै,मक्खी पछुताई ।।१।। रहाउ ।। दो दाणै नलिनी पिखै,सूए की धाई ।। चनक लागि कपि नहि छुटा,ग्रिह नाच नचाई ।।२।। कागज हाथिनी पेख कै,जग कुंड सहाई ।। श्रीचंद्र रस कस बिधे,मनमुख दुख पाई ।।३।।१३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दिन दिन छीजै आरजा,जानै नहीं अंधा ।। माया काम विआपिआ,गल फाही धंधा ।।१।। माल पसू धन लछमी,महलाइत माड़ी ।। सुतदारा दुहिता गहिआ,निज जाति बिगाड़ी ।।१।। रहाउ ।। जिथै लेखा मंगीए,तुलीए सच तोला ।। कूड़ो कूड़ विहाझिआ,पहुंचण नहि होला ।।२।। सच वपारा गुरुमुखी,निज हिरदै जाता ।। श्रीचंद्र जिहँ वणजिआ,हरि रंग समाता ।।३।।१३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिउं भावै तिउं राख लेहु,हम दास तुम्हारे ।। प्रभू क्रिपाल दयाल सद,हम अवगुणिआरे ।।१।। लाग परे माया बिखै,हरि नाम बिसारे ।। चंचल चीत न थिर भयो,भरमत भरमारे ।।१।। रहाउ ।। पाप पोट सिर लाद कै,पैठे नद भारे ।। गंध न जानी कमल की,सेबाल ददारे ।।२।। मल भखी दहदिसि धए,सूकर कूकारे ।। श्रीचंद्र इक ओट प्रभु,अन सगल बिसारे ।।३।।१३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || संत सरोवर न्हाइऐ,मल हउमै खोई || मारग लहि प्रभु सिमरनो,अंतरि गति जोई ||१|| निसि अगिआन बिहानीआ,रवि चानण लोई || तीरथ परब इस्नान करि,सभि दुरमति खोई ||१|| रहाउ || गिआन खड़ग कर धार कै,जीतिओ अहं गोई || लोभ मोह दुरजन भगे, जै जै धुनि होई ||२|| तखत बिठाइआ दास को,छत सीस ढुरोई || अबिचल राज श्रीचंद्र का,तीनो ही लोई ||३||१४०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || सरधा सेज विछाइ कै,प्रभु खड़ी उडीकां || पंथ निहारउ बार बार,खेचउ धरि लीकां ||१|| तेरे रूप लुभाइआं,का सिउं तुहि मीकां || नैनन थंभै नीर नहिं,उर निकसति चीकां ||१|| रहाउ || रैणि अंधारी कारीआ,जंगल बड कीकां || जानउं नाही आइ कबि,जलती बहु हीकां ||२|| होहु सहाई साधु जन,पुरवहु चित्त पीकां || श्रीचंद्र रंग स्याम दिय,स्यामहि पिय डीकां ||३||१४१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मेरे हरि प्रभु प्रीतमा,मैं खरी दुहेली ।। तुझ बिन कोइ न सुझई,सगरे जग बेली ।।१।। इको मेरा धणी तूँ,नहिं छोडि इकेली ।। घोड़ी चढ़ि कै आउ इत,लीजै संगि मेली ।।१।। रहाउ ।। कोसन लों मारग महा,किमि जाइ महेली ।। अंतरि वेदन करक सरक,नहीं पात सहेली ।।२।। एको एक पछाणता,अणु भावक लेली ।। श्रीचंद्र गहि बाँह लेहु,आपन करि हेली ।।३।।१४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अम्रित सच्चा नाम है,गुरुमुख मन जाता ।। जिनि जन सच्चा सेविआ,परमानंद माता ।।१।। सच्चे ही पति पाइऐ,लहि करम विधाता ।। सच्ची दरगह गुरू की,सत्संग समाता ।।१।। रहाउ ।। पारब्रहम परमेस्वरो,सच्चे विगसाता ।। सच्च पदारथ अमर फल,चाखै हत भ्राता ।।२।। सच्चे अगे उपजिआ,हरि प्रभु सच ताता ।। श्रीचंद्र साधू जना,सच्च मूल पछाता ।।३।।१४३।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। वेद पुराण सिम्रिति सद,मन को समझाई ।। मनमुख मन अजित्त है,रस कूड़ गड़ाई ।।१।। तीरथ मज्जन पूरबीआं,मन लाहै काई ।। मनमोहन मन मंदरै,सद वास कराई ।।१।। रहाउ ।। चंगिआइआं बुरिआइआं,मन रही समाई ।। पंच दूत मन महि थिरहि,गड़ बिखम बनाई ।।२।। पूरब होवै लिखिआ,ताँ सत्गुरु पाई ।। श्रीचंद्र मन सोध कै,पद निरभै राई ।।३।।१४४।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। कच्चा रंग कुसुंभड़े,नहिं धूप सुखावै ।। दिन दो चार न चलई,पल घड़ी सुहावै ।।१।। माया रंगणि रंगिऐ,अंतहि पछुतावै ।। कूड़ कपट पाज उघड़ै,मूंह थुक पवावै ।।१।। रहाउ ।। भेखीं प्रभू न रीझई,धर काले सावै ।। मन हठ करम कमाइऐ,जम मारग जावै ।।२।। कूड़ न पुजे सच्च सिउं,लख दौड़ लगावै ।। श्रीचंद्र जन साधु संग,लालो लालावै ।।३।।१४५।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। करै सिंगार दुहागणी,चखु अंजन डारै ।। पति बिनु सांति न पावई,पेखै लखि

दुआरै ॥१॥ जोई भाई खसम को,रस सोई सारै ॥ नंगे ही अंग सोहीए,नारी भरतारै ॥१॥ रहाउ ॥ सासू नणद न जाणई,अंतरि हेतारै ॥ देराणी जेठाणीआं,परिहरि परनारै ॥२॥ जिनि जिनि पाया पिरम रस,मुख सोभ अपारै ॥ भुख तिख तिस ना विआपई,श्रीचंद्र रसारै ॥३॥१४६॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ करम करत थक पाइआ,त्रै संध्या जापा ॥ भंन बरफ तन डोबिआ,हठ अंतरि थापा ॥१॥ हथीं भद कराइआ,बड लहि संतापा ॥ भसम चढ़ाई सरब अंग,तन लाए छापा ॥१॥ रहाउ ॥ मूँड मुंडाए भरमिआ,दंड धार कलापा ॥ उरध बाहु इक पाव थित,मुख हीन अलापा ॥२॥ सातहुँ सागर न्हाइआ,अठसठ मजनापा ॥ माया मनहुँ न बीसरै,श्रीचंद्र सिआपा ॥३॥१४७॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ नाराइण अवतार धर,दुस्टन को घाई ॥ पेस न गईआ अपर कछु,नरहरि नख लाई ॥१॥ सागर छीर निवास हरि,नंदग अंग राखा ॥ सारंग चक्र सुदरसनै,परिहरन न काखा ॥१॥ रहाउ ॥ राघव बन वासा किओ,धनु बाण न तिआगा ॥ परसु गहे भे परसुराम,हलि

मूसल रागा ।।२।। आदि जुगादी सद सदा,धरम अहै पुराणा ।। सस्त्र अस्त्र सभ ही लहै,श्रीचंद्र नराणा ।।३।।१४८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। परणकुटी रचि रघुपते,मुनिपट तन धारे ।। जटा जूट भस्मांग महि,बन फल आहारे ।।१।। खर दूसण मारीचि म्रिग,अटवी परिहारे ।। इंद्रजीत घटकान से,अछ बाली मारे ।।१।। रहाउ ।। कुंभ अकुंभ दस सीस लौ,रण माझ पछारे ।। केसी कंस चाणूर बक,अघ बकि सकटारे ।।२।। बखसस कीन न दुस्ट पै,ललकार पचारे ।। श्रीचंद्र धरम प्रभू का,नहि सस्त्र विसारे ।।३।।१४९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नियम थापिओ आप प्रभु,दुस्टन हन डारो ।। नास किए बिन दुरजना,नहिं संत उबारो ।।१।। संतन बिना नहि धरम थिति,रहि है संसारो ।। धरम बिना नर अधोगति,सुभ करम बिसारो ।।१।। रहाउ ।। जत सत बिना न सूरमा,जंग रंग अखारो ।। बिना युद्ध नहि राज लहि,कातर

कतरारो ॥२॥ राजे धरमी ते बिना,भव अधरम धारो ॥ श्रीचंद्र इह मूल गति,सारंग सर धारो ॥३॥१५०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ साधु दरस ते नैन पुनीता,स्त्रवनन हरि जस सुणिऐ ॥ चरण चलहि तीरथ परसन कहि,जिहबा प्रभु गुण गुणिऐ ॥१॥ रिदै पवित्र सत्त कै वासै,सासा ओम् उचारे ॥ कर सेवा सत्गुरु ते पावन,तन पावन करमारे ॥१॥ रहाउ ॥ धरणि पुनीत संत के रहिते,घर पुनीत पद पाए ॥ रथ घोड़े हाथी अरु सकटे,भे पुनीत चड़ जाए ॥२॥ संत हेतु करि लोक रचै हैं,अति विरंच स्त्रम पायो ॥ श्रीचंद्र संतन के कारज,जनम लोक धरि आयो ॥३॥१५१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ सरणि साधु की भए पुनीता,परम सांति उर पाई ॥ त्रिसना अगनि बिनासी तन ते,निरमल भे गुण गाई ॥१॥ जनम मरण को चक्र निवारा,पाई अबिचल ठाई ॥ पारब्रहम परमेस्वर माधो,आतमराम समाई ॥१॥ रहाउ ॥ दुरमति दुबिधा दूरि भई,सभि चूकी जोनिनि

धाई ॥ मिथिआ भरम पेख जिहँ उरझै,छुटकी सगरी माई ॥२॥ नहि को हमरा साजन रहिओ,नहि हम किहँ वैराई ॥ पूरण जोति समानी घट घट,श्रीचंद्र बिगसाई ॥३॥१५२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ भ्रम भ्रम सगले जन मूए,बिनु सत्गुरु अविनासी ॥ मिथिआ लोभ लाग भव खोइआ,निगुरे गल जम फासी ॥१॥ म्रिग त्रिसना जल म्रिग नहिं पायो,लोकन भी उपहासी ॥ हरि चंदउरी सिउं मन मानिआ,ठग मूरी सी खासी ॥१॥ रहाउ ॥ पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन,माया भई निवासी ॥ जहँ उठ धायो कछु न पायो,जूए जनम हिरासी ॥२॥ मरकट नाच नचाइ कलंदर, छरी हाथ भरमासी ॥ श्रीचंद्र बिन सत्गुरु पूरे,मूल न लहिसण रासी ॥३॥१५३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ अंगराग तन साज कै,नैणी अंजन अंजै ॥ मांगी पाइ संदूर को,सिहजा सुभ मंजै ॥१॥ मल मल न्हावै साबणी,कापड़ि पट साजै ॥ पान सुपारी मुंह डार,मस्तक बिंदु राजै ॥१॥ रहाउ ॥ सुगंध कपूर स धूप कै,फूलन की माला ॥ लेपण लेप सवारिआ,मंदर बड आला ॥२॥

चंद्रमुखी रसना मधुर,ग्रिह काज सिआणी ।। श्रीचंद्र इक कंत बिनु,निसि दूख विहाणी ।।३।।१५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। बिनु सत्गुरु उर सांति नहि,लख जापै जापा ।। मनमुख मन अजित है,नित विआपै तापा ।।१।। पूत जनमिओ वेस्या,कां को कहि बापा ।। देव देवालै तीरथी,मल लहहि न पापा ।।१।। रहाउ ।। पोथी पंडित वाचदे,माया परतापा ।। गंग किनारे झोपड़ी,आमिख कंकापा ।।२।। परस पुरी कहु रथै काल,लहि काम कलापा ।। श्रीचंद्र बिन साधु संग,को लहहि न आपा ।।३।।१५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सत्जुग सत्त बताइआ,बावन पाताली ।। त्रैतै रघुपति आइयो,रावण हनि बाली ।।१।। गोबिंद दुआपर आइ कै,केला संगि आली ।। कलि कलिमल दलि मेदनी,सभ लई संभाली ।।१।। रहाउ ।। काम क्रोध अहंकार मोह,बांधे कटि माली ।। अजित सुभट रण भूमि महि,को

सकहि न टाली ॥२॥ गुरु अविनासी आइआ,डारी हलचाली ॥ श्रीचंद्र जग जीति कै,की चाल निराली ॥३॥१५६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ वधू वेद बिन मातु पितु,मंदर छपि बैठी ॥ मुखड़ा सकत पेख को,स्वयंबर की ईठी । देव देवालै महि थिरे,करि लिंग बसीठी ॥ गंडकि पइआ नाराइणो,थित कीनो पीठी ॥१॥ रहाउ ॥ शिव पुर गगन चढ़ाइआ,सुरसरि संगि लीठी ॥ सागर दुआरावती गई,साकेत न दीठी ॥२॥ असुर भए सुर सरब ही,कलकी की चीठी ॥ श्रीचंद्र सत्गुरु बिना,कौड़ी लगि मीठी ॥३॥१५७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ ऐहैं राम न सुरग ते,कर कोटि उपाया ॥ मथुरा गोकुल बरसना,खाली पई थाया ॥१॥ दुरगा दुरगुन मारई,महिखे पसु घाया ॥ इब्राहीम न बनहि,अब इस्माईलाया ॥१॥ रहाउ ॥ छीर सागर लोप ह्वै,रहिओ नाराइण माया ॥ कमलज कमल न प्रकटही,शिव मुंह छुपाया ॥२॥ सूरज आइ न धरनि पहि,गणपति सरमाया ॥ श्रीचंद्र सत्गुरु बिना,जग कूड़ि डुबाया ॥३॥१५८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि जिनि प्रितकन सेविआ,तिन ही प्रितु पाई ।। जस सेवे तस ही लहै,नेत धुर की आई ।।१।। पानी प्रित तीरथ बसै,प्रितु लहिहै न्हाई ।। प्रितु अगनी जन जानही,अंत रहहि समाई ।।१।। रहाउ ।। प्रितु धरणी सभ पेखिऐ,प्रित ऊधर धाई ।। पवन प्रितु प्रितु बांसुरी,संग साज वजाई ।।२।। गगन प्रितु नहि चल सकहि,जो जन मित नाही ।। श्रीचंद्र जीवत लहा,सत्गुरु सिध साही ।।३।।१५९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मरत मरत केते गए,बहु जुगन मझारे ।। शमशानन ते निकस करि,दे नहिं उपदेसारे ।।१।। कोटिन लौं गोरन माहि,पड़ रहे वेचारे ।। कलप अनेका बीतगे,किन दरस दिखारे ।।१।। रहाउ ।। कूप माहि गिर विस्वनाथ,अब लो न अयारे ।। सरजू बूडियो रघुपति, बाहरि न पधारे ।।२।। जरा बाण हत नंद नंदन,चलि गोप बिसारे ।। श्रीचंद्र लग कूड़ महि,मानुख भव हारे ।।३।।१६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || ओढ गोदड़ी संत संग,अति आनंद घनेरा || साकत सिउं पट रेसमी,नहि इज्जत नेरा ||१|| रूखी सूखी खाइ कै,हरि के गुण गाई || रसकस अनिक प्रकार के,खा पति गवाई ||१|| रहाउ || टूटी फूटी झोंपड़ी,संतन सुरधामा || राज महिल गच गीरीआं,कामनि सिउं कामा ||२|| संत संगि प्रभु नाम जपि,जग सागर तरता || श्रीचंद्र नित मोहिओ,संतन के चरिता ||३||१६१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || माया मोहणी मोहिआ,जग अंना बोला || सूझत आगल कछु नाहि,धन धंधा रोला ||१|| भाई मीतन बाध कै,धरनी तल टोला || दबि दबि गंजन रखिआ,हो चुप चुपोला ||१|| रहाउ || पाप कमाए मेलीए,कंचन का गोला || रोगन हेत गवाइऐ,तन जाण अमोला ||२|| जिउं आई तिउं जावई,करि कै मन कोला || श्रीचंद्र माया तजी,लहि ब्रहम अडोला ||३||१६२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गोरी गोरी पेख कै,मनमुख लपटाई || अंदरों काली पेखीए,काला करि

जाई ॥१॥ ग्रीवा मारी लात आ,कमरै हत धाई ॥ पापां बिना न होवई,लख करै कमाई ॥१॥ रहाउ ॥ सागर जाई वास घर,स्यामहि लपटाई ॥ बाहर दिसै सोहणी,अंदरु वैराई ॥२॥ साकत पिंड परायणी,नित रही समाई ॥ वैरिनि संतन श्रीचंद्र,नक फिरै वढाई ॥३॥१६३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ मनमुख रिदै न चेतिआ,माधव भगवाना ॥ लाख करोड़ी पाइ कै,भरिआ अभिमाना ॥१॥ आवण जाणा सिर पड़ा,उर कूड़ गुमाना ॥ अरबन खरबन मीत भे,तिनि कहुँ न माना ॥१॥ रहाउ ॥ भरता जे कर होवई,वेस्या असमाना ॥ निज की जो कबही नही,किमि लहहि टिकाना ॥२॥ उर काले मुह कालिआ,गोरी उर आना ॥ श्रीचंद्र निरमल भया,प्रगटिओ हरि भाना ॥३॥१६४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ दासे हम गोबिंद के,जो सभ का सुआमी ॥ ता की सेवा जो करै,नाही तिस कामी ॥१॥ साहाँ साहन साह बर,झुक रहहि सलामी ॥ अचरज खेल खिलाइआ,असचरज तमामी ॥१॥

रहाउ ॥ अरसों फरस पहुँचाइ करि,चाढ़े कुरसामी ॥ खड़े दिगंबर अग्र ह्वै,पट धर रेसामी ॥२॥ अंन धन भरे भंडार जिनि,भूखन अनुगामी ॥ श्रीचंद्र प्रभु पारब्रहम,करता जन नामी ॥३॥१६५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ जिनि जन हरि प्रभु सेविआ,सोई वडभागा ॥ नाम धिआवै दिनसु राति,अनदिन सद जागा ॥१॥ साध संगि लिव लाग रहि,रस आनंद पागा ॥ माया कदे न विआपई,प्रभु के लड़ि लागा ॥१॥ रहाउ ॥ गुण सागर लहि डुबकीआं,रतनन कर आगा ॥ अंतरि जोति प्रगासिआ,तम सगरो भागा ॥२॥ पाया लाभ बेतोटवा,बल गिआन चरागा ॥ श्रीचंद्र नित गुण रवै,कबि पड़ै न नागा ॥३॥१६६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ हउं बलिहारी साजना,जिनि राम धिआया ॥ हरि प्रभु प्रीतम ऊपरै,घर बार लुटाया ॥१॥ आपन झुग्गी जाल कै,परकास कराया ॥ तन मन धन सभ वारिआ,किआ अपन

पराया ॥१॥ रहाउ ॥ दुबिधा लीक उलंघ करि,भ्रम भेद मिटाया ॥ सागर छीर समानिआ, हरि बिनसी माया ॥२॥ चौदहुँ लोक ब्रहमंड महि,इक नाद वजाया ॥ एको एकी श्रीचंद्र,नहिं दूजा भाया ॥३॥१६७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ जिनि जिनि नाम धिआया,प्रभु पाछै धाई ॥ फेरे देहुरा दास हितु,दुरजन पिछवाई ॥१॥ थंभ फाड़ प्रगट भया,हिरणकसिप घाई ॥ चंद्रहास की पत रही,बिखिआ बिख पाई ॥१॥ रहाउ ॥ तपतै तेल कटाह महि,जन नहि रोम छिजाई ॥ सागर गहिरे बूडते,कर गहि लए बचाई ॥२॥ अगनी दाह न सकई,किरपा द्रिस्टि बरसाई ॥ श्रीचंद्र सस्त्र असस्त्रन,प्रभु करि देत हवाई ॥३॥१६८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सत्गुरु पूरा सेविऐ,पाइऐ फल मंगै ॥ हरि हरि नाम आराधिऐ,अनुदिन रंग रंगै ॥१॥ सांति सहिज सुख ऊपजै,कबि होइ न भंगै ॥ साध जना की चरण रेणु,मज्जन कर गंगै

।।१।। रहाउ ।। गुण निधान प्रगट भया,रिद ऊच उमंगै ।। गुरुमुख मन परगासिआ,जपु अनत तरंगै ।।२।। जोती जोति जगाईआ,रविआ अंग अंगै ।। श्रीचंद्र विसमाद रस,संतन सतसंगै ।।३।।१६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। उलट कमल सूधा भया,जपु नाम मुरारी ।। ब्रहमाणी भी गंग न्हाइ,मल ढोति चंडारी ।।१।। अगनि बुझी सीतल भए,हिमगिरि रस ठारी ।। ग्रिह ग्रिह जोहत मांगते,त्रिपते त्रिपतारी ।।१।। रहाउ ।। आपहुँ बूडत सागरै,होए भव तारी ।। थाक परे पग चलत चलत,ते जन असवारी ।।२।। अजगर बिखिआ बिख भरे,रस सुधा संचारी ।। श्रीचंद्र दिसि ऊजली,बीती निसि कारी ।।३।।१७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाम पदारथ दुरलभ है,किनै विरलै पाइआ ।। जनम जनम माया मुहिआ, हरि नाम धिआइआ ।।१।। सत्गुरु पूरा भेटिआ,रवि प्रगटाइआ ।। पावक जंगल वेड़िआ,सीतल होताइआ ।।१।। रहाउ ।। ऊणे ते ऊणा महा,भरपूर कराइआ ।। जग कड़ुआ प्रभु नाम सिउं,अम्रित

रस पाइआ ॥२॥ औझड़ भूले भटकते,रहबर हथ आइआ ॥ सत्गुरु भेजिआ श्रीचंद्र,अविनासी राइआ ॥३॥१७१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ मन लागा गोबिंद सिउं,बंधन सभ डारे ॥ मात पिता सुत बंधु मीत,प्रभु साक हमारे ॥१॥ हम ता के वहु मेरड़ा,अंतरि निरवारे ॥ जहँ जहँ जाईए जगत महि,तहँ तहँ ही ठारे ॥१॥ रहाउ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस,सभि तिसहि पिआरे ॥ रोक टोक नहि कहू को,दर खुले किवारे ॥२॥ सभै वेला वखत सभि,प्रविसै हरि दुआरे ॥ सभ ते वडा श्रीचंद्र,जिहँ नाम अधारे ॥३॥१७२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ ऊचे ते ऊचा महा,ता का दरबारा ॥ लाख पैगंबर औलीए,दर खड़े हजारा ॥१॥ सिध साधक लख कोटि गण,हथ बंद पुकारा ॥ देवी देवा कुतब गौस,कोटहुँ अवतारा ॥१॥ रहाउ ॥ अबदालन को बदलता,जुग जुगन मझारा ॥ मन वांछित नित जाचते,हरि करता सारा ॥२॥ लाखहुँ

सिद्धिआं ले रहहि,अनखुट भंडारा ।। आदि अंत नहिं श्रीचंद्र,को करहि सुमारा ।।३।।१७३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरु अविनासी सेविऐ,हरि नाम धिआइऐ ।। पूरब होवै लिखिआ,मन चिंदिआ फल पाइऐ ।।१।। बुधि निरमल परगासीआ,सभ ठौर सहाइऐ ।। तोट न आवहि जुगहुँ जुग, हरि कीरति गाइऐ ।।१।। रहाउ ।। भरे खजानै सभि निधान,गुणगाह लहाइऐ ।। मनमुख थाउं न पावई,हउमै भरमाइऐ ।।२।। जिनि जन पाइआ साध संगि,उर सांति बसाइऐ ।। श्रीचंद्र रंग रंगिआ,मेटी मल काइऐ ।।३।।१७४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पारब्रहम तिन सिमरिआ,जिहँ मस्तक भागा ।। साधु संगि रस आइआ, निसदिन सद जागा ।।१।। बिख बिखिआ परिहर परे,आतम रंग लागा ।। हउमै गरब निवार कै, संगि कूड़ तिआगा ।।१।। रहाउ ।। एको एक पछाणिआ,जाणिओ घर आगा ।। तूटे माया बंध सभ,वसि कीनिओ नागा ।।२।। जनम जनम कसमल हरै,सर संत मजागा ।। श्रीचंद्र अद्भुत सोऊ,दुरलभ

दरसागा ।।३।।१७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। माटी जड़ महि जिहँ प्रभू,चेतनता डारी ।। आपे नूं आप धोवदी,अनधोई कुमारी ।।१।। पावन कबहु न होवई,सागर सत नारी ।। खिन महि पापन लादई,खिन महि पुंन झारी ।।१।। रहाउ ।। खिन महि सुरगहुँ ऊरधी,खिन महि पातारी ।। खिन महि ग्राह्य सरब की, खिन महि तरकारी ।।२।। खिन महि फासी काल जम,खिन माहि निरारी ।। श्रीचंद्र अद्भुत कथा,हरि पुरुख मुरारी ।।३।।१७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन पंखी करमन परा,उड उड चल जावै ।। कभी ऊचे कभी नीच थां,भटकै भटकावै ।।१।। सुख दुख भोगन भोगता,थिर होत न थावैं ।। पुरीआं ऊच बिलोकई,पाताल समावै ।।१।। रहाउ ।। कमल वासना भवर लहि,विस्टा लपटावै ।। चंदन गंधै सेवई,अक डाल रमावै ।।२।। मोती चुगता हंस होइ,बक डडाँ खावै ।। श्रीचंद्र रंग रली माण,विरक्त बनावै ।।३।।१७७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || बिख बिखिआ रस मोहिआ,दुरमति दुरभागी || साधु संग परमल तजै, विस्टा अनुरागी ||१|| हउमै माया मोहणी,म्रिग त्रिसना लागी || हरि चंदउरी वास करि,को निद्रा पागी ||१|| रहाउ || फूटे बोहिथ सागरै,कस उबरै भागी || मारग कहूँ न सूझई,बन दहदिसि आगी ||२|| सत्गुरु बिना न राखई,जग को को थागी || श्रीचंद्र गुरुमुख लहहि,हरि नाम तड़ागी ||३||१७८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || मनमुख मूल गवाइआ,लब कूड़ लुभाना || वेद पुकारे दिनसु राति,मन माहिं हिराना ||१|| तीरथ वासा लोभ लाग,कूड़ा इस्नाना || आवै जाइ पुरीआ घणी,धामन बिहराना ||१|| रहाउ || पंच अगनि परजालिआ,तन मध्य झुलाना || भसम चढ़ाई अंग सिर, दुआदस तिलकाना ||२|| रंग बिरंगे बसन धरि,थित भयो नगाना || श्रीचंद्र रति लोभ सिउं,सिर छार उडाना ||३||१७९||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। भ्रम भ्रम जनम गवाइआ,परबत अवगाहे ।। मौन साध मंत्रन जपै,जल डार चुराहे ।।१।। गंढ गवाई आपणी,गल पाए फाहे ।। कूड़ो कूड़ कमाइआ,दुख जाल अथाहे ।।१।। रहाउ ।। पाहन खाइ न सीरनी,किमि भोग सराहे ।। हाथ उचाइ न सिर थरे,कबि बिनय अगाहे ।।२।। कूड़ विहाजै कूड़ लहि,जम कै घर माहे ।। श्रीचंद्र सत्गुरु बिना,अंधे गुमराहे ।।३।।१८०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पूरब होवै लिखिआ,सत्गुरु प्रभु मेले ।। ऊजल आतम प्रगटए,हरि के हरि मेले ।।१।। साधू बिना न छूटई,माया रस केले ।। गोबिंद प्रीति न ऊपजै,करमन के ढेले ।।१।। रहाउ ।। जिनि जिनि पाया साध संग,रंग नाम रंगेले ।। प्रगट भए तिहुँ लोक महि,नाराइण चेले ।।२।। चरनी तीरथ वासते,देवी देवेले ।। श्रीचंद्र अति ऊच सो,आतम हरि मेले ।।३।।१८१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। किस बिधि वासा पाइऐ,हरि नाम मुरारी ।। हउमै छूटै कवन बिधि,मिथिआ

अपधारी ॥१॥ रंगनि रांग रंगाईए,को पाइ ललारी ॥ द्रिस्टि आवै प्रभु आपणा,किमि होइ द्रिस्टारी ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि भ्रम निव्रित होइ,संसै व्रिति हारी ॥ मन कलपन किसि बिधि मिटै, कहिऐ उपकारी ॥२॥ जिस प्रभु अपनी मया करि,दे संत संगारी ॥ श्रीचंद्र गोबिंद भजि,रस सिंधु बुडारी ॥३॥१८२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ छोड सिआणप चातुरी,लगि संतन संगा ॥ सुख देवे प्रभु भला है,दुख देवे चंगा ॥१॥ जे भावे करम नास न्हाइ,जे भावै गंगा ॥ भावै पच्छिम ले चले,भावे कालंगा ॥१॥ रहाउ ॥ भावै भीख मंगाइ लै,भावै बाटंगा ॥ भावै पाट पटंबरा,भावै नंग नंगा ॥२॥ तखत बहालै भाणिओ,रोले भसमंगा ॥ श्रीचंद्र सुख साधु संग,सिमरत त्रिभंगा ॥३॥१८३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ संत सरोवर न्हाइ कै,कसमल सभ टारै ॥ माया बंधन काट कै,हरि नाम समारै ॥१॥ जिस पूरब होवै लिखिआ,तिस संत संगारै ॥ ऊजल मन मल उतरै,चमकै चंदारै ॥ १॥ रहाउ ॥

गगन मंडल महि जाइ कै,मंदाकिनि नावारै ॥ दामनी कोटि परकास लहहि,रवि कोटि उजारै ॥२॥ सरबे थाई निरमला,आतम दरसारै ॥ श्रीचंद्र सम ना लहहि,जग जंत अपारै ॥३॥१८४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ रतन जवाहर माणका,बिरला पहिचानै ॥ पुहपन अनिक सुगंधिआ,गंधी के खानै ॥१॥ नाग समाणै चंदनै,रहि है लपटानै ॥ कमल वास भवरा लहै,जिंदड़ी कर हानै ॥१॥ रहाउ ॥ दीपक पेख पतंगड़ा,भुल जात टिकानै ॥ पाणी मीन पछाणिआ,निज जीवन दानै ॥२॥ धरती गाहक जाणीआ,पाए खलहानै ॥ श्रीचंद्र साधू जना,गोबिंद गुण जानै ॥३॥१८५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ बिन साधू नहि सुझई,प्रभु का दरबारा ॥ रतन जवाहर माणका,मणीआ भरे भंडारा ॥१॥ ऊचे ते ऊचा महा,हरि अगम अपारा ॥ कोटिन कोटि वरसाइंदे,नहिं अंत सुमारा ॥१॥ रहाउ ॥ जुग जुग भगत उबारदा,दुस्टन संघारा ॥ बिघन न लागै कहूँ बिधि,हरि कीनी कारा ॥२॥ बिखिआ अम्रित होवई,प्रभु नदरि मझारा ॥ निरमल निरमल श्रीचंद्र,चमकै

चमकारा ॥३॥१८६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ कूड़ी माया मोहिआ,मनमुख दुख पाई ॥ धंधै काम विआपिआ,कर लंमी दाई ॥१॥ लाख करोड़ी अरब खरब,बहु गंज कराई ॥ भाई पूतन साक सिउं,धर रखी छपाई ॥१॥ रहाउ ॥ आप न पहिरन खाइआ,नहि अनत खवाई ॥ तन धरती ते ढहि पया,सभ भई पराई ॥२॥ लेखा सिर ते आइआ,चित्रगुप्त कढाई ॥ श्रीचंद्र मनमुख महा,दुख सहै अजाई ॥३॥१८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ जग जीवन दिन चार है,थिर सदा न रहिणा ॥ बिरध भए तन कंपिआ, को सुणै न कहिणा ॥१॥ माल पसू धन संचिआ,पिठ मंजा बहिणा ॥ महिल अटारी उचीआं,गज चूने रहिणा ॥१॥ रहाउ ॥ नैणी नीर बहावई,कढ कंठे गहिणा ॥ पाणी कोइ न देवई,भुख आगल सहिणा ॥२॥ रोग असाध न जावई,अउखधि निरवहिणा ॥ श्रीचंद्र गोबिंद भजि,तजि कै सभि चहिणा ॥३॥१८८॥

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। एको नाम नाराइणा,है संगी तेरा ।। किउं कूड़े लपटाइआ,गल पाइआ झेरा ।।१।। आपण कीता पाईए,रवि उदै सवेरा ।। दारा मीत न पूत बंधु,काढण की बेरा ।।१।। रहाउ ।। पेख गरीबन मिहर करि,आगै पुन हेरा ।। नंगे को कछु कापर,दीजै बिन बेरा ।।२।। जीवन दान अनाज का,पै है बड ढेरा ।। दया दान श्रीचंद्र लहि,कुल फूल फुलेरा ।।३।।१८९।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरुमुख मन समझाइआ,हरि मारग पाई ।। आगै सोऊ पाइ है,जो करी कमाई ।।१।। नाम दान इस्नान द्रिढ़,गोबिंद लिव लाई ।। पुंन दान चंगिआइआं,दरगह वरसाई ।।१।। रहाउ ।। आपण हत्थीं बीजिऐ,आपे वढ खाई ।। आइआ लाहा लैण तूँ,मत रास गवाई ।।२।। सिमरन हरि प्रभु साध संग,दरगह पतिआई ।। श्रीचंद्र जग जीवना,उड जाति हवाई ।।३।।१९०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। ब्रहमण ब्रहम पछाणिआ,रंग नामहि लागा ।। वेद वखाणै तत्तु लहै,रस विद्या

पागा ॥१॥ गिआन परकास चानण भया,रवि उदयो भागा ॥ सत संगति गुण उचरै,सोवत निसि जागा ॥१॥ रहाउ ॥ एको एक समाइआ,सत चित अनुरागा ॥ सभ जग सम उपदेसदा, धरम पंथ सभागा ॥२॥ दया दान संतोख ब्रत,संतन सिउं लागा ॥ श्रीचंद्र हरि भगति द्रिढ़, पूरन वडभागा ॥३॥१६१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ केवल संतन टेक है,मन तन उर माही ॥ साथी लोक परलोक के,सद ही हित चाही ॥१॥ अंधकार कलि घोर महि,सुभ मारग पाही ॥ राग नाद सभ गुणनिधान,जन पै वरसाही ॥१॥ रहाउ ॥ दुबिधा दूजा भाउ हत,इक ब्रहम लखाही ॥ संतति कमलज जगत सभ, अन वरण न काही ॥२॥ साधन एकै राम नाम,जपि पार पराही ॥ श्रीचंद्र मल अंतरी,कबि थिरती नाही ॥३॥१६२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सत्त वचन साधू कथहि,जग मिथिआ जाना ॥ कूड़ कपट वल छल तजै,मोह लोभ

अभिमाना ॥१॥ एको एक पछाणिआ,सभ एक समाना ॥ प्रतिपालक जिअ जंतु का,पूरण भगवाना ॥१॥ रहाउ ॥ सखी संग सिधार ही,जम कै अस्थाना ॥ भुज गहि राखत हाथ दै,जहँ कस्ट महाना ॥२॥ अपन संदेसा देत है,आपहि भगवाना ॥ बिनु साधू श्रीचंद्र को,नहि पूजन ठाना ॥३॥१९३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ बिनु साधू जीवन बिरथा,दूखन की बारी ॥ कैसे आतम सुख लहहि,वसि सरप अगारी ॥१॥ माया धंधै धावणी,त्रिसना अगनारी ॥ मारग द्रिस्टि न आवई,बन कंटक झारी ॥१॥ रहाउ ॥ मरतो मरतो मर रहिओ,जड़ आयु गुजारी ॥ हेतु लगायो जाहि सिउं,तजि गे सुत नारी ॥२॥ पंथ लमेरे पड़ि गयो,चुक कालर भारी ॥ चिंता सागर श्रीचंद्र,को नाहिन तारी ॥३॥१९४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सोऊ करम कमाइओ,जिहँ सिउं पछतावै ॥ अउघट गलिआं भीड़िआं,जम डंड लगावै ॥१॥ जपु तपु संजम परिहरै,परधन ललचावै ॥ जारी चोरी बाटपार,सुत सुता खिडावै ॥१॥

रहाउ ॥ अजगर भार उठाइआ,नित कंध छिदावै ॥ त्रिसना जाली पंखि मन,नित भोग भुगावै ॥२॥ बूडा सागर मौत कै,बहु गोते खावै ॥ काल फास श्रीचंद्र फसि,नरकै समुहावै ॥३॥१९५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि नाम आराधिऐ,मन सोइआ जागै ॥ साध संगति कै बासबै,कसमल कलि भागै ॥१॥ गुरुमुख दान इस्नान रति,प्रभु भगती पागै ॥ जपु तपु संजम कीरतन,राग नाद सभागै ॥१॥ रहाउ ॥ गरब निवारे आपणा,संतन लिव लागै ॥ कूड़ कपट अहंकार मोह,दुरमति दुर तिआगै ॥२॥ मन की मैल उतारिऐ,न्हाइऐ प्रयागै ॥ ऐत सुहेला श्रीचंद्र,सद आनंद आगै ॥३॥१९६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ एक टेक गोबिंद की,मन तन उरधार ॥ बिन नाराइण सिमरिऐ,नहि करम निवार ॥१॥ माया मनहु न बीसरै,फाथा महा जार ॥ हउमै दुबिधा रोग वड,नहि होत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ अगिआन अंधेरा पसरिआ,निसिकाल मझार ॥ चंद गिआन को होत नहिं,कतहूँ चमकार ॥२॥

मारग धरम गवाइ कै,भूला संसार ।। श्रीचंद्र भजि राम नाम,लहि मोख दुआर ।।३।।१६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधु जना रस पाइआ,मत चढ़ी खुमारी ।। बंधन छूटे मनहु ते,माया परिवारी ।।१।। निसि अंधिआरी मिटि गई,प्राची उजिआरी ।। चुहचानी चिड़ीआ घणी,कमलन खिल बारी ।।१।। रहाउ ।। रवि रस्मि परकासिआ,चक्रवाक पुकारी ।। उडु मंडल गगनै छिपा,चंद चंद्रिकी हारी ।।२।। कुमुद मूंद मुख मूधड़े,खटपद गुंजारी ।। नित क्रिपाल श्रीचंद्र जिहँ,हरि लागी तारी ।।३।।१६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन तन लालो लाल है,गोबिंद रंग राते ।। संगि मित्रता सुरसरी,न्हावण परभाते ।।१।। नाम नाराइण निरमला,सिमरत सत साते ।। सिर लौ दानी सूरमे,जग को वरसाते ।।१।। रहाउ ।। रहबर मारग धरम के,सत करम कमाते ।। हरि प्रभु माधव राम नाम,धुनि महि मंडराते ।।२।। मन बांछित वर पावते,सरनी चलि आते ।। श्रीचंद्र कीरति करत,कबि नहि

त्रिपताते ॥३॥१९९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ संगति साधू जना की,मुख अम्रित बाणी ॥ अमर भए त्रिपतासिआ,हरि नाम समाणी ॥१॥ अंतरि सहिज सुख ऊपजै,झरि सीतल पाणी ॥ अनुभव ब्रहम प्रगासिआ,जपि सारंग पाणी ॥१॥ रहाउ ॥ जिन को पूरब लिखिआ,पाया निरबाणी ॥ करम परापति होइआ,सुख रैणि विहाणी ॥२॥ जीवन रूप नाराइणा,सद ही कलिआणी ॥ श्रीचंद्र संसै विगति,नर आवण जाणी ॥३॥२००॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ साधु संग मन निरमला,सच नाम धिआया ॥ तीरथ नाम इस्नान करि,पावन पद पाया ॥१॥ सच्चे सच्च प्रगासिआ,गुरु अमर कराया ॥ हउमै गरब निवारिआ,भाउ दुतिय तजाया ॥१॥ रहाउ ॥ चानण गिआनहि सूरजों,अंधकार गवाया ॥ सांति पई आतम रसै,चंद गगन सुहाया ॥२॥ ऊधा सूधा होइआ,कमला उलटाया ॥ स्याम सुंदर श्रीचंद्र रंग,दहदिसि

प्रगटाया ॥३॥२०१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ पूरे गुरु उपदेसिआ,हरि नाम सखाई ॥ जहँ जहँ जन कउ भीड़ है,तहँ होत सहाई ॥१॥ भवसागर महि डूबते,गहि भुज निकसाई ॥ त्रिसना भूख बिनासिआ,रस सुधा समाई ॥१॥ रहाउ ॥ मीत भए सगरे जना,उर वैर गवाई ॥ पंच राज आकी भए,गुरु विजै कराई ॥२॥ गढ़ टूटा माया महा,गुण भगदड़ पाई ॥ अबिचल राज श्रीचंद्र की,सभि फिरी दुहाई ॥३॥२०२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ कूड़ो कूड़ विआपिआ,मनमुख दुख पाया ॥ अहनिसि धंधे धावणी,सिर भार उठाया ॥१॥ कूड़ा सौदा वणजिया,फल लाह गवाया ॥ थाउं न पावहि कतई,जनमन भरमाया ॥१॥ रहाउ ॥ त्रैगुणि माया मोहिआ,अहंमेव वधाया ॥ जलपत जलपत जल मूआ, पावक त्रिसनाया ॥२॥ गोते खाइ न निकलै,चक्र चकराया ॥ गुरु पूरे बिनु श्रीचंद्र,दुखो दुख आया ॥३॥२०३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || उर काले मुख कालिआ,प्रभु नाम न चेते || पका अंन खवाइआ,कूंजन कहुं खेते ||१|| निसि अंधिआरी कालीआ,राहे अनभेते || पग पग ठोकर खावई,पाहन गढ एते ||१|| रहाउ || पंथ पधारे लंमिआ,कंटक झाड़े ते || तपतै तपत चलाइऐ,जम मारग रेते ||२|| मूत पुरीखै सिउं भरी,सरिआ लहरेते || श्रीचंद्र दुख पावई,मनमुख हर हेते ||३||२०४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || मद तप ते तपसी भरा,अनचेत भया है || जोगी जोगहि धिआन मद,बहु सोइ रहिआ है ||१|| पढ़ पुरान पंडित मद,ग्रिह भूल गया है || मुल्लां पढ़त कुरान मद,काजीए कजा है ||१|| रहाउ || राग मद रागी पिआ,सुधि बुधि हरा है || करमन मद करमी गहा,मन झूलि चुराहै ||२|| निसि अंधिआरी चोर घुसि,सुंन भीति करा है || धन लुटिओ हरि श्रीचंद्र,रंक खरा कराहै ||३||२०५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन माया का वेड़िआ,हरि प्रभू न जापै ।। त्रैगुण बिखिआ बिख भरी,निसदिनु संतापै ।।१।। वल छल कपट कमाइंदा,मारे नित छापै ।। अंतरि जहर न उतरै,भरि अजगर सापै ।।१।। रहाउ ।। लाई त्रिभुवण मेखली,जग काल विआपै ।। जो आइआ सो जावसी,सूझत नहि आपै ।।२।। भार उठाया कालरी,सिर भारै पापै ।। बिन साधू नहि श्रीचंद्र,हरि लहहिं प्रतापै ।।३।।२०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। फूक भरी हउमै मनहि,फूलिओ भूकाना ।। काल सदा सिर पै खड़ा,करि नगन क्रिपाना ।।१।। मद माया कै मोहिआ,ह्वै रहिओ दिवाना ।। उलटै चलण चलणा,पहिरन तन खाना ।।१।। रहाउ ।। कीरति हरि बिसराइ कै,रंग राग लुभाना ।। किआ सासन भरवास है,किमि गंठ गठाना ।।२।। निज इच्छया नहि आइआ,निज इच्छ न जाना ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम जपि,तजि कूड़ा माना ।।३।।२०७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ मनमुख नाम न जापई,कूड़े भरवासे ॥ मंदर महल अटारिआं,मिट्टी के खासे ॥१॥ मात पिता सुत बंधु जन,किआ करि अहसासे ॥ रतन जवाहर माल धन,चमकत चहुँ पासे ॥ १॥ रहाउ ॥ छोडि चलै मित भाइआं,डोले लाडासे ॥ राज जगीर न संग कछु,पेखन तामासे ॥२॥ बाग सुहावे सोहणे,फुल फूले वासे ॥ श्रीचंद्र छडि चढ़ि गया,ऊचै आकासे ॥३॥२०८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ शक्तै शक्ति वास है,बुधि लहहि बिबेक ॥ द्रस्टा बिनु द्रिस्टी कहा,कर करमन टेक ॥१॥ बिना स्त्रौण स्त्रौणी नहीं,पद चालहि एक ॥ धरम धरमिऐ थिरत है,हरि माया मेक ॥१॥ रहाउ ॥ आनंदी आनंद लहि,परसहि त्वक नेक ॥ घ्राण समायो घ्राणीया,रसीआ रसनेक ॥२॥ सुख दुख मन अनुभउ करै,मिलि अमिलि अनेक ॥ श्रीचंद्र बिन संत कै,नहि गिआन इकेक ॥३॥२०९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ जल महि अगनी थापिआ,पावक महि पाणी ॥ पवण माहि धरणी धरी,धरणी

असमाणी ॥१॥ जड़ तत्तन की देह रचि,तत्तन ही खाणी ॥ मारुत देह आधार रचि,भोगत अंनाणी ॥१॥ रहाउ ॥ अंडज ते उदभिज रचे,जेरज स्वेदाणी ॥ पाणी बूँद धर विचरही,मांगत भी पाणी ॥२॥ आपहि मोह उपाया,आपहि मोहाणी ॥ श्रीचंद्र माया प्रभू,विसमै रिद जाणी ॥३॥२१०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ तन माया मन ईस्वरो,इक मेल मिलाया ॥ तन मन भिंन न होवई,लख जतन कराया ॥१॥ तन मिथिआ मन सत्त है,असचरज लखाया ॥ सबै साच दोइ पक्ख रचि,इक माहि समाया ॥१॥ रहाउ ॥ मन राजा सभ जगत का,बहु रूप उपाया ॥ कतहुँ भोगत भोग को, निरलेप रहाया ॥२॥ देवी देवन थान इह,पारब्रहम कहाया ॥ सोऊ जानै श्रीचंद्र,पूरण गुरु पाया ॥३॥२११॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ खिन महि पापन खोड़ कै,मन पूत सुहाणा ॥ पुंनी खिन महि पाप रति,जा नरक समाणा ॥१॥ त्रिसना जलता नित फिरै,ठंडक सुख माणा ॥ उद्दम करत अनेक बिधि,मानै द्रिढ़

भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ त्रिहुँ लोकन को राज पाइ,रंक भयो निमाणा ॥ जंतु अनेक बधाइंदा, आपहि बधमाणा ॥२॥ दुख को सुख,सुख को दुखन,करि खेल खिलाणा ॥ श्रीचंद्र मन साध कै, सिध भा निरबाणा ॥३॥२१२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ सुख मानै मन भीतरै,सिर करवत लेवै ॥ सुख मानै मन भीतरै,हिमगिरि जल सेवै । सुख मानै मन भीतरै,अंग सूली भेवै ॥ सुख मानै मन भीतरै,राजन हटकेवै ॥१॥ रहाउ ॥ सुख मानै मन भीतरै,अगनी तन हेवै ॥ सुख मानै मन भीतरै,सुरसरि डुबकेवै ॥२॥ सुख मानै मन भीतरै, बारू तपतेवै ॥ श्रीचंद्र सुख मान कै,भुख त्रिखा सहेवै ॥३॥२१३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ दुख सीढ़ी हरि महल की,सुख आस समावै ॥ उस्न सीत बरखा सहहि,जपु तपु लिव लावै ॥१॥ राज माल वडिआइआं,परिहर करि दावै ॥ पाट पटंबर अनिक बिधि,भूसण तजि धावै ॥१॥ रहाउ ॥ मंडप अटा सुहाणीआं,चित्रित न सुखावै ॥ चंद्रमुखी तरुणीन मुख,लख उर

डरपावै ॥२॥ तरु छाया तन नगन ते,हरि हरि जस गावै ॥ श्रीचंद्र गुरुमुख भया,सुख सहिजा पावै ॥३॥२१४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ भोगन महि बिरमाया,रोगन कहु पावत ॥ मानी मान गवाइकै,हीणा होइ जावत ॥१॥ अभिमानहि ऊचा भया,नीचै कउ धावत ॥ सुख हित धावत दहदिसा,दुख अग्रज आवत ॥१॥ रहाउ ॥ सुरलोकै कउ धाइआ,पाताल सिधावत ॥ कर महि अम्रित पाइ कै,मुख पाइ न सावत ॥२॥ रंग चढ़ा मद मोह का,खिन माहि बिलावत ॥ जहि हेतुन करि श्रीचंद्र,हरि प्रभु लखिआवत ॥३॥२१५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ **राग बिलावल** ॥ गूढ़ कथा गोबिंद की,मन मनहि सुणावै ॥ पापो पाप कमाइंदा, मन ही तरकावै ॥१॥ झूठहि झूठ वखाणिआ,सत को उपजावै ॥ जीवन कोटि संघारदा,छुरिका सट पावै ॥१॥ रहाउ ॥ सतपुरुखन का निंदको,संत रूप बनावै ॥ कामनि रस लपटाया,जत कै थिर

थावै ॥२॥ त्रिसना धन मन हिर लया,निरविरिति समावै ॥ श्रीचंद्र निधि जोग लहि,गुरुमुख हरखावै ॥३॥२१६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ गुरुमुख होवै सो सुणै,मन केर आवाजा ॥ सत्तो सत्त वखाणदा,इक रस सद गाजा ॥१॥ किउं मिथिआ लपटाइआ,कूड़े सभि साजा ॥ नाम जपो नामहि सुणो,राजन महाराजा ॥१॥ रहाउ ॥ जो आइआ सो जावसी,झूठो कच पाजा ॥ गुरु पूरा नित सेवीए,लहिऐ सुख साजा ॥२॥ बेमुख निगुरे साकती,दुख नरक दराजा ॥ खुलिआ करम जिस श्रीचंद्र,गुण सबद अगाजा ॥३॥२१७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ कंचन रूपा माल सिउं,नहि पाईए राम ॥ मोहि मिलिआ प्रभु आपणा,मन कै बिस्राम ॥१॥ मन की मैल उतारीए,सत्गुरु की साम ॥ प्रगटै गोबिंद गोप सिउं,स्वेता अभिराम ॥१॥ रहाउ ॥ आपन अंतरि ऊपजै,सुख सहिज अनाम ॥ कथनी बदनी बीसरै,चित आनंद धाम ॥२॥

आपहि कहि आपहि सुणै,दूसर नहि आम ।। मरण न चिंता श्रीचंद्र,जीवन नहि काम ।।३।।२१८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन साधै सिधि पाई,नवनिधि निधाना ।। मन बिन सांति न सहिज सुख,नहि ब्रहम सुगिआना ।।१।। मन थिर करि जपु जापीए,पद लहि निरबाना ।। लहि गारुड़ मन गारुड़ी, बिख सकल हिराना ।।१।। रहाउ ।। मन बिनु कछू न फल लहै,पढ़ि वेद पुराना ।। मन बिन कूड़ै तीरथी,दुख पाए जहाना ।।२।। सभ देवन को देव मन,घर गुण गण नाना ।। श्रीचंद्र सत्गुरु सरणि, थिर भयो टिकाना ।।३।।२१९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पूरा सत्गुरु जे मिलै,मन खोलै ताला ।। खिड़की कपाट खुलानीआं,दसवां दर आला ।।१।। रतन जवाहर माणकन,हीरन गुण माला ।। कंज सहस दल विकासिआ,बहु सुगंध बिसाला ।।१।। रहाउ ।। पूरण जोति प्रगासिआ,दहदिसि उजिआला ।। पारस छुह लोह कंचना,

बहुमुली चाला ।।२।। कीरति छत्र झुलाइआ,तखतै दरहाला ।। थिरिओ थान निज श्रीचंद्र,गति मुकत भुपाला ।।३।।२२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। प्रभु बिन दूजा को नही,प्रतिपालनहारा ।। जिनहि उपाइ बिनाहि तिनि,सो देइ आधारा ।।१।। लख चुरासीह मेदनी,जिअ जंतु अपारा ।। अंडज जेरज उदभिजां,नहिं होत सुमारा ।।१।। रहाउ ।। पाथर कीट उपाइ कै,तहीं देत आहारा ।। अनल सदा नभ बिचरतो,भूखा नहिं मारा ।।२।। सागर गहिरन अंन होइ,टापू जल खारा ।। सदा सम्हालहु श्रीचंद्र,जिहँ नाहिं बिसारा ।।३।।२२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। ठाकुर सेवे आपणा,हउ तिसि बलिहारी ।। सगरो जगत उधारदा,हरि का वापारी ।।१।। लख चुरासीह मेदनी,करदा प्रतिपारी ।। जीअ जंत वरसाउंदा,मन महि प्रभु धारी ।।१।। रहाउ ।। सगली स्रिस्टी साहिबै,मन माहि समारी ।। ऊच नीच भ्रम भेद भै,संसै

निरवारी ॥२॥ भाउ भगति गोपाल संग,अहनिसि उरधारी ॥ श्रीचंद्र चरनी पवहि,सगरे संसारी ॥३॥२२२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ हरि गुण राता प्रेम सिउं,गुरुमुख प्रभु चेते ॥ गुप्ता मारग परगटै,प्रभु केरे भेते ॥१॥ लाल रंग गूढ़ा चड़ा,उर दाग न सेते ॥ अहनिसि खीवा रक्त मनि,दुख सुख हरि नेते ॥१॥ रहाउ ॥ उनमीलत मीलत नैन,बैना हरि हेते ॥ मोहन माधव क्रिसन राम,गोबिंद गुण केते ॥२॥ गुरु पूरे कै सबद रस,रसिआ रवि खेते ॥ श्रीचंद्र गुण निधि बुड़ा,कंचन कण रेते ॥३॥२२३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ कौन कमी तिहँ सेवकै,जिहँ ठाकुर जाता ॥ सभ जग ता का दास है,हरि नामै राता ॥१॥ प्रतिपालक जीअ जंतु सभ,प्रभु पुरुख बिधाता ॥ गोबिंद गुण नित गाविऐ,अहनिसि परभाता ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सम्हालै दास को,मन तन विगसाता ॥ दुख न खवै हरि दास का,सारै पितु माता ॥२॥ अम्रित सागर पाइआ,जर म्रितु दुख हाता ॥ काण चुकी श्रीचंद्र जम,फारिओ क्रित खाता॥३॥२२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || सेवक की सद राखता,लज्जा भगवाना || जुगह जुगंतर अनिक जन,दै राखै पाना ||१|| निंदक दुस्ट पचि पचि मुए,नहिं रोम छिदाना || ताती वाउ न लागई,पावक थिर थाना ||१|| रहाउ || सागर लहिर अथाह महि,नहि खोए प्राना || हसती अंग न फोड़ई,भागत डरपाना ||२|| गए स्वास फिर आवही,जिहँ द्रिस्टि चलाना || श्रीचंद्र तिहँ का भयो,जिहँ सम नहिं आना ||३||२२५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || पारब्रहम प्रभु धिआइऐ,सुख उपजहि सांता || नाम धिआए अहनिसा, बिनसहि भ्रम भ्रांता ||१|| कलिमल पाप निवारिऐ,निरमल द्रिस्टांता || हउमै रोग न विआपई, नहि नरक सिधांता ||१|| रहाउ || संत संगि मन सुद्ध होइ,कालुख बिनसाता || घट घट वासी सरब थाँ,प्रभु पुरुख बिधाता ||२|| बुधि प्रगास आनंद रस,अम्रित बिखिआता || मन तन श्रीचंद्र एक ही, दूसर नहिं जाता ||३||२२६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। रामहि राम वखाणीए,मन आनंद उपावै ।। दुख न आई नेड़ कबि,हरि सिउं लिव लावै ।।१।। प्रभु क्रिपाल गुण नाइको,सभ स्रिस्टि समावै ।। पूरन एको एक हरि,जिअ जंत सुहावै ।।१।। रहाउ ।। नाराइण के नाम ते,जम दूर परावै ।। गुण निधान सभ भीतरै,गुरुमुख लख पावै ।।२।। मेरा तेरा छोडि कै,हरि सिउं लिव लावै ।। श्रीचंद्र अबिचल तख्त,सिर छत्र झुलावै ।।३।।२२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन गढ़ भीतरि बसि रहे,पंचों बलवाना ।। चतुरंगी सेना लिए,संग बाण क्रिपाना ।।१।। माया खाई खाटीआ,गुण तीन विधाना ।। जो जो चढ़ि करि आइओ,हत भूमि गिराना ।।१।। रहाउ ।। राग द्वेस मद मतसर,रखवार महाना ।। रिखि मुनि देवी देवते,ब्रहमादि डराना ।।२।। गुरु प्रसादि इक साधु जन,तोड़िओ दुर थाना ।। श्रीचंद्र दै डंक को,भा राज रजाना ।।३।।२२८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिनि की पति हरि राख है,तिनि सम नहिं कोई ।। पहुँच न साकै कोइ जन, उपजिओ तिहुं लोई ।।१।। अहंमेव करि झड़ पए,निंदक पत खोई ।। दुबिधा हउमै बहु बुरी,दरगह नहिं ढोई ।।१।। रहाउ ।। कोटिन मध्य को एक आध,विरलो जन होई ।। लाखहुँ खावत पाछ तिहँ,इक नाम रसोई ।।२।। धरति पताल अकास लख,जल थल अविलोई ।। श्रीचंद्र रंग राम नाम,लालहु लालोई ।।३।।२२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरु अविनासी आइआ,दै धरम नगारा ।। सबद बाण धनु बुद्धि ते,कीनिओ परिहारा ।।१।। पंच दूतन को वेधिआ,रण भूमि मझारा ।। पंची इमदादी पड़े,तन सुधि बिसारा ।।१।। रहाउ ।। शक्ति गवाई शक्ति की,खग दिओ बिडारा ।। तम अगिआन नासिओ,रवि उपजिओ भुनसारा ।।२।। विजै भई तिहुं लोक महि,भा जै जैकारा ।। श्रीचंद्र कलि घोर महि,होयो उजिआरा ।।३।।२३०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || दुस्ट दूत मुख कालिआ,निंद संत अलाई || हउमै गरब उपाइ कै,सिर छाई पाई ||१|| थुका दाढ़ी पै दीआ,पाहन वरसाई || जहँ जहँ राही जावंदे,धुंमड़ बड पाई ||१|| रहाउ || फल लागा दुख अति घणा,जग मुंह न लाई || निंदक निंदा करि पचे,निज कीआ कमाई ||२|| संत जना कै निंदकां,अति लही सजाई || श्रीचंद्र हरि गुण रवै,मन महि बिगसाई ||३||२३१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || प्रभु प्रीतम जिहँ बिसरिआ,सो गनहु अभागा || धोते कदे न उतरै,कालुख द्रिढ़ दागा ||१|| संतन की निंदा बदहिं,न्हावहि परयागा || कीता करतिआ सभ गया,रत विस्टा कागा ||१|| रहाउ || घोर नरक बिललाणिआ,सिर जम डंड लागा || अंतरि बिख अगनी तपै, मुख निंदा नागा ||२|| उर काले मुख कालिआ,कलि कालहि झागा || श्रीचंद्र अरड़ावई,को सुनहि न बागा ||३||२३२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सोहागणि मुख उजला,प्रभु प्रीतम सिउं नेहुँ ।। नित नित रलीआ माणई,रातीं अते देहुँ ।।१।। सभ सिंगार सुहाइआ,अंजन आंजिआ नैन ।। मांगी पाइ संदूर को,बोले मीठे बैन ।।१।। रहाउ ।। तपत बिनासी अंतरहुँ,सांति पई मन आइ ।। अकथ कथा प्रभु प्रेम की, परमानंद समाइ ।।२।। दूख भूख नहि विआपई,रंगी रंग गोपाल ।। श्रीचंद्र वर पाइआ,होई लालो लाल ।।३।।२३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिउं भावै तिउं राख लेहु,हम तेरे दासे ।। सुख दुख तेरी आगिआ,सभ किछु तुझ पासे ।।१।। गोबिंद हरि प्रभु मेरिआ,तेरे भरवासे ।। जहँ जहँ जाइऐ जगत महि,तहँ तहँ हितु खासे ।।१।। रहाउ ।। सगल उपाई स्रिस्टि तुझ,तुझ पहि अरदासे ।। वण त्रिण त्रिभुवन रव रहिआ, दहदिसि परगासे ।।२।। आपहि राखै हाथ दै,दुस्ट दूत बिनासे ।। बलिहारी श्रीचंद्र प्रभु,जिहँ उर अहिसासे ।।३।।२३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || सगली स्रिस्टि उधारदा,दै आपणा नाउं || संत सरोवर न्हाइ,हंस भए काले काउं ||१|| त्रिपत भई उर सांत,वसि निहचल सच्च थाउं || नाम दान इस्नान द्रिढ़,कीरति प्रभु गाउं ||१|| रहाउ || पारिजात आंगन हरा,हरिआवलि छाउं || आसा मनसा पूरीआ,पाइआ हरि नाउं ||२|| आपहि करम कराइंदा,फल आप भुगाउ || अनंद भया श्रीचंद्र मन,रस प्रीतम राउ ||३||२३५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || बिखम सु सच्च उचारणा,मौतहिं समुहाणा || बिखमों करम कमावणा,मंन प्रभु का भाणा ||१|| बिखमों वसि कर इंद्रिआँ,संजम उर लाणा || बिखम यति होइ चलणा,ताड़ी ला ताणा ||१|| रहाउ || बिखम है भगति कमावणी,होइ माण निमाणा || सत्गुरु सेवा बिखम है, दिनरैणि कमाणा ||२|| धरम न सौखा राह है,संग साधु समाणा || सेवक बणना श्रीचंद्र,निज आप गवाणा ||३||२३६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दास की लागी मनहि सिउं,सत्गुरु संगै प्रीति ।। जब लों तन महि सास है, कबहूँ न डोलै चीति ।।१।। सिर धर आगिआ चालणा,इह लोक सुख पाइ ।। प्रभु दरगाहै साथ ह्वै,एको हुकम समाइ ।।१।। रहाउ ।। दूख भूख नहि विआपई,सुखदाता मनि चीत ।। सदा सहाई संग प्रभु, नाम दान सिउं हीत ।।२।। दूजी जाइ न सूझई,का पहि करउं पुकार ।। ईत ऊत श्रीचंद्र कहु,एकै नाम आधार ।।३।।२३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। संता दासा होइ कै,सच्ची कार कमाइ ।। कूड़े लाग न लागई,अहनिसि हरि गुण गाइ ।।१।। साधु संगि नित वास होइ,निकट न भिटै माइ ।। निरमल बाणी मन वसै,सच्चै संगि समाइ ।।१।। रहाउ ।। गुरु सेवे मन उजला,कीरति करम कमाइ ।। जपु तपु संजम पाइऐ,हउमै गरब वंञाइ ।।२।। हरि दरगह वडिआइआं,पत पैधे मुख सूच ।। श्रीचंद्र परवाण होइ,तखत निवासै ऊच ।।३।।२३८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जिउं भावै तिउं राखीए,निरगुणआरे दास ।। करम कुकरम कमावणै,गल जम केरी फास ।।१।। मन महि पाप विकार अति,गुण वडिआईआं कूर ।। बिखै विलासी वेड़िया,जनम मरै नित झूर ।।१।। रहाउ ।। त्रिसना अहनिसि धावणी,काम विआपिआ माइ ।। दया विसारी अंदरहु,हउमै गरब बढाइ ।।२।। कूड़ै मोह लपटाइआ,जलत फिरै संसार ।। चरन कमल श्रीचंद्र कउ,दीजै प्रभू अधार ।।३।।२३९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। किस ही बिधि नहि लख सकहि,इस जनम के पाप ।। माया पटल न जानई, अनिक जनम संताप ।।१।। एक गया इक आइआ,नहि मन खाली होइ ।। कसमल जल घट पूरिआ, किमि सागर तरणोइ ।।१।। रहाउ ।। पंच नदी इक डुंमड़ा,भरि भरि कंधी ढाहि ।। गहिबर सुक बन लाग रहि,दावा तरुवर दाहि ।।२।। जाली फाथा म्रिग स्याह,कूदन फादन दूर ।। अब पछुताए श्रीचंद्र,जब गिर गयो खजूर ।।३।।२४०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। प्रभु हरि पिआरा राविऐ,आपण आप गवाइ ।। सत्गुरु सेवा गाखड़ी,सिर दे ना पछुताइ ।।१।। हसि हसि सूली परसिऐ,करवत हेठ कहाइ ।। ग्रीबा खड़ग सहारीए,कंध न कबहुँ डुलाइ ।।१।। रहाउ ।। तत्ती लोही नचणा,कबहु न हुटै चाइ ।। सागर डूबै प्रेम कै,तरन भवै तर जाइ ।।२।। अगनी दाहों ऊपजै,सीतल ठंडी वाइ ।। मास जंबूरी श्रीचंद्र,टुक टुक पइऐ थाइ ।।३।।२४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। जहर पिआला अम्रित होवै,ब्रहमणि होइ चंडाली ।। अगि अंगारै धड़ धड़ दमकै,फूल बिछाए माली ।।१।। कंटक सार सिहज विसतारी,सोइ रहिआ खुसहाली ।। तत्ती रेत पुहप बरखा,चढ़ी चवगणि लाली ।।१।। रहाउ ।। खंडे दी धारा पर नचण,मिलि मिलि आली आली ।। पुत्ती मास हसि हसि मुँह पाईए,नींह चिणाइऐ चाली ।।२।। टंगे नेजे फिरन बाजारी,बंधे प्रेमहि पाली ।। श्रीचंद्र किआ झूठा जीवन,जे हरि होइ क्रिपाली ।।३।।२४२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अगनि न सूरज जाल सकंदी,ससि सागर करि ठंडा ।। अजित अजेय सूर भट नागर,जीत उतारी डंझा ।।१।। जलपति टिटिभ सुकायो न जाई,पंखी जाल मोखै ।। म्रिग म्रिगबंध न जाइ बिहानो,रहहि लाग उर धोखै ।।१।। रहाउ ।। गूढ़ कहाणी अगम अगोचर,कथै कौण सुकदेवा ।। भासा पंखी किआ नर जानै,गिटकै अंदर मेवा ।।२।। सुधा पाक जे मिलै भाग वसि,बिनु भागै किमि लहीए ।। श्रीचंद्र जहँ मौन नहि पहुँचे,बोले ते किमि गहीए ।।३।।२४३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सरब साधारण सरब प्रतिपारण,क्रिपा निधान गुपाला ।। कारण करणहार करतारा,सभ बिधि दीन दयाला ।।१।। सरब ठौर सभ काल सहाई,सरब घटा घट वासी ।। सरब उबारण सरबे घारण,सभ प्रक्रिति बिनासी ।।१।। रहाउ ।। वाग डोर सभ की कर जा कै,जहँ खिंचहि तहँ जावै ।। कारण कारज सभ बिधि साजै,जिउं जिउं निज उर भावै ।।२।। अंतरजामी महल बिराजै, हुकम चलावणहारा ।। नाम सिमर श्रीचंद्र जीवता,सरबे मोख भंडारा ।।३।।२४४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। किआ कहिऐ किछु कहण न जाई,अलख अपार अगंमा ।। अपने सेवक कउ आप उबारे,टारे कोटि सहंमा ।।१।। दुस्टन सभा लाज द्रोपदी,राखी कापर साजे ।। जा का अंग करे प्रभु मेरा,ता कउ का महाराजे ।।१।। रहाउ ।। हिरणकसिप हित मारन धाइआ,पूतहिं मोह नसाई ।। थंम पाड़ नरहरि ह्वै आयो,जन कहु भया सहाई ।।२।। चहुँ जुग भगतन केर उधारत,वेद भनत मुख बाणी ।। श्रीचंद्र नित तिसहिं धिआवहु,पावहु पद निरबाणी ।।३।।२४५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। पारब्रहम पूरन अविनासी,आपहि राखणहारा ।। बिघन अनंत विनासहि खिन महि,अंग करे करतारा ।।१।। जलती बूझहि सीत जल पाई,सागर बोहिथ पाया ।। बिनसी त्रिसना सहिज समाने,आतम राम सखाया ।।१।। रहाउ ।। हउमै गरब निवारि क्रिपा करि,आपन चरनी लाए ।। सरब ठौर महि भया सहाई,अनंद मंगल सरसाए ।।२।। कोइ न पहुँचनहारा दूजा,ऐसी दीन वडाई ।। निसदिन नाम श्रीचंद्र जपत है,चात्रिक त्रिपति न पाई ।।३।।२४६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। प्रभु का भाणा जिनि जन मानिआ,तिस ही की वडिआई ।। हुकम पछाता करम विधाता,धुर करते फुरमाई ।।१।। सुख दुख समत मान सिर नाइआ,चालण खसम रजाई ।। हरि हरि नाम सदा रंग राते,अनहद बेणु बजाई ।।१।। रहाउ ।। आगिआ प्रभु की मीठी लागी,प्रेम भगति लिव लाई ।। सत्त सत्त सत्त मन भाणा,आन न मुखहुँ अलाई ।।२।। सबद रस चाख सदा त्रिपतासे,अफुर फुरे गति पाई ।। दुरमति दुबिधा श्रीचंद्र नासी,अनंद मंगल गुण गाई ।।३।।२४७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। करम पइआ धुरि करते जिनि कउ,तिनही पायो नामा ।। सगली स्रिस्टि लाग तिनि उधरी,हरि कीरति बिस्रामा ।।१।। तोटि न आवी हरि धन संचै,खरचत खात खजाना ।। जिअ जंतु सभि त्रिपति अघाने,परिपूरण पुर कामा ।।१।। रहाउ ।। सहिज पदारथ सफल सुआरथ, क्रितारथ निज धामा ।। रामहि राम राम लिव लागी,धुनि उपजी प्रभु नामा ।।२।। आया जग महि ता का गनिऐ,संतन की जिहँ सामा ।। श्रीचंद्र तिनि चरनी लागै,भए रूप घनस्यामा ।।३।।२४८।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। जा को लेख लिखे धुर मस्तक,साधु संगि लिव लाई ।। माया ममता तन ते भागी, मन मानै गुण गाई ।।१।। भया परकास मिटिआ अंधिआरा,भानु किरण सरसाई ।। पंच चोर तजि गए नगरीआ,हरि प्रभु फिरी दुहाई ।।१।। रहाउ ।। गुरु गम गिआन सहिज रस आइआ, हउमै दूर पलाई ।। वाजे वजे पंच अनाहद,राग रंगि मन भाई ।।२।। अम्रित बरसा गगन मंडल ते,मन चात्रिक त्रिपताई ।। सत्गुरु श्रीचंद्र कउ भेटिआ,आवण जाण रहाई ।।३।।२४९।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल ।। किआ कहिऐ किछु कथन न जाई,प्रभु की अकथ कहाणी ।। पारब्रहम रंग राते सज्जण,जिमि गूँगे की बाणी ।।१।। संजोग विजोग न आवण जाणा,तखत थिरे निरबाणी ।। किआ प्रक्रिति माय कहु कैसी,किमि सासन उचाणी ।।१।। रहाउ ।। किउं करि आया किउं करि जासी, किमि करि बणत बणाणी ।। बिनसि गयो उर ते सभ बोझा,मारत ढाही ढाणी ।।२।। दुस्ट दैत्त किमि सनमुख होए,पाणि गहे धनु बाणी ।। श्रीचंद्र कछु बोध न पाइऐ,कहिऐ सारिंग पाणी ।।३।।२५०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। निकटि बसै साहिब सेवक कै,सभि बिधि होत सहाया ।। सेवक का होइ जहँ जहँ कारज,तहाँ तहाँ उठि धाया ।।१।। पैज राखबे की तहँ लाजा,बिख अम्रित करि डारै ।। राहक होइ करि ससि उपजावै,धेनुन वगन चारै ।।१।। रहाउ ।। मुए जीवाल देइ खिन भीतरि,बैकुंठहु करि धाई ।। मद मत्त हस्ती दूरि विडारै,अंग न जनन छिदाई ।।२।। हुंडी तारन कारन बन करि,सावल साह कहावै ।। श्रीचंद्र पर आपद देखी,पाइ न पनही पावै ।।३।।२५१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाच अखाड़े भीतरि पाया,भुज ठोकत दे ताला ।। पहिलवान पंच मार पछाड़े,कै कै दाव निराला ।।१।। वज्जन ढोल ढमके घोरी,चहुँधाई मल लत्थे ।। फेरी फेर फिरै गरजाई,करि करि हथ पल्लथे ।।१।। रहाउ ।। गुरु अविनासी थापी दित्ती,उतरिओ आइ ढढोटा ।। दाव घाव करि पाव जमायो,जत का बांध लंगोटा ।।२।। बाह पकड़ धरि काम गिरायो,ठिब्बी मोह बगाया ।। ऊच दुआला श्रीचंद्र का,जगत खेत लहराया ।।३।।२५२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। दुख रोग सभि तन ते भागै,प्रगट प्रताप तुमारा ।। सांति सहिज सुख घर महि आए,त्रैबिध ताप निवारा ।।१।। राम रसाइण खाइ युवा तन,वात पित्त कफ नासा ।। अम्रित पी अमर भव होए,उतरी त्रिसना पिआसा ।।१।। रहाउ ।। सत्गुरु पूरे संजम कीआ,माया वाउ न लागी ।। छरदि निवाही दूर बिदारी,नाम जपत वडभागी ।।२।। तीरथ गुरु इस्नान कराया,काया निरमल होई ।। श्रीचंद्र जर म्रितु निवारी,हरि दरगह कर ढोई ।।३।।२५३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। खेल रचाइआ हरि प्रभु करते,आपहि भया सहाई ।। जहँ जहँ सिमरी तहाँ प्रगट ह्वै,दूख मिटाए घाई ।।१।। राम कार चौगिरद हमारे,खाटी डूँघी खाई ।। उजली चादर दीन ओढाई,तात्ती आँच न लाई ।।१।। रहाउ ।। हाथ न सकत उचाइ दुस्ट जन,पाहन गहि लहराई ।। उलटी मारुत आप वगाई,अगनी सीत समाई ।।२।। काज टिटिभ के सागर सोखिआ,दया पई हरि राई ।। श्रीचंद्र विसमय विसमायो,तन मन प्रभु धिआई ।।३।।२५४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। रंग राते गोबिंद के,भ्रम भार मिटाई ।। निरमल ते निरमल भए,हरि हरि गुण गाई ।।१।। माया मोह बिनसिआ,चूकी अन धाई ।। सागर सीतल पाइआ,सभि तपत बुझाई ।।१।। रहाउ ।। काम क्रोध मद मतसरै,जड़ मेख गवाई ।। जिअ जंतु सभ प्रभू कै,एकै गुरु भाई ।।२।। कोइ न दिसै बाहिरा,मिलि मिलि हरखाई ।। नौनिधि मन महि श्रीचंद्र,गुप्ती प्रगटाई ।।३।।२५५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। सच्ची बाणी सच्चा मन,रसना सच्च राती ।। सच्चो सच्च वखाणीए,जागै परभाती ।।१।। गुरु तीरथ सच्च पाइआ,बुधि निरमल न्हाती ।। सच्चा सौदा हट सच्च,वणजारे जाती ।।१।। रहाउ ।। सच्ची कार कमावणी,सुख लाह अगाती ।। सच्ची संगति जाइऐ,दरगह सच्च साती ।।२।। गुरुमुख सच्च सलाहिऐ,मल अंतरि राती ।। सच्चा सेवै श्रीचंद्र,सच्च लहहि संगाती ।।३।।२५६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || कूड़ा गंढण गंढिऐ,किछु साथ न चल्लै || पुच्छण पुच्छै दूत जम,किआ लिआया पल्लै ||१|| रतन अमोलक सास गंढ,कट्टी कट्ट कल्लै || लेखा देणा सिर रहिआ,जामनि को झल्लै ||१|| रहाउ || भार उठाइआ बहु घणा,पोटी बंन सल्लै || पैंडा डूँघा पंध नहि,कंटक कै थल्लै ||२|| नंगै पाँव सिधाइआ,पिछों को घल्लै || श्रीचंद्र बिन सत्गुरू,पड़ि राह अवल्लै ||३||२५७||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || आया जग महि जाणीए,रंग हरि सिउं लागै || सच्ची दरगहि पैधिआ, ऊजल बिनु दागै ||१|| राम नाम अम्रित रसै,पीवत वडभागै || मगन भया विसमाद महि,हउमै मोह तिआगै ||१|| रहाउ || डोलण चूका जोनिअहि,भ्रम सुपनहु जागै || अनहद बेणु वजाईआ,तूटे कच धागै ||२|| गगन मंडल महि विचरते,पर अनल सु खागै || श्रीचंद्र नहि जावई,लड़ि गोबिंद लागै ||३||२५८||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गुरुमुख होवे भै करै,आपण आप पछानै || मेल मिलै सत संगती,नाम दान इस्नानै ||१|| भाउ भगति हरि कीरतन,राग नाद वखिआनै || मन की खोजहि घुलीअै,अंतरि पाइऐ सानै ||१|| रहाउ || गहिरा खाता खोद कै,जानै गुप्त खजानै || माया मोह बिसार कै, आतमराम पछानै ||२|| मारग मुकता पाइऐ,जीवन पद निरबानै || अंग संग श्रीचंद्र कै, करणहार भगवानै ||३||२५९||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || जीवत सो परवाण है,हरि हरि रंग राता || करणहार करता पुरुख,गोबिंद बिधाता ||१|| सिमरि सिमरि नित अनद सिउं,मद मत्त संघाता || एको एक पछाणिआ,अगिआन गवाता ||१|| रहाउ || खोल कपाटै महिल जाइ,रतनन प्रगटाता || कंचन काया निरमली, निरमल का नाता ||२|| हरि प्रभु जल सीतल भए,धोयो मुख गाता || श्रीचंद्र देह अंदरहि,उपजिओ जलजाता ||३||२६०||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || वणजारा जग आइआ,दिन दुइ चार सुहाना || गोइल वासा गोइली, चलण छोडि टिकाना ||१|| सोए रैणि गवाइआ,सनमुख भया बिहाना || रासि गवाई आपणी, लाहा लाभ हैराना ||१|| रहाउ || भोग भोग मन भाँवदे,खाटे रोग निदाना || रंग रलीआ इत माणीआ,सोक समाज समाना ||२|| पाइऐ कीता आपणा,किउं तबि बुरा कमाना || करम कुकरमन श्रीचंद्र,परखहि प्रभु दिवाना ||३||२६१||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || बीज बीजिआ जाहि का,फल लहिहै भी ओही || आम बबूल न देवही,अनिक जतन सिंचेही ||१|| दुख दै सुख की आस करि,मूढ कहावहि तेही || कंडे मारग डारिऐ,आपन पाँव चुभेही ||१|| रहाउ || बुरा चितविऐ परन का,आपन भल केही || बिन बोहिथ सागर धसै, किमि उबरै देही ||२|| चंदन पुजै न आक ढाक,काने ऊखे ही || श्रीचंद्र मन समझ लेहु,रख पाव धरे ही ||३||२६२||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मन मानै गोबिंद संग,सभ दुख परजारी ।। आतमराम पछाणिऐ,उर हउमै मारी ।।१।। साध संगति कै वारणै,सद सद बलिहारी ।। एका एकी भावना,मै मेरी हारी ।।१।। रहाउ ।। बोहिथ पाइआ सागरै,बिखिआ परिहारी ।। इड़ा पिंगला बांध कै,सुख सुखमन नारी ।।२।। गगनंतरि थिर अचल राज,अविचल अटारी ।। श्रीचंद्र तम बिनसिआ,रवि किरन उजारी ।।३।।२६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। गुरु गोबिंद सलाहिऐ,निसि दउत सभागै ।। नाम सुनत नाराइणै,जम दूरहुँ भागै ।।१।। ऐथै सगले सुख लहहि,पत सिउं थित आगै ।। रिद्धि सिद्धि नवनिधि सभि,आइ चरनी लागै ।।१।। रहाउ ।। पातिसाहां सिर पातिसाह,हरि हरि रस पागै ।। गरब गवाइआ अंदरहुँ, सुख सांत सभागै ।।२।। मान वडाई कीरती,जस होइ अदागै ।। ऊचों ऊंचा श्रीचंद्र,गुणनिधि गुण रागै ।।३।।२६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || सत्गुरु के बलिहारणै,जिनि दित्ता नाउ || ऐथै सूख घनेरिआ,ठंडि आगै छाउ ||१|| तम अगिआन विनासिआ,चढ़िआ दिनराउ || सदा सुहेले सचि मन,निहचल असराउ ||१|| रहाउ || चिंता सगल बिलानीआ,पाइआ सच थाउ || जपु तपु संजम बरत लख,मन उपजिआ भाउ ||२|| मुख ऊजल दरगाह हरि,पूरण मन सुआउ || श्रीचंद्र तन मन धनहि,भेटा अरपाउ ||३||२६५||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || मात पिता वत पालता,हरि क्रिपा निधान || पैज रखै प्रभु दास की,नहि होइ अपमान ||१|| पंच तत की देह महि,वासहि गुण खान || ताती वाउ न लागी,जन कै हरि प्रान ||१|| रहाउ || ओट गुपाल दयाल प्रभु,नहिं छूहै बान || भूखै रहन न देवई,पहुँचाए धान ||२|| बंधन काट उबारिआ,गरुड़े करि यान || सकल निवाई मेदनी,श्रीचंद्रै पान ||३||२६६||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। निद्धि सिद्धि वसि जाहि कै,सो प्रभू हमारा ।। तोटा कदे न आवई,हरि अखुट भंडारा ।।१।। जीअ जंतु त्रिपतासिआ,अचि सुधा अहारा ।। त्रिसना भूख बिनासिआ,इक नाम अधारा ।।१।। रहाउ ।। सगल पदारथ दे रहिआ,दिन रैनि दातारा ।। मांगन कतहुँ न जाईए,घरि मांगनहारा ।।२।। जाचक सगली स्रिस्टि है,प्रभु देवनहारा ।। श्रीचंद्र मन त्रिपत होइ,सिमरै करतारा ।।३।।२६७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। आपनड़ै लड़ि लाइ कै,नहि तिआगै करता ।। जा का कोइ न जगत महि,ता का प्रभ भरता ।।१।। रंक अनाथ गरीब जन,सहनसाही चरता ।। भुजबल आजुध बाहनी,वाकन सोय हरता ।।१।। रहाउ ।। सगली स्रिस्टै सो धणी,नहि बलिस्ट धरता ।। मारन आए दास जो,आपहि धर परता ।।२।। ग्रीवा कबहुँ न खम भई,सोऊ अग्र निहुरता ।। श्रीचंद्र अचरज हरी,अचरज तिहँ चरिता ।।३।।२६८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अवगुण कबहूँ दास के,हरि प्रभु न चितारे ।। ढाकै पड़दे जनन सभि,जग महा विकारे ।।१।। कर लीने जो आपणे,फिर नाहि पछारे ।। साख सुणावहि संत जन,सुग्रीव सखा रे ।।१।। रहाउ ।। लाड लडावै बालकै,पितु मातु समारे ।। पावक खातहु साप रोग,हानै उपचारै ।।२।। आपन सभ कछु सौंप कै,आनंद मगनारै ।। दास भयो श्रीचंद्र मन,प्रभु नाम चितारै ।।३।।२६९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। बिन हरि नाम न आवई,कछु जिअ कै कामा ।। कंचन रूपा कासि लोह,सीसा रंग तामा ।।१।। मात पिता सुत साक बंधु,साजन अरु बामा ।। मंडप महिल सराईआ,गज गच ललामा ।।१।। रहाउ ।। घोड़े हाथी रथ बहिल,रंगे रंग जामा ।। कुहीआ बाजां डोरीआ,आडे उच चामा ।।२।। छडि छडि सभो चालणा,केवल परधामा ।। श्रीचंद्र द्रिढ़ मन गहो,जापै सुख रामा ।।३।।२७०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधु संगि मन उज्जला,कसमल सभ हानी ।। आपा आप पछाणिआ,सच सच परवानी ।।१।। मन विकारी वेड़िया,दुख सहै जहानी ।। धरम करम मन लाइऐ,सुख साचा जानी ।।१।। रहाउ ।। संग न चालै माल धन,किआ करहि परानी ।। कूड़े बंधन बंधिआ,जमा खरच जबानी ।।२।। मीत सज्जण नहि साथ देंह,मुख मोड़हि कानी ।। श्रीचंद्र राम नाम बिन,बिरथा बिरधानी ।।३।।२७१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। कूड़े मोह लपटाइआ,नित कूड़ि कमावै ।। कूड़े लालच लगिआ,किछु हत्थ न आवै ।।१।। अंत कूड़ का कूड़ होइ,पुनि पुनि पछुतावै ।। कूड़ा करम कमाइआ,जम डंड लगावै ।।१।। रहाउ ।। जगत वपारी कूड़ का,किमि साच लखावै ।। कूड़ी देही विनसनी,भोगन रस धावै ।।२।। रस कस कूड़े सेवीए,तन रोग जमावै ।। श्रीचंद्र इक साच हरि,जे तुहि मन भावै ।।३।।२७२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || गुरु उपदेस कमाइए,संग साध जमाती || त्रिसना भूख बिनासिआ,लख राम संगाती ||१|| गुरुमुख मन परगास होइ,तम अंध जहाती || कथा कीरतन राग नाद,गावण परभाती ||१|| रहाउ || करम धरम सुच संजमा,तीरथ सभि न्हाती || राम नाम जपु दिनसु राति,सच वाक्य सुहाती ||२|| गुरुमुख जनम सवारिआ,मेटी जाति पाती || गुण गोबिंद श्रीचंद्र गुण,किलविख नर हाती ||३||२७३||

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || नाराइण सिर कर धरे,जिहँ कीनिओ पूरा || दूख रोग तन ते भगे,लहि गए विसूरा ||१|| जपु तपु संजम माण महत,कीरति जस रूरा || दुरमति दुरत महान मिटि,मिलि गए धरि धूरा ||१|| रहाउ || आनंद मगन अलमस्त नाम,नैनन रस पूरा || काम क्रोध अहंकार लोभ, मन ते भए दूरा ||२|| तिहुँ लोकी पति पाइआ,अउगुण गण चूरा || श्रीचंद्र जड़ अंदरों,चेतन लख नूरा ||३||२७४||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। साधु संगति कै वारनै,जिहँ नाम जपाया ।। गुरु सच तीरथ न्हाइ कै,निरमल भई काया ।।१।। माया मोह बिनासिआ,मन सीतल ताया ।। सगले जंतु कुटंब जन,जाए पितु माया ।।१।। रहाउ ।। पत पाई दरगाह हरि,पट नाम ओढाया ।। चहुदिसि गुण हरिआवली,गहरी सिर छाया ।।२।। दूजा भाउ बिसारिआ,इक सबद समाया ।। जनम मरण श्रीचंद्र गत,अम्रित मुख पाया ।।३।।२७५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। नाम धिआए साधु संग,भै भरम निवारे ।। उजल सेवे उजले,उजल हरि दुआरे ।।१।। कसमल मैल उतारीआ,हरि सर नावारे ।। हउमै रोग बिदारिआ,रंग राम रसारे ।।१।। रहाउ ।। जन धूड़ी नित लोड़ीए,अलमस्त मदारे ।। भाणा हरि प्रभु भाइआ,सुख दूख सहारे ।।२।। रंग रंगे हरि नाम कै,मल माया हारे ।। श्रीचंद्र त्रैलोक लख,चढ़ि ऊचि अटारे ।।३।।२७६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। स्वान स्त्रिगाल अनंत बन,सिंघ एक समोई ।। चटिका अनिक चुहचावई,चुप

बाज विलोई ॥१॥ कोटिन कोटी भेखीअहि,जन बिरलो कोई ॥ लख चउरासी जोनि महि,अवतार इकोई ॥१॥ रहाउ ॥ आक ढाक आरण्य लख,परमल इक बोई ॥ डंडा खाई सरप गण, सेसहि किमि गोई ॥२॥ घोघे सीपैं सिंधु भरि,को हीरा जोई ॥ श्रीचंद्र लख जोग साध,दर दसम लहिओई ॥३॥२७७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ वैद्य कोटि जग विचरते,रासाइनिक कोऊ ॥ तीरथ न्हावहि कोटि जन,मन मल को धोऊ ॥१॥ मुंद्रा कानी फटक की,सिद्ध साधु न सोऊ ॥ माला कंठे डारिऐ,मन नाम रटोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ जटा बधाई राख सिर,संनिआस न लोऊ ॥ मूछाँ लिंग कटाइऐ,पर नारि रमोऊ ॥२॥ वेद विचारहि माय रति,गिआनी विरलोऊ ॥ बड धिआनी श्रीचंद्र लख,साधू सच्च कोऊ ॥३॥२७८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ जोग न पाइअहि भेख ते,बहु दंभ कमाए ॥ नख बढाइ जट जूट धरि,कंन मुंद्रा

पाए ॥१॥ माला तुलसी कंठ महि,छापा तिलकाए ॥ गोपी चंदन लाइऐ,दुआदस अंगाए ॥१॥ रहाउ ॥ बैठ सिंघासन चवर ढुर,रागन छबि छाए ॥ पोथी वाच सुणाइऐ,धुनि ऊचि अलाए ॥२॥ मसले काढि कुरान ते,लोगन बिरमाए ॥ बिन गुरु पूरे श्रीचंद्र,कछु थाइ न पाए ॥३॥२७९॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ छाई पाई अलमल खाई,अंग नगन करि डारा ॥ मुनिपट पहिर नगर की फेरी,दर दर ऊच पुकारा ॥१॥ सेली नादी मेली गर महि,बटूआ मेखल धारी ॥ जटा मुकट महि डार विभूती,नाखुन अग्र उभारी ॥१॥ रहाउ ॥ पाइन पाइ न पनही बन महि,बिचरत इत उत धाई ॥ बटु तरु तर थिर धूणे पंचन,पावक दार जराई ॥२॥ मौन साध मुंदै दोऊ नैना,बैरागणि धर बाहा ॥ काम माया श्रीचंद्र लुभाया,गुरु बिन पड़े कुराहा ॥३॥२८०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ अंतरि कामनि घेरे उचरी,मुख ते वेद वखाना ॥ जीआं घावत संक न मानहि, आयत भनत कुराना ॥१॥ गंढण गँढै मीठी बाणी,महावाक्य कर गिआना ॥ संध्या तरपण जाप

गायत्री,भास्य वेदांत पुराना ।।१।। रहाउ ।। सालगराम गले लटकायो,थाली दुरगा धाना ।। मुख काले सिर मोर मुकट है,जाचत फिरत दुकाना ।।२।। कूड़ा वणज कूड़ वणजारा,कूड़ो लाभ लभाना ।। श्रीचंद्र कूड़ो रस रसिआ,दूरि भया भगवाना ।।३।।२८१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। प्रभू क्रिपा ते साधु संग लहि,भाग सुभागा पूरा ।। भ्रम भै मेट भए निहभरमा, वाजे अनहद तूरा ।।१।। राम नाम रस परम रसाइण,सरब पाप चकचूरा ।। आवण जाणा वरज रहाए,जरा म्रित्तु सन मूरा ।।१।। रहाउ ।। दहदिसि साख हरी हरिआवलि,सुगंधित आम्र बूरा ।। जोती जोति भई परगासा,तम भागिओ लहि नूरा ।।२।। आपे आप सगल घट माही,गुरु सिख एक जहूरा ।। श्रीचंद्र हरि प्रभु उर प्रगटै,सरब बिनासिओ कूरा ।।३।।२८२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। मया धारि जिस राखता,सो हरि गुण गाए ।। बिना किरपा जगदीस के,प्रभु गुण न सुखाए ।।१।। बंधन सगले परिहरे,धंधे बिनसाए ।। जलत अगनि संसार महि,संत सीतल पाए

।।१।। रहाउ ।। राम नाम धन संग्रहै,गुप्ती धर थाए ।। मगन महारस प्रीतमहि,गूँगा गुड़ खाए ।।२।। बेपरवाह सहंसाह से,जाचन नहि जाए ।। तन नगनै रंग रंगिआ,श्रीचंद्र सुहाए ।।३।।२८३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। अकथ कथा नाराइणै,किआ कहहि उवाची ।। कूड़ी दुनिया मध्य महि,किमि जानै साची ।।१।। हउमै भीति उचेरड़ी,किमि कूदहि ताची ।। परबत घाटी जनम लै,दिसि लखता प्राची ।।१।। रहाउ ।। ढेरी राख सकेलीआ,ज्वल ज्वाला माची ।। रंग तमासे तिआग करि,बेरंग व्रिति राची ।।२।। अनद्रिस्टै जपु जापिऐ,द्रिस्टै लख काची ।। काल सत्त श्रीचंद्र है,मति जीवन खाची ।।३।।२८४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल ।। चिनह चक्र गोबिंद का,नहि कहुँ लखाना ।। जाति पाति वरणास्त्रम,ननकार सुहाना ।।१।। अचरज ते अचरज महाँ,अद्भुत विसमाना ।। मन भीतरि ही रव रहिआ,सिर साह साहाना ।।१।। रहाउ ।। खिन महि थाप निवाजदा,थल रंक राजाना ।। मांगनहारे जाचका,दै सरब

निधाना ॥२॥ गुप्ता हुकम चलाइंदा,त्रैलोक परवाना ॥ गुरु अविनासी श्रीचंद्र,सभ भेद जताना ॥३॥२८५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हरि प्रभु प्रीतम पिआरड़ा,हउ नित्त नित्त गावहुँ राम ॥ रसि रसि सबद बखाणिऐ,निहचल पति पावहुँ राम ॥१॥ निहचल पति पावहु आप गवावहुँ,संता संग समाई ॥ राम नाम एको मन बसिआ,दूजा भाउ मिटाई ॥ दुरमति बिनसी आतम सरसी,गुण गोबिंद मन भाए ॥ श्रीचंद्र रंग रवै रसालै,त्रिपति न कबहुँ पाए ॥१॥ कामणि काम बिसारिआ,लगि संतन पाई राम ॥ दुरमति बुधि विसरजीआ,गुण राम रमाई राम ॥ राम रमाई हउमै हाई,धूड़ी संत समाई ॥ धंधै धावनि लगनि तिआगी,सहिज सहिज रंग लाई ॥ चढ़ी खुमारी लई हुलारी,चक्र लखाई लोई ॥ श्रीचंद्र लगि संत समागम,दुरमति दुरति विगोई ॥२॥ पारब्रहम निज करम करि,साधु दरस कराए राम ॥ बिन बोले कछु बाण सा,अंतरि धसता जाए राम ॥ अंतरि धसि जाए वाक्य महाए,मीठै लागहि बोला ॥ दास भए सिर भार उचाइआ,बिन दामन के गोला ॥ हूँ न हां रही मन

अंतरि,मिथिआ मांग चुकाई ।। दूख भूख श्रीचंद्र सिर ऊपर,साधु संगि लिव लाई ।।३।। रंग रंगी रंग चाढ़िआ,हरि रंगणवारे राम ।। बुद्धि विकास अगंमड़ा,लख दुत्तर तारे राम ।। दुत्तर तारे मेटे भारे, हउमै गरब गवाया ।। सदा संग प्रभु अंतरजामी,आपनड़े उर पाया ।। भया प्रगास मिटिआ अंधिआरा,हरि हरि गुण प्रगटाए ।। श्रीचंद्र धसि सुधा सरोवर,मल मल नितप्रति न्हाए । ।४।।१।।२८६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। रे मन मेरे रंगले,हरि हरि नाम आराधे राम ।। मन की मैल उतार कै,जम का मारग साधे राम ।। मारग जम का साधै प्राणी,आगै बसन सुहेला ।। साधु संगि हउमै सभि भागी,कबहु न होइ दुहेला ।। औघट घट घाटै नहि जाइऐ,पत पावहि दरबारै ।। श्रीचंद्र हरि नाम अराधै,मोख मुकत प्रभु दुआरै ।।१।। रे मन मेरिआ,सत्गुरु सिख सुणीजै राम ।। रे मन मेरिआ,मन मानै रसि भीजै राम ।। हरि रसि भीजै अवगुण छीजै,गुण गाइऐ प्रभु केरे ।। निरमल चानण जोति पसार,चोट न खाइ अंधेरे ।। वस्तु अजायब घर महि सूझै,लाभ लहै वणजारा ।। श्रीचंद्र सभि अवगुण

परिहरि,धरम पंथ निरधारा ॥२॥ रे मन मेरिआ,कीता संग सिधाई राम ॥ रे मन मेरिआ,करम मिलै वडिआई राम ॥ करम वडाई पैधा जाई,ऊच स्थान बिराजा ॥ देव दैत्त गण किंनर गंधरब,अग्र बजावत बाजा ॥ तखत सुहाया मिटी बलाया,जपु तपु संजम पाया ॥ श्रीचंद्र सत्गुरु अविनासी,अबिचल राज दिवाया ॥३॥ रे मन मेरिआ,गुण निधि प्रीतम पाइऐ राम ॥ रे मन मेरिआ,साध संगति लिव लाइऐ राम ॥ संगति लिव लाई गुरुमत पाई,दुख भंजन हरि नामा ॥ सबद लखाया सहिज समाया,निहचल गोबिंद धामा ॥ अनहद धुनि पंची परगासी,सुरती चढ़ी हवाई ॥ श्रीचंद्र गोबिंद घर पाया,दहदिसि वजी वधाई ॥४॥२॥२८७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ रे मन मेरिआ,कूड़ी छोडि वडाई राम ॥ रे मन मेरिआ,कूड़ी जग चतुराई राम ॥ कूड़ी चतुराई कूड़ कमाई,कूड़ो धंध पसारा ॥ कूड़ कमावै कूड़ विहाझै,कूड़े का वणजारा ॥ मात पिता सुत साक संबंधी,दारा मीत सहाई ॥ श्रीचंद्र सभि कूड़े साथी,दाद न दै है राई ॥१॥ रे मन मेरिआ,मिथिआ किउं उरझाया राम ॥ रे मन मेरिआ,आगै साथ न माया राम ॥ साथ न माया आगै जासी,किउं सिर भार उठावै ॥ डूँघे सागर लंघण औखा,भार सिरै पछुतावै ॥ संतन सिख लेहु

मंन पिआरे,गोबिंद नाम सहाई ।। श्रीचंद्र तजि कूड़ बिहारा,संतन बात बताई ।।२।। रे मन मेरिआ,जिहँ प्रयोजन होई राम ।। रे मन मेरिआ,कूड़ बखानै सोई राम ।। कूड़ बखानै लोभ समानै, तिन का किआ उपदेसो ।। परधन छीन उदर निज पोखत,अधिक बनाए वेसो ।। माया कारण पिड़ बंध नाचहि,पूरहि ताल सबाए ।। श्रीचंद्र थिर कूड़ सिंघासन,कूड़ा अमर चलाए ।।३।। रे मन मेरिआ, गुरुमुख सच्चा कोई राम ।। रे मन मेरिआ,सगल उधारे लोई राम ।। सगल उधारे सच्च समारे,सच्च नाम पत पाई ।। ऐथै औथे एको जाता,दूजी रिजम न काई ।। सच्च बिना कछु थाइ न पावै,संजम लख कमाए ।। श्रीचंद्र सच्चा परमेस्वर,मन महिं वसिआ आए ।।४।।३।।२८८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। रे मन मेरिआ,किउं सिर भार उठावहि राम ।। रे मन मेरिआ,पापन करम कमावहि राम ।। करम कमावहि पापां केरे,धन लिआवहि बरिआई ।। जिनि कारण बहु कीन उपावा,अंतु न होइ सहाई ।। भाग खड़ेंगे बंदी जानै,लेखा सिर इक तेरे ।। श्रीचंद्र गहु सत्गुरु सरणा,खिन महि करहि निबेरे ।।१।। रे मन मेरिआ,उदर दसंगुल तेरा राम ।। रे मन मेरिआ,दोड़

सेर अंन जेरा राम ।। दोइ सेर अंन अचहि दिहाड़ी,बाकी अवर न काजै ।। त्रिसना त्रिपत होवहि काहूँ,अधिक भए महि राजै ।। घड़ा आकास जलहि म्रिग त्रिसना,कहु काहूँ कब भरिआ ।। श्रीचंद्र तजि कूड़ सिआपा,चरन सरन हरि परिआ ।।२।। रे मन मेरिआ,मन ही मन समझावै राम ।। रे मन मेरिआ,मन मन भरम गवावै राम ।। भरम गवावै पंथ दिखावै,चानण सभनी लोई ।। आपा रगड़ै जोती प्रगटै,सच्च लखावै गोई ।। परमेस्वर का थान अकुंठा,सिंघासन बड ऊचा ।। श्रीचंद्र मन भीतरि परसै,पाप कलापन मूचा ।।३।। रे मन मेरिआ,मन बिनु जपु तपु नाही राम ।। रे मन मेरिआ,मन बिनु नरकी भाही राम ।। नरकी भाही कस्ट महाही,सुख चाहै दुख पावै ।। लोभ लहिर हलकाया कुत्ता, काट काट हलकावै ।। जोत अजाई मरै पाइ दुख,नाहि सहाइक कोई ।। श्रीचंद्र मन बिनु जग भूला, रुलिआ निज पति खोई ।।४।।४।।२८९।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। रे मन मेरिआ,गुरु बिन गिआन न पाइऐ राम ।। रे मन मेरिआ,संजम लख कमाइऐ राम ।। लख कमाइऐ संजम झूठै,हित ठगण संसारे ।। तीरथ न्हाते मैल न उतरै,दुःख

उठावै भारे ।। जो कछु कीनो सोऊ अनेता,भूला भरम न चेतै ।। श्रीचंद्र सोयो नहि जागा,चिड़ी चुगाया खेतै ।।१।। रे मन मेरिआ,करमी जगत भुलाइआ राम ।। मूरख प्राणी पूज भया है,भव सगरा डहकाइआ राम ।। भव डहकाया करम लगाया,दादर न्हाइ सदाई ।। मन अपने की खबर न होई, बाढी त्रिसना माई ।। मारग दंभ नरक महि गमनै,किमि बैकुंठ जावै ।। श्रीचंद्र करमन की छाया, गिआन किरण नहि आवै ।।२।। रे मन मेरिआ,कूड़ा तजि बिउहारा राम ।। रे मन मेरिआ,धरम करहि तिरस्कारा राम ।। करि तिरस्कार धरम किमि लहि है,पूरब पच्छिम फेरो ।। जानहि पाहन कछू न खै है,डारहि भरम अंधेरो ।। नाम धरम कै कूड़ कमाया,जम जंदार लगै है ।। श्रीचंद्र मन सिउं पुछ बवरे,पाथर भोग भुगै है ।।३।। रे मन मेरिआ,कांच कंचन नहि तुल्लै राम ।। रे मन मेरिआ,गाडर धेनु न मुल्लै राम ।। गाडर धेनु मूल सम नाही,लोहा लाल समाना ।। पारस पाहन गुंजा मोती,बगुला हंस पछाना ।। सिआर सिंघ किमि होहि समानै,संत असंत अघुल्लै ।। दंभ धरम श्रीचंद्र अमेली,समझ लेहु मन भुल्लै ।।४।।५।।२६०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। रे मन मेरिआ,त्रिसना साधु न संगा राम ।। रे मन मेरिआ,किंपुरुखहि बारंगा राम ।। बारंगनि किंपुरुख न मेला,कोकिल काक निआरे ।। निंम धतूरा परमल नाही,सत्त लोक पातारे ।। ऐरावत वाराहै संगति,चहुँजुग कबहु न होई ।। श्रीचंद्र दिन रैनि समानै,साकत सज्जन दोई ।।१।। रे मन मेरिआ,तूँ ही करहि निबेरा राम ।। रे मन मेरिआ,तेरा ही सभ झेरा राम ।। तेरा झेरा तूँ ही निबेरहि,कूड़ सच्च वापारो ।। किआ तूँ करना किआ करि रहिआ,आपन देहु विचारो ।। वेद पुरान कुरान किताबां,तुझ बाझहुँ सभ झूठे ।। श्रीचंद्र माया के मारग,जात पात जम मूठे ।।२।। रे मन मेरिआ,मन मथीऐ किछु पाइऐ राम ।। रे मन मेरिआ,मन हितु गुरू मनाइऐ राम ।। गुरू मनाइऐ मन गति पाइऐ,मन ते सगल अकारा ।। मन झूठा मन साचा बनता,धरम दंभ विस्तारा ।। बगुला काक छोडि आमिख मन,परमहंस गति पावै ।। कालह छपड़ी श्रीचंद्र गुरु,मान सरोवर थावै ।।३।। रे मन मेरिआ,आपहि आप बनावहि राम ।। रे मन मेरिआ,जान दाए बावहि राम ।। दाया बाया सभ तूँ जानहि,राखस देव विधाना ।। एक पिता एकस के बारक,एकहि थाव टिकाना ।। एकहि माया एकहि दाया,हउमै दुबिधा डारी ।। श्रीचंद्र सोऊ संत सुहेला,जिहँ मन लियो सवारी ।।४।।६।।२६१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,संता संग समाईए राम ॥ हे मन पिआरे साजना, गुरु सबदी हरि पाईए राम ॥ गुरु सबदी पाईए सच लिव लाईए,बिनसै कूड़ कबाड़ा ॥ मन ही मन को खोल बतावहि,साच कि झूठ पवाड़ा ॥ राह कुराहा करम कुकरमहि,धरम अधरमहि गोई ॥ श्रीचंद्र मन अंतरजामी,को किमि सकहि लुकोई ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु सत्त द्रिढ़ावै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,मन मानै हरि पावै राम ॥ हरि राम पावै महिल जावै,पति पैधै वडिआई ॥ निरमल काया उज्जल बुद्धि,गोबिंद गुण विगसाई ॥ बिनु भागा सत्गुरु न मेला, सिखिआ सिख न लेई ॥ श्रीचंद्र गुरु पूरै कहिआ,देहे महि मन देही ॥२॥ हे मन पिआरे साजना, बिनु गुरु मन न जणाइऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,बिनु गुरु लाज लजाइऐ राम ॥ लाज लजाइऐ जे करि गाइऐ,गहिर गंभीर विचारा ॥ उलट परे छिद्रन उर लाखे,जग महि करे खुआरा ॥ तात सावकहि रार उचावहि,साकत करहि कमाई ॥ श्रीचंद्र बिनु सत्गुरु पूरे,भरम भरम दुख पाई ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,जे प्रभु किरपा होवै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,गुरु पूरे संगि ढोवै राम ॥ पूरे संगि ढोवै दुरमति खोवै,जनम जनम मल हारे ॥ भव जलनिधि खावत गोते,खिन

महि कढे चारे ।। उर जलते रस सीतल डारे,चंदन चंद महाना ।। श्रीचंद्र सत्गुरु परमेस्वर,अंतरजामी जाना ।।४।।७।।२९२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। **राग बिलावल छंद** ।। हे मन पिआरे साजना,बिरथा कहु हरि पासे राम ।। हे मन पिआरे साजना,करि है बंद खलासे राम ।। बंद खलासी हरि प्रभु करही,चारा अवर न कोई ।। मत कहिऐ बिरथा तिनि पाही,जिनि बिरथा पति खोई ।। वे तुमरी कस बिरथा काटहि,बिरथा जिनहि घनेरी ।। श्रीचंद्र नद गहरे बहिआ,कंठिन देत दलेरी ।।१।। हे मन पिआरे साजना,त्रिबिधि ताप संसारे राम ।। हे मन पिआरे साजना,हा हा करत पुकारे राम ।। करत पुकारा हाहाकारा,दउ लागी उर माही ।। सूखन कारण दूख विहाजे,अगनि घिरत परसाही ।। देव न सुखी दैत्त न सुखीए,सुखीए नहि अवतारा ।। श्रीचंद्र दुख दुखीए आगै,फोल होहि दुखिआरा ।।२।। हे मन पिआरे साजना,दुख कउ जीउ उपाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,तू किउं कर घबराया राम ।। किउं घबराया प्रभू रजाया, तन दुख मूल स्थाना ।। जुगह जुगंतर धनवंतरि ते,दूख न भयो मिटाना ।। जाली नूस लुकमान बिचारा,दीन पती रु मसीहा ।। श्रीचंद्र रवि इंद्र चंद्रमा,हरि हर विधि दुख लीहा ।।३।। हे मन

पिआरे साजना,इक ते इक होइ आगै राम ।। हे मन पिआरे साजना,सुख हरि नामहि लागै राम ।। नामहि लागै सूख सभागै,तन मन नास कराया ।। सूली चढ़त न विआपै दूखा,फूलहुँ दूख मनाया ।। आधि विआधि उपाधि निवासहि,तन मन ही कै माही ।। श्रीचंद्र सुख पाइऐ तब ही,जब तनु मनु न रहाही ।।४।।८।।२६३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,धरणी दुखित पुकारी राम ।। हे मन पिआरे साजना,ब्रहमा दुखित गुहारी राम ।। दुखित गुहारा वेद खुहाए,हरि संखासुर मारा ।। कूरम होइ सिर मंदर सहारा,सागर रतन उगारा ।। नाग सेज हरि महा दुखिआरा,हर सिर गंग बहाई ।। श्रीचंद्र दुख संत सहारहि,हरि हरि सिउं लिवलाई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,गल्ली दूख न जाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,कूड़ी जग चतुराई राम ।। जग चतुराई कूड़ कमाई,औखधि खरी अपारा ।। भार अठारह अंतु न आवहि,दूख न गया संघारा ।। रस मिस बिख अम्रित सभ मेली,तुंग रसाइण खाई ।। श्रीचंद्र सुख तनक न पायो,अगनि उठी अधिकाई ।।२।। हे मन पिआरे साजना,दुख विआपक संसारे राम ।। हे मन पिआरे साजना,पसु पंखी तरु डारे राम ।। तरुवर फल पा पाहन सहि

हैं,पंखी बाज निहारे ।। भोजन हेतु काक दुखिआरा,कोयल दुखित पुकारे ।। चात्रिक बूँद एक के कारण,पी पी कहि है टेरी ।। श्रीचंद्र म्रिग म्रिगमद पाई,मारिओ घेर अहेरी ।।३।। हे मन पिआरे साजना,ढूँघी सोच विचारो राम ।। हे मन पिआरे साजना,भ्रम भ्रम जनमु न गारो राम ।। जनमु न गारो सोच विचारो,सूख नहीं तिहुँ लोका ।। जो जो उपजिओ सो सो दुखीआ,बढै सोक पर सोका ।। अस्व मुख ते किंनर दुखीए,गंधरब गरदभ भाए ।। श्रीचंद्र तन मन की लालस,दूखन मूल कहाए ।।४।।६।।२६४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,साधां संगति रहिऐ राम ।। हे मन पिआरे साजना, राम नाम हरि गहिऐ राम ।। गहिऐ हरि हरि रामहि नामा,दूखन दुख न लागै ।। जपु तपु संजम सबद सलाहै,हउमै दुरमति भागै ।। सगले जीअ जंतु प्रभु केरे,सभ का सुआमी सोई ।। राम नाम जपु जपु श्रीचंद्रहि,संतन दरस संजोई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,गुण सागर हरि नामा राम ।। हे मन पिआरे साजना,संतन उर बिस्रामा राम ।। संत रिदै महि हरि प्रभु वासा,ऊचा अगम अपारा ।।

अवगुण तहां न ठहिरन पावहि,लैहैं देस निकारा ।। गुण परगास गुणी रस आया,नाराइण गुणतासा ।। श्रीचंद्र रतनां लहि खाणी,दुख दारिद सभि नासा ।।२।। हे मन पिआरे साजना,आसा दूख समूहा राम ।। हे मन पिआरे साजना,उर अंतरि उठि लूहा राम ।। लूहा उठे तड़प दिन राती,धावै देस विदेसा ।। दर दर मांगे त्रिपत न पावै,भेख धरे दरवेसा ।। महा विकारी सदा खुआरी,नहिं संतोख समावै ।। श्रीचंद्र लख कोटिहु अरबहुँ,खरबहुँ नहीं अघावै ।।३।। हे मन पिआरे साजना,भोगहुँ त्रिपति न होई राम ।। हे मन पिआरे साजना,अंतरि पावक गोई राम ।। पावक गोई जालै सोई,सीतल कबहुँ न थीवै ।। पाए घ्रित न अगनी बुझहै,भरत पिआलै पीवै ।। साधु बिना जल मरी सबाई,अंत लहिआ पछतावा ।। श्रीचंद्र कामनि रंग राते,रोग भए दुख हावा ।।४।। हे मन पिआरे साजना,एको नाम समारो राम ।। हे मन पिआरे साजना,तजि हउमै अहंकारो राम ।। तजि अहंकारो होहि निमाणा,माण दिवावै सोई ।। जे तन ताण तिआगहि बवरे,ताण अमेटा होई ।। संतन संग लहहि हरि गुणनिधि,सहिज समाधि समाइऐ ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम आराधे,परम पदारथ पाइऐ ।।५।।१०।।२९५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,जग महि कोइ न तेरा राम ॥ हे मन पिआरे साजना,चिड़ीआ रैण बसेरा राम ॥ रैण बसेरा करि उठि चाली,संग न साथी कोई ॥ पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन,दाणे पाणी ढोई ॥ बहुरि न मेल मिलै कबि,लख चुरासीह फेरा ॥ श्रीचंद्र सिर काल बिराजै,तू कबहूँ नहि हेरा ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,सोना रूपा संचै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,करि चतुराई बंचै राम ॥ बंचहि धन कउ करि चतुराई,नर हत रहिओ कसाई ॥ आदि जुगादी जुगहि जुगंतरि,कहु किह संग सिधाई ॥ हीरा मोती माणक लालन,पापन भार लदायो ॥ श्रीचंद्र ऐ रहहि इथाई,तूं जम बांध चलायो ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,पापां बाझ न होई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,मीठी छलिनी धोही राम ॥ मुख मीठी हसि हसि गर लागै,पुनि दूसर नर चाहै ॥ एक दोइ लख कोटिन ठागै,कसमल भार लदावै ॥ बनिता हरि की चहै वसावन,महामूढ जन सोई ॥ श्रीचंद्र रम रमा न साकहि,कालख दाग दगोई ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,संतन भेद लखाना राम ॥ हे मन पिआरे साजना,सभ जग फिरत दिवाना राम ॥ फिरत दिवाना माया मद

माता,बिन पीते बउराया ।। पुत्र कलत्र मात पित गुरु तजि,धरनी खोद रखाया ।। आए दिवस छोडि धन चाला,सीस खाक निज छानी ।। श्रीचंद्र जग संत सुहेले,जपु जपु सारंगपानी ।।४।।११।।२९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,साच सबद उर धारो राम ।। हे मन पिआरे साजना, जग मिथिआ बिउहारो राम ।। मिथिआ बिउहारो जग विस्तारो,काहे एह मन लाईए ।। संग जिनहुँ के लाभ न कोई,किउं सुभ काल गवाईए ।। गया स्वास फिर हाथ न आवै,दिए करोड़हुँ दामा ।। श्रीचंद्र गुरु सबद सुणाइआ,भजि लेहु आतम रामा ।।१।। हे मन पिआरे साजना,काचे संगि खुआरी राम ।। हे मन पिआरे साजना,बहहिं चुरासी धारी राम ।। लख चुरासीह जोनी धारहि,बहे अपार अनंता ।। कब ते चाला कलि लग चालहि,आदि न आयो अंता ।। ईस जीव सभ ही इक सारहि,जनम धार मरि जावहि ।। श्रीचंद्र जे पाका सेवहि,चरन कमल लिव लावहि ।।२।। हे मन पिआरे साजना,कचा रंग कुसुंभा राम ।। हे मन पिआरे साजना,घड़ीआं चार चुलंभा राम ।। चार चुलंभा रंग कुसुंभा,धूप

पेख उड जाणा ।। सुख के संगी सुत मित दारा,दुख महि दूरि पराणा ।। काचे गुरु माया के बंचक,लोभ हेत करि दासा ।। श्रीचंद्र जहँ आप बंधाने,तहँ ही सेवक फासा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,करि न गुरु अनजाणै राम ।। हे मन पिआरे साजना,पाणी पीजै छाणै राम ।। पाणी छाणै गुरु पछाणै,मोख भोग दातारा ।। नाम द्रिढ़ावै भरम मिटावै,ब्रहम लखावै सारा ।। भेख बणाया मिथिआ काया,लहिआ न आतम गिआना ।। श्रीचंद्र चमगिदड़ डाली,जिमि लटका लटकाना ।।४।।१२।।२९७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,साकत माया धारी राम ।। हे मन पिआरे साजना, ठगण ठग बिउहारी राम ।। ठग बिउहारी माया धारी,राम नाम रट लाई ।। पंखी जाल फसावन कारण,बोली बोल सुणाई ।। मुख ते बकता अंतरि थोथा,जोगी कटक कुटंबी ।। श्रीचंद्र जग गुरू कहावहि,माया मन अवलंबी ।।१।। हे मन पिआरे साजना,साकत संग न कीजै राम ।। हे मन पिआरे साजना,मन तन मैल भरीजै राम ।। मैल भरीजै साकत संगति,लब लोभ अहंकारा ।। माया

हेत फिरहि धर सारी,पाप विकार विथारा ।। करम धरम की सार न जाणहि,भेख धरहि निरबाने ।। श्रीचंद्र मद मूठे लोभी,परधन हिरन सिआने ।।२।। हे मन पिआरे साजना,संत संग मन भीजै राम ।। हे मन पिआरे साजना,मन ते मन पतीजै राम ।। मन पतीजै साधू संगति,साखी आतम रामा ।। अंतरि बैठा अंतरजामी,खोटै खरै लखामा ।। खोटे ठौरु न पावहि अंतरि,मन साचा परखै है ।। श्रीचंद्र बिनु साधू संगत,जम दर चोटां खै है ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु सच द्रिढ़ावै राम ।। हे मन पिआरे साजना,साच सबद लिव लावै राम ।। सच लिव लावै साच कमावै,सच्चे सच्च विहारा ।। सचो उपजै सचि समावै,सच खरा सचिआरा ।। साच धरम फल पुंन महाना,सच्ची दरगह थाना ।। श्रीचंद्र नहि आंच साच कहु,सच्चे माहि समाना ।।४।।१३।।२९८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,गुरुमुख होइ गुण गाइऐ राम ।। हे मन पिआरे साजना,जीवन पदवी पाइऐ राम ।। जीवन पद पाइऐ हरि गुण गाइऐ,पत पैधे घर जाई ।। लख चउरासीह दूरि भगाई,हरि हरि राम समाई ।। मन सीतल रस सबद विगासा,हउमै खोइ गवाई ।।

श्रीचंद्र यह नर नाराइण,गुरुमुख होइ लखाई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,बिनु भागां वैराग न होई राम ।। हे मन पिआरे साजना,हरि रंग रंगे कोई राम ।। रंग रंगे कोई रंग बैरागै,जिसि प्रभु किरपा धारी ।। बंधन तिस के सभ गवाए,सुत बंधप परिवारी ।। साक संबंध धन धरनी डारी,राम नाम चित लाया ।। श्रीचंद्र पूरब के भागी,मन वैराग समाया ।।२।। हे मन पिआरे साजना,जग महि कोइ न तेरा राम ।। हे मन पिआरे साजना,कूड़ संबंधी घेरा राम ।। कूड़ी घेरा कोइ न तेरा,बिरथा स्रम उठाइआ ।। मातु पिता सुत दारा भाई,कूड़ा मोह जनाया ।। निज प्रयोजन कारण सगले,पुच पुच करत निहारै ।। श्रीचंद्र जबि आपद आई,सभ ही डार पधारै ।।३।। हे मन पिआरे साजना,राम नाम लिव लावहु राम ।। हे मन पिआरे साजना,गुण कहि गुणी समावहु राम ।। गुणी समावहु उर लिव लावहु, साधहु सास सुजाना ।। इड़ा पिंगला सुखमन संगमि,मल मल करहु इस्नाना ।। गंग जमुन बेणी त्रिहुँ गुण की,कसमल निखल प्रजारे ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम ले जावै,पारब्रहम के दुआरै ।।४।।१४।।२९६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,जपु गोबिंद गति पाई राम ।। हे मन पिआरे

साजना,मिट गई जोनिनि धाई राम ।। जोनिनि धाई सगल मिटाई,पाया लाभ अपारा ।। खिड़िआ कमल सुगंध समानी,रवि प्रगटै उजिआरा ।। गगनंतरि गोबिंद गरजिआ,अनहद धुनि मंडराई ।। श्रीचंद्र मन भवर गुंजारा,राम नाम वडिआई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,हरि सिमरन जेड न कोई राम ।। हे मन पिआरे साजना,गिआनी जन अवलोई राम ।। जन अवलोई गिआनी कोई,राम पदारथ सारा ।। रतन जवाहर माणक मोती,कंचन तुच्छ पसारा ।। लाल मणी कछु कीमति पावै,अमुल नाराइण नामा ।। श्रीचंद्र दरगाहे गइआ,आवहि जिअ के कामा ।।२।। हे मन पिआरे साजना, गुरुमुख राम धिआवै राम ।। हे मन पिआरे साजना,हऊमै तजि सुख पावै राम ।। सुख पावै हरि राम धिआवै,दुबिधा दुरमति भागै ।। जनम जनम का सोइआ इहु मन,राम नाम जपु जागै ।। आसा मनसा सगली पूरी,अम्रित पीआ अघाई ।। श्रीचंद्र सभ बिआधि बिनासी,राम प्रीति प्रगटाई ।।३।। हे मन पिआरे साजना,एको नाम धिआवहु राम ।। हे मन पिआरे साजना,सहिज जोग निधि पावहु राम ।। निधि पावहु नित राम धिआवहु,तोटि न आवै काई ।। खावउ खरचउ भोग भुंचावउ,नित नित वधदो जाई ।। सहिज सूख कलिआण सरब सिधि,मंगल खेम मनावहु ।। श्रीचंद्र जग जनम सवारहु,

राम नाम चित लावहु ॥४॥१५॥३००॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,गुरु चरनी चित लाईए राम ॥ हे मन पिआरे साजना,निसचय तब ही पाईए राम ॥ निसचय पाईए गुरु सरणाईए,राम नाम इक सारा ॥ मिथिआ तन मिथिआ धन माया,मिथिआ सभि परिवारा ॥ मिथिआ चंद्र सूर सुर सगरे,मिथन कलप कलपाइऐ ॥ पूरे गुरु श्रीचंद्र उर,सत मिथिआ निरमाइऐ ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,गुरु बिनु गिआन न होई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,भरम भवै तिहुँ लोई राम ॥ त्रिहुँ लोई भ्रम भ्रम भ्रम थाके,बिन गुरु गिआन न पाया ॥ देव निहारे भोगन मारे,सहस भगन की काया ॥ गिरि गिरि गगनहुँ जाहि रसातल,निहचल पुरी न कोई ॥ श्रीचंद्र गुरु गिआन द्रिढ़ाया,हरि नाराइण लोई ॥२॥ हे मन पिआरे साजना, संजोग विजोग हरि कीआ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,मिलि बिछुड़न सभि जीआ राम ॥ सभ जिअ मिलि बिछुड़हि इक दूजै,करते लिखिआ लेखो ॥ जहँ जहँ दाणा पाणी खाणा,जिहँ जिहँ ठौरन पेखो ॥ नर नारी सभ मेल मिलाए,मेल विछोड़े जाती ॥ श्रीचंद्र तिल भरि

नहि विचले,करते कीन कराती ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,तुमरा कीआ न होई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,होइ है करते गोई राम ॥ करते गोई होइ है सोई,बिरथा आप लखावै ॥ आपहि भूख पिआसे राखै,आपहिं भोग भुगावै ॥ जिवें नचावहिं तिव ही नाचै,किआ इह जंतु विचारे ॥ श्रीचंद्र लकड़ी की पुतली,नित्त कराए सिंगारे ॥४॥१६॥३०१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,बिन भागां धन नाही राम ॥ हे मन पिआरे साजना,भावे जहँ जहँ जाही राम ॥ जहँ जहँ जाही तहँ तहँ हरि प्रभु,करम चलाए सरीरा ॥ संचित परारब्ध का संगी,औखा सौखा भीरा ॥ जो धुरि लिखिआ सोई पाइए,जतन करत लख धाइऐ ॥ श्रीचंद्र सद भाग संजोगी,गाढी कीन कमाइऐ ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,जे करि लिखिआ भाला राम ॥ हे मन पिआरे साजना,परबत देवहि लाला राम ॥ देवहि लाला परबत माला,आपद पड़ै सिधाइऐ ॥ माटी गोला हाथ धरे ते,कंचन होइ लखाइऐ ॥ चिंता वसि नख सों खणि धरणी,मुहरन गागर लहिऐ ॥ मस्तक लेख अमेट श्रीचंद्र,व्रिति संतोख समहिऐ ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,तजि

आसा सुख होई राम ।। हे मन पिआरे साजना,त्रिसना खुआरी गोई राम ।। खारी गोई त्रिसना लोई,भटक भटक नर खोया ।। मानुख तन दुरलभ को पाइ,सु कौडी हेतु विगोया ।। आसा राता साधु न होवी, राजन धक्के खावै ।। श्रीचंद्र जहँ आसा तिआगी,किउं साहन दर जावै ।।३।। हे मन पिआरे साजना, त्रिसना जेड न दूखा राम ।। हे मन पिआरे साजना,त्रिप्ति अघाना भूखा राम ।। अघाना भूखा कबहुँ न त्रिपतै,लाख करोड़ी पाए ।। जिउं जिउं पावै तिउं तिउं लोचै,सेस पुरी न समाए ।। लहे सुमेर अघावहि नाही,डाकिणि त्रिसना भारी ।। श्रीचंद्र धरि साधु महाजन,पोखी पेट पिटारी ।।४।।१७।।३०२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,मनमुख काम विआपै राम ।। हे मन पिआरे साजना,नित नित दुख संतापै राम ।। नित संतापै काम विआपै,पर नारी रस राता ।। टेड़े नैन कदम भे टेड़े,टेड़ी बोलन बाता ।। सर अपसर की सार न जाणै,मति गति पति सभ खोई ।। श्रीचंद्र नर कामी केरी,हरि दरगह नहिं ढोई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,क्रोध वडी बुरिआई राम ।। हे मन पिआरे साजना,मारे भाई भाई राम ।। मारे भाई करि करि धाई,आजुध पैनी धारा ।। मरता दीन पुकारे

हा हा,मूल न सुनै गुहारा ॥ रक्त नैन मुख रक्त सुहावै,कर पद सिर थररावै ॥ श्रीचंद्र खिन तजि मित्रप,सत्रुप ह्वै दरसावै ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,मोह महा दुख खाणी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,कूड़ा गहिण गहाणी राम ॥ कूड़ गहाणी सुत सावाणी,बिनु दुख दुख बिरमाई ॥ सजल नैन बैन अटपट से,तन सुधि दूर बहाई ॥ प्रतिपालक किरपाल गुसाइआं,राखणहार बिसारा ॥ श्रीचंद्र मोहे नर बांधे,पाप पोटि सिर धारा ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,लोभ लागि मति खोई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,लुक बैठा मन सोई राम ॥ मन सोई लुकिआ घात लगाई,कबि इह हरहुँ निधाना ॥ नेत्र मूँद माजार धिआनी,बक इक टंग टंगाना ॥ जाचक घातक बंचक संगहि,नितप्रति परिचित होही ॥ श्रीचंद्र हरि देव गुरु बिप्र,संतन केरो ध्रोही ॥४॥१८॥३०३॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,अहं मूल हतिआना राम ॥ हे मन पिआरे साजना, नहिं असमान समाना राम ॥ नाहि समावै बीच अकासहि,जामा फाड़ सिधारा ॥ माल मिलक अरु बाग बगीचे,पुत्र मित्र परिवारा ॥ अंना बोला चाल डगमगी,कुद कुद हिमगिरि धाई ॥ श्रीचंद्र यख्य

किंनर गंधरब,देवन ते उचिथाई ।।१।। हे मन पिआरे साजना,दुंदभि धुनि धुनिकारा राम ।। हे मन पिआरे साजना,धुज ऊची रंग कारा राम ।। रंग कारा धुज ऊची अग्रज,सेनापति कुबोला ।। नारी गारी संग सिधारी,माइ बहिन तन लोला ।। मायाधारी चंचल चपला,खिन खिन तन पलटावहि ।। श्रीचंद्र जिहँ ओर निहारहि,थर थर तिहँ कंपावहि ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सेनानी अति रथी कठोरा राम ।। हे मन पिआरे साजना,हिच है लहिन भोरा राम ।। नहि भोरा हिच है रथ निहते,ह्वै घोरे मुसकी रंगा ।। चिन्ह आदिती तुंग पताका,गाड़ी भूमि सु जंगा ।। चंड प्रचंड महा भुजदंड,ठोक ठोक गरजाने ।। सिंघनाद तड़िताहि तड़ाके,श्रीचंद्र सरमाने ।।३।। हे मन पिआरे साजना,मुखहुँ ब्रहम उपजाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,गिआता वेद महाया राम ।। वेदन गिआता जग बिखिआता,को मो सर धरि माही ।। सभ दिगविजै हमारी होई,सनमुख को न अलाई ।। हिफज कुरान किओ मुहि सकला,मसले गढे हदीसा ।। श्रीचंद्र कुरनस करि ठाढै,आयस मानहि सीसा ।।४।।१६।।३०४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,गुण गहि अवगुण तिआगो राम ।। हे मन पिआरे

साजना,अंतरि द्रिस्टी पागो राम ।। द्रिस्टी पागो पेख आकासहि,घट मठ भेद निहारो ।। फूटि अकारहि नभ अविनासी,बुधि बिबेक बिचारो ।। पारब्रहम प्रभु सदा अलेपा,तन बिनसै उपजै है ।। श्रीचंद्र विआपक हरि पूरण,तुमरे बीच समै है ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मारुत वेग चलंता राम ।। हे मन पिआरे साजना,सम सपरस सभ जंता राम ।। सभ जीअ जंता वण त्रिण खग म्रिग,परसै एक समानै ।। राव रंक अनपावन पावन,भेद न किउं हूँ ठानै ।। ता ही सद्रिश संतन करणी,भेद भाव ते हीनी ।। श्रीचंद्र पवनै की रहणी,साधु गही उर बीनी ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सीतल जल लख पाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,धरम न कबहुँ गवाया राम ।। कबहुँ गवाया धरम न रस ने,अगनी सांति करावै ।। मेल मिलावै पिंड बनावै,गुण सनेह सरसावै ।। ठंडक संत जना के अंतरि,कस्ट सहारत सीसा ।। श्रीचंद्र सूली पर नाचहि,सिमरि सिमरि जगदीसा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,अगनी सरब जलावै राम ।। हे मन पिआरे साजना,जान अजान न भावै राम ।। भावै जानै या अनजानै,जो आवै तिस दाहै ।। संत जना की संगति तैसहि,पाप कलाप बिनाहै ।। अंतर निरमल ह्वै गुण ग्राही,जग महि साधू सेई ।। श्रीचंद्र गुणनिधि गुणतासा,गुरुमुख होइ लखेई ।।४।।२०।।३०५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,धरणी धीरज पाई राम ॥ हे मन पिआरे साजना, जोतहि हलन वहाई राम ॥ हलन वहाई जोतहि खोदहि,विस्टा मूत्रन डारहि ॥ ईंटै बासन सरब पकावहि,रचहि पजावै भारहि ॥ कस्ट न मूहि उबाचा कबहूँ,कोटन कोट उसारै ॥ श्रीचंद्र दुख साधु सहारहि,सी न कबहुँ उचारै ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,तन दाहे रवि आदि जुगादी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,निज बरबादी जगत अहिलादी राम ॥ जगत अहिलादी निज बरबादी, किरखि पकावै अंना ॥ नर खग म्रिग जड़ जंगम पोखै,बिचरहि सदा अनंदा ॥ करणी संत धुरहुँ प्रभु कीनी,भान होइ प्रगासहु ॥ श्रीचंद्र भव नैन जोति दिहु,धरम अधरम प्रभासहु ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,चंद्र सुधा दरसाया राम ॥ हे मन पिआरे साजना,रस ससि सगल सुहाया राम ॥ सगल सुहाय रस ससि माही,किरण सुधा वरसाई ॥ रस ही जीवन आनंद दाता,जान लेहु मन भाई ॥ अमिअ चुआया साधु सुहाया,जनम मरण दुख नासा ॥ श्रीचंद्र अम्रित पा अमरा,संगति साधु विकासा ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,तरवर पर उपकारी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,फल दैहै

संसारी राम ।। फल संसारी दै तरु झारी,सूकै बोहिथ थीवै ।। स्रम बिनासै भोज परगासै,उदर भरै नर जीवै ।। जब लग भव महि करत निवास,सदा साधु उपकारी ।। श्रीचंद्र निज बान न तिआगहि,सुख दैहैं संसारी ।।४।।२१।।३०६।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु ते गुण जापै राम ।। हे मन पिआरे साजना, हरि सिम्रित गति पापै राम ।। गति पापन हरि सिम्रित होवै,गुण गिआनी गुरु पूरा ।। पूरब भाग जाहि प्रभु लिखिआ,साधु मिलै तिसि धूरा ।। धूरी साधहि मज्जन कीजै,गुण सागर उर कूजै ।। श्रीचंद्र अबिचल आसन थित,देव दैत्त नर पूजै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मन निरमल गुरु सेवा राम ।। हे मन पिआरे साजना,चाखहि अम्रित मेवा राम ।। अम्रित मेवा सत्गुरु सेवा,परमानंद समाया ।। गगनंतरि चढ़ि सभ जग निरखै,दूखन थाउ गवाया ।। अविनासी रस तूल न कोऊ,किमि को कहै जबानी ।। श्रीचंद्र गूँगे को आनंद,सहिज समाधि समानी ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सबद गुरू

धुनि लाई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,धरम करम सरसाई राम ॥ सरसे करम धरम जपु तापा, संजम ब्रत इस्नाना ॥ गिआन धिआन गुण अंक समाने,आतम निरमल भाना ॥ गुरु सबदी पाइऐ आप गवाइऐ,पारब्रहम अविनासी ॥ श्रीचंद्र अनहद गुरु नादा,गंदे अंड विकासी ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,पारब्रहम सभ थाईं राम ॥ हे मन पिआरे साजना,अंतरि सबद धिआईं राम ॥ गुरु सबद धिआई हरि दरसाई,सरब रहिआ भरपूरे ॥ आइ न जाइ सदा अविनासी,घट घट एको नूरे ॥ आनंद पाइऐ सहिज समाइऐ,हरि कीरति लिव लाइऐ ॥ श्रीचंद्र गुरु पूरे सबदी, अंतरि ब्रहम लहाइऐ ॥४॥२२॥३०७॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,हरि सिमरउ चित लाई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,दुबिधा दूरि तजाई राम ॥ दूरि तजाई दुबिधा चिंता,गुरु सबदी मन माना ॥ रतन जवाहर लाल अपारा,पाइआ नाम खजाना ॥ तोट न आवहि खावहि भुंचहि,नित नित वधहि

सवाया ।। श्रीचंद्र हरि नाम पदारथ,गुरुमुख रिदै समाया ।।१।। हे मन पिआरे साजना,गुरु पूरा समझाए राम ।। हे मन पिआरे साजना,सर संतोख न्हवाए राम ।। संतोख न्हवाए आस गवाए,मानुख किहा विचारा ।। जो मांगै सो किहँ कछु दैहै,दै करि करन चितारा ।। पूरण प्रतिपालक हरि धिआई, चउरासीह का दाता ।। श्रीचंद्र इक बारहि दीना,नर जीवन आघाता ।।२।। हे मन पिआरे साजना, दरसन साधू जाइऐ राम ।। हे मन पिआरे साजना,मिथिआ वस्तु न चाहिऐ राम ।। मिथिआ नहि चाहिऐ जलिऐ भाहिऐ,आइ जाइ पछुताइऐ ।। सोग विजोग महादुख मूला,मिथिआ माहि समाइऐ ।। सत्त पदारथ गोबिंद नामहि,घाट न सोग विजोगा ।। श्रीचंद्र नाराइण नामै,विआपत सगले भोगा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,आनंद मंगल सुहेले राम ।। हे मन पिआरे साजना,करत नाम रस केले राम ।। केल करत मनमोहन नामहि,दूजी आस चुकाई ।। ईत ऊत जन सदा सुहेला, त्रिसना त्रिखा बुझाई ।। हरि प्रभु करता अंग संग,नित सद ही राखणहारा ।। श्रीचंद्र सुख नौनिधि पाइऐ,पारब्रहम के दुआरा ।।४।।२३।।३०८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,कूड़ा मोह पसारा राम ।। हे मन पिआरे साजना, मात पिता सुत दारा राम ।। सुतदारा सभि कूड़ पसारा,माया बंधे सारे ।। खावण भोगण केरे संगी, आपदि तिआग पधारे ।। निरधन के को निकटि न आवै,सरधन घेरा पाए ।। श्रीचंद्र भजि राम नाम कउ,किउं इन महि उरझाए ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मस्तक लिखिआ लेखो राम ।। हे मन पिआरे साजना,मिलिहै अवसि परेखो राम ।। अवसि परेखो मस्तक लिखिआ,मेट न साकहि कोई ।। जेता लिखिआ तेता पैहै,घट वध नहि होई ।। जहँ जहँ दाणा तहँ तहँ खाणा,अवरु न भागीदारा ।। श्रीचंद्र तजि आस बिरानी,राम नाम उर धारा ।।२।। हे मन पिआरे साजना,प्रतिपालक हरि साईं राम ।। हे मन पिआरे साजना,सदा थिति सभ थाईं राम ।। सभ थाईं सद थिति सुआमी,सरब जीआं का दाता ।। प्रतिपाल करंता सद लाडंता,जिउं बारिक पितु माता ।। अवगुण लाख करे नर कोई, भोजन कबहुँ न टारै ।। श्रीचंद्र राजिक कउ सद सद,बारन मनहि चितारै ।।३।। हे मन पिआरे साजना,तजि चिंता सुख सोइऐ राम ।। हे मन पिआरे साजना,जो होणा सो होइऐ राम ।। जो किछु होणा

सोई होसी,फेर न साकहि कोई ।। आप उपाए आप बिनासे,आपहि पालै सोई ।। जीव जंत ये किआ वेचारे,तिनका सकत न तोड़ी ।। श्रीचंद्र गोबिंद धिआइऐ,जग त्रिसना मन होड़ी ।।४।।२४।।३०६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,जग महि कोइ न तेरा राम ।। हे मन पिआरे साजना,नगरै जोगी फेरा राम ।। जोगी फेरा नगरी पाया,नहिं बैठण का कामा ।। अलख जगाई कीनी धाई,झोली पायो तामा ।। जंगल जाइ कूल तट बैठा,बट तरु कीन बसेरा ।। श्रीचंद्र जोऊ ठौर न पेखी, तहँ चलि कीनो डेरा ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मोह भीतरि दुख वासा राम ।। हे मन पिआरे साजना,जग ते रहहु निरासा राम ।। रहहु निरासा धन की आसा,दूख न विआपै आई ।। मन प्रफुलित हरि गुण गावहु,हरि रंगि नाद वजाई ।। आसावंत दीन दुख भरिआ,मति पत सगरी खोई ।। श्रीचंद्र महाराज नाराइण,अग्रज जाचत लोई ।।२।। हे मन पिआरे साजना,थिर कछहू जग नाही राम ।। हे मन पिआरे साजना,सभ के सभ बिनसाही राम ।। सभ बिनसाही थिर कछु नाही,

आगम पाई माया ।। जो आया सो सभ को जासी,काहे मन बिरमाया ।। कूड़ पदारथ कूड़ा सुआरथ,तजि प्रभु नाम धिआई ।। श्रीचंद्र सत्गुरु अविनासी,पूरण सीख सिखाई ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सुख प्रभु नाम धिआए राम ।। हे मन पिआरे साजना,माया आवै जाए राम ।। आवै जावै माया नाटी,टिकण न पावै राई ।। आदि जुगादी ते इम करती,महापुरुख लख पाई ।। जिनि अपनाई तिस ही घाई,गई अवर के पासा ।। श्रीचंद्र माधव सेवे,तजि माया की आसा ।।४।।२५।।३१०।।

ओम् पारब्रहमणे नम:

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,संत संगति मिल रहीए राम ।। हे मन पिआरे साजना,नाम पदारथ गहीए राम ।। नाम पदारथ पूरक स्वारथ,अंधकारहि उजिआरा ।। अंधले को टिक निरधन को धन,संतन रिदै सम्हारा ।। तपत घाम महि छाम सीतली,सागर पोत महाना ।। श्रीचंद्र जपु राम नाम नित,साधु कमल बिगसाना ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मनमुख मन वसि नाही राम ।। हे मन पिआरे साजना,भंभल भूसे खाही राम ।। खाही भंभल भूसे मनमुख,लख चुरासीह फेरे ।।

तेली संदा बलद न पावै,अंत कोलू के घेरे ।। गंधरब नगरी को धाइआ,कहुँ किहुँ कंचन पाया ।। श्रीचंद्र कल्लर जल हित,म्रिग मन प्राण गवाया ।।२।। हे मन पिआरे साजना,नारी गोबिंद माया राम ।। हे मन पिआरे साजना,को बिआहे नर जाया राम ।। नर जाया लहि मिथिआ काया,नाराइण अविनासी ।। इक ऊरध इक जाइ पताली,किमि करि मेल मिलासी ।। सच्चै सच्च मिलै वडिआई,कूड़ै कूड़ समाणा ।। श्रीचंद्र कूड़ा नर चाहै,माया सत्त वसाणा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सच्च कूड़ सद झेड़ा राम ।। हे मन पिआरे साजना,जग खेत्र भट भेड़ा राम ।। भट भेड़ मचाया,गहि धन पाणी मूसल गुरजारे ।। गदा परस पट पास सूल सर,शक्ति खड़ग कर धारे ।। कूड़ विनासे सच्च जीतिआ,स्वयंबर भयो उझारा ।। श्रीचंद्र गर माल डराई,ले हरि माइ सिधारा ।।४।।२६।।३११।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,स्वासन किआ भरवासा राम ।। हे मन पिआरे साजना,गंढी पवन आकासा राम ।। पवन आकासै गंढि चलाई,अद्भुत खेल रचाइआ ।। तन मंदर

मारुत कै थंभै,इत उत बिचरत धाइआ ।। आवण जाणा थिरत न काहूँ,जीवन ऐऊ लखावै ।। श्रीचंद्र जादूगर जादू,रचि रचि कै बिरमावै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,जड़ चेतन किआ मेला राम ।। हे मन पिआरे साजना,अचरज अचरज खेला राम ।। अचरज का आसचरज तमासा,मति बुधि भवी बिचारी ।। रक्त बिंदु के भीतरि स्रिस्टी,विस्तारी असुमारी ।। जड़ नैन महि चैतन द्रिस्टि,जड़ रसना रस जाना ।। श्रीचंद्र जड़ चैतन ग्रंथी,छूटित भया मसाना ।।२।। हे मन पिआरे साजना,तिलस्म भूत सिधाना राम ।। हे मन पिआरे साजना,आपहि आप हिराना राम ।। आप हिराना भया दिवाना, तिलस्म भूत गहावै ।। द्रिस्टि पेख कै धावै गहिणै,हाथ न कछहू आवै ।। जिउं जिउं निकटै तिउं तिउं दूरी,पवन भयो परवाना ।। श्रीचंद्र कब को एहि कौतक,किनहूँ नाहिन जाना ।।३।। हे मन पिआरे साजना,पुतली दार नचाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,पुतलीगर न लखाई राम ।। पुतलीगर नहि लखिओ कदाहूँ,पुतली चाहै पेखा ।। इस आसय का कउन सु सुआमी,अद्‌भुत रेखी रेखा ।। तंती तंत पसारै आपहि,आपहि तहँ बिनसावै ।। श्रीचंद्र लख कोटी ब्रहमै,कल्प कल्प कलपावै ।।४।।२७।।३१२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,एको नाम धिआई राम ।। हे मन पिआरे साजना, मन की मनहि समाई राम ।। मनहि समाई मन की होवै,गोबिंद नाम धिआए ।। अगनि उपाई मन ही भीतरि,मन ही सांत कराए ।। सभ जपु सभ तपु सगले करमा,काम न आवहि कोऊ ।। श्रीचंद्र मन नामहि राता,सहिज समावै सोऊ ।।१।। हे मन पिआरे साजना,जे तूँ आप सवारहि राम ।। हे मन पिआरे साजना,गुरु मिलि नाम सम्हारहि राम ।। नाम सम्हारहि सत्गुरु संगे,पावक जलहि न भाई ।। किआ कछु करता किआ कर रहिआ,चितवनि चित्त बहाई ।। अंधकार बन भीतरि गहरे,दौड़ दौड़ कर धाई ।। श्रीचंद्र शायद कर किरपा,चानण देइ दिखाई ।।२।। हे मन पिआरे साजना, परमेस्वर किनि पाइआ राम ।। हे मन पिआरे साजना,पांच तत्व की काया राम ।। पांच तत्व की काया भीतरि,परमेस्वर किमि पावै ।। सातों पुरीआ धाम चार ही,अठसठ तीरथ न्हावै ।। जपु तपु संजम कोटि कमाई,जोग यग्य विगिआना ।। श्रीचंद्र परमेस्वर रचिआ,चहि परमेस्वर जाना ।।३।। हे मन पिआरे साजना,नामहुँ उपजै सांता राम ।। हे मन पिआरे साजना,चूकै भ्रम भै भ्रांता राम ।। भै भ्रांत

बिनासै नाम सम्हारै,सांत सहिज सुख जानै ।। परमानंद समुद्र समावै,डुबकी लाइ महानै ।। ऊपर आइ भनै नहि काहूँ,रस संगम लिव लावै ।। श्रीचंद्र अम्रित लख राता,सहिज जोग बिरमावै ।।४।।२८।।३१३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,प्रभु भाणै सुख होई राम ।। हे मन पिआरे साजना, उलट करै किआ कोई राम ।। किआ कोई उलटावै भाणा,बिनु जलपन किआ बाता ।। जो किछु लिखिआ सोई होसी,हसण रोवण घाता ।। जिसहि हसावै कवण रुलावै,रुआए कवण हसाए ।। श्रीचंद्र जिस प्रभु भुलाए,को तिस मारग पाए ।।१।। हे मन पिआरे साजना,कलपन हिय कलपाना राम ।। हे मन पिआरे साजना,चाहैं साज बिगाना राम ।। साज बिगाना चाहै प्रापति,पातसाह सिरताजा ।। हाथी घोड़े लस्कर जोड़े,चंद्र मुखिन का नाजा ।। उद्यम करै अनिक बहु भाती,प्राण गवाए राही ।। श्रीचंद्र बिन भागां काहूँ,लीनी है पातसाही ।।२।। हे मन पिआरे साजना,हुकम प्रभू सिरताजा राम ।। हे मन पिआरे साजना,कोइ न मेटै राजा राम ।। राजे मेट न साकहि हुकमा,लिखिआ प्रभु का जोई ।।

भए भिखारी चहुँ चक्रवरती,जाचक राज थिरोई ।। देवराज कंज भीतर दुरिआ,मसक भयो बिलखाना ।। श्रीचंद्र जो हुकम इलाही,सभ जग सिर सहराना ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सिर नावउ प्रभु आगै राम ।। हे मन पिआरे साजना,जो कछु देइ सो झागै राम ।। जो कछु देइ सो झागै सिर पहि,सांति गहै उर माही ।। जे भावै ता राज थिरावै,भावै भीख मंगाही ।। कलपन सगल निवारे मन की,तरस पवै तिहँ आई ।। श्रीचंद्र जिसि पेश न आगै,चतुराई कुहताही ।।४।।२६।।३१४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,साहिब परम सुजाना राम ।। हे मन पिआरे साजना,चंगा मंदा जाना राम ।। चंगा मंदा जानै साहिब,अंतरजामी पूरा ।। घट घट पट पट सरब बिराजै,पहिचानै सच्च कूरा ।। घालै घाल जैस बिधि कोई,तिल मात्र नहीं भानै ।। श्रीचंद्र जिमि बीज बीजिआ,काटहि सोऊ निदानै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,करि उद्दम हरि जापहु राम ।। हे मन पिआरे साजना,आप लहाए आपहु राम ।। आपण आपा आप लहाए,जिउं तिस की वडिआई ।। नाम जपहु नामहु आराधहु,मानस एत चलाई ।। करहु मसकत लहहु मजूरी,बखसस तिसु हुकमावै ।।

श्रीचंद्र प्रभु अंतरजामी,खुस होवत निज नावै ।।२।। हे मन पिआरे साजना,संतन नाम सम्हारा राम ।। हे मन पिआरे साजना,निखुटत नाहि भंडारा राम ।। भंडारा नहि निखुटत नामहि,चौदस भुवन वरसाए ।। देव दैत्त यख्य किंनर गंधरब,सकल रहे त्रिपताए ।। नर बपुरे किहँ माहि विचारे,त्रैदस अंगुलि पेटी ।। श्रीचंद्र नाराइण नामहि,सगली स्रिस्टि लपेटी ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु सिख समालहु राम ।। हे मन पिआरे साजना,गुरुमुख हरि मग चालहु राम ।। गुरुमुख मग चालहु दुरमति घालहु,हरि भाणै त्रिपतावहु ।। इह जग कीरति सभनी थाईं,आगै सोभा पावहु ।। कर बंदे रविसुत है अग्रज,धंन धन्य मुख भाखै ।। श्रीचंद्र सत्गुरु अनुगामी,काखहुँ है लख लाखै ।।४।।३०।।३१५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,हरि की अमित वडाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,इक जीह कही न जाई राम ।। कही न जाई एक जीह ते,हरि की अमित वडाई ।। सेसनाग

द्वै सहस्त्र जिहबा,सोइ न रैण गवाई ।। नवतन नाम रटत नितप्रति प्रभु,अंतु न पायो ताही ।। श्रीचंद्र तूँ किआ वेचारा,नाम गुबिंद सलाही ।।१।। हे मन पिआरे साजना,पंखी नभ भरमावही राम ।। हे मन पिआरे साजना,अंत न पावहि ताही राम ।। अंतु न पावही नभ भरमावही,निज स्त्रम सकल निवारहि ।। धरणी तर पहि आइ विराजहि,चोंचन पंख सवारहि ।। नाम धिआवहु अंतु न पावहु, आपन आप सवारहु ।। श्रीचंद्र संतन उपदेसहि,निज मन भीतरि धारहु ।।२।। हे मन पिआरे साजना,तुमरो हरि प्रभु रामा राम ।। हे मन पिआरे साजना,आवहि जिअ कै कामा राम ।। काम जिअ कै हरि प्रभु रामा,नाराइण गोबिंदा ।। मोहन माधव मधु कैटभ अरि,मदन मुरारि मुकंदा ।। सावल सुंदर सुख निधान,सुभ गति दाइक त्रिपुरारी ।। श्रीचंद्र अविनासी नरहरि,बंसीधर गिरिधारी ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सीतल तन मन छाती राम ।। हे मन पिआरे साजना,रसना हरि रंग राती राम ।। रसना रंग राती सीतल छाती,गुण गावत हरि केरे ।। सागर प्रेम उमड़ दे लहरी,तद कसमल कउ गेरे ।। पूरण कल ससि निरख उमाहै,ननद नाद सुख पाई ।। श्रीचंद्र मन उछल उछल करि, आपन भाव जनाई ।।४।।३१।।३१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,तन महि मन हरि पाया राम ॥ हे मन पिआरे साजना,तम सत प्रभु की माया राम ॥ प्रभु की माया अंत न पाया,अनिक रंग विस्तारा ॥ ऊच नीच सुख दुख नर देवा,सांत अहं निरधारा ॥ सुरग नरक अरु लोक पाताला,मिट्ठा कौड़ा भाई ॥ श्रीचंद्र मोह अपर बिबेका,सच्च कूड़ स्त्रिस्टाई ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,प्रभु की खेड निराली राम ॥ हे मन पिआरे साजना,जगत बाग हरि माली राम ॥ हरि माली जग बाग लगाया,ब्रिख अरोपे केई ॥ बीज बीज कर प्रतिपाले,हरि पाक पकावै तेई ॥ बिन फूलहि काहूँ फल होवहि,को फल बिन दै फूला ॥ फूलहि ते फल किहँ उपजायो,को इन ते प्रतिकूला ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,अकथ कथा हरि केरी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,किहँ बिधि कहिऐ टेरी राम ॥ किहँ बिधि कहिऐ हरि प्रभु बाता,बुद्धि रही बिसमाई ॥ को सूखै पावस रितु माही,को माणै हरिआई ॥ ग्रीसम को मोलियो अधिकहि,काहि सिसिर सरसावै ॥ श्रीचंद्र अद्भुत हरि लीला,पेखि पेखि बिगसावै ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,प्रभु को अंतु न लहिऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,नाम जपत निरभहिऐ राम ॥

राम नाम जपते निरभहिऐ,भव भीतरि गण सासा ।। जिहँ नर अंतु चहिओ हरि केरा,पूरी न ता की आसा ।। गुरुमुख मनमुख अंतर एता,चित भीतरि मन जानो ।। श्रीचंद्र मनमुख एहि अंतर,गुरुमुख नाम समानो ।।४।।३२।।३१७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,नाराइण वडियाई राम ।। हे मन पिआरे साजना, रंकहि देत राजाई राम ।। रंकहि राज दे खिन माही,कर भूपालन रंका ।। निरगुण गुणी गुणी निरगुणीए,सूधे करता बंका ।। अभर सुभर कर डारै हरि प्रभु,सुभर अभर करि डारे ।। श्रीचंद्र पातालों नभ लहिं,नभहुँ पाताल उतारे ।।१।। हे मन पिआरे साजना,पेखि पेखि बिगसीजै राम ।। हे मन पिआरे साजना,हरि गुण अंतरि भीजै राम ।। अंतरि भीजै जग कउ पिखि पिखि,हरि का खेल अपारा ।। बिंदु एक ते पिंड बणाइआ,अनिक भेद विस्तारा ।। जैसा एक न दूजा तैसा,चौदहुँ लोकन माही ।। पेखि पेखि श्रीचंद्र बिगसिऐ,सम गोबिंद अन नाही ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सभ ते हरि प्रभु ऊचा राम ।। हे मन पिआरे साजना,कोइ न सकत पहुँचा राम ।। सकत पहुँचा नाहिन कोऊ,अति ऊचा

दरबारा ॥ देव दैत्त जख्य किंनर गंधरब,जोगी जती अपारा ॥ जपी तपी और गिआनी धिआनी, पंडित मुनि अवतारा ॥ गौंस पीर श्रीचंद्र पैगंबर,पाइ न साकहि पारा ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,बिन अरदास न कामा राम ॥ हे मन पिआरे साजना,पहुँचै प्रभु कै धामा राम ॥ प्रभु कै धामहि पहुँच न साकहि,बिनु अरदासै कोई ॥ करम धरम संजम सुचि क्रिया,अंतरि अहं विगोई ॥ जिनि को मिली तखत वडियाई,तिनहिं गरीबी पाई ॥ श्रीचंद्र जल नीव निवासी,बेनती प्रभु सुनाई ॥४॥३३॥३१८॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,कोटि यग्य फल लहिऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,हरि नामहि उर गहिऐ राम ॥ राम नाम गहिऐ मन अंतरि,कोटि यग्य फल पावै ॥ वाल्मीकि पहि जाइ द्रोपदा,पग पग यग्य जणावै ॥ राम नाम जपु करते ऊपरि,भारत साख सुणाई ॥ श्रीचंद्र तब राम नाम की,महिमा किम वरणाई ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,राम नाम सम नाहीं राम ॥ हे मन पिआरे साजना,कोटिन साधन माही राम ॥ साधन माही राम नाम,अवर

नही को दूजा ।। संध्या तरपण जाप ताप लख,नियम धिआन यम पूजा ।। कलि महि राम नाम जपु एकहु,जाहिं लागि गति होई ।। श्रीचंद्र मन द्रिढ़ कर राखहु,सिमरन हार पिरोई ।।२।। हे मन पिआरे साजना,संजम सच्च आचारा राम ।। हे मन पिआरे साजना,मैल उतारण हारा राम ।। सच्च आचार मनहिं मल डारे,निरमल मति सिंगारे ।। यग्य ब्रत सुचि नियम अपारहि,सच्च पछारे सारे ।। सच्चे अंगहुँ करणहार प्रभु,सच्च उपाया जोधा ।। कूड़ सेन महि खलमल डारी,श्रीचंद्र सो प्रबोधा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,साधु संगति सच वासा राम ।। हे मन पिआरे साजना,आसा परम उपासा राम ।। परम उपासा सच्च बिस्वासा,साधु संगि रंग लाए ।। भूसण सच्च कंठ आभूसण, साधन साध त्रिताए ।। सगले देव जुहारहि चरनन,तीरथ पावन होही ।। श्रीचंद्र सच्च रिदै पटंबर,दुरजन कूड़े कोही ।।४।।३४।।३१६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,गुरु तीरथ मन न्हावै राम ।। हे मन पिआरे साजना, हउमै मैल गवावै राम ।। मैल गवावै हउमै ममता,गुरु पद रज मन मांजै ।। चमत्कार छंछार

लहावै,अंजन गिआनहि आंजै ।। तीरथ इस्नानी हरि हरि धिआनी,तन जल कर अरपावै ।। श्रीचंद्र मन निरमल न्हाया,हरि दर सोभा पावै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,संतन संग चलाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,कोटि बिघन बिनसाया राम ।। बिघन नसाए कलप महाए,चाले सत्गुरु चाली ।। सीधी धाई ढेर न पाई,सच्ची घाला घाली ।। पुरबी मेले मज्जन कीने,कूड़ महा तम हाए ।। मनमुख हरि हरि हरि आराधै,श्रीचंद्र विगसाए ।।२।। हे मन पिआरे साजना,तन मन अरपण कीना राम ।। हे मन पिआरे साजना,दान दिओ रंग भीना राम ।। रंग भीने तन मन अरपाया,मैं तूँ रही न भोरी ।। तेरा कीआ तुझ को दीआ,तेरे ऊपर डोरी ।। दासन दास भए तजि आसा,परम आनंद रस लीना ।। श्रीचंद्र सत्गुरु सरणाई,आतम जीवन लीना ।।३।। हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु जेड न कोई राम ।। हे मन पिआरे साजना,नाम देइ हरि जोई राम ।। जो हरि नाम देइ मन अंतरि,कोइ न ऐसा पूरा ।। कूड़ै ते हरि नाम न टिक है,उलटी हिचकी जूरा ।। हीरा नाम अमोल पदारथ,गुरु सराफ प्रगटाया ।। श्रीचंद्र मन संपुट धरिआ,चमत्कार असमाया ।।४।।३५।।३२०।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,चिंतामणि हरि नामा राम ।। हे मन पिआरे साजना, हउमै रोग नसाना राम ।। रोग नसाना हरि चिंतामणि,आधि विआधि उपाधा ।। सुख पाए सरसाए न्हाए,मन की गई विआधा ।। लोभ मोह अहंकार वात पित्त,कफ संघात बिदारा ।। कलप विनासा काया कल्प सु,श्रीचंद्र रस सारा ।।१।। हे मन पिआरे साजना,सुरधेनू प्रभु भगती राम ।। हे मन पिआरे साजना,तू किआ त्रिपतै जगती राम ।। जगती त्रिपतै भगती पाए,प्रेम पदारथ पूरा ।। त्रिपत अघाए बल बरधाए,प्रगटाने मुख नूरा ।। अम्रित धार स्त्रवहि नभ मंडल,बासन संत समाए ।। श्रीचंद्र भुख त्रिखा बिनासी,परम पदारथ पाए ।।२।। हे मन पिआरे साजना,पारिजात हरि दुआरै राम ।। हे मन पिआरे साजना,कल्प संकलप निवारे राम ।। कल्प निवारे हरि हरि दुआरै,चित्त चितवी इक एका ।। भ्रम भै मेट भए निहकेवल,नाराइण उर टेका ।। आप गवाया हरि प्रभु भाया,आनंद लहि मन माही ।। श्रीचंद्र तहँ कोटि पदारथ,उतरत नभ सिउं आही ।।३।। हे मन पिआरे साजना,गुरु पारस हम लोहा राम ।। हे मन पिआरे साजना,संगि छुह कंचन होहा राम ।। कंचन होइआ पारस

छोहिआ,अस्ट धातु पलटाई ।। तन मिथिआ सत नाम पदारथ,चढ़ि वंनी बाराई ।। जो पेखै सो मोहि उठावै,लावै अंग सुहेला ।। श्रीचंद्र हरि मुकुट विराजा,कर करि दमक झमेला ।।४।।३६।।३२१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,करते चोज अनंता राम ।। हे मन पिआरे साजना, रचि पेखै बिगसंता राम ।। बिगसत रचि रचि पेख पेख करि,दाते करे अपारा ।। इक भेखी भिखिआ कउ धावहि,इकनी भरे तुजारा ।। कर जोड़े इक आगिआ पालहिं,इक करि हुकम घुमावहि ।। श्रीचंद्र इक बेपरवाही,इक नहिं उदर भरावहि ।।१।। हे मन पिआरे साजना,पारब्रहम सालाही राम ।। हे मन पिआरे साजना,सद अबिचल पतसाही राम ।। अबिचल पातसाह परमेस्वर,तखतै चवर ढुरावै ।। जिउं जिउं हुकम करत हरि जीवहिं,तिउं तिउं करै सुभावै ।। देस परदेस चलाए केई,केई निज थल वासै ।। केई श्रीचंद्र भ्रम भूले,केई उर गुणतासै ।।२।। हे मन पिआरे साजना,रामहि नाम उमाहा राम ।। हे मन पिआरे साजना,मन चढ़िआ गगनाहा राम ।। चढ़ गगनंतरि बिचर निरंतर,

कौतक अमित अनंता ।। किंनर गंधरब नाचहि गावहि,कोटिक लीने जंता ।। देव दैत्त लड़ि लड़ि नहिं हूटहि,धड़ धड़ धड़ धर डारे ।। श्रीचंद्र जुग कोटिक,कोऊ न जीते हारे ।।३।। हे मन पिआरे साजना, अंतु न कतहूँ लहिऐ राम ।। हे मन पिआरे साजना,हरि हरि हरि हरि कहिऐ राम ।। हरि हरि कहिऐ मारग लहिऐ,साधु संगि नामा ।। राम समारे त्रिसना हारे,नाम खुमारे जामा ।। सहिज आनंद साच लिव लागै,अनुभउ राम समावै ।। श्रीचंद्र रस राम रसाइण,जीवन मुकत सदावै ।।४।।३७।।३२२।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,संता संगति कीजै राम ।। हे मन पिआरे साजना, राम रसाइण पीजै राम ।। राम रसाइण मन त्रिपताइण,त्रिसना भूख बिनासै ।। काम क्रोध अहंकार गवापै,आप पछाणै आपै ।। लब लोभ सभ मोह निवारै,सहिज अनंदै माता ।। मद मस्ता श्रीचंद्र पिओ, हरि पिआला प्रेम संगाता ।।१।। हे मन पिआरे साजना,साधु संगि हरि मेला राम ।। हे मन पिआरे साजना,प्रीतम प्रेम सकेला राम ।। प्रेम सकेला हरि प्रभु मेला,साधु संग वडिआई ।। पारब्रहम सभ

साज सजावै,जिउं तिस दी वडिआई ।। सागर सात समाने गहिरे,तपसि नहीं उर विआपी ।। श्रीचंद्र रवि भयो परगासा,करन कारन परतापी ।।२।। हे मन पिआरे साजना,हरि धन संतीं पाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,अनत न कहूँ डुलाया राम ।। नहि अनत डुलाने हरि धन,नवनिद्धि सिधि अपारी ।। सिर साहाँ के साचे साहा,किआ कंगले संसारी ।। बिख रस राते जलत बिहाते,मतसर त्रिसना रूपै ।। श्रीचंद्र धन न वापारी,किआ कहिऐ तिनि ऊपै ।।३।। हे मन पिआरे साजना, साधु संगि रसि आवै राम ।। हे मन पिआरे साजना,जलन बुझहि प्रभु नावै राम ।। नाम प्रभू कै जलन बुझाई,मोह बाद अहंकारै ।। सीतल सांति सहिज अम्रित रस पाया,त्रिसना अगनि निवारै ।। भूख न विआपै दूख न जापै,प्रेम मगन मुह पाया ।। श्रीचंद्र लख लोक अलोकहि,प्रभु गुण मन त्रिपताया ।।४।।३८।।३२३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छंद ।। हे मन पिआरे साजना,सुण बेनंती मेरी राम ।। हे मन पिआरे साजना,संपै किसै न केरी राम ।। किसै न केरी होहि संपै,आवण जाणी माया ।। इक कऊ तजि दूजै पहि जाई,

चंचल चंचल छाया ॥ आपनी जान सभनि प्रतिपारी,रही न काहूँ घेरी ॥ श्रीचंद्र निहचय मनि जानहु,संपै किसै न केरी ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,थोड़े जीवन काजा राम ॥ हे मन पिआरे साजना,साजहि साज दराजा राम ॥ साज दराजै साजै बवरे,काम न आवहिं तेरे ॥ माल मंदर गढ़ महिल जगीरां,छाडि गये सभि डेरे ॥ गज रथ अस्वन राज सिंघासन,संगु न कछहूँ जाई ॥ श्रीचंद्र कछु दान पुंन कर,आगै होइ सहाई ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,निरधन पेखि न हासै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,काल खड़ा सिर पासे राम ॥ सिर पासे हो निहारे सासा,ऊचहि गेरि पाताला ॥ पाल पोस जिनि लाड लडाया,निरदय हनि करवाला ॥ खिन भीतरि अम्रित बिख साजहि,औखधि रोगी करही ॥ श्रीचंद्र बुद्धि जीवि निबुद्धि,मित्र सत्रुता धरही ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,गुरु गोबिंद धिआईऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,शायद हरि मन भाए राम ॥ जे हरि के मन भाए घाला,बखसस बीच समावै ॥ थोड़ा भी बहुता फल दै है,दुख दै सुख वरतावै ॥ संता संगति दया दान, जपु तपु संजमु ब्रत पूजा ॥ श्रीचंद्र परवाण लए करि,देवै भाव अदूजा ॥४॥३६॥३२४॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल छंद || हे मन पिआरे साजना,गोबिंद घाल न भानै राम || हे मन पिआरे साजना, मन गति सगली जानै राम || सगली जाने अंतरजामी,घट घट भली बुराई || जा कउ सभ किछु मालूम होवै,तिस पहि किआ चतुराई || जे करि करहि कबूल सु करणी,दया करत नहि देरी || श्रीचंद्र साखी हो मन का,तजि सभ हेरा फेरी ||१|| हे मन पिआरे साजना,सीधे मारग चलिऐ राम || हे मन पिआरे साजना,पाप कलापन दलिऐ राम || मारग सीधा संतन केरा,मंदर धरमहि सीढ़ी || मुकती बीथी बाह लुडाइऐ,पइऐ गली न भीड़ी || साधु संगति कै अंचल लागै,बिखम नदी जाइ तरणी || श्रीचंद्र बिन साधु समागम,निहफल सगली करणी ||२|| हे मन पिआरे साजना,संत सरोवर न्हाते राम || हे मन पिआरे साजना,कसमल सगले हाते राम || कसमल हाते सरवर न्हाते,तन सूचै मन हरिआ || पारब्रहम परमेस्वर सुआमी,हिरदै भीतरि धरिआ || जनम मरण चूके भव भारे, सगले भरम गवाए || श्रीचंद्र सुख सहिज परगासा,संत सरोवर न्हाए ||३|| हे मन पिआरे साजना,हरि संता जेड न कोई राम || हे मन पिआरे साजना,दुख तनि सुख देह लोई राम || देह लोई सूख

सगरे,आपनड़ै तन दूखा ॥ भोजन भोग भुंचाइ भुगावहि,आपहुँ रूखा सूखा ॥ राज सिंघासन रंक निवाजहि,निज हितु तरवर छाया ॥ श्रीचंद्र संतन परसादहि,पारब्रहम प्रभु पाया ॥४॥४०॥३२५॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,संत चरन चित लाइऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,हरि प्रीतम प्रभु पाइऐ राम ॥ प्रीतम पाइऐ नाम धिआइऐ,सत संतोख कमाई ॥ बिख महि अम्रित झरना झरि है,सांति तपति महि छाई ॥ जलनि बुझहि सीतल ह्वै मनुआ,हऊमै दुबिधा तिआगी ॥ श्रीचंद्र संतन सरणाई,सहिज आनंद बैरागी ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,साधु संगि मन मांजै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,अघ ओघन मल भांजै राम ॥ मल भांजै अघ ओघन केरी,मन निरमल राता ॥ नाम वखाणै नाम पछाणै,नामहि ही सिउं नाता ॥ नाम धिआन नामो इस्नाना, नामो जापु जपीजै ॥ श्रीचंद्र इक राम नाम रटि,नाम सुधा रस पीजै ॥२॥ हे मन पिआरे साजना, जग महि बिरलै केई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,नाम समारहिं जेई राम ॥ नाम समारहि विरले केई,तजि हउमै अभिमाना ॥ तांबा कंचन बिखिआ अम्रित,सत्रु मित्र सम जाना ॥ बिप्र चंडाल

संग सम द्रिस्टी,स्रिस्टी ब्रहम उपाई ॥ श्रीचंद्र हरि नाम निवासी,ऊच नीच गुरु भाई ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,साधु संगि मन जागै राम ॥ हे मन पिआरे साजना,भानु प्रकासै आगै राम ॥ गिआन भानु निसि दउत परकासै,नींद अविद्या भागै ॥ उडुगन दंभ कुकरम उलूकन,उर अंतरि दुख दागै ॥ कमल विगासै कोक हुलासै,तखत बिराजा राई ॥ श्रीचंद्र धुनि संख उभारी,मन सोइआ जागाई ॥४॥४१॥३२६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छंद ॥ हे मन पिआरे साजना,बिख बिखिआ परिहरिऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,राम नाम उर धरिऐ राम ॥ उर धरिऐ गोबिंद मुरारी,नाराइण भगवाना ॥ जन प्रतिपालक अरि गन घालक,चालक सकल जहाना ॥ जल थल विआपी अथपन थापी,घट घट पट पट राजा ॥ श्रीचंद्र पद पंकज रूड़ा,गूड़ा स्याम अगाजा ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,गोबिंद नाम सुहेला राम ॥ हे मन पिआरे साजना,साधु संगि हरि मेला राम ॥ हरि मेले हरि मेल मिलाइआ, गुणनिधान प्रभु सुआमी ॥ आइ न जाइ सदा अंग संगी,घट घट अंतरजामी ॥ वण त्रिण त्रिभुवन एको रविआ,ऊन न कतहूँ थाई ॥ श्रीचंद्र मनमोहन माधव,नित नित नाम धिआई ॥२॥ हे मन

पिआरे साजना,हरि करता सभ जानै राम ।। हे मन पिआरे साजना,तिस ते कछू न छानै राम ।। कछू न छानै करहि जु मानव,पाप पुंन की करणी ।। करम सुकरमा धरम अधरमा,निज निज करणी भरणी ।। जैसा बीजै तैसा लुणहै,किक्कर कंडे लहिऐ ।। श्रीचंद्र बीजै बिख बिरखहि,फल अम्रित किमि लहिऐ ।।३।। हे मन पिआरे साजना,मंग बखसस हरि दुआरो राम ।। हे मन पिआरे साजना,पावहिं भाग भंडारो राम ।। राम भंडारो बखसस मांगै,पाइऐ वसतु अगंमी ।। पाप पुंन की छोडि कहाणी,दै प्रभु दात अजंमी ।। छुटकारा है बखसस अंदरि,करते राखी हाथा ।। श्रीचंद्र हरि बखसस केरे,घाल न पुगवै साथा ।।४।।४२।।३२७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छन्द ।। हे मन पिआरे साजना,करता पुरुख धिआए राम ।। हे मन पिआरे साजना, गुरुमुख होइ गुण गाए राम ।। गुरुमुख गुण गाए सहिज समाए,आगिआ महि सुख पाए ।। दहदिसि साख हरी हरिआवलि,अम्रित फल त्रिपताए ।। परमानंद अनाहद वाजा,वरख अकासी सीता ।। श्रीचंद्र मन मंदर माही,पद पाई निरभीता ।।१।। हे मन पिआरे साजना,मनमुख भरम भुलाना राम ।।

हे मन पिआरे साजना,अहनिसि फिरै दीवाना राम ।। फिरै दीवाना भरम भुलाना,पारब्रहम नहि चीता ।। काम विआपिआ नित संतापिआ,लोभ मोह वसि कीता ।। अंतर इक खिन वास न पावै,परघर रवै डुलाना ।। श्रीचंद्र अगिआन अंधेरे,पग पग भया हैराना ।।२।। हे मन पिआरे साजना,हरि जस हिय त्रिपताए राम ।। हे मन पिआरे साजना,अम्रित अमर कराए राम ।। अमर कराए हरि हरि अम्रित,को पीवै वडभागा ।। बिख बिखआ उर ते परिहारी,धिआन प्रभू अनुरागा ।। नाराइण तजि धाम आपना,करि आवै अति धाई ।। श्रीचंद्र हरि पैज रखावै,जहँ तहँ होहि सहाई ।।३।। हे मन पिआरे साजना,कलि कालुख अंधिआरा राम ।। हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु सबद उजारा राम ।। सबद उजारा मिटै अंधारा,रवि प्रकटै तिहुँ लोका ।। घट घट अंतरि गोबिंद बैठा,गुरु सबदी अवलोका ।। जगत पसारा आवण जाणा,चरित रचा करतारै ।। श्रीचंद्र उर गिआन प्रगासै,भरमति नहि संसारै ।।४।।४३।।३२८।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छन्द ।। हे मन पिआरे साजना,करते बणति बणाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,

अचरज प्रभु वडाई राम ।। अचरज वडिआई लखी न जाई,किह बिधि रचना राची ।। अद्भुत ते अद्भुत प्रभु माया,झूठी कहहुँ कि साची ।। मरण लिखाइ जनम पुनि धरिआ,जीवन हितु ललचावै ।। श्रीचंद्र जगजीवन थोड़ा,गरबै गरब बढावै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,अचरज लखिओ न जाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,अवरो अवरु लखाई राम ।। अवर लखाई अवरों होवै,जिउं तिस दी वडिआई ।। वडे वडेरे बिनसत पेखहिं,आप रहिओ बन थाई ।। बिरधन धन तजिओ भव भीतरि,जानै मुहि संग जावै ।। श्रीचंद्र धरपति धर धसिआ,धरा न कहूँ सिधावै ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सुख कउ करहि उपाए राम ।। हे मन पिआरे साजना,दुख सभि चहित बगाए राम ।। चहित बगाए दूख सबाए,जावत नहिन पराए ।। कीए उपाए अउखधि खाए,बिरध भए दुखराए ।। जिउं जिउं जतन किए बहुतेरे,तिउं तिउं अंतरि दूखा ।। श्रीचंद्र कालहि नियरायो,भूख गई नहि सूखा ।।३।। हे मन पिआरे साजना,गहु उर राम भरोसा राम ।। हे मन पिआरे साजना,दैहै सभ बिधि तोसा राम ।। सभि बिधि तोसा दैहै सभ थां,वरतै तबि पतिआवहि ।। तुंग उत्तंग सिखर घन परबत,पंखी ब्रिख बिन छावहि ।। कंद मूल तहि ठौर उपाए,दैबै हितु मन तोसा ।। श्रीचंद्र भजि राम नाम उर,द्रिढ़ गहि राख

भरोसा ।।४।।४४।।३२६।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल छन्द ।। हे मन पिआरे साजना,बिखिआ बिख लपटाया राम ।। हे मन पिआरे साजना,हरि हरि नाम न भाया राम ।। नाम न भाया बिख लपटाया,रोग भोग महि वासा ।। भयो विकारी मारी सारी,हार गयो जग पासा ।। नाम दान इस्नान बिहाने,मोह उपायो कूरा ।। श्रीचंद्र कछु काम न आए,अंतु मूए मरि झूरा ।।१।। हे मन पिआरे साजना,धन की कवन वडाई राम ।। हे मन पिआरे साजना,अंतु न संग सहाई राम ।। संग सहाई धन नहि भाई,लोभ लब परछाया ।। ठगणहारे ठग अपारे,वेस मलूकी पाया ।। पापा पोट उठाई सिर पर,कामै पुचि पुचि कीनी ।। श्रीचंद्र सुआमी सरसायो,दई वराटिक कीनी ।।२।। हे मन पिआरे साजना,धरणी कहित पुकारे राम ।। हे मन पिआरे साजना,करि हारे मुहि सारे राम ।। सारे मौको अपनी करि करि,हार गए थकि पाए ।। दारा साह सिकंदर अज रघु,धरणीपति अखवाए ।। मो ते उपजे पूत भए सो,मोहूँ धरणी

थापहि ॥ श्रीचंद्र मुह ह्वै उपहासी,ताही ते तिन खापहि ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,गरब बुरा संसारे राम ॥ हे मन पिआरे साजना,घर घनेरे घारे राम ॥ घर घारे इन गरब घनेरे, दावै महिल उसारे ॥ मैं गिआनी मैं चतुर सिआना,मोरे लख हलकारे ॥ हमरी भूमि पैर को घालै, मैं सूरा बरिआरा ॥ श्रीचंद्र दिगविजै कई मुहि,मै बिआही लख दारा ॥४॥४५॥३३०॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छन्द ॥ हे मन पिआरे साजना,सत्गुरु सरणी परिऐ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,दुरमति मल परिहरिऐ राम ॥ मल परिहरिऐ दुरमति झूठी,हउमै दुबिधा केरी ॥ तन धन केरो कवन गुमाना,अंतु खाक के ढेरी ॥ मल मूतर मज्जा कफ गिड्डू,पटंबर मध्य लपेटी ॥ लाला रुधिर दुरगंध श्रीचंद्र,गंदी वायू पेटी ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,का लपटिओ पर नारी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,भट्ठी अगनि प्रजारी राम ॥ अगनि प्रजारी भट्ठी भारी,को सुखिआ तिहँ माही ॥ लुक लुक थान सहेट रमिओ खिन,तन धन गयो बिनाही ॥ मुख मुरझायो कांति बिनासी,फल बड रोगन पायो ॥ श्रीचंद्र कंदरप तस्कर जिउं,हीरे छीन पलायो ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,भजि गोबिंद दिन

रैणी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,का प्रीती पिक बैणी राम ॥ पिक बैणी की प्रीती भीतरि, मूतरधाम लखइऐ ॥ गोबिंद भजन सजन जे कीजै,धाम बैकुंठ सिधइऐ ॥ सत्गुरु सिख सिखाई सुभमत,कही तुमहुँ सो भाई ॥ श्रीचंद्र अब जो तुध भावै,वेखहु करम कमाई ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,राम नाम रस पीओ राम ॥ हे मन पिआरे साजना,सदा सुहेला जीओ राम ॥ सुहेला जीओ पीओ राम रस,मत भे द्रिस्टि बिसारी ॥ दूख भूख त्रिसना अरु आसा,भूली चढ़ी खुमारी ॥ जलनिधि सांत सहिज रस केला,भेंला जीउ अनंदी ॥ श्रीचंद्र नहि उचकै कबहूँ,सारद पूरणचंदी ॥४॥४६॥३३१॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छन्द ॥ हे मन पिआरे साजना,रैण सुहेली आई राम ॥ हे मन पिआरे साजना, सिमरहि सच्चा साईं राम ॥ सच्चा साईं जागि धिआई,गगन पिखाईं चंदा ॥ तारे सारे संगि सिंगारे, रस अम्रित वरसंदा ॥ खिड़ी कुमुदनी मुख निहारे,सांत सरोवर झाही ॥ श्रीचंद्र प्रभु किरपा कीजै,बीच बिराजो बाहीं ॥१॥ हे मन पिआरे साजना,जल रस मीन विगासी राम ॥ हे मन पिआरे साजना,

कीरति करि अविनासी राम ॥ कीरति अविनासी मीन विगासी,बिचरति नैन उघारे ॥ पंख पसारे आनंद धारे,कबहुँ न चढ़हि किनारे ॥ राम समाई आन न थाई,मगन मत बुद्धि पाई ॥ श्रीचंद्र जल प्रेमहि उपजै,प्रेमहि रहहि समाई ॥२॥ हे मन पिआरे साजना,गगन चढ़े मंडराई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,अनलै आवन थाई राम ॥ आव न थाई अनलै केरा,लहिर अकासी वाई ॥ जनमहि गमनै मरनै गमनै,आस न दूजी राई ॥ परमानंद मति बिगसानी,पंख न हिलनै पायो ॥ श्रीचंद्र पूरण गुरुदेवहि,नभ महि खेल खिलायो ॥३॥ हे मन पिआरे साजना,गोबिंद नाम समाई राम ॥ हे मन पिआरे साजना,रंग रांगहु लिव लाई राम ॥ लिव लाई मन रांगहु हरि जस,लालो लाल अनंदा ॥ धूप विकासै सरस प्रकासै,दिन दिन नित चड़ंदा ॥ गुरुमुख गुण गाई अनुभउ पाई,तोटा नाहि विआपै ॥ श्रीचंद्र पूरण गुरु पाइऐ,भानु प्रकास अतापै ॥४॥४७॥३३२॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल छन्द ॥ हे मन पिआरे साजना,रैण सुहेली आई राम ॥ हे मन पिआरे साजना, पूरण चंद सुहाई राम ॥ चंद सुहाई रैणि सबाई,चमकहि कोटिहुँ तारे ॥ सुधा संचारे ससि

विस्तारे,कुमुदन मुख पसारे ।। हुलसि चकोर न मावै अंतरि,गुरुमुख हरि हरि जापै ।। श्रीचंद्र धन धन वह राती,आपहि रमिअहि आपै ।।१।। हे मन पिआरे साजना,सफल जनम जगि आइआ राम ।। हे मन पिआरे साजना,बिगसि बिगसि हरि राइआ राम ।। राया बिगसि बिगसि हरि पिआरा, कमल खिड़े सरसाई ।। चूकी धाई मिटी बलाई,अंतरि प्रेम कसाई ।। राम नाम रस परमानंदा, निरत निरत गुण गाए ।। श्रीचंद्र संतन संगि मिलि मिलि,पूरे ताल सबाए ।।२।। हे मन पिआरे साजना,सफल सेव गुरु केरी राम ।। हे मन पिआरे साजना,प्रभु प्रीतम उर हेरी राम ।। प्रीतम उर हेरी लहहि उजेरी,सगली तपत मिटाई ।। गिआन पदारथ पाइ क्रितारथ,मति ऊची दरसाई ।। राग नाद घन ताल पाद सुर,मनमोहन मन लागै ।। श्रीचंद्र मानुख तन सफलै,हउमै गरब तिआगै ।।३।। हे मन पिआरे साजना,घर संतन हरि वासा राम ।। हे मन पिआरे साजना,परिहर अन बिस्वासा राम ।। अन बिस्वास तिआग करि,संतन घर ही राम निहारा ।। जल थल महीअल सरब निवासी,एकहि सिरजन हारा ।। आइ न जाइ सदा थिर गोबिंद,वण त्रिण रविआ सोई ।। श्रीचंद्र संतन कै घर महि,सच्चो सच्चा होई ।।४।।४८।।३३३।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल छन्द || हे मन पिआरे साजना,दुरलभ मानुख देही राम || हे मन पिआरे साजना, दीनी परम सनेही राम || परम सनेही करते दीनी,दुरलभ देह सुजाना || हिकमत अद्भुत ते रचि राखी,पंच तत्त परमाना || पंच मिलाइ पचीसक कीने,दस इंद्री परकासी || श्रीचंद्र नव दुआरन हूँ ते,स्रिस्टि प्रपंच प्रभासी ||१|| हे मन पिआरे साजना,रज तम सत कलपाई राम || हे मन पिआरे साजना,मेल अमेल मिलाई राम || मेल अमेल मिलाइ एक थल,कल करते निज पाई || पेखन सुनन बोलन सूँघन,सपरस गिआन धराई || करनो चलनो हगन मूतन,चब्बन करम बनाए || श्रीचंद्र जड़ चेतन जानै,गुण अवगुण समुदाए ||२|| हे मन पिआरे साजना,भाव पदारथ डारे राम || हे मन पिआरे साजना,जानै उर वीचारे राम || उर विचारे सोई जानै,भाव पदारथ मूला || काम क्रोध मद लोभ मोह मन,बुद्धि चित्तहँ हूला || खस्ट नेम खट कमल भनै है,दसम दुआर सुभ नामा || श्रीचंद्र वड सूखम अंसी,सत गुण वासी धामा ||३|| हे मन पिआरे साजना,त्रैबिधि भाव प्रगटाए राम || हे मन पिआरे साजना,भीतरि देह वसाए राम || भीतरि देह वसाए त्रैबिधि,अधिभूतक अधिदेवा ||

अधिआतम इक एके चतुरदस,जान लेहु रिद भेवा ।। संचन कीने अनिक खजाने,इस तन भीतरि भाई ।। श्रीचंद्र बिन गोबिंद नामहि,बिरथा सगल अजाई ।।४।।४६।।३३४।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल अस्टपदी दिन रात ।।

भजि नाराइण पिआरिआ,सफल होहिं दिनराती ।। स्याम अस्याम दुभाग करि,सीव अखर प्रभाती ।।१।। सत तम दोनो जातीआं,दैव दैत्त किय भाउ ।। इड़ा पिंगला धार महि,गंगा जमुन बहाउ ।।२।। गिआन अगिआनहि भी कहिओ,सूरज चंद्र सरूपा ।। माया ब्रहम अभिन्न है,महराणी युत भूपा ।।३।। इक आवहि इक जावही,गहयो न काहूँ जाई ।। चौकड़ि जुग अनंत की,लंमी कीनी धाई ।।४।। सफल असफलहि कारजहि,गुरुमुख मनमुख दोऊ ।। निंदा इस्तुति लरि रही,सांत भयो नहिं कोऊ ।।५।। अपरा परा अनंत कहि,भेद अभेद बखान ।। निद्रा अपर सुखोपती,जल अगनी संधान ।।६।। करम कुकरम विचारिऐ,भले बुरे इंसान ।। सुख दुख भोगत प्राणधर,दिनराती अनुमान ।।७।। संग कुसंग लखाइऐ,चित अति धार सनेह ।। श्रीचंद्र संग साधु गुरु,दिनराती सफलेह ।।८।।१।।३३५।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल सत वार ॥

सलोक- वार वार सिमरिऐ,गुरु पूरे की टेक ॥ आवण जाणै चक्र महिं,श्रीचंद्र रहि एक ॥१॥

अस्टपदी- आदित्य आयो भगति,हरि पूजा विस्तारी ॥ परभाते ले अंचला,रिद नदी समारी ॥ तन इस्नानै सुद्ध होइ,अरपण करि नारी ॥ हरि हरि जाप जपंतीआ,लिव लाई तारी ॥१॥ सोमवार ससि सीतलै,कर सुधा विथारा ॥ ससि परफुलित दहदिसा,अम्रित उरधारा ॥ जीवन जीवन पाइआ, अहंमेव निवारा ॥ रामो नाम सालाहिऐ,बिगसै परिवारा ॥२॥ मंगल मंगल वरतिआ,गोबिंद धिआए ॥ क्रूर द्रिस्टि को मेट करि,हिरदै सरसाए ॥ आपा आप पछाणिआ,सत्गुरु सरणाए ॥ सरब मेदनी सुरखरू,दूजा नहि भाए ॥३॥ बुध बुद्धि परगासीआ,रंग सांत समाणे ॥ सत्गुण पाइआ आतमा,हरि प्रभु कै भाणे ॥ राम नाम औखध गही,सभ रोग बिलाणे ॥ सरब देव अनुकूल भे, अधिआतम भाणे ॥४॥ वीरवार गुरुदेव रति,अवगुण परिहारे ॥ गोबिंद गुण सद गाइऐ,हउमै परजारे ॥ ऊची पदवी साधु की,हरि नाम पिआरे ॥ गुरुमुख सनमुख उबरे,मनमुख पचिहारे ॥५॥

सुक्र सुक्र करम फल,मंदी सो हानी ॥ सत्य वाक्य प्रगटाइआ,सतपुरुख महानी ॥ तान कमानहि बाण कउ,लख बोध सुरानी ॥ सूरवीर वड महारथी,जपु सारंगपानी ॥६॥ थावर थिर थिर गमनिओ,नाराइण हेरे ॥ रवि सुत स्याम सलोनिआ,जपु जाप परेरे ॥ घेरे सेना अस्ट ज्वर,विपदा के चेरे ॥ हरि हरि हरि हरि जपदिआं,मंगल चहुँ फेरे ॥७॥ सभे वार सुहावणे,सत्गुरु सरणाई ॥ कालख माया उत्तरी,गुरु गिआन द्रिढ़ाई ॥ गुण गावति गोबिंद कै,सद सूख समाई ॥ श्रीचंद्र नरहरि जपै,दिन रैणि सुहाई ॥८॥१॥३३६॥

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ राग बिलावल ॥ शुक्ल-क्रिस्न पक्ख

सत्गुरु मिलिऐ शुकल होइ,उज्जल करम कमाइ ॥ नाम दान इस्नान द्रिढ़,त्रैबिधि चूकै माइ ॥ काया निरमल सेव गुरु,दिन दिन कल वरधाइ ॥ किरण सुधा वर बरसती,दसमै दुआरहुँ आइ ॥१॥ गुण किरखै जीवन पाइआ,लख चुरासीह जौन ॥ धरणि सुवंनी परफुली,गंध चलाई मौन ॥ सर निरमल जल सुभर भर,लहिर चलाए पौन ॥ कुमुद विगस ऊचे भए,अकड़ विखाई धौन ॥२॥

भया प्रसंन चकोर मन,मीत लखाए संत ।। कामिणि मति अनंद जुत,ग्रिह आया हरि कंत ।। रसिक रवै हरि प्रेम रस,बिचरत सभ जीअ जंत ।। उर महि मणीआ हार धर,खिड़ खिड़ चित्त विगसंत ।।३।। गुरु प्रसादी सेविआ,हरि प्रभु प्रीतम राम ।। गया विजोग सु वांढीआ,मिलिआ पूरण काम ।। कपट खुलाने द्रिढ़ जड़े,प्रबिसे गोबिंद धाम ।। गुरुमुख मन प्रगासिआ,अनंद सहिज बिस्राम ।।४।। क्रिसना क्रिसन लहिरी लई,क्रिसन गया तजि देस ।। संगि संग को गुण धसै,आतम हरि परवेस ।। आपण कीता पाइऐ,करम कुकरमी वेस ।। गुण टुकड़े हितु भौंकिआ,दर बैठा दरवेस ।।५।। काले चमक सुहावणी,मोर मुकुट सिर धार ।। कालुख मन की खोइऐ,लंमी राती नार ।। आया काल समारिऐ, गुण अवगुण निरधार ।। हिरदै नाहि विसारिऐ,करणहार करतार ।।६।। कालो ही कालों हरे,काल बसै मन आइ ।। राम रमै जीअ संग नित,परमानंद समाइ ।। हउमै कालख परिहरी,हरि गुण गाए माइ ।। गोबिंद लड़ लगि जीविऐ,प्रेम रसहि लपटाइ ।।७।। गुरुमुख सिउं मनमुख मिलै,उत्तम पद लहि सोइ ।। उज्जल काला परखिऐ,हरि दरगाहै लोइ ।। पूरब भागी पाइऐ,साधु संगति की सोइ ।। श्रीचंद्र कालख नसी,हरि कीरति गुण गोइ ।।८।।१।।३३७।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

|| राग बिलावल || वरणमाला

सलोक- ओम् जापहु एक मन,सभ मंत्रन को मूल || सरब सूख निधि श्रीचंद्र,हरता सभ ही सूल ||

अस्टपदी- ओम् सभ मंत्रन सिर ताजा,जपत जाप त्रिभुवन सुख साजा || परम पुनीति तीरथन राजा,पारब्रहम निज मुख उपराजा ||१|| परमेस्वर जिस किरपा धारी,ओम् सिमरत नाम मुरारी || तीन देव इक थान बसाए,तीनहु भुवन जपत बरसाए ||२|| तीनहु गुण जिह समता पावत,सुर नर असुर होत बिसमावत || तीन नदी का मूल पवित,तीनहु अंतरि सदा इसथित ||३|| तीनहुं नर का मन विसमाद,तीन बिवस्था अनहद नाद || तीनहु सबद वरतत जिहँ माहि,गिआन अगिआन सम रहि जाहिं ||४|| ओम् आदि वेद परधान,ओम् जाप अजपा धिआन || ओम् साध सिद्ध सभ लोक,ओम् घट घट हरता सोक ||५|| बिघन विनासक ओम् वाक,ओम् दिब्य द्रिस्टिन का ताक || ओम् संत रसन थिर होइ,ओम् सरब उधारक लोइ ||६|| रिखि मुनि महि ओम् परमान,ओम् निद्धि सिद्धि की खान || ओम् धुनि जिहँ थल प्रगटाई,पारब्रहम तहँ वास वसाई ||७|| पूरब भाग माथ जिहँ लेख,ओम् वाक

जपत अवसेख ।। ता कै सम नाही भव कोइ,श्रीचंद्र जिहँ जापिओ सोइ ।।८।।१।। **सलोक-** आदि अनादि अगंम अज,अविनासी अनगंज ।। अनंत अपार अगोचरा,श्रीचंद्र अनरंज ।।१।। **अस्टपदी-** आदि पुरुख सभ अंतरजामी,घट घट विआपक अखंड अधामी ।। अविनासी प्रतिपालन करता,अलख देव दुख दूखन हरता ।।१।। जिनि जिनि धिआया तिनि तिनि पाया,अनुभव एक अगोचर आया ।। आइ न जाइ सदा सद संगी,तीन काल इकरस सरबंगी ।।२।। अगाध अबाध अनवद्य अविआधा, आधि उपाधि बिनासत साधा ।। अरूप अरंग अभेख अरेखा,एक अनेक एक अवरेखा ।।३।। अनंत अपार अकाल अपाला,अनाम अकाम अधाम अजाला ।। आदि अंत जिहँ पार न वारा,सरब ठौर जिहँ सम वरतारा ।।४।। सभ ते ऊच सरब ते नीचा,जा के भीतरि खीच न भीचा ।। आसत नासत बीच समाना,सरब लोक पूरन भगवाना ।।५।। अगुणी गुणी जीव का दाता,आदि जुगादि अनंद समाता ।। अभेद अछेद अखेद अदेव,निरलेपी विआपी निरभेव ।।६।। अनाल अघाल त्रिगुण उपजायक,दुस्ट दैत्त दोखी गन घायक ।। साध संग आपन महि बैसा,गुरु वरताए तैसो जैसा ।।७।। मन वसि आवै संत संगारै,अपरंपर उर अंतरि धारै ।। अमाय अकाय सदा लिव लाइ,श्रीचंद्र तिस माहि समाइ

||८||२|| **सलोक-** ईस्वर विआपक लोक त्रय,वण त्रिण एक समान || ऊना कतहूँ कबहुँ नहि,श्रीचंद्र भगवान ||१|| **अस्टपदी-** ईस्वर एक समान समाना,कोऊ न दूजा किसहूँ थाना || जल थल महीअल एको रविआ,घट घट अंतरि सोऊ गविआ ||१|| कहूँ सूर ह्वै जंग रंग राचा,कतहूँ कातर भागत काचा || कतहूँ दान देत दातार,कतहूँ भीखक करत पुकार ||२|| कतहूँ राजा राज विराजा,कतहूँ सेन सिपाही साजा || कतहूँ पंडित पढ़त पुराना,कतहूँ स्रोता सुरति धिआना ||३|| कतहूँ पाट पटंबर लीना,कतहूँ नगन फिरत अति दीना || कतहूँ भरे भंडार अखूट,कतहूँ उदर भरत हरिबूट ||४|| कतहूँ गजगच थिरिओ अटारी,कतहूँ बास टपरी धारी || कतहूँ जोगी स्वास अरूढा,कतहूँ जाचत अग्र विमूढा ||५|| कतहूँ पंचाग्नि तपतापै,कतहूँ राचै अनिक कलापै || कतहूँ सीचाना बन धायो,कतहूँ चटिका दुरति भगायो ||६|| कतहूँ पंचानन गरजंत,कतहूँ महिखी अचत हनंत || कतहूँ हंस छीर रस छानै,कतहूँ बक दादरि रत खानै ||७|| कतहूँ गुरुमुख ह्वै हरि जापै,कतहूँ मनमुख भ्रम भ्रम तापै || परिपूरन एकहि सभ माहि,श्रीचंद्र निज मनि अवगाहि ||८||३| **सलोक-**ऊन न कतहूँ पेखिअहि,जल थल वण त्रिण एक || उस ही कऊ सिम्रित रहहु,श्रीचंद्र उर टेक ||१|| **अस्टपदी-** उसतति ताहूँ की मुख भाखव,भरहै दरगहि

तुमरी साख ।। उस्न सीत सभ तहीं उपाया,जिउं भावै तिउं राह चलाया ।।१।। उत्पत परलै खिन महि करही,छत्र रंक सिर सोऊ धरही ।। ऊचे ते अति ऊचा सोइ,पावन पतित करत अवलोइ ।।२।। ऊने भरे भरे करि ऊने,अद्भुत अगम अगाध असूने ।। ऊच नीच जिस माहि विराजै,स्रिस्टि सगल निज उदर निवाजै ।।३।। उचट न जाई काहूँ बात,सरब मनोरथ रिदै समात ।। उनमनि बिचरै सदा असंग,सुख दुख को नहि रंगत रंग ।।४।। उस ही की सिर कार लिखाई,हुकमै अंदरि सभि वरताई ।। उह अविनासी प्रीतम राया,एक समान सरब महि छाया ।।५।। उस ते भिंन न कोऊ होइ,बिप्र चंडाल तूल रमिओइ ।। ओक न उस के कमी कदाई,खावत खरचत परचत साई ।।६।। ओस बिनासी भानु निहार,किरण प्रगास न घुमरिआर ।। ओही ओही जपु दिनराति,मन बुद्धि भीतरि उपजी साति ।।७।। उगलत नाही जो किछु खाया,तिहुँ लोक निरमाइल काया ।। उधर इधर एको जोति,श्रीचंद्र रविआ ओत पोति ।।८।।४।। **सलोक-** रिखि मुनि जाचत चरण रज,जुगहि जुगंतर साध ।। देव देवेसर जपी तपी, श्रीचंद्र नहि पार ।।१।। **अस्टपदी-** इक गावत सुर बिबिध उचारी,इक पग निरखत थिर गिरिधारी ।। रितु खट चक्र चलाइ पुनीता,रिजु बिहाइ पावन सर गीता ।।१।। रिखिकेस प्रतिपालन

हारा,सार समालत माता बारा ।। निधि निधान सिद्धिन का दाता,सभ महि अन नाही विखिआता ।।२।। रेतहि रसमि दमक दरसाई,रुणझुणकारा सबद सुहाई ।। अनहद बाणी गुरुमुख जाणी,सुणि सुणि मोहे सारिंगपाणी ।।३।। पंच सबद धुनि तूर बजाइ,दहदिसि ते कहि रिचा अलाइ ।। रमणि रमंता राम रमईया,रास मचाई गैया जैया ।।४।। रिधि अखंडित चौदह लोक,को जनमत को मरतो ओक ।। को खावत को खावत खावै,को भोगत को भोग भुगावै ।।५।। को तोता बेरन टुक गेरे,को राजन हित मुकति परेरे ।। को पिंजरे मुख राम रटै है,को मुकता संगति मुकतै है ।।६।। को देह महि देही दरसावै,को उदरै हित दर दर जावै ।। को मुकतन को चुगता चोग,को विखिअन रत कामनी जोग ।।७।। को सज्जन सभि सज्जन लहहिं,को दुरजन निज जन गुन गहहिं ।। साधु असाधु दोऊ प्रगटाइ,श्रीचंद्र संतन परि पाइ ।।८।।५।। **सलोक-** रखीक गही जिनि आपनी,हरि रस रमत पुनीत ।। रितु खोई रत ह्वै रहिओ,श्रीचंद्र प्रभु मीत ।।१।। **अस्टपदी-** दस रिखीक मन माहि समाई,जोग जुगति सिउं ताड़ी लाई ।। नौ दर बांध दसम महि जाइ,बेणु बजाई बिरहै नाइ ।।१।। बंध नारि सुर बंध फिराइ, तारतम्य मंद सबद सुहाइ ।। इड़ा पिंगला सुखमनि बंधि,खस्ट सथानी मेली संधि ।।२।। चक्र गए

चक्रन कै मेल,अरबिंदन की उपजी खेल ।। कुंडलिनी कुंडल परिहरै,मूल बंध मारग विसतरै ।।३।। मणिबंध पायो भुजबंद रूप,प्रगटी जोती ज्वाल अनूप ।। छूटी खिड़की चानण आइ,कपट कपाट छोरि दरसाइ ।।४।। भूचर हूँ ते खेचर भए,चाचर ते चाचर प्रगटए ।। बींगा पाव न होवै ठौर,सरब समाना गुरवी गौर ।।५।। चूवति ससि घर अम्रित धार,मन मतवाला पीवनहार ।। आदि जुगादि अनादि अनूप,प्रगट भया जग भूपन भूप ।।६।। रस रसिआ हरिआ सद भाइ,पारिजात की सिर पर छाइ ।। मंगल देवी मंगल गीत,सुरति सिद्ध जोगीस्वर चीत ।।७।। फाड़ गगन धुनि बारिद कीन,पारब्रहम सिउं अनुभउ लीन ।। दसमे स्वासा वाजे पंच,श्रीचंद्र सु रिखीकन संच ।।८।।६।। **सलोक**-त्रिक पाई मन तन हरे,भ्रम भय मेट समाइ ।। लिव माया अविनास हरि,श्रीचंद्र गुण गाइ ।।१।। **अस्टपदी**-त्रिक हिरानी प्रभु की माया,लिव उपजाई अबिचल राया ।। गगनहुँ ते गगनंतर जाइ,पंख पसार रहिओ मंडराइ ।।१।। अनल उडिओ करि चक्र चुफेर,अस्टपाद को लीनसि घेर ।। सूरज चंद न तारा झुंड,सप्त रिखीसवर संगि भुसुंड ।।२।। गुण गाए इभ मुख ले सास,प्रगटिओ राज सुरेसर दास ।। त्रिगुण बिनासे आपा पाय,आवण जाण हिरानी काय ।।३।। धायो धिआन मूल अभिआस,पवन

समानी सगरे सास ।। रवि बारह की जोती रूप,तपत बिलानी सीत अनूप ।।४।। हाहा हूहू तुंबरु नाद,किंनर गंधरब वादित वाद ।। सची उरवसी मेनक नाच,पद पद ठुमक ठुमक रंगि राच ।।५।। सुरति हिरानी उनमद थाट,धग धग ध्रिकट ध्रिकट गरराट ।। सिंधु पंचानन वारिद गाज,नभ धुनि घोर दमामन साज ।।६।। किंकनि नूपुर झांझ नफीर,सात सहिज बहु सबद गंभीर ।। नाद निनादत ता थै ताल,घेरी घेर विखाय कमाल ।।७।। अनुभव सबद पंच वर तूर,चार पदारथ सद भरपूर ।। साधु गए पेखै निज नैन,श्रीचंद्र रस आतम लैन ।।८।।७।। **सलोक-** व्रिड़ लाई संग साधु कै,धिआयो गोबिंद नाम ।। आसा मनसा पूरीआ,श्रीचंद्र सभ काम ।।१।। **अस्टपदी-** व्रिड़ एकै संग संत समाजा,जास क्रिपा ते भ्रम भै भाजा ।। साधु संगम जपिओ नाम,हरि कीरति महि मन विस्राम ।।१।। सगल पदारथ नौनिधि सिद्धि,संत संगि नितप्रति भे व्रिद्धि ।। भाव भगति रिद अंतरि भाई,गोबिंद भीतरि रहै समाई ।।२।। पीर बिनासी हउमै रोग,काम क्रोध भागे तजि भोग ।। उपजिआ चाव लागि गुरु चरणी,मन तन भीतरि साची करणी ।।३।। परमेस्वर जल थल महि विआपा,जाप अजपा रसना जापा ।। ताप बिनासिओ दूजा भाउ,अंतरि आतम राविआ राउ ।।४।। परधन परतन परतिअ छाया,उर भीतर ते

दूरि पराया ।। साधु संग सत्गुरु विस्राम,बिख बिखिआ भागी तजि ठाम ।।५।। ईत ऊत संग साधु सुहेले,अनंद विनोद राम रंगि केले ।। ओतपोत एकै पारब्रहम,वण त्रिण रविआ नहि कछु भरम ।।६।। परमेस्वर रिद साधु निवास,द्रिढ़ मन महि उपजिआ बिस्वास ।। खोल कपाट महिल महि गए,नाराइण कै दरसन भए ।।७।। जनम मरन की आसा चिंत,सगल मिटाई साधन मंत ।। एकसि बिन नाहीं अन कोइ,श्रीचंद्र पेखिओ दुहुँ लोइ ।।८।।८।। **सलोक-** कपट बिनासिओ जाप हरि,तम अज्ञान अंधेर ।। रवि कर रिदै अकास महि,श्रीचंद्र दई बिखेर ।।१।। **अस्टपदी-** कोइ न दूजा दीसै भाई,पारब्रहम सभ माहि समाई ।। करते कारण कीनो जोई,तीनहुँ लोकन होयो सोई ।।१।। कछु घाटा वाधा नहिं होइ,लाख जतन करि है नर कोइ ।। किआ खत्री किआ बिप्र चंडाल,हिंदू तुरक हराम हलाल ।।२।। किसहूँ कान जोऊ कछु भया,बिन ब्रहमा कहु किनि उपजिआ ।। सागर कानन ताल तमाल,मीन मकर ग्रह संखन जाल ।।३।। घोघे सुक्तिनि मुकति परवाल,गंगेरी जलगज बहु ढाल ।। जंतु तंतु लख जोनि बिआली,फेन तरंग झाल की झाली ।।४।। कंठ गुंठ परबत पखधारी,जिंन भूत भैरव बलकारी ।। काक कंक डाकिनि गिध माला,मग मुरगाबी झखरिपु नाला ।।५।। तरु पल्लव साखा दल फूला,फल अनेक

पत्रन लरि झूला ।। बिना पाक पाकन संयुक्त,अनभुक्ते भुक्तनि की भुक्त ।।६।। द्रिस्ट अद्रिस्ट सगल ब्रहमंड,लोक दीप तल अरु नवखंड ।। पुरीआं नदिआं नाले वाह,गनत न आवत बहुत अथाह ।।७।। ब्रहम उपाए चौदह भउन,बिन विरंचि अन करता कउन ।। दूजा रचिता जानिओ नाहि,श्रीचंद्र का सोऊ नाहि ।।८।।६।। **सलोक**-खोटा खरा परखीअहि,धरम सराफ दुकान ।। खरा खजाने पाइऐ,श्रीचंद्र पहिचान ।। **अस्टपदी**- खोए काम क्रोध अहंकार,खोए बिखिआ बिखै विकार ।। खोए लब लोभ मद जूआ,खोए अंतरि भाव जु दूआ ।।१।। आसा त्रिसना अरु अगिआन,भ्रम भै खोए सत्गुरु गिआन ।। खोए परधन हिरने चाह,खोए भोगन भोग उमाह ।।२।। खोए दुरजन साकत संग,खोए रचन पदारथ रंग ।। खोए रंकन को दुख दैबो,खोए सुजन पर चाड़ी खैबो ।।३।। खोए परनिंदा रस रसना,खोए परघर हूं का बसना ।। खोए दर दर फिरनो जाचन,खोए तर भोजन का पाचन ।।४।। खरी किरति निज कर की करनी,खरा पेखबो नहि पर तरुणी ।। खरी भगति हरि नवधा प्रीति,खरी न निंदा करबो मीति ।।५।। चोरी जारी चाढ़ी बान,खरी नहीं रुचि निरधन धान ।। खरा धरम हितु तजिबो प्रान,खरा करन दूजन सनमान ।।६।। खरा कुकरमन की रति तिआग,खरा आतमहि परम

बैराग ॥ खरा संजोग साध संग होइ,खरा भजन हरि बाणी गोइ ॥७॥ मन की दुरमति खोए अकाम,खरा नीक हिरनो अभिमान ॥ खरा होत खर संग बिहाइ,श्रीचंद्र भे खरे न ताइ ॥८॥१०॥

सलोक- गरब निवारै मन मेरे,गरभ जोनि दुख नाहि ॥ गुरु बिन गिआन न पाइऐ,श्रीचंद्र भव माहि ॥१॥ **अस्टपदी-** गुरु पूरे बिनु गिआन न होइ,गुरु पूरे बिनु भ्रम नहि खोइ ॥ गुरु पूरे बिनु मैल न धोई,गुरु पूरे बिनु अगुण न खोई ॥१॥ गुरु पूरे बिनु मै मै राता,गुरु पूरे बिनु होछी बाता ॥ गुरु पूरे बिनु तन अपवित्र,गुरु पूरे बिनु नाहीं मित्र ॥२॥ गुरु पूरे बिनु धरम न भावै,गुरु पूरे बिनु करम भ्रमावै ॥ गुरु पूरे बिनु कामिनि हेतू,गुरु पूरे बिनु पंथ न सेतू ॥३॥ गुरु पूरे बिनु घोर अंधार,गुरु पूरे बिनु बिख संसार ॥ गुरु पूरे बिनु पाथर देव,गुरु पूरे बिनु निहफल सेव ॥४॥ गुरु पूरे बिनु नहीं अकाम,गुरु पूरे बिनु धाम अधाम ॥ गुरु पूरे बिनु भरमु न भागै,गुरु पूरे बिनु जपु तपु तिआगै ॥५॥ गुरु पूरे बिनु धरम न धाम,गुरु पूरे बिनु मूढ बेकाम ॥ गुरु पूरे बिनु काला मूँह,गुरु पूरे बिनु माया धूँह ॥६॥ गुरु पूरे बिनु हाथी न्हाइ,निज सिर धूड़ि निजी कर पाइ ॥ गुरु पूरे बिनु गरबै गरब,गुरु पूरे बिनु निहफल परब ॥७॥ गुरु पूरे बिनु दूजा भाउ,गुरु पूरे

बिनु आउन जाउ ॥ गुरु पूरे बिनु रिदै कठोर,श्रीचंद्र गुरु बिनु बेतोर ॥८॥११॥ **सलोक-** घर बाहरि प्रभु एक रस,विआपक सभ ही ठौर ॥ घनस्यामहि कै रंग रंगे,श्रीचंद्र जन गौर ॥१॥ **अस्टपदी-** घट घट अंतरि रहिआ समाइ,घाट न होवत कतहुँ थाइ ॥ घाट घाट हरि प्रभु रखवारा,जन को पंथु न पाइ उजारा ॥१॥ घर महि थिरै न भ्रमत कदाइ,दुस्ट दूत मूए बिख खाइ ॥ घाल सफल गोबिंद धिआइ,घाल घाल मनमुख पछताइ ॥२॥ घन बिनसै मारुत प्रभु नाम,सीत अविद्या के हितु घाम ॥ घन हनि बिखै विकारन चूर,घनी निवारी पापन धूर ॥३॥ छाया मया घनेरी पाइ,योनि स्रम सकला बिनसाइ ॥ घर महि घर का भया प्रगास,अंधकार अगिआन प्रभास ॥४॥ घर पति आए आनंद भया,साधन मति कमल विगसया ॥ घड़ भांडे बिचि अम्रित पाया,चड़ आवी अविनासी काया ॥५॥ घुमिआरे पुनि चक्र न चढ़ै,आपहि आप आप सिउं लड़ै ॥ घुम घुम त्रित पाव नहिं बीगा,करताली तालन मन भीगा ॥६॥ घटिका जल सिर गोपि नचाई,घनस्यामहि की फिरी दुहाई ॥ घड़ी दूख की आइ न नेर,राम कार कीनी चहुँ फेर ॥७॥ घटी लाज कहि दीना फोर,सावण माह चित्त नाचिओ मोर ॥ घटी न रासि सत्गुरु प्रताप,श्रीचंद्र घन

आनंद जाप ॥८॥१२॥ **सलोक-** ङिआन माहि गुरु की मया,प्रभु मया ते मोख ॥ पत पाइऐ करमन मया,श्रीचंद्र निरदोख ॥१॥ **अस्टपदी-** ङिआता गुरू दया ते होइ,खट सासत्र सिम्रिति अवलोइ ॥ सत्गुरु किरपा जाहि पर कीनी,सरब पुराण भयो रस लीनी ॥१॥ चतुरवेद छह अंग उपांग,लहै ङिआन जन सांगोपांग ॥ भाष्य नीति पथ धरम निहारै,हदीस कुराण अंजील विचारै ॥२॥ भ्रम भै मेटे विद्या पाइ,सत्गुरु पेखत उर विगसाइ ॥ सुभ करमन करबो सत संग, जपु तपु संजमु रंगत रंग ॥३॥ तीरथ न्हाइ मैल मन हारी,हउमै खोइ विरत अधिकारी ॥ दरस पुरी भे पावन चीत,ङणत ङिआन महि धरम सप्रीति ॥४॥ धाम पिखै धामी मन आवा,बुद्धि विकास कमल बिगसावा ॥ उतर कैलासहुँ धाइ त्रिनैन,त्रितीअ भाग दै पायो चैन ॥५॥ त्रिप्ति भई मन एक थिराइ,धावन चूक त्रिगुणी माइ ॥ ङति बिनासी दुबिधा दूजा,तीजा आया गुपत रमूजा ॥६॥ ङाणा जाति न तीनहुँ लोक,ङाणत संत सबद अवलोक ॥ ङिआन धिआन रस बीच समाया,चढ़ी उतारी उतरि चढ़ाया ॥७॥ मया रूप महि मया विलाई,करम धरम पत **अपत नसाई ॥ पारब्रहम प्रभु कीनी मया,निरबाण पद श्रीचंद्र लया ॥८॥१३॥ सलोक- चतुरानन**

चतुरा उपज,चित चेता चित चेत ।। चतुर दिसा परगासिआ,श्रीचंद्र चित एक ।।१।। **अस्टपदी-**
चात्रिक चित्त चिललायो घना,देहु बूंद इक प्रेमहि मना ।। चंचलता बिसरी पर सोयो,ऊरध नैन गगन कहु जोयो ।।१।। चटपट सटपट चाट चटाई,ऊची चाढ़ी सुरति हवाई ।। चली गूजरी गागरि फोड़ि,पति पतनी की बिन पटु होड़ि ।।२।। चब चब चने घने बिगसाइ,गुरु दरबारे डारे पाइ ।। चंचल चमक वारिद प्रगटाई,चकचौंधित चौंधी द्रिस्टाई ।।३।। चुंच गिआन भागिओ दुर चोर,चुप चुप थिरिओ गुफा गुरु गोर ।। चिंत बिनासी प्रभु भगवान,आवण जाणा हरि गति प्रान ।।४।। चार बिचार ना मन डोला,चित्र बिचित्र नाराइण मोला ।। चित्रगुप्त भागिओ तजि वही,सत्गुरु पूरे डारी सही ।।५।। चंगुल लीना कीनी मया,चमकी दामिनि गुरु गरजिआ ।। चिपकी आसा त्रिसना सुआनी,चउं चउं करती तिआग पलानी ।।६।। चढ़ि सवारि चतुरंगनि धाई,चौगिरदा घेरिओ बरिआई ।। चार गड़न परला प्रगारा,चकचूरन करि धरनि बिडारा ।।७।। चाल चली सत्गुरु की दास,जनम मरन कटि दीनी फास ।। चंद चढ़िओ सारद सरदाई,श्रीचंद्र चंद्रचूड़ लखाई ।।८।।१४।।
सलोक- छकि छकि गुन गावहु हरी,साधु संगि लिव लाइ ।। सत्गुरु सेती रतिआ,दरगह लहिऐ

थाइ ॥१॥ **अस्टपदी-** छिनि छिनि करि कै छीजै काया,सफल होहि हरि नाम धिआया ॥ छिति ठकुराई मिथिआ पाज,पाप विकारन कपट समाज ॥१॥ छिप छिप करत बुराई जोइ,अंत सरब ही सनमुख होइ ॥ छमा दान सिउं चीत न लावै,ध्रोह मोह माया मन भावै ॥२॥ छाया तरु थिर कबहूं नाही,उदै अपर अस्त अपर दिसाही ॥ छबि तन घटे जरजरी होइ,कवन बिधि तब करसि बिगोइ ॥३॥ छाती हाथ डार बिललावै,धरमराइ जब किंकर आवै ॥ छई छरद ग्रासी जब देह,नाम नाराइण किमि तबि लेह ॥४॥ छपाकर ते सद अम्रित झरै,बिनु बूझै धरणी महि गरै ॥ छत लागहि उर अंतरि भारी,महा असाधि न पोहत कारी ॥५॥ छलनी कीनसि चुबकन सूए,चारा जानत नहिं बिन मूए ॥ छल वल कपट ध्रोह बटपारी,जिनि हित कीनी तेऊ दुखारी ॥६॥ छोहरप ते बिरधापन आयो,नहिं कबहूं गुन गोबिंद गायो ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई,अब तो भजि ले नाम कन्हाई ॥७॥ छेम चहहि जे दुहूँअन लोक,रघुपति भजन करहुँ थिर ओक ॥ छय जनमांतर कसमल होहिं,श्रीचंद्र गुरुमुख मुख जोहि ॥८॥१५॥ **सलोक-** जनम सफल तन मानवी,सिम्रित राम मुरार ॥ जाया दाई दाया,उधरे सभ परिवार ॥१॥ **अस्टपदी-**जग महि आया सो परवान,इक मन ह्वै

रातो भगवान ।। जावहि संगि न कोऊ पदारथ,लपटिओ जा महिं द्रिढ़ है आरथ ।।१।। जनम चौरासी लाख सु भोग,भाग वसि इह भयो संजोग ।। जाहि विअरथ बिना सतसंग,पारब्रहम कै रंगै रंग ।।२।। जीव जंतु तरु पल्लव साखा,देव दैत्त ते उत्तम भाखा ।। जिमि किमि जतन करहु मन भाई,भज नाराइण गुरु सरणाई ।।३।। जहँ जहँ औखी घाटी आवहि,तहँ तहँ गोबिंद आप बचावहि ।। जिनि जन जानिआ नाम मुरार,उत्तम सोऊ मध्य संसार ।।४।। जरी संजीवनि खाई जाहिं,जरा अवस्था ता कउ नाहिं ।। जरी ईरखा ममता माइ,जरी मालती आंगनि थाइ ।।५।। जरी अजर हरि की वडिआई, जरता आई तपत बिहाई ।। जरा जगति हरिआवल होई,पावक पावस मेल न कोई ।।६।। जिउं जिउं जानहिं तिउं तिउं बढै,एक बूंद जलनिधि सत चढै ।। जानकी पति आवहि जबि लंक,मेट देह धरि सगल कलंक ।।७।। जबर जबाड़ फोर भुइं पारहि,रामहि राम राम भव सारहि ।। जयी उगाइ भूमि पति होइ,श्रीचंद्र जब राघव गोइ ।।८।।१६।। **सलोक-** झगर झगर केते गए,तन धन भूमि न साथ ।। झल्लन झल्ल खिलारिआ,सगरा भया अकाथ ।।१।। **अस्टपदी-** झल झल सनमुख सस्त्र अनेका,सत्रुन सामहि माथ न टेका ।। झिल्ली हूँ नहिं बोलब पायो,जीत दिसिन कहुँ डंक बजायो ।।१।।

झल्ल अनेक ग्राम कई कोटा,फेरायो बड सोटा मोटा ॥ झल्ली जाति नहीं मुख कांति,मूछन तावत बक्र असांति ॥२॥ झिलमिलकार भूसणन बाढी,दुस्मन पेखि चढावत दाढी ॥ झनझन पायल चंद्रमुखी वर,रातो निरति अखार निहर कर ॥३॥ झल्लन सम पायक बहु भागै,आगिआ पालन ततपर लागै ॥ झलत कस्ट अनेक प्रकारा,मुख पर आवत नहि ननकारा ॥४॥ झाल फिरी लाली उड गई,रेखा चिंत चिन्ह प्रगटई ॥ झख मारतहूँ कीरति होइ,डूम मिरासी भाँड बगोइ ॥५॥ झरवावहिं धन करि वडिआई,उल्ल थाप धरिओ महिसाई ॥ झड़ी लाई आ नवल कुमारी,मधुर गिरा गावंत स्रिंगारी ॥६॥ झारी सिरधर डोलति आगै,बिनु जल सर बूडिओ अनुरागै ॥ झारिओ जबहि नौलखा हार,ले गमनी तजि राजहि दुआर ॥७॥ झर वीरज तन भयो अशक्ति,मोहिओ मोह कामिनी भगति ॥ झंझा काल उडाई साही,श्रीचंद्र बिनु नाम तबाही ॥८॥१७॥

सलोक- ञाण अञाण जु प्रभु भजे,लहहि मोख अवदात ॥ रुति ग्रीसम की रैणि अंतु,अवसै उपज है सात ॥१॥ **अस्टपदी-** ञतन न आवत काहूँ काजा,कारण करणहार हरि राजा ॥ ञा जीवहि कछु चलतु न चारा,उद्दम लाख करतहुँ हारा ॥१॥ ञहि चाहत मै होऊं ऊचा,पारब्रहमहूँ मुहि लेउं मूचा ॥

अहंब्रहम अन सम नहि कोऊ,सुर नर असुर सरब सिरमोऊ ।।२।। जोगी जती अहं ब्रहमचारी,जपी तपीसर भव भव भारी ।। ञाणत मै त्रैलोकन बाता,करम धरम का हऊँ इक गिआता ।।३।। हउं पंडित खट सासत्र वक्ता,हउं वेदन मत करत विभक्ता ।। हज कीन काबै बहु बार,सैतां मारिओ ढेले मार ।।४।। पीर पैगंबर गौस औलीआ,मो पेखै सभ जात हउलीआ ।। कीन कुरान हिफज भा हाफज,साफी अपर इमाम भि राफज ।।५।। मसले मुसलमान सभ गाऊं,सईअद सुन्नी भेद जताऊं ।। लबां कटाई दाढ़ी मूठ,मैं दाता अन भर हैं ठूठ ।।६।। मो सम अवर नही भव माहि,सरब त्रिअन को मै ही नाहि ।। बांधहुँ छाडहुँ बांधहुँ मोहि,मोहि सरब प्रिथवी पति जोहि ।।७।। मेरी बांधी कवन छुडावै,जो चाहै सो जमपुर जावै ।। ञों अहंकार माहि बरड़ावै,श्रीचंद्र हरि सरणि न आवै ।।८।।१८।। **सलोक-** टक टक टक निरखत रहहु,पारब्रहम करतार ।। टेक धरहु मन आपनै, श्रीचंद्र निरंकार ।।१।। **अस्टपदी-** टिक करि रहहु न अनत सिधावहु,राम नाम रस मन महि पावहु ।। टिकन न देतहु दूजा भाउ,संतन की रिद टेक टिकाउ ।।१।। टिकाना अपर नही बिन साधु, भव करि भव महि पेखि अगाधु ।। टेक टिकाइ सत्गुरू वाक,देत नहीं अन जोनि धाक ।।२।। टरहैं

बिघन अनत कई कोटा,टहल गुरु की लीजै ओटा ।। टाके टांक देत प्रभु संग,राम रंगे नहिं उतरै रंग ।।३।। टाकी मति हरि भगती चोली,हरि पति अग्र बोल मुँह बोली ।। टुक टुक करि आनहि प्रभु पास,टलों नहीं प्रभु पहि अरदास ।।४।। टाडाँ भुज महि खूब सुहाई,टनक टनक हरि उर बिरमाई ।। टाँडे कउ नहि तसकर छीनै,टका टका लाहा बड लीनै ।।५।। टुक दम रहिआ खजाने पाइ,काल आइ तबि होइ सहाइ ।। टंक टंक ते तौला होइ,हरि हरि नाम रिदै लै ढोइ ।।६।। टेक टिकाइ जूझ संग्राम,सत्रु विदार लोभ मद काम ।। टूटहि गढ़ अगिआन कुमार,मोह भागहै आजुध डार ।।७।। टोटा नहिं परहै भंडार,खावहु खरचहु अपर अपार ।। टोए देह दाह पग राख,श्रीचंद्र नाराइण साख ।।८।।१६।। **सलोक-** ठाकुर सद प्रतिपाल है,निज मन निसचय धार ।। भला बुरा कबि नहिं चिते,जीव जीव का सार ।।१।। **अस्टपदी-** ठाकहु मनुआ मन के काज,सरब सूख कलिआण समाज ।। ठोकर खाहु नही कबि बीर,करहु निवास सत्गुरु तीर ।।१।। ठोक ठोक बांधहु गुण पोट, भोगत भुंचत आइ न तोट ।। ठुण ठुण लेहु अंगूठा पाइ,अवगुण संचि सीस उचवाइ ।।२।। ठणई मन तन भीतरि होड,मेल अमेलहि छोड अछोड ।। ठुमक ठुमक गज चाली चाल,राम नाम उर भीतरि माल

॥३॥ ठुमरी गमकै गजक म्रिदंग,भजि गोबिंद हरि रूप अभंग ॥ ठप्पा नाम भगति कै लागै,पत पैधे जाइऐ प्रभु आगै ॥४॥ ठहक ठहक साकत नर मूए,पावन चुभहै दरगह सूए ॥ ठूठा भर ही राम हमारा,जीअ जंतु की करता सारा ॥५॥ ठूठ पेख किउं मन घबराया,करणहार चेतन प्रभु राया ॥ ठाण सिआणप भजि गोबिंद,जनम मरन की डार सु चिंद ॥६॥ ठाणा पावहि अचल अनास, दहदिसि दुआदस भानु उजास ॥ ठाढि पाइ वसिआ घर बार,अन धन सेती भरे भंडार ॥७॥ ठाढा रहु होइ कै सावधान,राम राम जपु परम निधान ॥ ठंढी ज्वर नहि आलस होइ,श्रीचंद्र प्रभु द्रिस्टि विलोइ ॥८॥२०॥ **सलोक-** डट डट कीजै भजन प्रभु,डट डट दुरजन युद्ध ॥ डट डट वेद विधान रति,श्रीचंद्र वर बुद्ध ॥१॥ **अस्टपदी-** डाट डाट मन राखहु थाइ,परघर जाइ न चोटा खाइ ॥ डाट न सुनई इह मन भोरा,भरो भंडार लुटाइओ चोरा ॥१॥ डाट पड़ै जब दरगह केरी,बहुर पुकार करहि मां मेरी ॥ डोरा भयो नाद गोबिंद,परम पदारथ मूल न बिंद ॥२॥ डेरा तिआग सिधायो जीव,डेरा आगल चीत न थीव ॥ डेरा संगिन गयो पलाइ,जम किंकर गहि बंधन पाइ ॥३॥ डहक डहक भव सगल गवायो,थिर चित सत्गुरु चरन न धिआयो ॥ डमरू डमक डमक बहु वाइ,वेद पुकारै

सुने न काइ ।।४।। डाँवाँ डोल इतै उत धायो,नाम नाराइण गहि न रहायो ।। डकडोली ही तीरथ न्हाइ,निगुरे परे नरक पथ जाइ ।।५।। डक्के की नहिं तरनी होइ,सरी गंभीर न कंठ लहोइ ।। डाकिनि काकिनि साकिनि झाकिनि,भूत प्रेत भैरव वीराकिनि ।।६।। डर डर बहुते गहे कुराह,मद आमिख मासानन गाहि ।। डुल डुल बेर झोलीअहु गड़े,भोजन योग्य न करदम जड़े ।।७।। डोरी टूटि पतंग पराई,द्रिस्टि न आई गगन समाई ।। डव लागी बूझे प्रभु नाम,श्रीचंद्र छीर सागरी धाम ।।८।।२१।। **सलोक-** ढाक पलासी ढकीआं,ढकिआ परमल पेड़ ।। गंध सुगंधहुँ कीजिऐ,श्रीचंद्र तरु खेड़ ।।१।। **अस्टपदी-** ढाकणि ढाका अम्रित पाइ,सत्गुरु सबद लखावहि साइ ।। ढह ढह पउ सत्गुरु सरणाई,ढाक उघार सु देह पिआई ।।१।। ढकी वासै ढक न पाइ,चाढ़ि सैन खोजै तरु थाइ ।। ढाका जीतै सत्गुरु संग,पारब्रहम उर रंगिओ रंग ।।२।। ढहि कंधी तरु नदी किनारे,जड़ थिर थाई नाहि उबारे ।। ढाह लगी को राखहि तोहि,ढुर बिनसै सभि अंगन खोहि ।।३।। ढली जुआनी कामिनि रोइ,ढुरक गई पति बिन पत खोइ ।। ढूँढ ढुँढाऊ सत्गुरु मीत,ढंढोरै कउ पीटत नीत ।।४।। ढढ ढोल ढोलक मंजीर,झालर ताल म्रिदंग गहीर ।। ढाढी ऊच पुकार सुनाई,ढुर ढुर चरन कमल

लिव लाई ।।५।। ढाल गहहु जूझहु रण खेत,गुपत गढ़न कउ लीजै भेत ।। ढाकिओ त्रिणन बरूद निधान,पावन ढार न होइ अञान ।।६।। ढहे चढ़े ते बस न बसाइ,राज विरोधी बंद म्रितु पाइ ।। ढर जिनि जाए संग्राम,मारन मरन बिना नहि काम ।।७।। ढाही आस जीवनी जाहि,साध संगि राते हरि नाहि ।। ढाला कंचन जोऊ सराफ,श्रीचंद्र तिस अउगुन साफ ।।८।।२२।। **सलोक-** णणंकार धुनि सुन्य की,सुरती सुननि संजोग ।। रुणझुण कार सुहावई,श्रीचंद्र गुरु जोग ।।१।। **अस्टपदी-** णणंकार धुनि नभी नगारे,सूरवीर भट जुरे अखारे ।। रण महि गण बादित्रन वाइ,रणसिंगे तुरीआ समुदाइ ।।१।। तोरण धुजा तुंग फहराई,डफ ढढ ढोलक सहनाई ।। तूर मुचंग उपंग तरंगा,डमरू पणव पखावज जंगा ।।२।। दुंदभि धोसै गजै निसाना,चौबी चरम हनत दुहराना ।। मति आतम द्वै सुभ बलकारी,भुज दंडन डौकत धर रारी ।।३।। सेनापति मोह आयो धाइ,मतसर हउमै मेर सबाइ ।। कर कुदंड सरपंच चलायो,मोह ताप वसि उचटु न मायो ।।४।। गिआन वैराग विवेक सिधाए,बन बेहड़ि चर दिवस बिताए ।। छ्रिति देवी बल निज तप दीना,बल बल संगि चढ़ै बल पीना ।।५।। दुआर जाइ धौंसा धुणकारा,गरजिओ सिंघनाद करि भारा ।। बारिद तड़िता सागर नभहि,सबद समायो ता

का सभहि ॥६॥ धनुस टंकोर सूंन धुनि छाई,अंध धुंध परलै ह्वै आई ॥ कड़ कड़ाड़ माचिओ घमसाना,काम क्रोध मोह लोभ पराना ॥७॥ आतम पहिराए पट जोधा,ऊच निवाजै गिआन प्रबोधा ॥ छणंकार रुणझुण हरि बाणी,श्रीचंद्र प्रभु विजै निसाणी ॥८॥२३॥ **सलोक-** ताप बिनासन तात हन,तातकाल फल दैन ॥ त्रिसना त्रिखा निवारई,श्रीचंद्र गुरु बैन ॥१॥ **अस्टपदी-** ताता खावण तिआगहु मीत,ताते अंतरि सीत न गीत ॥ ताती आँच न लागहि तोहि,हरि हरि रस सीतल मन होहि ॥१॥ तीनहु ताप निवारणहार,अउखधि खावहु राम मुरार ॥ त्रिखा बिदारणहार सुआमी,राम नाम अम्रित सुध धामी ॥२॥ त्रिसना बूझै सभ सुख पाइ,हरि सर भीतरि मल मल न्हाइ ॥ तिहुँ लोकन महि हरि प्रभु जानै,आपन पीसै आपन छानै ॥३॥ तिन ही पाइआ परम निधान,मन अंतरि सिमरिओ भगवान ॥ तन सुख वसिआ मन सुख पाइआ,गुण गोबिंद चीत चित्त लाइआ ॥४॥ तनक न दूख रहिओ उर माहि,साध संगि नाराइण गाहि ॥ तिनही पाइ निरंजन देव,साध संगि जो लागा सेव ॥५॥ तात तात जिमि तात रु मात,साध संगि सेवक बिखिआत ॥ तातकाल नाराइण नाम,टार देत सभि दूतन जाम ॥६॥ तार नाम अम्रित रस रसिआ,तारतम्य धंधै नहि धसिआ ॥ तार चढै तारी

रंग आइआ,हरि हरि हरि हरि हरि हरि गाइआ ॥७॥ तम बिनसै अगिआन महान,रंगिओ रंग अपरंपर मान ॥ तिस जन पीवहुँ चरन पखार,श्रीचंद्र जिहँ नाम अधार ॥८॥२४॥ **सलोक-** थाक परै बहु जोनि महि,बार बार तन धार ॥ करुणाकर करुणा करहु,श्रीचंद्र गयो हार ॥१॥ **अस्टपदी-** थित काहूँ नहि पाई जाइ,फिरि फिरि लख चउरासीह धाइ ॥ थाह नहीं जोनिन की कोइ,मकर मत्स नाकू अवलोइ ॥१॥ थंम समान सथिति बहु जोनी,अजगर पथ तरोवर मोनी ॥ थल थल अपर अपर ही रूप,सहित सीत बरखा सिर धूप ॥२॥ थां थां रंग ढंग बहुतोरे,धूम स्याह गंदमी गोरे ॥ थथले बाणी ऊच गुहार,नैन हीन द्रिग द्रिस्टि सुचार ॥३॥ थरथर कंपत लगत बिआरा,इक थल थिरिओ सुमेरु सुमारा ॥ थाल बजावत नाचत नाच,आपन रंग आप रहि राच ॥४॥ थाली फेरत दीप जगाइ,भगत भीख हित कर फैलाइ ॥ थल सिर जंघ पसार अकास,आवत जात न लखिअत सास ॥५॥ थूक मूत्र मल भखत अनेक,अजा महिखि गौ खर अस्व भेक ॥ सथूल महा बहु सूखम देही,डोलत गगन धरनि अचलेही ॥६॥ थुर थुर वसतु बिकल उर माही,दान देत निखुटित कब नाही ॥ थक थक परत घालना घाली,रिस्ट पुस्ट अनथाकी चाली ॥७॥ थिर थिर पग पर धर हीं,

गगन चरित सागर वर तर हीं ।। थोम गंध प्रगटी सभि थान,श्रीचंद्र विआपक अनुमान ।।८।।२५।।
सलोक- दया दानु दमु दम दमनु,जपु तपु संजमु सार ।। दीन दरद दुख भंजनो,पार उतारन हार ।।१।। **अस्टपदी-** दीन दरद दुख भंजन नाम,दरगह आवत जिअ के काम ।। दयावंत अविनासी राया,दान देत जिअ जंतु निकाया ।।१।। दम दम सदा समालहु सोइ,दूख न लागि सकहि तुहि कोइ ।। दारिद हरण सिमरि मन मेरे,ईहां ऊहां काम जु तेरे ।।२।। दासन पैज रखत करतारा,मन मेरे किउं ताहिं बिसारा ।। देखत सभ किछु सभ कै संगा,तिसु सिउं कहु किआ करहि कुढंगा ।।३।। दक्ष महा तुम रिदै न जाना,ठाग न सकत ताहि को सिआना ।। दरसत ता कहि कमी न काई,मन मेरे तिहँ सदा धिआई ।।४।। दल मल काम क्रोध अहंकार,मन मेरे हरि नाम समार ।। दैत्त दलन दल सारंगधार,गणती कवण जीव लहु सार ।।५।। दोखी दुस्ट हनत हित दास, भगत जना की पूरत आस ।। दर पर रिद्धि सिद्धि नौनिधि,सदा सलामत सभ बिधि सिधि ।।६।। दर दर वेद छिनाए पुकारे,दर को भए जुग कई हजारे ।। दुरत न कीआ जाते कोई,कपट धपट की पारत लोई ।।७।। दुरत निवारण सरब साधारण,दीन दयाल सदा प्रतिपारण ।। द्रब्य अपार जाहि

दरबारा,श्रीचंद्र ता की सरणारा ॥८॥२६॥ **सलोक**-धरणीधर भगवान बीठला,सभ घट रहिओ विआप ॥ धार मना सुभ गति लहहि,श्रीचंद्र हरि जाप ॥१॥ **अस्टपदी**- धरम धुरंधर परम सुजान,जीव जंतु करता कलिआन ॥ धारत क्रिपा न दूखन पेखे,घाली घाल डारतो लेखे ॥१॥ धीर विसाल वीर वर जोधा,दासन पर कबि करत न क्रोधा ॥ धिर निधरे की ओट निओट,लागन देतु नहीं को चोट ॥२॥ धार तेग ते लेत बचाइ,जन कऊ लगत न तत्ती वाइ ॥ धनुधर मेरो बडो सुआमी,जन को बोहिथु पार गरामी ॥३॥ धर तकड़ी तोलै संसारा,तिल जौं रत्ती तोला सारा ॥ धुर ते जीअन रिजक संबाहा,करम कुकरमन नहिं परवाहा ॥४॥ धूर साधु की परम पुनीति,गोबिंद नाम जपत नित नीति ॥ धीरज जस सोभा बेअंत,पारब्रहम जा के रिद मंत ॥५॥ धन निधान जा के अनखूट, सिमरि सिमरि जन लीजै लूट ॥ धर उर टेक जपहु हरि नाम,साह पातसाह सभ करहि सलाम ॥६॥ धाया धायी जन का आप,सरप सींह का नहिं संताप ॥ धाइ धाइ आवत है नेरै,एक बार जो दास ही टेरै ॥७॥ धर लीनो जन उर निरंकार,दई सगल संसारहि हार ॥ धरनि सकल महि फिरी दुहाई,श्रीचंद्र प्रभु पुरख वडाई ॥८॥२७॥ **सलोक**- नाराइण नहि सिमरिओ,जो आवत मन काम ॥

रस वसि मोहिओ मानसै,श्रीचंद्र भव धाम ।।१।। **अस्टपदी-** नाम निरंजन अपर अपार,सरब लोक करता प्रतिपार ।। नाराइण जपु परम निधान,चौदह भुवन सदा सुख दान ।।१।। निहकेवल हरि मुकत दुआरा,आवण जाण बिखै संसारा ।। निरभै महा अतिरथी जोधा,कोटि दैत्त दल छिन महि सोधा ।।२।। निरबाण पदारथ परम पुनीता,स्त्रुति सिम्रिति सासत्र वर गीता ।। निराहार कब दीन न भया,उदर बिकार जाहि निज छया ।।३।। निरवैर मल पाप गवाई,जीव जंतु स्त्रिस्टी का सांई ।। निरंकार मन बुद्धि न पावै,तन आस्त्रित ह्वै किउं कर धावै ।।४।। निहकलंक दुख दोख न देई,सूख सांत मन माहि संजेई ।। निहकंटक किमि द्वैसि लोइ,अल्पायू बिनसैगी सोइ ।।५।। निरबिख बिखिआ सुतन बिहूना,अंतर बिख मन जीव मलीना ।। निर अहंकार द्रब्य की हान,सरब स्त्रिस्टि रविआ समान ।।६।। निरनामी निरधाम अकामी,निरलोभी निरमोही बामी ।। निरकाला निरजाल अपाला, निरथामी निरधूमी ज्वाला ।।७।। निरजोगी निरभोगी पावन,निरसंकल्प विकल्प सुहावन ।। निर इस्नान निरसंध अडोला,श्रीचंद्र उर निरतुल तोला ।।८।।२८।। **सलोक-** पतित उधारण पारब्रहम, **परम पुरान पुनीत ।। परमेस्वर परधाम पर,पूरन पुरुख प्रतीत ।।१।। अस्टपदी-** पतित पावन

पारब्रहम पुरान,परम जोति परमेस्वर प्रान ॥ प्रतिपालक परगुण पर बुधि,परम पुनीत परंपर सुधि ॥१॥ परमधाम परकाम अक्रुद्धा,परम जोधा परपावक युद्धा ॥ परमरूप पररंग परासा,परम नाम परिपूर प्रगासा ॥२॥ पर ते परे अपरा अरु परा,परवेदन परस्वेदन धरा ॥ परदूखन परदोखन पूरा,परसोखन परमोखन मूरा ॥३॥ परम जोग पर भोग अरोग,परम संजोगी परम विजोग ॥ परम सरोवर परम इस्नान,परम भोगीस्वर परम सु दान ॥४॥ परम गिआन पर धिआन प्रसिद्ध,परम भाव अनुभाव प्रविद्ध ॥ परमित प्रव्रिति प्रक्रिति रूप,पर रवि पर ससि पर तड़ितूप ॥५॥ परहरि परहर परहरि सोइ,परमन परचित पर हं होइ ॥ परकर परकर परकर भयो,परघर परतरु परवर जयो ॥६॥ परवन परवन परवन आप,परिपूरन परिपूरन जाप ॥ परादेव परसेव प्रभेव,परादेस परवेस प्रछेव ॥७॥ परम पुरातन परम धरमंग,परम वैराग परम परसंग ॥ पर पर पर पर पर पर परा,श्रीचंद्र पर ते पर परा ॥८॥२६॥ **सलोक-** फाटत बारिद तम भए,तड़िता गिआन कड़ाक ॥ मग पायो हरि नाम का,श्रीचंद्र बन धाक ॥१॥ **अस्टपदी-** फूटी पहु रवि के उदिआए,दोखी दैत्त मुए बिलखाए ॥ फुर बाणी गुरु गोबिंद वेद,कछु कछु पाया भेद

अभेद ॥१॥ फिर फिर जोनि धावन चूका,धरमराइ का लेखा मूका ॥ फिरिओ फेर दाहिनी ओरा, चढ़ै सुमेरु लहिओ चहुँ कोरा ॥२॥ फुरना गयो फनाहफिल जान,लही फजीहत पाया मान ॥ फाही टूटी धंधै जाल,फिलहाली उर भई कमाल ॥३॥ फतह पाइ वसि कीआ फतूर,फौज प्रगासी नूरी नूर ॥ फूही फूही उडी अकास,निरमल बुद्धि निरमल आभास ॥४॥ फूहे फाली गए पलाइ,राम नाम की तेज हवाइ ॥ फिरहि न लख चुरासी माहि,फल पाया आतम को गाहि ॥५॥ फली करम की वेल सुहाई,बिगसि बुद्धि ससि सुधा समाई ॥ फुन फुन आवन जान न होइ,राम नाम रख मन महि पोइ ॥६॥ फारिओ चित्रगुप्त दीवान,टोये टिबे किए मैदान ॥ फनन समेट फनीधर फोरी, सूरति रही न काली गोरी ॥७॥ फूलिओ फूल धरम फल जेता,सांझ समय मुरझायो तेता ॥ फल पाका गोबिंद को नाम,श्रीचंद्र सुख सहिज अराम ॥८॥३०॥ **सलोक-** बनमाली जयंती धरनि, बन बन बेणु बजात ॥ बिन पिय पिया न त्रिपतई,श्रीचंद्र दिन रात ॥१॥ **अस्टपदी-** बिंदु एक संसार उपाया,बिंदु प्रगासी अपनी माया ॥ बिंदु मूल तम आत्म सरूप,बिंदु बिंदु का पेखै रूप ॥१॥ बिंदु माधवै जोति समाई,बिंदु धुनी आकासी आई ॥ बिंदु वेद चतुरन का सार,निर

विभिचारी सह विभिचार ॥२॥ बिंदु ठहिरावहि धिआन सुरूरा,बिंदु प्रकासै त्रिभुवन मूरा ॥ बिंदुहि बिंद मिलायहि मोख,बिंदुहि बिंदु न अंतरि दोख ॥३॥ ब्रहमा बिसनु महेस बनाइ,बिंदु भूमि इस स्रिस्टि सबाइ ॥ बुद्धि बोध का एकहु रंग,आतम परमातम सरवंग ॥४॥ बूझै बूझ अबूझ सिआना, बूझै अगनि अगनि लपटाना ॥ बूझ बूझारत बोझ उतार,बिंदु पुरुख का पेख अकार ॥५॥ बंदनवार दुआर लरकाई,झिलमिलकारी अचरज भाई ॥ बंदे कमर बंदगी लाग,बंद बंद छोरे बंद राग ॥६॥ बानी पाए राम रमाए,बन बन उपजै बिनसै काए ॥ बानै फेरे चक चढ़ाया,द्रिस्ट अद्रिस्टै भरम मिटाया ॥७॥ बफर बढाए गहिआ मुकंद,रंगणि रंगिआ सुध सुरंग ॥ बाधा मेटे गोबिंद होइ,श्रीचंद्र चानण सभि लोइ ॥८॥३१॥ **सलोक-** भगत वछल भगवान भव,भवनिधि तारणहार ॥ भाउ भगति रंग माणई,श्रीचंद्र भव सार ॥१॥ **अस्टपदी-** भया समाहा भगवत नाम,भगती भाव अनंद निधान ॥ भै मेटे जपिओ गोबिंद,भरम गवाए बिनसी चिंद ॥१॥ भला संजोग गुरु हरि मेरा, राम धाम महि कीनसि डेरा ॥ भनत भणी नाराइण जाप,भुवन तीन बिनसाने पाप ॥२॥ भूपति पेखि रहस्य मन भया,भे दरबारी भारी दया ॥ भाग पूरबले साधु संग,लीआ रलाइ न होए तंग

।।३।। भजित त्रिभंगी भंग बिलाइ,भरि पाया लहणा पुरबाइ ।। भाम दाम की दाम निवारी,गुरु अविनासी केर पुजारी ।।४।। भै भंजन हरि हरि हरि नाम,सरि पावक थल मेटे घाम ।। बन बेहड़ि हरिआ गंधाइ,सीतल मंद सुगंधित वाइ ।।५।। भई प्रतीती प्रीति सुहानी,भगवन भगत प्रिय भगदानी ।। भाल जोति परकासी राम,भाल भई गुरु गोबिंद धाम ।।६।। भार विगार उतार विडारिओ,भावा भावन सार समारिओ ।। भुज भरि भेटिआ करताराय,भुज भुज गहे न जनमन धाय ।।७।। भव ही भव भव माहि समाया,भव दुख भंजन हिरदै राया ।। भनि अरदास सुनहु प्रभु मेरे, श्रीचंद्र भव भाव निबेरे ।।८।।३२।। **सलोक-** मन परमेस्वर धाम है,मन परमेस्वर राह ।। मन परमेस्वर एक हैं,सत्गुरु देंइ लखाहि ।।१।। **अस्टपदी-** मन मोहन सु मुकंद मुरारी,मधुसूदन मदनारि प्रहारी ।। मदन मूरति मेदनि का त्राता,मथन सिंधु मुह मार नसाता ।।१।। मन जोगिन का सद ही वासी,मन भोगिन ते सदा उदासी ।। मन का सुआमी मन ही जेहा,मन प्रेरक मन ही धर देहा ।।२।। मन मति हारी मनमुख नासी,माया कारक माया वासी ।। मान अमानहुँ परे परीला,मानन जोग महा वर लीला ।।३।। मांगत नहिं काहूँ दर जाई,मांगत जा कउ सगल लुगाई ।। मांगन जोग न राखत ता

कउ,मान दीन अपना करि जा कउ ॥४॥ मतस्य रूप धर वेद उबारे,मरदिओ मानहि संख संघारे ॥ मुनिवर नितप्रति मन महि धारे,मद माते सद मारत नारे ॥५॥ मद हरता हिरणाकस केरा,मल भक्खी महि तोरिओ घेरा ॥ माली जगत बाग का सोई,मालिनि माला कुब हरोई ॥६॥ माला वैजंती गल धारी,मालामाल महा धनुधारी ॥ मल विच्छेप नासक मल मरदा,मल मल बैठो मन दर परदा ॥७॥ मेली सभ का सभ ते दूर,मेले साधुन अपनहि नूर ॥ मेल बिछोड़े बिछुड़े मेले,श्रीचंद्र मन अद्भुत खेले ॥८॥३३॥ **सलोक-** जोनि चुरासी लख की,चौपड़ खाणी चार ॥ नर तन सारी जीत हित,पासा राम सु ढार ॥१॥ **अस्टपदी-** या भव भीतरि नर तन पाइ,राम नाम लाहा लै जाइ ॥ जुगति संत की हिरदै धार,भव जलनिधि सों उतरहु पार ॥१॥ युद्ध स्थान भूमि महि आया,कर करवार नाम करि धाया ॥ युध पीठी होइ लरै जु कोइ,मुस्किल जीतब ता का होइ ॥२॥ जोग जुगति सों धरिऐ पाऊं,चक्री चक्र चलै रणथाऊं ॥ जोधा जीते खेत अखाड़,सिद्ध साबासी चढ़ती बाड़ ॥३॥ जुगल किसोरी भगती मोख,आतम अंतरि पावै तोख ॥ एहि अवसर फिर हाथ न आइ,पारब्रहम महि रहै समाइ ॥४॥ यार मनहि कै पूरण साध,दुरजन बिखै न साकत बाध ॥ जोजन मान नहीं हरि

भूमि,बांह लुडाइ बीर बर घूमि ।।५।। यख्यन ते छुडवाई निद्धि,राम नाम की प्रापति सिद्धि ।। जुगहि जुगंतर गुह्य लखाना,अखुट पदारथ लहिआ निधाना ।।६।। यवन काल मरिओ पछुताइ, प्रगट भयो उर यादव राइ ।। जमुना धारि नारि करि पाई,पाप ताप कालुख बिनसाई ।।७।। यग्य मंडल वर विजै मुरारी,कीरति करति महा मुनि सारी ।। यामिनी अविआक्रित बिहानी,श्रीचंद्र उद मित्र समानी ।।८।।३४।। **सलोक-** रे मन,रंगहु आप कउ,हरि हरि नाम मजीठ ।। रमण राम की प्रीति उर,श्रीचंद्र त्रिअ ईठ ।।१।। **अस्टपदी-** राम नाम उर अंतरि धार,या भव ते नहि लहि हैं हार ।। रस रसिआ जो हरि कै रंग,मन तहिं होत न कबहूँ भंग ।।१।। रमा रमण जपिआ मन लाइ,ऊचे ते ऊचे थित थाइ ।। रंगणि संत संगि जन डूबा,रंग भगति हरि चढ़ियो खूबा ।।२।। राखणहारा जन की पैज,सरब स्थानी एको रैज ।। राग द्वेस काटै हरि नाइ,निरमल चरन कमल लिव लाइ ।।३।। राम गुणा रविऐ नित नीत,ऊजल जस बिगसाने चीत ।। रवणी रवत कीरति प्रभु केरी,सगल वासना बिखै निबेरी ।।४।। राम जनी माया वडिआई,इक आवै इक जावै धाई ।। रमज पछान साधु गुरु वेद,परमेस्वर का पाइऐ भेद ।।५।। रखिआ करहु हरि पेखनहारा,करताली दै लाहि विकारा ।। राख

धरहु सिर संतन पाद,अनुभउ पायो अगमी नाद ॥६॥ रैणि सुहानी प्रीतम रंग,साध संग गुण अनंद अभंग ॥ रलमिल सखीआं प्रभू धिआया,सावण आया सफल सुहाया ॥७॥ रुणझुण सबद अंतरि प्रगटाइ,तार तार इकतार अलाइ ॥ रहस्य भया नहि होय उचाट,श्रीचंद्र अनहद पुर थाट ॥८॥३५॥ **सलोक-** लाह लेहु गोबिंद गुण,मुख उजल हरि दुआर ॥ लब लोभ बुरिआईआं,श्रीचंद्र भाह डार ॥१॥ **अस्टपदी-**लख सिआणप नाही काम,सदा सहाइक दरगह राम ॥ लगि लगि माया संग गवाई,विरथा उमर न प्रभु गुण गाई ॥१॥ लागी प्रीति न तूटै मूल,साध संगि रस अम्रित घूल ॥ लवै न लागत कोटि पदारथ,संत संगि हरि भगति क्रितारथ ॥२॥ लगन निगोडी राम रंग राता,गहिर गंभीर महा मद माता ॥ लीक मिटानी दूआ तीआ,पान महारस अंतरि कीआ ॥३॥ लिख राखिआ नाराइण नाम,लेखा मिटिआ जम के धाम ॥ लेख ललाट पूरबल केरा,जनम जनम का गयो अंधेरा ॥४॥ लुड लुड बांह लुडाई घेर,पारब्रहम के होए नेर ॥ लख्य बेधिओ बाण गुबिंद,बुद्धि धनुष धरि पेखिओ बिंदु ॥५॥ लेखन सुमन झड़ी वर लाई,लै गगनंतरि सुरति चढ़ाई ॥ लघु ते अति दीरघ तन भए,बीच आकास पाताल न मए ॥६॥ लिव लागी बिसरी सभ सुद्ध,जीवन

मुकत भए बर बुद्ध ।। लाव बांध उतरे उर कूप,टुबकी लाइ रतन धर चूप ।।७।। लव त्रिसना आसा न रहाई,पारब्रहम जत कत सभ थाई ।। लेवन देवन हरि हरि वत्थ,श्रीचंद्र प्रकटानो सत्थ ।।८।।३६।।

सलोक- वैर विरोधहि परिहरहु,साध संगि लिव लाइ ।। वार वार श्रीचंद्र प्रभु,बंदहु हरि हरि राइ ।।

अस्टपदी- वासुदेव सिमरित गति होइ,जनम मरन संकट सभि खोइ ।। वासु रहिओ हीयरै के संगि,ऊची भनत अलाइ अभंग ।।१।। वहि अति अगम अगोचर पूरा,साधु जना की लहिऐ धूरा ।। वा का अंत न जानै कोइ,जल थल महीअल रविआ सोइ ।।२।। वार वार जाइऐ बलिहार,बलहारै ह्वै है बलहार ।। रोम रोम महि रमिआ राम,तिस बिनु नाहीं कोऊ ठाम ।।३।। वलछल तिआग करहु सतसंग,पारब्रहम का चढ़ि है रंग ।। वैरागी संग साधु समाइ,त्रिसना भुख माया बिनसाइ ।।४।। बिख बिखिआ प्रभु नाम तिरयाक,मिलि पूरे सत्गुरु पी पाक ।। बैकुंठ धाम साधू का संग,मति पंख ला उडै उतंग ।।५।। वासहि जनम मरण गति हरी,अमिअ सरोवर मज्जन करी ।। वरहै इंद दया करि सांति,हरिआवलि मेटे भ्रम भ्रांति ।।६।। वरसाने अंन धन कहुँ पाइ,उर आनंद न रहै समाइ ।। विरले जन भीतरि संसार,जिनि जिनि पाया मोख दुआर ।।७।। वाट वटाऊ मोह न क्रोह,गोबिंद नामहि

वस्तु संदोह ॥ वाही संग रहउ दिन रात,श्रीचंद्र कउ दीजहि दात ॥८॥३७॥ **सलोक-** सरब सरवथा एक है,सदा परम किरपाल ॥ आपन मया सु धार जन,छिन महि करत निहार ॥१॥ **अस्टपदी-** शंकर करत जीव कलिआना,सदा भजन आतम रस माना ॥ समर विनासक समरी देव,संत जना उर लखिआ भेव ॥१॥ शिव शिव सुआमी काल क्रिपाल,रहित एकाकी चंद्र सु भाल ॥ योगारुढ धिआन रस राता,द्रिग तीसर धरि परलै संघाता ॥२॥ शंभु मुकत हित उपजिओ जेई,संतन रिदै वस्तु सहजेई ॥ परम समाधि असंप्रगिआत,कल्प विकल्पन करता हात ॥३॥ बुद्धि विचार सुधा रस लीन,काम मोह के भयो न दीन ॥ रिद्धि सिद्धि नवनिधिन के धाम,परम प्रिअ उर रामहि नाम ॥४॥ भूतनाथ जोगीस्वर भारी,सदा विराजिओ दीरघ तारी ॥ विद्या मूल डमरु डमकावै,देव दैत्त जाते वरसावै ॥५॥ आसुतोष खिन माहि द्रवेई,भगत जना के कस्ट हरेई ॥ उतपति परलै एक समान, आवत हरख न जावत हान ॥६॥ सीस जटा गंगा वर धारी,तीन लोक कलिमल परिहारी ॥ आदि अनादि अगाध कहानी,जानी जात न मन क्रम बानी ॥७॥ बुधिदा सिधिदा निधिदा सुआमी, भव धारक सभ अंतरजामी ॥ घट घट विआपक सद निरलेपा,श्रीचंद्र हति भरम विछेपा ॥८॥३८॥

सलोक- षट रस भोजन पाइऐ,त्रिपति न त्रिसना लाथ ।। राम नाम की भुकति सम,श्रीचंद्र नहिं आथ ।।१।। **अस्टपदी-** षष्ट राग गाऐ हित संग,रुति रुति भिंन भिंन सरवंग ।। सुत बनिता सह सभ परिवार,पहिर मुहूरत दंड बिचार ।।१।। षष्ट विकारी परिहर देह,जन मनमोहक रस वर गेह ।। षष्ट जोजना मेली साथ,चढ़त उतारहि बंदन पाथ ।।२।। षष्ट अंग व्रित नाटक नाट, अनुचित वरज निबाहित थाट ।। षट सासत्र करि गिआन प्रमान,षस्टांगी उचरति वर बानि ।।३।। षट बुद्धि ते बोधी रंग,षट विचारे वाद म्रिदंग ।। षटपद बंधिओ नाही राह,षट कमली पाती निरवाह ।।४।। षट बखसस दरगाही दात,खट नर तन देवन की जात ।। षट चारी मिलि सोभा लही,षट पद हाने कीनी सही ।।५।। षट चक्रन का चक्र घुमाया,षष्ट विकारी मूल गवाया ।। षट चहु नाड़ी लंघे स्वास,षष्ट मुकामी लहि परकास ।।६।। षट बिनसे तबि सप्तम पाइऐ,सरब रोग हत दारू लाइऐ ।। षष्ट प्रधानै गमन स्थान,मंडल षष्ट विराजै भान ।।७।। षट ईतिन की चिंता चूर,साधु जना की बांछउ धूर ।। शाट शाट गोबिंद वर नाम,श्रीचंद्र लहि सात मुकाम ।।८।।३६।। **सलोक-** संत संग निसदिन रहहु,पलटै मस्तक लेख ।। अगम अगोचर अपर पर,श्रीचंद्र

उर देख ॥१॥ **अस्टपदी-** सज्जन मीत परम हितकारी,संत समागम लाभ अपारी ॥ सांत लहहि मन तपत विआपा,आपा आप आप ही जापा ॥१॥ साच समावहि कूड़ा तिआग,साच महिल का पाइऐ भाग ॥ सात लोक विस्तारे चरन,आकासहुँ की कीनी धरन ॥२॥ माटी जल महि पाहन होइ, साबुण मैल न साकत धोइ ॥ अगनी भागी ईंधन तिआग,मन भीतरि ते उपज वैराग ॥३॥ निरभै भै निरवैरे वैर,भिख मंगा बडदानी खैर ॥ निरतन परगट तन जुत गुप्ता,बिन बाणी का वेदन वक्ता ॥४॥ घट कै भीतरि सिंधु समाया,बिनु बादर तड़िता गरजाया ॥ अनठग ठगिआ ठगणहारा,बिन रासी बड वणज पसारा ॥५॥ बिनु माता के सुभग सु पूत,बिना जुलाहे ताणियो सूत ॥ बिन जनमा जनमंतहि हिरै,करणहार बिन कारज सरै ॥६॥ अनजाने जानण करि दावा, जानणहारा बन कहु धावा ॥ सागर आंधी गरद समाई,कीटी हस्ती निगल रहाई ॥७॥ मरनहार अम्रित भी देह,कच्छप मंडप थापिओ थेह ॥ टप टप तरुवर मीना धाई,श्रीचंद्र संती दरसाई ॥८॥४०॥ **सलोक-** हरि हरि हरि हरि हरि हरे,हरि हरि हरि हरि नाम ॥ हरदम हर साइत घड़ी,श्रीचंद्र बिस्राम ॥१॥ **अस्टपदी-** हरि नाराइण सरब निवासी,हरि सिमरत नाही

जम फासी ।। जल थल महीअल एको सोइ,भजि मन मैले निरमल होइ ।।१।। हस्ती चीटी एक समाना, सुरग पातालहि रविआ साना ।। हमद तिसहि की कीजै मना,निहचल राज सदा सच धना ।।२।। हमदम कबहूँ बिछुड़ न जाई,घोर गरत महि हाथ गहाई ।। हरत न जग बाजी की खेलै, उलटै पासै ढालत ढेलै ।।३।। मात गरभ महि देत अहार,सदा सदा सभ जग प्रतिपार ।। हरे किए सूके लख कोटि,हरि बिसरत सभ भांती तोटि ।।४।। हार परै जोऊ सरनाई,ता की पीठ न लगी कदाई ।। दुस्मन दूत दूख नहि जोहै,काल अगनि नाही तन पोहै ।।५।। हाल निहाल भए जन सोऊ, हिरदै जा कै बसिआ ओऊ ।। हसि हसि ता सिउं कीजै प्रीत,सदा अनंद न डोलै चीत ।।६।। हरन भरन सभ ही जिहँ हाथ,निरधन धन सु अनाथहिं नाथ ।। बिघन बिनासक हरि का नाम,कीरति करत सदा सुख धाम ।।७।। हरहै काम क्रोध बुरिआई,हरि बिन रहिन न कोऊ थाई ।। ईत ऊत सद ही संग साथ,श्रीचंद्र गहु हरि इक पाथ ।।८।।४१।। **सलोक-** छत्रपति तिहुँ लोक का,छमा नाथ किरपाल ।। छांत दांत पत छपाकर,श्रीचंद्र छय साल ।।१।। **अस्टपदी-** छमाकरण छमपाल दयाल,छेम धरण रछपाल किरपाल ।। छत्रीवर सेवक प्रतिपालक,छय कारण स्रिस्टी का घालक ।।१।। छर अछर सभ

ही का सुआमी,छत बिहून सभि अंतरजामी ॥ दासन दास दास रखवारा,आदि न अंत सदा सम सारा ॥२॥ निखिल भुवन करता गोसाई,गरीब निवाज गनीमन घाई ॥ नाम न धाम न काम न बामा,रूप न रेख न भेख न स्यामा ॥३॥ जात न वरण न तात न माता,रंग न ढंग न मित्र न भ्राता ॥ पर ते परे नेर ते नेरा,सरब ठौर जहँ सदा बसेरा ॥४॥ गंधरब यख्य न किंनर देही,देव दैत्त न केर सनेही ॥ सभ के भीतरि थिरिओ एक,भगत जना की बड उर टेक ॥५॥ घट घट अंतरि जोति समानी,बिन बोले ही बोलत बानी ॥ पवन गमन ते तीछण गती,सुभट धुरंधर धरि अनछती ॥६॥ पदमनैन अरु पदमन पाद,पदममुख अलापत साद ॥ पदम करन धनु सरन प्रहारै,पदमा थित नित चरण जुहारै ॥७॥ मदन मूरति भव तारनहार,दुस्ट दलन भुइ भंजन भार ॥ छारक गरब सरब का संगी,श्रीचंद्र सद सिमर अभंगी ॥८॥४२॥ **सलोक-** त्राण करत सभ जिअ जंतु,संतन त्राता राम ॥ त्रास बिनासत धरमराय,श्रीचंद्र हरि नाम ॥१॥ **अस्टपदी-** त्राहि त्राहि गोबिंद सरनाइ, जन का त्रास सकल बिनसाइ ॥ बिन पद त्राण धाइ सुनि टेर,बंधन काटत लाइ न देर ॥१॥ अवगुण नहिन चितारे दास,धिआवत आवत छिन महि पास ॥ भव जलनिधि बोहिथ जन त्राता,

बारक प्रतिपालक जनु माता ।।२।। सार समाल रखै उर लाइ,डाकिणि साकिणि लगै न छाइ ।। अनिक प्रकारी भोग भुंचाइ,रोग सोग ते लेइ बचाइ ।।३।। त्रयंबक नाम सद पेखनहारे,गुप्त प्रगट मन भीतरि सारे ।। त्रिण सम दाहक त्रैयी भुवन,त्राता सदा आपने सुवन ।।४।। सिमरित राम नाम जन जोइ,जरा मरण दुख फेर न होइ ।। सत्गुरु पूरण होत किरपाल,दास लहित गोबिंद गुण माल ।।५।। त्रिसना आसा हउमै मेरी,गुरू दया ते होई ढेरी ।। राम रसाइण माता मनो,कसमल सगल विकारन हनो ।।६।। धरम करम ही जन को त्राण,सदा निवाजत जन निज जाण ।। सत संतोख दया का पुंज,दुरमति दुरत कुकरमन मुंज ।।७।। तजि हउ लोभ राम रंग रवै,पारब्रहम की दरगह गवै ।। त्रास न पावै धरमहि दूत,श्रीचंद्र नाराइण पूत ।।८।।४३।। **सलोक-** गिआन धिआन सफलहि सगल,गुण गोबिंद बखाण ।। जपु तपु सत संतोख ब्रत,श्रीचंद्र परवाण ।।१।। **अस्टपदी-** गिआता सगल स्रिस्टि का सोइ,जिस मन अंतरि हरि गुण गोइ ।। वेदग्य सास्त्रग्य गुणग्य रसग्य,सरब रहस्य का सोऊ तत्तग्य ।।१।। गिआनवंत जन परम सिआणा,तत्व नाराइण नाम लुभाणा ।। सूछम ते सूछम अति भेव,सिमरि नाम लहै सभ देव ।।२।। नभ मारग गमनै गति वाउ,

सुर मिलि पीवै सुधा सुभाउ ॥ जोगीसर निरकल्प स्थानी,महा तपीस्वर परम सु धिआनी ॥३॥ गिआता सरब सिद्धांत पुनीत,राम नाम द्रिढ़ धारै चीत ॥ विद्यावान चउसठी सार,तीरथ अठसठ मज्जन नार ॥४॥ रसम रतन वर जानणहारा,रेचक पूरक कुंभक सारा ॥ नाटक त्राटक तंत्रन भेद, सिम्रित राम लहै बिन खेद ॥५॥ नव सप्ती वर कला रमंती,पांच पचीस त्री चार लहंती ॥ चउदसि चार पंच ग्रह जोग,कला अनंत जंत्री भोग ॥६॥ भूमंडल नभखंड पाताल,वण त्रिण सागर जीवन जाल ॥ उदक रखण आकरखण धिआन,रेणू त्रसरेणू अणु मान ॥७॥ शक्ति गुप्त प्रत्यख परधान, आतम परमातम विगिआन ॥ परमानंद ब्रहम का गिआता,श्रीचंद्र गुण गोबिंद राता ॥८॥४४॥

सलोक- आदि अंतु सद एक रस,सरब थान भरपूर ॥ गुण निधान आनंद घन,श्रीचंद्र सभि मूर ॥१॥

अस्टपदी- पूरन पारब्रहम प्रभु सोइ,ऊना काहूँ ठौर न होइ ॥ पूरन परवाहन घट नार,जा के भीतरि नहीं विकार ॥१॥ घट अनघट जहँ कहिओ न जाई,ब्रहम माइ कर भेद समाई ॥ जीव अजीव अनीस्वर ईस,काय अकाया नरवर कीस ॥२॥ तरुवर साखा कांड अरु पात,फूल फलन तारा सिर सात ॥ त्रिण औखधि पत्री अस्वत्थ,भेद भाव किमि कहिऐ कत्थ ॥३॥ स्रिस्टि स्थिति परलै

प्रमान,जल सागर सर नद नदिआन ।। रक्त उत्पल कुमुद रविंद,त्राइमाण जूही गुल कंद ।।४।। कैलास हिम परवत मेर,मैनाक धौला सित ढेर ।। कंचन तांबा सीसा कास,मानसरोवर हंसन भास ।।५।। काक उलूक सिंघ अरु सिआल,भालुक लंगूरन सहि बिआल ।। कीटी कीट पंख तन धारी, बकुल करंडव गरुड़ गंधारी ।।६।। नर नारी किंपुरुख विभाग,राज रंक कलंक अदाग ।। देव दैत्त मानुख गुण तीन,हरि हरिहर शक्तिन युत बीन ।।७।। हिंदू मुसलमान ऊच पोच,जाहल आकल सोच असोच ।। गिआनी अगिआनी सभि कोइ,श्रीचंद्र परिपूरन सोइ ।।८।।४५।।३३८।।

|| वरणमाला संपूरण ||

ओम् पारब्रहमणे नमः

।। राग बिलावल बारह माहा ।।

पारब्रहम परमेस्वर पूरा,परम पुरुख परधान ।। कारण करण करीम हरि,कादर कुदरतवान ।। किमि कीआ किमि करहिगा,कोइ न सकत पछान ।। जल माटी को बंध करि,रचिआ रचन जहान ।। सासत्र वेद सिम्रिती,धरम पुरान कुरान ।। पीर पैगंबर औलिऐ,जोगी जती महान ।। करमन खेती राहकन, बीजै बीज अंनान ।। जैसा बीजै सो लुणै,खाणा पड़ै निदान ।। रैण दिना साखी भयो,लेखा दे इनसान ।। श्रीचंद्र जपु राम नाम,दरगह भे परवान ।।१।। चेत सुहावै सोहणा,रंग बसंती फूल ।। तरु पल्लव हरिआवली,साखा पवनै झूल ।। नाराइण आराधिऐ,उतरहि मन कै सूल ।। सत्गुरु अपना सेविऐ, पड़ै कुराह न भूल ।। संतां संगति पाइऐ,जीवन संदड़ा मूल ।। परमानंद समाणिआं,हरि कीरति अनुकूल ।। प्रेम भगति रंग रत्तिआ,पाप उतारी धूल ।। सोभा सुरति सुहावणी,दहदिसि सत परफूल ।। गंध विथार श्रीचंद्र प्रभु,खिड़ी मालती कूल ।। चेत महासुख पाइऐ,हरि हरि रतन अमूल ।।२।। वैसाख चढ़ै हरि जापिऐ,मन तन अंतर तोख ।। नखत निखिद्ध न लाखिऐ,उतरहि सगले दोख ।।

साखा पसरी कोमली,अम्रित बरसै घोख ।। साध संग रस आइआ,राम नाम गुण पोख ।। जिनि जिनि हरि हरि सिमरिआ,आनंद पाइआ चोख ।। कमली वाड़ी संगती,भवरे गुरुमुख रोख ।। जपु जपु नाम बिगासिआ,उपजा मन संतोख ।। गुरु गोबिंद सालाहिऐ,नहि विआपै परदोख ।। हरि प्रभु सज्जण सरब सिर,श्रीचंद्र लिहु जोख ।। वैसाखै लग संत संग,लहिऐ अनुभव मोख ।।३।। जेठ माह जपु राम नाम, ठंडक मन उपजाइ ।। गुरु सरवर हरि नाम जल,पीवत त्रिखा नसाइ ।। प्रेम ब्रिख पतिआइआ, चित्त चेतत गहि छाइ ।। पाप धूप ते जलत जन,सांत सील लहि थाइ ।। करणी धेनु लवेरड़ी,दुगध धिआन हरि राइ ।। लग संतोखै त्रिपतीऐ,भूख पिआसा माइ ।। साधु सत्गुरु जे मिलै,बाग नाराइण नाय ।। भगति सुरसरी मज्ज कै,अघ औघन कौ घाय ।। अविनासी गुरु पारब्रहम,श्रीचंद्र प्रगटाइ ।। जेठ न विआपै तपत दुख,राम नाम लिव लाइ ।।४।। आसाढ़ सद सुखदाइआ,संत संग जपु राम ।। तपत बिनासी हरि गुणी,सहिज सूख बिस्राम ।। गुरु गोबिंद सालाहिऐ,निहचल जिस का धाम ।। दाना दाता सीलवंत,भगति भाइ तरु छाम ।। रतन जवाहर माणका,नउनिधि हरि हरि नाम ।। गुरु सरणाई पाइऐ,कोटि सूख गुण ग्राम ।। चरन कमल की ओट हरि,पोहत नाही घाम ।

सीतल थान सुहावणा,साधू संग आराम ।। पारिजात घर आंगणै,श्रीचंद्र जन बाम ।। आखाढ़ बिनासी तपत सभ,नाराइण गहि ठाम ।।५।। सावण बरसै दहदिसा,गूड़ी छहबरि लाइ ।। धरती चीजी पसर ही,चूनी लाल ओढ़ाइ ।। झुकि झुकि हरि प्रभु बरसदा,गुरुमुख मन पतिआइ ।। अगनि बिनासी जिअ की,बूँद पई मुख आइ ।। कूक पुकार सभि मिट गई,हरि अम्रित त्रिपताइ ।। धरति भई हरिआवली,गुण अंकुर प्रगटाइ ।। वर पाया सोहागणी,मंगल गीत सुहाइ ।। संत जना हरि राविआ,सत संतोख रजाइ ।। अन धन उपज अनंद भया,श्रीचंद्र रस पाइ ।। सावण सुख वरसाइआ,साध संगति कै भाइ ।।६।। भादुइ भ्रम मिटाइऐ,साधु संग करि हेत ।। धानी बोहल पाइआ,गुण गण जामै खेत ।। कामिणि मन आनंद भा,हरि हरि नामै चेत ।। सत्गुरु बखस मिलाइआ,दस नाराइण भेत ।। गुरुमुख नित बरसाइआ,लहराए फर केत ।। ढोल ढमक्के बंसरी, गाए गोबिंद नेत ।। राम नाम रंग रत्तिआं,खेती जंमी रेत ।। अउगुण चिड़ी उडाइ करि,सोए राति निचेत ।। रिधि सिधि घरि पाइऐ,श्रीचंद्र गुरु हेत ।। भादुइ सहिज समाइऐ,गोबिंद लहै निकेत ।।७।। असुन उमड़ समुंद रस,उलटी नदी वहंन ।। हीरे रतन जवाहरी,माणक मणी फिकंन ।।

मन निरमल धर पावनी,पित्री पाइ चरंन ।। सुकरम राते हरि जना,अनदिन अनद रहंन ।। यग्य पुरुख परगासिऐ,पापां घाण दहंन ।। आगे सदा सुहेलड़े,रंकी दान दिवंन ।। पावन तीरथ सप्तसर,गुरुमुख प्रात सिवंन ।। साध संग बिस्वासिआ,पाइआ नाम रतंन ।। परमेस्वर आराधिऐ, गुरु श्रीचंद्र लगंन ।। असुनि दुख गवाइआ,रामहि राम रवंन ।।८।। कतिक करम कमाइऐ,प्रातह नहावण नीर ।। निरमल काया ऊजली,हरि जपिऐ मन धीर ।। अगनि निवारी कामनी,राम नाम रम सीर ।। दुरमति दुरत विनास भे,हउमै निवरी पीर ।। दीवा हरि हरि नाम का,चानण लहिआ सरीर ।। सत्गुरु बाले नहि बुझहि,नाहिन लागै तीर ।। दरगह सदा सुहावणे,होत नहीं दिलगीर ।। गुरु सबदी मुख उज्जला,जपु जपु गहिर गंभीर ।। सुच साचा धन संचिआ,श्रीचंद्र लहि खीर ।। कत्तिक दुरगति नास है,दुरमति डारी चीर ।।९।। मघसिर हरि जापिऐ,संत चरण संग लाग ।। मघसिर अम्रित संचिआ,बिनसै कालुख दाग ।। जलन बुझी सीतल भए,कामिनि विझवी आग ।। अंतर चानण होइआ,बलिआ गिआन चिराग ।। पंथ सुहावा गुरुमुखी,गुण गावत वैराग ।। सिंघ गिआन दहाड़िआ,उबरे बन ते भाग ।। पंच चोर घर तजि गए,गुरू पुकारे जाग ।। सबद लस्टिका हनि

हता,अंतरि बैठा नाग ॥ गुरु प्रसादी प्रगटिआ,श्रीचंद्र सिर भाग ॥ मघसिर हिम उर झरी,मंगल अनद सुहाग ॥१०॥ पौस सिसिर अगिआन उर,सत्गुरु सबद निवार ॥ हरि वर संग सुहावणा, सुख मन पाइआ नार ॥ सुरती सुरति मिलाइ घर,जोति जगाई चार ॥ साध संगति की भीड़ सिउं, राम नाम जपु सार ॥ कलि कलेस दुरमति हरी,हउमै काढी मार ॥ औगुण कमले भसम भव,भागी भवरन डार ॥ झड़ि आकासहुँ उत्तरी,सांति सु हिमी कुहार ॥ दबी गई न खेतड़ी,भगती भाव पसार ॥ गुरु परसादी पाइऐ,श्रीचंद्र अंगिआर ॥ पौस न पाला पोहई,गुरु कै सबद अधार ॥११॥ माघ पुनीति भई,तीरथ राज इस्नान ॥ गुरु परसादी पाइआ,साधु संगि हरि गिआन ॥ जपु तपु संजम सील ब्रत,आतम निर अभिमान ॥ दुरमति बिनसी मनहि ते,त्रिभुवण एक समान ॥ जीअ दया मन निरमला,सत संतोख सु दान ॥ बसि एकाकी सेविऐ,यग्य करम क्रिसान ॥ राम नाम रस पाइऐ, त्रिगुणी चूकी बान ॥ संत महिल प्रकासिआ,बहुरि न आवन जान ॥ अबिचल धरम सु भाइआ, श्रीचंद्र कलिआन ॥ माघ सु परम पवित्र मन,सत्गुरु सबद पछान ॥१२॥ फालगुन रंग लाल भा, साध संग लिव लाइ ॥ पूरव उतरा फाल्गुनी,आइओ हरख बढाइ ॥ घर घर वज्जे वाजिआ,

गुलाल अंबीर उडाइ ।। परमानंद उपाइआ,संग सुहाग सुहाइ ।। परफुलित सभ मेदनी,जीव जंतु वरसाइ ।। रहस्य उपायो रहस्यमय,अनत न तन प्रगटाइ ।। भगतां रखै पैज हरि,नरहरि गोबिंद राइ ।। संतां तूर वजाइआ,चहुँजुग नाम जपाइ ।। वजीआँ अनिक वधाईआँ,श्रीचंद्र गुण गाइ ।। फालगुन हरि प्रभु सेविऐ,जनम मरण दुख जाइ ।।१३।। गुरु गोबिंद सालाहिऐ,मन तन लाइ पिआर ।। राम नाम जपु दिनसु राति,सभ कुल करहि उधार ।। धरम करम प्रकासिऐ,दहदिसि जै जै कार ।। दुबिधा दुरमति दूर करि,नाराइण संसार ।। आपा आप पछाणिऐ,हिरदै गहि उपकार ।। साधू संगति लगिआँ,भवनिधि पार उतार ।। जीवन मुकत आनंद रस,मत्ता राम समार ।। घड़ी मूरत पल माह पख,थिति रुति सर सार ।। सदा सुहावै सोहणे,श्रीचंद्र दुख दार ।। राम नाराइण गोबिंदा, हरि प्रभु मन महि धार ।।१४।।१।।३३९।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल तिथियाँ ।।

पारब्रहम परमेस्वरो,कारण करण गुपाल ।। आदि अंतु नहिं जानिऐ,गहिर गंभीर अपाल ।। वेखै करि

करि आप ही,आप करै प्रतिपाल ।। आपहि भोग भोगाइंदा,आपहि रोग विसाल ।। आपहि सुख दुख देवई,आपहि धनी कंगाल ।। आपहि सूरज चंद्र सुर,आपहि त्रिगुणी माल ।। आपहि पंच तत्तु विस्तारा,आपहि मेलै ढाल ।। आपहि लख चुरासीह जोनी,आप चलावै चाल ।। इकना नरक भुगावै आपै,इकना करत निहाल ।। थकि थकि परिऐ सरणी ताकी,श्रीचंद्र अघदाल ।।१।। अमावसिआ एक रंग,सूरज चंद संजोग ।। निसि अंधिआरी भूलिऐ,आतम रामहि जोग ।। पंच चोर मन मंदरै,लूटत अनदिन भोग ।। सूझ बूझ नहि पाइऐ,बिखिआ राते लोग ।। गहिबर बन संसार महि,पंथ अकंटक खोग ।। पग पग चुभत कुकरम मन,दुखीआ विआपित रोग ।। ससि रसमी सुर गिआन की,पा गई दूरि विजोग ।। संगी साथ न को पिखै,बड दुख कोइ कुदोग ।। बेड़ा सागर वात मुख,ध्रुव वर भयो अलोग ।। अगिआनै स्यामा घनी,श्रीचंद्र किमि होग ।।२।। परवा प्रीतम एकले,कला छपाई ढाप ।। दुखिआ दहदिसि धाइआ,अधिकी करत कलाप ।। भाई मित्र न संगवा,को किहँ सुनै प्रलाप ।। जोग न भोग न पाइऐ,दुखी दुख संताप ।। तोड़ी मुख बंद उबट ही,निकसति बहिर न भाप ।। सागर बेड़ी डोलई,वंझ मलार न चाप ।। सनमुख डाकिणि फाड़ मुख,भक्खण धाई पाप ।। को सुलझावै उलझिआ,गोरख धंधा

जाप ॥ सुणो पुकार अगोचरै,होहु सहाई आप ॥ एकम एको पड़ रहिआ,श्रीचंद्र मन ताप ॥३॥ दुतिया दूज उपजिआ,पच्छिम कला लखाइ ॥ तारो तार लखाइआ,तन की चम चमकाइ ॥ शिव को जाण सिञाणिआ,मस्तक थिरिआ आइ ॥ सुत सागर प्रगटाइआ,कै अनसूया माइ ॥ भानु परकासों उज्जला,धिर दूजी थिर थाइ ॥ माया ब्रहम न जाणिऐ,को किमि लख लखाइ ॥ जिउं जिउं जाण सुजाणई,तिउं तिउं गरत गराइ ॥ ईस्वर मनु सुत हो रहिआ,प्रव्रिति निव्रिति भाइ ॥ द्वंद पदारथ भान ह्वै,लेखा लिखत न पाइ ॥ दुतिया दूजा होइ करि,श्रीचंद्र भ्रम पाइ ॥४॥ त्रितीया त्रिगुणी माइआ,ब्रहमा बिसनु महेस ॥ त्रैगुण वरत वखाणिऐ,तिहुँ लोई प्रवेस ॥ तीनहुँ बाणी काल त्रै,दुरगा तीनहुँ वेस ॥ त्रयी अवस्था थापीआं,त्रयी विवस्था ऐस ॥ जीव ब्रहम ईस्वर त्रयी,तीनहुँ कै त्रै देस ॥ त्रिपुटी नउधा गुणित लख,त्रिकुटी स्वास चरेस ॥ रेचक पूरक कुंभकै,लगन भगन लगणेस ॥ गुरु सिख मंत्र मिलाइ कै,तीन करम की रेस ॥ जंत्र मंत्र तंत्रान की,जुगती तीन प्रवेस ॥ अगनि समानी तीन ही,श्रीचंद्र आदेस ॥५॥ चतुरथि करता पुरुख प्रभु,गुपतहुँ प्रगट होइ ॥ चहुँ खाणी चहुँ बाणिऐ,वेद चतुर वर सोइ ॥ वरण आस्रम चार करि,मुकति पदारथ लोइ ॥ साधन चारहुँ सिद्ध करि,अधिकारी

सभ जोइ ।। चरन जुग वर गनजयी,भावा भाव सभोइ ।। पहिरीं रंग जमाइआ,तम परगास अवलोइ ।। जोग जुगति सो सेविऐ,नर वर नरहरि गोइ ।। सिद्धी करम कमावणे,ब्रहम अकास रमोइ ।। चारी चारा लाइ कै,कछु कछु भेद समोइ ।। सत्गुरु संगति लगिआं, श्रीचंद्र गति होइ ।।६।। पंचमि पंच प्रकास करि,हरि प्रभु रचन रचाया ।। तत्ती वैर विरोध रचि,आपे मेल मिलाया ।। काम क्रोध की संगतां,एकहि थान बसाया ।। सबद सपरसहुँ गिआन लहि,भेद सु भ्रम रमाया ।। असत भांति प्रिय माहि ही,नाम रूप लख पाया ।। करम गिआन विधि पंच करि,करते कीनी माया ।। पंच पंच को मेल रचि,गोरख धंध उरझाया ।। पंचहुँ झगड़ा पाइ कै,पंचहुँ बहि सुलझाया ।। पंच अगोचर धावही,पंची गोचर काया ।। पंच प्रपंच श्रीचंद्र लख,राम रमण चित्त लाया ।।७।। षष्टमि षट सासत्र रचै,षट जोति प्रकास ।। षष्ट अंग ते वेद देह,षष्ट जती वर भास ।। षष्ट रितु धरि भान गम,षट रस भोजन वास ।। षटपद गुंजत पंकजी,षष्ट ईति सस्य नास ।। षष्ट राग महि गाविऐ,आनंदै सु विभास ।। षष्टम पूजा देव वर,सुत मंगल उपजास ।। षष्ट चक्रवरतीस तन,षट चक्र कर स्वास ।। षष्ट कमल रस गंध जुत,जोगिन केर आभास ।। षट पट भेदे प्रिथमी,गिआनी बूझै तास ।। कीरति करते पुरुख की,

श्रीचंद्र रिद वास ॥८॥ सप्तमि सातों लोक महि,परिपूरण हरि राइ ॥ सप्तमुखी अस्वै गमत,कस्यप सुत अथकाइ ॥ सप्त दीप दीपत भए,सात पाताली माइ ॥ सप्त मुनीसर आदि वर,सागर सप्त जलाइ ॥ सुर सातन को मेल करि,गंधरब किंनर गाइ ॥ गिरिवर सप्तै लोक महि,अबिचल थित थिर थाइ ॥ सप्तन वारी चक्र गति,आवण वंञन भाइ ॥ सप्त भूमिका पाइऐ,जे कछु जोग कमाइ ॥ मेरी तेरी परिहरै,सत्गुरु सबद समाइ ॥ अगम अनादि अगाध प्रभु,श्रीचंद्र चित्त लाइ ॥९॥ अस्टम राज चलाइआ,अस्टअंग विस्तार ॥ अस्ट जोग इक भेद ते,जोगीसर भव पार ॥ अस्ट सिद्धि सिद्धीस्वरी,पाई हरि के दुआर ॥ अस्ट नाग कुल कस्यपी,कद्रू संगिणि नारि ॥ वसु करि देव बखानिऐ,धातू उत्तम सार ॥ ज्वर शिव संगिआ प्रगटई,बहुर कहे उपचार ॥ गणती गणत न पाइऐ,अगणत अस्ट सुमार ॥ नदी गंध दिगपाल छाप,नायिका मंगल चार ॥ सबद सासत्र लोक रचि,दिग्गज दीरघ ढार ॥ पारब्रहम प्रभु श्रीचंद्र,कुदरति कीआ पसार ॥१०॥ नौमी नव खंड साज कै, नौ दर थापे देह ॥ नौ ग्रह सुख दुख साथ रखि,रचना राची थेह ॥ सुण हरि जस करि कीरतन,नवधा भगति वसेह ॥ नवनिधि कर पाईए,रंगे रंग रंगेह ॥ बाणी रसिक रसावणी,रस लख भाव भरेह ॥

अनिरवचनीय अंग वर,कलिल कलित गुण गेह ।। महिमा अगम अगाध हरि,अंक न अंत गणेह ।। उद्भव खेल रचाइआ,उजड़ वसिआ थेह ।। राम रसाइण पाइऐ,सास कटोरी लेह ।। जपु जपु जाप गुबिंद गुरु,श्रीचंद्र हरखेह ।।११।। दसमी दसवैं दुआर समाए,सत्गुरु भए सहाई ।। दस अवतारी हरि भव पायो,आपन आप जनाई ।। दसदिसि फैल रहिओ जस कीरति,जा का अंतु न आई ।। दोस निवार दास उर लाए,हउमै पीर मिटाई ।। पंथ भुलावा विचहुँ खोइआ,पारब्रहम सभ थाई ।। सिमरि सिमरि हरि अनुभव पाया,दूजा भाउ गवाई ।। संतन संग ठंडि उर माही,क्रोध गया बिललाही ।। हिंदू मुसलिम बिप्र चंडालिन,एको एक समाई ।। नाम निधान दिवाया सत्गुरु,त्रिसना भूख न काई ।। हरदम हर साइत हर वेले,श्रीचंद्र हरि धिआई ।।१२।। एकादसी एक दस रुद्री, आपन आप प्रकासा ।। एकै दिसि मन मेरे गमनहु,दस इंद्री बिख नासा ।। अंतरि जावहु महली पावहु,बाहरि कूड़ी आसा ।। अठसठ तीरथ देव देहुरे,पीर मुकामी खासा ।। पाणी पाहन बिन नहिं कोऊ,जन हित कउ उपहासा ।। कबर न बोली मढ़ी न बोली,दंभी नाच नचासा ।। किनी न खायो भोग मिठायो,सींरीनी अरदासा ।। पेखत सुनत मूढ नित्त प्राणी,तऊ परे जम फासा ।। जिनहि आस सद

मानव केरी,वे किआ देह पतासा ।। नकट निलज्जे साकत निगुरे,श्रीचंद्र दुर नासा ।।१३।। दुआदसि रासि फेर करि,रवि अचल थिरायो ।। नाम दान इस्नान हेतु,निज तेज दिखायो ।। खट दुगुण करि सुभ करम,कछु कछु पग चायो ।। बिन करमा सत संग फल,कहु किहँ नर पायो ।। जोग न पाइऐ पंथ गहि,नख जटा बधायो ।। पूरै भाग सत्गुरु मिलै,तम घोर उडायो ।। सूरज बारह नभ थिरै,चमकार महायो ।। अंधकार नभ प्रिस्टि महि,छप आप बचायो ।। कातर सूर न भाखिऐ,रण पेखि दुरायो ।। नभ दुंदभि सत्गुरु सबद,श्रीचंद्र धुँकायो ।।१४।। त्रिओदसि धरम समार बिप्र,उत्तम गति पाई ।। विस्वे देवन अंतरिख उतर,करी सहाई ।। बिघन बिनासे सरब ही,सत्गुरु सरणाई ।। कोइ न बुरा मनावंदा,मन हरख उपाई ।। साजन सकले जिअ जंतु विच,भेद न काई ।। अगिआन भरम दुख मेट कै,आतम लख पाई ।। पिता ब्रहम सभि जगत के,इक जात बनाई ।। का को करता अपर है,कहिऐ समझाई ।। उदर भरन कै कारनै,कंध रेत रचाई ।। परमेस्वर श्रीचंद्र भव,गुरु संत बुझाई ।।१५।। चौदसि चोदसि लोक महि,एकै करतारा ।। रतनां वांगुर चमकदा,मारत चमकारा ।। मनूं दिस न आवनी,अक्खर करतारा ।। विद्या कही रिखीस्वरी,बिन गुरु अंधिआरा ।। करमी सत्गुरु पाइऐ,

निसि भे भुनसारा ।। राम रसाइण चूनड़ी,रंग लाल पसारा ।। हउमै गरब गवाइऐ,दहदिसि उजिआरा ।। सत्गुरु सेती रतिआ,सुख मंगल सारा ।। ईत ऊत हरि विआपिआ,जानै सचिआरा ।। साधु चरण बलिहारणै,श्रीचंद्र उबारा ।।१६।। पंचदसी तिथि पूरणी,सीतल किरणाली ।। सोमावली सपल्लवी,भरि जोबन बाली ।। चंद्रमुखी पति पाया,मुख लालो लाली ।। भगती भाव संपूरणा,घुंघरु घड़ियाली ।। बाह लुडावत दरगहे,हरि नाम समाली ।। गुरु सिख एकी वरतणी,चाली इक चाली ।। प्रेम पिआला पिरम पी,मस्ती खुसहाली ।। संता सेती रत्तिआं,लहि वसतु निराली ।। अंधकार हथ मारदे,पाई रतनाली ।। घट घट चानण होइआ,श्रीचंद्र जमाली ।।१७।। सोई तिथी सुहावणी,जित नाम जपीजै ।। गुण गोबिंद वखाणिऐ,रस अम्रित पीजै ।। मन निरमल दुबिधा गई,जल अंतरि भीजै ।। टेक एक नाराइणै,दूर दूजा कीजै ।। हरि हरि हरि हरि हरि हरे,हरि हरि रट जीजै ।। नाम दान इस्नान द्रिढ़,हरि भगति रमीजै ।। सत्गुरु पूरे संग मिल,सर नाम न्हवीजै ।। गिआन दीप परगास कर,राम रतन लहीजै ।। भाव भरे घट पूरिआ,त्रिसना दर लीजै ।। चिंता दूर बिहाइ मन, श्रीचंद्र प्रसीजै ।।१८।।१।।३४०।।

ओम् पारब्रह्मणे नमः

।। राग बिलावल की वार ।।

सलोक- गुरु दीपक कै चानणे,तीन लोक उजिआर ।। सूर चंद्र लख उगवै,मेट न सकत अंधार ।।१।। गुरु पूरे ते पाइऐ,परमेस्वर की लोइ ।। अंतरि ता के होत ही,नर नरकी गमनोइ ।।२।। सत्गुरु ते उर पाइऐ,रतन पदारथ नाम ।। त्रिसना भूख बिनास है,सांत सहिज विसराम ।।३।। **पउड़ी-** गुरु पूरे की मिहर,नाम धिआइऐ ।। गुरु पूरे की मिहरि,थिरता पाइऐ ।। गुरु पूरे की मिहर,सच्च समाइऐ ।। गुरु पूरे की मिहर,दुरमति घाइऐ ।। गुरु पूरे की मिहर,हउमै जाइऐ ।। गुरु पूरे की मिहर,राम रमाइऐ ।। गुरु पूरे की मिहर,बिघन न आइऐ ।। श्रीचंद्र गुरु पूरे,सीस निवाइऐ ।।१।। **सलोक-** गुरुमुख मन समझाइऐ,सच्च वडाई पाइ ।। मन ही तीरथ देव मन,मन ही मंझ समाइ ।।१।। गुरुमुख लूझै मनहि सिउं,हरि भगती करवार ।। दैत्त पंच करि खंड खंड,सुते पाउं पसार ।।२।। गुरुमुख जिन्ही बूझिआ,आतम ब्रहम निदान ।। ऐथै पाया पिरम रस,दरगह पैधे जान ।।३।। **पउड़ी-** गुरुमुख मन कै रंग,सुकरम कमावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,चानण पावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,चुप्प

चुपावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,हरि लिव लावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,सद गुण गावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,मस्त रहावणा ।। गुरुमुख मन कै रंग,अहं गवावणा ।। श्रीचंद्र मन संग,गुरुमुख भावणा ।।२।। **सलोक-** पाप विआपी मेदनी,राति दिनस बिललाइ ।। झूठ विकारी मनमुखी,भारै भार भराइ ।।१।। लाटां अगनि निकारिआं,भड़ि भड़ि भखै तनूर ।। बाहों पकड़ि धकेलिआ,रूप महाबलि सूर ।।२।। मन मैलै मुख मैलिआ,मैली बुद्धि संजोग ।। मैले करम कमाइन,मनमुख सोग विजोग ।।३।। **पउड़ी-** मनमुख मन अजित्त है,भरमै भरमाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,जग भोग भुलाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,पर रूप लुभाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,मुह कालख लाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,सपीं चित लाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,नित्त भुखा तिहाइआ ।। मनमुख मन अजित्त है,बहु क्रोध वधाइआ ।। श्रीचंद्र मनमुख हिरदै,निसि काली राइआ ।।३।। **सलोक-** जग मिट्ठा मनमुख रिदै,अगला डिट्ठा किंन ।। वढि वढि जीआं खावणा,वल्ल कुलल्ला जिंन ।।१।। तलवारी छुरिआं करी,फाहिआं डारी कंध ।। माणस घावन रात दिनै,मनमुख उच्चा धंध ।।२।। मद माती चित वेड़िआ, पर नारी सिउं प्रीत ।। धन खोवण रंग बिखै रति,मनमुख संदी रीत ।।३।। **पउड़ी-** माया लुब्ध

विसारिआ,हरि नाम पिआरा ॥ मारण गऊ गरीब नूँ,करि बोल बकारा ॥ तक्कणि नारि पराइआं, मूछी हत्थ डारा ॥ बुद्धी मद रति खोवही,सिर बाल खिलारा ॥ अरल बरल मुँह बोलदे,सभ होंस विसारा ॥ काले मुख काले बसन,काली अवतारा ॥ काले लेख लिखाइंदे,काले अनुसारा ॥ श्रीचंद्र काले करमि,नरके पग धारा ॥४॥ **सलोक-** मन मत्तीं लगि बूडिऐ,सागर घोर अथाह ॥ मुंह मुंह खावण जुत्तिआं,निज सिर डार स्वाह ॥१॥ किरत हरामै खावणा,पग्गीं समले ऊच ॥ धन कारण मन बेचिआ,भार उठायो मूच ॥२॥ अगली गल्ल न जाणई,ऐथै खाण हराम ॥ कालुख लागी निंद मुख, अवर कि करहि कमाम ॥३॥ **पउड़ी-** मनमुख चित्त कठोर है,निसि काली धाया ॥ खोटो खोट विहाझिआ,रंग कूड़ जमाया ॥ धरम अधरम न सुझई,है माया माया ॥ करता पुरुख बिसार कै, जीआं हत खाया ॥ क्रोध ध्रोह रस मोह लग,सुभ जनम गवाया ॥ कसमल बंधी पोट सिर,नद लंघ न पाया ॥ कूक पुकार न को सुणै,जम डंड लगाया ॥ श्रीचंद्र किआ वस है,जां प्रभू भुलाया ॥५॥ **सलोक-** पाधाणू कंधी ढहै,हसि हसि वंञै रेत ॥ जंघां जडूँ न चा सकहिं,तडूँ घिन्नै भेत ॥१॥ जल्लण तैंडे पैर तल,जाण न सकहि गवार ॥ मत चौकड़ी चलाइकै,मिरगा सहहि बुछार ॥२॥ ब्रिखहि ओट तकाड़

कै,संनी बाण सय्याद ॥ बैठा वेखै दाव कउ,मत भूलीं इह याद ॥३॥ **पउड़ी-** वाड़ी राता मिरग मन,लख हरी अंगूरी ॥ कोमल अंगी चंद्रमुखि,कंज नैनी रूरी ॥ गुत्ताँ काली सरपिणी,कुंडल पा जूरी ॥ हाथी वांगुर पैर धर,चल चाल सरूरी ॥ भौरे भौंह उडारीआं,पब्ब छाती पूरी ॥ तोते नासां भुल्लीआं,ठोडी अंब नूरी ॥ भट्ठी अग भड़कणी,तुंद लाल तंदूरी ॥ श्रीचंद्र सड़ भुज करि,उड रही अब धूरी ॥६॥ **सलोक-** कोइल कोठे मनमुखां,प्रविसे कालुख मुक्ख ॥ संगी संग न लाग है,जत जावै तत दुक्ख ॥१॥ कज्जल कोठी जगत की,धसे न उज्जल कोइ ॥ मनमुख सेती संग करि,को न कलंकित होइ ॥२॥ काम क्रोध बुरिआइआं,चोरी जारी निंद ॥ चाड़ी लाइत बारड़ी,मनमुख कै घर बिंद ॥३॥ **पउड़ी-** मनमुख भंवर लुभाइआ,नारी फुलवाड़ी ॥ कंटक बिखै न सूझई,जहँ फाथा झाड़ी ॥ कूके कुरलावै घणा,किसमत कहि माड़ी ॥ भोगहुँ रोग उपाइ कै,घर बार उजाड़ी ॥ चित्त चंचल वित नासिआ,सुत बंधु विगाड़ी ॥ जम गण संगल पाइआ,चल लै फड़ दाढ़ी ॥ तत्ते थंमी लाइ कै, कोरड़ कसि ताड़ी ॥ श्रीचंद्र मन समझ बूझ,नहि गाल दिहाड़ी ॥७॥ **सलोक-** धन कारण मन बेचिआ, तन खोया विचि धूल ॥ धंधै धाया राति दिनै,त्रिसना गई न मूल ॥१॥ पच्छिम गया पूरब हुँ,उत्तर

दक्खिन फेर ।। लालच लागै अट्टिआ,हत्थीं लगा ढेर ।।२।। चढ़िऐ जाइ सुमेरु पर,सेस निकेत लहाइ ।। धनद बुलाइऐ मंत्र सिउं,बिन भागां किआ पाइ ।।३।। **पउड़ी-** धरती खोद कुदाल सिउं,काह बूट नसाई ।। उड़द मोठ ईख गंदमै,गोडी गुडवाई ।। पाणी संच जमाइ खेत,उच वाड़ कराई ।। चिड़िआ काकहुँ सूकरहुँ,सयालहुँ रखवाई ।। चीटी आहण ईति लख,ढोलन ढमकाई ।। दिणै राति करि हाय हाय,ढेला न वगाई ।। लुण गाहे खलिहान पा,मन खुसी मनाई ।। श्रीचंद्र बिन भागड़े,नहि फलित कमाई ।।८।। **सलोक-** काजी पंडित मौलवी,पीर फकीर अमीर ।। हाटी घाटी बाटीए,रंक सिपाह वजीर ।।१।। चरवाहे राहक चरक,फेरी फिरत जहान ।। बनवासी घर वासिए,वासी जन शमशान ।।२।। नखी जटी पट भगवई,काली पीली स्वेत ।। हरि की भगति बिहून नर,रोवन पीटन नेत ।।३।। **पउड़ी-** धरि धरि नारी वेस,नाच नचाया ।। ढोलक ताल म्रिदंग,वाद वजाइआ ।। नूपुर घुंघरु घंटि,छैण छणाइआ ।। बेणू बीना वंस,वंझलि वाइआ ।। तूर दुतार सितार,रबाब घुराइआ ।। षडज गंधार निसाद,ऋषभ रलाइआ ।। रासि अखाड़े मंड,भगति कमाइआ ।। श्रीचंद्र बिन नामै,धूड़ि उडाइआ ।।६।। **सलोक-** निम्म धतूरे तूमिओ,अक्क चिरैतों कौड़ ।। मनमुख कौड़तण

घणी,पुज ना सकही दौड़ ॥१॥ अठसठ तीरथ मज्जनी,कोटि तेतीस पूज ॥ चारहुँ धामन परस करि,मनमुख माया रूज ॥२॥ संनिआसी जोगी तपी,उदासी जपु धार ॥ वैरागी सूफी मलंग,मनमुख माया सार ॥३॥ **पउड़ी-** ऊरध पुंड त्रिपुंड,तिलक सजाइआ ॥ गोपी चंदन लाइ,अंग बाराइआ ॥ तुलसी माला मेल,भगत कहाइआ ॥ झांझ पखावज तार,विपंची गाइआ ॥ ताण विताण सुरंग,चवर झुलाइआ ॥ कथा वखान पुरान,कुरान अलाइआ ॥ छंद बंद रस रंग,कबित्त सुणाइआ ॥ श्रीचंद्र बिन नामै,दंभ वधाइआ ॥१०॥ **सलोक-** चंदन तिलक लिलाट गल,रूद्राखी धरि माल ॥ द्रब्य बटोरन कारने,राम बजाई गाल ॥१॥ प्राव्रत नीव मनोग करि,लोटे मांज गहे ॥ राम नाम नहि रस लिओ,नरकी धार बहे ॥२॥ गुरु मठिआ रचि ऊच थल,नौ गज कबर ढकाइ ॥ जग ठग्गण के कारणे,बहुत प्रपंच कमाइ ॥३॥ **पउड़ी-** मखण घरों सिधाइआ,सिर छाई पाई ॥ बन महि कबर निहार कै,चादर ढकवाई ॥ ढोकल छडि नगाह को,सरवर इह जाई ॥ पंज सहस्त्र कलि वरत ते, जगननाथ पराई ॥ एही ठोरहि पूजिऐ धरि पैसा पाई ॥ मै ही कलकी उपजिओ,संभल परहराई ॥ परमेस्वर मुहि थापिओ,सुत अपन बनाई ॥ दंभ पसारा श्रीचंद्र,अग्य दूनी ठगाई ॥११॥ **सलोक-**

संत कहावही संत की,निंदा मुखहुं अलाहि ।। मूँह कालै दुहुं लोक महि,अंतरि जलहै भाहि ।।१।। कलि कुत्ता मुख मैल धरि,मंदर मूरति चाट ।। काली कालुख पोत करि,बोडै नरकी घाट ।।२।। भए शहीद कां कालड़े,टुकड़े डारत लोग ।। त्रिपतहिं विस्टा खाइ करि,दैहैं पूजक भोग ।।३।। **पउड़ी-** विस्टा राता काग,त्रिपति न पावई ।। सूकर सुआन आहार,न कबहुं अघावई ।। भूत प्रेतीं खाधे,रज्ज न आवई ।। नरकीं जीव समाए,गोते लावई ।। मूँह टड्डे संसार,माणस खावई ।। गिद्धां मुरदा जाण,विदेसों धावई ।। भुक्ख विआपी लोक,माया हावई ।। श्रीचंद्र त्रिस जलिआ,नर बिललावई ।।१२।। **सलोक-** जब ते स्त्रिस्टि विरंचि की,त्रिसना लागी आगि ।। कुल परिवरतक पित पिता,सती भए संग लागि ।।१।। सुत सुता त्रिअ मात बहिन,माया लागी धूह ।। ऐथे हा हा करि पचे,आगै हूह कुहूह ।।२।। जो संची सो थित रहहीं,जब लों धरनि अकास ।। संचनहारे कोटि लख,दाबे जले निरास ।।३।। **पउड़ी-** अरब खरब करि गंज,ढेर लगाइआ ।। सहसत्रहुं लख करोड़,गणति वधाइआ ।। भाई पुत्र कलत्र,पिता हितु घाइआ ।। गहिरा गरत खुदाइ,ढक रखाइआ ।। दीन न दीना दान,न पैधा खाइआ ।। सगल विसास गवाइ,आसण लाइआ ।। सिर लागा जम डंड,ऊठ सिधाइआ ।। श्रीचंद्र दुख पाप,फोकट

चाइआ ॥१३॥ **सलोक-** जिनि सिउं प्रीति पिआर,ते संगी सभ धनहि के ॥ किउं दुख रहिओ सहार,मूढ समझ हरि हरि सिमर ॥१॥ जब लगि पैनण खावणै,तबि लगि राखहि प्रेम ॥ जित दिन कछू होवई,दुखी न बूझत छेम ॥२॥ द्रब्य हिरन को मंत्र बड,जी जी मारत फूक ॥ छीन लई जब सभ किछू,डारि पिटारी धूक ॥३॥ **पउड़ी-** हट बैठो हटवाणीआ,कहि लीजै चूना ॥ भाड़ भठऊआ थित भया,दै दाना भूना ॥ काछन काछ कछाइआ,सागी सादूना ॥ पाट पटंबर विसतरे,लेवो चुन चूना ॥ हीरे मोती चूनीआं,पंने नग गूना ॥ हलवाई बरफी रची,रस मीठे लूना ॥ लेहु लेहु सभ ही कहै,कहि होहु न ऊना ॥ श्रीचंद्र धन डार देहु,कहिते मुख मूना ॥१४॥ **सलोक-** लोभ प्रेम रचि वैर को,मंड रहै रण खेत ॥ जल पावक इक ठौर किमि,सोवत रहहि अचेत ॥१॥ लोभ लागि दिव परसिए,चार पांव दुइ सींग ॥ कस्तूरी किमि गहि सकत,जिहँ मन राता हींग ॥२॥ गधे हींग हरि चंद कउ,नभ महि रखिओ डुलाइ ॥ प्रेम पिरम रस पीवते,चपत लोभ चटकाइ ॥३॥ **पउड़ी-** देवन गधा बणाइ कै,लद लोभ चलाइआ ॥ सोयो कबरहि पीर,किउं नहि गुण पूजाइआ ॥ हे काठ के जगननाथ,मुहि चाहिए माइआ ॥ संगे अस्वद भै भरे,कंधे गडवाइआ ॥ खतम कुराण कराइओ,हाफिस सदवाइआ ॥

विस्वनाथ चलि परसिआ,धन देव सवाइआ ॥ पुरी सुदामे दुआरिका,धर लोभ रटाइआ ॥ श्रीचंद्र प्रभु प्रेम बिनु,मुख कालुख लाइआ ॥१५॥ **सलोक-** प्रीतम गगनंतरि खड़ा,इह प्रेमी पंथ निहाल ॥ सीस कटावै आपणा,आवै मेरे नाल ॥१॥ प्रेमी सोई आखिऐ,प्रीतम हित चित लाइ ॥ तन मन धन मोह मेट कै,ताहूँ मैं मिलि जाइ ॥२॥ प्रेमी सीस संभालई,सती संभाले वत्थ ॥ ध्रिग ध्रिग तिन का जीवना,कालख मुँह अलत्थ ॥३॥ **पउड़ी-** महाबली अतिरथी सुभट,करि ढाल क्रिपाना ॥ जगत अखाड़े उत्तरे,धोंसे धुंकाना ॥ मारो मार पुकारदे,धरि सूहा बाना ॥ खलभल भड़थू मचिआ,तनि बान कमाना ॥ काकपच्छ सिर सोहई,असपीं अरबाना ॥ पाछल ओर न आवई,आगल कदमाना ॥ अपर न कोऊ भावना,बिन सिर अरपाना ॥ श्रीचंद्र रण छेत्रै,रुंड मुंड दो जाना ॥१६॥ **सलोक-** आशिक राखी आस जग,परम निलज्जा कूर ॥ ध्रिग ध्रिग इह लोकै लहै,आगै दोजख सूर ॥१॥ इश्क बिना किहँ पेखिआ,जलवा नूर खुदाइ ॥ परणकुटी पावक लगी,भसम बिना किआ पाइ ॥२॥ तन भसमा मन भसम है,धन भसमी भव खेह ॥ इस्क पिआला पीविऐ,करम करीम करेह ॥३॥ **पउड़ी-** रूप न रंग न रेख भेख किछु,करम न धरमा ॥ वरण जात अरु पात नहि,तन भेद न भरमा ॥ चिहन चक्र सूखम

स्थूल,गज गच्च आस्रमा ॥ बंसी माला राग धुनि,धरि ओट न चरमा ॥ सारंग बिसिख न खड़्ग करि,ओढत नहीं धरमा ॥ पीत लाल धूसर हरित,स्याह नील न हरमा ॥ जैसे को तैसा मिलै,निज करमी करमा ॥ श्रीचंद्र प्रभु पाइऐ,गहिऐ सह धरमा ॥१७॥ **सलोक-** सेवक सोई आखिऐ,प्रभु सिउं रहै समाइ ॥ मंत्री भूपति होइ कै,अन दर कबहुँ न जाइ ॥१॥ जीवन मरना एक संग,दूख भूख नंग ओढ ॥ सती पूज सोइ जग महि,जानत स्वस्थ न कोढ ॥२॥ साहिब सेवक रंग रंगे,आन बिसारी बान ॥ ऊच नीच चंगा मंदा,मेरा तेरा हान ॥३॥ **पउड़ी-** ग्रिह ते सेवक धाइआ,करि लंमी धाई ॥ आसा रखी चित्त महि,प्रभु सच्चे साई ॥ तन मन धन सभि परिहरे,इक टेक टिकाई ॥ जात गोत सभ भुलीआ,पत पात बिहाई ॥ साक बंधु सुत मीत भ्रात,पित मात नसाई ॥ नंग भुख दुख सूख सम,रंकी राजाई ॥ जल जल माटी माटीअहि,अगि अगनि समाई ॥ श्रीचंद्र रत्न जोति जोति,बिसमय बिसमाई ॥१८॥ **सलोक-** कहिबो सुनिबो ताहि ह्वै,जो अन दुआरै जाहि ॥ सेवक सच्चे साह के,भूल न भटका खाहि ॥१॥ जिन कउ दूजी आस है,ते दोहागणि त्रिप्ति बिन ॥ सेवक सच्ची रासि,सोहागणि पर परिहरै ॥२॥ धन कारण सेवक थपै,घर घर टूक मंगाहि ॥ ध्रिग साहिब अरु सेवकन,घोर नरक के

राहि ।।३।। **पउड़ी-** हत्थीं केस मुचाइंदे,सिर छार पवाई ।। जटा जूट बड धारिआ,नख बडे बढाई ।। मुंद्रा कानी फटक की,पट मुनि पहिराई ।। दर दर जोहत स्वान जिउं,कबि त्रिपति न पाई ।। मांगन हित जो धाइआ,किआ कथहि सुनाई ।। बिन संतोख न रज्जीऐ,लख कोटि कमाई ।। भूखे कउ भूखा मिलै,नकटे नकटाई ।। श्रीचंद्र प्रभु नाम बिन,लानत लख आई ।।१६।। **सलोक-** गुरु राहक सच बीजिआ,धरती धरम सवार ।। सिख संतोखी रज्जिआ,सुत्ता पैर पसार ।।१।। दया बीज संतोख रुख, सच्च कांड पत दान ।। धरम फुल फल गिआन लहि,त्रिप्ति मोख निदान ।।२।। हरि भगती घर कल्पतरु,जपु तपु संजम फूल ।। फल संतोख सु खाई कर,घाम हरो भव सूल ।।३।। **पउड़ी-** सत्गुरु सच्चा सेविऐ,बूझ सच्च समाइऐ ।। सच्चा जपु तपु दया धरम,सच करम कमाइऐ ।। सच्चे सबद प्रकास होइ,रोम रोम लहाइऐ ।। सच्चे ही सच निरमला,अंतरि मल धोइऐ ।। सच्चे सच्च मिलावड़ा,कत विछड़ न जाइऐ ।। मन सच्चे सच्च वासिआ,सच जोति दीपाइऐ ।। कूड़ा थाउं न पावई,सत्गुरु सरणाइऐ ।। श्रीचंद्र सच कूड़ द्वंद,गुरुमुखहुं लखाइऐ ।।२०।। **सलोक-** भंग चरस आमिख सुरा,गाँजा पोस्त अमल ।। काजी जोगी पंडिती,मसजिद देवस्थल ।।१।। चोरी जारी पान मद,विभिचारी के थांउ ।।

मंदर तीरथ मस्जिदी,वस्से घूघ गिरांउ ॥२॥ मेचक कलि तन आखिऐ,काली स्याम गुपाल ॥ कालिआं काले मन भए,काली धार किलाल ॥३॥ **पउड़ी-** कलिजुग रंग जमाइआ,गोबिंद भा काला ॥ भद्रा काली हो थिरी,काला नभ जाला ॥ काले काले वेस धरि,कलि पंथी चाला ॥ उर काले हो भगत जन,सजि तखत मराला ॥ काले नागी परसिऐ,मिरतु लहि दरहाला ॥ काले कागीं विस्ट मुँह,अक्ख काणी खिआला ॥ काले कोइले वणजिऐ,मुख कालख भाला ॥ श्रीचंद्र कलि कीरती,काली जग काला ॥२१॥ **सलोक-** शेर साधु हनि डार दी,शाही हथिनी जान ॥ गिदड़ कुत्ते काग गिद्ध,टुक टुक मुरदा खान ॥१॥ मुरदे कबरीं पड़ रहे,सदिआं लग इक पास ॥ साधू सूर वजाइआ,उठि धाए चहुँपास ॥२॥ दंभ वजाई बांसरी,लेहु पुत्र धन आन ॥ चनक हेत कपि फासिआ,नाचत जब लगि प्रान ॥३॥ **पउड़ी-** कलि वरतारा वरतिआ,दहदिसि अंधिआरा ॥ राज कुंभार गदहा प्रजा, कर लादसि भारा ॥ डंड डंड चलाइंदा,कुरके घर बारा ॥ जन चिंता पुर पेट की,हाकम डकरारा ॥ द्रिस्टी रक्त निचोड़िआ,की डोर पुकारा ॥ लाइ दुकान मुकदमी,वढी रुजगारा ॥ पुत्त धी वेच न निआउ लहि,उलटा गयो मारा ॥ श्रीचंद्र कुत्ते हलकिआं,हरि ही उपचारा ॥२२॥

सलोक- भवसागर चिंत ग्रह ग्रसा,चित्त न उबरन पाइ ॥ सज्जण सच्चा संत को,मेल लेहु हरि राइ ॥१॥ जंगल जग दुख कंट ब्रिख,मन अंधेर राह नाहि ॥ चिंता बाघ डरावणा,हरि बिनु का पहि प्राहि ॥२॥ सिंघ सांप भालुक गजीं,नर घेरो बन मांझ ॥ किहँ कहिऐ कित जाइऐ,निसि काली घन सांझ ॥३॥ **पउड़ी-** घोर अंधेरा वरतिआ,दहदिसि घट स्यामा ॥ वढी खोरे काजीआं,क्रिति फड़ी इमामा ॥ गिआन विहूणे ब्राहमणा,धरे सालिगरामा ॥ बंनण पटीआं मूंह पर,रलि कामिनि कामा ॥ कंन पड़ाए बिचरदे,मद मास ललामा ॥ तुलसी माला गलीं घत्त,रत लोभी दामा ॥ गुरू सदाइन मंगते,सिख मोचत चामा ॥ श्रीचंद्र कलि घोर महि,वसि हरि की बामा ॥२३॥ **सलोक-** परब्रहम किरपा निधान,धारन धरनि दयाल ॥ सुण बेनती मेरिआं,हरहु जगत दुख साल ॥१॥ गरब निवारण सुख करण,कारण करण गुबिंद ॥ जनम जनम के दुख हरण,सकल बिनासहु चिंद ॥२॥ भ्रम भ्रम थाके बहुबिधि,तुम बिन नहि उद्धार ॥ अपने जन की बेनती,सुनु कीजै भव पार ॥३॥ **पउड़ी-** अगम अगोचर पारब्रहम,हम तुम सरणाई ॥ आधि विआधि उपाधि लख,को नहीं उपाई ॥ घटा घोर घन पाप की,दहदिसि पर छाई ॥ पंथी बूडे दंभ सरि,दै कूड़ दुहाई ॥ तीरथ देव

दिवालियां,मंदर भोगाई ।। पोथी वाच सुणाइंदे,धन लोभ महाई ।। गिआन विहूणे ठग्ग,साध प्रजा डहकाई ।। श्रीचंद्र इस घोर ते,कर देइ बचाई ।।२४।। **सलोक-** हे नाराइण राम गुरु,हे करुणा निधि स्याम ।। हे गुबिंद हे गुण निधान,हे सुख मुकती धाम ।।१।। हे दयाल हे किरपाल,हे अच्चुत आनंद ।। हे दासन प्रतिपालक,तारकेश स्वछंद ।।२।। हे मनमोहन लाल हरि,हे प्रभु अगम अगाध ।। हे बखसंद परमातमा,हे सद संगी साध ।।३।। **पउड़ी-** करते पुरुख दयाल प्रभु,अति अगम अपारा ।। तेरा अंत न पाइऐ,करि जतन हजारा ।। तू बेअंत कल पूरणा,तूँ जग दातारा ।। सभ तेरे दर तों मंगदे,तुधु अखुट भंडारा ।। तुध वडियाईआं वडीआं,नहिं परहि सुमारा ।। तुध किरपा ते पाइऐ,जपु नाम तुमारा ।। संत संग सिमरत रहउं,मुहि बिनती सारा ।। श्रीचंद्र कउ राखीऐ,निज सरणि मझारा ।।२५।।३४१।।

ओम् पारब्रहमणे नमः

सलोक- एकंकार आराधि मन,पारब्रहम निरंकार ।। हरे राम नाराइणे,गोबिंद पुरुख मुरार ।।१।। हरि हर राम अरु स्याम,सगुण रूप धरि आप ।। श्रीचंद्र निरगुण ब्रहम ही,हरहि जगत संताप ।।२।। श्रीचंद्र राम रहीम में,जो कोई मानत भेद ।। ते सब नर मति मंद हैं,भाषत सिम्रित वेद ।।३।। धन मद कुल मद राज मद,विद्या मद अरु काम ।। श्रीचंद्र जब लगि मद रहे,कवन मिलाए राम ।।४।। श्रीचंद्र साचे गुरू की,जो जन सरणि पड़े ।। दुख विषाद अरु हानि मद,सत्गुरू आप हरे ।। ५।। अविनासी गुरु आप हैं,आदि पुरुख भगवान ।। श्रीचंद्र ताको सुमरिए,होत निमिख कलिआन ।।६।। श्रीचंद्र जाका राम हैं,बूडत पार भये ।। अनहद सबद गुंजार सिउं,कोटिनि पाप गये ।।७।। भक्ति नाम अरु संत जन,श्रीचंद्र पार करे ।। पर अगिआनी भ्रमित हैं,दुबिधा गरत पड़े ।।८।। बिनु गुरू क्रिपा न तजि सके,विषय वासना फेल ।। सहिज अवस्था गिआन बिन,दुरलभ हरि संगि मेल ।।९।। परम पुरुख

भगवान को,ढूँढ रहा संसार ।। अंतरि मन सभ के बसे,हरि करता करतार ।।१०।। जिमि सूरज प्रकास
महिं,दीपक पड़त है मंद ।। तिमि तुच्छ होत आनंद सभ,ब्रहमानंद के संग ।। ११।। सुत दारा ग्रिह
संपदा,दुखद रूप जग माहिं ।। श्रीचंद्र आतम गिआन धन,सुखप्रद वेद बताहिं ।।१२।। एकहुँ ब्रहम
सरवत्र है,तीनहुँ लोक मंझार ।। श्रीचंद्र चर अरु अचर महिं,ताका ही विस्तार ।।१३।। त्रिसना ही या
जगत में,सभ दुखों की मूल ।। श्रीचंद्र त्रिसना त्याग बिनु,होइ न हरि अनुकूल ।।१४।। जब लगि
त्रिसना पास है,तब लगि राम न पास ।। त्रिसना अभिलाषा गई,राम भयो फिरि दास ।।१५।। अलख
अगम अनाम कहूँ,अगणित ताको नाम ।। श्रीचंद्र ताका वास है,घट घट सगल जहान ।।१६।। पांच
तत्व के कोष में,निसदिन जोति जगे ।। बिनु गुरू जुगत या बापुरो,माया संगि पगे ।।१७।। सत्य अहिंसा
सील तप,दया खिमा म्रिदु दान ।। सुद्ध विचार अरु तोषना,श्रीचंद्र धरम पहिचान ।।१८।। सिमरन
ताका कीजिये,जो घटि भीतरि माहिं ।। सोहं साचा जापु है,सत्गुर आप बताहिं ।।१९।। सुत दारा धन
मान तजि,जपु मन नाम आधार ।। श्रीचंद्र या ही नाम संगि,मिलहिं आप करतार ।।२०।। नाता
ब्रहम अरु जीव का,जिमि रवि,रवि परकास ।। हरि किरपा सो पाइए,श्रीचंद्र वाको वास ।।२१।। चंचल

चित्त थिर न कियो,सांत काम नहिं कीन ।। श्रीचंद्र बिनु संतोख के,रहियो राम रस हीन ।।२२।। श्रीचंद्र राम आराधिऐ,अहंभाव कर दूर ।। आतम निरगुण पेखिऐ,ब्रहम जीव इक नूर ।।२३।। अजर अमर है आत्मा,नसवर सकल सरीर ।। इक चेतन जड़ दूसरो,कहे श्रीचंद्र फकीर ।।२४।। इह तनु भीतरि वस्तु सत,सूखम तनु कहलाय ।। जनम मरण सिउं रहित वह,श्रीचंद्र निगम बताय ।।२५।। भक्ति अरु सत गिआन ही,दोनहुं मोख द्वार ।। श्रीचंद्र दो के योग सिउं,माया परत उतार ।।२६।। श्रीचंद्र निरगुण ब्रहम ही,धरत रूप साकार ।। हित सज्जन अरु दमन अघ,दुस्ट असुर संहार ।।२७।। धन का भूखा जीव है,भाव के भूखे राम ।। श्रीचंद्र जब लगि भाव है,हीय राम कूँ धाम ।।२८।। सरधा प्रेम अरु भक्ति बिनु,मिले न निरगुण राम ।। जाको रूप न रेख है,श्रीचंद्र न कोई धाम ।।२९।। गंगा यमुना सरस्वती,सत्संग मध्य बहे ।। मज्जन करत है पारखू,श्रीचंद्र सच्च कहे ।।३०।। सत्संग राम का धाम है,औसर नाहिं बिसार ।। श्रीचंद्र जनम अमोल है,मिले न बारंबार ।।३१।। सुख स्वरग अपवरग के,सत्संग सम नहिं जान ।। श्रीचंद्र नाम अरु राम का,संत बतावहिं गिआन ।।३२।। सत्संगति अरु संत जन,हरहि कोटि अपराध ।। परनिंदक अरु दुस्टगण,श्रीचंद्र नित उपाध ।।३३।। श्रीचंद्र हीरे

लाल का,सत्संग बड़ा बाजार ।। बिना दाम नित बिकत है,जौहरी जाने सार ।।३४।। कंचन काया कामिनी,सदा न संगि रही ।। श्रीचंद्र अब तो चेत मन,अउसर एक यही ।।३५।। श्रीचंद्र गिआन विराग का,जो चाहे वरदान ।। संत जनों के चरण की,धूली करि इस्नान ।।३६।। सुत दारा अरु बंधु जन,स्वारथ के सभ मीत ।। श्रीचंद्र जब लगि गाँठ धन,तब लगि तिन की प्रीत ।।३७।। अंतरि बाहरि एक ही,लोकत आदि अनंत ।। श्रीचंद्र सोहं जाप जपु,करे पार भगवंत ।।३८।। मुक्ति चाहे नर बापुरो, अरु चाहे मोख दुआर ।। जीना भक्ति गिआन चढ़,श्रीचंद्र उतरहिं पार ।।३९।। श्रीचंद्र ब्रहम आराधिए,अहंभाव सभि खोइ ।। तुरिया अवस्था जब भई,मैं तू रहा न कोइ ।।४०।।

इति

उदासीनाचार्य जगद्गुरु श्री श्रीचंद्र भगवान् प्रणीत

श्री गुरु श्रीचंद्र सिद्धान्त सागर ग्रंथ समापन

श्री अनंद कारज लावां वाणी

ओम् पारब्रहमणे नमः

॥ लावां ॥

श्री मुखवाक बालयति श्रीचंद्र जी की ॥

पहिली लाव परविरती होई,अगनि देव गुरु साखी दोई ॥ परमेस्वर की ओट धराई,नर नारी के गंढ लगाई ॥ भगतां प्रभ की लाव उचारी,वधै वेल इह लाई वाड़ी ॥ लाव गायत्री मंत्र सहाई, श्रीचंद्र ओम गायत्री गाई ॥१॥ लाव दूसरी आरंभै कीनी,दुई द्वैत मिटाए दीनी ॥ नर नारी सुख

सद ही पावै,अगनि देव को सीस निवावै ।। जाकी जोति है सुख करनी,महिमा जाइ न अबिनासी बरनी ।। दूसरी लाव सुख धरै सरीरै,श्रीचंद्र परमेस्वर गुनी गहीरै ।।२।। लाव तीसरी तीन लोक की सोझी,खेलै अगम निगम की मौजी ।। एक टेक जो प्रभु ते राखै,कबहुँ ना कंटक काल गिरासै ।। भरम भूत को दूर भगावै,तीसरी लाव नर नारी गावै ।। श्रीचंद्र प्रभ नाम धिआवै,निरमल होइ परमपद पावै ।।३।। चौथी लाव चहुँ जुग पूजा,एक निरंजन अवर न दूजा ।। जोती जोति इक मिक भए,आदि जुगादि लेख निरमए ।। होई मिहरि जीवे जुग जोड़ी,प्रभ ते मुँह ना भगता मोड़ी ।। श्रीचंद्र चौथी लाव उचारी,धरमचंद्र की वेल सँवारी ।।४।।

इति

।। ओम् पारब्रहमणे नमः ।।